श्री जैनकथारत्नकोष.

भाग बीजो.

पहेली आवृत्तिनी प्रस्तावना.

आ श्रीजैनकथा रत्नकोष नामना पुस्तकनो बीजो भाग छापीने प्रसिद्धतामां मूकेलो छे, जेमां मुनिश्री पद्मविजयजी विरचित बावीशमा तीर्थंकर श्रीनेमीश्वर भगवाननो मात्र एक रासज दाखल करेलो छे. ए रासना जूदा जूदा चार खंड छे, तेमां श्रीनेमीश्वर भगवानना नव भवनुं वर्णन तथा यदुवंशनी उत्पत्ति. नवमा वासुदेव श्रीकृष्ण तथा नवमा बलदेव श्री बलभद्रजी तेमज श्रीवसुदेवजी तथा श्रीकृष्णजीना अनेक तनुजो मांहेला मुख्य शांब प्रद्युम्नादिक पुत्रोनां चरित्रो तथा तेनी साथे बीजा पण अनेक महापुरुषोनां चरित्रो आवेलां छे, तथा प्रत्येक खंडमां शांतरसने प्रदर्शित करनारा. संसारनी असारता सूचवनारा, सांभळनाराने वैराग्यभावनी वृद्धि पमाडनारा. एवा अनेक प्रकारना उपदेशो आ ग्रंथमां नवनवा प्रसंगे अनेक ठाणोमां आवेला छे. तेथी आ ग्रंथ सम्यग्दृष्टि जनोने अवश्य वांचवा लायक जाणीने आ भागमां दाखल कर्यो छे.

ए उत्तम पुरुषोनां चरित्रो वांचवाथी तथा श्रवण करवाथी संसार निस्तार थाय छे. आ पुस्तकनी म्हारी पासे बे प्रतो हती. परंतु ते बेहु प्रत अधुरी हती. संपूर्ण न हती. तेथी एक प्रत श्रीअमदावादनी विद्याशाळानी तरफथी अत्रे मुंबइमां तेमना आढतीआ भाइ छोटालाल चुनीलालनी पासेथी मळेली तेना लख्या प्रमाणे आ पुस्तक छाप्युं छे. तेमां त्रीजा खंडना कांइक भाग उपरथी अधिकार छाप्या त्यां सुधी तो साहमी मेळववा माटे प्रत हती. परंतु त्यार पछीनो केटलोएक भाग मात्र एकज प्रत उपरथी छाप्यो छे. माटे तेमां कोइ कोइ ठेकाणे चूको रही गयेली हशे, तेमज

आगळ अडी संबंमां मह्यारा दृष्टिदोषथी कोइ कोइ ठेकाणे साधारण चूको रही गइ हशे, माटे आ पुस्तकमां जे कांइ चूको रही गयेली होय ते विषे वांचनार सज्जन जनो मने तेवी वातोथी अज्ञ जाणीने पोतेज पोतानी मेळे सुधारी वांचशे, एवी मने संपूर्ण आशा छे. ते सज्जनो जो के ग्रंथ शोधन करवानी निपुणतामां मने अशक्त जाणशे तोपण मह्यारा प्रारंभेला आ ज्ञानवृद्धिरूप शुभ कार्यने उत्तेजन आपवाना उत्साही होवाथी अन्य गुणिजनोने पण आ काममां आश्रय आपवा माटे अत्युत्साहित करशे.

ते उत्तमोत्तम गुणने धारण करनारा सज्जनो एवुं समजशे के कोइ पण रीते एकवार कोइ ग्रंथ छपाची प्रसिद्ध थइ जशे तो ते ग्रंथ साधु श्रावकोने दरेक शोधवाना काममां आवशे अने तेथी ते ग्रंथ घणा जनोने रुचतो थाशे. ते माटे आदरवा मांडतो ग्रंथ वधवाथी पुनः पुनः छपातो रहेशे, तेमां कोइ वखत कोइ विद्वानने हाथे छपाशे तो ते वखत पोतानी मेळे ते ग्रंथ शुद्ध थइ जाशे.

वसुविध श्रीसंघने हुं सविनय प्रार्थना करुं छुं के धर्मवृद्धि करवानुं मुख्य कारण ते धर्म संबंधी पुस्तकोज छे, माटे तमे तमारा न्यायोपार्जित द्रव्यने सुकृतमां खरचवानी चाहना राखता हो तो उजाणीयो अने जमणवार करावामां जेवा उत्साहथी द्रव्य खरचवाने उजमाळ थाओ छो तेवीज होंशथी प्रथम पोताना धर्म संबंधी पुस्तकोनो संग्रह करवा माटे जेने जेटलुं द्रव्य खरचवानुं सामर्थ्य होय तेटलुं द्रव्य खरचीने घणा ग्रंथोना भंडारा करावो अने ते पछी ते पुस्तकोने भणवा वांचवा अने सांभळवा उपर अनेक जनोने अभिरुचि उत्पन्न करावो, तेमज तेना उपर तमाराथी जेटलुं द्रव्य खरचाय तेटलुं द्रव्य मोटा उत्साहथी खरचो. ते द्रव्य खरेखरुं सफलदायी धर्मार्थे तमे खरच्युं एम समजो. ए बे प्रकारे द्रव्य खरचाया पछी बीजां जे जे धर्मनां कार्य मोटानां होय तेमां तमे द्रव्य खरचवाने उजमाळ थाजो. परंतु गाडरिया प्रवाहनी पेठे एक बीजानी देखादेखीथी जे धर्म संबंधी कार्यनी कांइ पण ते समयमां न्यूनता देखाती न होय तोपण तेवा ते कार्यमां द्रव्य खरचीने फोकट उडाडवुं व्यर्थ छे. शुभमस्तु.

श्रावक भीमसिंह माणक.

बीजी आवृत्तिनी प्रस्तावना.

आ सृष्टिमां सर्वे भिन्न भिन्न पदार्थो काळना प्रभावे करी भिन्न भिन्न रीते न्यूनाधिकतापणे प्रवर्ते छे, एवुं श्री सर्वज्ञ कथनथी अने विद्वानोना अनुभवथी सिद्ध थाय छे. एनुं उदाहरण जोतां पुरातन जैन पंडितोनुं पांडित्य अने आधुनिक जैन पंडितोनुं पांडित्य स्पष्ट दर्शावी दीए छे. जेम पुरातन जैन पंडितोए रचेला ग्रंथोनी उपर लक्ष देतां हरेक सुज्ञ जननुं मन आनंदने पामे छे तेम हालना समयमां तेवा पंडितोनो अत्यंत अभाव जोइने तेओनुं मन शोक पण पामे छे, केमके तेवा ग्रंथोनी हाल रचना थवी तो एक बाजुए रही, पण तेओनो यथार्थ मर्म समजवो पण हालना समयमां दुर्घट थइ पड्यो छे. ते पूर्वाचार्य रचित अनेक ग्रंथोना विषयो तेमज आ श्रीनेमिनाथनो रास जोवाथी स्पष्ट जणाइ आवे छे.

आ श्री नेमिनाथनो रास मुनि श्री पद्मविजयजीनो रचेल छे. तेओनी कवित्वशक्ति घणीज सारी हती. तेओए पोतानी अद्‌भुत कवित्वशक्तिथी अनेक ग्रंथो रचेला छे. तेओमांथी श्रीसमरादित्य केवलीनो रास (वैराग्य-दर्शक ग्रंथ) तथा श्री जयानंद केवलीनो रास ए बन्ने ग्रंथ अमारा तरफथी प्रसिद्ध थयेला छे. तेओए सम्यक्त्व कौमुदीनो रास वगेरे एवा बीजा घणा ग्रंथो रचेला छे. तेओ श्री १९मा सैकामां विद्यमान हता.

आ ग्रंथमां श्रीनेमिनाथना रास सिवाय अंतर्गत श्री पांडवोनुं चरित्र पण आवी जाय छे. तेथी "पांडव रास" पण कहीए तो चाले तेम छे. जेम पांडव चरित्रमां श्री नेमीश्वर भगवान् बळभद्र, वासुदेव जे श्रीकृष्ण, प्रतिविष्णु जे जरासंध, पांडव, कौरव वगेरे अनेक वीर पुरुषोनां चरित्रो

१ श्री समरादित्य केवलीनो रास तथा श्री समरादित्य केवलीनुं [illegible] वैराग्य दर्शावनारुं रसिक पद्यरूप चरित्र छे [illegible] प्रथम आवृत्ति [illegible]

२ श्रीजयानंद केवलीनो रास [illegible] नथी. बीजी आवृत्ति [illegible] बहार पडी छे.

३ श्री पांडव चरित्र [illegible] गुजराती [illegible] चित्रो साथे रसिक वांचवा लायक [illegible] आवृत्ति [illegible]



अस्य पुस्तकस्य संक्षिप्तानुक्रमणिका.

तत्र प्रथम खंडस्यानुक्रमणिका.

क्रमांक.	विषयनां नाम.	पृष्ठांक.
१	प्रथम अधिकारमां श्रीनेमीश्वर अने राजीमतीजीना नव भव मांहेला प्रथम भवमां धनकुमर अने धनवतीनुं चरित्र.	१
२	धनकुमरने मुनिमहाराजे वैराग्योपदेश आपी समकित पमाड्युं.	१२
३	मुनिए कहेला पोताना चरित्रमां भुवनोदर नगर, मोह राजा तथा असंव्यवहार नगर अने सम्यक्त्व दर्शनादिकनुं स्वरूप.	१९
४	बीजे भवे बेहु जण सौधर्मे देवलोके देवीपणे उपन्यां.	२५
५	बीजा अधिकारमां श्रीनेमीश्वर भगवान् अने राजीमतीजीना जीव त्रीजा भवमां चित्रगति अने रत्नवतीपणे हतां तेमनुं चरित्र.	२५
६	केवली भगवानना उपदेशमां धर्मस्वरूप, निद्रास्वरूप, मिथ्याभिमान, असंतोष, रागकेशरी तथा विषयाभिलाषादिकनुं वर्णन.	२९
७	चोथा भवमां बेहु जण चोथा देवलोके देवपणे उपन्यां.	४६
८	त्रीजा अधिकारमां श्रीनेमीश्वर भगवान् अने राजीमतीजी पांचमे भवे अपराजितकुमर अने प्रीतिमति राणी थयां तेनुं चरित्र.	४६
९	छठे भवे बेहु जण आरणनामे देवलोके देवपणे उपन्यां.	७२
१०	चोथा अधिकारमां सातमे भवे शंखकुमर अने यशोमति राणीनुं चरित्र छे. एमां अवधिमरण आश्चर्य घणा पुरुषोनां दृष्टांतो छे.	७२
११	आठमे भवे बेहु जण अपराजित विमाने देव थयां.	१००

द्वितीय खंडस्यानुक्रमणिका.

१२	पहेला अधिकारमां यादवोना पूर्वजोनुं वर्णन.	१०९
१३	वसुदेवजीना पूर्व भवमां नव नियाणानुं स्वरूप.	११६
१४	कंस राजाना पूर्वला तापसना भवनुं वृत्तांत.	११७
१५	वसुदेवजीना देशांतर गमनमां आवेली विचित्र कथाओ. .	१२३
१६	वसुदेवजीना अधिकारमां चारुदत्तनुं चरित्र तथा विष्णुकुमारकथा.	१२६
१७	बीजा अधिकारमां सुषमा अने पवन प्रमुख हिमालय वर्णन।	

तृतीय खंमस्यानुक्रमणिका

चतुर्थ खंमस्यानुक्रमणिका.

श्री समरादित्यकेवलीनो रास.

पंडित श्री उत्तमविजय शिष्य पंडितप्रवर
श्री पद्मविजयजी विरचित.

आ रासना नवे खंडमां समरादित्यनो जीव जुदा
जुदा मुनिओना समागममां आवे छे. दरेक प्रसं-
गनां मुनिओनां वृत्तांत घणां रसिक अने वै-
राग्यमय भावनावालां होवाथी स-
मस्त श्रीसंघने वांचवा जणवा माटे
उपयोगी जाणीने

छपावी प्रसिद्ध करनार

श्रावक भीमसिंह माणेक

जैनपुस्तक वेचनार तथा प्रसिद्ध करनार:
मांडवी. शाकगली. मुंबइ.
कालबादेवी कोलभाट लेनमां आवेला निर्णयसागर प्रेसमां छाप्यो.
आसो सुदि पूर्णीमा संवत १९७०
सन १९१४

Printed by Ramchandra Yesu Shedge, at the Nirnaya-sagar Press, 23, Kolbhat Lane, Bombay.

Published by Bhimsi Maneck, Mandvi, Sackgalli, Bombay.

॥ प्रस्तावना ॥

आ "समरादित्य केवलीनो" रास बुद्धिनो विकास करनार सुबोधक ग्रंथ छे. तेमां वैराग्य भावनाने प्रधानता आपवामां आवी छे. बुद्धिना सर्व अंशुओ वैराग्य उपर महान् प्रकाश पामी शके एवी चमत्कारी योजनाओनोज आ रासमां संग्रह करेल छे. मनुष्यनी जींदगीरूप नौका अनेक संसाररूपी समुद्रनां तोफानोमांथी जीपलावी क्यां पहोंचे छे अने कर्मरूपी पवन ते नौकाने क्यां लइ जाय छे तेनां असरकारक दृष्टांतोनो संग्रह आ ग्रंथमां दाखल करेल छे. हृदयनी वृत्तिओ बहु प्रबल अने वेगवाली छे, तेने न्यायमार्गे दोरवानां अने तेनो विस्मयकारक संयम करवानां अनेक उदाहरणो आ ग्रंथमां आपवामां आव्यां छे.

कर्मोने वश थयेला आत्माओनां हृदय उपर केवा कठोर प्रहार पडे छे! आटलुं छतां आत्माओ तेने सहन करी केवी स्थितिमां आवे छे! एवां चमत्कारी चरित्रोथी आ ग्रंथ घणो अलंकृत करेल छे.

आ ग्रंथमां श्री समरादित्य केवली केवा प्रकारना जीवनमांथी केवी जातना उच्च जीवनने प्राप्त थया अने दरमीयान तेना आगलना भवोमां कइ कइ जातना फेरफारो थया तेनुं चरित्र एटलुं बधुं रसमय बनाववामां आव्युं छे के ते वांचवाथीज वांचकोने खात्री थशे. आ रासना नव खंड करवामां आव्या छे अने ते दरेक खंडमां महात्मा समरादित्यना एक एक भवनुं वर्णन करवामां आवेल छे.

प्रथम खंडमां शरुआतथी बे नायकोनां चरित्र आलेखवामां आवेल छे. तेमां एकनुं नाम गुणसेन छे अने बीजानुं नाम अग्निशर्मा छे. आ उभय आत्माओ दरेक भवमां सहचारीरूपे चाल्या आवे छे. ज्यारे गुणसेनना आत्मानुं चरित्र निर्मल छे तेथी करी उच्च श्रेणीए चढतो जाय छे त्यारे बीजा आत्मानुं चरित्र मलिन अने दूषित छे तेथी नीच श्रेणीए उतरतो जाय छे.

बीजा खंडमां गुणसेन अने अग्निशर्मानां जीव अनुक्रमे सिंह अने आनंद नामे पिता अने पुत्र थाय छे.

त्रीजा खंडमां तेओ बंने अनुक्रमे शिखिकुमार अने जालिणी नामे पुत्र अने माता थाय छे.

चोथा खंडमां तेओ धन अने धनश्री नामे पति पत्नी थाय छे.
पांचमा खंडमां तेओ जय अने विजय नामे जाइ थाय छे.
छठा खंडमां तेओ धरण अने लक्ष्मी नामे पति पत्नी थाय छे.
सातमा खंडमां तेओ सेन अने विषेण नामे पितराइ जाइ थाय छे.
आठमा खंडमां तेओ गुणचंद्र अने वाणमंतर विद्याधर थाय छे.
नवमा खंडमां तेओ बंने अनुक्रमे समरादित्य अने गिरिसेन थाय छे.

आ रासना नवे खंडमां समरादित्यनो जीव जुदा जुदा मुनिओना समागममां आवे छे. दरेक प्रसंगनां मुनिओनां वृत्तांत घणां रसिक अने वैराग्यमय जावनावालां होवाथी समरादित्य महात्मानो जीव वैराग्यनी उच्च जावनाने प्राप्त थतो जाय छे. समरादित्यना जवमां बाल्यवयथीज तेने वैराग्य आवे छे. समरादित्यना पिता तेने संसारनो स्वाद चखाकवा घणो प्रयत्न करे छे, पण ते महात्मा पोतानी वैराग्यमय जावनामां अकग रहे छे. विवाहित थयेला महात्मा समरादित्ये पोतानी बे नव वधूओने विषय रागमांथी मुक्त करी पोतानी अनुरागिणी बनावी ए प्रसंग उत्तम उपदेशरसथी जरपूर छे.

ते पछी महात्मा समरादित्य प्रजासाचार्य गुरुना हाथथी चारित्र ग्रहण करे छे. महात्मा समरादित्यनी प्रशंसा सांजलीने गिरिसेन ईर्षालु थाय छे. ते महात्मा हवे विहार करता करता अयोध्या नगरीमां आवे छे. त्यांथी रेकवाहपुरमां आवीने अशोक वनमां काउस्सग्गध्याने रह्या छे. त्यां जवपरंपरानो वैरी गिरिसेन आवी चडे छे. ते महात्माने जोइने कोपथी प्रज्वलित थाय छे. पछी ते दुष्ट महात्माना शरीर पर लुगकां वींटालीने तेना पर तेल रेकीने अग्नि लगाडे छे. ध्यानमां लीन थयेला आ महात्मानुं आ समयनुं चिंतवन एवुं उंचा प्रकारनुं थतुं जाय छे के ते क्षपकश्रेणी पर आरूढ थइ पोताना आत्माने निर्मल करी तेने योगमां स्थापन करे छे के तरतज तेने "केवलज्ञान" थाय छे अने तेथी करी "आ महात्मा समरादित्य केवली" कहेवाय छे. ते महात्माना महिमाथी वेलंधरकुमारनुं आसन चलायमान थाय छे, तेथी ते अवधिज्ञानथी जोइने

कुसुम वगेरे लइने अनेक देव सहित त्यां आवे छे अने महात्माना शरीर उपरथी वींटालेलां लुगडां काढी नाखे छे. ते जोइने गिरिसेन क्षोभ पामे छे. आ अवसरे मुनिचंद राजा पोतानी राणीओ सहित त्यां आवे छे अने वेलंधर देवने पूछवाथी आ सघली हकीकत कहे छे. आ वखते केवलज्ञानना महिमा माटे सोहमइंद्र पण देव सहित आवे छे अने केवलीनी स्तवना करे छे. लोको पण आ हकीकत सांभली वंदनार्थे त्यां आवे छे. गिरिसेनना मनमां अकार्य कर्यानुं चिंतवन थाय छे अने कुशल पक्षनुं बीज रोपाय छे अने ते घर भणी जाय छे. त्यारबाद महात्मा समरादित्य केवली धर्मदेशना आपे छे. त्यारबाद इंद्र पोताने स्थानके जाय छे. पछी मुनिचंद राजा समरादित्य केवलीने गिरिसेने करेला उपसर्गनो संबंध पूछे छे, तेथी ते गुणसेन अने अग्निशर्माना भवथी मांडीने सघली हकीकत कहे छे. ते सांभलीने राजा, सामंत, वेलंधर देव वगेरेने संवेग आवी जाय छे. वेलंधर गिरिसेनने आनुं परिणाम शुं आवशे ते केवलीने पूछे छे. तेथी केवली कहे छे के ते नारकीमां जशे अने त्यां तीव्र वेदना भोगवशे अने त्यांथी अनंतो संसार रखडशे. ते वखते मुनिचंद राजानी राणी नर्मदा नारकीनी वेदनानुं वर्णन, सुलसमंजरी देवनानां विमानोनुं वर्णन, अने बीजी राणी सुलोचना सिद्धनां सुखनुं वर्णन पूछे छे. आ वर्णन अद्भुत अने रसिक वाणीथी कहीने केवली श्रोताओनां हृदयने आर्द्र बनावी दे छे. त्यारबाद वेलंधरे केवलीने सिद्धनुं स्वरूप पूछवाथी तेनुं वर्णन पण एक उत्तम दृष्टांतथी आपे छे.

आ वधी हकीकत सांभलीने राजा राणी वगेरे परम आनंद पामे छे, अने केवलीनी पासे चारित्र ग्रहण करवा अभिलाषा देखाडे छे अने तेमना शिष्य शीलदेवनी पासे व्रत ग्रहण करे छे.

आ समये वेलंधर देव केवली महाराजने पूछे छे के जे गिरिसेने आपने उपसर्ग कर्या छे ते भव्य छे के अभव्य छे. ते बीज पाम्यो के नथी पाम्यो अने ते पामशे के नहीं. तेना उत्तरमां केवली महाराज कहे छे के भव्य छे पण हजी बीज पाम्यो नथी. असंख्य पुद्गलपरावर्त थया पछी शार्दूलसेन राजानो अश्व थशे त्यारे बीज (समकित) पामशे. त्यार-

पछी असंख्याता जव जमीने शंख नामे ब्राह्मण थशे अने ते जवमां ते केवलज्ञान पामशे. आ हकीकत सांजळीने वेलंधर पोताने स्थानके जाय छे अने केवली महाराज विचरता विचरता सिद्धगिरि आवे छे. त्यां केवली समुद्घात करी लोकाग्रे जाय छे. आ प्रमाणे महात्मा समरादित्य केवलीनुं चरित्र संपूर्ण थाय छे. एकंदर आध्यात्मिक रसनो उत्तेजक अने वैराग्य जावनानो दर्शावनार आ महान् ग्रंथ आदरपूर्वक वांचवा लायक छे. दरेक प्रसंगे दर्शावेला विचारो निर्दोष, गहन अने बोधक छे. समय समयनां चित्रो उत्कृष्ट जावथी जरपूर छे. केटलाएक प्रसंगोमां स्वाजाविकपणे उपजेला वैराग्यना विचारोनो निर्णय धार्मिक तेमज व्यावहारिक विषयमां ग्रंथकारना उत्कृष्ट ज्ञाननी प्रतीति आपे छे. आ ग्रंथमां वैराग्य दर्शावनारा विषयो प्रसंगोपात घणा आवे छे. तेउं दया, प्रेम, वैराग्य अने शांतिनी उत्तमोत्तम जावनानुं दर्शन करावे छे.

अज्ञानता के बुद्धिनी अपूर्णता जूलोनुं कारण छे. जगतमां सद्गुणो हमेशां जय पामे छे, कर्मोना संयोगथी स्वजाव घमाय छे, स्वजाव प्रमाणे कार्यो थया करे छे, दुर्गुणो माणसोने दुर्मार्गे दोरी जाय छे, मन अने शरीरना स्वाजाविक वेगो तृप्ति पाम्या वगर विरमता नथी तेमज प्रेम, जय, काम, क्रोध, लोज, जाव अने अजाव वगेरे अंतःकरणनी स्वाजाविक वृत्तिउंनो तेना सम्यग्योगमां उपयोग थाय छे इत्यादि धार्मिक अने नैतिक तत्त्वोनुं स्वरूप आ ग्रंथमां आवे छे; तेथी आ ग्रंथ जैन विद्वान् अज्यासी, वांचनोत्साही अने धार्मिक पुरुष के स्त्रीने संपूर्ण वांचवा योग्य छे.

आवा उपयोगी ग्रंथोना आविर्जावथी जैनसाहित्य पूर वेगथी वृद्धि पाम्या वगर रहेशे नहीं. आ महान् ग्रंथना रचनार महानुजाव श्रीपद्मविजय गणिए पोतानी सुबोधक कृतिथी सकल जैन संघने जारे उपकार करेलो छे. आवा निःस्वार्थ परोपकारी महात्माना चारित्रजीवनने जेटलो धन्यवाद आपीए तेटलो थोडो छे. एवा महात्माउं आ सृष्टि उपर पुनः प्रगट थाय एवीज अंतरनी प्रार्थना छे.

विज्ञप्ति.

सुज्ञ जैन बंधुओने जणाववानुं के आ समरादित्य केवलीनो रास अमारा तरफथी प्रगट करवामां आव्यो हतो. तेनी तमाम घणा वखत पहेलां खपी जवाथी तेमज तेनी मागणी वारंवार आववाथी आ बीजी आवृत्ति यथामति संशोधन करीने अमोए बहार पाडी छे.

क्षमापना.

आ ग्रंथनी अंदर मतिदोषथी कांइ पण भूलचुक रही होय अगर सिद्धांत विरुद्ध लखायुं होय तो ते सर्व वांचनार श्री संघनी समक्ष मिछा डुक्कड हो, अने वांचनारा सज्जनोए ते भूलो सुधारी वांचवी एवी अमारी नम्रतापूर्वक विनंती छे. एवी अमारी नम्रामण छे.

मुंबई, मांडवी, शाकगली.
आसो सुदि पूर्णीमा १९७०
ता. ४ ऑक्टोबर १९१४

श्रावक भीमसिंह माणकेना
कार्यप्रवर्तको.

जाहेरखबर.

पांमव चरित्र. (श्री पांच पांमव तथा नेमीश्वर भगवान अने श्री कृष्णादिकनुं सविस्तर गुजराती भाषांतर.) आ ग्रंथमां श्री नेमीश्वर भगवान. बलभद्र. वासुदेव जे श्रीकृष्ण. प्रतिविष्णु जे जरासंध पांमव, कौरव. भीष्मपितामह. कर्ण. द्रोणाचार्य अने कृपाचार्यादिक अनेक वीर पुरुषोनां चरित्रो आवेलां छे. तेमज जिनधर्माभिलाषी शुद्ध प्रकाशन् सम्यग्दृष्टि विवेकी सज्जनोना मनने आनंद उत्पन्न करनारी कथाओ वैराग्य. नीति तथा अन्य प्रतिज्ञा प्रमुखना बोध करे छे. आ ग्रंथ पहेलां गुजराती अक्षरोमां छपायेलो हतो. ते सर्वा जगाए हमणां शास्त्री अक्षरमां छपाव्या छे. अने तेनी साथे मन रंजन करे तेवा रंगीन चित्रो पण नाख्या छे. किंमत रु० ५-०-०

जाहेरखबर.

वैराग्य कल्पलता पूर्वार्ध. (श्री यशोविजयजी उपाध्याय कृत.)–आ ग्रंथ एटलो तो रसिक तथा जैनवर्गना श्रावको अने साधु साध्वीउने माटे उपयोगी छे के ते सर्वेने आदिथी ते अंत सुधी वांचवा जलामण करीए ठीए.

आ ग्रंथनी रचना काव्यरूपे गुंथेली छे अने तेमां जीवने संसारभ्रमणथी केवी केवी विटंबनाउं जोगववी पडे छे तेनो कथाउं द्वाराए आवेहुब चितार आप्यो छे. तेम आ ग्रंथ रसिक बनाववा माटे साहित्यनो सार लइ तेमां रसालंकारोने पण घणीज उत्तम रीतथी प्रदर्शित करेला छे. आ ग्रंथ जणवाथी काव्योनो बोध थवा साथे जैन दर्शननां तत्त्वोनो घणोज बोध थाय छे एटलुंज नहीं, पण आ ग्रंथना अभ्यासथी अमारा स्वधर्मी बंधुउने जवनाटकनुं स्वरूप केवुं छे तेनो खरेखर ख्याल थाय छे. वली आ ग्रंथ मुनिराजो आदिकने व्याख्यानमां उपयोगी थइ पडे तेवो छे, माटे दरेक जैन बंधु आ ग्रंथनो लाज लेशे. (पानांआकारे.) किमत रु० ३–०–०

जैन कुमारसंजव महाकाव्य. (श्री जयशेखसूरि कृत.)–आ नामनुं अति अद्भुत तथा काव्यचमत्कृतिवालुं अने साहित्यना सारथी जरेलुं रमणिक काव्य अमोए तेना गुजराती अर्थ सहित छपावी प्रसिद्ध कीधुं छे.

आ ग्रंथनां काव्यनी रचना एटली तो मधुर अने विद्वत्ता जरेली छे के ते वांचवाथी दरेक विद्वानना मनने आश्चर्य थया विना रहेतुं नथी. आ काव्यमां श्री रुषजदेव प्रजुनुं जरतकुमारना जन्म पर्यंत वर्णन आपेलुं छे अने तेम करीने आ काव्यनुं नाम "जैन कुमारसंजव" एवुं नाम सफल कर्युं छे. वली आज दिन सुधीमां जैन जाइउने तथा मुनिराजो वगेरेने संस्कृत जाषानुं व्याकरण जणी अन्यदर्शनीउनां जे काव्यो जणवानी जरुर पमती हती, ते अमोए गुजराती अर्थ साथे छपावी प्रसिद्ध करेला आ काव्यग्रंथथी दूर थइ छे. वली आ काव्यग्रंथ बीजा काव्यग्रंथो करतां कवित्वशक्तिमां चमीआतो होवाथी जैन बंधुउने उपयोगी छे.

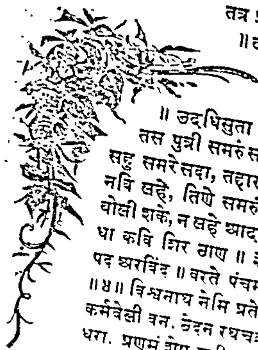
किमत रु० १–१२–०

अथ

॥ पंम्ति श्रीपद्मविजयजी विरचित श्रीनेमीश्वर भगवाननो रास प्रारंभः ॥

तत्र प्रथम खंडः

॥ दोहा ॥



॥ उदधिसुता सुत सुत करे, ते वाहन होय जास ॥
तस पुत्री समरुं सदा, पूरो मुज मुखवास ॥ १ ॥ तुजने
सहु समरे सदा, तहारा गुण विख्यात ॥ तुज विण शिवपद
नवि लहे, तिणे समरुं तुज मात ॥ २ ॥ तुज विण नवि
बोली शके, न लहे आदरमान ॥ वृद्धवादी सरिखा जुओ, की-
धा कवि गिर गाण ॥ ३ ॥ चरम जिणंद चोवीशमो, प्रणमुं
पद अरविंद ॥ वरते पंचम कालमां. शासन जस सुखकंद
॥ ४ ॥ विश्वनाथ नेमि प्रते, जन्म थकी ब्रह्मचार ॥ नमीये
कर्मवेली वन. डेहन रथचक्रधार ॥ ५ ॥ गौतम प्रमुख जे गण-
धरा. प्रणमुं शेष सूरीश ॥ जस अनुक्रमथी आवीयो. आगम
एह जगीश ॥ ६ ॥ श्रीगुरुपदपंकज नमुं. जे नवसमुद्र जि-
हाज ॥ कृत्याकृत्यविचारणा. जिणथी लहीये आज ॥ ७ ॥ राजुल कन्या
परहरी. लीधो संयमसार ॥ नम प्रणमीने तेहनुं. कहेशुं चरित्र उदार ॥ ८ ॥
कृष्ण वासुदेव जाणीये. बलभद्र तेहना बंधु ॥ तेह प्रसंगथी आवशे. त्रीजा
जे जरासिंधु ॥ ९ ॥ अविरलवाणी अति घुरी. नहीं मुज वचन सवाद ॥ पण
प्रभुचरित्र सुधारसे. लेहशे अति आह्लाद ॥ १० ॥ जस नामाक्षर ग्रहण-
थी, थाये जन्म कयत्थ ॥ शुं कहीये पण तेहनुं. गुणवर्णन होय जत्थ ॥ ११ ॥
बीजा पण जिनवर तणां. चरित्र अछे सुखकार ॥ वली विशेषथी सुखकरु,
जिनवर नेमिकुमार ॥ १२ ॥ आंबनां फल सहेजे हुवे. सरसा केवल तेह
॥ कहेवुं शुं सरसाइनुं. साकर भेल्यां जेह ॥ १३ ॥ केवल नेमि जिन चरित्र,
सरस अछे गुणगेह ॥ कहेतां राजुल सह वली. आपे अधिको नेह ॥ १४ ॥

श्रोताजन सुणजो सहु, चित्त राखी एक ठाम ॥ जिणे उद्यम ए माहरो, सफल होय गुणकाम ॥ १५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ देशी वींछीयानी ॥

॥ संसारसमुद्रमां तरी समो, जिनधर्म मनुज अवतार रे ॥ ते पामे पण दुर्लन कह्यो, संयम आदरवो सार रे ॥ १ ॥ नवि नावना नावो नावशुं, जिम नावे नेमिकुमार रे ॥ न० ॥ ए आंकणी ॥ यडुक्तं आगमे ॥ चत्तारि परमंगाणि, डुल्लहाणि य जंतुणो ॥ माणुसत्तं सुईसद्धा, संजमं मिय वीरियं ॥ १ ॥ ते पामे पण विरला मिले, परने जे करे उपगार रे ॥ जे कारण जिनवर सारिखा, उपदेश करे श्रीकार रे ॥ न० ॥ २ ॥ यडुक्तं ॥ सिद्धारथकुला जिणवरा, वि धम्मोवएसमाईहिं ॥ अन्नेसिं उवयारं, कुणंति कारुणरसनिहिणो ॥ २ ॥ द्रव्य नावे परउपगार छे, द्रव्यथी होय अर्थ ने काम रे ॥ होय धर्मनुं देवुं नावथी, तेहनो विवरो सुणो आम रे ॥ न० ॥ ३ ॥ नवानंदी पातक जीवने, होय वल्लन द्रव्य उपगार रे ॥ विपरीतने नाव ते प्रिय होय, होय निर्वेदी संसार रे ॥ न० ॥ ४ ॥ अर्थ काम ते नवरुख मूल छे, तेहनो जो देवं उपदेश रे ॥ तो रोगीने कुपथ्य समुं, नवि थाये गुण सुविशेष रे ॥ न० ॥ ५ ॥ नर सुरनव मांहि पामीया, कामार्थ तो वार अनंत रे ॥ तस कारण दुःख पण नोगव्यां, काम अग्निथी जन प्रज्वलंत रे ॥ न० ॥ ६ ॥ जे द्रव्यना अर्थी प्राणीया, नमे मह्यिलमां लहे डुःख रे ॥ पामे तो थीक राख्या नथी, धिक् अर्थने नहीं कहीं सुख रे ॥ न० ॥ ७ ॥ यतः ॥ अर्थानामर्जने डुःख,-मर्जितानां च रक्षणे ॥ आये डुःखं व्यये डुःखं, धिगर्थोऽनर्थनाजनम् ॥ ३ ॥ गुरु पण तस दीये उपदेश जो, तो वह्निमां घृतनो होम रे ॥ ते कारणथी नवि उपदिशे, उपदेश द्रव्य अर्थ काम रे ॥ न० ॥ ८ ॥ उपदेश ते देवो धर्मनो, जिनवर उपदेश्यो सार रे ॥ सुर नर सुख मोक्षनां सुख दीयां, जिणे कीधो ए उपगार रे ॥ न० ॥ ए ॥ यडुक्तं ॥ सुर नर सुहाइ मरकडा,-इं तेण दिणाइं निरुइ सुहं च ॥ परमत्थ बंधवेणं, दिणो जिणेस जिणधम्मो ॥ ४ ॥ पंमित पण ते सज्ञान वली, बंधव हितकामी तेह रे ॥ अवि डुर्लन कारण सुख दीये, श्रीजिनवरनो धर्म जेह रे ॥ न० ॥ १० ॥ ते धर्मना चार प्रकार छे, दानादिक पण तेह मांहि रे ॥ ते नावना उत्तम सर्वथी, नवि नाव विना फले क्यांहि रे ॥ न० ॥ ११ ॥ जे नावरहित दानादिक, फल साधवा नहीं समर्थ रे ॥ दानादिक विनु पण एकली, नावना

दीये इछित अथ रे ॥ भ० ॥ १२ ॥ वैराग्यथी भावता प्राणीया, चिहुं गति
संसारसरूप रे ॥ अनुक्रमे केवल पामीने, थाये निज गुणनो भूप रे ॥ भ०
॥ १३ ॥ संसारनी भावना चालनी, तिणे करी शोधे भवमग्ग रे ॥ विवे-
करख वली ते लहे, वली भव्यजीव अपवग्ग रे ॥ भ० ॥ १४ ॥ ते भव-
सरूपने भावता, श्रीनेमि जिणंद मुणींद रे ॥ मूक्यो ते संग संसारनो, तेह-
नां गाउं गुणवृंद रे ॥ भ० ॥ १५ ॥ नव भव लगे जिम प्रीते वस्या, नेमि
जिनवर राजुल नारी रे ॥ नवमे भव तेहने प्रणमीये, नव भव गाथा चिहुं
धार रे ॥ भ० ॥ १६ ॥ यदुक्तं ॥ धण धणवइ सोहम्मे, चित्तगइ खेयरो
य रयणवई ॥ माहिंदे अपराजिय, पीयमई आरणे तत्तो ॥ ५ ॥ संखो
जसमइ भज्जा, तत्तो अपराजिए विमाणम्मि ॥ नेमी राइमई चिय, नवम
भवे दोन्नि वंदामि ॥ ६ ॥ गुरु उत्तमविजय कृपा थकी, थइ एहनी पहेली
ढाल रे ॥ कहे पद्मविजय श्रोताघरे, होजो नित्य मंगलमाल रे ॥ भ० ॥
॥ १७ ॥ सर्व गाथा ॥ ३२ ॥ सर्व श्लोक तथा गाथा मली ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ए संसार अनादि छे, भवनी को नहीं आदि ॥ तो किम भव कहो
छो इहां, इम कोइ पूछे वादी ॥ १ ॥ तस उत्तर जे भव कह्या, समकित
पाम्या जछ ॥ ते भवथी लेखे गण्या, बीजा भव अकयछ ॥ २ ॥ ते धनकु-
मर ने धनवती, समकित पाम्यां केम ॥ दुर्लभ जे संसारमां, ते कहुं सुण-
जो एम ॥ ३ ॥ यदुक्तं ॥ लब्भइ सुरसामित्तं, लब्भइ पहुयत्तणं न संदेहो ॥
एगं नवरं न लब्भइ, दुल्लह रयणं च सम्मत्तं ॥ १ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ देशी ललनानी ॥

॥ जंबुद्वीप सोहामणो, लक्ष योजन विस्तार ॥ ललना ॥ भरतक्षेत्र ते-
हमां भलुं, जिहां उत्तम अवतार ॥ ल० ॥ जंबुद्वीप सोहामणो ॥ ए आं-
कणी ॥ १ ॥ अचलाना शिर उपरे, रत्नोपम लहे जेह ॥ ल० ॥ नाम अ-
चलनयरी भली. मानुं अलका एह ॥ ल० ॥ जं० ॥ २ ॥ धन धान्ये समृ-
द्ध ते, यद्यपि देश पर्यंत ॥ ल० ॥ नापण लोक वहु परे, देवपूजा विरचंत
॥ ल० ॥ जं० ॥ ३ ॥ देश अनेकना वाणीया, सहस्र गमे आवंत ॥ ल०
॥ बाहिर सरोवर शोभतुं, वन आराम सोहंत ॥ ल० ॥ जं० ॥ ४ ॥ धर्म-
शाला जिहां अति घणी. महोटा महोल आवास ॥ ल० ॥ तपसी लोक
वसे जिहां, कीरान वहुली जास ॥ ल० ॥ जं० ॥ ५ ॥ जिहां अति उप-

सनी दानना, लोक वसे धनवंत ॥ ल० ॥ महोटा आवासे कोरणी, को रणी नहीं जसवंत ॥ ल० ॥ जं० ॥ ६ ॥ मूंगा पारका दोषने, कहेवा ले- या अजाण ॥ ल० ॥ अंध जे परस्त्री देखवा, इणी परे नयर मंडाण ॥ ल० ॥ जं० ॥ ७ ॥ जनाकीर्ण ते नयरमां, बंधन कुसुमने होय ॥ ल० ॥ निर्दयतापणुं खड्गमां, ए जनने नहीं कोय ॥ ल० ॥ जं० ॥ ८ ॥ प्रासादशृंगनी उपरे, दंड देखीजे त्यांहि ॥ ल० ॥ नाकारो को नवि कहे, वात देवानी ज्यांहि ॥ ल० ॥ जं० ॥ ए ॥ यडुक्तं ॥ यत्र निःस्त्रृंशता खड्गे, बंधनं कुसुमेषु च ॥ दंडः प्रासादशृंगेषु, जनेषु न कदाचन ॥ २ ॥ विक्रमधन तिहां राजीयो, जे धर्मे आसक्त ॥ ल० ॥ विक्रम धन छे जेहने, नाम यथार्थ छे युक्त ॥ ल० ॥ जं० ॥ १० ॥ शत्रुने त्रास पमाडतो, यम उपम घटमान ॥ ल० ॥ मित्रनेत्रने शशी समो, आणंद देवा ठाण ॥ ल० ॥ जं० ॥ ११ ॥ कल्प- वृक्ष सम लोकने, वेरीने वज्रदंड ॥ ल० ॥ न्यायमार्गे तिम चालतो, दीपे तेज प्रचंड ॥ ल० ॥ जं० ॥ १२ ॥ दश दिशथी आवे संपदा, जिम नई समुद्रमां सार ॥ ल० ॥ कीर्त्ति प्रगट जिम गिरि थकी, निऊरणां निरधार ॥ ॥ ल० ॥ जं० ॥ १३ ॥ जीम कांत गुण जेहना, शत्रु मित्रने ठाम ॥ ल० ॥ अब्धि रत्न मत्स्यादिके, जिम तिम नृप गुणधाम ॥ ल० ॥ जं० ॥ १४ ॥ यडु- क्तं ॥ जीमकांतनृपगुणैः, स बभूवोपजीविनाम् ॥ अधृष्यश्चाजिगम्यश्च, या- दो रत्नैरिवार्णवः ॥ ३ ॥ धर्मचारिणी तस धारणी, धरणी परे थिर जेह ॥ ल० ॥ राणी निर्मल गुणधरा, शीलाजरणी देह ॥ ल० ॥ जं० ॥ १५ ॥ सर्व अंग रूप शोजतुं, पुण्य लावण्यनुं गेह ॥ ल० ॥ मूर्त्तिवंत मानुं संपदा, नृपतिने अति नेह ॥ ल० ॥ जं० ॥ १६ ॥ वाणी वाणी सारिखी, तस वा- हन गति खास ॥ ल० ॥ अधिकी इंद्राणी थकी, नहीं उपमा जग जास ॥ ल० ॥ जं० ॥ १७ ॥ राय राणी सुख जोगवे, बीजी ढाल रसाल ॥ ल० ॥ पद्म कहे श्रोताघरे, होजो मंगलमाल ॥ ल० ॥ जं० ॥ १८ ॥ सर्व गाथा ॥ ५३ ॥ सर्व श्लोक तथा गाथा मली ॥ ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिन राणी स्वपनमां, देखे अंब अजिराम ॥ कोयलडी टहुका करे, फलीयो गुणनो धाम ॥ १ ॥ कोइ पुरुष ते आम्रने, वावे अंगण मुऊ ॥ तस अवदात उंचे स्वरे, सांजलजे कहुं तुऊ ॥ २ ॥ काल केतोइ-

श्री[illegible] राग [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] है ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] है, [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] है ॥ [illegible]

[illegible] है, [illegible] है ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] है, [illegible] है, [illegible] है, [illegible]

[illegible]

जिम विचरे तिम एह ॥ राजकुमरशुं परवस्यो रे, भमे उद्यानमां तेह रे ॥ ॥ रा० ॥ १५ ॥ लोक वसे जे तिहां कणे रे, गुण संभारे तास ॥ रूप यौवन बुद्धि प्रमुखना रे, वली लावण्य विलास रे ॥ रा० ॥ १६ ॥ हृदयफलक मांहे लिखी रे, मृगअक्षी मन ध्याय ॥ पभीठंदो लिखे शीखवा रे, चित्रकरा शुभकाय रे॥ रा० ॥ १७ ॥ ढाल त्रीजी एणी परे कही रे, धनकुमर अधिकार ॥ धनवतीनी हवे वारता रे, पद्म कहे सुखकार ॥ रा० ॥ ॥ १८ ॥ सर्व गाथा ॥ ७६ ॥ सर्व श्लोक तथा गाथा मली ॥ ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुसुमपुरे इण अवसरे, सिंह परे सिंह राय ॥ यशकीरति जस अति घणी, समरथ रण करणाय ॥ १ ॥ चंद्रलेखा परे निर्मली, विमला तेहनी नार ॥ पट्टराणी प्राणवल्लभा, देवी भूचरी अनुहार ॥ २ ॥ बहु पुत्रोपरि इछतां, पुत्री हुइ गुणधाम ॥ अनुपम आकृति जेहनी, नृप दीये धनवती नाम ॥ ३ ॥ रत्यादिक रमणी भली, रूपे जींती तेह ॥ युवती योग्य चोसठ कला, दिन थोडे ग्रहे तेह ॥ ४ ॥ भ्रम सहु लोकने उपजे, सरसती सरखी जाल ॥ मोहे ते सवि लोकने, मानुं नाखी जाल ॥ ५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ चतुर सनेही मोहना ॥ अथवा क्रीमा करी घरे आवीयो ॥ ए देशी ॥

॥ एक दिन सखीए परवरी, जोवा गइ उद्यान रे॥ पामे शोभा अति घणी, वृक्ष ते पल्लव वान रे॥ ए० ॥ १ ॥ ॥ सप्तछद फूली रह्यो, करता भ्रमर गुंजार रे ॥ वेसे भमता आवी तिहां, दीसे अति मनोहार रे॥ ए० ॥ २ ॥ पंचवाण पाणी थइ, मूके नवलां बाण रे॥ स्वछांबु सरोवर भर्युं, खग क्रीडे तिण ठाण रे ॥ ए० ॥ ३ ॥ सारस खगनां जोमलां, कैंकारव करे तेह रे ॥ राजहंस तिहां शोभता, दानशाला मानुं जेह रे॥ ए० ॥ ४ ॥ ते उपवनमां विचरती, स्वेछाए ते नारी रे ॥ इंद्राणी नंदनवने, विचरे तिम गुणधारी रे॥ ए० ॥ ॥ ५ ॥ इणी परे विचरतां तेहनी, वृक्ष अशोकनी हेठ रे ॥ चित्रकार एक मनुजने, नजर गइ तिहां ठेठ रे ॥ ए० ॥ ६ ॥ तस हस्ते चित्रपट्टिका, ले वलथी निज हाथ रे॥ नरनुं रूप देखी करी, चिंते कमलिनी साथ रे ॥ ए० ॥ ७ ॥ रूपे विस्मित सा कहे, चित्रकारने एम रे ॥ केहनुं रूप ए चितर्युं, सुर असुर के केम रे ॥ ए० ॥ ८ ॥ अद्भुत रूप ए संभवे, केहनुं नहीं ए रूप रे॥

उदार देखाववा, तें लख्युं एह सरूप रे ॥ ए० ॥ ए ॥ लोक अनेक
आपतां, इरू हुई विधि भ्रांत रे ॥ तो ए रूप उपायवा, किहां समर्थ
पंत रे ॥ ए० ॥ १० ॥ चित्रकारक कहे तेहने, चतुराइ नहीं मुज रे ॥
र पुरुषनी वारता, कहुं ते सांभल तुज रे ॥ ए० ॥ ११ ॥ अचलपुरा-
पुत्रनुं, आलेख्युं में रूप रे ॥ कूटलेखक मुजने कहे, देखी तास अ-
रे ॥ ए० ॥ १२ ॥ उत्कंठित देवांगना, गावे जास चरित्र रे ॥ शशिनि-
ज जश जेहनो, जास चरित्र पवित्र रे ॥ ए० ॥ १३ ॥ गुण उत्कर्ष देखी
री, रहत प्रछन्न अनंग रे ॥ देखी जास गंभीरता, अब्धि क्षार मानुं चंग
॥ ए० ॥ १४ ॥ निरखे एह जे पुरुषने, चित्र लहे मन तेह रे ॥ मुजने सु-
रत्नमां गणे, एहमां नहीं संदेह रे ॥ ए० ॥ १५ ॥ कूपदर्डुरनी सारिखी,
शंसा करे ताम रे ॥ मुग्धा तुं कांइ नवि लहे, दीठो नहीं ते जाम रे ॥
॥ १६ ॥ इंद्राणी मोही रहे, देखी तेहनुं रूप रे ॥ नेत्रविनोदने कार-
, ए आलेख्युं स्वरूप रे ॥ ए० ॥ १७ ॥ देखी सांभली वयणडुं, तस अनु-
णी अत्यंत रे ॥ मनसंकल्प लही करी, कमलिनी तव बोलंत रे ॥ ए० ॥
१८ ॥ जोवा रूप आलेखीयुं, एम कही आगल जाय रे ॥ धनवती
न हृदय थकी, तेहनी साथे थाय रे ॥ ए० ॥ १ए ॥ पद्मसंकोचमुखी तदा,
पाछुं जोती जाय रे ॥ पदे पदे खलना पामती, गृह सन्मुख सा थाय रे ॥
ए० ॥ २० ॥ रति पण क्यांही नवि लहे, नवि भुंजे न पीवंत रे ॥ निद्रा
नावे रयणीमां, उलस वालस हुंत रे ॥ ए० ॥ २१ ॥ स्नान तज्युं अर्चा त-
अलंकार तजे सर्व रे ॥ अहनिश चिंते तेहने, जिम श्रावक व्रत पर्व रे ॥
ए० ॥ २२ ॥ मोहवशे चेष्टा करे, कामशास्त्र कही जेह रे ॥ तिणे तजीये
ए मोहने, जिणथी दुःख अछेह रे ॥ ए० ॥ २३ ॥ एक दिन पूछे कमलिनी,
धनवती कुमरीने सार रे ॥ पीडे शे दुःखे करी, कहे तुज दुःखनो पार रे ॥
ए० ॥ २४ ॥ कृतकृत्रिमकोपा कहे, धनवती तेहने वाणी रे ॥ पूछे बाह्य लो-
कनी परे, मुजने केम अजाणी रे ॥ ए० ॥ २५ ॥ बीजुं महारुं हृदय छे,
तुं सखीमात्र न होय रे ॥ तुज प्रश्ने लज्जित थइ, अथवा जीवित जोय
रे ॥ ए० ॥ २६ ॥ ठलंभो दीधो मुने, तें साचो मुज एह रे ॥ में जाण्युं ते
ताहरो, छतो मनोरथ जेह रे ॥ ए० ॥ २७ ॥ धनइच्छा जाणी करी, में पू-
छ्युं नैमित्त रे ॥ प्रत्यय दीठा जेहना, ते कहे सुण शुभ चित्त रे ॥ ए० ॥

॥ २८ ॥ धैर्य धरे सुण तुज सखी, शीघ्र होशे वर सार रे ॥ एम कही आ- श्वासी तिणे, धैर्य धरे सा उदार रे ॥ ए० ॥ २९ ॥ पंमित उत्तमविजय- नी, साहे चोथी ढाल रे ॥ पद्म कहे आगल वली, सुणीये वात रसाल रे ॥ ए० ॥ ३० ॥ सर्व गाथा ॥ १११ ॥ श्लोक तथा गाथा ॥ ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ वस्त्राजरण पहेरी करी, आवे पितरनी पास ॥ वेसे अंक उत्साहशुं, रतिरूपे सुविलास ॥ १ ॥ कुमरी विसर्जी चिंतवे, अहो मुज पुत्रीरूप रे॥ ए सरखो वर कुण हशे, उत्तम गुण अनुरूप ॥ २ ॥ एम चिंतामां दिन गयो, शयन करे नृप रात ॥ देखे सुपनुं एहवुं, सांजलो ते अवदात ॥ ३ ॥ मनमां चिंता नवि करो, इष्टप्राप्तिमां कोय ॥ कमलिनी अर्क संयोगने, कु- ण करे सहेजे होय ॥ ४ ॥ राजा जाग्यो चिंतवे, सुपन अछे अनुकूल ॥ पण जे चिंता कीजीये, ते छे डुःखनुं मूल ॥ ५ ॥ जे जावी होय ते बने, चिंता न करे अन्य ॥ गतचिंता राजा थइ, करे प्रह समे पुण्य ॥ ६ ॥ यडुक्तं ॥ जाउण कस्सइ चिंता, ते सुविसा नूण डुहफला चेव ॥ हो- यव्व महोयव्वं च, अन्नहा न कुणइ चिंता ॥ १ ॥ सहस सामंते परवर्यो, वेठो ते आस्थान ॥ प्रतिहारी आवी तिसे, कनकदंम जस पाण ॥ ७ ॥ चि- त्रमती मूक्यो हतो, पहेलां जेह अमात्य ॥ विक्रमधन पासे थकी, आ- व्यो तेह विख्यात ॥ ८ ॥ द्वारे ते उजो अछे, सुणी वात कहे राय ॥ व- हेलो मोकल तेहने, ते पण ततक्षण जाय ॥ ए ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ रामचंदके बाग ॥ ए देशी ॥

॥ विनये करी परणाम, थानक उचित रहे री ॥ राज काजनी वात, रायने सर्व कहे री ॥ १ ॥ नृपति कहे कहे कांइ, आश्चर्य जेह गह्यो री ॥ तेह कहे सुण राय, में जे दृष्टि लह्यो री ॥ २ ॥ दीठुं ते न कहाय, प- ण संक्षेपे कहुं री ॥ विक्रमधननो पुत्र, आश्चर्यकारी लहुं री ॥ ३ ॥ रूप तेज तस बुद्धि, विनय गंजीरपणुं री ॥ थिरता धैर्य औदार्य, तस गुण केता गणुं री ॥ ४ ॥ गुण एकेकनो पार, बुध पण नविय लहे री ॥ देव देखी ज- स रूप, मन आश्चर्य वहे री ॥ ५ ॥ कहीये शुं घणुं तास, गुण प्रत्येक स्तवे री ॥ सहसवदन पण तास, आयु पूरे न भवे री ॥ ६ ॥ युक्तायुक्तनी वात, जाणो राज तुमे री ॥ धनवती धन संजोग, योग्य तो लहुं अमे री ॥ ७ ॥ लखमी

रे हर गौरी, योगथी जस अर्ध्यो री ॥ जाचे विधातानो तेह, जो ये
वस्यो री ॥ ८ ॥ विद्याधर सुर क्यांहि, एहवुं रूप नहीं री ॥ मन चिंते
धनवती योग्य सही री ॥ ए ॥ जो होय एह संयोग, पूगे हर्ष जलो
॥ विधिनो जेह प्रयास, ते पण होय सफलो री ॥ १० ॥ हर्षित क-
भूपाल, तें जलो काम कस्यो री ॥ वरचिंताधिथी आज, तें मुजने उद्ध-
री ॥ ११ ॥ धनवती देवा काज, तिहां तुं जाय फरी री ॥ विक्रम-
प्रार्थी, ए मुज आण खरी री ॥ १२ ॥ चंद्रवती इण नाम, धन-
अनुजा तिहां री ॥ आवी वंदवा हेत, वेठा पितर जिहां री ॥ १३ ॥
घर पहोतो दूत, मुदिता चंद्रवती री ॥ पहोती जगिनी पास, कही
वात ठती री ॥ १४ ॥ धनवती कहे ते जूठ, नहीं ए वात खरी री ॥
ने कहे एह, नहीं परमार्थ वरी री ॥ १५ ॥ दूत कोइ अन्य काम,
नृपतिए री ॥ मुग्धा एम मुज काज, समजी किम पतिए री
॥ १६ ॥ कमलिणी कहे ए वात, जूठ नवि संजवे री ॥ होशे कारज
वाचा शुकन लवे री ॥ १७ ॥ अथवा कहे ए दूत, निज घर ठे-
हजी री ॥ सुणीये तस मुख वात, बीजुं सवे तजी री ॥ १८ ॥ दूत तेकी
पास, तस मुख वात सुणी री ॥ जाव खिखिन सा नारी, हरखी चित्त
घणी री ॥ १९ ॥ दूतने कहे मुज क्षेम, धनने देजे जइ री ॥ अचलपुरे ते
दूत, पहोतो शीघ्र थइ री ॥ २० ॥ ठाणांनरे ग्यो राय, प्रणमे नाम जणी री ॥
राय पूछे सुखशान, सिंह नरेंद्र तणी री ॥ २१ ॥ शीघ्र आव्यो तुं फेर, होय
विकल्प तणे री ॥ सिंह केसरी जे नाम, ते कहे नय न मने री ॥ २२ ॥
तुज सरिखा जस राय, जिनवंतक कुशला री ॥ तस अकुशल किम होय, पर
वहु राय मिल्या री ॥ २३ ॥ पण तुज पुत्रने नाम, धनवती पुत्री दीये
री ॥ धन परे ते उत्कृष्ट, सुर अनिमेष जुए री ॥ २४ ॥ एह उचित मं-
योग, कनकमां मणिय परे री ॥ अंगे पण तुम स्नेह, वली वली अ-
धिक धरे री ॥ २५ ॥ स्नेह वधे जिम वारि, सिंचे वृक्ष वधे री ॥
नृपतिए मानी वात, एणी परे कार्य सधे री ॥ २६ ॥ सांजली कुमर ते
कान, चिंता चित्त धरे री ॥ ताते तो मानी वात, जेह अमात्य कहे
री ॥ २७ ॥ गुण अवगुण पण नाम, नृपने नविय लहुं री ॥ मिथ्या
ने मीठी वाणी, दूत तो बोले तहु री ॥ २८ ॥ पण अणजाणी वात,

करवी चारु नहीं री ॥ दुष्ट नारी दुःखमूल, जाख्युं ग्रंथे सही री ॥ २ए॥ यदुक्तं ॥ वाचाला कलहप्रिया च कुटिला क्रोधान्विता निर्दया, मूर्खा मर्मविजाषिणी च कृपणा माया यथा किंनिमा ॥ जर्त्तुर्दूषकरी कलंककलिता कुर्दिजरी सर्वदा, कद्रूपा गुरुदेवजक्तिरहिता जार्या जवेत्पापतः ॥ २ ॥ कुमर चिंतातुर एम, बेगो जब निससी री ॥ तब आव्यो ते दूत, चिंता दूर थसी री ॥ ३० ॥ दीधुं आदरमान, कुमरे तास वही री ॥ पद्मविजय एम एह, पांचमी ढाल कही री ॥ ३१ ॥ सर्व गाथा ॥ १५१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चित्रगति कहे कुंवरने, सांजल हुं कहुं तेम ॥ धनवतीए ए लेख दीयो, तुऊने आणी प्रेम ॥ १ ॥ कागल उखेली करी, वांचे कुंवर तत्र ॥ मानुं मदननो तेह ठे, सांजलजो कहुं अत्र ॥२॥ यदुक्तं ॥ हेमाचार्यविरचितनेमिजिनचरित्रे ॥ विशेषितश्रीः शरदा, यौवनेनेव पद्मिनी ॥ परिम्लानमुखी यांग,-स्त्यादित्यकरपीडनम् ॥ ३ ॥ वांची कुंवर ते पत्रने, चिंते चित्तमां एम ॥ जो पण नथी प्रत्यक्ष मुऊ, पण गुणवंती नेम ॥३॥ वचनविलासथी जाणीये, जाव हृदयनो ठाम ॥ जाव लख्या पठी को नहीं, रूपादिकनुं काम ॥४॥ यदुक्तं ॥ गाथा ॥ लहइ हसियं सहस्सं, पावइ लक्कं सहरिसमा लवणं ॥ सप्रावो सज्जणमा,-णुसस्स कोमी विसेसेइ ॥४॥ एम चिंती ते निज करे, लखे लेख तिण वार ॥ धनवतीने जइ आपजे, वली मुक्ताफलहार ॥ ५ ॥ तेह जइ निज स्थानके, सिंहने कहे तुऊ वात ॥ मानी ठे ते सांजली, हरख्यो साते धात ॥ ६ ॥ हार पत्र धनवती करे, आपीने कहे तेह ॥ धनकुमरे निज हाथथी, लख्यो ठे गुणगेह ॥ ७ ॥ उक्तं च ॥ हेमाचार्यविरचितने मिचरित्रे ॥ परस्मोदयते सूर्यः पद्मिनीकरपीमनात् ॥ सोऽर्थः स्वजावसंसिद्धो, न हि याच्ञामपेक्षते ॥ ५ ॥ अपरं च ॥ सत्तं पगइएसु, चितपाहारं सारगुणगणग्घवियं ॥ दोमरहियं धरेयंसु, हारं हियए पियपमं च ॥ ६ ॥ वांची मनमां चिंतवे, निज करखना संकेत ॥ कंठ न्यास ए मोकल्यो, हार उचित गुण हेत ॥ ८ ॥ पहेर्यो हार ते ततक्षणे, संतोष्यो ते दूत ॥ कुमरी परणवा मोकले, नृप सामग्री युत ॥ ए ॥

॥ ढाल ठही ॥ राग मंजारी ॥ हवे श्रीनालकुमार ॥ ए देशी ॥

॥ शुभ दिवसे सिंह राय, अचलपुरे मोकलवा जी ॥ वृद्ध मंत्री बहु साथ,

…पे अधिक सोहावबा जी ॥ १ ॥ धण धान्य हाटक रत्न, वस्त्र अमूलक बहु
…यां जी ॥ जातां प्रणमे पाय, ताते पण शीखावीयां जी ॥ २ ॥ गद्गद स्व-
…री राय, आदरथी इणी परे भणे जी ॥ नरने विनय उचित, होय विशेष ना-
…पणे जी ॥ ३ ॥ जो करे तपसी क्रोध, निंदित होय तस तपपणुं जी ॥ परा-
…न नित्य नारी, तिणे उपशम शोभे घणुं जी ॥ ४ ॥ नीच पुरुषने संग, उत्तम
… मारग तजे जी ॥ अवला तजे कुल मग्ग, एहमां कुण अचरिज भजे जी
५ ॥ चउकं ॥ अंबस्स य निंबस्स य, डुण्हं विसमा गयाइ मूलाइं ॥ संसग्गेण
विणठो, अंबो निंबत्तणं पत्तो ॥ ५ ॥ पुत्रादिक पण जेह, अनुजाइ विण
…वि गमे जी ॥ तो ससरादिक आयत्त, तेह विशेष मन नवि रमे जी ॥ ६ ॥
… दीचे तस लछी, नवि पासुं मूके कदा जी ॥ राखी पण न रहंत, नरने
…पद होय यदा जी ॥ ७ ॥ कनक रत्नादि आजर्ण, ते विजूषा न करे किमे
… ॥ जूषित होय तव देह, शीलाजरण धरे समे जी ॥ ८ ॥ तिण का-
रण सुण वत्स, विनय क्षमा शुज संगता जी ॥ अनुवित्तिपणुं वलिदान,
राखजो तुम्हे शुरू शीलता जी ॥ ए ॥ देइ पिता रह्या शीख, माता कहे
सुण दीकरी जी ॥ मातु ससरा जेठ. तेहनी म चूकजो चाकरी जी ॥ १० ॥
जगिनी परे गणे शोक्य. देव परे पति मानजे जी ॥ पति प्रसाद अपमान,
मान विकार ते नाणजे जी ॥ ११ ॥ दीधी एम बहु शीख. रुनां हियडे
जीमीने जी ॥ करी प्रमाण नम आण. दुःख आंसु तिहां रेमीने जी ॥ १२ ॥
अचलपुरी उद्यान. पहोंती अनुक्रमे धनवती जी ॥ विक्रमधन दीये वास,
विपुल आवास शोजे अति जी ॥ १३ ॥ शुज लगने शुज घस्र. अति आडं-
बरथी तिहां जी ॥ धनवती धनकुमार. परण्यां ने मन उम्मह्यां जी ॥ १४ ॥
तडित जीमृत परे तेह. रति कंदर्प समां बन्यां जी ॥ तिम धनवतीशुं तेह,
काल न जाणे जाय गयो जी ॥ १५ ॥ तुरिय खिलावण हेत. कुंवर वन
मांहि गयो जी ॥ घनरव परे अतिशब्द. ते वनमां सहसा थयो जी ॥ १६ ॥
मन चिंते ते कुमार. नहीं घनगर्जरव इहां जी ॥ नवि दीसे आकाश. मेघघटा
परिसरे किहां जी ॥ १७ ॥ एम चिंतवतो जाय. बहु शालवन उद्यानमां जी ॥
शब्दानुसारे तेह. आवी देखे ते रानमां जी ॥ १ ॥ सुर नर खेचर मध्य,
कनककमल उपर रही जी ॥ देता तिहां उपदेश. सूरीश्वर देखे नही
जी ॥ १ए ॥ चिंते शुं ए सूरि. नहीं तस दुःख दर्शन अत्र जी ॥ एह

प्रशांत स्वरूप, शशी पण नहीं सकलंक ठे जी ॥ २० ॥ ए तो ठे अकलंक, इंडु पण नहीं कहीजीये जी ॥ अनिमिष दृष्टि ठे तास, एणे उन्मेष करीजीये जी ॥ २१ ॥ ए वर वय रूप धार, आचारिज कोइ देखीये जी ॥ हिवा हो-शे आज, पुण्य पूरव नव पेखीये जी ॥ २२ ॥ उतरे अश्वथी तेह, पाडु-का मूके पायथी जी ॥ व्रत्र ढुरी ने खड्ग, अनुचित सवि तजे कायथी जी ॥ २३॥ जइ मुनिवरनी पास, पदकज प्रणमे मुनि तणां जी ॥ बेसी उचित प्र-देश, क्षण एक सुणो सूरि देशना जी ॥ २४ ॥ उठी ढाल रसाल, जाखी एह सोहामणी जी ॥ पद्मविजय कहे एह, सुणो हवे वात मुनि तणी जी ॥ २५ ॥ सर्व गाथा ॥ १०५ ॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

॥ पदकज प्रणमी गुरु तणां, कुंवर कहे इण जांत ॥ अविनय नवि होय स्वामी जी, तिम पूढुं एक वात ॥ १ ॥ तुम अवतार जे लोकमें, ते पर निवृत्ति हेत ॥ रूप जुवनथी अधिक तुम्ह, प्रथम वये समवेत ॥ २ ॥ चढती वये व्रत आदर्युं, तुम्ह सुकुमाल शरीर ॥ ए अचरिज मुऊ मो-टकुं, कहो मुनिवर वरवीर ॥ ३ ॥ मदन बाण विनोद पद, तुम्ह तनु तप करो केम ॥ तुम्ह तप करतां तास पण, तप करवुं पमे एम ॥ ४ ॥ लखमी पण तुम्हे परहरी, तेणे पण तस तप होय ॥ लक्षणधर मुनिवर तमो, व्रत केम वरीयुं तोय ॥ ५ ॥ तिणे स्वामी सुप्रसन्न थइ, कृपा करो मुनिसिंह ॥ कहे मुनिवर तुम्हे सांजलो, वात कहुं निर्वीह ॥ ६ ॥ पण ए वात कहेतां थकां, परनी निंदा थाय ॥ निज गुणनो उत्कर्ष वली, ल-घुता मूल कहाय ॥ ७ ॥ तोपण सांजल कुमर तुं, परउपगारने हेत ॥ संक्षेपे करीने कहुं, धर्म तणे संकेत ॥ ८ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ निद्रमी वेरण हुइ रही ॥ ए देशी ॥

॥ मगध देश अति दीपतो, तिहां महालय हो नामे वर गाम के ॥ सिं-ह वसंत नामे वसे, सहोदर दोइ हो बेहु प्रीतिनां धाम के ॥ कहे मुनिवर सुणो कुंवरजी ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ बाल थकी घणी प्रीतमी, एक एक विणु हो न रही शके कोय के ॥ पशु क्रीमा करतां थकां, यौवन वय हो साथे तस होय के ॥ क० ॥ २ ॥ अध्यापन साथे कर्युं, जमे पुहवी हो वली अर्जे ड्रव्य के ॥ जोगवे दीये शयन करे, जे देखे हो ते जाणे नव्य के ॥ क० ॥ ३ ॥

[illegible] विलेपन ने वली, आहार ने हो वली कुसुम तंबोल के ॥ स्नेह बंधाण
[illegible] लीये, मांहोमांहे हो एम प्रीति अतोल के ॥ क० ॥ ४ ॥ काल जते थके
[illegible] परे, एक दिवसे हो लघु जाइ वसंत के ॥ कहे तेहनी जजा इश्युं,
[illegible]ही अवसर हो थानक एकांत के ॥ क० ॥ ५ ॥ रे मूरख जाणे नहीं, घर
[illegible]हे हो जे वातकी थाय के ॥ सांजली ते पण चमकीयो, कहे नारीने
हो शी वात कहाय के ॥ क० ॥ ६ ॥ सुण तुऊ जाइ मोटको, मुख मी-
ठो हो धीठो अति चित्त के ॥ निज नारीने आणी दीये, कुंकुम वसन ने हो
आजरण पवित्त के ॥ क० ॥ ७ ॥ खजुर प्रमुख वली खायने, दीये डिंजने
हो वली करे बहु गांठ के ॥ खाये पीये दीये लोकने, इणी परे तुऊ हो
वृद्ध जाता लांठ के ॥ क० ॥ ८ ॥ तुऊने शुं कहीये घणुं, देखीश फल हो तुं
अंते एह के ॥ तव ते कोप करी कहे, शेष घर परे हो मेलीश मुऊ गेह के ॥
क० ॥ ए ॥ जे कारण जूठुं कहे, जुग पलटे हो जाइ अन्य न होय के ॥ जो-
जाइ माता सारिखी, हितवंछक हो दुःख नवि दीये कोय के ॥ क० ॥ १० ॥
एम कहेनां मौन करी रही, अन्य दिवसे हो वली जाखे तास के ॥ एम
दिन दिन कहेतां थकां, तस मनमां हो आव्यो कुविश्वास के ॥ क०
॥ ११ ॥ तुं कहे साची वातनी. जेड मुऊ हो बांधव अति धीठ के ॥
सा कहे तुऊने भ्रांति छे. रक्ष करी हो नवि दूषण दीठ के ॥ क० ॥ १२ ॥
यतः ॥ रत्तो दुठो मूढो. केणइ वुग्गाहिओ य जो पुरिसो ॥ देवेहिंवि सय-
लेहिं. न निरए पत्तिया वेउ ॥ १ ॥ जोजाइ बांधव प्रते. थयो रक्त ते हो न वि-
चारे कांय के ॥ कूड कपटनी कोथली. जोजाइ हो तुऊने दुःखदाय के ॥
॥ क० ॥ १३ ॥ गृहनां कार्य करावती. लघु जाणी हो तुऊने जोजाइ के ॥
वृद्ध भ्राता भूत परे गणे. शेठ जोगवे हो वेठो ठकुराइ के ॥ क० ॥ १४ ॥ जे-
ठाणी दासी परे. मुऊ गणती हो ते सहीये सर्व के ॥ तुऊने जब वलग्यां
अमे. वेसी रहीये हो घडने निगर्व के ॥ क० ॥ ॥ १५ ॥ इत्यादिक वचने क-
री. तस ठगीयो हो निम कपट विलास के ॥ जिम सवि तेह अंगीकरे,
अनुनपणे हो हुओ नाम विश्वास के ॥ क० ॥ १६ ॥ यतः ॥ सुवंशनाऽप्य-
कृत्यानि. कुरुते प्रेरित. स्त्रिया ॥ स्नेहलं दधि मथ्नाति. पश्य मंथानको
न किं ॥ २ ॥ श्याम वदने करी अन्यदा. वृद्ध भ्राताने हो कहे इणी
परे वाणी के ॥ मुऊने नाग वहेंची दीयो. एहमां तुम्हे हो कांइ न

करो काणी के ॥ क० ॥ १७ ॥ वचन अपूर्व सुणी करी, चिंते विस्मित हो केम ए कहे वात के ॥ कहे रे वत्स वहेंचे हवे, केहनी साथे हो वहेंची किहां जात के ॥ क० ॥ १८ ॥ तुऊ विणु माहारे कुण अछे, मुऊ विणु नवि हो तुऊ कोइ अन्य के ॥ एटला दिन लगे नवि कह्युं, तुऊ अप्रिय हो में कांइ अधन्य के ॥ क० ॥ १९ ॥ में अविनय तुऊने कस्यो, तो मुखथी हो भाखी देखाव के ॥ स्नेहवद्ध थको केम कहे, वहेंचणनो हो अकाले आराव के ॥ क० ॥ २० ॥ सवि लखमी विलसो तुमे, ए लखमी हो सघली छे तुऊ के ॥ स्नेहवचन जुगते करी, फरी ते कहे हो नवि वहेंचवुं मुऊ के ॥ क० ॥ २१ ॥ आवी कहे निज नारीने, मुऊ भाइ हो कहे एणी परे वाच के ॥ तव ते त्रटकीने कहे, एह वचने हो कहुं तुं मत माच के ॥ क० ॥ २२ ॥ वचने तुऊ ललचावीयो, धूतारा हो बोले मीठां वयण के ॥ शाहुकार परे देखीये, तेहनी गति हो नवि जाणे सयण के ॥ क० ॥ २३ ॥ यतः ॥ खलः सत्क्रियमाणोऽपि, ददाति कलहं सताम् ॥ दुग्धधौतोऽपि किं याति, वायसः कलहंसताम् ॥ ३ ॥ पण जाणुं तुऊ मति खसी, घरणीनुं हो जे न करे वयण के ॥ ते अंते दुःखीया होये, ते माटे हो मानो मुऊ वयण के ॥ क० ॥ २४ ॥ तुं तो भोलो थइ रह्यो, कोण मूके हो हस्तागत जेह के ॥ जो न कहे तुऊ इणी परे, केम होवे हो विश्वासनुं गेह के ॥ क० ॥ ॥ २५ ॥ तुं सुखे दासपणुं करे, हुं नवि करुं हो दासीपणुं कोय के ॥ पण जाणीश अंते वली, शिशु साथे हो पंचत्व ते जोय के ॥ क० ॥ २६ ॥ हुं तो पीयरमां जइ, रहेशुं सुखे हो नवि कोइनी आश के ॥ ते सुणी दयिताने कहे, थिर थाउ हो थोमा दिन खास के ॥ क० ॥ २७ ॥ एणी परे सातमी ढालमां, कहे मुनिवर हो निज वीतक जेह के ॥ पद्मविजय कहे सांजलो, आगल कहे हो वैराग्य सनेह के ॥ क० ॥ २८ ॥ सर्व गाथा ॥ २२१ ॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिन मागे भाग ते, वली समजावे सोय ॥ इम नारी बांधव तणे, वचने कोपित होय ॥ १ ॥ यतः ॥ सुगुणा एह सहावो, अवगुण सिंचंति हिअय मयंमि ॥ महिलानामपि नाहो, जाणंति न जंपए जीहा

१ ॥ एम करतां एक दिन हुवे, नारीनो प्रेर्यो तेह ॥ जाइ जोजाइ उपरे, ...नो द्वेष अछेह ॥ २ ॥ हीणां वचन घणां लवे, नाणे कांही लाज ॥ ...भ्रात समजावीने, कहे तें शुं कर्यो आज ॥ ३ ॥ तोपण नवि माने ...चन, चिंते बांधव जेठ ॥ जगमां सहु दीठुं अछे, पण नारीथी हेठ ॥ ४ ॥ नारी कपटनी कोथली, नारी नरकनुं द्वार ॥ नारीपाशे जे प-..., ते न तर्या संसार ॥ ५ ॥ नारीथी मुर्ज मुंजनो, रावण गयां दश ...श ॥ रामजी वनवासे वस्या, नहीं कही नारी जगीश ॥ ६ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ मोरा साहिबा हो श्री शीतलनाथ के, अरज सुणो एक मोरनी ॥ ए ...शी ॥ तिहां लगे रहे हो पुण्यवंत विवेक के, नारीलोचन जव नवि प-ड्यां ॥ सन्मार्गे हो इंद्रिय रहे ताव के, नारीनयण जव नाचज्यां ॥ १ ॥ लज्जा विनय ते हो तिहां लगे रहे सर्व के, नारीलोचन जव नावीयां ॥ भ्रू-चापे हो आकर्षीने जाम के, मूके शर तव सवि गयां ॥ २ ॥ यतः ॥ ताव-देव कृतिनामपि स्फुर-त्येष निर्मलविवेकदीपकः ॥ यावदेव न कुरंगचक्षुषां ताड्यते चटुललोचनांचलैः ॥ २ ॥ सन्मार्गे तावदास्ते प्रभवति पुरुषस्ता-वदेवेंद्रियाणां. लज्जां तावद्विधत्ते विनयमपि समालंबते तावदेव ॥ भ्रूचापा-कृष्टमुक्ताः श्रवणपथजुषो नीलपक्ष्माण एते, यावल्लीलावतीनां न हृदि धृति-मुषो दृष्टिबाणाः पतंति ॥ ३ ॥ घनश्रेणी हो दुःकृत वन एह के. शोक कासार पाली कही ॥ ने मगली हो नवकमलने ठाम के, पाप तोयनीकज सही ॥ ३ ॥ पेटी कपटनी हो चेटी मोहराय के. विष विषय सापण कही ॥ दुःखदायक हो कही एहवी नारी के. पापिणी कामिनी ननुदही ॥ ४ ॥ यतः ॥ दुरितवनघनाली शोककासारपाली. नवकमलमगली पापनोयप्र-णाली ॥ विकटकपटपेटी मोहनृपालचेटी. विषयविषभुजंगी दुःखसारा कुशांगी ॥ ४ ॥ जुवुं बोले हो साहस अनि धैर्य के. माया मूर्खपणुं घणुं ॥ अनि लोभता हो अशुचि दयाहीन के. सहजथी दोष स्त्रीना भणुं ॥ ५ ॥ यतः ॥ अनृतं साहसं माया. मूर्खत्वमतिलोभता ॥ अशौचं निर्दयत्वं च, स्त्रीणां दोषाः स्वभावजाः ॥ ५ ॥ रवि मह ने हो नाग ने राइ के. जाणे चार ने पंकिना ॥ नवि जाणे हो महिलानो चार के, तेहमां बुद्धि होय संकिना ॥ ६ ॥ यतः ॥ रविचरियं गहचरियं, ताराचरियं च राहुचरियं

च ॥ जाणंति बुद्धिमंता, महिलाचरियं न जाणंति ॥ ६ ॥ जलमज्झे मच्छि-
पयं, आगासे पक्खियाण पयपंती ॥ महिलाहिययाणमग्गो, तिन्निवि विरला
पवंति ॥ ७ ॥ नवबीजक हो दीवी नरकने मग्ग के, शोककंद कलिमूल छे ॥
दुःखनी खाण हो अंगना दुःखखाण के, पंमित मन ए शूल छे ॥ ७ ॥ यतः ॥
जन्म बीजं नरक-द्वारमार्गस्य दीपिका ॥ शुचां कंदः कलेर्मूलं, दुःखानां
खानिरंगना ॥ ८ ॥ जाइ नेह ते हो विघटाव्यो पण के, स्त्रीसामर्थ्य अहो
यह ॥ गिर बांध्यो हो पलटाव्यो नेह के, नवि माने हवे मुऊ कह्युं ॥ ८ ॥ यतः ॥
उन्नम गमनं सरियाणं, बहु कवम कूम चरियाणं ॥ उम्मूलयंति विरयरू-
क्खमवि संपनेहतरं ॥ ए ॥ नेह कंचनुं हो तिहां लगे रहे अखंड के, नारी-
वचन टंक जिहां लगे ॥ तीखा परशुनी हो धारा नवि लग्ग के, सवि नर
नारी कहे सगे ॥ ए ॥ यतः ॥ तावच्चिय नेहतरु, सिणिद्ध बंधूण वट्टए निचं ॥
नारीवयण टंक निसिय, परसुधाराउ न वहंति ॥ १० ॥ एम चिंतवी हो धन
मोहिन ते नेह के, गिरहे सोंपी तेहने ॥ एकाकी हो नीकलीयो निज के,
सुख मन ऊढि छे जेहने ॥ १० ॥ हवे जन सवि हो करे तास प्रशंस के,
बडी कहे नारी अनंतने ॥ करी गांठी हो नीकलीयो बाहिर के, वारंवार
कहे कंतने ॥ ११ ॥ ऊढि बहुली हो पण नाठी तास के, ज्येष्ठ जाइ अ-
रत्यो नवि ॥ वली वलगो हो कहे राखी गांठ के, तें नवि आपीजे सवि
॥ १२ ॥ बहु लाडने हो द्रव्य वली दीये नेह के, ते मूढ मागे वली ॥ आपे
धन हो बहुवार ने ऊढि के, लोक हिवे सहुने मली ॥ १३ ॥ वृद्ध भ्राता
हो मोटी धरे नेह के, मीठे वचने बोलावतो ॥ पहु मनमां हो चिंते इण
नांति के, ए मुऊने देखावतो ॥ १४ ॥ नवि जाणे हो पुण्ये करी होय के,
लखमी पहने अति घणी ॥ हुं नीकल्यो हो नारीने वयण के, पुण्यहीनमां
शिरोमणि ॥ १५ ॥ विलख्यो थइ हो लज्जा मन आणी के, गाम नगर फर-
तो फरे ॥ नवि पामे हो पुण्ये करी शून्य के, कोडी एक ते निज करे ॥
॥ १६ ॥ केटलां नर हो धरे रस ने देह के, नूख्यो दीन ते दलिदरी ॥ भ्रमर
ने हो गूढ ग्रावर्त्त तेह के, हाडारूने कार्ट बुरी ॥ १७ ॥ वृद्ध भ्राता हो सं-
भारी तास के, मनमां दुःखी घणे चिंतवे ॥ जुओ भेदी हो पंथर हुओ एह
के, लगन लागे केहवे ॥ १८ ॥ कर्मां मूढ हो उपकार करीने के, कार्य
सिद्ध कीधां बने ॥ तेम ए करो हो सिन मांहि परिवार के, मात तात

...गयो ॥ १९ ॥ मद नवमां हो दुःख घणाने देत छे, परभव मान नो वे-
री ॥ छन्न दोषमां हो हिनबुद्धि होय छे, विषयांध ए मति वसी ॥ २० ॥
... ॥ नृपविद्या मोहित, केपह धूनी स्वदन्तव आगम ॥ जे सुख मय-
... हिकदोम सत्के सुहित बुद्धि ॥ ११ ॥ दान परिहवकारा, धंमुजनो धं-
... विषं विषदाः ॥ कोऽयं जनम्य मोहो, ये रिपवन्तेषु सुहृदाशा ॥ १२ ॥ ज्ञा-
... हो वैराग्य मदेन छे, नीकळीयो उद्यानमां ॥ दीक्षा लिहो हो ममता-
... साथ छे, रमता उत्तम ध्यानमां ॥ २१ ॥ मन बांने हो जिनवरनो धर्म
... सांवळीने मन आदर्यो ॥ लघु भ्राता हो मायमने धंतिके, सावरनी
...दीक्षा वर्यो ॥ २२ ॥ वृद्ध भ्राता हो पाळी चारित्र छे, मोक्षे सुर थयो ॥
...धु भ्राता हो ज्योतिष पद देव छे, नम्यो संसार दुःख वीवर्यो ॥ २३ ॥ अनु-
... हो वहू शाह उद्यान छे, पदमां कृष्ण मस्य घयो ॥ गिह सीवको हो नो-
...क सुरगुन छे, पूरव पुण्यथी सुख पयुं ॥ २४ ॥ जिनवरनी हो उत्तम जे सीख
साम प्रताप ए जाणजो ॥ दान आतमी हो वैराग्यनो फंद छे, दया फंदे
...चेत आणजो ॥ २५ ॥ सर्व गाथा ॥ २५२ ॥ श्लोक नवा गाथा मळी ॥ ३३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सिद्ध जीव हवे हवनो, आयु सर्व पूर्ण मेद ॥ गजपुर नगरे सुरेंद्र नृप,
वसुंधर सुत सस्नेह ॥ १ ॥ गुणगणना आवास ते, दोठा एक दिन साध
॥ जातिसमरण उपनुं पाम्यो हर्ष अगाध ॥ २ ॥ सिद्ध जनम तव सा-
भ... उपनो सिद्धा वैराग्य ॥ गणधर कवळीने निकट ले दीक्षा महाभाग
॥ ३ ॥ पूठ कथळीने सिद्धा सघु नाइ सबध ॥ साथ तणो तव सांभळी,
थयो वैराग्य प्रबंध ॥ ४ ॥ अनुक्रमे चौद पूरव जण्या, ते वसुधर मुनि-
राय ॥ तप तपना अति आकरा संजम ध्यान सुहाय ॥ ५ ॥ अवधिनाण
तस उपनुं, मद मणपर्जवनाण ॥ कवळ पाम्य जाणी तव सूरिपद निज
ठाण ॥ ६ ॥ विचरता आव्या इहां, प्रतिबोधवा नाग ॥ तेहने धर्म सु-
णावीया, ते पाम्या वैराग ॥ ७ ॥ जाति समरणने कस्यु, अणसण अति-
हि उदार ॥ गतकाळे पंचम दिने, सर्व समाधि मझार ॥ ८ ॥ काळ करीने उ-
पना, वर सौधर्म देव ॥ ते वसुधर मुनि जाणजे जे कहुं तुज स्वयमेव ॥
॥ ९ ॥ कुंवर कहे धन्य स्वामीजी, दुःख बहु देखे आक ॥ तुम्ह पर बत नवि
आदर, तुमे पाम्यु फळ गाक ॥ १० ॥

॥ ढाल नवमी ॥ डूगर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी ॥

॥ इण अवसर तिहां सांभले रे, विक्रमधन महीपाल ॥ पाउ धार्या मुनिवर इहां रे, जीवदया प्रतिपाल ॥ सुगुण नर सुणो सुगुणानी वात ॥ सुणतां होय सुखशात ॥ सु० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ चतुरंगी सेना सजी रे, वांदवा जावे राय ॥ साथे राणी धारणी रे, धनवती पण सुखदाय ॥ सु० ॥ २ ॥ पंचाभिगम साचवे रे, सचित्त द्रव्यादिक जेह ॥ खड्गादिक मूके तथा रे, राजचिह्न कह्यां तेह ॥ सु० ॥ ३ ॥ राय राणी प्रणमी करी रे, बेसे निज निज स्थान ॥ सांभले धर्मनी देशना रे, कर्णामृत मानुं पान ॥ सु० ॥ ४ ॥ देशना अंते भूपति रे, विनये जोडी हाथ ॥ भूतादिकनी वारता रे, स्वप्न पूछे मुनि साथ ॥ सु० ॥ ५ ॥ संपूरण नवि पामीयो रे, तेह स्वपननो अर्थ ॥ कृपा करी मुज दाखीये रे, हितकारक शिवसर्थ ॥ सु० ॥ ६ ॥ ज्ञान मने परजुंजीयुं रे, दीठा केवली जाम ॥ दूर थकी पूछे प्रभु रे, भाखे केवली ताम ॥ सु० ॥ ७ ॥ नेमिचरित्र कह्युं सवे रे, नव भव जेह संबंध ॥ अवधिमने जाणी करी रे, भाखे तेह प्रबंध ॥ सु० ॥ ८ ॥ नवमी वार वधावशे रे, उत्कृष्टुं फल जेह ॥ नवमे भव शिव पामशे रे, धनकुमर सुणो एह ॥ सु० ॥ ९ ॥ नवमे भव बावीशमो रे, नेमि तिर्थंकर नाम ॥ यादववंशमां उपनो रे, होशे गुणनुं धाम ॥ सु० ॥ १० ॥ एम मुनिवचन ते सांभली रे, भूपति मन हरखंत ॥ जिनधर्मे प्राणी घणा रे, दृढधर्मा होवंत ॥ सु० ॥ ११ ॥ केइ भद्रक भावी थया रे, केइ देशविरति लहंत ॥ निज घर पहोतो भूपति रे धनकुमारादिकवंत ॥ सु० ॥ १२ ॥ भव्यांबुज पडिबोहता रे, विहार करे सूरिराय ॥ ऋतु उचित क्रीडा करे रे, धन धनवतीय सहाय ॥ सु० ॥ १३ ॥ उष्णकाल इणे अवसरे रे, प्रगट्यो अति दुःखदाय ॥ सरितामां पाणी घटे रे, रजनी दरे कृश थाय ॥ सु० ॥ १४ ॥ त्रासक परे वाये वायरा रे, सूर्य करे अति ताप ॥ अंगारा जिम पाथर्या रे, पंथीजनने संताप ॥ सु० ॥ १५ ॥ पंथीजन पंथे भमे रे, जल जल जलडे जड थाय ॥ परब परब प्रते पेसता रे, कहे पाणी कोइ पाय ॥ सु० ॥ १६ ॥ शकटे जोड्या बलदीया रे, साथ परोणा दग्ग ॥ जिह्वा काढे बाहिरे रे, पाड मूके उन्मग्ग ॥ सु० ॥ १७ ॥ मयण अग्निसंतापथी रे, तिम प्रस्वेद झरंत ॥ ताल पखाली केलिपत्रने रे, विंजण वात करंत ॥ सु० ॥ १८ ॥ मालणवेतु पारजंडे रे, यत्र छिन्न होय तास ॥

मांहे पडे पंखीयां रे, पामी अतिहि पिपास ॥ सु० ॥ १ए ॥ इण अव
...र सर क्रीमवा रे, आव्या धनवती साथ ॥ क्रीमा करतां दंपती रे, देखे अ-
...ज पाथ ॥ सु० ॥ २०. तिहां अशोकतरु तले रे, दीठा मुनिय महंत ॥
... शांत रस परे रे, शांत दांत गुणवंत ॥ सु० ॥ २१ ॥ धर्मनो श्रम
...ऊ उपनो रे, तृपाक्रांत मुनिराज ॥ तालु उंठ सूकी गयां रे, मानुं जव-
...ऊ कहाज ॥ सु० ॥ २२ ॥ पादांबुजथी सिंचतो रे, भू रुधिरे मूर्छित ॥
... पृथिवी उपरे रे, मुनि धनने दर्शित ॥ सु० ॥ २३ ॥ हर्षविषादे उता-
...ग रे, आव्या मुनिनी पास ॥ चिंते धन ए शुं थयुं रे, हा हा दैव विला-
स ॥ सु० ॥ २४ ॥ धनवती कहे सुणो स्वामीजी रे, नहीं विलंबनुं काम ॥
करो उपगार शीघ्रज थइ रे, पुण्ये लह्या गुणधाम ॥ सु० ॥ २५ ॥ शीतल
वातादिक बहु रे, करी उपचार अनेक ॥ सज्ज करी मुनिरायने रे, वेग ध-
रीय विवेक ॥ सु० ॥ २६ ॥ नवमी ढाल एणी परे रे, जाखी अतिहि रसाल
॥ पंमित उत्तमविजयना रे, पद्मने मंगलमाल ॥ सु० ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कर जोमीने विनवे, जक्ति जराणो तेह ॥ सुरदंती किहां थकी हुवे, नी-
च मातंगने गेह ॥ १ ॥ चिंतामणि डुर्विध घरे, महारणमां सुरऊंख ॥ पद्म
सरोवर मरुपथे, पामे घेवर भूख ॥ २ ॥ देश अंतवासी अमो, अने पाम्यो
तुम संग ॥ तुम देखी मुऊ पुण्यना, प्रगट्या अतिहि तरंग ॥ ३ ॥ पण
पूछुं तुम्हने प्रभु, किम उपनो ए खेद ॥ जो तुम खेद न उपजे, तो दाखो
तस जेद ॥ ४ ॥ मन चिंते मुनिवर तदा, अहो अहो वचन विन्यास ॥
विनय जक्तिथी जाणीए, योग्य जीव सुप्रकाश ॥ ५ ॥ एह पुरुष जिनवर
तणा, छे उपदेशने योग्य ॥ एम चिंती कहे कुमरने, सांजली देइ उपयोग
॥ ६ ॥ एह कथा मोटी अछे, पण कहेशुं संक्षेप ॥ सावधान थइ सांज-
लो, मूकी चित्त व्याक्षेप ॥ ७ ॥

॥ ढाल दशमी ॥ कोइलो पर्वत धुंधलो रे ॥ ए देशी ॥

॥ जुवनोदर नगरे वसे रे लो, मोह नरिंद विख्यात रे ॥ राजेसर ॥ सुर
नर बहु आणा वहे रे लो, मिथ्यादर्शन अमात्य रे ॥ राजे० ॥ सु० ॥ १ ॥
तास मित्र अज्ञान छे रे लो, त्रिजुवनने दुःखदाय रे ॥ रा० ॥ नरक नगर
साधेप करो रे लो, तदहेतु पाप उपाय रे ॥ रा० ॥ सु० ॥ २ ॥ विपरीत

मति लोकनी करे रे लो, माने देव कुदेव रे ॥ रा० ॥ धर्म कुधर्म विषे कहे रे लो, तत्त्व अतत्त्वे हेव रे ॥ रा० ॥ भु० ॥ ३ ॥ पात्र अपात्रे सद्दहे रे लो, अगुणे गुणनी बुद्ध रे ॥ रा० ॥ भव हेतुने मानतो रे लो, मोक्षनुं कारण शुद्ध रे ॥ रा० ॥ भु० ॥ ४ ॥ नाटकक्रीडा वालही रे लो, नारी नेत्र कटाक्ष रे ॥ रा० ॥ हत थइ दासपणुं लह्या रे लो, एहवे देव अध्यक्ष रे ॥ रा० ॥ भु० ॥ ५ ॥ मदनना किंकर थइ रह्या रे लो, मायावी नित क्रुद्ध रे ॥ रा० ॥ एहवा देव थपावता रे लो, जस हस्ते आयुद्ध रे ॥ रा० ॥ भु० ॥ ६ ॥ राग द्वेष जेहने गया रे लो, जे सर्वज्ञ प्रसिद्ध रे ॥ रा० ॥ समता शोभित देहनी रे लो, जेह असंग शिव इद्ध रे ॥ रा० ॥ भु० ॥ ७ ॥ मित्र शत्रु सरिखा गणे रे लो, वर्ज्या नारीसंग रे॥ रा०॥माया मत्सर मद नहीं रे लो, परभावे नहीं रंग रे ॥ रा० ॥ ॥ भु० ॥ ८ ॥ आयुध नहीं जस हाथमां रे लो, सकल संग परिमुक्त रे ॥ ॥ रा० ॥ एहवा लोक परमेसरु रे लो, जैनसमयमां उक्त रे ॥ रा० ॥ भु० ॥ ॥ ए ॥ ढंकावे एह देवने रे लो, माने हवे एह धर्म रे ॥ रा० ॥ स्नान करे पशुवध करे रे लो, करे पंचाग्निनां कर्म रे ॥ रा० ॥ भु० ॥ १० ॥ कन्यादान वली करे रे लो, जल जलणादि प्रवेश रे॥ रा० ॥ जीवादिकने उंलवे रे लो, स्त्रीमुखी तत्त्व निवेश रे ॥ रा० ॥ भु० ॥ ११ ॥ जूतघात रत प्राणीया रे लो, कोप घणो जस मान रे ॥ रा० ॥ लोभी एह कुपात्रने रे लो, माने पात्रने ध्यान रे ॥ रा० ॥ भु० ॥ १२ ॥ जे शम उपशम रस भर्यो रे लो, सवि जीवने हितकार रे ॥ रा० ॥ मन वच कायने गोपवे रे लो, नहीं मत्सर अहंकार रे ॥ रा० ॥ भु० ॥ १३ ॥ माया वर्जित मुनिवरा रे लो, ब्रह्मचर्य धरे नित्य रे ॥ रा० ॥ नाणधणा निःसंगता रे लो, निरीहता जस चित्त रे ॥ रा० ॥ भु० ॥ १४ ॥ लोभ गयो जस सर्वथा रे लो, एहवा जे महंत रे ॥ रा० ॥ द्वेष करे ते उपरे रे लो, धारे बुद्धि कुपात रे ॥ रा० ॥ भु० ॥ १५ ॥ मंत्र यंत्र वली तंत्रने रे लो, रसकिरिया इंद्रजाल रे ॥ रा० ॥ शुभ अशुभ निमित्त कहे रे लो, तिम वैदक असराल रे ॥ रा० ॥ भु० ॥ १६ ॥ पापशास्त्र नित्य जे भणे रे लो, जेहथी प्राणनो घात रे ॥ रा० ॥ ते गुणी करीने मनावतो रे लो, तस पूजा वली स्यात रे ॥ रा० ॥ भु० ॥ १७ ॥ जे पण जाणंता थका रे लो, मंत्र तंत्र

करंत रे ॥ रा० ॥ पाप थकी बीहीता रहे रे सो, जास निरीह ठे चित्त
॥ रा० ॥ सु० ॥ १७ ॥ लोजादिकथी वेगला रे सो, सधायख्यानमां
रे ॥ रा० ॥ निगुणा माने तेहने रे सो, वली कहे नहीं ए गुणज्ञ रे
॥ रा० ॥ सु० ॥ १९ ॥ जीव वधादिकने कहे रे सो, शिवसुख कारण एह
॥ रा० ॥ मिथ्यादर्शन मंत्रवी रे सो, ए विपरीत करे जेह रे ॥ रा० ॥
॥ २० ॥ दशमी ढाल मांहे कथुं रे सो, मोह नरिंद चरित्त रे ॥ रा०
पद्मविजय कहे एहथी रे सो, रहेजो वेगला मित्त रे ॥ रा० ॥ २१ ॥
गाथा ॥ ३१७ ॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥ ३३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ असंव्यवहार नामे अठे, अन्य नगर वली अत्र ॥ गोलक नामे उ-
॥ असंख्यात एह तत्र ॥ १ ॥ एक एक घरमां अठे, नाम निगोदे तेह
॥ संख्यातीता ओरडा, जिनवचने सद्दा जेह ॥ २ ॥ एक एक ते ओरडे,
रहे अनंत कुटुंब ॥ संसारी जीव हुं हतो, तेहमां सहु विलंब ॥ ३ ॥

॥ ढाल अगीयारमी ॥ सुण बहेनी पीयुडो परदेशी ॥ ए देशी ॥

॥ जवितव्यता नामे धणीयाणी, वशवंती मुज जाणी रे ॥ जेहने होय अ-
नुकूल राणी, तेहने ते सुख खाणी रे ॥ कहे मुनिवर सुण कुमरजी वाणी
॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ जेहने ए प्रतिकूल खाणी, तेहनी मनि मुंजाणी रे ॥ —
नंता पुग्गलपरियट्टा. अंते चिंते चित्त आणी रे ॥ क० ॥ २ ॥ अहो
जो मोह मिथ्या सहिने. मुज जरनारने रुंधी रे ॥ दुःख देनां ए
राखे, में पण नवि करी शुद्धि रे ॥ क० ॥ ३ ॥ ते कारण कोइक
लावुं, चारित्र गयने संगे रे ॥ निहांथी उचाड्यो मुज तेणे, एम चिं
मन रंगे रे ॥ क० ॥ ४ ॥ वनस्पति नगरे तिणे आण्यो, काल अ
दुःखदायो रे ॥ प्रत्येक तरुमां काल घणो रही. पृथ्वी प्रमुखमां आ
रे ॥ क० ॥ ५ ॥ ते चउ थावर मांहे प्रत्येके, उत्सर्पिणी असंख्यानी रे ॥ ५
त्येके विकलेंद्रिय मांहे. काल संख्याना दुःखदानी रे ॥ क० ॥ ६ ॥ पंचेंद्रि
तिर्यंच मनुजमां, तिम नारक ने देव रे ॥ ए नायीए अतिय जमाड्यो,
करतां मिथ्रनी सेव रे ॥ क० ॥ ७ ॥ पुग्गलपरियट्ट अनंतवर्ती ते. यह अ-
नुकूल ते जाणे रे ॥ माहरी साह्य थकी हवे हण नुं. मोह मिथ्यत्त विलासे
रे ॥ क० ॥ ८ ॥ तेहनी साखे बहु में हणीया, तव तेणे देखाड्यो रे ॥

सम्यग्दर्शन नामे मंत्री, मुजने हर्षे कराव्यो रे ॥ क० ॥ ए ॥ में पण ते सम्यग्दर्शनने, अंगीकृत करी राख्यो रे ॥ तेहनी सान्निध्ये राग द्वेष बहु, हणीया सुख बहु चाख्यो रे ॥ क० ॥ १० ॥ नित्य सम्यक् आराध्यो तेहने, ते पण पुष्ट थइने रे ॥ चारित्र धर्म राय सुत गृहीनो, धर्म ते दीधो वहीने रे ॥ क० ॥ ११ ॥ पलीय पृथकने खंरु कस्यो तव, कर्म परिणाम ते राय रे ॥ अनुक्रमे सागर संख्याता, ठेदन कर्मनुं थाय रे ॥ क० ॥ १२ ॥ चारित्र राय सुत धर्म यतिनो, बंधुपणे गुरु साखे रे ॥ यतिधर्म आराधन करतां, गुरवादिक मुज चाखे रे ॥ क० ॥ १३ ॥ दृढपणे एह धर्म आराधे, मोहशत्रु हवे हणजे रे ॥ तुज सखाइ तुं अमो साथे, नित्य आगम तुं जणजे रे ॥ क० ॥ १४ ॥ नाम मुनिचंद महारुं जाणो, एक दिन गुरुनी साथे रे ॥ साथ सहित अमे विहार करतां, करी आणा जिननाथे रे ॥ क० ॥ १५ ॥ महा दुर्गम अटवीमां आव्या, धारु पञ्ची तिहां लूंट्यो रे ॥ लोक दशो दिश सरवे नाठा, हुं तो साथथी छूट्यो रे ॥ क० ॥ १६ ॥ दिशामूढ चूल्यो ने तरस्यो, जमतो हुं इहां आव्यो रे ॥ घूर्मितलोचन विगतचेतना, ते तुम्हे मुजने उठाव्यो रे ॥ क० ॥ १७ ॥ धन कहे स्वामी किरपा कीधी, निज चरित्रने कहेवे रे ॥ जेम तुम्हारी वात कही तुम्हे, दुःख आतम बहु सहेवे रे ॥ क० ॥ ॥ १८ ॥ वात अमारी पण गुरु दाखो, तव कहे गुरु सुण वाणी रे ॥ प्राये चरित्त सरव जीवनां, जाणे एणी परे प्राणी रे ॥ क० ॥ १९ ॥ पण मिथ्यादर्शनथी पामे, दुःख बहुल ए जीव रे ॥ तव विनति कहे स्वामी मुज, दीर्घ दुःख अतीव रे ॥ क० ॥ २० ॥ तेहने घा करवा मुज आपो, तेज प्रचंम होय जेहनो रे ॥ सम्यग्दर्शन महा मंत्रीने, देखावो शुज चेनो रे ॥ ॥ क० ॥ २१ ॥ वचनमार्गथी सम्यग्दर्शन, देखावे मुनिचंद रे ॥ तव पुलकित धनकुमरने अंगे, माय न मोदनो वृंद रे ॥ क० ॥ २२ ॥ त्रण जुवननो सार लह्यो में, सम्यग्दर्शन पाम्यो रे ॥ गृहीनो धर्म कस्यो वली अंगी, तेहथी दुःख बहु वाम्यो रे ॥ क० ॥ २३ ॥ मुनिवरने घर तेमी आव्यो, पमिलाज्या अन्न पाने रे ॥ आवश्यकादिक शीखण कामे, मुनि राखे बहुमाने रे ॥ क० ॥ २४ ॥ जाणी तिहां उपगार मोटको, आग्रहथी मुनि रहीया रे ॥ काल केतोइक तिहां मुनि रहीने, गुरुगछमां जइ मलीया रे ॥ क० ॥ २५ ॥ धनवती ने धनकुमर परस्पर, पहेलां पण हती प्रीत रे ॥

धिकी थइ तस धर्म लहावी, युवराजे करी नित रे॥ क०॥२६॥ एकां-
मी ढालमां पाम्या, समकित जगमां सारो रे ॥ पद्मविजय कहे ते का-
जवि, करो श्रद्धा निरधारो रे ॥ क० ॥ २७ ॥ सर्व गाथा ॥ ३४७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ परलोके पहोतो पिता, तव सामंत अमात्य ॥ करे अभिषेक नृपति-
, दिशदिश तेह विख्यात ॥ १ ॥ राज्य तिहां धनकुंवर हवे, पाले नी-
उदार ॥ बंधन छे तिहां काव्यने, सोगठीने कहे मार ॥ २ ॥ दंम छ-
जाणीये, पनवुं खगने वन्न ॥ तुहियां मंदिर दीसतां, तुछपणुं स्त्री मन
॥ जाम्यपणुं छे तरुवरे, कलह अछे गजवृंद ॥ पण नहीं तेहना राजमां,
क विषे दुःखदंद ॥ ४ ॥ जीर्णोद्धार करावतो, तिम रहजत्त विचित्त ॥
हमीवछल तिम करे, दीये दान शुन्न पत्त ॥ ५ ॥ पर्वतिथे पोसह
, तिम सामायिक सार ॥ वनपालक तस एकदा, दीये वधाइ उदार
६ ॥ स्वामी तुम मन वालहा, पहेला यांया जेह ॥ ते वहु शाखिने
ां, पाउ धारया गुणगेह ॥ ७ ॥

ढाल बारमी ॥ हांरे मारे जोवननीयानो लटको दहाडा चार जो ॥ ए देशी ॥

॥ हांरे मारे वनपालक सुखदायकनी सुणी वाण जो, राजा ज्युं चिंतामणि
म्यानी परे रे लो ॥ हांरे मारे माय न देहे न गेहे पुरवर मांहि जो, त्रिभु-
माहे आणंद ते इणी परे विस्तरे रे लो ॥ १ ॥ हां० ॥ देइ दान अने ब-
मान अत्यंत जो, उठीने परणाम करे नृप जावथी रे लो ॥ हां० ॥ करे म-
न सूरीसर वंदन काम जो, हार विराजित वक्ष वस्त्र निप्पावथी रे लो
२ ॥ हां० ॥ चउदंतो गजखंधगतो नरराय जो, अनि शोजंतो नागघटाथी
रिवर्यो रे लो ॥ हां० ॥ वरघोना खूंड फोड्याथी होये रेत जो, उछलती दिग्-
ति तेणे पूरो जर्यो रे लो ॥ ३ ॥ हां० ॥ नकिंकिणी खण खण कर रथवर
ांहि जो, जडे विस्तार विफार ते संकम मग्गने रे लो ॥ हां० ॥ वेना
ज प्रासादे सेवा सार जो, देखाडे मांहोमांहे अंगुलि अग्गने रे लो
४ ॥ हां० ॥ अनुक्रमे पहोतो गहगहतो मुनिपाय जो, देइ प्रदक्षिणा
ाकिधो प्रणमी उपविशे रे लो ॥ हां० ॥ कहे उपगार करो सदकारनी पेठ
ो, एतो काल किहां रह्या तव मुनि उपदिशे रे लो ॥ ५ ॥ हां० ॥ विग्रह दे-
ामां शम्रनिमद काम जो, एटलो रे अने काल गमाव्यो वाहिरे रे लो॥

हां० ॥ राजा पूछे रण शुं छे तुम स्वामी जो, अम सरिखाने युद्ध होये किम ताहरे रे लो ॥ ६ ॥ हां० ॥ मुनि कहे जिम ताहरे तिम माहरे युद्ध जो, रात दिवस नवि फीटे नित्य करवो पडे रे लो ॥ हां० ॥ कुतूहल राय बहुल धरी मनमां हर्षे जो, कहे किम युद्ध करीजे जिम वयरी रहे रे लो ॥ ७ ॥ हां० ॥ करी प्रसादने द्यो आस्वाद मुफ नाथ जो, कहे मुनिवर सुण नरवर मोह छे नृपति रे लो ॥ हां० ॥ सवि प्राणीने जाणीने दीये दुःख जो, कोहलोहमय जोह परिवृत नरपति रे लो ॥ ८ ॥ हां० ॥ जग जीतीने करीय विदीती वात जो, तिणे अवसर हुं चारित्र नृप शरणे गयो रे लो ॥ हां० ॥ जिनशासननो नासन त्रप आधार जो, सेनापति सदागम माहरे थिर थयो रे लो ॥ ए ॥ हां० ॥ शम दम संयम सम्यग ने संतोष जो, कोमि गमे सुनटे करी हुं पण परिवस्यो रे लो ॥ हां० ॥ अमरपखी करुं तेह सरिस हवे युद्ध जो, महारा रे ए शिष्य थकी पण थरहस्यो रे लो ॥ १० ॥ हां० ॥ काढी तप करवाल कराल ले हाथ जो, खंतिफलक विवेककवच अंगे धरे रे लो ॥ हां० ॥ जे संतोषनो पोष ते तुरगारूढ जो, ज्ञानादिक त्रिक तीखां शस्त्र धरे करे रे लो ॥ ११ ॥ हां० ॥ मद्दव महोटो नहीं छोटो गजराज जो, अज्जव कुंतामे नेदे रिपुवर्गने रे लो ॥ अध्यवसाय शुन्न थाय ते रथवर जाणी जो, नावधनु यष्टि ग्रही हणता गर्गने रे लो ॥ १२ ॥ हां० ॥ वाण ते जाणी सुदेशनारूप महंत जो, शुन्न साधनना योग सुनट समवायशुं रे लो ॥ हां० ॥ ढंढेरो सद्आगमनो तिहां थाय जो, वंदीपोस थकी होय तोस सफायशुं रे लो ॥ १३ ॥ हां० ॥ शत्रु हणीया नवि गणीया कोइ रीत जो, बीजा पण बहु शत्रुथी मूकावीया रे लो ॥ हां० ॥ ए मुनिवर हुं सूरीश्वर मध्य गाय जो, विचरंतो इहां तुफ मूकाववा आवीयो रे लो ॥ १४ ॥ हां० ॥ कहे राजा महाराजा रण शुन्न तुज्ज जो, करी उपगारने स्वामी नले पाउं धारीया रे लो ॥ हां० ॥ घर पुर देश तथा वली परिजन सहित जो, पीमा रे पामंता अमने तारीया रे लो ॥ १५ ॥ हां० ॥ ए वयरीथी नयरीलोक अशेष जो, पीड्यो ते मूकावी बीजो नवि शके रे लो ॥ हां० ॥ हे मुनिनाह अथाह करुणनंमार जो, मूकावो ए वयरी जिम मुफ नवि टके रे लो ॥ १६ ॥ हां० ॥ लेइ दीक्षा ने ग्रही शिक्षा तुम्हे राय जो, न करो ए प्रतिबंध तथा वयरी ग्रहो रे लो ॥ हां० ॥ धनवती पूत जयंत ठवे निज गाम जो, धन धनवती केइ मंत्री

... करी महा महो रे लो ॥१७॥हां०॥ सूरि सकाशे शुन आशे महो दी...
... धन राजर्षि तिहां संयम डुक्कर पालता रे लो ॥ हां० ॥ थइ गियछ गय...
...१५८ होय जो, नव्यांबुज सूरजनी परे अनुवालता रे लो ॥ हां० ॥ ...
...२ नरिंद वरिंदने देइ दीक्ष जो, मासखमणनुं अणसण पालीने थया ...
... ॥ हां० ॥ धनवती पण सती पाली अणसण शुरू जो, सामानिक सुर ...
... ते बिहुं गयां रे लो ॥ १० ॥ हां० ॥ भ्राता दोय तस गुणज्ञाता गु...
...पंत जो, धनदेव ने धनदत्त पण नेला उपना रे लो ॥ हां० ॥ गुण आगर ...
...तिसागरमां अवगाढ जो, एह प्रजाव जनमांतर संचित पुण्यना रे लो ॥
२० ॥ हां० ॥ धन धनवती नेमि राजीमतीना जीव जो, सुरजव सहित
कह्यो ए पहिलो जव जलो रे लो ॥ हां० ॥ वारमी ढाल रसाल ए पहेले खंम
जो, पहेलो ए अधिकार थयो अति गुणनिलो रे लो ॥ २१ ॥ हां० ॥ वैरागी
...गी, वमजागी जेह जो, पंमित श्रीजिनविजय गुरु शुन संयमी रे लो ॥
॥हां०॥ उत्तमविजय विनेय अछे गुणवंत जो, पद्मविजय कहे वात ए मुफ म-
नमां रमी रे लो ॥२२॥हां०॥सर्व गाथा ॥२७०॥ श्लोक॥३३॥इति श्रीमन्नेमिरा-
जीमत्योः सुरसहितः प्रथमो नवः समाप्तः॥ इति प्रथमोऽधिकारः समाप्तः॥१॥

॥ अथ द्वितीयोऽधिकारः प्रारज्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रणमी पास जिणंदने, जास महिम विख्यान ॥ बीजो नव हवे दा-
खवुं, ते सुणजो अवदान ॥ १ ॥ नरत खेत्र मांहे अछे, गिरि वैताढ्य महं-
त ॥ रूपमयी लवणाधिगत, पूर्वापर जस अंत ॥ २ ॥ उंचो पणविस जो-
यण, पहोलो मूल पचास ॥ दश जोयण तिहांथी जइ, एहवा तिहां वि
लास ॥ ३ ॥ दक्षिण उत्तर श्रेणी तिहां, खेचरनां रहगाण ॥ दश योज-
न पहोलां अछे, तिहां सुणजो मंमाण ॥ ४ ॥ नगर पंचास दक्षिण दिशे,
उत्तर दिशिमां साठ ॥ रतन कनकमय कूट नव, जिहां दीसे बहु ठाठ
॥ ५ ॥ सिद्ध कूट तेहमां अछे, कोश साठेरा उंच ॥ कोश आयाम अध
कोश पृथु, जंबूनदमइ संच ॥ ६ ॥ जिनवर चैत्य ते वर्णवुं, प्रतिमा एक-
सो आठ ॥ देवजुवन सम दीपतुं, ऊर्णा परे सूत्रे पाठ ॥ ७ ॥ अंब बकुल
चंपक खजुर, डाख चंदनवन ज्यांहि ॥ जे मुनिवर पण देखीने, विस्मय

पामे त्यांहि ॥ ८ ॥ देव देवी आवी करे, क्रीमा वनमां सार ॥ गावे तीर्थं-
कर चरित्र, चंद उज्ज्वल अनुहार ॥ ए ॥ रुषनदेव जिननुं चरित्र, वि-
द्याधर तिहां गाय ॥ कृतप्रसाद नमि विनमिने, संजारी सुखदाय ॥ १०॥
चारण मुनिवर तिहां कणे, धरता निर्मल ध्यान ॥ सुर खेचर तिरि जेह-
ने, सेवे धरी बहुमान ॥ ११ ॥ इणी परे ते वैताढ्य गिरि, शोने अति मनो-
हार ॥ धनकुमार सुर उपजे, ते सुणजो अधिकार ॥ १२ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ कांकरीया मुनिवर ॥ ए देशी ॥ उत्तर श्रेणी तिहां अछे जी, सूरतेजपुर
सार ॥ सूरतेज राजा तिहां जी, खेचरचक्री श्रीकार ॥ १ ॥ नवि चित्त ध-
रीने, सांजलो अचरिज वात ॥ ए आंकणी ॥ घरमां ने संग्राममां जी, हा-
थथी मूके न बाण ॥ विद्युन्मती राणी अछे जी, अंतेउर शिर वाण ॥ न०॥
॥ २ ॥ चपल नहीं विद्युत परे जी, पण पयोधर उत्कर्ष ॥ तास गर्नमां
उपनो जी, धनजीव हवो राय हर्ष ॥ न० ॥ ३ ॥ लक्षणलक्षित देहनी जी,
प्रसवे पुत्र रतन्न ॥ चित्रगति अनिधा ठवे जी, करे पंच धाव जतन्न ॥ न० ॥
॥ ४ ॥ सितपक्षनो चंद्रमा जी, जिम वधे रूप अनंग ॥ यौवन पाम्यो अ-
नुक्रमे जी, ग्रहीय कला मन रंग ॥ न० ॥ ५ ॥ सुरगुरु जो तस वर्णवे जी,
रूप तणो प्रागजार ॥ पण ते नवि वर्णवी शके जी, पुण्य जन्मांतर कार ॥
॥ न० ॥ ६ ॥ दक्षिण श्रेणीए पुर अछे जी, सीयमंदिर अनिधान ॥ अनंग-
सिंह तिहां नूपति जी, अनंग परे रूपवान् ॥ न० ॥ ७ ॥ सिंह परे ते परा-
क्रमी जी, शशिप्रना तेहने नार ॥ पुत्रीपणे तस गर्नमां जी, धनवती ली-
ये अवतार ॥ न० ॥ ८ ॥ बहु पुत्रोपरि पुत्रिका जी, प्रसवे गुणनंमार ॥
पुत्रजन्म महोत्सव परे जी, महोत्सव अति हे उदार ॥ न० ॥ ए ॥ रतन-
वती नामे थइ जी, कल्पवृक्षनी वेली ॥ महिला योग कला नणे जी, पू-
रव पुण्यने नेली ॥ न० ॥ १० ॥ यौवन वय आवी तदा जी, मदन नं-
दाणां लोग ॥ जोवे पण ते कुंवरी जी, नवि वांछे मन नोग ॥ न० ॥ ११ ॥
शास्त्र नणे शमता धरे जी, नित्य करे धर्मविचार ॥ पूछे राय निमित्तिउ
जी, कुण पुत्री नरतार ॥ न० ॥ १२ ॥ निमित्तिउ कहे रायने जी, जीती
लेशे तुऊ खग्ग ॥ तेह पुरुष तुं जाणजे जी, रतनवती वर मग्ग ॥ न० ॥
॥ १३ ॥ सिद्धायतने शाश्वते जी, जिनवर वंदता जास ॥ कुसुमवृष्टि शिर

रे जी, थाशे ते परणशे तास ॥ भ० ॥ १४ ॥ राजा मन हर्षित थयो
।, विस्मित चिंतवे एम ॥ क्रम आगत देवी दीयुं जी, खड्ग ते लेशे केम
भ० ॥ १५ ॥ संग्रामे संकट पडे जी, काम करे मुझ तेह ॥ तेहने पण
र जायशे जी, बलवंतो नर जेह ॥ भ० ॥ १६ ॥ बोलाव्यो निमित्तिउं जी,
जी करी सत्कार ॥ इण अवसर एह भरतमां जी, नगर चक्रपुर धार ॥
भ० ॥ १७ ॥ सुग्रीव नामे राजीयो जी, भद्रा ने यशमती नार ॥ भद्राकूखे
नो जी, लघु तस पद्मकुमार ॥ भ० ॥ १८ ॥ यशमतीनो पुत्रज वडो जी,
मे सुमित्रकुमार ॥ विनयी शांत गंभीर ते जी, करे परने उपगार ॥ भ० ॥
१९ ॥ गुण जाणे परनो कर्यो जी, न्यायवत्सल जसवंत ॥ वासितमति
सने जी, नित नित सुमति धरंत ॥ भ० ॥ २० ॥ जाएयो विपरीत
नने जी, राज्य वंछे तस मात ॥ द्वेष धरे सुमित्रथी जी, मारणनी करे
॥ भ० ॥ २१ ॥ मन चिंते ए जीवतां जी, पद्मने नवि होय राज ॥ छि-
गवेषे तेहनां जी, पुत्र तणे तेह काज ॥ भ० ॥ २२ ॥ एक दिन विष मि-
त करी जी, रसवती दीधी तास ॥ विष तेहने तिम परिणम्युं जी, जिम
नो गले पास ॥ ॥ भ० ॥ २३ ॥ मूर्छा लही धरणी ढल्यो जी, आवे विषना
वेग ॥ नीला दांत थइ गया जी. उपजे दाघ अनेक ॥ भ० ॥ २४ ॥ दारुण
उपजे वेदना जी, जे करे जीवनो अंत ॥ बोले चाले ते नहीं जी, जाणे न
चेष्टा करंत ॥ भ० ॥ २५ ॥ हुंकारो पण नवि दीये जी, काष्ठ परे रहे ते-
ह ॥ सांभली राजा आवीयो जी, पुत्र उपर धरी नेह ॥ भ० ॥ २६ ॥ मंड-
लाधिप मंत्री घणा जी, सामंत नगरनां लोक ॥ माता प्रमुख रुदन करे
जी, अंतउर धरे शोक ॥ भ० ॥ २७ ॥ कोलाहल तिहां उछल्यो जी, नगर
करे आक्रंद ॥ प्रगटपणे कहे ए कर्युं जी, शोक्य माताए मतिमंद ॥ भ० ॥
॥ २८ ॥ भद्रा नारी तेहवे जी, सांभली लोकनी वाणी ॥ विद्यामंत्र औषध घ-
णां जी, राय करावे जाणी ॥ भ० ॥ २९ ॥ मणि रत्न प्रमुख तणां जी, पाणी
पाड करे यत्न ॥ देव तणी पूजा करे जी, शांति करमना प्रयत्न ॥ भ० ॥ ३० ॥
शाता नवि तेहने थइ जी, एक लगारेक मात्र ॥ तेहना गुण संभारतां जी,
लोक करे विलापात ॥ भ० ॥ ३१ ॥ तेम ते आक्रंद उछल्यो जी, जे सांभलीने
रान ॥ पंखी तरुअर सहु रड्यां जी, करे तस गुण बहुमान ॥ भ० ॥ ३२ ॥

बीजे अधिकारे कही जी, पहेली ढाल रसाल ॥ पद्मविजय कहे आगले जी, होशे मंगलमाल ॥ ज० ॥ ३३ ॥ सर्व गाथा ॥ ४२४ ॥ श्लोक ॥ ३३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चित्रगति इण अवसरे, वेसी प्रवर विमान ॥ बहु विद्याधरे परवस्यो, जोवे नव नव थान ॥ १ ॥ ते नगरे आवी चड्यो, अति अद्भुत ते वात ॥ देखीने तिहां मोकले, विद्याधर एक जात ॥ २ ॥ ते पण व्यतिकर सांजली, कहे कुमरने तेह ॥ करुणा आवी कुमरने, आवे नृपने गेह ॥ ३ ॥ देखी सुमित्रकुमरने, विद्याए तिहां वारि ॥ मंत्री छांटे त्रण चलु, सज्ज थयो तिण वार ॥ ४ ॥ विस्मित पूछे ए किस्युं, लोक मल्यां छे केम ॥ तास पिता सुग्रीव तिहां, वात कहे थइ जेम ॥ ५ ॥ कहे सुमित्र सुण कुंवर जी, तुम्ह कुल जाएयुं आज ॥ पर उपगार गुणे करी, पूछणतुं नहीं काज ॥ ६ ॥ पण सांजलवा मुज घणी, इछा छे तुम वंश ॥ कोण तुम्हे किम आवीया, कहो हीसे अम्ह हंस ॥ ७ ॥ मोन धरीने ते रह्या, न करे आप प्रशंस ॥ पार्श्ववर्त्ती तस मंत्रिमुख, जाखे तेहनो वंश ॥ ८ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ चित्रोमा राजा रे ॥ ए देशी ॥ सुणो स्वामी सुमित्त रे, वेयड्ढ गिरि चित्त रे, सूरतेज विदित, तिहां छे नरपति रे ॥ विद्याधर रायो रे, तस कुलमां आयो रे, सुजट सवायो, नामे चित्रगति रे ॥ १ ॥ कुतूहल निरखंतो रे, आयो विचरंतो रे, उपगार करंतो, तुज घर आवीयो रे ॥ एम सांजली चिंते रे, दुःख अंगथी बीते रे, जुर्ज किण रीते, कुमरने पावीयो रे ॥ २ ॥ ए विष जले दीधुं रे, मुज कारज सीधुं रे, मुज काम कीधुं, उपगारनुं मात जी रे ॥ किम होत संयोग रे, केम जात ए रोग रे, जमरायने जोग, थावत ए गात जी रे ॥ ३ ॥ विना पच्चरकाण रे, नवकार न दाण रे, अनंत दुःख खाण, लहन हुं आगले रे ॥ इण मुज उगास्यो रे, नारक दुःख वास्यो रे, जवपार उतास्यो, शिव दीयो करतले रे ॥ ४ ॥ तें कस्यो उपगार रे, तुज्ऩो अवतार रे, ते पर सुखकार, कहे इम कुमरने रे ॥ घन जगमां वरसे रे, फले तरुवर सरसे रे, अंधकारने निकरे, शुं छे सूरने रे ॥ ५ ॥ तस आग्रहे रहेता रे, चित्रगति दिन केता रे, दोय जण सुख वेत्ता, प्रीति कथा करे रे ॥ दीधां दान ने मान रे, वली बहु बहुमान रे, करे तव शा-

हवे जावा घरे रे ॥६॥ सुमित्र तव जापे रे, सुणो वात विलासे रे
देशने पासे, विचरता केवली रे ॥ में सुणीया काने रे, सुजस अजि-
रे, मुज मन एम जाणे, आवशे ए वली रे ॥७॥ थोडा दिन मांहि
, आवशे जव आंही रे, आपण उछाहे, वे जण वांदशुं रे॥ तिहां लगे
रहेवुं रे, एटलुं मुज कहेवुं रे, सुणी वली एहवुं, रह्या खेचरवृंदशुं रे
८ ॥ सुरपादप नामे रे, उद्यान सुगमे रे, कीडाने ठामे, थिडुं गया
रे॥ सहकारनी छाया रे, जव ते थिडुं गया रे, सुरभि शीतल वाया,
तदा रे॥९॥ शब्दादिक सार रे, बोले निरधार रे, अमरसुखकारा,
तिणे समे रे ॥ गंधोदक फूल रे, वरसे ते अमूल रे, करे सोनानुं
, ते देखीने गमे रे॥ १०॥ क्षणमां ते नाणी रे, लाज बहुलो जाणी रे,
इम वाणी, कमले बेसीने रे ॥ सुर खेचर सुणता रे, हरखे गद्गद-
रे, शुभ भावने वहेता, आवे दोय मने रे ॥ ११ ॥ तिपयाहिण दीधी रे,
कीधी रे, शुभ जायगा लीधी, बेसण कारणे रे॥बीजे अधिकारे
, बीजी ढाल उदारे रे, भाखी सुखकारे, पद्मविजय कहे रे ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चित्रगति सुमित्र बिहुं, बेठा यथोचित ठाण ॥ मुनि पण तेहने देशना,
मधुरी वाण ॥ १ ॥ सावधान थइने सुणे, ते पण देशना सार ॥ निद्रा
परिहरी. आलस अंग उतार ॥ २ ॥ निद्राथी नवि सांभले,
जिनवर वचन रसाल ॥ कर चरणादिकने ग्रही. जोबन लागे नाल ॥ ३ ॥
निद्रावंतो मानवी, बली मृतक ए होय ॥ सांभलवे सरिखा कह्या, अंतर दीठ
न कोय ॥ ४ ॥ जे जे उंघ प्राणीया, ते नवि बोले साच ॥ पुत्र कोइ शुं
कहुं कहो, जिम तिम थाशे वाच ॥ ५ ॥ नरभावी पर भणतो, दीसे
बिरुडुं रूप ॥ जागता हासी करे, निद्रानुं उर्डी रूप ॥ ६ ॥ भूखे आव्य
उपार्जीने, मूठ देखे सर्व ॥ आव्यो मान गणतो, उंघाळो गनगर्व
॥ ७ ॥ सांभलतां उंघ घटा, आवे सना समक्ष ॥ लाज न आवे तेहने,
मूके मथतुं दक्ष ॥ ८ ॥ आव्या पछे जाय तो हर्षी, नवि आवन थां
तेप ॥ विकथा रजो नवि जना, विकथा न करा जप ॥ ९ ॥ थाने नवि
सांभली नके, परने करे अनगार ॥ विकथा ने विनया करे, ध्यानसहित

नवि थाय ॥ १० ॥ ते माटे सज्ज थइ करो, निद्रा विकथा दूर ॥ केवली कहे ते सांजलो, ध्वनि ज्युं गंगापूर ॥ ११ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ हस्तिनागपुरवर जलुं ॥ ए देशी ॥ चित्रगति उद्देशीने, केवली कहे देशना तास रे ॥ एह संसार असारमां, जमतां नहीं कहीं सुखवास रे ॥ जमतां नहीं कहीं सुखवास, सुणो जवि प्राणीया शुज योग रे ॥ शुज योग संयोग, निरोगपणुं अति दोहिलुं एम जाणी रे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ धर्म सामग्री अति दोहिली, जे कारण काल अनंत रे ॥ जाति पंचेंद्रि तिरि नारकी, मांहि जमतां नवि लह्यो अंत रे ॥ ॥ मांहि० ॥ २ ॥ डुर्लजपणुं पामी करी, आर्यक्षेत्र मनुज अवतार रे ॥ धर्म करे नहीं प्राणीया, जाणीने डुःख संसार रे ॥ जाणी० ॥ ३ ॥ यडुक्तं ॥ संसारंमि असारे, नत्थि सुहं वाहि वेअणा पउरे ॥ जाणंतो इह जीवो, न कुणइ जिणदेसियं धम्मं ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ बुरुतां पाम्यो जिहाजने, मूकी दीये तेह अजाण रे ॥ तिणे सामग्री लही करी, करो धर्म उद्यम मन आण रे ॥ करो० ॥ ४ ॥ धर्म परीक्षा कीजीये, जेम कनक परीक्षा थाय रे ॥ दाह ठेदन ने कसोटीए, त्रण गाण परखी ग्रहेवाय रे ॥ त्र० ॥ ५ ॥ देव गुरु धर्म तत्त्व ए, त्रण गण परीक्षाए धर्म रे ॥ दोष अढार रहित सदा, मूकाणां चउ अरु कर्म रे ॥ मू० ॥ ६ ॥ श्लोक ॥ अंतरायो दानलाजो, वीर्यजोगोपजोगगाः ॥ हास्यरत्यरतिर्जीति,-र्जुगुप्सा शोक एव च ॥ २ ॥ कामो मिथ्यात्वमज्ञानं, निद्रा चाविरतिस्तथा ॥ रागद्वेषश्च ते दोषा,-स्तेषामष्टादशाप्यमी ॥ ३ ॥ अथवा ॥ अन्नाण कोह मय मा,-ण लोह माया रइय अरई अ ॥ निद्दा सोग अलिअवय,-ण चोरिया मछर जया य ॥ ४ ॥ पाणिवह पेम किडा, पसंग हासाइ जस्स ए दोसा ॥ अहारस विपणहा, पमामि देवाहिदेवं तं ॥ ५ ॥ पूर्व ढाल ॥ आरंजे वर्जित गुरु, ब्रह्मचर्य गुप्तिना धार रे ॥ पंच महाव्रत पालता, मुनिवर गुण सगविस सार रे ॥ मुनि० ॥ ७ ॥ यडुक्तं ॥ वय ठकायरक्का, पंचिंदिय लोहनिग्गहो खंती ॥ जाव विसुद्धि पडिले,-हणा य करणे विसुद्धी य ॥ ६ ॥ संजम जोए जुत्तो, अकुसल मण वयण कायसंरोहो ॥ सीआइ पीडसहणं, मरणं उवसग्गसहणं च ॥ ७ ॥ सगावीस गुणेहिं, एएहिं जो विजूसियो साहू ॥ तं पणमिज्जइ जत्ति,-ब्ररेण हियएण रे जीव ॥ ८ ॥ ममत नहीं निज देहनो,

वाह्य अंतर परिग्रह मुत्त रे॥ धर्मोपगरण जे धरे, ते राखण चरण निमित्त रे ॥ ते० ॥ ८ ॥ यडुक्तं ॥ ससरीरेवि निरीहा, वझंझंतर परिग्गहविमुक्का ॥ धम्मोवगरणमित्तं, धरंति चारित्त रक्खठा ॥ ए॥ पूर्व ढाल ॥ आप तस्या परने तारवा, जे गुरवादिक समरथ रे ॥ डुर्गति पमता जीवने, गुरवादिक आपे हथ रे ॥ गु० ॥ ए ॥ नाण दंसण चरणे करी, जीवादिकनी करे शुद्धि रे ॥ दानादिक देतो थको, परलोक साधे इण बुद्धि रे ॥ प० ॥ १० ॥ त्रण थानक शुद्ध धर्म ए, सर्वज्ञे नाख्यो चंग रे ॥ धर्म तणो ढगलो नहीं, रह्यो धर्म आतम अंतरंग रे ॥ र० ॥ ११ ॥ अवराणो कर्मे करी, ते प्रगट करेवा काज रे ॥ कारण सेवे वाह्यथी, तस अंतर प्रगटे राज्य रे ॥ त० ॥ ॥ १२ ॥ विषय प्रमादथी धर्मनां, नवि सेवे कारण जेह रे ॥ तेणे निज आतमा वंचीयो, नवि पामे वंछित तेह रे ॥ न० ॥ १३ ॥ काम अरथ तो पामीये, जो करीये धर्मनो संच रे ॥ जो न करे धर्म प्राणीयो, तो अर्थ कामपणुं वंच रे ॥ तो० ॥ १४ ॥ यतः ॥ धम्माउ अछ कामे, लधूणनआयरो तंमि ॥ कुविउवयाण एसो, उद्दालइ अछकामेवि ॥ १० ॥ अरिहंत देव सुगुरु तथा, तेहनो नाख्यो ते धर्म रे ॥ करतां अंते पामीये, शाश्वत अविहड शिवशर्म रे ॥ शा० ॥ १५ ॥ सांजली चित्रगति जणे, स्वामी मुफ कस्यो उपकार रे ॥ अर्थ काम मांहि मूर्छीयो, में जाण्युं हवे इणी वार रे ॥ मैं० ॥ १६ ॥ धर्म करे जे प्राणीया, हांसी वली कीधी तास रे॥ यौवनमदमां नवि लयुं, कृत्याकृत्य जेह अन्यास रे॥ कृ० ॥ १७ ॥ श्रावककुलमां उपनो, पण नाम मात्र मुफ श्राद्ध रे ॥ नय मारग कांइ नवि लह्यो, असमंजस करतो अगाध रे ॥ अ० ॥ १८ ॥ तात तथा गुरवादिके, नवि शिक्षा दीधी कांय रे ॥ डुर्द्धर जाणीने मुने, उवेखी मूक्यो प्राय रे॥ उ०॥ ॥ १ए ॥ जाणो बो तुमे स्वामी जी, त्रण जुवन तणा जे जाव रे ॥ ते माटे तुमशुं कहुं, तुम लाधा पुण्य प्रजाव रे ॥ तु० ॥ २० ॥ एह सुमित्रकुमार जे, थयुं नाम यथार्थ ते मुफ रे ॥ पासे रहीने करावीयुं, इणे दर्शन अद्भुत तुफ रे ॥ इ० ॥ २१ ॥ आज थकी ते कारणे, मन मान्या अरिहंत देव रे ॥ शुद्ध श्राद्ध गुरुजी करया, तस जाषित धर्मनी सेव रे ॥ त० ॥ २२ ॥ ए समकित में आदस्युं, ज्यां जीवुं त्यां लगे सीम रे॥ आवे सुग्रीव जूपति, इण अवसरे वंदन नीम रे ॥ इ० ॥ २३ ॥ विनये केवली प्रणमीया,

सामंत मंत्री परिवार रे ॥ बेठो यथोचित स्थानके, सुणे धर्मदेशना सार रे ॥ सु० ॥ २४ ॥ अवसरे पूछे नरपति, पय प्रणमी विनय उदार रे ॥ मुऊ नंदन सुमित्रने, विप दीधुं जद्रा नार रे ॥ वि० ॥२५॥ मुऊ उपर किरपा करी, मुऊ जाखो मुनि महंत रे ॥ एह अकारज पापिणी, केम कीधुं ते मुनि जा-यंत रे ॥ के० ॥ २६ ॥ जद्रानो नहीं दोप ए, एक सचिव ने दो सामंत रे ॥ तेणे ए कार्य करावीयुं, तव राजा रूठो तंत रे ॥तव०॥२७॥ मंत्री सामंतने नि-रखीया, तव बीहीनो मन शंकाय रे॥ तव कहे केवली सांजलो, तुऊ मंत्री निर्दोष ठे राय रे॥ तु० ॥ २८ ॥ अन्य रायना ते अठे, मंत्री सामंत अति डुष्ट रे ॥ तव राजा विस्मित कहे, मुऊथी कोण अन्य ठे पुष्ट रे ॥ मु० ॥२९॥ मुनिवर कहे सुण राजीया, राज्यस्थितिना दोय प्रकार रे ॥ बाह्य अज्यंतर जेदथी, नहीं बाह्यनो ए संसकार रे ॥न० ॥३०॥ अज्यंतर दोय जेद ठे, प्रशस्त अप्रशस्त नाम रे ॥ आद्य जेद पुण्यरूप ठे, तस राजा गुणनुं धाम रे॥ त० ॥ ३१ ॥ चारित्रधर्म नामे जलो, तप संजम आदि सामंत रे ॥ पापस्वरूप अप्रशस्तनुं, तेहने हणो निर्दय हुंत रे ॥ ते० ॥ ३२ ॥ मोह नामे तस राजीयो, अविवेक मदन ठल जेद रे ॥ मत्सर शोकादिक अठे, सामंत तेहथी ते अजेद रे ॥ सा० ॥ ३३ ॥ बाह्य लोकने ए सेवे, करे दोष प्रगट निरधार रे ॥ तुऊ जार्या पण एहथी, कखुं पाप विशाल असार रे ॥ क० ॥ ३४ ॥ मि-थ्याजिमान नामे कह्यो, वली बीजो असंतोष नाम रे ॥ मोहपुत्र राग के-सरी, मंत्री विषयाजिलाषनां काम रे ॥ मं० ॥ ३५ ॥ मिथ्याजिमान नड्यां थकां, न गणे बंधव सुत बाप रे ॥ स्वजन मित्र पण नवि गणे, करता अकराकर पाप रे ॥ क० ॥ ३६ ॥ नायकपणुं वांठे मने, जो नायकपणुं मुऊ होय रे ॥ सेवक लोक माहरे होये, मुऊ आणा पाले लोय रे ॥ मु० ॥ ३७ ॥ निज इछाए विचरीये, वली जोग जोगवीये सार रे ॥ धन धान्य राज्य लक्ष्मी वली, करी अश्व सुजट रथ बार रे ॥ क० ॥ ३८ ॥ ग्राम देश पुर घर वली, महाजन सुख सरवे मुऊ रे ॥ एह ममत्वबुद्धि जिके, मिथ्या अजिमाननुं गुऊ रे ॥ मि० ॥ ३९ ॥ अजिलाषा एम नित करे, पण पामे नहीं कोइ काल रे ॥ जेम जद्रा तुऊ जारजा, ह-णवा वांछ्यो तुऊ बाल रे ॥ ह० ॥ ४० ॥ पामे जो पुण्ये करी, तो वि-ठरतां नवि होय वार रे ॥ अथवा जो विठडे नहीं, तो रोग शरीरे वि-

र रे ॥ तो० ॥ ४१ ॥ पण जोगवचा नवि दीवे, अथवा होय आयु
नीप रे ॥ तेवुं करी एकलो मरे, त्याय अन्य आवीने लीप रे ॥ ला०॥
४२ ॥ देखे प्रत्यक्ष प्राणीया, वली कहीये युक्तिनां लक्ष रे ॥ पण प्रा-
। समजे नहीं, मिथ्याभिनिवेश ए वृक्ष रे ॥ मि० ॥ ४३ ॥ प्रेरे असंतो-
। जीवने, एक शत दीनारने काजे रे ॥ शत मले सहस्र इछा करे, लक्ष
ाकी अधिक थली राज रे ॥ ल० ॥ ४४ ॥ राज्य मले चक्रीपणुं, ते
मे शक्रनी होंश रे ॥ एम अतृप्ता परजवे, जातां चित्तमां करे शोष
॥ जा० ॥ ४५ ॥ कैलास सम सोना तणा, परवत असंख्याता जोय
॥ लोजीने चित्त कांइ नहीं, इछा नज्ञ सरखी होय रे ॥ इ० ॥ ४६ ॥
ुक्तं ॥ सुवण्ण रूवस्स य पव्वया जवे, सया हु कैलास समा असंखया ॥
रस्स लुद्धस्स न ते हुं किंचि, इछा हु आगाससमा अणंतया ॥ ११ ॥
र्ये ढाल ॥ सेवा करे नित्य पारकी, जलमां पेसे वली तेह रे ॥ जीम सं-
ाम मांहे थडे, आरोहे गिरिवर नेह रे ॥ आ० ॥ ४७ ॥ देश विदेश जमे
दा, करे पाप अनेक प्रकार रे ॥ करवुं न घटे ते करे, पण नवि पामे
ीनार रे ॥ प० ॥ ४७ ॥ सिद्ध कार्य नवि तेहनां, केवल होय पापनुं पा-
त्र रे ॥ विण संतोषे एणी परें, जेम जड़ा तुरु कलत्र रे ॥ जे० ॥ ४९ ॥
ुद्ध जीवने एणी परे, मोह सैन्य करे जंजाल रे ॥ ते कारण निग्रह करो,
अंतरंग शत्रु संजाल रे ॥ अं० ॥ ५० ॥ यदुक्तं ॥ असइतु मणुस्सेहिं,
मिछादंनोपजुंयए ॥ अकारिणोत्थ वयंति, सुघइकारगो जणो ॥ १२ ॥ ए
बीजा अधिकारनी, ढाल त्रीजी कही मनोहार रे ॥ पंडित उत्तमविजयनो,
कहे पद्मविजय जयकार रे ॥ क० ॥ ५१ ॥ सर्व गाथा ॥ १२७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सांजली सुग्रीव राय तव, जल आंसु जरी नेण ॥ जेम जाख्युं तेम
ए प्रजु, पण सांजलो मुज वेण ॥ १ ॥ तुम्ह सरखा निग्रह करे, ए शत्रुने
स्वामि ॥ पण पापिणी शुं अनुजवे, अने वर्ते किण गाम ॥ २ ॥ कहे के-
वली सुण नृपति, बाहिर गइ तब ताल ॥ आजरणादिक लूंटवा, तस्कर
आव्या पास ॥ ३ ॥ आपी पल्लीपति जणी, आपे वणिकने तेह ॥ तस
घरथी नासी करी, गइ अटवीमां एह ॥ ४ ॥ चोक फेर लाग्यो अगनि, ते-
हमां झंपापात ॥ रौद्र ध्यानथी ते मरी, रत्नप्रजाए जात ॥ ५ ॥ एक सा-

गरने आयुखे, पठी चंमालिणी थाय ॥ तेहने गर्ज रहे थके, जगडो शोक्य कराय ॥ ६ ॥ शोक्यवेध अति आकरा, जेहवां तीखां तीर ॥ जाखां शूब तणी परे, परपर दाखे पीर ॥ ७ ॥ मारी तेहने कर्त्तिका, उदर विदारे शोक ॥ मरी बीजे नरके गइ, पाप तणुं फल रोक ॥ ८ ॥ तिहांथी लइ तिर्यंचपणुं, जशे वली नरके तेह ॥ ते संसार अनंत एम, जमशे डुःख अठेह ॥ ए ॥ प्राये तिरिय मनुष्यना, जव करशे ते असार ॥ कहीं शस्त्रे कहीं विप थकी, किहां दग्धे होये मार ॥१०॥ सम्यग्दृष्टि जीवनो, जाव थकी उपघात ॥ कीधा ते अनुजव्या विना, कबहीं ते नवि जात ॥ ११ ॥ यडुक्तं ॥ कृतकर्मक्षयो नास्ति, कल्पकोटिशतैरपि ॥ अवश्यमेव जोक्तव्यं, कृतं कर्म शुजाशुजम् ॥ १ ॥ कर्म कस्यां जे जे नरे, ते ते केडे धाय ॥ गाय ह-जार मले थके, पण वछ वलगे माय ॥ १२ ॥ यडुक्तं ॥ श्लोक ॥ यथा धेनुसह-स्रेपु, वत्सो विंदति मातरम् ॥ तथा पूर्वकृतं कर्म, कर्त्तारमनुगछति ॥ २ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ जंबुद्दीप मजार रे ॥ ए देशी ॥ सांजली एणी पेरे वाणी रे, नरपति चिंतवे ॥ जुर्ज जुर्ज कर्म विटंबणा ए ॥ जेहने काजे काम रे, कीध ते इहां अठे ॥ ते तो डुःख सहे ठे घणां ए ॥ १ ॥ सांजली कुमर सुमित्त रे, जणे नृपति प्रति ॥ करकज जोमी एणी परे ए ॥ कर्मबंधननो हेतु रे, हुं थयो तात जी ॥ न घटे मुज रहेवुं घरे ए ॥ २ ॥ अनुमति द्यो मुज तात रे, लेउं दीक्षा हवे ॥ सर्व जीवने हितकरी ए ॥ कर्म तणो क्षय थाय रे, सुख लहे शाश्वतां ॥ कारण बंधनो नवि वरी ए ॥३॥ यतः ॥ धन्ना ते सप्पुरिसा, जे नवर मनुत्तरंगयामुक्कं ॥ जम्हा ते जीवाणं, न कारणं कम्मबंधस्स ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ मुख मलकावी राय रे, जाखे एणी पेरे ॥ पुत्र अम्हे तें जी-तीया ए ॥ जेह अम्हारुं कृत्य रे, ते तुम्हे आदरो ॥ वयथी तो अम्हे वी-तीया ए ॥ ४ ॥ धर्म ते करवो तात रे, आगलथी कह्यो ॥ पुत्र तणो पाठल कह्यो ए ॥ सुमित्र कहे सुणो तात रे, नियम न एहमां ॥ संसार डुःख सायर लह्यो ए ॥ ५ ॥ घर बलतुं जब होय रे, तब अनुक्रम किस्यो ॥ अवसर लही नासे सहु ए ॥ रणमां हणतां शत्रु रे, नहीं क्रम को कह्यो ॥ अवसर लही मारे बहु ए ॥ ६ ॥ कहे नृप सांजल पुत्त रे, जुक्त जोगी अम्हो ॥ ते कारण व्रत अमे महुं ए ॥ जवसागरमां जाज रे, गुरु

म्हे पामीया ॥ तेणे घर रहो तुम्हे अम्हे कहुं ए॥ ७ ॥ प्रजा पालण काज
, राज करो तुमे ॥ अम्हे अंतर रिपुने हणुं ए ॥ पुत्रने थापी राज्य रे, आद-
जो तुम्हे ॥ दीक्षा एणी पेरे अम्हे जणुं ए ॥ ८ ॥ कुमर कहे सुणो तात रे,
वि मुऊ मन रमे ॥ दुःखदायक ए जोगमां ए ॥ तोपण हुं अंतराय रे, न
रुं तुम्ह प्रते ॥ एम कहे ते सवि लोगमां ए॥ ए॥ उचित करी सहु
ऊ रे, हमणां ने पछे ॥ जे तुम्ह मन रुचे ते करो ए॥ राजा हर्षित होय
, विनय ते देखीने ॥ पुत्र विनय रयणायरो ए ॥ १० ॥ सुमित्रकुम-
ने राज्य रे, थापे नरपति ॥ महा विभूतिए करी ए ॥ दान दीये करे
जा रे, जिनप्रतिमा तणी ॥ बहु लोके नृप परवरी ए ॥ ११ ॥ केइक
ामंत साथे रे, दीक्षा पडिवजे ॥ केवली पासे विधि थकी ए॥ रायऋषि
ग्रीव रे, विहार करे सदा ॥ पाळे दीक्षा सुखकारकी ए ॥ १२ ॥ पाळे
ाज्य सुमित्र, लघु बांधव प्रते ॥ ग्रामादि करे आपे बहु ए ॥ पण नाव्यो
संतोष रे, बाहिर नीसर्यो ॥ निंदा करे तेहनी सहु ए ॥ १३ ॥ देइ स-
मान ते तास रे, वळी संतोषीयो ॥ उत्तम नीच न होय कदा ए ॥ चि-
त्रगति कहे मित्र रे, सघळुं तें कर्युं ॥ भुवनमां करवुं ते तदा ए ॥ १४ ॥
स्वर्गापवर्गनो हेतु रे, जिनवर धर्मनो ॥ तुं मुऊने कारण मळ्यो ए ॥ वाट
जुए मुऊ तात रे, तेणे अम्हे जायशुं ॥ अवसरे वळी मळशुं वळ्यो ए ॥
॥ १५ ॥ बोले गद्गद वाणी रे, आंसु रेडतो ॥ चित्रगति तमे शुं कहो ए
॥ मन चिंते महाराय रे, मागे भूपणां॥ तेहथी कहो केम सुख लहो ए ॥ १६ ॥
जे परदेशी लोक रे, तेहशुं प्रीतडी ॥ दुःखदायी थाये घणी ए ॥ प्रीति
करीने जाय रे, पछे मळे दोहिला ॥ केवल लहे वात दुःख तणी ए
॥ १७ ॥ आंसु पडते धार रे, एणी परे विनवे ॥ मित्रजी वेहला आवजो ए ॥
विद्याधरनी साथे रे, सुखशाता तणी ॥ वात निरंतर कहावजो ए ॥ १८ ॥
बोलाव्या एम जाणी रे, वैताढ्ये गया ॥ मात पितादिकने मळ्या ए ॥ म-
नमां दुःख बहु आणी रे, सुमित्र प्रमुख जे ॥ अनुक्रमे सहु घर जणी व-
ळ्या ए॥ १९॥ जिनवरनी करे पूजा रे, वंदे साधुने ॥ दान दीये अडलक-
पणे ए॥ जेह सिद्धांतनां शास्त्र रे, सांजळे विधि थकी॥ आवडे ते नित नित
गणे ए॥ २० ॥ उत्सव करे नित तेह रे, जिनवर मंदिरे ॥ रथयात्रा करे
राजीयो ए ॥ साधर्मिक वात्सल्य रे, संग तेहनो करे ॥ एम जग मांहि

गाजीयो ए ॥ २१ ॥ अति अद्भुत चरित्र रे, यौवन भर मांहि ॥ देखीने हर्षित थया ए ॥ स्वजन कुटुंब परिवार रे, परजा जन मली ॥ सवि परशंस करे सया ए ॥२२॥ चोथी ढाल रसाल रे, भाखी एणी परे ॥ ए बीजा अधिकारमां ए ॥ पद्मविजय कहे एम रे, धर्म करो तुम्हे ॥ धर्म सार संसारमां ए ॥ २३ ॥ सर्व गाथा ॥ १६२ ॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एहवे सुमित्र रायनी, बेहेन रूपाधिक तेह ॥ देश कलिंगनो अधिपति, तस परणावी जेह ॥ १ ॥ अनंगसिंह खेचर तणो, नामे कमलकुमार ॥ बांधव रतनवती तणो, देखे तास किवार ॥ २ ॥ अपहरीने ते लइ गयो, सांजले सुमित्र राय ॥ वहालपणुं ते बहेननुं, शोकसमुद्रे गाय ॥ ३ ॥ राजकाज सवि परिहर्युं, आमण झूमण तेह ॥ विगतसत्त्व ते थइ रह्यो, न गमे धन ने गेह ॥ ४ ॥ वात सुणे ते चित्रगति, विद्याधर तस मित्र ॥ कहेवरावे तिहां चित्रगति, खेद म करो सुमित्र ॥ ५ ॥ थोमा दिनमां जाणजे, शुद्धि करीने तास ॥ लेइ ताहरी बहेनने, आवुं हुं तुज पास ॥ ६ ॥ एम आश्वासन देइने, करे गवेषणा जाम ॥ मुकूट नगना शिखरमां, लाधी शुद्धि तिणे ताम ॥ ७ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ करेखडां घरी दे रे ॥ ए देशी ॥ चित्रगति चाल्यो हवे, लेवा सुमित्रनी बहेन ॥ हांक्यो कमलकुमारने, आव्यो ते अजिवेण ॥ १ ॥ सुगुण नर सुणजो रे ॥ परस्त्री गमनथी एह, अनर्थ तुम्हे सुणजो रे ॥ ए आंकणी ॥ सुरू लाग्युं बेहुने तिहां, सांजले कमलनो तात ॥ अनंग सैन्य लइ आवीयो, खेचरसैननो भ्रात ॥ सु० ॥ २ ॥ पुत्र पराजव जाणीने, अमर्ष धरतो राय ॥ चित्रगति साथे तदा, रण करवा सज्ज थाय ॥ सु० ॥३॥ सैन्य परस्पर बिहुं मल्यां, मूके फडोफड बाण ॥ खंडे केइ वेरी तणां, बाण आवे तिण ठाण ॥ सु० ॥ ४ ॥ कोइ आकाशे उछली, करे प्रहार अनेक ॥ शस्त्र कुंत तरवारना, घा करता अतिठेक ॥ सु० ॥ ५ ॥ केइ वंचावे घातने, केइक प्रगन्न थाय ॥ केइ प्रगट थइ युद्धता, घात करी केइ जाय ॥ सु० ॥ ६ ॥ विद्याधर विद्याबले, करे अंधारुं घोर ॥ नासी जाये हाथथी, करता महारण शोर ॥ सु० ॥ ७ ॥ वली भेला मली ऊसरे, वली

तेह प्रहार ॥ मूर्छाए आंख्यो मले, मूये पडे केइ
। ८ ॥ चेतना लही उठे वली, पडे उठले त्यांहि ॥ हांके वेरं
१० थाके न ज्यांहि ॥ सु० ॥ ए ॥ कल्पांत काल घननी परे,
इख तेह ॥ चमके बीजलीपुंज ज्युं, धमके फाल करेह ॥ सु० ॥
डुचुके चुरुता, कोइ सुभट बलवंत ॥ मुष्टि घाचे घायता, श
थंत ॥ सु० ॥ ११ ॥ विद्याए विद्या हणी, हणीयां शस्त्रे शस्त्र ॥
कुमरे तदा, छुट्यां वैरीनां अस्त्र ॥ सु० ॥ १२ ॥ अनंगसिंह
थे, डुर्जय दीसे एह ॥ कुलक्रमागत खड्गने, लेउं देवे दीधुं जेह ॥
संभालुं ते खड्गने, आव्युं पण ततकाल ॥ देखी शकीये दोहिलं
तहसगमे काल ॥ सु० ॥ १४ ॥ तगपड रव करतुं थकुं, भुवन स
भीक ॥ आवी रह्युं तस हाथमां, चित्रगति निर्भीक ॥ सु० ॥ १५
अनंगसिंह कुमरने, कुलदेवी संभार ॥ नासी जा मुक मुख थकी, कि
हजी इण वार ॥ सु० ॥ १६ ॥ चित्रगति हसीने कहे. हवे उगर
सैन्य ॥ लोढाना कटका थकी. नहीं मुक मित्रनी बहेन ॥ सु० ॥
जेहने हैये बल नहीं. शस्त्र करे नस कांइ ॥ निज शस्त्रे करीने लहे
वेल धान ते धाड ॥ सु० ॥ १८ ॥ एम कहीने विद्यावले, कर्युं अ
तेम ॥ हाथे हाथ सुझे नहीं. हष्टिए हष्टि न जेम ॥ सु० ॥ १९ ॥
कांइ न देखता नवि जाणे को क्यांहि ॥ चित्रामण पुतली परें, थिर
ते हता त्यांहि ॥ सु० ॥ २० ॥ लीधुं करथी खड्गने. वली सुमित्रनी
हेन ॥ जयजयकारा साथे वली. नासी गयुं तन सेन ॥ सु० ॥ २१ ॥ क
अंतर जव देखतो देखे न हाथमां खग ॥ नगिनी तेम सुमित्रनी, ते
वेरीनो वग ॥ सु० ॥ २२ ॥ अनंगसिंह मन चिंतवे स्वप्न के ए इंडजाल
खड्ग माहरुं लेइ जायता. न व लह्यो कोण केहोना बाल ॥ सु० ॥ २३ ॥
सहसगमे नयासमा देवा न शक्यो कोय ॥ ते जाताए लइ गयो, जेम ग
जवर कज होय ॥ सु० ॥ २४ ॥ अथवा दैवयोगे करी. असंभाव्य पण होय
॥ नाखे रहने हाथथी. नवि हाय ते खले जोय ॥ सु० ॥ २५ ॥ यतः ॥
अघटितघटितानि घटयति सुघटितघटितानि जर्जरीकुरुते ॥ विधिरेव
तानि घटयति, यानि पुनान्नैव चिंतयति ॥ १ ॥ रहेलां नेमित्तिए कह्युं,
ए थानेठ पण इठ ॥ मुक पुत्री वर थायशे. पण नवि

॥ सु० ॥ २६ ॥ इम चिंती सुत सहित ते, आव्यो नृप निज गाम ॥ सुतने निर्भ्रंठी कहे, दुष्ट नहीं तुऊ काम ॥ सु० ॥ २७ ॥ परदारा तें परहरी, फल पाम्युं तस एह ॥ कुलक्रमागत खड्ग करी, जयसीरी होवे जेह ॥ ॥ सु० ॥ २८ ॥ तेह खड्ग कोइ लइ गयुं, अपजस पाम्या आज ॥ परयुवती शील खंमणो, रण जंग थयो ए अकाज ॥ सु० ॥ २९ ॥ परदारा हरतां थकां, पापफल होय पुष्ट ॥ तेहने तो ए केटलुं, डुःख आगल लहे डुष्ट ॥ ॥ सु० ॥ ३० ॥ पण जो हवे ए ठलखुं, तो होवे मुऊ शांति ॥ कोण जाणे ए थापशे, के नहीं थाये ए खांत ॥ सु० ॥ ३१ ॥ पण नेमित्तिए जाणीयुं, बीजुं कारण एक ॥ सिद्धायतनने फूलनी, वृष्टि थशे सुविवेक ॥ सु० ॥ ॥ ३२ ॥ वृष्टि थतां तो देखशुं, ठलखशुं तब तेह ॥ रत्नवती कुंवरी तणो, सही भरतार ठे एह ॥ सु० ॥ ३३ ॥ जगिनी सुमित्र जूपनी, सोंपे शील अखंम ॥ चित्रगति सुमित्रने, प्रीति वधी प्रचंड ॥ सु० ॥ ३४ ॥ ए बीजा अधिकारनी, कही पांचमी ढाल ॥ पद्मविजय कहे नारीना, संगथी डुःख असराल ॥ सु० ॥ ३५ ॥ सर्व गाथा ॥ २०४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मंत्रिसुत कहे रायने, संग्रामादिक वात ॥ सांजलीने मन चिंतवे, मन धरी शमता शांत ॥ १ ॥ अधिकरण जगिनी थइ, जब सघलो गयो आल ॥ धर्म करवा विण माहरो, जनम थकी ए काल ॥ २ ॥ यतः ॥ जा जा वच्चइ रयणी, न सापमिनेथत्तइ ॥ अहम्मे कुणमाणस्स, अहला जंति राइर्ज ॥ २ ॥ जा जा वच्चइ रयणी नसापमिनेथत्तइ ॥ धम्मं च कुणमाणस्स, सहला जंति राइर्ज ॥ ३ ॥ कोण जाइ कोण बहेनकी, कोण सज्जन परिवार ॥ स्थिति परिपाके जेटले, तब न करे कोइ सार ॥ ३ ॥ सुजस मुनिवर केवली, पाउ धारया गुणवंत ॥ वैराग्ये निज पुत्रने, राज्यभार सोंपंत ॥ ॥ ४ ॥ चित्रगति विद्याधरु, आवे अवसर जाण ॥ दीक्षा सुमित्र आदरे, करी मोठव मंडाण ॥ ५ ॥ चित्रगति निज घर गयो, विहार करे मुनिराय ॥ श्रुत अन्यास घणो करे, विनय करे गुरु पाय ॥ ६ ॥

॥ ढाल ठही ॥

॥ आसपरा हो योगी ॥ ए देशी ॥ पूरव नव कांइ ऊणा जणे, गीतारथ गुरु चरणे रे ॥ समतारस कंदा ॥ केवलीनी आणा लही विचरे, देश विदेश

...पतरे रे ॥ स० ॥ १ ॥ एकला गीतारथने आणा, तस प्रणमे राय ने राणा
स० ॥ एकलो विचरे असंनित साध, आचारे होय तस बाध रे ॥ स० ॥
२ ॥ यतः ॥ गीयछो अविहारो, पढमो बीउंय मीसिउं नणीउं ॥ इत्तोत
विहारो, नाणुन्नाउं जिणवरेहिं ॥ ४ ॥ एम विचरंता मागध देशे,
...वे अतिहि शुन्न लेशे रे ॥ स० ॥ कोइक गामनी बाहेर रहीया, काउस्स-
मांहि गहगहीया रे ॥ स० ॥ ३ ॥ पद्मकुंवर तिहां नमतो नमतो, आवे ते
...ख बहु बहु खमतो रे ॥ स० ॥ सुमित्र प्रजुनुं ध्यान धरंतो, सवि जीवने
हितवंतो रे ॥ स० ॥ ४ ॥ मेरु परे निश्चल रह्या जेहवे, दीठा तेणे पापीए
...वे रे ॥ स० ॥ धनुष ते कान लगे ताणीने, मूके बाण क्रोध आणीने रे ॥
स० ॥ ५ ॥ मुनिवरने कस्यो उरमां घात, थयो घुर्म्मित पृथ्वी पात रे ॥
स० ॥ निज माताने मलवा कामे, मानुं उयस एणे गामे रे ॥ स० ॥ ६ ॥ एकतां
...डुक्कर पत्तणे, सिध्रित जीवने मरणे रे ॥ स० ॥ ध्यान रसायण पा-
...उं जेहने, व्याधि नवि डुःख दीये तेहने रे ॥ स० ॥ ७ ॥ यतः ॥ वहिरंत-
...नेया, विवहाराही न दिंति तस्स डुहं ॥ गुरुवपणाउं जेणं, सुहजाण र-
...पत्तं ॥ ५ ॥ चिंतवे ते मुनिवर निज चित्ते, तुं रीस म कर कोइ रीते रे ॥
॥ निज हाथे रोपित तरु फलीयो, ते तो नोगवे थइ तुं वलीयो रे ॥ स० ॥
॥ ८ ॥ निमित्त मात्र थाये पर प्राणी. ए तो जिनवरनी वाणी रे ॥ स० ॥
परकृत कर्म न नोगवे कोइ, आवे उदये निज होइ रे ॥ स० ॥ ९ ॥ यतः ॥
सयमेव कुणसि कम्मं. तेणय वाहिज्जसि तुम्हं चेव ॥ रे जीव अप्प वेरिय,
अन्नस्स य देसि किं दोसं ॥ ६ ॥ सव्वो पुव्वकयाणं, कम्माणं पावए फलवि-
वागं ॥ अवराहे सुगुणे सुय. निमित्त मित्तं परो होइ ॥ ७ ॥ आगल पण कोइ अ-
न्य प्रकारे. वेदन ए कर्म तिवारे रे ॥ स० ॥ उदयागत वेदना शुन्न नावे,
तुफ हाण न कांइ थावे रे ॥ स० ॥ १० ॥ अज्ञानी धर्मभ्रंश करावे, ए तो
समता वधरावे रे ॥ स० ॥ निज वशथी सहेवुं अति दोहिलुं. नोगव तुं
ए कर्म वहेलुं रे ॥ स० ॥ ११ ॥ यतः ॥ सह कलेवरखेदमचिंतय, स्ववशता
हि पुनस्तव डुर्लना ॥ बहुतरं च सहिष्यसि जीव हे. परवशान्न च तत्र गुणो-
स्ति ते ॥ ८ ॥ लान थयो तुफने अधिकेरो. ए धर्म सखायी तेरो रे ॥ स० ॥
पोते राज्य ग्रह्युं नवि दीधुं. ए दूषणने शिर लीधुं रे ॥ स० ॥ १२ ॥ नाहरो उ-
पगारी ए महोटो, नहीं एहमां तुफ त्रोटो रे ॥ स० ॥ बहु काले जे कर्म

वेदवुं, ते थोडे काले क्षय करवुं रे ॥ स० ॥ १३ ॥ सर्व जीवशुं मैत्री राखे, खामजे सहुने जिनसाखे रे ॥ स० ॥ मत करजे कोइ उपर रोष, वली प-दमकुमर विशेष रे ॥ स० ॥ १४ ॥ एम शुभ भावे पच्चक्खे आहार, तत्पर वली ते नमुक्कार रे ॥ स० ॥ तेह काल करीने समाधि, पंचम कल्पे निरा-बाध रे ॥ स० ॥ १५ ॥ सामानिक सुर तेह उत्पन्न, रिद्धि महा तास निष्पन्न रे ॥ स० ॥ बीजो पण बीहीतो तिहां नाठो, जाणो पुण्य तस हवे घाठो रे ॥ स० ॥ १६ ॥ राते काले सापे डंस्यो, वेदन समुद्घाते शंस्यो रे ॥ क्रोधानल बलीउं ॥ सातमी नरके नारकी जायो, मुनि आशातन फल पायो रे ॥ क्रो० ॥ १७ ॥ सुमित्र रुपितुं मरण सुणीने, शुं थयुं एह गुणी-ने रे ॥ उत्सुकता जागी ॥ शोक बहु थयो चित्रगतिने, विरह थयो महाम-तिने रे ॥ उ० ॥ १८ ॥ शोक मूकीने एक दिन जावे, सिद्धायतने मन भा-वे रे ॥ उत्सुकता जागी ॥ विद्याधर तिण समे बहु मलीया, जिन ज्ञानध्यानमां भलीया रे ॥ उ० ॥ १९ ॥ न्हवण विलेपण भूषण पूजा, डुंडुहि तिहां वाजे वाजां रे ॥ उ० ॥ विद्याधर विद्याधरी गावे, मधुर अति गीत सुहावे रे ॥ उ० ॥ ॥ २० ॥ हर्ष भरे तिहां नाटक करता, एम यात्रा महोत्सव मन थिरता रे ॥ उ० ॥ तिहां किणे मलीयो बहु समुदाय, सहु जीवने हर्ष ते थाय रे ॥ ॥ उ० ॥ २१ ॥ बीजे अधिकारे ए भाखी, गुरु उत्तमविजय ते साखी रे ॥ उ० ॥ पद्मविजय कहे छठी ढाले, पूजा करवा उजमाले रे ॥ उ० ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

॥ देव सुमित्र जे उपनो, यात्रा आवे त्यांहि ॥ देव बहु तिहां परि-वस्या, धरी मन अधिक उछांहि ॥ १ ॥ अनंगसिंह मन चिंतवे, बहु खेचर मल्या आज ॥ रतनवती वर जाणीये, आवे जो जात्राने काज ॥ २ ॥ इणी अवसरे पूजा रची, जिननी विचित्र प्रकार ॥ जोवा योग्य तिहां थयुं, भक्तिथी अतिहि उदार ॥ ३ ॥ चैत्यवंदन तिहां चित्रगति, करे कोलाहल रोध ॥ रोमांचित स्तवना करे, जिणथी भवि लहे बोध ॥ ४ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ थारे माथे पचरंगी पाघ, सोनारो छोगलो मारुजी ॥ ए देशी ॥ तुं जग परमेसर, अर्चित केसर, विश्वनो तारु जी ॥ सोहे मन मोहे, भवि प-डिबोहे, वयणथी वारु जी ॥ जगतारक स्वामी, शिवगति गामी ॥ वि० ॥

क दर्शन पामी, निज गुण कामी, निस्तर्या ॥ वा०॥१॥ भवजलनिधि तरता,
र उतरता ॥ वि० ॥ निर्यामक कहीये, पार न लहीये, गुण तणो ॥ वा० ॥
ट जीव रखवालो, महा गोपालो ॥ वि० ॥ जातां शिवनगरे, सार्थपती
रे, तुं जयो ॥ वा० ॥ २ ॥ महा माहण रूडो, नहीं कांय कूडो ॥ वि० ॥
री खय चउ घाती, कर्म अघाती, मूलथी ॥ वा० ॥ तव तुज अनुक्रमे, अं-
र इम्में ॥ वि० ॥ गुण प्रगट अनंता, कार्य करंता, निज तणुं ॥ वा० ॥ ३ ॥
ग रूप उछेदी, तुंही अवेदी ॥ वि० ॥ हास्यादिक जोहा, गय कोह लोहा,
गोहना ॥ वा० ॥ तेम खय अंतराया, वीरज पाया ॥ वि० ॥ खायकने
तावे, अज्ञान अजावे, केवली ॥ वा० ॥ ४ ॥ तिम वली अक्षय स्थित, तुंही
अनूरत ॥ वि० ॥ अगुरु लहु अव्या,-बाध पमुह बहु, गुणधरा ॥ वा० ॥
ाकवृक्ष चिंतामणि, रत्न ने दिनमणि ॥ वि० ॥ काम कुंजकाम गवी, सुख ते
अणमवी, आदिये ॥ वा० ॥ ५ ॥ पण पुद्गल पूरे, नवि दुःख चूरे ॥
वि० ॥ मूल कर्म अजावे, महा सुख पावे, तुजयी ॥ वा० ॥ तुं अज अवि-
नाशी, सहज विलासी ॥ वि० ॥ अजरामर वेदी, तुंज अखेदी, सर्वथा ॥
वा० ॥ ६ ॥ सुर गुरु सम शक्के, चित्त बहु जक्के ॥ वि० ॥ जो सहस
वदन होय, उदधि आयु तोय, नवि कहे ॥ वा० ॥ तुज गुण अनंता, केम
कहंता ॥ वि० ॥ नो हुं मतिमंदो, तुं गुण कंदो, केम स्तवुं ॥ वा० ॥ ७ ॥
तिणे एटलुं मागुं, तुम पाय लागुं ॥ वि० ॥ नवसायर तारो, पार उतारो,
मुज जणी ॥ वा० ॥ गंजीर स्वरे एम, स्तवना करे तेम ॥ वि० ॥ देखी सुमि-
त्र सुर, आणंद पूरे, मांहीयां ॥ वा० ॥ ८ ॥ कहे तुज चतुराइ, महा गिरुआइ
॥ वि० ॥ नव बीज दीसे, अम मन हींसे, एम कही ॥ वा० ॥ करे कुसु-
मनी वृष्टि, महुए दीठी ॥ वि० ॥ बीज अधिकारे, जय जयकारे, ए कही ॥
वा० ॥ ९ ॥ नली मानसी ढाले, रंग रसाले ॥ वि० ॥ उत्तम गुण आ-
गर, प्रणमत नागर, नियमश्री ॥ वा० ॥ कहे पद्मविजय जिन-चरणुं
दर्शन ॥ वि० ॥ वली प्रजुजी पूज्या, कुमति ते धूज्या, देखीने ॥ वा०
जी ॥ १० ॥ सर्व गाथा ॥ २४६ ॥ श्लोक तथा गाथा ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमति नवि माने किमे, देखी आगम पाठ ॥ रायपसेणी सूत्रमां पु-
जाना बहु पाठ ॥ १ ॥ तेम ज्ञातामां द्रौपदी, पूजे अति विस्तार ॥ जीवाजि

गम मांहे कह्यो, विजयदेव अधिकार ॥२॥ भगवती अंगे चारणा, प्रतिमा वंदे सार ॥ तेम वली जिनदाढा तणी, आशातन पण वार॥३॥ हेमसूरि वडेला थया, ढुंढक मतथी तेह ॥ आगमसागर स्तव करे, प्रतिमाना गुणगेह ॥ ४ ॥ आगम मांहि तो बहु, पूजाना अधिकार ॥ पण कहेतां इमणां होये, ग्रंथ तणो विस्तार ॥ ५ ॥ पण संक्षेपे जाणजो, सम नहीं करजनुं कांइ ॥ प्रतिमां एक उथापतां, सवि आगम उथपाय ॥६॥ चित्रगति पूजा करी, सुमित्र करी फूल वृष्टि ॥ हर्ष भरे ते खेचरे, सघले नयणे दीठ॥७॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ मुकरो ल्योने जालिम जाटणी ॥ ए देशी ॥ तिहां बजावे खेचर डुंडुहि, गावे सुमित्रकुमार ॥ पुण्ये पाम्या रे दर्शन तुम तणुं ॥ ए आंकणी ॥ रत्नवतीनो तात कहे तदा, ए मुज पुत्री भरतार ॥ पु० ॥ १ ॥ निमित्तिए पहेलां मुजने कह्युं, खड्ग हर्त्ता पण एह ॥ पु०॥ इणी अवसर ते देव प्रगट थयो, रूप अनोपम देह ॥ पु० ॥ २ ॥ देव कहे मुज जाणे के नहीं, चित्रगति कहे वेण ॥ पु० ॥ तुम्हे महोटा सुरवरमां दीपता, कोण नवि उलखे सेण ॥ पु० ॥ ३ ॥ एम कही रूप कर्युं सुमित्रनुं, ते देखीने रे तास ॥ पु० ॥ चित्रगतिने आनंद उपनो, करे एम वचन विलास ॥ पु० ॥ ४ ॥ तुम्ह प्रसादथी में पामी भली, धर्मनी सामग्री एह ॥ पु०॥ आ उत्सवमां इहां पधारीया, आणी अविहड नेह ॥ पु० ॥ ५ ॥ तेह घणुं सुंदर कारज कर्युं, कीधो मुज प्रसाद ॥ पु० ॥ कहे सुमित्र देव तिहां एणी पेरे, वचन तणो जे विवाद ॥ पु० ॥ ६ ॥ आ सुररिद्धि लही में तुज थकी, कीधो तें उपगार ॥ पु० ॥ जो नवि आव्यो होत तुं तेणे समे, विष दीधुं जेणी वार ॥ पु० ॥ ७ ॥ सूरतेज विद्याधर प्रमुख जे, पाम्या हर्ष अपार ॥ पु० ॥ रत्नवती देखी कुंवर प्रत्ये, उपनो अति तस तार ॥ पु० ॥ ८ ॥ उष्णकालमां अमृत छांटीयुं, चंदनरसनो रे लेप ॥ पु० ॥ परम निवृत्ति तस उपनी एणी परे, राग तणो एह चेप ॥ पु० ॥ ए ॥ आलिम्बे तस रूप चरित्र सुणे, गुणगण गावे ते नारी ॥ पु० ॥ शल्य सहित तस हृदय थयुं घणुं, दीठां थापन वार ॥ पु० ॥ १० ॥ आतमने पण आतम वश नहीं, देखी भीत ते मात ॥ पु० ॥ तेम सखीउं पण दीठीनी अति घणुं, ए शुं वात कहे वात ॥ पु० ॥ ११ ॥ दीतव एक उद्यानमां लेइ गया, दीतव शृङ्गनी देव ॥ पु० ॥

शय्या शीत वायु करे, पण को अगनि उक्किठ ॥ पु० ॥ १२ ॥ कदली
थी विंजे वायरा, वींटी नलिनीना तंतु ॥ पु० ॥ हाथ प्रमुख सवि क्लिन
ये तदा, दाह करे तोहि जंतु ॥ पु० ॥ १३ ॥ जाव जाणंती सखीउं पू-
, आग्रह करीने अत्यंत ॥ पु० ॥ तव तेहने अभिप्राय कह्यो सवे, सु-
ने अति हरखंत ॥ पु० ॥ १४ ॥ शशिप्रजाने सखीउं जइ कहे, ते पण
हे निज स्वाम ॥ पु० ॥ ते कहे ए अणघटतुं को नहीं, प्रश्न मल्युं
ो गाम ॥ पु० ॥ १५ ॥ वर नवि होत जो रत्नवती तणो, तो विधि होत
भूष ॥ पु० ॥ पण हमणां ए देवस्थानक अछे, करवी वात न सुफ ॥
॥ १६ ॥ तो विवाह संबंधनी वारता, करवी नवि घटे कोय ॥ पु० ॥
केजइने कहेशुं ए सवे, इहां आशातना होय ॥ पु० ॥ १७ ॥ देव
मित्रने चित्रगति तदा, देइ सन्मान अशेष ॥ पु० ॥ तेम खेचरना वृंदने
आदरे, विसर्जे शुजवेश ॥ पु० ॥ १८ ॥ सूरतेज विद्याधर आवीयो, निज
परिवार संयुत ॥ पु० ॥ घर आस्थान सजाए उपविशे, तव पमिहारे रे उत्त
॥ पु० ॥ १९ ॥ अनंगसिंह राजानो मंत्रवी, आव्यो छे दरबार ॥ पु० ॥ नाम
मृगांक अछे तस शोजतुं. द्यो आदेश ए वार ॥ पु० ॥ २० ॥ कहे राजा
मोकल वहेलो इहां. आवी करे रे प्रणाम ॥ पु० ॥ स्थानक बेसीने एणी
पेरे कहे. दक्षिण श्रेणी सुनाम ॥ पु० ॥ २१ ॥ शिवमंदिर नामे नगरी
वसे, अनंगसिंह नृनाह ॥ पु० ॥ तेहने रत्नवती नामे पुत्री. ते नृप मा-
कल्यो आंही ॥ पु० ॥ २२ ॥ तेहनुं रूप देखी अनिमिष जुए [illegible] वि-
द्याधर लोक ॥ पु० ॥ तेहना संग विना सवि मानवा. निज जनमारो [illegible]
फोक ॥ पु० ॥ २३ ॥ तेहने योग्य न वर को देखीये. विधि पण मानुं ते
चिंत ॥ पु० ॥ नाटक सुन ते सांजल्यो तेहने. तव मन थयो हरखंत ॥ पु०
॥ २४ ॥ जो तुम्ह माता पालिग्रहणने. तो सवि सफल ते थाय ॥ पु० ॥
वचन विन्यास सुणी राय रंजीयो. कहे निज मंत्रीने राय ॥ पु० ॥ २५ ॥
तव मंत्री कहे रायने कानमां. स्यो ए वचन विन्यास ॥ पु० ॥ तेहना रूप
वर्णन करी नवि शके. अथवा काण करे नाम ॥ पु० ॥ २६ ॥ जे जिनवरनी
पूजा विरचनी. ते पण अनेक प्रकार ॥ पु० ॥ जात्रा समये [illegible] तेहने,
चित्रगति ते कुमार ॥ पु० ॥ २७ ॥ नक्ति [illegible] [illegible]
रीज्या तेह राय ॥ पु० ॥ एह सुणे [illegible]

कोइ ठाण ॥ पु० ॥ २८ ॥ नृपतिए तस मानी वातमी, तेहने दीधुं सन्मान ॥ पु० ॥ तेह जइ अनंगसिंहने कहे, हरख्यो नृप तिणे थान ॥ पु० ॥ २ए ॥ एक दिन रत्नवतीने मोकली, पाणिग्रहणने काज ॥ पु० ॥ महा आमंबरे परण्यां ते बेहु, शोजे घणुं युवराज ॥ पु० ॥ ३० ॥ सुख जोगवे ते संसारनां, जेम महर्द्धिक देव ॥ पु० ॥ पुण्य कस्यां ते कहीं जाये नहीं, करे वली धर्मनी सेव ॥ पु० ॥ ३१ ॥ लोक प्रशंसा करता अति घणी, दे आणंद मन नयण ॥ पु० ॥ वंदीवृंद पढे गुण जेहना, संतोषे बहु सयण ॥ पु० ॥ ३२ ॥ रत्नवतीशुं करे जिनजक्तिने, वंदे नित्य गुरुपाय ॥ पु० ॥ शास्त्र सुणे ते अति सोहामणां, दानी ज्ञानी ते थाय ॥ ३३ ॥ बीजे अधिकारे सोहामणी, जाखी आठमी ढाल ॥ पु० ॥ पद्मविजय कहे पुण्यसंचय करो, नित्य होय मंगलमाल ॥ पु० ॥ ३४ ॥ सर्व गाथा ॥ २०७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ धनदेव ने धनदत्त बेहु, लघु भ्राता थया तास ॥ देवलोकमांथी चवी, पुण्य प्रबल छे जास ॥ १ ॥ मनोगति ने चपलगति, नाम अछे सुखकार ॥ नंदीश्वर प्रमुखे नमे, चैत्य घणां जण चार ॥ २ ॥ विहरमान जिनवर कने, सुणे हर्ष उपदेश ॥ पदकज सेवे ऋषि तणां, जमतो देश विदेश ॥ ३ ॥ काल एणी पेरे निर्गमे, लही एक दिन संवेग ॥ वय परिपाक जाणी करी, धरे नृप मन उद्वेग ॥ ४ ॥ राज्य ठवी तव कुंवरने, आप थयो मुनिरूप ॥ घाती अघाती क्षय करी, पाम्यो सिद्ध सरूप ॥ ५ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ धणरा ढोला ॥ ए देशी ॥ चित्रगति विद्याधरु रे, पाले राज्य उदार ॥ गुणना रागी ॥ पनिन मात्र आवे कला रे, विद्या सिद्ध श्रीकार ॥ गु० ॥ १ ॥ थाय वडे विद्याधरा रे, पुण्य प्रबल जग जास ॥ गु० ॥ रत्नवती करे पाटवी रे, अंतेउरमां खास ॥ गु० ॥ २ ॥ खेचर एक एणी अवसरे रे, मणिचूड जस नाम ॥ गु० ॥ एक दिन ते परजव गयो रे, दोय पुत्र तस ठाम ॥ गु० ॥ ३ ॥ शशी सूर नामे अछे रे, राजनिमित्त करे युद्ध ॥ गु० ॥ चित्रगति वहेंची दीये रे, राज्य नाम अविरुद्ध ॥ गु० ॥ ४ ॥ युक्ति वचने समजावीया रे, नवि समजे पण मूढ ॥ गु० ॥ कलह करे अति आकरो रे, वैर थयां अति गूढ ॥ गु० ॥ ५ ॥ युद्ध थयां तस आकरां रे, मरण लह्यां ते दोय ॥

गु० ॥ चित्रगति नृपने कहे रे, वात ते आवी कोय ॥ गु० ॥ ६ ॥ परलोके
वेहु गया रे, राज्य लूंटे पर आय ॥ गु० ॥ सुणी वैराग्य ते उपनो रे, म-
चिंते महाराय ॥ गु० ॥ ७ ॥ कर्म विचित्र गति देखीये रे, विषयामिषना
॥ गु० ॥ मूढता जुर्ड प्राणी तणी रे, मदिरा होय जेम पीध ॥ गु० ॥
८ ॥ इग करे प्राणी घणी रे, पण इछित नवि थाय ॥ गु० ॥ ज्ञानी नवि
ता करे रे, अज्ञानी खेदाय ॥ गु० ॥ ए ॥ यतः ॥ अन्नं चिंतियमानं, उद-
गेण अन्नहा जायं ॥ चिंतोदय विवरीयं, सुणदो नो चिंतए नाणी ॥ १ ॥
ी राखे प्राणीया रे, ठंडे लखमी तास ॥ गु० ॥ दान पुण्य न करे कदा
, पने दुर्गति पास ॥ गु० ॥ १० ॥ केइ पुरुष इछे घणां रे, दानादिक म-
नाग ॥ गु० ॥ पुत्रादिक विघन करे रे, रोगादिक अथ लाग ॥ गु० ॥
। ११ ॥ लखमीने मूकी गया रे, करे कलहो तस पुत्र ॥ गु० ॥ शुनक परे जग-
ी मरे रे, होय जे तास कुपुत्र ॥ गु० ॥ १२ ॥ केइ पुरुष पामी करी रे,
न ऋद्ध ॥ गु० ॥ ठंनीने पट खंडने रे, तृप्त परे नवि हुआ गिद्ध ॥
। गु० ॥ १३ ॥ वांछे कोइ अछती सीरी रे, करता क्लेश अनेक ॥ गु० ॥ जाइ
पुत्र तणे घरे रे. मूके जेह विवेक ॥ गु० ॥ १४ ॥ यतः ॥ संतेवि केइ उ-
ग्रइ. केइ असंतेवि अहिलसइ नोए ॥ चयइ परचएण वि. पत्तवो दधूण जह
जंबू ॥ २ ॥ पाप करे जीव अनि घणां रे. वांछे लखमी नार ॥ गु० ॥ ते नो धर्म
आयत्त छे रे. केम पामे अविकार ॥ गु० ॥ १५ ॥ विपनोगी केणी परे करे
रे. अमृत संजव सुख ॥ गु० ॥ जमता एह संसारमां रे. पामे अनंतां दुःख
॥ गु० ॥ १६ ॥ नव्यां अकार्य तणो घणां रे. राज्य अनंती वार ॥ गु० ॥
पण नवि तृप्ति कदा थई रे. दु:खदा विषय विकार ॥ गु० ॥ १७ ॥ सिद्धि
सुख एक शाश्वतु रे. अमर अजर अकलंक ॥ गु० ॥ पूर्वे कदा नवि नोग-
व्युं रे. मानो एह निःशंक ॥ गु० ॥ १८ ॥ जेनो उपमा जग नहीं रे. राग द्वेषा-
दि न यत्र ॥ गु० ॥ ते सुखने नवि छंडवे रे. विषया तणे अत्र ॥ गु० ॥ १९ ॥
ते माटे धन्य तेहने रे. छंडे जेहवा विषय विकार ॥ गु० ॥ स्वजन कुटुंब तइशां
जेले रे. तेह जाण्या जे असार ॥ गु० ॥ २० ॥ दाख्या परमारथने रे. धन्य
वळी सुमित्र मित्त ॥ गु० ॥ यौवनमा नर्ही राजने रे. साधु कार्य सुचित्त
॥ गु० ॥ २१ ॥ वयपरिणत प्राये थयो रे. पण नवि छंड्युं राज्य ॥ गु० ॥ पण
अनित्य ए सुख अछे रे. त्यजीये ए हवे आज ॥ गु० ॥ २२ ॥ छंडे तेह पछे

राज्यने रे, थापे निज सुत पाट ॥ गु० ॥ रत्नवती कुखे थयो रे, पुरंदर थयो राट ॥ गु० ॥ २३ ॥ दानादिक देइ घणां रे, पूजा अति विस्तार ॥ गु० ॥ सिद्धायतने जइ करे रे, संघपूजा तिम सार ॥ गु० ॥ २४ ॥ अमारीपमह व-जडावीया रे, दमधर सूरिनी पास ॥ गु० ॥ रत्नवती मनोगति वली रे, चपलगति सहवास ॥ गु० ॥ २५ ॥ लेइ दीक्षा शिक्षा धरे रे, तेम केइ मंत्रीनी साथ ॥ गु० ॥ तप तपे अति आकरां रे, धर्म करे निज हाथ ॥ गु० ॥ २६ ॥ पाली चारित्र मनोहरु रे, बहु वरसां लगे शुद्ध ॥ गु० ॥ पादोपगमन अणसण करी रे, शुभ लेश्या अविरुद्ध ॥ गु० ॥ २७ ॥ काल करीने उपना रे, माहेंद्रे ते देव ॥ गु० ॥ रत्नवती दोय बांधवा रे, करी चारित्रनी सेव ॥ गु० ॥ ॥ २८ ॥ ते पण त्यांहिज उपना रे, प्रीति घणी मांहोमांह ॥ गु० ॥ सुख भोगवतां स्वर्गनां रे, दिन दिन अधिक उत्साह ॥ गु० ॥ २९ ॥ चोथो भव पूरण थयो रे, थइ ए नवमी ढाल ॥ गु० ॥ पद्मविजय कहे ए थयो रे, बीजो अधिकार रसाल ॥ गु० ॥ ३० ॥ द्वितीयाधिकारे ॥ सर्व गाथा ॥ ३२२ ॥ सर्व थइने ॥ ७०१ ॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥ २५ ॥ इति श्रीमन्नेमिराजीमत्योर्द्वितीयो मनुजभवः सुरभवः समाप्तः॥२॥सर्व ढाल॥२१॥

॥ अथ तृतीयोऽधिकारः प्रारभ्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ शांति जिणंद समरुं सदा, विघ्न करेवा शांत ॥ भव पंचम कहेवा हवे, मुज मन अधिकी खांत ॥ १ ॥ श्रोता पण सुणजो सहु, चित्त राखी एक ठोर ॥ थिर चित्त विणु जे मानवी तेहथी रुडुं ढोर ॥ २ ॥ ढोर उद्देशी नवि करे, वक्ता कोइ व्यापार ॥ जस अर्थे उद्यम करे, तस पण चित्त विकार ॥ ३ ॥ ते माटे थिर थइ सुणो, वात अधिक सुखकार ॥ भव भव अधिकुं सुख लहे, जिनवर नेमिकुमार ॥ ४ ॥ नाम गोत्र जस सांभल्यां, होय कर्मनो नाश ॥ तास चरित्र सुणतां थकां, किम नहीं होय शिववास ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ आठेलालनी देशी ॥ पश्चिम महाविदेह, पद्मविजय गुणगेह ॥ सुंदरलाल ॥ सिंहपुर नगर तिहां वसे जी ॥ ज्युं दरी सिंह अधिष्ठ, अन्य प्रवेश न इष्ट ॥ सुंदरलाल ॥ दूर गयो कलहो जिसे जी ॥ १ ॥ हरिनंदी

राय, हरि परे विबुध सुहाय ॥ सुं० ॥ पटराणी प्रियदर्शना जी ॥
र्शन वे जास, लक्ष्मीनो आवास ॥ सुं० ॥ कोमल तनु सुपर्शना जी
॥ तेहनी कुखे आय, चित्रगति शुभ ठाय ॥ सुं० ॥ देवलोकमांथी
जी ॥ शुभ सुपने सूचित, उपनो पुण्य पवित्त ॥ सुं० ॥ ते दिनथी
बहु हवी जी ॥ ३ ॥ शुभ दिवसे ते पुत्र, जो राखे घरसूत्र ॥ सुं० ॥
तेजस्वी तनु जी ॥ भुवनने करे संतोष, करे वधामणी पोष ॥ सुं० ॥
हर्षित थइ घणुं जी ॥ ४ ॥ अपराजित दीधे नाम, खरचे तव
दाम ॥ सुं० ॥ रत्न पेरे रमावती जी ॥ हाथ थकी लीये हाथ, अं-
नो साथ ॥ सुं० ॥ वल्लभ सहुने गुणवती जी ॥ ५ ॥ दिन दिन
वधंत, कला बेहोंतेर पठंत ॥ सुं० ॥ मानुं एणी पेरे मन थकी जी
ल कला संपुन्न, पण एहनाथी न्यून ॥ सुं० ॥ रजनीकर चंद
ी जी ॥ ६ ॥ पाम्यो यौवन देह, रूप लावण्यनुं गेह ॥ सुं० ॥
समे जाण्युं एणी परे जी ॥ सहस्रनेत्र थयो शक्र, कमलासन चउ
॥ सुं० ॥ सहस जीभ फणिपति करे जी ॥ ७ ॥ शक्र ते जोवा
, ब्रह्मा स्तववा काज ॥ सुं० ॥ फणिधर स्तववा उम्मह्यो जी ॥ रूपे
ा अवतार, कल्पतरु दातार ॥ सुं० ॥ जे देखी मन गहगह्यो जी
॥ मित्रे परिवृत तेह, क्रीडा करे ससनेह ॥ सुं० ॥ ग्रहचक्र परि-
चंद ज्युं जी ॥ जननां मन ने नयण, सुखदायक घणुं सयण ॥ सुं० ॥
चकोरा विदितीउं जी ॥ ए ॥ नीकले कुमर ते वहार, तिणे समे नग-
नार ॥ सुं० ॥ जोवा आवे दोडती जी ॥ घरनां काम उवेखी,
ा कुमरने देखी ॥ सुं० ॥ सखीउं साथे जोडती जी ॥ १० ॥ एक
सुण वात, वखमी कृत घनघात ॥ सुं० ॥ उपनी एह तो पं-
जी ॥ सेवे कुंवर वेण, एक कहे सुण वेन ॥ सुं० ॥ एहनां नेण
खजे जी ॥ ११ ॥ कर्ण लगी जे पत्त, एक कहे सुण वत्त ॥ सुं० ॥
ने पण नवि ईश्वरे जी ॥ कीधो एह संयोग, तेणे निर्दयी ए
ा ॥ सुं० ॥ एक शान सखीने करे जी ॥ १२ ॥ कंबु उपम कोट,
पासे करे चोट ॥ सुं० ॥ अन्य कहे अन्यने हसी जी ॥ ए-
हृदय जे पामी, रति क्रीडाने ठाम ॥ सुं० ॥ निद्रा मुक मन
ा वसी जी ॥ १३ ॥ सखीने कहे सखी एक, सांजली वात विवेक

॥ सुं० ॥ प्रार्थना हुं पण ए करुं जी ॥ एक एकने ठेली, एक कहे मारग मेली ॥ सुं० ॥ माहरे पण जोवुं खरुं जी ॥ १४ ॥ नेउर घाले थांही, कंकण पगे उछांही ॥ सुं० ॥ आजरण सवि विपरीत धरे जी ॥ लोक करे तिहां हांसी, रे थाइ स्याबासी ॥ सुं० ॥ अर्द्ध स्नाने केइ परवरे जी ॥ १५ ॥ पुत्र विरांसे एक, केरू चढावे ठेक ॥ सुं० ॥ विला-कीनुं थचोलीयुं जी ॥ कूर पीरसी निज नाथ, दाल लइ निज साथ ॥ सुं० ॥ लोक हसावती दोमीयो जी ॥ १६ ॥ लावण्यजल करे पान, नेत्रांजलि धरी शान ॥ सुं० ॥ दिन प्रते तृष्णा नवि मटे जी ॥ लोक करे परशंस, उत्तम रायनो अंश ॥ सुं० ॥ शूर प्रशंसीये बहु जटे जी ॥ १७ ॥ पंमित गुण तस गाय, नारी लावण्य सुहाय ॥ सुं० ॥ विनय तणो मानुं ढग थयो जी ॥ योगेश्वर जेम तत्त्व, ध्यावे तेम एकत्व ॥ सुं० ॥ लोक एणी पेरे सहु नयो जी ॥ १८ ॥ ए त्रीजे अधिकार, पहेली ढाल उदार ॥ सुं० ॥ अपराजित कुंवर जलो जी ॥ नेमनाथनो जीव, पुण्य अगण्य सदैव ॥ सुं० ॥ पद्मविजय कहे सांजलो जी ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जे दिन कुमर ते जनमीयो, ते दिन जन्म्यो सोय ॥ विमलबोध मंत्रिसुतन, गुणवंतो बहु होय ॥१॥ पांशुक्रीमा सह करे, जण्या ते साथे शास्त्र ॥ योवन पण साथे लहे, क्रीमा करे वली अस्त्र ॥ २ ॥ कुंअर आतम सम गणे, विमलबोधने ताम ॥ विमलबोध पण देव परे, आराधे गुणधाम ॥३॥ एक दिन तुरंग रमावना, पहोता नगर उद्यान ॥ तुरग हरीने लेइ गया, महा अटवीने थान ॥४॥ थाका हरि एणी अवसरे, अंबवृक्षनी हेठ ॥ विसामो लइने कहे, मंत्रिसुतने जेठ ॥ ५ ॥ पृथवी कौतुकथी नरी, नमी न देखे जेह ॥ कूआमांनो देमको, जाणो निश्चय तेह ॥६॥ नाना देशोदेशनी, देशाचार विज्ञान ॥ नवि जाणे ते धूर्तथी, वंचाये अज्ञान ॥ ७ ॥ यतः ॥ देसंतर जासाउं, जाणिज्जइ सजण छुज्जण विसेसो ॥ धूर्तेहिं न वंचिज्जाउ, हिंमिज्जइ तेणं पुहवी ए ॥१॥ मृग वायस नेका पुरुष, नवि मूके निज गाण ॥ हरि गज ने उत्तम पुरुष, ज्यां जाय तिहां निज गाण ॥ ८ ॥ यतः ॥ स्थानं न मुंचंति काकाः कापुरुषा मृगाः ॥ अपमाने प्रयांति, सिंहाः सत्पुरुषा गजाः ॥ २ ॥ जे थयुं ते रहुं पडुं, हमणां न जाइये घेर ॥ देशांतरने देखवा, जाइये हवे एणी

र ॥ ए ॥ माता पिता स्नेहे करी, आपत नवि मुफ आण ॥ दुःख तो
पजशे खरुं, शीघ्र आवशुं गण ॥ १० ॥ एम चिंतीने चालीया, कोइक
गर उद्यान ॥ पुष्करिणी तट आवीया, सुणो वात इण थान ॥ ११ ॥

॥ ढाल ॥ बीजी ॥

॥ कुंकणनी देशी ॥ इण अवसर एक आवीयो रे॥ सूरिजन ॥ कोइक पुरुष
नाथ ॥ पुएय प्रगट थयो ॥ थयो थयो रे परगट पुएय, कुंअरनो जित जयो
ए आंकणी ॥ तास शरीर अति कंपतुं रे ॥ सू० ॥ दीननो नहीं कोइ
गथ ॥ पु० ॥ १ ॥ भीत थयो थको एम कहे रे ॥ सू० ॥ राख राख मुफ राख
पु० ॥ ताहरे शरणे आवीयो रे ॥ सू० ॥ कहे एणी पेरे मुख नाख ॥ पु० ॥ २ ॥
वर कहे तुं बीहीश मां रे ॥ सू० ॥ शक्र थकी पणी वार ॥ पु० ॥ मुज जी-
तां कोइ थकी रे ॥ सू० ॥ मंत्री कहे रे तिवार ॥ पु० ॥३ ॥ जो ए होशे अन्या-
रीर्ठ रे ॥ सू०॥ ॥ तो पमशे महा कष्ट ॥ पु०॥ राजकुंअर कहे सांजलो रे ॥सू०॥
नहीं थइये इहां खष्ट ॥ पु० ॥ ४ ॥ क्षत्रीनो ए धर्म ठे रे ॥ सू० ॥ राखे प्रहा-
र्थी तेह ॥ पु० ॥ गुणवंता ते निज गुणे रे ॥ सू० ॥ त्राण होय न संदेह
॥ पु० ॥ ५ ॥ शरणागत वली याचका रे ॥ सू० ॥ होय पराङ्मुख जेह
॥ पु० ॥ ते नवि जीवता जाणीये रे ॥ सू० ॥ जीवता मृत सम तेह ॥
॥ पु० ॥ ६ ॥ ते कारण सुणी मंत्रवी रे ॥ सू० ॥ जीवतो राखो एह ॥ पु० ॥
जेह होय ते राखीये रे ॥ सू० ॥ आपीये आपणो देह ॥ पु० ॥ ७ ॥ इणी
अवसरे तिहां आवीयुं रे ॥ सू० ॥ कोटवालनुं सैन ॥ पु० ॥ मार मार
करतुं थकुं रे ॥ सू० ॥ पकमो पकमो कहे वेण ॥ पु० ॥ ८ ॥ आवी कुंवरने
वींटीयो रे ॥ सू० ॥ कहे आपो ए चोर ॥ पु० ॥ नगर अमारुं मूषीयुं
रे ॥ सू० ॥ मारशुं अमे एने जोर ॥ पु० ॥ए॥ कुंवर कहे आरक्षका रे ॥
॥ सू० ॥ सांजलो महारी वाण ॥ पु०॥ शरणे आव्यो माहरे रे ॥ सू० ॥ अमे
येश एने ताम ॥ पु० ॥ १० ॥ शक्र आवी मागे कदा रे ॥ सू० ॥ पण नवि
आपुं कोय ॥ पु० ॥ क्रोध चड्यो कोटवालने रे ॥ सू० ॥ करे संग्राम ते सोय
॥ पु० ॥ ११ ॥ खेइ खड्ग निज हाथनां रे ॥ सू० ॥ त्रास पमाड्यो तास ॥ पु० ॥
हीपी जिम मृगने त्रासवे रे ॥ सू० ॥ गया कोसलनृप पास ॥ पु० ॥ १२ ॥
जइ पोकार कर्यो तेणे रे ॥ ॥ सू० ॥ क्रोध चड्यो नरराय ॥ पु० ॥ सैन्य घणुं
तिहां मोकले रे ॥ सू० ॥ ते पण नातुं जाय ॥ पु० ॥ १३ ॥ वनजेमो नर जेही

पेरे रे ॥ सू० ॥ कोली नाख्युं तेम ॥ पु० ॥ तव राजा क्रोधे चढ्यो रे ॥ सू० ॥ एह करे जुर्ड केम ॥ पु० ॥ १४ ॥ हय गय जट कोकी करी रे ॥ सू० ॥ परवरीयो महाराय ॥ पु० ॥ मंत्रिसुतने चोर सोंपीने रे ॥ सू० ॥ कुंवर ते साहामो थाय ॥ पु० ॥ १५ ॥ पाय ठवी दंतोशले रे ॥ सू० ॥ चढ्यो गजशिर निर्बीक ॥ पु० ॥ तिहां हणीयो महावत प्रत्ये रे ॥ सू० ॥ आव्यो तेह नजीक ॥ पु० ॥ १६ ॥ युद्ध करे तिहां एकलो रे ॥ सू० ॥ वेसी गजवर खंध ॥ पु० ॥ एक मंत्री एणे अवसरे रे ॥ सू० ॥ रायने कहे निर्बंध ॥ पु० ॥ १७ ॥ तुम्ह आदेशे हुं गयो रे ॥ सू० ॥ सिंहपुरे बहु वार ॥ पु० ॥ हरिनंदी राजा तणो रे ॥ सू० ॥ दीठो ए पुत्र तिवार ॥ पु० ॥ १८ ॥ तव कहेवराव्युं सैन्यमां रे ॥ सू० ॥ युद्ध न करशो कोय ॥ पु० ॥ राजा तव आलिंगीयो रे ॥ सू० ॥ एणी पेरे जाखे सोय ॥ पु० ॥ १९ ॥ तुं मुज मित्र तणो अछे रे ॥ सू० ॥ पुत्र अनूप स्वरूप ॥ पु० ॥ कोइ कारणे तुं आवीयो रे ॥ सू० ॥ नवि जाण्यो सुत नूप ॥ पु० ॥ २० ॥ कुंवर कहे अविनय कर्यो रे ॥ सू० ॥ में तुमचो महाराय ॥ पु० ॥ तव राजा कहे ते विना रे ॥ सू० ॥ नहीं बल बीजे ठाय ॥ पु० ॥ २१ ॥ में तुजने संकट कर्युं रे ॥ सू० ॥ ते खमजो अपराध ॥ पु० ॥ कुंवर कहे खमजो तुम्हे रे ॥ सू० ॥ मुज अपराध अगाध ॥ पु० ॥ २२ ॥ निज हाथणीए वेसाडीयो रे ॥ सू० ॥ आवे नगर मझार ॥ पु० ॥ चोरने अजय देइ करी रे ॥ सू० ॥ बोलाव्यो तेणी वार ॥ पु० ॥ २३ ॥ कुंवर पासे आवीयो रे ॥ सू० ॥ मंत्रिसुतशुं सार ॥ पु० ॥ नृप दीधा आवासमां रे ॥ सू० ॥ जोगवे जोग श्रीकार ॥ पु० ॥ २४ ॥ कौसलनृपनो मंत्रवी रे ॥ सू० ॥ आवी कहे एम वाण ॥ पु० ॥ राजाने अनुग्रह करो रे ॥ सू० ॥ कुंवर कहे तिण ठाण ॥ पु० ॥ २५ ॥ सीमाडा राजा जणी रे ॥ सू० ॥ वश करी आणुं आंहि ॥ पु० ॥ डुर्ग साधुं कहो तेहचा रे ॥ सू० ॥ जाउं वली कहे ज्यांहि ॥ पु० ॥ २६ ॥ जेह असाध्य ते साधशुं रे ॥ सू० ॥ देवप्रसादे देव ॥ पु० ॥ तव मंत्री कहे कुंवरने रे ॥ सू० ॥ विनय करी घणुं सेव ॥ पु० ॥ २७ ॥ गुणरत्नाकर तुं जलो रे ॥ सू० ॥ पहोतो अम्ह घर आय ॥ पु० ॥ गुणखाणी नृपनी धुआ रे ॥ सू० ॥ अवधारो इण ठाय ॥ पु० ॥ २८ ॥ कमलमाला नामे अछे रे ॥ सू० ॥ रूप लावण्य निधान ॥ पु० ॥ मौन करी मंत्रिसुत जणी रे ॥ सू० ॥ अवलोकी करे शान ॥ पु० ॥ २९ ॥

मंत्रिसुत कहे सांजलो रे ॥ सू० ॥ छे तुम तातनो मित्र ॥ पु० ॥ वचते किम उल्लंघीये रे ॥ सू० ॥ तव हरख्यो मंत्री तत्र ॥ पु० ॥ ३० ॥ पाणिग्रहण तिहां करे रे ॥ सू० ॥ शुज लगने शुज दिन्न ॥ पु० ॥ दान गुं दीये दायजे रे ॥ सू० ॥ राजा हर्षित मन्न ॥ पु० ॥ ३१ ॥ नृप कहे श जोवा तणी रे ॥ सू० ॥ छे इछा मन मांहि ॥ पु० ॥ तोपण सुखमां हां रहो रे ॥ सू० ॥ रहे कुंवर उछांहि ॥ पु० ॥ ३२ ॥ त्रीजा ए अधिकारनी रे ॥ सू० ॥ बीजी ढाल रसाल ॥ पु० ॥ पद्मविजय कहे पुण्यथी ॥ सू० ॥ होवे मंगलमाल ॥ पु० ॥ ३३ ॥ सर्व गाथा ॥ ६७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिन अणपूछे थके, अपराजित कुमार ॥ नीकलीयो रयणी समे, मंत्रिसुत आधार ॥ १ ॥ मारग जातां तिण समे, कालिका देवी नाम ॥ तेहना चैत्यनी ढुकडुं, रुदन सुण्युं तेणे ताम ॥ २ ॥ शब्दने अनुसारे गयो, तव सुणे एहवुं वेण ॥ मूकावे मुज एहवो, नहीं कोइ पृथ्वी सेण ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ सोनानी झारी हे ॥ सुंदर महारा साहेबाने हाथ ॥ कबको राणो अलजो करे जी ॥ ए देशी ॥ अबला बोले हे ॥ साहिबा जी मारा ॥ वेण रसाल ॥ आ अवसर कोइ नाथ, मुज उपर करुणा करे जी ॥ १ ॥ नहीं एहवो हे ॥ ॥सा०॥ पुरुषरतन्न ॥ आ पापिष्ठथी मुज, छोमवीने थानक धरे जी ॥२॥ करुणा स्वर एम हे ॥ सा० ॥ सांजले तेह ॥ शब्दवेधी परे जेह, चाल्यो नृपनंदन तिसें जी ॥ ३ ॥ मंत्री चाले हे ॥ सा० ॥ ए नारीनुं वेण ॥ हाथ लेइ तरवार, मुख आगे कोइ नर अछे जी ॥ ४ ॥ एहनी पासे हे ॥ सा० ॥ अग्निनो कुंम ॥ दीसे जाज्वल्यमान, जीपण अति अनरथकरु जी ॥ ५ ॥ पोकारे तव हे ॥ ॥ सा० ॥ गाढ स्वरे सा नारी ॥ विद्याधर ए अधम, कोइ मूकावे एहथी जी ॥ ६ ॥ कुंवर तब कहे हे ॥ सा० ॥ रे पापिष्ठ पुरुष ॥ मुज देखे पण तोही, खेपवे खङ्ग ते केणी परे जी ॥ ७ ॥ पुरुषातनपणुं हे ॥ सा० ॥ बीजे नहीं को ठार ॥ नारी विणु तुज डुष्ट, फोरववानुं शुज अछे जी ॥ ८ ॥ तव कहे खेचर हे ॥ सा० ॥ तुंहीज पुरुष ॥ देखीशुं हवे तुज, पुरुषपणे पराक्रमे जी ॥ ९ ॥ तव तिहां बेहुने हे ॥ सा० ॥ लाग्युं अतिही युद्ध ॥ खङ्ग खङ्गे ते दोय, समता पण क्युं नवि होवे जी ॥ १० ॥ मूकी खङ्गने हे ॥ सा० ॥

करता बाहु युद्ध ॥ विविध भंगे करे त्यांहि, अंग उपांग मरडे वेहु जी ॥ ॥ ११ ॥ डुर्जय जाणी हे ॥ सा० ॥ खेचरे दीध ॥ लोहबंधन परे बंध, नागपाशनो कुमरने जी ॥ १२ ॥ कुंवर तोडे हे ॥ सा० ॥ ज्युं डुर्जननो नेह ॥ करीय प्रयत्न कुमार, गजवर ज्युं रज्जु प्रते जी ॥ १३ ॥ तव विद्याधर हे ॥ सा० ॥ वरसे बाण अखंम ॥ कुंवर खंमे तेम, खड्गाग्रे तपे पाप ज्युं जी ॥१४॥ लोहना गोला हे ॥ सा० ॥ ताती शिलाए युद्ध ॥ रुंख उखेमी तेम,नाखे शस्त्र विकुर्वीने जी ॥ १५ ॥ क्रोधमां आव्यो हे ॥ सा० ॥ असुरकुमारनी पेरे ॥ तेम ए खेचर डुष्ट, करे प्रहार कुंवर भणी जी ॥ १६ ॥ बाला चिंते हे ॥सा०॥ पुरुषरतन आव्यो आंही ॥ मुऊ पापिणीने काज, आपद्द मांहि ए पड्यो जी ॥ १७ ॥ पुण्य प्रभावे हो ॥ सा० ॥ शस्त्र न कोइ अंग ॥ लागुं कुंवरने ताम, तेहनी विद्या सहु हणी जी ॥ १८ ॥ मानुं सूरज हे ॥ सा० ॥ जोवा संग्राम विशाल ॥ तमभर टालतो तेह, उदयाचल उपर चढ्यो जी ॥ १९ ॥ तव तिहां खड्गे हे ॥ सा० ॥ कीधो घाव अतीव ॥ विद्याधरने खंध, आंख मीची धरणी ढल्यो जी ॥ २० ॥ तव तिहां मदने हे ॥ सा० ॥ कीधो प्रहार ते ताक ॥ बाला हृदये जोइ, समकाले वेहु वेधीयां जी ॥ २१ ॥ विद्याधरने हे ॥ सा० ॥ करे उपचार कुमार ॥ चेतना लाधी ताम, विद्याधरने कुंवर कहे जी ॥ २२ ॥ उठ महाजस हे ॥ सा० ॥ शस्त्र लइने हाथ ॥ थाउं वली रणसज्ज, हार जीत होय पुरुषने जी ॥ २३ ॥ कहे विद्याधर हे ॥ सा० ॥ जीत्यो मुऊने आज ॥ ताहरुं चरित्र उदार, देखीने हुं गहगह्यो जी ॥ २४ ॥ हुं ए नारीने हे ॥ सा० ॥ लाव्यो हणवा काज ॥ तुं राखणने हेत, लीधो विक्रीत ते गुण थकी जी ॥ २५ ॥ हवे हुं ताहरे हे ॥ सा० ॥ जाणजे नित्त आयत्त ॥ जेम मनमां तुऊ होय, तेम करो साहिब गुणधरु जी ॥ २६ ॥ त्रीजी ढाले हे ॥ सा० ॥ त्रीजे ए अधिकार ॥ उत्तमविजय गुरु साह्य, पद्मविजय भाखी इसी जी ॥ २७ ॥ सर्व गाथा ॥ ७८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमर प्रशंसा सांभली, लज्जावंत महंत ॥ अवनत मुख करीने कहे, भद्र सुणो गुणवंत ॥ १ ॥ काम जे होवे ताहरे, ते मुऊने हवे भाख ॥ कहे ते रिपुने वश करुं, थाउं ताहरी शाख ॥ २ ॥ तव कहे खेचर

कर्युं, माहरुं सघळुं काम ॥ स्त्रीहत्याना पापथी, वार्यो मुफ इण
ाम ॥ ३ ॥ पण सांजल एक वातनी, माहरे छेहडे एक ॥ मणि
था संरोहिणी, मूलिका छे सुविवेक ॥ ४ ॥ मणि जेली घसी मूलिका,
ाणी मांहि तेह ॥ चोपम मुफ व्रण उपरे, कुमर करे तेम नेह ॥ ५ ॥
वेद्याधर ते सज्ज थयो, कुंअर पूछे ताम ॥ कहे योग्य जो होय तुम्ह,
कहो व्यतिकर ए गाम ॥ ६ ॥ विद्याधर कहे सांजलो, माहरो सवि
अवदात ॥ कुंअर निसुणे हर्षेशुं, विद्याधर कहे वात ॥ ७ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ गढ बुंदीरा हो राया ॥ ए देशी ॥ वर वैताढ्य गिरिनी उपर, कांइ रथने-
उरपुर गाण हो ॥ प्रजु सुणो मुफ वाणी, मन करुणा ते आणी ॥ ए आंकणी
॥ अमृतसेन नृप तेहनो रे राणो, कांइ कीर्त्तिमती राणी जाणी हो ॥ प्र०
॥ १ ॥ रत्नमाला तेहने छे बेटी, कांइ निमित्तिए एम जाख्युं हो ॥ प्र०
॥ अपराजित एहनो वर थाशे, कांइ रत्नमालाए चित्त राख्युं हो ॥ प्र०
॥ २ ॥ तुफ सरिखा गुण तेहना जाख्या, कांइ रत्नमाला घणुं रागी हो ॥
प्र० ॥ ध्याये नित्य पण ते नवि मलीयो, कांइ गुणवंतो वमनागी हो ॥
प्र० ॥ ३ ॥ सूरसेन नंदन सूरकंते, कांइ देखीने मन मोह्युं हो ॥ प्र०
॥ प्रार्थना करी विवाह कारण, कांइ मनमां नवि आरोह्युं हो ॥ प्र०
॥ ४ ॥ तेणे प्रतिज्ञा एणी पेरे कीधी, कांइ अपराजित विना परणुं हो ॥
प्र० ॥ बीजो नवि कोइ एम धार्युं, अग्नि करुं वली शरणुं हो ॥ प्र० ॥५॥
सूरकंत पण करे अजिग्रह, कांइ परणुं एह हुं नारी हो ॥ प्र० ॥ एम
कहीने बेहु साधे विद्या, कांइ बहु उपाय मन धारी हो ॥ प्र० ॥ ६ ॥
तेहना रूपाधिकगुणलुब्धो, कांइ एणी पेरे वलखां मारे हो ॥ प्र० ॥ पण
नवि जाणे सहजे गुण ए, नारी अंगे धारे हो ॥ प्र० ॥ ७ ॥ यतः ॥ लीला-
वतीनां सहजा विलासा,-स्तत्र भ्रमत्येव मुधा पवंग्रिः ॥ स्वनावलोलौ
वृपणो वृपस्य, तत्र भ्रमत्येव मुधा शृगालः ॥ १ ॥ दोहा ॥ एकपखी
जे प्रीतमी, ते जाणे डुःखदाय ॥ एकण मन फूरी मरे, एक तणे मन
वाय ॥ १ ॥ अणगमतो अणप्रीछतो, कहो केम आवे दाय ॥ परणवा वात
तो वेगली, पण वाते मिले बलाय ॥ २ ॥ स्त्री देखी कोण नवि चले
प्राणी, कांइ स्त्री तो सहुने वाहाली हो ॥ योगीश्वर पण जेहने

देखी, कांइ जुए मनडुं चाली हो ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सरोवर जल तंबोल मणि, वृक्ष निशा ने नार ॥ जोजन मेघ वाहन प्रमुख, ए सवि वल्लन सार ॥ ३ ॥ स्त्री तो पाकी बोरमी, होंश सहुने थाय ॥ सहुने लागे वल्लहा, मूल्य विना विकाय ॥ ४ ॥ सूरकंत हवे हरी गयो तेहने, आणी इणहीज गणे हो ॥ प्र० ॥ एहनी प्रतिज्ञा पूरण करवा, अग्नि रची ए टाणे हो ॥ प्र० ॥ ए ॥ हुं सूरकंत ते जाणो कुंअरजी, कांइ नाम ग्रहण नवि योग्य हो ॥ प्र० ॥ रत्नमाला ए नारी जाणो, कांइ नवि आवी मुज जोग हो ॥ प्र० ॥ १० ॥ उत्तम पुरुषने योग्य न सुणवुं, कांइ जाख्युं में तुम्ह आगे हो ॥ प्र० ॥ माहरुं पाप गयुं सवि विलये, कांइ तुम्ह दरिसणने रागे हो ॥ प्र० ॥ ११ ॥ विद्याधर कहे चरित्र कहो तुम्ह, कांइ मंत्रिसुत सवि जाखे हो ॥ प्र० ॥ ते सवि वात रत्नमाला तिहां, सांजली चित्तमां राखे हो ॥ प्र० ॥ १२ ॥ मन चिंते वरशे के नांहीं, कांइ गुणवंतो उपगारी हो ॥ प्र० ॥ केम आव्यो ए एणे थानक, चिंतवे एम विचारी हो ॥ प्र० ॥ १३ ॥ कामदृष्टि थइ एहनी उपर, कांइ ए जरतार ते माहरो हो ॥ प्र० ॥ मानुं मूकावणना मिषथी, कांइ आव्यो परणवा त्यारो हो ॥ प्र० ॥ १४ ॥ नारीनां मात पिता त्यां आव्यां, कांइ वात कही सवि तेहने हो ॥ प्र० ॥ पूर्वे पण जूपतिए दीठो, कांइ आवी प्रतीत सहु केहने हो ॥ प्र० ॥ १५ ॥ रत्नमाला परणावी तेहने, कांइ अपराजित तिण वारे हो ॥ प्र० ॥ सूरकंतने मूकाव्यो तिहां, कांइ रायने जाखे ते वारे हो ॥ प्र० ॥ १६ ॥ तुम्ह पुत्री पहोंचावज्यो त्यारे, कांइ अम्हे घेर जइये ज्यारे हो ॥ प्र० ॥ एम कही सहु निज थानके पहोतां, कांइ सूरकंत हवे पारे हो ॥ प्र० ॥ १७ ॥ मूलिका मणि आपे मंत्रिसुतने, कांइ वेश फेरववानी गोली हो ॥ प्र० ॥ नवि यंछे पण आपे पराणे, कांइ घर जाये बहु गुण बोली हो ॥ प्र० ॥ १८ ॥ कुंवर पण आगल हवे विचस्या, कांइ त्रीजे ए अधिकारे हो ॥ प्र० ॥ पद्मविजय कहे चोथी ढाले, कांइ पुण्ये कष्ट विदारे हो ॥ प्र० ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तिरषा लागी वाटमां, वेग अंबनी गंय ॥ उदक गवेषणने गयो, मंत्रिसुत तिण गय ॥ १ ॥ जल लेइने आवीयो, तिणहीज थानक तेह ॥ नवि देखे ते कुमरने, ए आश्चर्य अछेह ॥ २ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ राग मारु ॥ जगतगुरु हीरजी रे ॥ ए देशी ॥ मंत्रिसुत मन चिंतवे रे, थानक चूको आज ॥ करे गवेषणा कुमरनी रे, किहां गया तुमे महाराज ॥ १ ॥ जुर्ज गति कर्मनी रे ॥ कर्म करे ते होय, वाले नहीं केहनुं रे ॥ ए आंकणी ॥ देश विदेशे दोडे घणुं रे, जुवे रुंखनां मूल ॥ नव दीठो कोइ स्थानके रे ॥ तव उपनुं चित्त शूल ॥ २ ॥ जु० ॥ मूर्छा लही धरणी ढल्यो रे, उठी करे विलाप ॥ शून्य दिश सहु देखतो रे, मन चिंते मुज पाप ॥ ३ ॥ ॥ जु० ॥ दैव अकाले शुं कर्युं रे, तें दीधी डुःख पोठ ॥ तें विठडावी भाइरा रे, मित्रनी साथे गोठ ॥ ४ ॥ जु० ॥ खेचर नर सुर को नहीं रे, एहने वंची जाय ॥ दैवविलास विना नहीं रे, डुःख देवाने ठाय ॥ ५ ॥ ॥ जु० ॥ किहां जाउं हवे केहने रे, पूछुं मुज डुःख वात ॥ अटवीमां नर को नहीं रे, मुजने दीये सुखशात ॥ ६ ॥ जु० ॥ डुमणो थइने ते रहे रे, न गमे कांइ लगार ॥ कोइ विचार सूजे नहीं रे, चिंता मगन अपार ॥ ७ ॥ ॥ जु० ॥ वाहाला लागे मुज घणुं रे, जेम मुख देखुं तुज ॥ नयण वयण मन उल्लसे रे, गति मति चिति तुं मुज ॥ ८ ॥ जु० ॥ तें माहरुं मन खेंचीयुं रे, जेम चमके करी लोह ॥ घणुं घणुं कहीये किस्युं रे, कोइ जवांतर मोह ॥ ए ॥ जु० ॥ झूरीने झांखर हुउं रे, जेम पींपलनुं पान ॥ अवर न कांइ मुजने गमे रे, निशिदिन ताहरुं ध्यान ॥ १० ॥ जु० ॥ एक हानि हांसुं वली रे, ए उखाणो थाय ॥ अणगमतुं मुज ए थयुं रे, हवे शुं करुं उपाय ॥ ११ ॥ जु० ॥ ते कारण तुम्हे कुमरजी रे, आपो दरिसण मुज ॥ हांसीनी वेला नहीं रे, नव घटे एहवुं तुज ॥ १२ ॥ जु० ॥ एम विलाप करी घणुं रे, वली जोवाने लग्ग ॥ मानादिक जमतो थको रे, कुंअर पूठे मग्ग ॥ १३ ॥ जु० ॥ नंदीपुर नगरे गयो रे, चिंते डुःख अगाह ॥ एकलडो मूकी गयो रे, हा हा मुज अनाह ॥ १४ ॥ जु० ॥ केम जीवे हजीय तुं रे, वहाला न मल्यो मित्र ॥ चिंतातुर उद्यानमां रे, बेठो तव होय चित्र ॥ १५ ॥ जु० ॥ ए त्रीजा अधिकारनी रे, पंचमी ढाल कहाय ॥ राग जेहनुं होय ते विना रे, वध कहे न रहाय ॥ १६ ॥ जु० ॥

॥ दोहा ॥

॥ एम चिंतातुर थइ रह्यो, विनयबोध तेणी वार ॥ तेहनुं डुःख तेहज

खहे, मुखे न कहाय लगार ॥ १ ॥ सज्जन गुण नव विसरे, जो केवलीया होय ॥ इंद्रालो ने अजाण नर, फेर न लहीये कोय ॥ २ ॥ शत्रु ने अण-ओलखीत वली, सरखां जाण्यां दोय ॥ अणजाण्याथी शत्रु जलुं, जल आपे सहु कोय ॥ ३ ॥ ते माटे जाणो कुंवर, गुणपरीक्षा जेणे कीध ॥ ते विण ते नवि रही शके, तेणे निसासा लीध ॥ ४ ॥

॥ ढाल छठी ॥

॥ मनमोहन मनमोहन पावन देहमी जी ॥ ए देशी ॥ एणी अवसरे एणी अवसरे दोय विद्याधरु जी, तिहां आवे तिहां आवे आकाशथी नाम हो ॥ स्वामी अरज स्वामी अरज सुणो एक अम तणी जी ॥ ए आंकणी ॥ करे विनति करे विनति बे कर जोमीने जी, मीठे वचने मीठे वचने कहे अम्ह काम हो ॥ १ ॥ स्वा० ॥ अपराजित अपराजित कुमरे मोकल्या जी, तुम्ह पासे तुम्ह पासे तेमवा आज हो ॥ स्वा० ॥ प्रभु चालो प्रभु चालो नीम थइ हवे जी, तुम्ह विरह तुम्ह विरहनां दुःख करे राज हो ॥ २ ॥ स्वा० ॥ ते सांभली ते सांभली अमीय सिंच्या परे जी, मृत जीव्या मृत जीव्यानी परे तेह हो ॥ स्वा० ॥ हर्षित थयो हर्षित थयो पुलकित तनु तदा जी, नवि माये नवि माये अंगे जेह हो ॥ ३ ॥ स्वा० ॥ पूछे तेहने पूछे तेहने कुशलनी वारता जी, वली वातमी वली वातमी तेह वियोग हो ॥ स्वा० ॥ तव भाखे तव भाखे तेह विद्याधरा जी, तस अतिशें तस अतिशें वात ते जोग हो ॥ ४ ॥ स्वा० ॥ सुणी वातमी सुणी वातमी हवे वियोगनी जी, तुं पाणी तुं पाणी लेवाने जाय हो ॥ स्वा० ॥ अपराजित अपराजितने अम्हे आदस्यो जी, तेहने तुफ तेहने तुफ विरह ते थाय हो ॥ ५ ॥ स्वा० ॥ अम्ह स्वामी अम्ह स्वामी भवनभानु अछे जी, विद्याधर विद्याधरनो ते नाथ हो ॥ स्वा० ॥ अटवीमां अटवीमां मोहोल विकुर्वीने जी, रहे कुमरने रहे कुमरने करे साहमो हाथ हो ॥ ६ ॥ स्वा० ॥ साहमो जइ साहमो जइ कुमर आलिंगीयो जी, हरखी दीये हरखी दीये रतन आसन हो ॥ स्वा० ॥ वेमाली वेसाली कहे तुफ गुण घणा जी, देखी नवि देखी नवि मावे मन हो ॥ ७ ॥ स्वा० ॥ हवे दीठो हवे दीठो प्रत्यक्ष तुफने जी, नवि माये नवि माये मन उल्लस हो ॥ स्वा० ॥ हरिनंदी हरिनंदी राजा धन्य ते जी, तुफ माता तुफ माताने पण धन्य हो ॥ ८ ॥ स्वा० ॥

१ घरमां जेहना घरमां देशमां नयरमां जी, तुं वसतो तुं वसतो तिणे धन्य हो ॥ स्वा० ॥ इहां तेड्या इहां तेड्या तुम्ह ए कारणे जी, मुझ मुझ घरमां धन तो अगण्य हो ॥ ९ ॥ स्वा० ॥ मुझ पुत्री मुझ पुत्री सोहामणी जी, एक कमलिनी एक कमलिनी कुमुदिनी नारी हो स्वा० ॥ नेमित्तिए नेमित्तिए मुझने एम कह्युं जी, तुझ पुत्री तुझ पुत्री-भरतार हो ॥ १० ॥ स्वा० ॥ अपराजित अपराजित नियमे थायशे , में मूक्या में मूक्या खेचर ताम हो ॥ स्वा० ॥ तुम्ह पासे तुम्ह पासे णे इहां आणीया जी, नवि गणजो नवि गणजो बीजुं काम हो ॥ ११ ॥ स्वा० ॥ ते कारण ते कारण परणो कुंवरी जी, अम्ह उपर अम्ह उपर अनु-ग्रह आणी हो ॥ स्वा० ॥ एम भाख्युं एम भाख्युं पण तस नवि रुचे जी, तुझ तुझ विरहो मनमां जाणी हो ॥ १२ ॥ स्वा० ॥ तुझ ध्यावे तुझ ध्यावे निशदिन कुंवरजी जी, भली रीते भली रीते भोजन नवि थाय हो ॥ स्वा० ॥ नवि सोवे नवि सोवे नवि बोले किमे जी, तुझ विरहो तुझ विरहो तस न हो ॥ १३ ॥ स्वा० ॥ ते माटे ते माटे तुझने तेडवा जी, अम्हे आव्या आव्या दीठा आंही हो ॥ स्वा० ॥ हवे वार न हवे वार न लावो अध ी जी, तुम्हे चालो तुम्हे चालो अपराजित ज्यांहि हो ॥ १४ ॥ स्वा० ॥ अम्ह स्वामी अम्ह स्वामी कुमर हरख लहे जी, एम सांभली एम सांभली जाय हो ॥ स्वा० ॥ नम देखी नम देखी भुवनभानु भवे जी, कुंअर कुंअर पण हर्षित थाय हो ॥ १५ ॥ स्वा० ॥ तिहां परण्या तिहां पर-ण्या कमलिनी कुमुदिनी जी, तिहां रहेनां तिहां रहेनां एक दिन जाय हो ॥ स्वा० ॥ अणपूछे अणपूछे तिहांथी वेहु जणा जी, मयले ते मयले ते सु-खीया थाय हो ॥ १६ ॥ स्वा० ॥ सिरिमंदिर सिरिमंदिर नगरे आवीया जी, मणि आव्यो मणि आव्यो खेचर जेह हो ॥ स्वा० ॥ ते दक्षिण ते दक्षिण पुरे कु-मरनां जी, पुण्यवंतने पुण्यवंतने दुःख नवि रह हो ॥ १७ ॥ स्वा० ॥ करे क्रीडा करे क्रीडा सुखमां तिहां रहे जी, हवे एक दिन हवे एक दिन नगरमां थाय हो ॥ स्वा० ॥ कोलाहल कोलाहल समझण नवि पडे जी, सवि नग-रमां सवि नगरमां लोक उजाड हो ॥ १८ ॥ स्वा० ॥ तिहां धनुषे तिहां धनुषे तीर चडावीयां जी, पहेर्यां बकतर पहेर्यां बकतर कर तरवार हो ॥ स्वा० ॥ तुरंगे चढी तुरंगे चढी धावे रहडा जी, कोइ हाडे कोइ दोडे

निज पगे स्यार हो ॥ १९ ॥ स्वा० ॥ होकारव होकारव करे केइ वलगता जी, देखी जे देखी जे मन जय होय हो ॥ स्वा० ॥ एहवा जट एहवा जट सज्ज थइने जले जी, जयवंत जयवंत थइ रह्या जोय हो ॥ २० ॥ स्वा० ॥ रथ ज-रीया रथ जरीया शस्त्रे करी घणुं जी, हेपारव हेपारव करता सार हो ॥ ॥ स्वा० ॥ पाखस्या तिहां पाखस्या तिहां अश्व दोमावता जी, दीये हाटे दीये हाटे तालां तिवार हो ॥ २१ ॥ स्वा० ॥ गृहद्वार गृहद्वार ते देवे जन सवे जी, कोलाहल कोलाहल एणी पेरे थाय हो ॥ स्वा० ॥ परमारथ प-रमारथ नवि लखो तेहनो जी, मंत्रिसुत मंत्रिसुत मोकले धाय हो ॥ २२ ॥ ॥ स्वा० ॥ करी खबर करी खबर आव्यो कुमर कने जी, कहे सांजलो कहे सां-जलो नगरनो राय हो ॥ स्वा० ॥ सुप्रज नृप सुप्रज नृप आस्थाने हतो जी, जस महिमा जस महिमा जगमां गवाय हो ॥ २३ ॥ स्वा० ॥ प्रतिहार प्र-तिहार ते सुतो प्रमादथी जी, कोइ वेरी कोइ वेरी पुरुष ते आवी हो ॥ स्वा० ॥ उल करीने उल करीने रायने घा कस्यो जी, नव सुत कोइ नव सुत कोइ तेने जावी हो ॥ २४ ॥ स्वा० ॥ प्रतिहारनी प्रतिहारनी निंदथी डुःख लह्यो जी, निद्राथी निद्राथी डुःख होय नियम हो ॥ स्वा० ॥ मही सुंवे मही सुंवे उंघे जे नरा जी, तेणे टालो तेणे टालो निद्राप्रेम हो ॥ २५ ॥ स्वा० ॥ जो करशो जो करशो निद्रा तो जशे जी, रसस्वाद रसस्वाद तो तुम्ह तणो मूल हो ॥ स्वा० ॥ पठे पूछशो पठे पूछशो कांय कह्युं नहीं जी, अमे तो कह्युं अमे तो कह्युं तुम अनुकूल हो ॥ २६ ॥ स्वा० ॥ एह राजा एह राजा प्रमादथी डुःख लह्यो जी, तेणे करीये तेणे करीये प्रमाद ते केम हो ॥ स्वा० ॥ अधिकारे अधिकारे त्रीजे उठी ढालमां जी, कहे पद्म कहे पद्मविजय धरी प्रेम हो ॥ २७ ॥ सर्व गाथा ॥ १७७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कहे नृपसुत सुण मंत्रिसुत, जुर्ज जवितव्यता वात ॥ एकाकी परि ह्रीये, पण आपण सुखशात ॥१॥ सुजटसमूहे परवस्यो, रहे नित निज आ-वास ॥ नीति सहित पण देखीये, नृपने डुःखनो राशि ॥ २ ॥ ते कारण जवितव्यता, करे ते जगमां होय ॥ कारजसिद्धिमां करे, उद्यम निष्फल होय ॥ ३ ॥ विमलबोध तव एम कहे, निश्चय नय प्रजु एम ॥ पण उद्यम व्यवहार ठे, तेह तजाये केम ॥४॥ न्याय अन्याय करो सवे, पण थानां-

ते घाय ॥ पण अपजस अन्यायथी, जस होय करतां न्याय ॥ ५ ॥
नयथी जोइये, तो सघलो व्यवहार ॥ ठठी जाये तेहथी, ठठे घ
र ॥ ६ ॥ वेप पहेरो तो वंदीये, जरतने कहे शक्रेंड ॥ ते व्यवहार
पता, देखाडे जिनचंड ॥ ७ ॥ उद्यम करतां ऊपजे, सवि कारजन
॥ उद्यम करतां मानवी, पामे रिद्धिनी वृद्धि ॥ ८ ॥ जिनवर दीक्ष
करी, करे कष्ट अघोर ॥ ते उद्यमना सादथी, नासे कर्म कठोर ॥ ए ॥
उद्यम ते मुख्य ठे, कार्यसिद्धि होय तास ॥ काकतालीय न्याये करी,
अन्याये आश ॥ १० ॥ लोक अनुयायीपणुं, नवि होय ते लहे दुःख
लोक अनुजाइ वरततां, ते लहे लक्ष्मी सुख ॥ ११ ॥ धर्म विशुद्ध वली
तेम, अनुजाइ होय लोक ॥ वरते ए रीते तदा, पामे शुन फल रोक
१२ ॥ आ जव पर जव साधतो, पामे कीर्त्ति अमान ॥ ते कारण पण
, साधे कार्य समान ॥ १३ ॥ कुंवर कहे सुण मित्र तुं, तें कही
थी वाण ॥ में ठहांठपणे कह्युं, वात अयुक्त अजाण ॥ १४ ॥ तें स्याद्वादपणे
, में जाख्युं एकांत ॥ तुज परीक्षा कारणे, जाख्युं ए एणी जात ॥ १५ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ वाहु जिणेसर विनवुं ॥ ए देशी ॥ सुंदर ॥ मंत्री सामंत प्रमुख तदा, करे
पचार अनेक हो ॥ सुंदर ॥ नवि असमाधि कांइ टली, मुंकाइ रह्या ठेक
॥ सुं० ॥ १ ॥ पुण्य तणां फल देखजो ॥ ए आंकणी ॥ कामलना गणि-
वने. तेह नगरमां सार हो ॥ सुं० ॥ आवी कहे मंत्री प्रमुखने, सुणो
वात श्रीकार हो ॥ सुं० ॥ २ ॥ पु० ॥ दोय पुरुष इण नयरमां. नवि करे कांइ
पार हो ॥ सुं० ॥ विलसे द्रव्य धनी परे. त्यागी तेह अपार हो ॥ सुं० ॥
॥ ३ ॥ पु० ॥ धर्म तणा ते रागीया. उत्तम सवि आचार हो ॥ सुं० ॥ सिद्ध पुरुष
सरिखा अठे. पुण्य तणा जंमार हो ॥ सुं० ॥ ४ ॥ पु० ॥ कांइ उपचार हशे
. सांजली सहु हरखंत हो ॥ सुं० ॥ मंत्रलावे सवि नृप प्रत्ये, नृप
पण एम बोलंत हो ॥ सुं० ॥ ५ ॥ पु० ॥ तेडी आवो ते पुरुषने. ते पण जाय
तस पास हो ॥ सुं० ॥ बहु प्रणिपत्य करी तदा. आव्या नृपनी सकाश
हो ॥ सुं० ॥ ६ ॥ पु० ॥ पूठे किहां थकी आवीया. नगर कर्युं नृप वेत्त
हो ॥ सुं० ॥ कोण कुलमां तुम्हे उपना. नाखो स्थिर करी चित्त हो ॥
॥ सुं० ॥ ७ ॥ पु० ॥ मंत्रिसुत सवि वारता मन लावे आणंद हो ॥ सुं० ॥

हर्षित थइ राजा जणे, जुर्ड आपण अति मंद हो ॥ सुं० ॥ ८ ॥ पु० ॥ हरिनंदी मुज मित्रता, पुत्र ते आव्या आंही हो ॥ सुं० ॥ कुशल न पूछ्युं तेहने, नवि जाएयो मन मांहि हो ॥ सुं० ॥ ए ॥ पु० ॥ फल पाम्या परमादनुं, सुणो सवि मंत्री सामंत हो ॥ सुं० ॥ घातनुं डुःख नथी ला· गतुं, उचित उल्लंघणा हुंत हो ॥ सुं० ॥ १० ॥ पु० ॥ डुःख लागे ने ते· हनुं, तव कहे सुणी राजन हो ॥ सुं० ॥ मन प्रसाद प्रतिपत्ति कही, सुवा· सने वहु मान हो ॥ सुं० ॥ ११ ॥ पु० ॥ मंत्री प्रमुख कहे कुमरने, घात तणुं वृत्तांत हो ॥ सुं० ॥ करो उपचार ते रायने, नृप डुःखीयो एकांत हो ॥ सुं० ॥ १२ ॥ पु० ॥ कुमर कहे मंत्रिसुत प्रते, मणि मूलिका तुं प्रयुंज हो ॥ सुं० ॥ मंत्रिसुत कहे कुमरने, तुं पुएयवंत उपजुंज हो ॥ सुं० ॥ १३ ॥ पु० ॥ पुएय होय तो सवि फले, पुएय विना सवि फोक हो ॥ ॥ सुं० ॥ योगीनो पुरुषो थयो, गयो शिवकुमरनो शोक हो ॥ सुं० ॥ ॥ १४ ॥ पु० ॥ यंत्र मंत्र मणि ओषधि, पुएय विना फल नांहि हो ॥ ॥ सुं० ॥ उलटो अनर्थ होये घणो, जाये जीवथी त्यांहि हो ॥ सुं० ॥ १५ ॥ ॥ पु० ॥ पुएय उदय तुज आकरो, नजरे दीठ प्रत्यक्ष हो ॥ सुं० ॥ वार अनेक में प्रजु तणो, ते कारण तुम्हे दक्ष हो ॥ सुं० ॥ १६ ॥ पु० ॥ करे उपचार कुमर तदा, मणि मूलिकानी सहाय हो ॥ सुं० ॥ सज्ज थयो ततकाल ते, संजाले निज राज्य हो ॥ सुं० ॥ १७ ॥ पु० ॥ नगर देशमां घर घरे, करे वधामणां राय हो ॥ सुं० ॥ लोक प्रशंस करे घणुं, कुमर तणो जस गाय हो ॥ सुं० ॥ १८ ॥ पु० ॥ रंजा नामे गुणवती, राज कन्या मनोहार हो ॥ सुं० ॥ प्रार्थना करी परणावीयो, अपराजित कुमार हो ॥ सुं० ॥ १ए ॥ पु० ॥ पंच विषय सुख जोगवे, दिन केता एक त्यांहि हो ॥ सुं० ॥ रहीने पूर्व परे वेहु, नीकलीया उछांहि हो ॥ सुं० ॥ २० ॥ पु० ॥ कुंनपुरी उद्यानमां, पहोता अनुक्रमे तेह हो ॥ सुं० ॥ कनककमल उपरे रह्या, मुनिवर अति गुणगेह हो ॥ सुं० ॥ २१ ॥ पु० ॥ केवलज्ञान तणा धणी, दीये नविजन उपदेश हो ॥ सुं० ॥ वि द्याधर सुर नर सजा, सेव करे सुविशेष हो ॥ सुं० ॥ २२ ॥ पु० ॥ कल्प वृक्ष परे शोजतो, सूर्य परे स्फुरे तेज हो ॥ सुं० ॥ चंड परे शीतल घणो देखी उपजे हेज हो ॥ सुं० ॥ २३ ॥ पु० ॥ सायर परे गंजीर जे, मेरु प

थोत्र हो ॥ सुं० ॥ जारंन परे अप्रमत्त जे, जेहने अंश न खोत्र हो
॥२४॥ पु० ॥ अजरामर करवा जणी, नव्यने दीये उपदेश हो ॥ सुं
...तापर देखीने, उपनो हर्ष अशेष हो ॥ सुं० ॥ २५ ॥ पु० ॥ रोम
...विकसित थइ, माने कयत्र अप्पाण हो ॥ सुं० ॥ पंचाभिगम ते सा
सकल विवेकना जाण हो ॥ सुं० ॥ २६॥ पु० ॥ त्रण प्रदक्षिणा देइ
विनये करी प्रणाम हो ॥ सुं० ॥ एणी परे कहे मुखथी वली, हे मुनि
...धाम हो ॥ सुं० ॥ २७ ॥ पु० ॥ सार्थवाह मोक्षनगरनो, अज्ञान-
तुं जाप हो ॥ सुं० ॥ जवतापर प्रवहण समो, कोश अठे कल्याण
॥ सुं० ॥ २८ ॥ पु० ॥ रोप दोप तुऊ वेगला, जव्य लहे परितोप हो ॥
॥ जववन गहन अग्नि समो, मेघ परे तुऊ घोप हो ॥ सुं० ॥२९॥ पु० ॥
...वल्या जीवने, प्रशम जीमूत तुऊ वयण हो ॥ सुं० ॥ नवि
तो निर्वृत्ति तणुं, कारण कोण होत सयण हो ॥ सुं० ॥ ३० ॥ पु० ॥
...नां जमतां थका, जो आश्वासनुं गण हो ॥ सुं० ॥ तुम्ह सरिखा
...थानके, दीठे गुणनिधि जाण हो ॥ सुं० ॥ ३१ ॥ पु० ॥ देश ज्रमण
...थयो, संगयनम रविबिंब हो ॥ सुं० ॥ दीठुं दर्शन तुम्ह तणुं, म-
...नां जेम अंब हो ॥ सुं० ॥ ३२ ॥ पु० ॥ तुम्ह प्रणमुं हुं वली वली,
...अमंद हो ॥ सुं० ॥ जव सफलो थयो माहरो, पाम्यो परमानंद हो
सुं० ॥ ३३ ॥ पु० ॥ ए बीजा अधिकारमां, उपनो हर्ष कल्लोल हो ॥ सुं० ॥
कहे मानमी डासमां, कुअरनुं पुण्य अतोल हो ॥ सुं० ॥ ३४ ॥
पु० ॥ सर्व गाथा ॥ २२३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इम [illegible] करी, वंदो उचित प्रदेश ॥ योग्य जीव जाणी हवे,
केवली दीये उपदेश ॥ १ ॥ [illegible] केवली करी विन्ना-
र ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
न ॥ [illegible] नेमिनाथ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥

विमलबोध ए मंत्रिसुत, गणधर थाशे तुऊ ॥ वेहुं अति रोमांचित थया, सांजली एहवुं गुऊ ॥ ७ ॥ केवलीनी सेवा करे, तिहां केताएक दिन्न ॥ जव रहीया केवली प्रजु, तिहां हर्षित मन्न ॥ ८ ॥ मुनिवर विचरे विचरीया, वंदे चैत्य अनेक ॥ सेवे साधु पयकमल, धरी बहुमान विवेक ॥ ॥ ९ ॥ सांजलो जिनवर धर्मने, विचरे महीयल मांहि ॥ उत्पत्ति रत्नवती तणी, सांजलो हवे उत्साही ॥ १० ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ साहिबा मोती थोने हमारो ॥ ए देशी ॥ जनानंद नामे नयरीनो वासी, जितशत्रु शत्रु करे दासी ॥ गुणवंती,नारी॥ सुसारी, शीलवंती नारी ॥ ए आंकणी ॥ धारणी नाम अछे तस देवी, रूपे हारी रंजा जेहवी ॥ गु० ॥१॥ तेहनी कुखे उपनी बेटी, प्रीतिमती नामे गुणपेटी ॥ गु० ॥ रत्नवतीनो जीव ए जाणो, पुत्र परे मोछव करे राणो ॥ गु० ॥ २ ॥ रत्नमाला परे लागे वाहाली, हृदयथी नवि मूके कोइ टाली ॥ गु० ॥ अनुक्रमे यौवनवयमां आवी, चोसठ कला तस चित्तमां जावी ॥ गु० ॥ ३ ॥ जारती पण जाणुं ए पासे, इछे करवा कला अन्यासे ॥ गु० ॥ सवि जन जाणे देवी ए साची, लोक तणी मति तेहमां माची ॥ गु० ॥ ४ ॥ पण तेहनी मति न रमे क्यांहि, गुणवंतो न दीठो तेह मांहि ॥ गु० ॥ नरपति चिंते महारी बेटी, रूप गुणे रतिने करी चेटी ॥ गु० ॥ ५ ॥ एहने योग्य हुं पुरुष न देखुं, परणावीने जेम सुख लेखुं ॥ गु० ॥ जो जेम तेम परणावुं एह, तो प्राण घात करी तजे देह ॥ गु० ॥ ६ ॥ एम चिंती पूछे एकांते, तुऊ विवाह करुं किणी जाते ॥ गु० ॥ अमुक अमुक राजानो कुमार, कहो तो करीये तुम्ह जरतार गु० ॥ ७ ॥ सा कहे तात सुणो मुऊ वयणां, जोग न वांछे मुनिवर सयणां ॥ गु० ॥ जाण्या छे परमारथ जेणे, जोग न मान्या मनमां तेणे ॥ गु० ॥ ॥ ८ ॥ एहवा जोगमे मूरख साथ, सेववा ते बाउलनी बाथ ॥ गु० ॥ मूरख जाख्यो गर्दन सरिखो, देह विकंवन दुर्गति परखो ॥ गु० ॥ ९ ॥ दाधारिंगा पति एक जाणो, गुणिगणनो स्वामी मूर्ख पीठाणो ॥ गु० ॥ ज्ञानी होय दरिद्री जेह, त्रणे दुःख जाख्यां जग एह ॥ गु० ॥ १० ॥ में तो प्रतिज्ञा कीधी एम, कला करतां मुऊ जीते जेम ॥ गु० ॥ ते परणुं स्वामी धरी प्रेम, बीजो वर वरवा मुऊ नेम ॥ गु० ॥ ११ ॥ वात थइ दश दिशे

तेरू, बहु नृप तिहां मिले कन्या गिरू ॥ गु० ॥ करे कला अन्यास अ
. वाद विवाद करे अति ठेक ॥ गु० ॥ १२ ॥ मांहोमांहे पूछे वात, जा
हवे जीती जात ॥ गु० ॥ नगर बाहिर एक दिन हवे राय, मांचा मंना
... ॥ गु० ॥ १३ ॥ विविध प्रकारना मांचा रुडा, दश दिशि दूत घ
. तिहां दोड्या ॥ गु० ॥ सहु निज पुत्रने तेडीने आवे, कौतुक जोवाने
. जावे ॥ गु० ॥ १४ ॥ रूप विज्ञान लक्षण सुणी आवे, विद्याधर तेह-
. गुण गावे ॥ गु० ॥ प्रछन्न रूप करी बहु देव, आवे कौतुक लीधा हेव ॥
० ॥ १५ ॥ तेह स्वयंवरमंडपे मलीया, बहु राजा बहुबलथी बलीया
गु० ॥ हरिनंदी राजा नवि आव्यो, पुत्रवियोगथी दुःख बहु पाव्यो ॥
० ॥ १६ ॥ जितशत्रु राजाए कीधां, बहु सन्मान वेसण तस दीधां ॥
० ॥ एहवे अपराजित कुमार, फरता आव्या तिणही वार ॥ गु० ॥१७॥
... भावी तणे संयोग, वात सुणी आव्या तिहां लोग ॥ गु० ॥ मंत्रि-
... कहे कुमार, भले आव्या इहां एणी वार ॥ गु० ॥ १८ ॥ बहु कौतुक ने
.. विचार, देखीशुं आपण निरधार ॥ गु० ॥ वली कन्या पण रूप निधा-
.., देखीशुं गुणथी असमान ॥ गु० ॥ १९ ॥ सुजन घणा इहां आव्या
हशे. ते आपणने सहु ओलखशे ॥ गु० ॥ २१ ॥ विद्याधरदत्त गुटिका जेह, रूप
परावर्त्त करना तेह ॥ गु० ॥ २० ॥ पामर पुरुषनुं रूप करीने, आव्या
गुटिका पास धरीने ॥ गु० ॥ श्रीनिमनी एणे अवसर आवी, साथे दासी
प्रमुख तेह लावी ॥ गु० ॥ २१ ॥ हरिणलंछन हास्यो निज वदने, दाडिमकली
हारी जस रदने ॥ गु० ॥ हारलता शोभे घणुं नास, कामी जनने
नाखण पास ॥ गु० ॥ २२ ॥ मणि वलयाकर अंगे शोभे, जस रव सुणी
सवि जन मन क्षोभे ॥ गु० ॥ रक्त अशोक प्रतापद जाणो, तिणे रंजे जन
हृदय पीडाणो ॥ गु० ॥ २३ ॥ रणकण करता नेउर पाद, मानुं करे इंडा-
णीशुं वाद ॥ गु० ॥ जेह दुकूल धार्युं निज अंगे, सुरलोके पण नवि उहे
रंगे ॥ गु० ॥ २४ ॥ करे शृंगार विशिष्ट प्रकारे, आभूषण बहु अंगे धारे ॥
गु० ॥ परिमल बहुल अछे तस आने, अंगरक्षक प्रतिहारी पासे ॥ गु०
॥ २५ ॥ सुभटसमूहे परवरी आवे, देखी सहु मन अचरिज थावे ॥ गु०
॥ प्रेक्षक लोक करंती दूरे, प्रिय सखी तस आणंद पूरे ॥ गु० ॥ २६ ॥ मा-
लती नाम अछे तस साच, एणी परे नाखे मधुरी वाच ॥ गु० ॥ भूचर राजा

सवि मली आव्या, ताहरा गुण मन मांहि भाव्या ॥गु०॥२७॥ देश कदं-
बनो स्वामी एह, भुवनचंद नामे गुणगेह ॥ गु० ॥ पुत्रादिकथी ए परिव-
रीयो, पूर्ववधू तिलक ज एह करीयो ॥ गु० ॥ २८ ॥ सुजटचरित्रे करीने शूर,
रिपुदलने जस दीसे गयो नूर ॥गु०॥ दक्षिण देशपति एह राय, समरकेतु
प्रणमे सहु पाय ॥ गु० ॥ २९ ॥ वरुण नाम पश्चिम दिशि राय, जेहना
गुण दश दिशिमां गवाय ॥ गु० ॥ सुजट गुणी दानी मानी होवे, जस
नामे रिपुदल सवि रोवे ॥ गु० ॥ ३० ॥ उत्तर दिशिनो नाथ कुबेर, नृप-
गुण मांहि अनुत्तर मेर ॥गु०॥ सोमप्रज नामे पण दीपे, सूरतेजथी रिपु-
बल जीपे ॥ गु० ॥ ३१ ॥ नाम धवल ए राजा रुडो, कृष्ण करे रिपुबल
तिहां भूंडो ॥ गु० ॥ शूर जीम आदि बहु राजा, देखावे बेहु पक्ष मांहे
ताजा ॥ गु० ॥ ३२ ॥ एह धनंजय सुजस छे सार, कलिंग शूरसेन मंगल
धार ॥ गु० ॥ खेचरपति मणिचूड ए राय, विद्या सिद्ध घणी जस
थाय ॥ गु० ॥ ३३ ॥ रत्नचूड मणिप्रज वली जाण, सुमनस विद्याधरमां
प्रमाण ॥ गु० ॥ शूरसेन सुसेन राजान, अमितप्रजने दीये बहु मान ॥
॥ गु० ॥ ३४ ॥ रूप सोजाग्य ने तेज वखाणे, वर कुमरी जो तुऊ मन
जाणे ॥ गु० ॥ एह राजाना पुत्र युवान, कला बहोंतेर वली रूपनिधान
॥ गु० ॥ ३५ ॥ त्रीजे ए अधिकारे जाखी, नृप वर्णव कस्या बहु जन
साखी ॥ गु० ॥ आठमी ढाल अधिक उल्लासे, पद्मविजय कहे शुज अ-
न्यासे ॥ गु० ॥ ३६ ॥ सर्व गाथा ॥ २७२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमरी दृष्टि करे यदा, जालां परे अति तिक्ष ॥ कुमर हृदय जेम कमल-
दल, शल्य सहित थयां विद्ध ॥ १ ॥ अवला थया अवलावये, सबला
सबला राय ॥ पण वामा वामांग जस, जूपे ते वर थाय ॥ २ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ धारा मोहला उपर मेह, झबूके बीजली हो लाल ॥ झबूके बीजली ॥
ए देशी ॥ एणी अवसर तिहां प्रीति,-मती कला वरसती हो लाल ॥ म० ॥
गीत विचार करंती, पूर्वे पढे सती हो लाल ॥ पू० ॥ तिहां कोइ कुमरना
मुखथी, वचन नवि नीकस्युं हो लाल ॥ व० ॥ आवी गले ग्रहे तेम, मन
सर्वेनुं संकल्युं हो लाल ॥ म० ॥ १ ॥ कोइक स्खलना बोलतां, पामे प्रा-

णीया हो लाल ॥ पा० ॥ कोइक मोन धरी रह्या, मानुं अजाणीया हो
लाल ॥ मा० ॥ कोइक बोले असंबद्ध, लोक हसावता हो लाल ॥ लो० ॥
पण कोइ उत्तर पक्ष, करण नवि पावता हो लाल ॥ क० ॥ २ ॥ सर्व
निलीन थया जब, प्राणी बक परे हो लाल ॥प्रा०॥ तब हसता देइ ताली,
कहे केइ इणी परे हो लाल ॥ क० ॥ जो जो सरस्वती नारी, तेणे स्त्री
पक्ष करे हो लाल ॥ ते० ॥ कोइ कहे जीत्या नारी, तोहि जीवित धरे
हो लाल ॥ तो० ॥ ३ ॥ कोइ कहे स्त्रीया राज्य, ए कारण जाणीये हो
लाल ॥ ए० ॥ एणी परे थयो कोलाहल, ते जनवाणीए हो लाल ॥ते०॥
एम असंबद्ध देखी, नृपति मन चिंतवे हो लाल ॥ नृ० ॥ कृष्ण करी
मुख दृष्टि, भूजाग समी ठवे हो लाल ॥ भू० ॥ ४ ॥ गुण सवि जगमां
थाय, रह्या शुं एटला हो लाल ॥ र० ॥ राजकुमर मलीया छे, बहोत ते
केटला हो लाल ॥ ब० ॥ विधि पण भूल्यो वात, ए करतां शुभ परे हो
लाल ॥ ए० ॥ प्रीतिमती पति नवि, निपजाव्यो कोइ घरे हो लाल ॥
॥ नि० ॥ ५ ॥ अथवा खिन्न थयो विधि, तिणे एह सारिखो हो लाल ॥
॥ ति० ॥ नवि निपजावी शक्यो एम, करुं मन पारखो हो लाल ॥ क० ॥
मंत्री कहे सुण स्वामी, विषाद न कीजीये हो लाल ॥ वि० ॥ उद्यम करतां
इछित, फल नवि लीजीये हो लाल ॥ फ० ॥ ६ ॥ राजकुमर असं-
ख्य, मल्या इहां तुम घरे हो लाल ॥ म० ॥ नवि लहीये कोइ जीत्यो, न
जीत्यो नली परे हो लाल ॥ न० ॥ एम कही करे उदघोषणा, सुणो सवि
राजीया हो लाल ॥ सु० ॥ खेचर कुमार प्राकृत नर, जे गुण गाजीया
हो लाल ॥ जे० ॥ ७ ॥ मुज पुत्री जे जीतशे, तस परणावशुं हो लाल ॥
॥ त० ॥ युक्तिमगन उदघोषणा, मानशो नावशुं हो लाल ॥ मा० ॥ मन
चिंते अपराजित, कन्या ए म्हो अंते हो लाल ॥ क० ॥ एहनी माथे
जीत, थये परणशुं पछ हो लाल ॥ प० ॥ ८ ॥ नवि धरानी माथे छ, गजने
रण परे हो लाल ॥ ग० ॥ नाम सुनावे राय [illegible] ने नवि मरे हो लाल
॥ मं० ॥ जो न [illegible] विजार ना, ए एण मरे घरे हो लाल ॥ ए० ॥ गाम
[illegible] होय नरवर होय [illegible] घरे हो लाल ॥ हो० ॥ ९ ॥ एम चिन-
थीने साथ मह [illegible] हो लाल [illegible] रहा बाहि,
[illegible] आडम्बरे हो लाल ॥ [illegible] ॥ [illegible] ना । एम हकु

थकी हो लाल ॥श०॥ अधिक विराजे एह, ते जाणे सहु वकी हो लाल ॥ ॥ ते० ॥ १० ॥ मारगधूलिथी लिप्त, शरीर छे यद्यपि हो लाल ॥ श० ॥ तोपण काचथी मरकत, ढाया नवि ढपी हो लाल ॥ ढा० ॥ तेम सवि राजकुमारमां, कुमर राजे घणुं हो लाल ॥ कु० ॥ देखी कुंअरने हृदय, विंधाणुं कुमरी तणुं हो लाल ॥ विं० ॥ ११ ॥ पूर्व जन्मना स्नेह, थकी तस जावती हो लाल ॥ थ० ॥ हरख तणो उत्कर्प, घणो मन पावती हो लाल ॥ घ० ॥ पूर्व पक्ष करे दूर, ते उत्तर पक्षथी हो लाल ॥ ते उ० ॥ जेम कोइ देव संक्रांत, होय तेम दक्षथी हो लाल ॥ हो० ॥ १२ ॥ ग्रंथांतरथी तेह, लगारेक दाखीये हो लाल ॥ ल० ॥ पूरव पक्ष कहे, कुंवरी अम्हे जा-खीये हो लाल ॥ कुंव० ॥ आदि मध्य अंत अक्षर, विणु वल्लज होय हो लाल ॥ वि० ॥ निशालीया वली नारी ने, योगीसर जोये हो लाल ॥ ॥ यो० ॥ १३ ॥ दिवस वलेवने दिन, वांधुं हाथे कुंअर कहे हो लाल ॥ ॥ वां० ॥ सांजली मनमां कुमरी, हर्ष घणो लहे हो लाल ॥ ह० ॥ कहे वली कोण न चाले, इशी वल्लज किस्युं हो लाल ॥ इशी० ॥ नरपति विजय करे कहो, केहनो हर्पशुं हो लाल ॥ क० ॥ १४ ॥ तस्कर वल्लज कांय, ना-टकनूमि केहवी हो लाल ॥ ना० ॥ वर्षाकालमां होय, नदी किण जेहवी हो लाल ॥ न० ॥ देवो उत्तर एह, साथे वच एकशुं हो लाल ॥ सा० ॥ अगाध वारि पूर जनित, तरंग विवेकशुं हो लाल ॥ त० ॥ १५ ॥ एणी परे कुमरीनी वाणी, सायर लहेर उछली हो लाल ॥ सा० ॥ कुमरी वचन कचवर तव, वह्यो सवि खलजली हो लाल ॥ व० ॥ कुसुममाल महकंती, कुंअर कंठे ठवे हो लाल ॥ कुं० ॥ तव खेचर नर जूपति, क्रोधथी इम लवे हो लाल ॥ क्रो० ॥ १६ ॥ जुउ जुउ सवे राजान, मेली विगोवीया हो लाल ॥ मे० ॥ उत्तम वंश उत्पन्न, समग्र गुण जावीया हो लाल ॥ स० ॥ मूकी तेहने प्राकृत, नर अंगीकर्यो हो लाल ॥ न० ॥ नवि लहीये कुल जाति, वंश तेहने वर्यो हो लाल ॥ वं० ॥ १७ ॥ नीचगामीपणुं शास्त्र, मांहि नदी नारीने हो लाल ॥ मां० ॥ तेम नीपनुं कही उव्या, धरती आस्फाली-नेत विलाल ॥ ध० ॥ पण नवि सहीये एह, पराजव आकरो हो लाल ॥ मुखथी, वचन सवि वेगं परणे, कापमी पामरो हो लाल ॥ का० ॥ १८ ॥ सर्वेनुं संकल्युं होमीत, लही पण नवि सहु हो लाल ॥ ल० ॥ एहने

हणीने नारी ने, माला अम्हे महुं हो लाल ॥ मा० ॥ एम कहेतां सवि रण, संग्राममां सज्ज थया हो लाल ॥ सं० ॥ तव कोइ मीठ हणी गज, शिर कुंअर गया हो लाल ॥ शि० ॥ १९ ॥ तेहज शस्त्रे युद्ध, करे वेगो तिहां हो लाल ॥ क० ॥ हणेक मांहि हणी रथिकने, वेगो रथ जिहां हो लाल ॥ वे० ॥ वली तुरगोपरि भूमि, रही भूके घणुं हो लाल ॥ रही० ॥ वली गज उपरे एम, करे शूरापणुं हो लाल ॥ करे० ॥ २० ॥ रथ आकाशमां वीज, पुंज परे चमकतो हो लाल ॥ पुं० ॥ गजघटा मांहि केसरी परे, एक ते दीपतो हो लाल ॥ ए० ॥ तमभर मांहि सूरज, उगे जेम सोहतो हो लाल ॥ उ० ॥ अमृतथी जेम रोग, समूह दूरे थतो हो लाल ॥ स० ॥ २१ ॥ जेम द्वीपीथी पशुवर्ग, नासे सवि वेगलो हो लाल ॥ ना० ॥ जेम वनमहिषथी तुरंग, समूह होय पांगलो हो लाल ॥ स० ॥ वाघ थकी मृगयूथ, मातंगे कज थया हो लाल ॥ मा० ॥ पर सवि सैन्य विसंस्थल, करे कुंअर तथा हो लाल ॥ क० ॥ २२ ॥ शास्त्र थकी पराजय थया, नारीथी आपणे हो लाल ॥ ना० ॥ शस्त्र थकी एणे एकले, जीत्या महापणे हो लाल ॥ जी० ॥ तव सवि रणसंग्राम, करण उठ्या वली हो लाल ॥ क० ॥ सोमप्रभ नृपहस्ती उपर, चढे कुंवर वली हो लाल ॥ च० ॥ २३ ॥ लक्षण तिलक चिह्नथी, उंलख्यो जेटले हो लाल ॥ उं० ॥ आलिंगन करे हर्षे, धरी नृप तेटले हो लाल ॥ ॥ ध० ॥ करय निवारण युद्ध, करण पण तिणे समे हो लाल ॥ क० ॥ कहे मुझ वेनलो पुत्र ए, अपराजित रमे हो लाल ॥ अ० ॥ २४ ॥ विमल करी दशे दिश जेणे, निर्मल निज गुणे हो लाल ॥ नि० ॥ हरिनंदी नृपपुत्र, विना कोण एम मुणे हो लाल ॥ वि० ॥ एह अनेक मल्या, नरपति रण कारणे हो लाल ॥ न० ॥ अपराजित ए एक, थयो संहारणे हो लाल ॥ थ० ॥ २५ ॥ निज बल मेरुमंथानशुं, पर बल सायरो हो लाल ॥ प० ॥ मथीयो कृष्ण लछी परे, प्रीतिमती वर्यो हो लाल ॥ प्र० ॥ तव सवि राजकुमार, भली शंसा करे हो लाल ॥ भ० ॥ जितशत्रु सुणी वात, हरख मनमां धरे हो लाल ॥ ह० ॥ २६ ॥ थइ उपशांत नृपति, सवि पासे रही करी हो लाल ॥ स० ॥ दिवस प्रशस्ते प्रीति,-मती एणी परे वरी हो लाल ॥ म० ॥ रूप स्वभावनुं देखी, सवि हर्षित थया हो लाल ॥ स० ॥ दइ सन्मान विसर्ज्या, सहु निज घर गया हो लाल ॥ स० ॥ २७ ॥ नगरलोक

स्वि विभ्रम, पामे निज मने हो लाल ॥ पा० ॥ देवमिथुन ए दीसे, दीये सुख नेननें हो लाल ॥ दी० ॥ देश घणा करी तुरग, रथादिक पामीया हो लाल ॥र०॥ प्रीतिमतीशुं सुख,जोगवे सुखकामीया हो लाल ॥जो० ॥२०॥ जितशत्रु नृपमंत्री,सुता परणावता हो लाल ॥सु०॥ विमलबोध मंत्रिसुतने, तिहां देव-रावता हो लाल ॥ ति० ॥ ए त्रीजा अधिकारनी, ढाल नवमी कही हो लाल ॥ ढाल० ॥ पद्मविजय कहे पुण्य थकी, नित्य सुख सही हो लाल ॥ नि० ॥ ॥ २९ ॥ सर्व गाथा ॥ ३०४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हरिनंदी नृप पासथी, एक दिन आव्यो दूत ॥ अमृतवदन नामे जलो, जाणयो तास आकूत ॥ १ ॥ करी आलिंगन कुंवर ते, पूछे एणी परे तास ॥ कुशल वात माय तायनी, तव कहे दूत विलास ॥ २ ॥ कुशल शुं पूछे तेहनुं, सांजल मारी वात ॥ मात पिता तुऊ रोवतां, जाये दिन ने रात ॥ ॥ ३ ॥ अश्रुपात जल आगले, सायर जल अति स्तोक ॥ नित्य प्रलाप करे घणा, धरतां ताहरो शोक ॥ ४ ॥ पोकारे करुण स्वरे, पामे मूर्छा जाव ॥ तुऊ वियोग डुःख आर्त्तथी, देवे दैवे सराव ॥ ५ ॥ बहु थानक ताहरुं चरित, सांजली हर्षित थाय ॥ पण कोइ जावी जावथी, मिलन न ताहरुं थाय ॥ ६ ॥ प्रीतिमती परण्या तणी, सांजली ताहरी वात ॥ तुम तेमणने कारणे, मुऊ मोकले तुम्ह मात ॥ ७ ॥ वात सुणी मन चिंतवे, अपराजित कुमार ॥माय तायने सुख दीये,सघलो ए संसार ॥०॥ म्हें तो डुःख दीधुं घणुं, हुं तो अधम शिरदार ॥ एम कही आंसु रेरुतो, मानुं मेघजलधार ॥ ए॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ धन्यो रे कुंवरजीनो सेहरो ॥ ए देशी ॥ जुवनजानु एणी अवसरे, अ-मृतसेन नरनाथ रे ॥ विनीत ॥ कुंवर पासे आव्या वही,निज पुत्री लेइ साथ रे ॥ वि० ॥ १ ॥ लीलावंत कुंवर जलो ॥ सूरकांत विद्याधरु, बीजा खेचर अने-क रे ॥ वि० ॥ बहु रिद्धि करी परवस्था, आवे अति धरीय विवेक रे ॥ वि० ॥ ॥ २ ॥ ली० ॥ जितशत्रु राजा तणी, आणा लही कीध प्रयाण रे ॥ वि० ॥ प्रीतिमती आदे देइने, बहु नारी सहित सुप्रमाण रे ॥ वि० ॥ ३ ॥ ली० ॥ हय गय रह जडे परवस्यो, विद्याधर सैन्य संपन्न रे ॥ वि० ॥ अखंड प्र-याणे आवीयो, सिंहपुर नगरने आसन्न रे ॥ वि० ॥ ४ ॥ ली० ॥ विद्या-

र जइ आगले, राजाने तेह कहंत रे॥ वि०॥ राजा पण हर्षित थइ, साह-
ो बहु बलथी आवंत रे ॥ वि० ॥ ५ ॥ ली० ॥ सामंत मंत्रीए परवर्यो,
म नगरलोक सुविशेष रे॥ वि०॥ आव्या निज तात जाणी करी, पाय
णमे सवधू अशेष रे ॥ वि० ॥ ६ ॥ ली० ॥ स्नेहे शिरचुंबन नरपति,
वे करे नगरप्रवेश रे॥ वि०॥ वर हाथणी उपर सोहीये, पाय प्रणमता
होत नरेश रे ॥ वि० ॥ ७ ॥ ली० ॥ करे लोक प्रशंसा एणी पेरे, जुउं
काकी गयो एह रे॥ वि०॥ रुद्धि लेइ आव्यो घणी, ए तो पूरव कृत
गुज रेह रे ॥ वि० ॥ ८ ॥ ली० ॥ यतः ॥ वच्चंति सुपुरिसा जउ, तउ पिंठ
मुंचई लछी ॥ निम्मलगुणपन्निबद्धा, सुजगे मद्दीले च अणुरत्ता ॥ १ ॥
सुकयसहाय एगागिणो, वि जायंति नूण जयपहुणो॥सुकयविमुक्को जिरकं,
गागी जमइ चक्कीवि ॥ २ ॥ कश्चित्पुनराह ॥ प्रीतिमती धन्य एहने,
जेणे एहवो वर पत्त रे॥ वि०॥ रोहण गिरिनी नूमिका, लहे रत्नसंयोग सु-
युत्त रे ॥ वि० ॥ ए ॥ ली० ॥ परस्त्वाह ॥ कुंवर कृतपुण्य जाणीये, जेणे
एहवी स्त्री लीध रे ॥ वि० ॥ कृष्ण विना को नवि लहे, नारी लक्ष्मी संबंध
रे॥ वि० ॥ १० ॥ ली० ॥ एम शंसा सुणतो थको, आवे निज मंदिर तेह
रे॥ वि०॥ सन्मानी विसर्जीया, पहोता ते निज निज गेह रे ॥ वि० ॥
॥ ११ ॥ ली० ॥ कोसल नृपनी पुत्रिका, आवी कनकमाला तिहां नार रे
॥ वि० ॥ सुप्रज रायनी चेटकी, आवे रंजा नामे उदार रे ॥ वि० ॥ १२ ॥
॥ ली० ॥ एम सवि नारी संघातशुं, सुख जोगवे विषयनां चंग रे॥ वि०॥
मनोगत चपलगति हवे, छांडे देवलोकनो संग रे ॥ वि० ॥ १३ ॥ ली० ॥
सूर सोम नामे जला, लघु बांधव थया ते तास रे॥ वि०॥ अपराजित राज्ये ठवी,
राय लीये दीक्षा गुरु पास रे ॥ वि० ॥ १४ ॥ ली० ॥ दीक्षा पाले बहु परे,
पाल्यां तेणे कर्म कुकाठ रे॥ वि०॥ केवलनाण लही करी, काट्यां तेणे कर्म
ते आठ रे ॥ वि० ॥ १५ ॥ ली० ॥ आत्मतत्त्व जोगी थयो, गुण प्रकट्या जास
अनंत रे ॥ वि० ॥ सादि अनंत जांगे करी, सुखीया थया शिववधू कंत रे
॥ वि० ॥ १६ ॥ ली० ॥ उचित जनपद जाइने दीये, पटराणी प्रीतिमती
थाय रे॥ वि०॥ विमलबोध मंत्रिपदे, थापे अपराजित राय रे ॥ वि० ॥
॥ १७ ॥ ली० ॥ पाले राज्य ते एणी पेरे, जीते घणी राय अनेक रे॥ वि०॥
चैत्य करावे जिनतणां, करे पूजा धरीय विवेक रे ॥ वि० ॥ १८ ॥ ली० ॥

रथयात्रा करे अति घणी, जिनशासन उन्नति चंग रे ॥ वि० ॥ साधर्मिक उत्तम तणो, करे राजा नित नित संग रे ॥ वि० ॥ १९ ॥ ली० ॥ साधुजन सेवा करे, धरे निर्मल ध्यान ने ज्ञान रे ॥ वि० ॥ एम बहु दिन ते राजवी, पाले राज्य दीये नित दान रे ॥ वि० ॥ २० ॥ ली० ॥ ए त्रीजा अधिकारनी, कही दशमी ढाल विशाल रे ॥ वि० ॥ पद्म कहे श्रोता-घरे, होजो नित्य मंगलमाल रे ॥ वि० ॥ २१ ॥ ली० ॥ सर्व गाथा ॥ ३३४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिन रयवाडी चड्यो, नयरउद्याने राय ॥ दीठो तिहां एक पुरुषने, अनंगदेव सुखदाय ॥ १ ॥ अनंगरूप मुख चंद ज्युं, कमलपत्र सम नयण ॥ कनकशिला परे हृदयस्थल, सेवे बहु तस सयण ॥ २ ॥ पुरजोगल परे बांहुडी, रक्तोत्पल पद पाण ॥ तस कनक सम कांति जस, पहेर्यां आजरण जाण ॥ ३ ॥ वय सरखी ने रूप सम, मित्रवर्ग समुदाय ॥ तेम सुंदरी रंजा समी, परिवृत बेठो आय ॥ ४ ॥ जमे पीए दीए दान बहु, चंदन प्रमुखनो लेप ॥ कुसुमदाम पहेरी घणी, पण नहीं मन आक्षेप ॥ ५ ॥ कपूरयुत तंबोल तस, वीणा वेणु मृदंग ॥ वाजे नाचे नाटिका, दीसे चढतो रंग ॥ ६ ॥ बंदीजन बोले घणा, बिरुदावली उदार ॥ द्रव्य तिहां खरचे घणुं, तेह अति मनोहार ॥ ७ ॥ देखी अपराजित कहे, कोण ए पुरुष कयठ ॥ देव परे क्रीडा करे, तव कहे नर पासठ ॥ ८ ॥ समुद्रपाल सबवाह सुत, अनंगदेव महाराज ॥ सुणी चिंते नृप धन्य हुं, एहवा राज मुज आज ॥ ९ ॥ थाय प्रतीति ए ऋद्धिथी, देवलोकनी वात ॥ देश नयर तिणथी किश्युं, जिहां एहवा न विख्यात ॥ १० ॥ एणी परे शंसा करी घणी, देखी सीरीउद्यान ॥ राज पहोतो निज घरे, चिंतवतो ते थान ॥ ११ ॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

॥ बाहलो मारो बाय छे बांसली रे ॥ ए देशी ॥ नृपति दिवसनां कृत्य करी रे, जिनप्रतिमा पूजंत ॥ बाहलो मारो जावे छे जावना रे ॥ संध्या समये ते एणी परे रे, ध्यान रात्रि ते करंत ॥ वा० ॥ १ ॥ विहाणे वली जिन पूजीया रे, बेठो गजवरखंध ॥ वा० ॥ कोकिगमे चटे परवस्यो रे, ऋद्धि तणो रे संबंध ॥ वा० ॥ २ ॥ पुर बाहिर नीकलतां थका रे, शब दीठुं तिहां एक ॥ वा० ॥ चार जणे ते उपाडीयुं रे, विरुवुं ते अतिरेक ॥ वा० ॥

॥ ३ ॥ करुण स्वरे अति देखीने रे, रोवे बहु तिहां लोक ॥ वा० ॥ कमलाननी चंपक गोरडी रे, मूके मोटी पोक ॥ वा० ॥ ४ ॥ रति सम बाला ते कूटती रे, मस्तक देती घाय ॥ वा० ॥ वक्षस्थल घणुं ताडती रे, करती अति खेदाय ॥ वा० ॥ ॥ ५ ॥ उठे पडे ने पोकारती रे, मूके श्वासोश्वास ॥ वा० ॥ केश तोडे ने नूषण दले रे, मूके महोटा निःश्वास ॥ वा० ॥ ६ ॥ गुण संजारीने विलपती रे, रोवरावे अन्य लोक ॥ वा० ॥ एम असमंजस देखीने रे, राय पूछे धरी शोक ॥ वा० ॥ ७ ॥ पार्श्ववर्ती तव एम कहे रे, जे तुम्हे दीठो काल ॥ वा० ॥ समुद्रपालसुत क्रीडतो रे, ते आज पाम्यो काल ॥ वा० ॥ ८ ॥ सांजली राय ते वारता रे, पाम्यो अतिहि विषाद ॥ वा० ॥ इंद्रजाल ए देखीये रे, केम ते मोह विवाद ॥ वा० ॥ ॥ ए ॥ के स्वपनुं एह वही गयुं रे, काले दीठो केणी रीत ॥ वा० ॥ आज अवस्था ए केहवी रे, धिक् यम ए विपरीत ॥ वा० ॥ १० ॥ अणचिंतव्यो ए आवी पडे रे, न गणे रूप कुरूप ॥ वा० ॥ ईश्वर दुर्गति सवि हरे रे, राय रंक सम रूप ॥ वा० ॥ ११ ॥ बहु प्रयोजनवंता प्राणीया रे, एहवुं प्रयोजन नांही ॥वा०॥ एकाकी ए जीवनो रे, बहु सहाय छे आंही ॥वा०॥ ॥ १२ ॥ ए आदि कांइ नवि सुणे रे, न गणे कोइ बलवंत ॥ वा० ॥ पंमित मूर्ख ते नवि गणे रे, रोगी रोगाक्रांत ॥ वा० ॥ १३ ॥ देवथी पण शंकाय नहीं रे, नारक ने तिर्यंच ॥ वा० ॥ मनुष्य पण ऊडपी लीये रे, सवि जनने ए प्रपंच ॥ वा० ॥ १४ ॥ धन मूकीने जाता रहे रे, दुःखे अर्जित बहु वेह ॥ वा० ॥ जतन करीने राखीयुं रे, पण नवि जोगवे एह ॥ वा० ॥ ॥ १५ ॥ अन्यथा आवीने ते जोगवे रे, तिणे ए सर्व अथिर ॥ वा० ॥ मुआ पछी ए पोकारतां रे, जांगशे कोण ए पीर ॥ वा० ॥ १६ ॥ पुण्य पातक कखुं ते सवे रे, आवे साथे तास ॥ वा० ॥ लोक मूरख थइ रुदन करे रे, कोहने केहनी आश ॥ वा० ॥ १७ ॥ जे उपचार मृत्यु तणो रे, ते नवि जाणे मर्म ॥ वा० ॥ ते उपचार जिनवर तणो रे, जाख्यो शुरूज धर्म ॥ वा० ॥ १८ ॥ जन्म मरण गोचर नहीं रे, पहोंचावे शिव मांहि ॥ वा० ॥ जिनवर धर्म छे एहवो रे, नवि आराधे उमांहि ॥ वा० ॥ १९ ॥ ते कारण कदि आवशे रे, मृत्यु अमारे पास ॥ वा० ॥ दीनपणुं करवुं पडे रे, करुं उपाय कोइ तास ॥ वा० ॥ २० ॥

यतः ॥ जस्सत्थि मच्चुणा सक्कं, जस्स अत्थि पलायणं ॥ जो जाणइ न मरिस्सामि, सोहु कंक्खेसुएसिया ॥ घर चलते सुखे कोण सुवे रे, शत्रु गणमां प्रमाद ॥ वा० ॥ कोण करे मूरख प्राणीया रे, राय करे ते विषाद ॥ वा० ॥ २१ ॥ धाम पडे यमरायनी रे, एम राजा उद्वेग ॥ वा० घर पद्दोतो ते वैराग्यथी रे, धर्म अधिक विवेक ॥ वा० ॥ २२ ॥ कुंभपुर नगरमां वंदीया रे, केवलनाणी मुणींद ॥ वा० ॥ कुमर अवस्थाए ते हुइ रे, जाणी नाव नरिंद ॥ वा० ॥ २३ ॥ अनुक्रमे विचरतां आवीया रे, सुर नर खेचर साथ ॥ वा० ॥ सांजली राय वंदन गयो रे, वंदे मुनिवर नाथ ॥ वा० ॥ २४ ॥ देशना सांजली हर्षशुं रे, पामे वैराग्य अत्यंत ॥ वा० ॥ प्रीतिमतीना कुंवर प्रत्ये रे, पद्मने राज्य ठवंत ॥ वा० ॥ २५ ॥ अवसर मांहे अग्नि समी रे, लीए दीक्षा महाराय ॥ वा० ॥ प्रीतिमती ने दोय बांधवा रे, विमलबोध मुनि थाय ॥ वा० ॥ २६ ॥ पाली चारित्रने उपना रे, अग्यारमे देवलोक ॥ वा० ॥ आरण नामे सोहामणुं रे, चारित्रनुं फल रोक ॥ वा० ॥ २७ ॥ नोग अनुत्तर नोगवे रे, सामानिक सुर मांहि ॥ वा० ॥ प्रीति परस्पर बहु धरे रे, हर्ष घणो उत्साही ॥ वा० ॥ २८ ॥ करे अठाइ मोछव घणा रे, समवसरण मांहि जाय ॥ वा० ॥ देशना सांजले नोवश्री रे, साथे सहु समवाय ॥ वा० ॥ २९ ॥ ए त्रीजा अधिकारनी रे, थइ अग्यारमी ढाल ॥ वा० ॥ ए अधिकार पूरण थयो रे, नव ठठो सुरसाल ॥ वा० ॥ ॥ ३० ॥ खिमाविजय जिनवर तणा रे, उत्तम गुणज विशाल ॥ वा० ॥ पद्मविजय कहे गावतां रे, होवे मंगलमाल ॥ वा० ॥ ३१ ॥ इति श्रीमन्नेमिराजीमत्योस्तृतीयो मनुष्यनवः सुरनवसहितः समाप्तः ॥ प्रथमखंडस्य तृतीयोऽधिकारः समाप्तः ॥ ३७६ ॥ सर्व गाथा ॥ १०७७ ॥

॥ अथ प्रथमखंडस्य चतुर्थोऽधिकारः प्रारभ्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ संजव सुख कर प्रणमीये, श्रुतदेवी श्रुतदाय ॥ हवे चोथो अधिकार मुऊ, कहेवा हर्ष न माय ॥ १ ॥ जिम जिम आगल सांजलो, तिम तिम अधिको स्वाद ॥ शंखकुमर संबंध हवे, सुणो मूकी परमाद ॥ २ ॥ निडा विकथा परहरी, शुचि थइ कर जोम ॥ नक्ति थकी जे सांजले, ते लहे श्रेयनी

कोम ॥ ३ ॥ आर्द्य ॥ निद्दा विगहा परिवाज्जएहिं, गुत्तेहिं पंजलि उडेहिं ॥ नत्तिवहु माणपुवं, उवउत्तेहिं सुणेयवं ॥ १ ॥ सातमो नव घणो सुखकरु, पुण्य अधिक विस्तार ॥ किण नगरी किण देशमां, आवी लीये अवतार ॥ ४ ॥ तीर्थंकर नाम गोत्र कर्म, करे निकाचित केम ॥ किम थानिक सेवा करे, सांजलजो धरी प्रेम ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ मुनिमन मानस हंसलो ॥ ए देशी ॥ जंबूद्वीपना जरतमां, कुरु देशे अजिराम रे ॥ जिनपदथी जनपद कह्यो, पवित्र घणुं गुणधाम रे ॥ १ ॥ सांजलो सुखकर चरित्र ए, थाये जनम पवित्र रे ॥ सां० ॥ ए आंकणी ॥ हस्तिणाउर नयरी वसे, जनम्या जिहां जिनचंदो रे ॥ शांति प्रमुख चक्री थया, इण नयरी सुखकंदो रे ॥ २ ॥ सां० ॥ नामे श्रीपेण ठे राजीयो, जेह प्रतापे ठे सुत्तो रे ॥ विकसंत कमल सूरय परे, चंद्र नहीं कर दीत्तो रे ॥ ३ ॥ सां० ॥ पटराणी तस श्रीमती, श्री सम जेहनुं रूप रे ॥ पण नवि इछे गोपीपति, एहवुं शील अनूप रे ॥ ४ ॥ सां० ॥ शंख हिम कुंद परे उजलो, चंद्रमा अति अद्भुत रे ॥ निज वदन मांहि पेसतो, स्वपनामां देखे पलुत्त रे ॥ ५ ॥ सां० ॥ श्रीमती कहे जरतारने, ते पण पूछे निमित्त रे ॥ निमित्तिउं जोइ शास्त्रने, जाखे थिर करी चित्त रे ॥ ६ ॥ सां० ॥ चंद्र पेरे पुत्रज थशे, वयरी तम करे दूर रे ॥ सकल धरा धरापति थशे, जगदानंदनो पूर रे ॥ ७ ॥ सां० ॥ दान देइ विसर्जीयो, निमित्तिउं तिणी वारो रे ॥ अपराजित सुर उपनो, तेहना गर्न मजारो रे ॥ ८ ॥ सां० ॥ पूरण मासे प्रसवीयो, पुत्र प्रजा प्रतिपाल रे ॥ दासी नाम हिरण्यका, वधावे नरपाल रे ॥ ए ॥ ॥ सां० ॥ देइ दासीने वधामणी, जनम मोछव करे राय रे ॥ रत्न चूरणना रे साथीया, मांगलिक ते वनाय रे ॥ १० ॥ सां० ॥ हल मुसल ऊंचां करे, करे रयणां ते दीपो रे ॥ कनककलश द्वारे ठवे, पद्म प्रधान समीपो रे ॥ ॥ ११ ॥ सां० ॥ कर करवाल धरी करी, नृपद्वारे नट कोम रे ॥ करे पताका अजिनवी, घर घर मनने कोम रे ॥ १२ ॥ सां० ॥ तोरण वांधे वाहिरे, राजपंथ करे शुद्ध रे ॥ नीर सुगंधे सिंचता, गुण गाये वहु वुद्ध रे ॥ १३ ॥ सां० ॥ सिंघाटक त्रिक चाचरे, राजपंथ जिहां होय रे ॥ करी कनकराशि तिहां, दान दीये सहु कोय रे ॥ १४ ॥ सां० ॥ चारक

शोधन नृप करे, करे अमारीना घोष रे ॥ दश दिन सघला देशमां, क रता बहु जन पोष रे ॥ १५ ॥ सां० ॥ सघले जिनने देहरे, पूजा विरचे जिन रायो रे ॥ दंम निवारे जूपति, दश दिन नवि कर थायो रे ॥ १६ ॥ सां० कुंअर तणे पुण्ये करी, मणि कनक ने निधानो रे ॥ सुर आवी तस घर जरे प्रगट पुण्य अमानो रे ॥ १७ ॥ सां० ॥ डुंडुहि वाजे आकाशमां, नाचे रमणीडे द्धारो रे ॥ पहेरे जूपण अति अजिनवां, बहु मूलां बहु नाख्यो रे ॥ १८ ॥ सां० ॥ पुष्फ तंबोल प्रमुख घणां, आपे ने वली लेय रे ॥ जोजन पान करे सुखे, प्रमुदित नगरनां लोय रे ॥ १९ ॥ सां० ॥ एम दश दिन सुविजूतिथी, हर्षित राय करंत रे ॥ बारमे दिन अजिधा जलुं, शंखकुमार ठवंत रे ॥ २० ॥ सां० ॥ स्नान मज्जन मंरुन वली, क्रीमा ने वली अंक रे। पंच धाव्ये पाली जतो, वधतो कुंअर निःशंक रे ॥ २१ ॥ सां० ॥ वयर मित्र घरे नित वधे, उपघात ने वली मोद रे ॥ नृप घर कुंअर वधे घणुं, उपजे सहुने विनोद रे ॥ २२ ॥ सां० ॥ लेखाचारजनी कने, मूके जणवाने राय रे ॥ बुध पण कुंअर देखीने, मनमां हर्षित थाय रे ॥ २३ ॥ सां० ॥ व्याकरण निमित्त गणित जणयो, आगम मंत्र ने तंत्र रे ॥ विद्या वेदकशास्त्र ने, अलंकार छंद यंत्र रे ॥ २४ ॥ सां० ॥ ज्योतिष गारुरु काव्य ने, नाटिक मदननां शास्त्र रे ॥ महाजारत धनुषकला, हस्ती शिक्षा वली वस्त्र रे ॥ ॥ २५ ॥ सां० ॥ धातुर्वाद ने द्यूतनी, लक्षण पुरुष ने नार रे ॥ कागरुतादिक शकुननां, अंग विद्या मन धार रे ॥ २६ ॥ सां० ॥ नाटक गीतादिक कला, पुरुषनी कला बहोंतेर रे ॥ दिन थोमामां शीखीयो, थयो बृहस्पति पेर रे ॥ ॥ २७ ॥ सां० ॥ ए चोथा अधिकारनी, पहेली ढाल रसाल रे ॥ पद्मविजय कहे पुण्यथी, होवे मंगलमाल रे ॥ २८ ॥ सां० ॥ सर्व गाथा ॥ ३२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ यौवन प्रारंज्यो हवे, पसरंतो कंदर्प ॥ तरुणी हृदय तपावतो, इश्ा ज्वाल प्रसर्प ॥ १ ॥ विमलबोध पण उपनो, गुणनिधि मंत्रिपुत ॥ मतिप्रज्ञ नाम ठे जेहनुं, जे राखे घरसूत्र ॥ २ ॥ पांशुक्रीमा साथे जण्या, यौवन पाम्या साथ ॥ बीजा पण राजपुत्रशुं, रमतो हाथोहाथ ॥ ३ ॥ पुर उद्याने जायतां, नाख्यो बोले एम ॥ हर्ष धरी उत्साहशुं, दाखे बहुविध प्रेम ॥ ४ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ देशी सजनीनी ॥ अथवा ॥ अविनाशीनी सेजनीए, रंग लागो म्हारी सजनी जी ॥ ए देशी ॥ कृष्ण कुटिल ने श्लक्ष्णतापणुं,केश मांहि रह्युं एहने जी ॥ धवल सरल गुरुतापणुं ए त्रिहुं, मनमां दीठुं जेहने ॥ १ ॥ सखीउं सुणजो जी,शंखकुंवरनुं रूप ॥स०॥ ए आंकणी ॥ अष्टमीनो जेम चंद्रमा दीसे, भाल उपम लहे एहनी जी ॥ जो नवि होत जगतमां चंदो,होत कलंकनी रेह ॥२॥ स०॥ लोचन मानुं बाण छे एहनां, भ्रूयुग धनुष आकार जी ॥ तेणे हृदय हृणे नारीनां, रतिपति करे विकार ॥ ३ ॥ स० ॥ कुसुमचाप कहे लोक अनंगनुं, ते मिथ्या सवि जाणो जी ॥ अणमिचाणां लोचन, एहनां केतकी फूल पीछाणो ॥ ४ ॥ स० ॥ कमलनी उपम लोचन जेहनां, नालां उपम नासा जी ॥ कमलनी शोभा सवि हरी लीधी, तिणे कज नीर निवासा ॥ ५ ॥ स० ॥ रक्तोत्पल संस्थित रवि किरणां, पंति परे ते शोहे जी ॥ जास कपोलने पद्मराग परे, अधर अरुण मन मोहे ॥ ६ ॥ स० ॥ उज्ज्वल दंत किरणनी श्रेणी, काम हींचोला कान जी ॥ कंबु उपम कोट छे जेहनी, हरतो म्हारी शान ॥ ७ ॥ स० ॥ घन गर्जारव जीपे एहवो, गंभीर जेहनो नाद जी ॥ पुरकमाड परे हृदयने देखी, मुझ मन उपजे विषाद ॥ ८ ॥ स० ॥ परिघ परे भुजदंड देखीने, काम दंड मुझ देवे जी ॥ आपदपुरी भोगल सरिखी,ये सहु भामणां लेवे ॥ए॥ स० ॥ पंचानन सम लंक केडनो, उदर हरे मुझ चित्त जी ॥ रोमराजिए शोभित दीसे, सुंदर अतिहि विचित्र ॥ १० ॥ स० ॥ ऐरावणशुंढा सम उरुयुग, काम नृपति घरद्वारे जी ॥ कंचन थांभा सरिखी शोभे, जंघा जास विचारे ॥ ११ ॥ स० ॥ कर पद तलीयां पद्मराग वर, पंक्ति हृदयने रंजे जी ॥ नख राता शोणित परे दीसे, म्हारा हृदयने भंजे ॥ १२ ॥ स० ॥ एक अवयव सम बीजे ठामे, दुर्लभ लहीये भवने जी ॥ तो समुदाय सीरी ए देखी, विंधे अनंग मुझ मनने ॥ १३ ॥ स० ॥ त्रिदश अंगना एम गुण गावे, तेम नगरीनी नारी जी ॥ नित नित एम कुंअरने देखी, पामे आणंद भारी ॥ १४ ॥ स० ॥ पूर्वं पुण्यथी विविध प्रकारे, कुंअर करे विलास जी ॥ एक दिन राय सभामां बेठो, करतो न्याय तपास ॥ १५ ॥ स० ॥ मंत्री सामंत सहलशुं मिलीयो, तिणे अवसर तिहां द्वारे जी ॥ आकुल लोक बहु मुसदीनां, आवी एम

पुकारे ॥ १६ ॥ साहिब सुणजो जी ॥ पल्लीपतिनुं कूट, साहिब सुणजो जी ॥ ए आंकणी छे ॥ सुधा प्रजाना रक्षक थाउं, तव पूछे राय केहने जी ॥ तेह कहे तुज देशनी सीमा, पर्यंते छे जेहने ॥ १७ ॥ सा० ॥ विशाल- श्रृंग नामे छे पर्वत, हेठल वहे बहु नदीउं जी ॥ पूर्व अपर विभागनी माझि- म, न पडे तिणे जन खदीयो ॥ १८ ॥ सा० ॥ नामे समरकेतु तिहां पल्ली- पति रहे छे अति बलीयो जी ॥ तेह डुर्गना बलथी सबले, देश देशमां हलीयो ॥ १९ ॥ सा० ॥ लूंटे सहु जनने डुःख देवे, अमे पण तेहनी पांते जी ॥ पण कण जांम सवि हरी लीधां, आव्या तुम्ह उपांते ॥ २० ॥ सा० ॥ ता- हरुं शरण करीने आव्या, हवे अम्हने तुम्हे राखो जी ॥ ते शत्रुनी जीत करीने, जगमां नामो साखो ॥ २१ ॥ सा० ॥ ते सांजलीने क्रोध चड्यो तव, देवराये नृप ढका जी ॥ सामंत प्रमुख सवि थया साथे, जेह पराक्रम पक्का ॥ २२ ॥ सा० ॥ तव विनये करी पाये प्रणमी, शंखकुमर एम जापे जी ॥ न घटे स्वामी तुम्हने चढवुं, पल्लीपतिने पासे ॥ २३ ॥ सा० ॥ जंबुक उपर सिंह न गाजे, पंकज उपर हाथी जी ॥ ते कारण परसाद करीने, आपो मु- जने साथी ॥ २४ ॥ सा० ॥ दास परे बांधीने लावुं, तुम्ह पसायथी स्वामी जी ॥ तव कहे सर्वे ए युक्त विनये, शंखकुमर शिर नामी ॥ २५ ॥ सा० ॥ रवि तणां जे किरण अछे ते, अंधकारने टाले जी ॥ नरपतिए जुगतुं ते जाणी, करी आपा तनकाले ॥ २६ ॥ सा० ॥ एम कहीने शंखकुमर तव, नीकलीयो मन- रंगे जी ॥ वात सुणी पल्लीपति हाल्यो, कपट कूटने जंगे ॥ २७ ॥ सा० ॥ डुर्ग शून्य मूकी नीकलीयो, किहांइक जइ रह्यो छानो जी ॥ ते वात कुमरे पण जाणी, हेरु मुखथी सुन शानो ॥ २८ ॥ सा० ॥ हेरु कहे सुण स्वामी शूनो, म्हेली डुर्ग ते नाठो जी ॥ मांहि पेसीने थाउं बलीया, जेम खेड कूडे नाठो ॥ २९ ॥ सा० ॥ औत्पत्तिकी आदि चउ बुद्धि, सागर शंखकुमारो जी ॥ कहे हसीने पहवी वाणी ए, कूड कपट आचारो ॥ ३० ॥ सा० ॥ ए कपटे बहु देशने लूंटे, पहनी वात न जाणो जी ॥ पण सघलुं साहं निपजशे, देखो एह कमाणो ॥ ३१ ॥ सा० ॥ कोइक ठाकोर नवो निपजावी, आ- डंबर बहु कीधो जी ॥ तेहने डुर्ग मांहि मोकलीयो, राजचिह्न सहु दीधो ॥ ॥ ३२ ॥ सा० ॥ ते पण ध्वज फरकावतो मठोटी, तूर वजावतो पेठो जी ॥ पोडवार देहने मोंद, थिर थइ डुर्गमां बेठो ॥ ३३ ॥ सा० ॥ शंखकुमार

कोइ महोटा वनने, जइ निकुंजे वेगो जी ॥ कोइ न जाणे तिम ते ठाने, बहु बुद्धे करी जेठो ॥ ३४ ॥ सा० ॥ पल्लीपति तव जाणे एहवुं, डुर्गमां पेगे राय जी ॥ आवी चिहुं दिशे वींटी लीधो, जाणे हवे कहीं जाय ॥ ३५ ॥ सा० ॥ मनमां चिंते तव ते एहवुं, एटले आव्यो कुमार जी ॥ सैन्य तणो सायर सेइ साथे, बुद्धि तणो भंमार ॥ ३६ ॥ सा० ॥ जेम महोटो कोइ कोट होय तेम, डुर्ग चोरने वींट्या जी ॥ डुर्गद्वार दीधां मन चिंते, कुमरे दीसे वींट्यां ॥ ३७ ॥ सा० ॥ हवे नासीने कहो किहां जाइये, पल्लीपति वि-मासे जी ॥ तव कूहाडो खंध धरीने, आवे कुंअरनी पासे ॥ ३८ ॥ सा० ॥ जेम तुमने मन आवे तेम कर, हुं तुं तादृशे दास जी ॥ कूम कपट अम्हे करी जाणुं, पण नहीं राजविन्यास ॥ ३९ ॥ सा० ॥ ते तुम्हे कूम कप-टने जीत्यां, ल्यो सघलुं धन माहरुं जी ॥ मुऊ अपराध खमो तुम्हे सवलो, बिरुद दयानुं ताहरुं ॥ ४० ॥ सा० ॥ एहवां वचन सुणीने कुमरे, धण कण रतन ते लीधां जी ॥ जेहना जे जे माल हुंता ते, संजारीने दीधा ॥ ४१ ॥ सा० ॥ शेष हतुं ते रत्नुं भंमारे, पल्लीपति करयो आगे जी ॥ राय तणे प्र-णिपातने अर्थे, चाल्यो नगरने मागे ॥ ४२ ॥ सा० ॥ ए चोथा अधिकारनी भाखी, बीजी ढाल रसालो जी ॥ पद्मविजय कहे पुण्य तणे वश, पामे मंगलमालो ॥ ४३ ॥ सा० ॥ सर्व गाथा ॥ ८० ॥

॥ दोहा ॥

॥ अटवी नांहि आवीया, अनुक्रमे जेहवे तेह ॥ तव सूरय मन चिंत-वे, आवी अधिको खेह ॥ १ ॥ अजिनय सूरज ऊगीयो, शंखकुमर गुणधाम ॥ नाठो बीहीतो बापडो, मानुं द्वीपांतर ठाम ॥ २ ॥ पथिक गमन निवारतो, पसरे अति अंधकार ॥ रजनी जेह अनर्थनी, माय कही निरधार ॥ ३ ॥ आपमते ऊगे पवे, होवे पदने राग ॥ सूरय सत्पुरुष तणो, एहज अधिक सोजाग ॥ ४ ॥ यतः ॥ उदयंमिवि अत्थमणे, विध-रइ रत्तत्तणं दिणसनाहो ॥ रिद्धिसुआवइसुअ, सुपुरिसा अप्पुण सप्पुरिसा ॥ १ ॥ साय समाजी कर धरी, कुलपनी परे एह ॥ पात्रशुद्धि कारण हवे, प-श्चिम समुद्रमां देह ॥ ५ ॥ सूर्यराय जब आथम्यो, घोर थरे तम तान ॥ पग-सुं हृद्य भ्रमर परे, बंदी जन विधान ॥ ६ ॥ कोशिककुल बोलवां तदा, पंखी गयां निज थान ॥ पंथ वह तस्कर तणो, रात थकी तिहां रान ॥ ७ ॥ पर-

दारिक हरख्या घणुं, रजनी रमणी तत्र ॥ करे विलास तम अंधने, किश्युं अयुक्त ते अत्र ॥ ८ ॥ नलिनी स्त्री तव विरहथी, सूरय पतिना तेह ॥ मिचाइ मानुं रोवती, एवो पति सनेह ॥ ए॥ शंखकुमार खमा करे, तिहां आवास उत्तंग ॥ पलंगे बेसी कहे, मंत्रिसुत मनरंग ॥ १० ॥ जिन शासनमां कुशल तुं, तस अनुसारे जेह ॥ कौतुक सहित सुणाव तुं, कोइ कथा होय तेह ॥ ११ ॥ कहे मंत्री सुणो स्वामी जी, तुम्ह आगल अम्ह बुद्धि ॥ शी गणती पण सांजलो, एक कथा सुविशुद्ध ॥ १२ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ राणी कहे राजा प्रते, जरी दीर्घ उसासा ॥ स्वामी तुम्ह सुपसायथी, संपूरण आशा ॥ ए देशी ॥ जरत क्षेत्र मांहे अछे, जयपुर नामे नयरी ॥ तेह नगरने राजीये, जीत्या सहु वयरी ॥ १ ॥ सांजलो साहिबा माहरी, एक वात सनूरी ॥ ए आंकणी ॥ चंद्र जानु शिव कृष्ण ए, चार मित्र ते रूमा ॥ प्रीति घणी लखमी घणी, मनमां नहीं कूमा ॥ २ ॥ ॥ सां० ॥ एक दिन चंद्र ते चिंतवे, मनमां एम आणी ॥ बाप तणी लखमी नवि, जोगववी वखाणी ॥ ३ ॥ सां० ॥ पीवां थण माता तणां, तेम बापनी ऋद्धि ॥ जोगववी बाल कालमां, पठे हास्य ते सिद्धि ॥ ४ ॥ सां० ॥ निज बांहे अर्जी करी, ऋद्धि विलसे जेह ॥ तेह प्रशंसे सहु जना, सुख पामे देह ॥ ५ ॥ सां० ॥ एम चिंती कहे मित्रने, तस मन पण जाव्युं ॥ संजलावे निज तातने, तस मन नवि आव्युं ॥ ६ ॥ सां० ॥ संपदा बहु घरमां अछे, जोगवो तुम्हे सार ॥ देशांतरमां आपदा, लहीये निरधार ॥ ७ ॥ सां० ॥ जलव्यापार न तुम्हे लहो, सुखमां नित्य रहेता ॥ इत्यादिक ताते कह्युं, पण साहसुं कहेता ॥ ८ ॥ सां० ॥ थाके नवि कोइ वचनथी, तव तेहना तात ॥ जहाज एकेकुं करी दीये, चारेनां चार जात ॥ ए ॥ सां० ॥ करियाणां तिहां बहु परे, जरीयां उल्लासे ॥ चढवानो दिन नवि गणे, वली मुहूरते खास ॥ १० ॥ सां० ॥ तव सांजले तिहां अति बूरा, रासजरव तेह ॥ वामण ने नागा मले, जगुआं वस्त्र जेह ॥ ॥ ११ ॥ सां० ॥ लूला हाथ पगे करी, काणा ने अंध ॥ काष्टजार तिहां आवता, वली आवे डुर्गंध ॥ १२ ॥ सां० ॥ वाय वाये अति आकरा, कांकरा बहु उडे ॥ थइ अकाले वृष्टि ते, सहु बोले ऊंडे

॥ १३ ॥ सां० ॥ लागुं पलेवडुं एहवे, वढे वहु मांजार ॥ सवि अपशुकन पणी परे, थाये तिण वार ॥ १४ ॥ सां० ॥ तव तस सज्जन कुटुंब मली, मित्र मात ने तात ॥ तुम्हे प्रवहणमां नवि चडो, एम कहे सहु वात ॥ १५ ॥ सां० ॥ चंड कहे तव ऊटकीने, शुं काम तुम्हारे ॥ सुख दुःख जेहवुं आवशे, ते सहेवुं अमारे ॥ १६ ॥ सां० ॥ सुख दुःख घर पण पामीये, कस्यां कर्म न जाय ॥ शकुनाशकुन विचारणा, शी करवी ताय ॥ १७ ॥ सां० ॥ चिंता करतां मानवी, पामे दुःख अपार ॥ जनमारो चिंता करे, पण नवि लहे पार ॥ १८ ॥ सां० ॥ चिंता न करो तातजी, थाणहार ते थाशे ॥ तिणे अम्हे चडशुं [illegible] कुण अम्ह लेइ जाशे ॥ १९ ॥ सां० ॥ जो उपसर्ग थशे घणो, तो अम्हे पण खमशुं ॥ वयरीनां वाहण हणी, अम्हे आगल चढशुं ॥ २० ॥ सां० ॥ एम चोथा अधिकारनी, त्रीजी ढाल ते सारी ॥ पद्मविजय कहे [illegible] थाये कष्ट ते जारी ॥ २१ ॥ सां० ॥ सर्व गाथा ॥ ११३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सज्जन शकुन दोय वारता, पण ते चंडकुमार ॥ [illegible] रशुं, दीये आणा तिण वार ॥ १ ॥ वार्युं न करे [illegible] मंदोदरी वारे घणुं, पण रावण मत्तक [illegible] रहे, आव्यो उदधि उपकंठ ॥ चार मित्रशुं [illegible]

॥ ढाल [illegible] ॥

॥ हांरे ढोला रहो तो हुं रांधुं [illegible] ढोला मारु हे, आज हजारी ढोला [illegible] रे, साथे चार मित्र संयुक्त ॥ [illegible] तुम्हे कर्मनी, कांइ कीधां [illegible] सने देखतां, बहु [illegible] वेगशुं, कांइ वायु [illegible] नवि अनुक्रमे चार ते [illegible] नि- जे मेघ अकाल ॥ [illegible] हो, तिण ताल ॥ [illegible] मां- सहेर पद [illegible] नग-

एम ॥ सु० ॥ ४ ॥ वा० ॥ प्रवहण ने जनचित्त वली, कांइ कोलत्रा लाग्यां साथ ॥ सु० ॥ मेघघटा चढी तेणी परे, नवि सूके हाथोहाथ ॥ सु० ॥ ॥ ५ ॥ वा० ॥ अशुभ उदय तिहां उछल्यो, साथे आक्रंद समग्ग ॥ सु० ॥ सढ सघला ऊडी गया, नवि सूके कोइने मग्ग ॥ सु० ॥ ६ ॥ वा० ॥ भांग्यां प्रवहण चार ते, कांइ बूड्यां सघलां लोक ॥ सु० ॥ जांम गयां सवि सायरे, कांइ उपनो सहुने शोक ॥ सु० ॥ ७ ॥ वा० ॥ अपजशथी बीहीना घणुं, मानुं फलक मह्यां तिणे चार ॥ सु० ॥ अन्य अन्य द्वीपे तदा, खेपव्या ते समुद्रे तिवार ॥ सु० ॥ ८ ॥ वा० ॥ सार्थवाह सुत चंद्र जे, पामी कांठे करे विलाप ॥ सु० ॥ दैववशे लही आपदा, मुक आवी पहोतुं पाप ॥ सु० ॥ ए ॥ वा० ॥ द्रव्य गयुं सवि माहरुं, में वचन न मान्युं कोय ॥ सु० ॥ मिथ्या आग्रहवंतने, सघला उपसर्ग ते होय ॥ सु० ॥ १० ॥ वा० ॥ सजन शकुन निमित्तिए, हुं वार्यो न रह्यो तास ॥ सु० ॥ द्रव्यपिपासा अति करी, फल तेहनुं ए डुःखराश ॥ सु० ॥ ११ ॥ वा० ॥ मुख हवे केहने देखाडशुं, एम करी मनमां अभिप्राय ॥ सु० ॥ वस्त्रपाश बांधी गले, मरवाने ते सज्ज थाय ॥ सु० ॥ १२ ॥ वा० ॥ एणी अवसरे कोइ ब्राह्मणे, तुरीए करी छेद्यो पाश ॥ सु० ॥ कहे ते अकार्य तुं शुं करे, एम मरतां किम सुखवास ॥ सु० ॥ ॥ १३ ॥ वा० ॥ जो नवि जीववुं ताहरे, तो सांभल माहरी वात ॥ सु० ॥ ढुकडो एक गिरि अछे, वांछित आपे सुखशात ॥ सु० ॥ १४ ॥ वा० ॥ तिहां जइने प्राण छंडजे, जेम पामे इछित गाम ॥ सु० ॥ एम सुणी चंद्र तिहां गयो, दीये फांसो मरवा काम ॥ सु० ॥ १५ ॥ वा० ॥ मा साहस कर एम कहे, त्रण वार सुणे ते कान ॥ सु० ॥ चोय फेर जोयुं खरुं, पण दीठुं नहीं को थान ॥ सु० ॥ १६ ॥ वा० ॥ फरी फांसी दीधी तेणे, वली तिमहीज कहे बीजी वार ॥ सु० ॥ वली जोयुं तिणे खांतशुं, पण नवि लह्यो ॥ने किणे गार ॥ सु० ॥ १७ ॥ वा० ॥ त्रीजी वार निषेधीयो, तव जोयुं मन दिन चूंप ॥ सु० ॥ वृक्ष अंतर रह्या साधुजी, दीठुं तिहां अद्भुत रूप ॥ अति चूं० ॥ वा० ॥ तिहां जइ कहे सुणो स्वामी जी, हुं मंदभाग्य भगवंत ॥ १८ ॥ सारण न आवे किणी परे, तव भाखे करुणावंत ॥ सु० ॥ १ए ॥ आवता, वलधिमरणथी शुं निपजे, जीवतो देखे भद्र ॥ सु० ॥ अविधिमरण करा, कांकरा क्षो एणी परे में सद्र ॥ सु० ॥ २० ॥ वा० ॥ ए चोथा

अधिकारनी, कही चोथी ढाल रसाल ॥ सु० ॥ पद्म कहे मुनिसंगथी, लहेशे ए मंगलमाल ॥ सु० ॥ २१ ॥ वा० ॥ सर्व गाथा ॥ १३७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अविधिमरण नवि कीजीये, अविधिमरण दुःखदाय ॥ अविधिमरण कीधां घणां, पण नवि लहे शिवठाय ॥ १ ॥ नगर निगोद मांहे जम्यो, काल अनंतानंत ॥ पण विधिमरण न को लह्युं, जिणथी लहीये अंत ॥ ॥ २ ॥ विधिमरणे पाम्या घणा, स्वर्ग तथा अपवर्ग ॥ ब्रोजन उचित अविधिमरण, तेहथी केम होय सर्ग ॥ ३ ॥ जो जीवतो होय प्राणीयो, तो लहे कोमि कल्याण ॥ इहां दृष्टांत ते माहरो, निश्चय करीने जाण ॥ ४ ॥ चंद्र पूछे तव मुनि प्रते, ते कहो तुमची वात ॥ सावधान थइ सांजलो, मुनि कहे निज अवदात ॥ ५ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ शीरोहीरो शालु हो, के उपर जोधपुरी ॥ ए देशी ॥ मंगलपुर नयरे हो, के चंडसेन राजा ॥ जानु नाम अमात्य ते हो, के गुण थी अति ताजा ॥ तस नाम सरस्वती हो, के नारी विख्याता ॥ रूपवंती अतिहि हो, के शास्त्रे व्याख्याता ॥ १ ॥ चक्रवाक तणी परे हो, के प्रीति ते जोर बनी ॥ देश देश प्रसिद्धि हो, के थइ ते अति घणी ॥ एक एक विना विहुं हो, के रही ते नवि शके ॥ एकनी वात विरुइ हो, के सुणी प्राण नवि टके ॥ २ ॥ एक दिन सरस्वती स्त्री हो, के सूती खाट मांहि ॥ रोती सहसा तव हो, के उठी दुःख त्यांहि ॥ पूछे तव जानु हो, के ए शुं तुज थयुं ॥ तव जाखे नारी हो, के ए तो सहज जयुं ॥ ३ ॥ पूछे वली हठथी हो, के कहे हवे नारी खरुं ॥ में सुपनमां दीठुं हो, के एहवुं दुःखकरु ॥ रमतो में दीठो हो, के बीजी नारी समो ॥ तुजने ते कारण हो, के मुजने नवि गम्यो ॥ ४ ॥ चिंते मन जानु हो, के सुपने खेद लह्यो ॥ तो प्रत्यक्ष देखे हो, के प्राण विछोह कह्यो ॥ ते कारण बीजी हो, के नारी ते नवि परणुं ॥ जो परणुं तो पामे हो, के सरस्वती दुःख घणुं ॥ ५ ॥ एम नियम कस्यो तिणे हो, के चाल्यो नवि चले ॥ कहे बहु जन परणो हो, के पण नवि मन मले ॥ ए थइ प्रसिद्धि हो, के राजाने द्वारे ॥ ते सांजली राजा हो, के कटके जाय त्यारे ॥ ६ ॥ जानुने मूकी हो, के नग-

रमां अति वेगे ॥ झूरे जइ राजा हो, के चिंते अति वेगे ॥ भानु सरस्वतीनी हो, के प्रीति ते परखवा ॥ कांय कारज जूतुं हो, के कहावे निरखवा ॥ ७ ॥ आवो तुम्हे भानु हो, के कारज अम्ह घणुं ॥ भानु तव आवे हो, के करी ते शीघ्रपणुं ॥ कूडो लखी पत्रज हो, के राजा मोकले ॥ मांहि लख्युं एवुं हो, के भानुने यम गले ॥ ८ ॥ ते सुणी सरस्वतीना हो, के हृदयनो स्फोट थयो ॥ ततकाल नारीनो हो, के प्राणवियोग थयो ॥ तेणे समे राजा हो, के वात ते शीघ्र सुणे ॥ निज आतम निंदे हो, के मुखथी एम भणे ॥ ए ॥ में कीध अकारज हो, के स्त्रीहत्या आवी ॥ थाइश किहां जइने हो, के हवे हुं निष्पावी ॥ सुणी पीयुतुं मरण ते हो ॥ के नारीए प्राण तज्या ॥ नरके जावाने हो, के हवे अम्हे शीघ्र सज्या ॥ १० ॥ भानु पण सुणीने हो, के जीवशे केणी परे ॥ राजा आवे तव हो, के भानु कने सुपरे ॥ साहामा किम आव्या हो, के सेवकने स्वामी ॥ ए अनुचित दीसे हो, के एम कहे शिर नामी ॥ ॥ ११ ॥ कांइ कारणे आव्या हो, के अम्हे ताहरी पासे ॥ वस्तु एक मागण हो, के आव्या उल्लासे ॥ तव भाखे भानु हो, के एम केम कीजीये ॥ तुज काजे जीवित हो, के स्वामी दीजीये ॥ १२ ॥ भाखो तुम्हे जेवुं हो, के काम ते मुज भणी ॥ तस वात कहे तव हो, के जे थइ नारी तणी ॥ अम्हे कहीये तुजने हो, के तें मरवुं नांहीं ॥ ए पातक कीधुं हो, के अम्हे महोटुं ताहीं ॥ १३ ॥ ते सांभली मनमां हो, के खेद अपार लहे ॥ ते भानु एणी परे हो, के नृपतिने कहे ॥ मुज प्राण निठुर छे हो, के केम नवि देह जहे ॥ मुज प्राणप्रिया ते हो, के एणी परे मरण लहे ॥ १४ ॥ स्वामी द्यो आण हो, के जाउं मुज घरे ॥ तव दीधी आणा हो, के आव्यो शीघ्र परे ॥ घर मा एस राख्यां हो के, पहेलां अस्थि महीं ॥ जइ तेहने पूजे हो, के मनम उम्महीं ॥ १५ ॥ तस गुण संभारी हो के, नित नित रुदन करे ॥ नि करे विलापा हो, के नारीनुं ध्यान धरे ॥ क्षण क्षण करे इछा हो, के ए मरव तणी ॥ पण रायनुं वचन ते हो, के नवि शके अवगणी ॥ १६ ॥ एम थ संवत्सर हो, के तेहने वही गया ॥ हवे एक दिन चिंते हो, के नारीना मर थया ॥ जव मरण थशे मुज हो, के तव ए अस्थि प्रते ॥ कुण नाखशे गंग हो, के माहरे प्राण जते ॥ १७ ॥ तो हुं जीवंतां हो, के नाखुं गंग मांहि

नृप पूठ्यां विण ते हो, के नीकल्यो उद्यांहि ॥ गंगाने कांठे हो, के पहोतो अनुकरमे ॥ वाणारसी नगरी हो, के आव्यो तेह समे ॥ १८ ॥ सुर सरिता कांठे हो, के विप्रने दान दीये ॥ तिहां करे विलापा हो, के गुण संजारी हिये ॥ हवे नारीनां हाफकां हो, के ते पण जाय खरां ॥ एहने आधारे हो, के हजी लगी प्राण धस्या ॥ १९ ॥ न खमाये विरहो हो, के म्हें ए कांता तणो ॥ कण कणमां सांजरे हो, के प्रेम ते अतिहि घणो ॥ केम मलशे नारी हो, के ए मुजने हवे ॥ मुज प्राणआधारा हो, के जस गुण कुण मवे ॥ २० ॥ मुज हृदय ते फाटे हो, के ए गुण संजारी ॥ अवगुण न समाइ हो, के एहवी मुज नारी ॥ चोथे अधिकारे हो, के पांचमी ढाल जली ॥ कहे पद्मविजय सुणो हो, के आगल वात वली ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ १६३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एम विलाप करतां थका, इण अवसर तिहां एक ॥ आवी राय तणी धुआ, सरस्वती नाम विवेक ॥ १ ॥ तिहां कुतूहल जोती थकी, आवी तेहनी पास ॥ पूठे तेह कुमारिका, दुःख जर देखी तास ॥ २ ॥ तुज सरिखुं दुःख केहने, में नवि दीठुं क्यांहि ॥ केम तुं रुदन करे घणुं, तेह कहे मुज आंहीं ॥ ३ ॥ पुण्यहीन हुं पापीयो, शुं पूठे मुज वात ॥ वली आग्रहे पूठे थके, कहे सघलो अवदात ॥ ४ ॥ ते सुणी ऊहापोह थयो, जातिसमरण पाम ॥ आवरण खस्यां ते जातिनां, गंगातीरने गाम ॥ ५ ॥

॥ ढाल ठट्ठी ॥

॥ नानो के नानो नाहलो रे ॥ ए देशी ॥ मूर्छा लइ धरणी ढली रे, सखीउं वींझीनी ताम ॥ लागी मोहनी रे ॥ आवी रायने तव कह्युं रे, नृप आवे तिणे ठाम ॥ ला० ॥ १ ॥ शीतल विंजे वायरा रे, चंदन चर्चे अंग ॥ ॥ ला० ॥ तव चेतन वल्युं तेहने रे, बेठी थइ मनरंग ॥ ला० ॥ २ ॥ राय पूठे पुत्री जणी रे, मूर्छानो विरतंत ॥ ला० ॥ कहे पुत्री सुणो तात जी रे, कहीये ए जिम हुंत ॥ ला० ॥ ३ ॥ पूरव जवनो मुज पति रे, हुं हती सरस्वती नाम ॥ ला० ॥ ए घणो मुजने वालहो रे, हुं पण जीवित ठाम ॥ ॥ ला० ॥ ४ ॥ वात कही बहु प्रत्ययी रे, मानी नृपति तेह ॥ ला० ॥ बहु हरखे परणावतो रे, निज पुत्री गुणगेह ॥ ला० ॥ ५ ॥ निज पंचत्वथी पूठीयुं रे, कहे सघलो विरतंत ॥ ला० ॥ मनमां चिंते सरस्वती रे, जुउ ए

महारो कंत ॥ सा० ॥ ६ ॥ मुऊ अर्थे फुःख बहु सह्युं रे, जुर्ज ए कर्म विचित्त ॥ सा० ॥ पूरवथी वली प्रीतमी रे, अधिकी हुइ सुविदित्त ॥ सा० ॥ ॥ ७ ॥ सुख जोगवे तिहां दंपती रे, दिन दिन अधिके नेह ॥ सा० ॥ राज्य देइ हवे जानुनें रे, पाम्यो पंचत्व तेह ॥ सा० ॥ ८ ॥ जानु ने हवे सरस्वती रे, जोगवे जोग रसाल ॥ सा० ॥ एक दिन सरस्वती अंगमां रे, उपनो गद असराल ॥ सा० ॥ ९ ॥ दाघज्वर अति आकरो रे, देखाडे बहु वेय ॥ सा० ॥ नरपति फव्य आपे घणुं रे, पण नवि टाले सद्य ॥ सा० ॥ १० ॥ वेद्ये तजी ते नारीने रे, नृप मन चिंता थाय ॥ सा० ॥ चिंतवे जीवतां पहने रे, मरण जो महारुं थाय ॥ सा० ॥ ११ ॥ तो फुःख देखुं हुं नहीं रे, विरह ते फुःख दातार ॥ सा० ॥ क्षण एक हुं नवि रही शकुं रे, ए मुऊ प्राणआधार ॥ सा० ॥ १२ ॥ हवे मुऊ ऊंपा रुयमो रे, हवे जीवे शुं होय ॥ सा० ॥ प्राणप्रिया मरवा पमी रे, ए सम अवर न कोय ॥ सा० ॥ १३ ॥ सातमे माले ते चढ्यो रे, करवा जीवितत्याग ॥ सा० ॥ चारण मुनिवर तिणे समे रे, दीठो ते महाजाग ॥ सा० ॥ १४ ॥ मुनि कहे तुं शुं करे रे, आप तणो वध एम ॥ सा० ॥ बालजने जे आचर्युं रे, ते करीये कहो केम ॥ सा० ॥ १५ ॥ अविधि मुआने सुख नहीं रे, परजव पण होय फुःख ॥ सा० ॥ तव कहे मुनिवर सांजलो रे, मुऊने नहीं इहां सुख ॥ ॥ सा० ॥ १६ ॥ शुं करुं स्वामी जी ते कहो रे, नवि सहेवाये वियोग ॥ सा० ॥ प्राण धरी हुं नवि शकुं रे, उपनो सरस्वती रोग ॥ सा० ॥ १७ ॥ तव कहे मुनिवर एणी परे रे, धर्म करो तुम्हे राय ॥ सा० ॥ धर्म सकल फुःख त्रायको रे, बाल युवा वृद्ध थाय ॥ सा० ॥ १८ ॥ देव ते अरिहा आदरो रे, रागद्वेषादिक मुत्त ॥ सा० ॥ पंच महाव्रत पालतां रे, गुरु सुसाधु उत्त ॥ सा० ॥ १९ ॥ यतः ॥ रागाइ दोस रहिर्ज, चउत्तीसाइसय संजुर्ज धीरो ॥ परउवगारं मिरउं, देवो महएरिसो हवइ ॥ १ ॥ अवद्यमुक्ते पथि यः प्रवर्त्तते, प्रवर्त्तयत्यन्यजनं च निःस्पृहः ॥ स एव सेव्यः स्वहितैषिणा गुरुः स्वयं तरन् तारयितुं क्षमः परम् ॥ २ ॥ तत्त्व महो जिन जाखीयो रे, पापनां नाण उदार ॥ सा० ॥ विरति करो तुम्हे तेहनी रे, एणी परे धर्म उदार ॥ ॥ सा० ॥ २० ॥ धर्म ते सार संसार ठे रे, जग आधार ए धर्म ॥ सा० ॥ सद्गति पहोंचाडे जलो रे, बांधे नवि ते कर्म ॥ सा० ॥ २१ ॥ एणी परे

उपदेश सांजली रे, अंगीकरे तेह राय ॥ सा० ॥ सरस्वती पासे लावीयो [illegible]
भूपति ते ऋषिराय ॥ सा० ॥ २२ ॥ वंदना करी ते जावथी रे, देशविरति क[illegible]
अंग ॥ सा० ॥ पाप विलय गयां तेहनां रे, रोग गयो मुनिसंग ॥ सा० [illegible]
॥ २३ ॥ राज्यलीरी एम जोगवे रे, वृद्ध थया जानु राय ॥ सा० ॥ राय राणी
मन चिंतवे रे, दीक्षा लीउं जिनराय ॥ सा० ॥ २४ ॥ पुत्रने राज्य थापी
करी रे, सुगुरु तणे पायमूल ॥ सा० ॥ दीक्षा आदरे राजीयो रे, पाले व्रत
अनुकूल ॥ सा० ॥ २५ ॥ साधवी पासे सरस्वती रे, लीये दीक्षा शुज योग ॥
सा० ॥ गीतारथ जानु थयो रे, देइ गुरु उपयोग ॥ सा० ॥ २६ ॥ आणा
एकाकी तणी रे, यद्यपि शास्त्रे निषिद्ध ॥ सा० ॥ तोपण शास्त्र जाणी करी रे,
तेहने आणा दीध ॥ सा० ॥ २७ ॥ ते जानु हुं जाणजे रे, आ वेगो तुज
पास ॥ सा० ॥ मरण लहंत नृपवच सुणी रे, तो किम जिन धर्म वास ॥
सा० ॥ २८ ॥ राज्य पालत कुण एणी परे रे, श्रेय परंपरा एम ॥ सा० ॥
ते कारण तुं धर्मने रे, कर वली कांइक नेम ॥ सा० ॥ २९ ॥ बाल मरण
करी वेगलुं रे, पामे जेहथी श्रेय ॥ सा० ॥ चंड कहे नव मुनि प्रते रे, थो
मुज जेह आदेय ॥ सा० ॥ ३० ॥ ए चोथा अधिकारनी रे, नारी ढाल [illegible]
हास ॥ सा० ॥ पद्मविजय कहे जिन तणा रे, धर्मथी मंगलमाल ॥ सा० ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चंड कहे सुणो स्वामी जी, अनवस्थित चित्त मुज ॥ मित्र वियोगी
[illegible]न विरहो, नाखुं विनवे तुज ॥ १ ॥ ते कारण किरपा करी, करी आपो मुज
[illegible]ह ॥ स्वस्थ चित्त जेम माहरु, पामे धर्म सनेह ॥ २ ॥ वली विशेष अवसर
[illegible]ही, आदरशु प्रनमार ॥ मुनिवर पर्या पर कहे, नामा तुम्हे नवकार ॥ ३ ॥

॥ ढाल मातमी ॥

॥ देशी चोपाइ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

भराय, पण कोमो मध्य खाली थाय ॥ इवइ मंगल कहेतां तेह, ऊणो पण पूरो थाय एह ॥ ५ ॥ बीजे पण बहु ग्रंथे सुण्युं, गुरुपरंपराए पण सुण्युं ॥ एक नवकार कहे शुज जाव, सागर सातनुं फेडे पाव ॥ ६ ॥ जो नमो अरिहंताणं गणे, पाप सागर पचासनुं हणे ॥ जो संपूर्ण गणे नवकार, पांचसें सागर पाप निवार ॥ ७ ॥ यतः ॥ नवकार इक्क अस्कर, पावं फेडेइ सत्तअयराइं ॥ पन्नासं च पयणं, सागर पणसय समग्गेणं ॥ १ ॥ आठ कोमी ने वली लख आठ, आठ सहस अठ सत वली आठ ॥ गणतां शाश्वत थानक लहे, ए अधिकार जिनेश्वर कहे ॥ ८ ॥ यतः ॥ अठवय अठसया, अठसहस अठ लक्ख कोमीर्ज ॥ जो गुणइ जत्तिजुत्तो, सो पावइ सासयं ठाणं ॥ २ ॥ शिवकुमार ने वली श्रीमती, श्रीजिनदास श्रावक शुजमति ॥ एहनी आ जव पूगी आश, परजव पण नवि थाय निराश ॥ ए ॥ चंरुपिंगल हुंरुक विहुं चोर, जे करता नित्य पाप अघोर ॥ ते पण सुरपद पाम्या वही, महिमा ए नवकारनो सही ॥ १० ॥ श्रीश्रीपाल नरिंद वली जुर्ज, ए नवपदथी नीरोगी हुर्ज ॥ एम शास्त्रे कह्यां बहु विरतंत, ते कहेतां नवि आवे अंत ॥ ११ ॥ जंबुद्वीप अनाहत देव, पूरव जव करी नवपद सेव ॥ ए सवि श्रुतखंध मांहि रह्यो, महिमा नवि जाये कोइ कह्यो ॥ १२ ॥ एहज चौद पूरवनो सार, ग्रंथे जाख्यो श्रीनवकार ॥ चौद पूरवना अरथ जे कह्या, पहेला पदमां अरिहंत लह्या ॥ १३ ॥ ते अरिहंत पण साधे सिद्ध, बीजा पदमां तेह प्रसिद्ध ॥ सूत्र तणा करता गणधरा, ते त्रीजे पदे सूरिवरा ॥ १४ ॥ सूत्र तणा कह्या पाठक जेह, चोथा पदमां जाख्या तेह ॥ सूत्र मांहि कह्यो जे निरुपाध, मारग साधे तेहज साध ॥ १५ ॥ तिणे नवकार पूरवनो सार, जगत जीव सहुने हितकार ॥ चौदपूरवी गरढा थया, सूत्रारथ उपयोगी न जया ॥ १६ ॥ अंतअवस्थाए श्रीनवकार, तेहने पण होवे आधार ॥ ए नवकार समो नहीं मंत्र, हेठे सहु मणिमंत्र ने यंत्र ॥ १७ ॥ खलने बोलण योग्य शुं नहीं, भूख्यो शुं नवि खाये अही ॥ व्यापारीने नहीं परदेश, जव्य अजेय किस्युं सुविशेष ॥ १८ ॥ शी वस्तु जगमां ठे जेह, जे नवपद साधे नहीं तेह ॥ ऋद्धि वृद्धि दीये आ जव घणी, अनुक्रमे पदवी मोक्षज तणी ॥ १९ ॥ एम सांजलीने चंडकुमार, जक्ते शीखे श्रीनवकार ॥ विचर्यो मुनिने करी प्रणाम ॥ अनुक्रमे पहोतो कुसुमपुरे गाम ॥ २० ॥ मांड्यो

तिहां चंडे व्यापार, फलीयो तेहने श्रीनवकार॥ महा ऋद्धिवंतो ते थयो, एक दिन निमित्तने पूछण गयो ॥२१॥ माहारा मित्र जीवे के नहीं, मुज मल-शे के ठे वली कहीं॥ कहे निमित्तिउं दिन थोमले,त्रणे मित्र मलशे जोमले ॥ २२ ॥ अन्य अन्य पुरथी आवशे,ते पण ऋद्धि घणी लावशे॥ एम सांजली-ने दीधुं दान,निमित्तिउं पहोतो निज थान॥ २३॥ हवे थोमा दिन मांहे तेह, जानु शिव ने कृष्ण सनेह ॥ वहु ऋद्धे आव्या सहु मल्या, सुख दुःखनी वातोमां जल्या ॥ २४ ॥ निज निजनी जे वातो थइ, जाखे जेह अतीते गइ ॥ चार मित्र हवे रहे सुखवास, विषयसुख जोगवे आवास ॥ २५ ॥ ते सहु जद्रकजावी थया, श्री नवकार शीखण सज्ज थया ॥ चंद्रकुमारनुं सुणी चरित्र, मनमां जावे कर्म विचित्र॥ २६ ॥ ए चोथे अधिकारे कही, ढाल सातमी एणी पेरे लही॥ पद्मविजय कहे जपो नवकार, जेहथी होवे जय जयकार ॥ २७ ॥ सर्व गाथा ॥ २२ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ वहु धन पाम्या तिण पुरे, एक दिन वेठा चार॥ करे विचार ते एणी परे, लखमीनो नहीं पार ॥ १ ॥ ते धन पामे पण किस्युं, जो रहे सज्जन वियोग ॥ तस लखमी विफली लहो, अन्य देशमां जोग ॥ २ ॥ यतः ॥ किं ताए सिरीए, सुंदरी विजा होइ अणदेसंमि॥ जइ न मित्तेहिं समं, जाय न दिठा अमित्तेहिं ॥ १ ॥ निज देशे जावा जणी, सम्मत कीध विचार ॥ प्रवहण जरी चाल्या हवे, सायर पाम्या पार ॥ ३ ॥ वेलाउलमां उतरी, वेची वस्तु अनेक ॥ करियाणां अन्य देशने, योग्य जरे सुविवेक ॥ ४ ॥ जयपुर नगर जणी हवे, थलमारग करी जाय॥ कोइक थानक उतरया, वेठा सहु समवाय ॥ ५ ॥ सामग्री जोजन तणी,करी अनेक प्रकार ॥ जो-जन करवाने सहु, वेठा चित्त उदार ॥ ६ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ वे वे मुनिवर विहरण पांगुरया जी ॥ ए देशी ॥ एणी अवसर मुनिवर तिहां आवीया जी, धरता निर्मल ध्यान रे ॥ पंच महाव्रत पालता जी, चरण दर्शन धरे ज्ञान रे॥ १ ॥ एणी०॥ वेयावच्च करे मुनि दश जेदथी जी, संजम सत्तरे प्रकार रे ॥ दशविध साधुधर्म अनुवालता जी, ब्रह्मचर्य गु-प्तिना धार रे ॥ २ ॥ एणी० ॥ वार जेदे तप आदरे जी, क्रोध मान माया

लोन्न रे ॥ कींपता पाले चारित्रधर्मने जी, श्री मुनिवरजी थइ थिर थोन्न रे ॥ ३ ॥ एणी० ॥ पिंमविशुद्धि चउ नेदथी जी, पंच समितिना धार रे॥ त्रणे गुप्ते गुप्ता रहे जी, जावना नावता बार रे ॥ ४ ॥ एणी० ॥ प्रतिमा बारे यथाशक्ति करी जी, पाले करे वली इंद्रियरोध रे ॥ पमिलेहण पणविस ते नावशुं जी, अनिग्रह चार तणो करे शोध रे ॥ ५ ॥ एणी० ॥ मलिन शरीर पण जेहनुं जी, ध्यान अति सुविशुद्ध रे॥ युग प्रमाणे दृष्टि धरी करी जी, चाले मुनिवर धरमे बुद्ध रे ॥ ६ ॥ एणी० ॥ उपशम सारे शोजित देहनी जी, मासखमणे मुनिराय रे ॥ पारण दिन तिहां आव्या गोचरी जी, हरखे सहु समवाय रे ॥ ७ ॥ एणी० ॥ सुंदर नामे चाकर तेहनो जी, नाखे सहु मन आणी खांत रे ॥ आपो तुम्हे नात पाणी मुनिवर प्रते जी, शुद्ध मान थयुं सवि तंत रे ॥ ८ ॥ एणी० ॥ तव कर्मकर सुंदर मन चिंतवे जी, अहो अहो माहरुं नाग्य विशाल रे ॥ तप तापित मुनिवरनी देहनी जी, ए फासु वली अशन रसाल रे ॥ ए ॥ एणी० ॥ ते पण सहु देवरावे तुज कने जी, केम नथी नाचतो प्राणी आज रे ॥ आप संबंधी तुज किहांथी होवे जी, तुज पासे देवरावे कुण काज रे ॥ १० ॥ ॥ एणी० ॥ ते कारण निज इव्याए आपशुं जी, आज जाग्यां मुज पूरव पुण्य रे ॥ वली परनवनुं पुण्य उपार्जीये जी, जेम नवि थाउं पुण्ये शून्य रे ॥ ११ ॥ एणी० ॥ मुनिवर प्रतिलान्या तिणे नावथी जी, हर्षित विपुल अशन ने पान रे ॥ रोमराजी विकस्वर थइ जी, प्रगट्यां पुण्य अमान रे ॥ १२ ॥ एणी० ॥ नोग करम अर्ज्युं घणुं जी, ते चारे मित्र वधते नाव रे ॥ सुंदरे वलीय विशेषे जाणजो जी, ए तो जाणो नाव विशेषनो दाव रे ॥ १३ ॥ एणी० ॥ अनुक्रमे जयपुर नगरे आवीया जी, मिलीयो ते सजन कुटुंबनो वग्ग रे ॥ करे वधामणां अति प्रमोदशुं जी, सुख नोगवतां जेम सुरसग्ग रे ॥ १४ ॥ एणी० ॥ ज्योतिष देवमां पांचे उपना जी, तिहांथी चवीने चंडकुमार रे ॥ नाशिकपुरमां सारथवाह घरे जी, समुद्रतनी लक्ष्मी ठे नार रे ॥ १५ ॥ एणी० ॥ ऋद्धि घणी ठे तेहने घरे जी, तनो रतिवर्द्धन तस नाम रे ॥ अग्रस्यसमां सार्थवाह धनंजयो जी, श्री नामे नारी अति गुणधाम रे ॥ १६ ॥ एणी० ॥ नानु ते तेहनी कूखे तनो जी, अनंगदेव धर्युं अनिधान रे ॥ राजगृहे सागरनी श्री

सुंदरी जी, तिह थकी रतिसुंदरी थइ जाण रे ॥ १७ ॥ एणी० ॥ विजयपुरे दत्तपरणी रूपिणी जी, रतिमाला रूपण तणो थयो जीव रे ॥ इवे वि- श्वपुर नयरीमां उपनो जी, सुंदर जिणे दान दीधुं अतीव रे ॥ १८ ॥ एणी० ॥ जास प्रताप जग विस्तर्यो जी, महवो थयो महोटो कोइ नरिंद रे ॥ सहुए इवे रहे सुखमां निज निज घरे जी, फल पाम्युं दीधुं दान सु- णींद रे ॥ १९ ॥ एणी० ॥ राजगृही नगरे रतिवर्द्धन गयो जी, मांड्यो तिणे तिहां अतिहि व्यापार रे ॥ बहु दिन अंते एक दिन बाहरे जी, नंदन वन उद्यानमां सार रे ॥ २० ॥ एणी० ॥ दक्षिण लोचन फुरके चिंतवे जी, मन वल्लन कोइक मलशे आज रे ॥ चोथा अधिकारे आठमी ढालमां जी, पद्मविजय कहे पुण्यने काज रे ॥ २१ ॥ एणी० ॥ सर्व गाथा ॥ २५६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जमणुं लोचन फुरकीयुं, वल्लन झ्छे तेह ॥ इण अवसर कुलबालिका, देखे अति सनेह ॥ १ ॥ ब्रह्म तणी पूजा करे, रूपे रति अवतार ॥ स्त्री पण देखे तेहनुं, रूप मनोहर सार ॥ २ ॥ रूप अतिशय बेहुनां, पूरव जव अन्यास ॥ देखत प्रीति थइ तिसी, पाली न शकीये जास ॥३॥ नयन पदा- रथ नयन रस, नयने नयन मिलंत ॥ अणजाणयाशुं प्रीतडी, पहेली नयन क- रंत ॥४॥ नयन तणी गति अलक है, किणथी कली न जाय ॥ लाख लोककुं भेद कर, ससनेहीपें जाय ॥ ५ ॥ नयण ते सयण वजीर ठे, प्रेमजंजीर परगट्ट ॥ हीर हैयानुं जिहां मल्युं, तत्त निरखे गहगट्ट ॥ ६ ॥ चित्तशुं चित्त मिली गयां, नेहे मलीयां नयण ॥ हइयुं विकस्युं पंकज परे, मुखे न कहाये व- यण ॥ ७ ॥ नयण मिलाप एणी परे करी, पहोती वाला गेह ॥ मन मूकी सा तस कने, लागो अतिहि सनेह ॥ ८ ॥ रतिवर्द्धन कोइ पुरुषने, पूछे तास विरतंत ॥ ते कहे सागरदत्त सुत, अनुजा विमलनी संत ॥ ९ ॥ रतिसुंदरी ए नामथी, ठे मेना अवतार ॥ रतिवर्द्धन ते सांजली, पाम्यो हर्ष अपार ॥ १० ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ सरोवर पाणी हुं गइ ॥ मोरारी रे ॥ मलीयो गोपीनाथ ॥ साथे गोरी रे ॥ ए देशी ॥ रतिवर्द्धन एणी अवसरे ॥ मन मोह्युं रे ॥ करे विमलशुं व्यापार ॥ चित्त आरोह्युं रे ॥ मित्राइ करी विमलशुं ॥ म० ॥ प्रीति वधी ते अपार ॥ ॥ चि० ॥ १ ॥ रागी होये जे जेहनो ॥ म० ॥ करे उपाय अनेक ॥

॥ चि० ॥ कोइ उपाये ते मले ॥ म० ॥ चित्त होवे जस एक ॥ चि० ॥ २ ॥ अ-
लगा पण वलगा होय ॥ म० ॥ जस होवे अति घणी प्रीत ॥ चि० ॥ गमना-
गमन थयुं घणुं ॥ म० ॥ विमल तणे घर नित ॥ चि० ॥ ३ ॥ रतिसुंदरी
साथे थइ ॥ म० ॥ प्रीति घणी सुरसाल ॥ चि० ॥ चमक खेंचे जेम लोहने
॥ म० ॥ तेम चित्त हर्युं सुविशाल ॥ चि० ॥ ४ ॥ शुं कहीये घणुं तेहने
॥ म० ॥ निश्चय परणवा कीध ॥ चि० ॥ मांहोमांहे चित्त मल्यां ॥ म० ॥
जाणे वंछित सिद्ध ॥ चि० ॥ ५ ॥ पण नवि जाणे तस पिता ॥ म० ॥ ए
व्यतिकरनो देश ॥ चि० ॥ चित्तमां संतुष्ट थइ रहे ॥ म० ॥ पामे हर्ष वि-
शेष ॥ चि० ॥ ६ ॥ एक दिन निज वासे रह्यो ॥ म० ॥ रतिवर्द्धन सुणे
तूर ॥ चि० ॥ पूछे कोइक पुरुषने ॥ म० ॥ ते पण नाखे सनूर ॥ चि० ॥
॥ ७ ॥ रतिसुंदरी विवाहलो ॥ म० ॥ थाय छे आज सनेह ॥ चि० ॥ सां-
नली वज्रहत परे ॥ म० ॥ चिंतवे चित्तमां तेह ॥ चि० ॥ ८ ॥ हाहा शुं
ए थइ गयुं ॥ म० ॥ स्या दीजे देव शराप ॥ चि० ॥ आपी जोजन हरी गयो
॥ म० ॥ उपनो चित्त संताप ॥ चि० ॥ ए ॥ मस्तके मूकी मेरुने ॥ म० ॥
पाड्यो हेठल मुऊ ॥ चि० ॥ चिंतामणि आपी करे ॥ म० ॥ लीधुं इण अ-
शुऊ ॥ चि० ॥ १० ॥ अन्न पाणी नावे नहीं ॥ म० ॥ न गमे मीठी वात
॥ चि० ॥ मोह तणी फांसी गले ॥ म० ॥ जेम फागुणे तरुपात ॥
चि० ॥ ११ ॥ अहोनिशि आसिपणुं करे ॥ म० ॥ मुखे मूके निसास ॥
॥ चि० ॥ नेहथी घेलां मानवी ॥ म० ॥ तेथी तुं रहत उदास ॥ चि० ॥
॥ १२ ॥ काम महाविष जाणीयो ॥ म० ॥ काम न राखे माम ॥ चि० ॥
काम महाग्रह बोलीयो ॥ म० ॥ शाता सुखने ठाम ॥ चि० ॥ १३ ॥
आर्त्ति ध्यानवशे थयो ॥ म० ॥ एणी अवसर एक नार ॥ चि० ॥ आवीने
कहे तेहने ॥ म० ॥ खेद म कर निरधार ॥ चि० ॥ १४ ॥ रतिसुंदरीए मोकली ॥
॥ म० ॥ कहाव्युं छे एणी नात ॥ चि० ॥ तुऊ मूकीने अन्यने ॥ म० ॥ प-
रणवो नहीं एकांत ॥ चि० ॥ १५ ॥ नमरी जेम धतूरना, कुसुमे न धरे
प्रीत ॥ चि० ॥ रतिसुंदरी तुऊ विनु नवि ॥ म० ॥ परणशे शुन्न रीत ॥
॥ चि० ॥ १६ ॥ अणगमतो अणप्रीतनो ॥ म० ॥ ते केम आवे दाय ॥
॥ चि० ॥ परणवा वात लो वेगली ॥ म० ॥ घाते मले बलाय ॥ चि० ॥ १७ ॥
एकपखी ते प्रीतनी ॥ म० ॥ ते नवि उतरे पार ॥ चि० ॥ जो होय बिहुं जग

प्रीतमी ॥ म० ॥ तस नहीं चिंत लगार ॥ चि० ॥ १८ ॥ मुझ चित्तडुं अणजाणतां ॥ म० ॥ कीधुं ताते काम ॥ चि० ॥ ते कारण धीरो थशे ॥ म० ॥ धीरते आवे गाम ॥ चि० ॥ १९ ॥ जन्मांतरे पण जाणजे ॥ म० ॥ तुंहिज मुझ जरतार ॥ चि० ॥ एम आश्वासना देइ करी ॥ म० ॥ निज थानक थइ नार ॥ चि० ॥ २० ॥ दिन केताएक निर्गम्या ॥ म० ॥ लगन दिवस आसन्न ॥ चि० ॥ जाणीने मन चिंतवे ॥ म० ॥ संगम न थयो वासन्न ॥ चि० ॥ ॥ २१ ॥ चोथे अधिकारे कही ॥ म० ॥ नवमी ढाल उदार ॥ चि० ॥ पद्मविजय कहे पुण्यथी ॥ म० ॥ पामे जय जयकार ॥ चि० ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ २०८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एम चिंती ते नीकल्यो, गयो उद्यान मझार ॥ रुखशाखाए बांधी करी, दीये फांसो तिणी वार ॥ १ ॥ इण अवसर कोइ पुरुष तिहां, आवी छेदे पाश ॥ ते कहे शुं करे महापुरुष, ए एवडुं साहस ॥ २ ॥ तव निसासो नाखीने, रतिवर्द्धन कहे एम ॥ दुःख मुजने छे अति घणुं, तिणे ए करीये नेम ॥ ३ ॥ ते कहे कहे दुःख ताहरुं, तव कही बांधी वात ॥ तेह पुरुष देखी सुगुण, सर्व कह्यो अवदात ॥ ४ ॥ रतिवर्द्धनने ते कहे, मरण घटे नहीं तोय ॥ करी उपाय कोइ बुद्धिथी, पण केम जीवित खोय ॥ ५ ॥ जो न उपाय होवे कियो, पण जीवतां कल्याण ॥ कोइक अवसर पामीये, मुआ पछी केम गाण ॥ ६ ॥ अछे उपाय तुझ काममां, पण सांजल मुझ वात ॥ माहरे तुज सम दुःख हतुं, पण जीवुं सुखशात ॥ ७ ॥ रतिवर्द्धन कहे तेहने, ताहरुं दुःख पण जाख ॥ ते कहे सांजल चित्त धरी, कहुं ते चित्तमां राख ॥ ८ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ नणदल विंदली दे ॥ ए देशी ॥ ब्रह्मस्थल नयरनो वासी, धनंजयनो सुत सुविलासी हे ॥ साहेब वात सुणो ॥ ए आंकणी ॥ तस नाम अनंगदेव जाणो, ते परणतो विजयपुर राणो हो ॥ १ ॥ सा० ॥ ॥ ते नयरीने बाहिर उद्यान, शंखपाल यक्ष अभिधान हो ॥ सा० ॥ तस यात्र करणने काजे, आव्या बहु लोक समाजे हो ॥ २ ॥ सा० ॥ एक वृक्ष अशोकने मूले, दीठी कन्या अनुकूले हो ॥ सा० ॥ कन्याए ते पण दीठो, तस राग वध्यो उक्किठो हो ॥ ३ ॥ सा० ॥ एणी अवसर खंज उखेली, महावतने पण ठेली हो ॥ सा० ॥ तिहां हाथी

मदमत्त धायो, तब सघलो लोक पलायो हो ॥ ४ ॥ सा० ॥ ते कन्या उपर आयो, तब ते तस सन्मुख धायो हो ॥ सा० ॥ हणीयो तस पश्चिम पाद, लकुटे करी महोटे नाद हो ॥ ५ ॥ सा० ॥ हाथी तस सन्मुख धाव्यो, कोपे करी नजरे जाव्यो हो ॥ सा० ॥ ते पुरुषे तास बोलावी, कन्या ठानी घणुं आवी हो ॥ ६ ॥ सा० ॥ तस निर्जय स्थानक मूके, तस तात तुष्ट सुविवेके हो ॥ सा० ॥ इण अवसरे वर्षा आयो, मुसलधाराए धायो हो ॥ ७ ॥ सा० ॥ तिहां लोक गयां सहु नासी, हुइ लोक तणी तिहां हांसी हो ॥ सा० ॥ तिहां अनंगदेवे नवि जाएयुं, शुं नाम क्यां गइ शुं ठाणुं हो ॥ ८ ॥ सा० ॥ बहु काल लगे तिहां जोइ, पण नवि लाधी ते कोइ हो ॥ सा० ॥ तब ते विरहानले बलतो, ते उपाय विना वलवलतो हो ॥ ए ॥ सा० ॥ फरतो फरतो इहां आव्यो, ते अनंगदेव हुं पायो हो ॥ सा० ॥ तोपण हजी जीवुं जाइ, कही वात जे महारी जाइ हो ॥ १० ॥ सा० ॥ तिणे तुं धीरज धरजे, चिंता चित्तमां मत करजे हो ॥ सा० ॥ उद्यम चिंतवी कोइ सारो, सत्त्वरहितने सुखनो वारो हो ॥ ११ ॥ सा० ॥ यतः॥ तण सरिसं पि न लिप्पइ, कज्जं पुरिसस्स सत्तरहियस्स ॥ आरुढ सत्तयस्सउ, वसंमि वंदंति देवावि ॥ १ ॥ रतिवर्द्धन कहे सुणी वात, तें साधु कह्यो अवदात हो ॥ सा० ॥ पण जाखो उपाय तुम्हारो, जेम होवे डुःख निवारो हो ॥ १२ ॥ सा० ॥ कहे अनंगदेव उपाय, जेहथी ए कारज थाय हो ॥ सा० ॥ आ देशमां एह आचार, परणवा दिन पूरवे सार हो ॥ १३ ॥ सा० ॥ जाय कामने देहरे कन्या, देइ द्वार पूजा करे धन्या हो ॥ सा० ॥ ए रात्रि समे करे काम, जे कामे ते दीये काम हो ॥ १४ ॥ सा० ॥ ते कारण हुं तुं दोय, आगल पेसीने जोय हो ॥ सा० ॥ पछे सर्व काम ते थाशे, ताहरुं डुःख ते सघलुं जाशे हो ॥ १५ ॥ सा० ॥ रतिवर्द्धनने आवासे, आव्या दोय रहे सुखवासे हो ॥ सा० ॥ थइ प्रीति ते अति घणी तेहने, न खमाय विरह ए केहने हो ॥ १६ ॥ सा० ॥ विश्वपुरे सवि साथ मोकलीयो, हवे लगन दिवसने कलीयो हो ॥ सा० ॥ तस पूर्वे दिने आवी बाला, तव ते पण गया उजमाला हो ॥ १७ ॥ सा० ॥ करी बे जण तेह शणगार, पडिमा पूठे तिण वार हो ॥ सा० ॥ तेह अलख रह्या तिणे ठामे, बाला हवे पूजणकामे

॥ [illegible] ॥

॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] अनंगदे
वेर [illegible] ॥ आज हो ॥ [illegible] रे [illegible] रे ॥ १ ॥
[illegible] तेह, [illegible] ॥ आ० ॥ [illegible]
[illegible] रे ॥ २ ॥ नाटक [illegible] [illegible] [illegible] वार ॥
[illegible] ते [illegible] ॥ ३ ॥ [illegible] रतिना
नाम ॥ आ० ॥ रतिसुंदरीना [illegible] पुत्री [illegible] रे ॥ ४ ॥
अर्थे ताम, विश्वपुरथी निज गाम ॥ आ० ॥ तेडी ते अनंगदेव
उत्सवे जी ॥ ५ ॥ रतिनाथा कहे एम, वहिन सांभलो तुज नेम ॥ आ०
रतिवर्द्धन मूकीने अन्य पुरुष नथी रे ॥ ६ ॥ रतिवर्द्धन तुज नांहि,
थी चोरी नांहि ॥ आ० ॥ तोपण तुं पुण्यवंत नांहि दिसेनहि रे ॥
वल्लभ साथे मेलाप, करी टाल्यो संताप ॥ आ० ॥ बहु दिन लगे ते
तम निज सफलो कर्यो रे ॥ ७ ॥ पुण्यहीन हुं नार, ते पण न थयुं
॥ आ० ॥ बहेनी रे सांभल तुं म्हारी वातनी रे ॥ ८ ॥ गजथी रा
मुज, हरी मुज हृदयनुं गुज ॥आ०॥ वहिनी रे गयो खबर न तेहनी को
रे ॥ १० ॥ खोली नगरी तेह, गहुंनां केकर गेह ॥ आ० ॥ जीधो रे
कोइ उपाये वालहो रे ॥ ११ ॥ तेह अनंगदेव ताम, करे हुंकार
काम ॥ आ० ॥ वानो रे सघली कहे ते उभी करी रे ॥ १२ ॥ आज
ते दूर, पुरुषवेष करं तूर ॥ आ० ॥ बांहनी रे जालीने उगाडे तदा रे ॥ १३
लोक मल्यां बहु वार, गीत वाजित्र प्रकार ॥ आ० ॥ नासी रे जइये पश्चि
म द्वारे फरी रे ॥ १४ " शब्दर्थी उंजखी तास, [illegible]न्युं वचन ते खास
॥ आ० ॥ नागां रे [illegible] । यइने एक मनां [illegible] ॥ विश्वपुरे गयां
तेह, चार मल्यां स[illegible] ० ॥ सकल सा[illegible] नेहो थयो तिणे
समे रे ॥ १६ ॥ मांड[illegible] [illegible], पाम्या [illegible] ॥ आ० ॥
तिहां प्रासाद [illegible] रे ॥ १७ [illegible]
तेह रतिवर्द्धन ॥ आ० [illegible] रे ॥
चंद्रसेन नामे रा[illegible] १८
विक्रम न्याये कर[illegible]
स्नेह थयो पुरव[illegible]

:तिमाला अवधारी ॥ आ० ॥ तेहने पण राय आदर मान दे अति घणो
: ॥ २१ ॥ पांच जणांने प्रीत, हुइ जगमां सुविदित ॥ आ० ॥ एक दिने
: तिहां केवलनाणी समोसस्या रे ॥ २२ ॥ जइ सहु केवली पास, सांजले
र्म उल्लास ॥ आ० ॥ पामी रे अवसरे ते पूछे नृपति रे ॥ २३ ॥
रुपना नृहे ठाम, किम छे स्नेह उद्दाम ॥ आ० ॥ ज्ञानी रे तव चंद्रादिक-
ो जव कहे जी ॥ २४ ॥ जातिसमरण पाम, वाणी सुणी तिणे ठाम ॥
। आ० ॥ पांचे रे जणने वैराग्य ते उपनो रे ॥ २५ ॥ मुनिने दानप्रजाव,
र्मे दुआ इहुजाव ॥ आ० ॥ राज्ये रे थापे निज सुतने राजीयो रे ॥ २६ ॥
:तिवर्द्धन अनंगदेव, निज निज सुतने हेव ॥ आ० ॥ थापे रे कुटुंब तणा
सवि जारने रे ॥ २७ ॥ लीवे दीक्षा सहु तेह, केवली पास सनेह ॥
॥ आ० ॥ करता रे सहु उग्र तपस्या ते जवे रे ॥ २८ ॥ घातिकर्म करी
नाश, केवलज्ञान विलास ॥ आ० ॥ ते जवमां सहु सिद्धि वस्या सुख शा-
श्वतां रे ॥ २९ ॥ मतिप्रन्न कहे एणी जांत, शंखकुमरने वात ॥ आ० ॥
सांजसी रे मनमां घणुं शंख खुशी थयो रे ॥ ३० ॥ एम चोथे अधिकार,
ढाल थइ अगीयार ॥ आ० ॥ जाखे रे मुनि पद्मविजय सुणो जविजना रे ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मतिप्रन्न नाम साचुं कर्युं, एह कहे अवदात ॥ विसर्ज्यो तव मंत्रि-
सुत, आप निद्रामां थात ॥ १ ॥ मध्यरात्रिने अवसरे, रुदननो शब्द सुणंत
॥ जे सुणी करुणा उपजे, दूर थकी आवंत ॥ २ ॥ कौतुकनो लीधो तिहां,
करतो खड्ग सहाय ॥ शब्द तणा अनुसारथी, ते चाल्यो उछाय ॥ ३ ॥
अनुक्रमे पहोतो शुन्न परे, दीठी तिहां एक नार ॥ मध्यम वये आवी अछे,
करे विलाप दुःख धार ॥ ४ ॥ कहे कुमर माता सुणो, धीरा थाउ ए
वार ॥ संजलावो दुःख तुम्ह तणुं, करीये तास विचार ॥ ५ ॥ उत्तम पुरुष
जाणी करी, कहे सांजल वत्स वात ॥ जाग्यहीन हुं अति निपट, शिथिल
थयुं मुज गात ॥ ६ ॥ रतननिधान देखाडीने, देवे ते हरी लीध ॥ सां-
जल कुंअर ते हुं कहुं, मुज वंछित नवि सिद्ध ॥ ७ ॥

ऊपणायी मानुं, आकाशने झींपती ॥ ते नगरीनो वर्णन, केटलो कीजीये ॥ वासुपूज्यनां पंच, कल्याणक लीजीये ॥ १ ॥ नाम जितारि ते, नगरीनो राजीयो ॥ तेज प्रताप महिमायी, जे जग गाजीयो ॥ चोर चरडने नवि, सहेवाये तेजयी ॥ मित्र प्रजा सहु लोक, वोलावे हेजयी ॥ २ ॥ जे अहंकारी साधु, सुनटने देखवा ॥ माया विनीत गुण, आछादन लेखवा ॥ जस खेयाने खांनी, परधने पांगलो ॥ परस्त्री देखण जेह, कह्यो ते आंधलो ॥ ३ ॥ कीर्तिमती तस राणी, गुणखाणी कही ॥ शुज सुपने सूचित, गर्जे पुत्री रही ॥ रोहणाचल परतमां, रतन शुचि जीसी ॥ तनुकांते अजुआल, करे जे दश दिशी ॥ ४ ॥ जनम समय वधामणुं, महा मोछव करी ॥ जितारि नृप जसमती, तस अनिधा धरी ॥ गिरुआ लोकने पर, उपगारनी बुद्धि परे ॥ सज्जननी सुखदायक, गोठडी ज्युं धरे ॥ ५ ॥ तिण परे दिन दिन वधती, नागरवेलडी ॥ अण अनपसित तस आवी, कला सुखवेलडी ॥ अनुक्रमे योवन आव्युं, ते नारी तणुं ॥ महिमा मात्र ते योवन हुं, किणी परे जणुं ॥ ६ ॥ तोपण सांजल हुं, तुकने कांयक कहुं ॥ मानुं जस पद अंगुली, अलतापणे लहुं ॥ नहमणि किरण परे नह, किरण ते जाणीये ॥ नाद मधुर कलहंस, परे वखाणीये ॥ ७ ॥ कमलिनीनाला उपम, जंघा जेहनी ॥ चालती पण कमलिनी परे, सोहे मोहनी ॥ नाजिमंमल विपुल, मृदु अति सोहनी ॥ मदन तणी मानुं शय्या, जनमन मोहती ॥ ८ ॥ मुक्ताफलना हार, थकी विराजती ॥ कुचफल कठिण विशाल, कलश परे ब्राजती ॥ कर पदनां तल जेहनां, कमल समां कह्यां ॥ श्वासोछ्वास सुरनि घणुं, चंदन परे लह्यां ॥ ए ॥ बोले वचन ते वीणा, वेणुनी परे ॥ अधर अरुण जिम कुंकुम, राग वदन धरे ॥ अणमातुं मानुं सरलपणुं, जस हृदये वसे ॥ आवी रह्युं नासिकाए, सरलपणे नवि वसे ॥ १० ॥ नेत्र कमलनां दल, वन्यां शुज श्रवण ते ॥ जास कपोल ज्योत्स्नाए, पखाले रयण ते ॥ पंचमी चंद परे शुज, नाल ते धारती ॥ वाकुटता मानुं कुटिल, रयाने वारती ॥ ११ ॥ मालती कुसुम ने केतकी, सहित वेणी वणी ॥ मृदु स्निग्ध कुटिल, कृष्णवणुं जिहां थकी ॥ कनक कांति जस देह, कहुं केता गिरी ॥ जो सुरगुरु आवी वर्णवे, पण नवि कहे तिरी ॥ १२ ॥ तस अनुरूप पुरुष कोइ, जगमां नवि जड्यो ॥ जाने

विधाताए कोइ, घड्यो के नवि घड्यो ॥ एक दिन तेह श्रीषेण, नरें-
द्रना सुत तणा ॥ गुणे सांजले शंखकुमारना, श्रवणे अति घणा ॥ १३ ॥
ते दिनथी शंखकुमरना, ध्यानने ध्यावती ॥ नित नित ध्यावे तेहने, तत्त्व-
ने जिम जति ॥ राय जितारि तेहनो, जाव जाएयो हवे ॥ युक्त जाणी
कहेवरावे, श्रीषेणने एहवे ॥ १४ ॥ मणिशेखर विद्याधरे, दीठी तेहने ॥
विवाह अर्थे रायने, कहे यो एहने ॥ तव कहे राय इणे शंख,-कुमार
अंगीकस्यो ॥ ते विना अन्य इछे नहीं, अग्नि शरण धस्यो ॥ १५ ॥ बीजा
पण बहु राज,-कुमर तस प्रार्थता ॥ तेह वात सहु नृपतिने, संजला-
वता ॥ हवे एक दिन मणिशेखर, तास हरी गयो ॥ हुं तेहनी धावमात,
अतुं मुफ दुःख थयो ॥ १६ ॥ हाथे हुं तिहां वलगी, विलपती कुंअरी ॥
इहां ते दुःष्ट विद्याधरे, नाखी मुफ परी ॥ कुण जाणे किहां लइ गयो, तेह
खबर नहीं ॥ तिणे हुं करुं तुं विलाप, सांजल कुंअर सही ॥ १७ ॥
तव कुंअर कहे सांजलो, मातजी माहरी ॥ चहात खोलीने लावुं, पुत्री हुं
ताहरी ॥ तिहां लगे तुम्हे इहां रहेजो, मन थिरता करी ॥ इम चाल्यो
शंखकुमार, घणुं मन संवरी ॥ १८ ॥ खोले अटवी मांहि, बहु उद्यम करे
॥ धन्य कुमरना धैर्यने, किणी परे विसरे ॥ विद्याधरनी खबर, नहीं ते
किहां गयो ॥ पण शंखकुमार एकाकी, खोलन सज्ज थयो ॥ १९ ॥ रात
रही अवशेष, योनी हवे थाकती ॥ तिमिर धम्मिल्ल कसंत, तारा चम-
कावती ॥ कोलाहल करे पंखी, चिहुं दिशे अति घणो ॥ मानुं रुदन करे शोक,
धरे जसमती तणो ॥ २० ॥ मानुं हवे विधि तिहांथी, तमने संहरे ॥ शंख-
कुमारने अटवी, मार्ग प्रगट करे ॥ हवे दश दिश तिहां कांयक, विक-
सित थइ रहे ॥ मानुं जसमती लाज, आसन जाणी गहगहे ॥ २१ ॥ सूर-
जानुए तिमिर, सवि दूरे कस्यो ॥ कायर सैन्य हतो ते पण, मन थर-
हस्यो ॥ एणी परे रात गइ ने, परजातज थयो ॥ पूरव दिशि पाले रवि, आवण
सज्ज थयो ॥ २२ ॥ संध्याराग परे सिंदूर, तिलक कस्यो ॥ अति शोजे शण-
गार, मानुं अंगे धस्यो ॥ तव जानु पण अरुण, कुंकुम सम तनु करी ॥ चंद्र
प्रदीप उलवतो, आवे संचरी ॥ २३ ॥ ते पूरव दिश पण अति,-नव नारी
बनी ॥ तमसख्या उसारती, दीसे ज्युं कनी ॥ इणी अवसर तिहां सूर,
नरेंद्र जव उगीयो ॥ निज करे करी तव कनल, कोश लगे पुगीयो ॥ २४ ॥

तमशत्रु ने तारा, रेणुकण टालतो ॥ गगणांगणे मंगल कल,-श परे ऊछल- तो ॥ कुमुदिनी ठंनी कमलिनी, पासे भ्रमर गया ॥ सवि निज स्वार्थे प्राणी, मल्या तिणे इम थया ॥ २५ ॥ चक्रवाक तिहां कूजित, शब्द करी रह्या ॥ विरह विमुक्त थया तिणे, मनमां गहगह्या ॥ विरह ते दावानलनी, ज्वालाथी कह्यो ॥ अधिकी सांजरे फरसे, इम निश्चय सह्यो ॥ २६ ॥ भुवन सरव आणंदने, पाम्युं तिणे समे ॥ पण एक कौशिक कुलना, मनमां नवि गमे ॥ ए चोथा अधिकारनी, ढाल ते बारमी ॥ पद्मविजय कहे बात, नहीं कोइ कारमी ॥ २७ ॥ सर्व गाथा ॥ ३०४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अनुक्रमे शंखकुमर हवे, विशालशृंग गिरिराज ॥ उपर चढीयो एकलो, ज्युं वनमां मृगराज ॥ १ ॥ वनगह्वरमां देखतो, विद्याधर ते नार ॥ विद्याधरने इम कहे, जसमती स्त्री तेणी वार ॥ २ ॥ मुफ प्रतिज्ञा नवि खसे, आ भव ने भव उर ॥ शंखकुमर विनु माहरे, भर्त्ता नवि कोइ गोर ॥ ३ ॥ करे विवाहनी प्रार्थना, खेचर अनेक प्रकार ॥ जसमती आंसु रेफती, कहे न करुं भरतार ॥ ४ ॥ ते बेहु जणे दीठो तिहां, शंखकुमरने ताम ॥ शंखे पण दीठां तिहां, चिंते सखुं हवे काम ॥ ५ ॥ तव विद्याधर इम कहे, जसमतीने सुण नार ॥ काल आकर्ष्यो आवीयो, ए ताहरो भर- तार ॥ ६ ॥ पूरव परिचित माहरो, तुफ देखतां एह ॥ हणीने परणुं तुफने, लेइ जाशुं निज गेह ॥ ७ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ जीहो जाएयुं अवधि प्रयुंजीने ॥ ए देशी ॥ जीहो एम करतां खेचर प्रते, जीहो हाके शंखकुमार ॥ जीहो परनारीना पातकी, जीहो मूक तुं अबला नार ॥ १ ॥ सुगुण नर, जूउं जूउं वीर्य विशेष ॥ जीहो विद्याधरशुं बोलतां, जीहो शंका नवि धरे रेख ॥ २ ॥ सु० ॥ जीहो नीच लोक जे आदरे, जीहो तुं केम आदरे तेह ॥ जीहो निज नारी मूकाववा, जीहो मानुं कहे वच एह ॥ ३ ॥ ॥ सु० ॥ जीहो विद्याधर हसीने कहे, जीहो एह ते ताहरी नार ॥ जीहो परस्त्री ते अमने कही, जीहो कर हवे सार संभाल ॥ ४ ॥ सु० ॥ जीहो एम करतां ते बेहुने, जीहो लागुं युद्ध अपार ॥ जीहो कर आस्फालन बिहुं करे, जीहो भ- मता करे प्रहार ॥ ५ ॥ सु० ॥ जीहो खड्गयुद्ध करतां थका, जीहो छेदे खड्ग तिवार ॥

जीहो गुणवंता ते चिहुं नव्या, जीहो मूके सहु व्यवहार ॥ ६ ॥ सु० ॥ जी-हो बाहुयुद्धथी जूजता, जीहो वली खड्ग व्यवहार ॥ जीहो वली बाहुयु-द्ध करे, जीहो थाके नहीं किवार ॥ ७ ॥ सु० ॥ जीहो तव रूठो विद्याधरु, जीहो करी भृकुटि निज चाव ॥ जीहो विद्याना सामर्थ्यथी, जीहो रचे शिला विकराल ॥ ८ ॥ सु० ॥ जीहो वृक्ष विकुर्वी नवनवां, जीहो गोवानी कइ कोन ॥ जीहो चीठी सापनां शर घणां, जीहो नाखे मनने कोन ॥ ९ ॥ सु० ॥ जीहो शंखकुमर बचावतो, जीहो पुण्यप्रबल महावीर ॥ जीहो जाय विफल केइ संकतो, जीहो वरसे ते ज्युं नीर ॥ १० ॥ सु० ॥ जीहो तेह-नां शस्त्र तेहने मुखे, जीहो नाखे शंखकुमार ॥ जीहो तव खेचर विखलो थइ, जीहो उभो रह्यो तिण वार ॥ ११ ॥ सु० ॥ जीहो चाप ने बाण ग्रहे तदा, जीहो विद्याधरथी कुमार ॥ जीहो बाखे भेद्यो हृदयमां, जीहो मूर्छा पामे अपार ॥ १२ ॥ सु० ॥ जीहो विद्याधर धरणी ढल्यो, जीहो तव तिहां आव्यो कुमार ॥ जीहो वातादिक उपचारथी, जीहो कुंअर करे उपगार ॥ १३ ॥ सु० ॥ जीहो स्वस्थ करी कुंअर कहे, जीहो हाथमां ले तरवार ॥ जीहो धीरज अवलंबी मने, जीहो मूक म निज व्यवहार ॥ १४ ॥ सु० ॥ जीहो तव नाखे विद्याधरु, जीहो तुज साथे किशी होड ॥ जीहो त्रण भुवनमां तुज समो, जीहो न मले बीजी जोड ॥ १५ ॥ सु० ॥ जीहो जास विचारुं मा-हरी, जीहो विफल थइ सवि सार ॥ जीहो पुण्य रहित हुं प्राणीयो, जीहो तुं पुण्यवंत शिरदार ॥ १६ ॥ सु० ॥ जीहो तुं गंभीर सोहामणो, जीहो ताहरो वचन विन्यास ॥ जीहो धीरवंत तुं अति घणो, जीहो तुज उदारता खास ॥ १७ ॥ सु० ॥ जीहो रूपवंत महिमानिलो, जीहो गुणगणथी भरी देह ॥ जीहो बालानो प्रतिबंध जे, जीहो थानक दीसे एह ॥ १८ ॥ सु० ॥ जीहो नारी-रतन जे एहवी, जीहो नवि जुगति अन्य गाय ॥ जीहो काकने अंबनी मंजरी, जीहो योग्य नहीं केणे काय ॥ १९ ॥ सु० ॥ जीहो राजहंसने यो-ग्य ते, जीहो दर्दुर नलिनी न योग ॥ जीहो योग्य नहीं ते जीवीया, जीहो ए नारीशुं जोग ॥ २० ॥ सु० ॥ जीहो तेह तुम्हे फल पामीया, जीहो हुं थयो रागे रे अंध ॥ जीहो रागअंधने दुःख होवे, जीहो अंध अधिक कामांध ॥ २१ ॥ सु० ॥ यतः ॥ दिवा पश्यति नो घूकः, काको नक्तं न पश्यति ॥ अपूर्वः कोऽपि कामांधो, दिवा नक्तं न पश्यति ॥ १ ॥ जीहो तुज गुणे मुज मन

खंचीयुं, जीहो जेम चमके करी लोह ॥ जीहो ताहरो सेवक हुं सदा, जीहो देखी गुण संदोह ॥ २२ ॥ सु० ॥ जीहो निर्गुण होय प्रसिद्ध घणा, जीहो जिम मकराकर रीत ॥ जीहो एह कुमर परे गुण घणा, जीहो जगमां नहीं परतीत ॥ २३ ॥ सु० ॥ जीहो जसमती मनमां एणी परे, जीहो चिंतवे हुं पुण्यवंत ॥ जीहो एहना गुण नवि धरी शकुं, जीहो एक हृदये करी तंत ॥ २४ ॥ सु० ॥ जीहो एक वाचाथी नवि शके, जीहो एहना गुण कही कोय ॥ जीहो अंगीकरशे के नहीं, जीहो मुझ मन थाय ए सोय ॥ २५ ॥ सु० ॥ जीहो हाथे न पामे कूवमो, जीहो कल्पवृक्षफल जेह ॥ जीहो मरुपंथी पामे किमु, जीहो मानस सरजल तेह ॥ २६ ॥ सु० ॥ जीहो रत्ननिधान दुःखीया घरे, जीहो लहीये दुर्लभ एह ॥ जीहो अम्ह हाथे केम आवशे, जीहो एह पुरुष गुणगेह ॥ २७ ॥ सु० ॥ जीहो पण जाणुं हुं मन थकी, जीहो दृष्टि एहनी देख ॥ जीहो आदरशे मुझने सही, जीहो संशय नहीं इहां रेख ॥ २८ ॥ सु० ॥ जीहो कहे खेचर कुंअर सुणो, जीहो खमजो मुझ अपराध ॥ जीहो लज्जित तव कुंअर कहे, जीहो तुं गुणवंत अगाध ॥ २९ ॥ सु० ॥ जीहो कहे विद्याधर जे कहे, जीहो ते करुं ताहरुं काम ॥ जीहो कहे कुंअर सुणो जाइये, जीहो गिरि वैताढ्यने गाम ॥ ३० ॥ सु० ॥ जीहो तेरमी ढाल एणी परे, जीहो चोथे ए अधिकार ॥ जीहो पद्मविजय कहे पुण्यथी, जीहो होवे जय जयकार ॥ ३१ ॥ सु० ॥

॥ दोहा ॥

॥ शाश्वत प्रतिमा वंदीये, सिद्धायतने सार ॥ भाखे कुंवर एणी परे, एहज जग हितकार ॥ १ ॥ इणी अवसर तिहां आवीयो, विद्याधर परिवार ॥ मणिशेखर सेवक सहु, तास गवेषणहार ॥ २ ॥ सहु प्रणमे कुंअर प्रति, जाणी तस उपगार ॥ वे विद्याधर मोकले, निज सैन्यमां कुमार ॥ ३ ॥ वात सुणावी सैन्यने, निज पुर मोकले सैन्य ॥ तेमावे धावमातने, कहेवरावी शुभ वेण ॥ ४ ॥ हवे कुंअरनां वचनथी, वैताढ्ये लेइ जाय ॥ जसमती धावमाता वली, साथ लीये तिणे ठाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥

॥ अब लीलां रंगावो वरनां मोलीयां ॥ ए देशी ॥ शाश्वत जिनप्रतिमा वंदीये, जेम वंदे शंखकुमारो रे ॥ पूजा रचे अष्ट प्रकारनी, आणंद उल्लास

अपारो रे ॥ शा० ॥ १ ॥ जावे जिनवर स्तवना करे, जाणी तस लाज अ
रो रे ॥ श्रीउत्तराध्ययने जाखीयो, उंगणत्रीशमे अधिकारो रे॥ शा० ॥
यडुक्तं ॥ थय थुइ मंगलेणं, जंते जीवे किं जणइ ॥ थय थुइ मंगलेणं,
दंसण चरित्त बोहिलाजं जणई॥ १ ॥ नाण दंसण चरित्त, बोहिलाजं सं
जीवे ॥ अंतकिरियं कप्पविमाणो विचियं, आराहणं आराहेई॥ २ ॥ अ
गवती सूत्र मांहे नमे, चारण मुनि जिनवरचैत्य रे ॥ तिम वेताढ्ये जि
नमे, ते शंखकुमर तिहां नित्य रे ॥ शा० ॥ ३॥ श्रीरुषजप्रजु पहेला य
चंद्रानन बीजा धारी रे॥ वारिषेण प्रजु त्रीजा लह्या, वर्द्धमान नामे
धारी रे ॥ शा० ॥ ४ ॥ ए चार नामे जिन शाश्वता, प्रणमे मणिशेखर
रे॥ अनुक्रमे कनकपुरे तिहां, तेनी आवे निज पुर साथ रे ॥ शा
॥ ५ ॥ बहु जक्ति करे मनरंगथी, निज घर मांहे लेइ आवे रे॥ विद्याधर
जसमती, अंग अनंग न मावे रे॥ शा० ॥ ६ ॥ विद्याधर शंखकुमारनुं,
देखी मन घणुं मोहे रे ॥ वेताढ्यवासी सवि खेचरा, सांजली यश
ति सोहे रे ॥ शा० ॥ ७ ॥ सवि आवी तस पासे रहे, क्षण एक पासुं
मूके रे ॥ सहु रायना शत्रु वश करे, ते पण कोइ विनय न चूके
शा० ॥ ८ ॥ ते रीते सवि रागी हुवा, जेम भृत्य जाव धरे सरवे रे ॥
निज घर तेनी हर्षशुं, यांचे धुया विवाहने करवे रे ॥ शा० ॥ ए ॥
ते परणे नहीं एम कहे, जसमती परखा पठी वातो रे ॥ केताइक
तिहां रही करी, हवे करे प्रयाणनी वातो रे॥ शा० ॥ १० ॥ मणि
कुमर विमानमां, वली ले निज पुत्री साथे रे॥ विद्याधर सहस गमे ति
आवे लेइ निज धूया हाथे रे ॥ शा० ॥ ११ ॥ जसमती पण
लेइ वल्यो, चंपा नयरीए पहोतो रे ॥ विद्याधर तब एक मोकले, म
शेखर नृप सम होतो रे॥ शा० ॥ १२ ॥ जितारि नृप आनंदीयो, नवि
देहे न गेहे रे ॥ सामंत मंत्री पुरजन वली, परवरीयो नृप घणुं रेहे
शा० ॥ १३॥ शंखकुमरनी साहमो आवीयो, हरखे करी कुमर आ
रे ॥ सहु खेचरने सन्मानीया, पाय पडे जसमती रंगे रे ॥ शा० ॥
नृपति पण मस्तक चुंबतो, सवि लोकने हर्ष न माय रे॥ पुरलोक
उर सहु करे, प्रशंसा मली समुदाय रे ॥ शा० ॥ १५ ॥ ए कुमर ते

नृपनो उपगारी ए भाख्यो रे ॥ शा० ॥ १६ ॥ सांभलतो श्लाघा एणी परे, बहु रिद्धि थकी परवरीयो रे ॥ कामिनीनां कटाक्ष कमल थकी, पूजाने गामे ते धरीयो रे ॥ शा० ॥ १७॥ प्रवेश करे चंपापुरी, पहोतो राज्यभवने तेह रे॥ देश नयरमां करे वधामणां, नरपति तिहां अति ससनेह रे॥ शा०॥ ॥ १८ ॥ श्रीवासुपूज्य जिनराजनी, प्रतिमा वंदे बहु भावे रे॥ चारण जिम अन्ननां चैत्यने, वंदे भगवती कहे चावे रे ॥ शा० ॥ १९ ॥ जेम द्रौपदी छठा अंगमां, कल्पसूत्रमां सिद्धरु रायो रे ॥ जिनवरपूजा भाखी भली, नवि माने ते दुर्गति जायो रे ॥ शा० ॥ २० ॥ जिनवरनी पूजा शास्त्रमां, भाखी छे अनेक प्रकारो रे ॥ षट दर्शन मांहे नहीं किहां, पूजानो कीध निवारो रे ॥ शा० ॥ २१ ॥ सूरियाभ सुरे पूजा करी, ते समकितवंत महं- त रे ॥ मिथ्या करणी ते नवि करे, वखाणे वीर भगवंत रे ॥ शा० ॥२२॥ यतः ॥ पापं लुंपति दुर्गतिं दलयति, व्यापादयत्यापदं ॥ पुण्यं संचिनुते श्रियं वितनुते, पुष्णाति नीरोगताम्॥ सौभाग्यं विदधाति पल्लवयति, प्रीतिं प्रसूते यशः ॥ स्वर्गं यच्छति निर्वृतिं रचय,-त्यर्चार्हतां निर्मिता ॥ ३ ॥ निज आम कुलार्यने मानतो, तिहां पूजे जिनवर पायो रे॥ शुभ दिवसे शुभ लग्ने हवे, महा रिद्धि थकी ते रायो रे॥ शा० ॥ २३ ॥ जसमती परणावे प्रेमशुं, विद्या- धरनी बहु कुमरी रे ॥ परणे तिहां अति हरखे करी, जिनवचन पूर्वनुं समरी रे ॥ शा० ॥ २४ ॥ विद्याधर निज थानक गया, सुख भोग- वे शंखकुमारो रे ॥ जसमती अन्य नारी साथे भला, भोग भोगवे अति श्रीकारो रे ॥ शा० ॥ २५ ॥ जसमती ने शंखकुमर तणे, अति आकरी प्रीति बंधाणी रे ॥ क्षण एक वियोग न सही शके, एम लोक कहे ते वाणी रे ॥ शा० ॥ २६ ॥ विधि कुटिल प्रकृति खल जाणीयें, नित्य चाले अयुक्त पंथे रे ॥ जसमती शंखकुमर संयोगथी, अपयश मानुं निज मंथे रे॥ शा० ॥ २७ ॥ जुओ कुमरीने कोण हरी गयो, एह तो मूकावी आव्यो रे ॥ ए रचना विधि विनु नवि होय, शंख परे उज्ज्वल गुण भाव्यो रे ॥ शा० ॥ ॥ २८ ॥ चोथे अधिकारे चौदमी, ढाल भाखी उज्ज्वल करी रे॥ कहे पद्मविजय आगल सुणो, करणी शंखकुमार अनेरी रे॥ शा० ॥ २९ ॥ सर्व गाथा ॥ ४३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुख भोगवतां निज सभे, आव्यो एक तिहां दूत ॥ श्रीषेण राये मो-

तेम मंत्री सामंत प्रमोद ॥ गुणधर गणधर पासे लीये, दीक्षा विधिथी लही मोद ॥ १० ॥ न० ॥ भणी सूत्रने गीतारथ थया, करे उग्र तपस्या साध ॥ निरतिचार चारित्र पालता, नवि करता कोइ अपराध ॥ ११ ॥ ॥ न० ॥ हवे शंख राय पाले राज्यने, वश करी वयरीनो व्रात ॥ पट्टदेवी जसमतीने करे, मतिप्रज्ञ मंत्रिपदे थात ॥ १२ ॥ न० ॥ आणा वहे सहु परजा तिहां, सीधां सघलां नृपकाज ॥ पूरवे जे दुःसाध्यने साधीयां, पावे अखंड एम राज ॥ १३ ॥ न० ॥ देश मांहे सघले करावतो, जिनवरनां चैत्य विशाल ॥ करे स्वर्गशुं तेह विवादने, वली करतो तास संभाल ॥ ॥ १४ ॥ न० ॥ करे रथयात्राउं तेहवी, देखीने थाय आह्लाद ॥ करे दानशालाउं पगपगे, नवि स्वपर विशेष विवाद ॥ १५ ॥ न० ॥ पडह वजावे अमारीना, करे साहमीवच्छल राय ॥ जे निर्धन ते धनवंत कस्या, त्रण भुवनने आनंद थाय ॥ १६ ॥ न० ॥ श्रीषेण मुनीश्वर विचरता, करे कर्म तणो नित्य घात ॥ तपरूप अग्नि पेदा करी, घातिकर्म इंधण करे पात ॥ १७ ॥ ॥ न० ॥ एम सकल घातिकर्म क्षय करी, ऋषि पाम्या केवलज्ञान ॥ प्रतिबोध करे सूरज परे, भवि लोककमल अज्ञान ॥ १८ ॥ न० ॥ एक दिन हथिणाउरे आवीया, अनुक्रमे विहार करंत ॥ रचे कनककमल सुरवर तिहां, गंधोदक फूल वरसंत ॥ १९ ॥ न० ॥ सहसंबवन उद्यानमां, आवी समवसस्या शुद्ध ठाय ॥ उद्यानपाल भूपालने, वधामणी दीये तिहां आय ॥ २० ॥ न० ॥ तस दान देइ संतोषीयो, हरख्यो मन राय अपार ॥ हवे केवलीने वंदन भणी, सज्ज थाय करी शणगार ॥ २१ ॥ न० ॥ एम ए चोथा अधिकारनी, भाखी पन्नरमी ढाल ॥ गुरु उत्तमविजय कृपा थकी, होय पद्मने मंगलमाल ॥ २२ ॥ न० ॥ सर्व गाथा ॥ ४९७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ गज तुरंगम अति भला, रथ भटनो नहीं पार ॥ सामंत मंत्रीसर सहित, पुरजन लोक अपार ॥ १ ॥ जसमती प्रमुख अंतेउरी, लेइ सघलो परिवार ॥ पहोतो राय उद्यानमां, उतरे गजथी तिवार ॥ २ ॥ पंच अभिगम साचवी, करे प्रदक्षिणा तीन ॥ विनये केवलीने नमी, बेठो आणंद पीन ॥ ३ ॥ शंख भूपति भाखे इस्युं, करी कृपा मुज स्वाम ॥ जे मुज करवा योग्य ते, भाखो करुं शिर नाम ॥ ४ ॥ एक पिता ने मुनिवरु, वली बहुं

केवलज्ञान ॥ तुम विना कहो केहनुं करुं, स्वामी जी बहु मान ॥ ५ ॥

॥ ढाल सोलमी ॥

॥ वैरागी थयो ॥ ए देशी ॥ केवली कहे सुण नृपति रे, त्रण्य भुवनमां सार ॥ मूकी एक शुद्ध धर्मने, अवर न को आधारो रे ॥ १ ॥ भविजन सांजलो ॥ धारो धर्मनी बुद्धि रे, मूकी आमलो ॥ ए आंकणी ॥ आदि नहीं संसारनी रे, तेहमां भमतो जीव ॥ बहु धानक धन अर्जीयो रे, कीधां पाप अतीव रे ॥ २ ॥ भ० ॥ धन अर्थे दुःख बहु सह्यां रे, कहेतां नावे पार ॥ कर्मबंधन तेहथी थयां रे, जोगवे अन्य भूनारो रे ॥ ३ ॥ भ० ॥ भर यौवनमां आवीयो रे, रूप प्रवर बहु नार ॥ ते पण राखी नवि रही रे, मूकी अनंती वारो रे ॥ ४ ॥ भ० ॥ जीव एकेके जोगव्यां रे, राज्य अनंती वार ॥ नवमा ग्रैवेयक लगे गयो रे, पण नवि लह्यो भवपारो रे ॥ ५ ॥ भ० ॥ जीवाभिगमे भाखीयो रे, वली कहे भगवती अंग ॥ दास रंकपणुं पामीयो रे, तमस्तमा दुःख लह्यां अंगो रे ॥ ६ ॥ भ० ॥ मात पिता पुत्रजपणे रे, भ्रात कलत्र ने बहेन ॥ शत्रु मित्रपणे वली रे, वार अनंत लह्यु एण रे ॥ ७ ॥ भ० ॥ यतः ॥ न सा जाइ न सा जोणी, न तं ठाणं न तं कुलं ॥ न जाया न मुया जथ, सव्व जीवा अणंतसो ॥ १ ॥ पण संतोष न सुख थकी रे, दुःखथी नहीं निर्वेद ॥ मोह विषे धारितपणे रे, नष्ट विवेक लहे खेदो रे ॥ ८ ॥ भ० ॥ लखमी विषय शरीर ए रे, सयण यौवन वली राज्य ॥ पंचेंद्रिय सुख पामीया रे, आ भवमां पण आजो रे ॥ ९ ॥ भ० ॥ करिकर्ण चंचलनी परे रे, लखमी अथिर बद्ध जाण ॥ फल किंपाकनी सारिखां रे, विषय विनाश वखाणो रे ॥ १० ॥ भ० ॥ यतः ॥ अथिरा उ लछिर्ड, अथिरा विसया ॥ इति वचनात् ॥ पाप करे ए प्राणीयो रे, जेह शरीरने काज ॥ ते पण परमारथ थकी रे, अथिर अशुचि तणी पाजो रे ॥ ११ ॥ भ० ॥ यतः ॥ तरुण पतण विद्धंसण, धम्मे इति सव्वेई उवेहर्ड ॥ इंद्रवजाछंद ॥ अचेतन प्रेत,दरीर जरेत,भरी मन खेत,की है यह क्यारी ॥ व्याधिकी पोट,आराधिकी ढंट,उपाधिकी जोट,समाधिसुं न्यारी ॥ रे जीउ देह, करे सुखहाणि,इत्तो परतो तुंहि, लागत प्यारी ॥ देही तो तोही, तजेगि निदानपें,तुंहि तजे न क्युं, देहकी यारी ॥ १ ॥ संध्या समये वृक्षमां रे,पंखी मिले बहु त्यांहि ॥ प्रातः समय जाइ दह दिशे रे, को किहां ने को

क्यांहि रे ॥ १२ ॥ ज० ॥ तिम सवि सज्जन आवी मल्यो रे, कर्मवशे इहां आय ॥ आयुक्षये सहु थानके रे, कर्म कस्यां तिहां जाय रे ॥ १३ ॥ ज० ॥ हास्य बीजा मद जेहथी रे, वली ममकार ते थाय ॥ जरा राखसी योवन हरे रे, समय समय घटे आयो रे ॥ १४ ॥ ज० ॥ राज्य मांहे सुख नहीं कदी रे, सुख अभिमान ते जाण ॥ दीरघ जवफल पामतो रे, आजव पण दुःख गणो रे ॥ १५ ॥ ज० ॥ खरज खनननी उपमा रे, जवसुख जाण नांहि ॥ तुछ अने दुःखमूल छे रे, कटु फलनां दीये वृंदो रे ॥ १६ ॥ ॥ ज० ॥ ते कारण आधार छे रे, धर्म जगत हितकार ॥ सार शाश्वत सुखदायको रे, जाणी अपूर्व उदारो रे ॥ १७ ॥ ज० ॥ पामी मनुजनो जव जलो रे, सांजलो धर्म विशेष ॥ करीये पण ए धर्मने रे, चिंतवीये शुज रेख रे ॥ १८ ॥ ज० ॥ सुख दुःख अर्थ ने काममां रे, चित्तबद्ध नर जेह ॥ न करे ए जिनधर्मने रे, बहु हारे नर तेह रे ॥ १९ ॥ ज० ॥ अनंत पुजलपरिवर्त्ते रे, अंते पाम्यो ए धर्म ॥ ते पण फोकट हारीयो रे, दुर्लज फरी ए मर्म रे ॥ २० ॥ ज० ॥ संवेगे पुलकित थइ रे, आंसु जरीयां रे नयण ॥ नृपति कर जोडी कहे रे, जेम कह्यो छो तेम वयण रे ॥ २१ ॥ ज० ॥ जेम चाहुं स्वामी तुमे रे, तेम करशुं मुनिराय ॥ थापी जसमती पुत्रने रे, पुंडरीक निज ठाय रे ॥ २२ ॥ ज० ॥ पण स्वामी किरपा करी रे, जाखो मुजने रे एह ॥ कारण शुं स्वामी कहो रे, जसमती उपर नेह रे ॥ २३ ॥ ॥ ज० ॥ चोथा ए अधिकारमां रे, जाखी सोलमी ढाल ॥ पद्मविजय कहे केवली रे, जाखे प्रेम विशाल रे ॥ २४ ॥ ज० ॥ सर्व गाथा ॥ ५२५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पूरव जवना नेहथी, बांध्यो अविहड प्रेम ॥ धनकुमार ने धनवती, प्रथम जवे तुम्हे एम ॥ १ ॥ ते जवमां समकित लह्युं, पाली प्रव्रज्या सार ॥ सौधर्मे सुर उपना, मित्रपणे श्रीकार ॥ २ ॥ मित्रगति ने रयणवई, श्री जवनातनो योग ॥ विद्याधर जवमां थया, महाजननो उपजोग ॥ ३ ॥ माहिंद देवलोके मित्र हो, चोथा जवमां जाण ॥ अपराजित ने प्रीतिमती, दंपति जाणो मन आण ॥ ४ ॥ आरणकल्पे उपना, मित्रपणे तिहां देव ॥ सातमे जव शंखकुमार नृं, जसमती नारी हेव ॥ ५ ॥ अपराजित विमानमां, उपजो बहु प्रेम ॥ तिहांथी नारदहेमनां, थाइश अरिहा नेम ॥ ६ ॥

नामे धुया, उग्रसेननी सार ॥ तुऊ पासे संयम ग्रही, शिव
ार ॥ ७ ॥ गुणधर जसधर बांधवा, मतिप्रज्ञ मंत्री खास ॥
ी पामशे, ए पण ताह्री पास ॥ ० ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

अने टोका वच्चे रे, मेंदीनां दोय रूंख ॥ मेंदी रंग लागो ॥ ए देशी ॥
इम सांचली रे, उल्लसित श्रंग अपार ॥ संयमरंग लागो ॥ ए
पुंमरीक निज पुत्रने रे, थापे राज्य उदार ॥ १ ॥ सं० ॥ तृण
रमा तजी रे ॥ शंख राय दोय बंधु ॥ सं० ॥ जसमती ने मति-
, तजी संसार संबंध ॥ २ ॥ सं० ॥ केवली पासे श्रादरे रे, श्रति
ाण ॥ सं० ॥ दीक्षा जिनवरनी कही रे, जेहथी थाय कल्याण
॥ शंख मुनि जणतां थका रे, गीतारथपद थाय ॥ सं० ॥
निर्मलुं रे, नवि श्रतिचार लगाय ॥ ४ ॥ सं० ॥ तीर्थंकरपद
सेवी थानक वीश ॥ सं० ॥ जक्ति करे मुनि एणी परे रे, थाये
ोश ॥ ५ ॥ सं० ॥ श्ररिहंत तस प्रतिमा वली रे, स्तवे पूजे
ं० ॥ श्रवर्णवाद बोले नहीं रे, श्ररिहंतपद इम चंग ॥ ६ ॥ सं० ॥
स्तवना करे रे, सिद्ध स्थानकने देख ॥ सं० ॥ रात्रि जागरण
रे, ज्ञानादिक गुण पेख ॥ ७ ॥ सं० ॥ बालक ग्लान मुनि तणी
ावच्च सार ॥ ॥ सं० ॥ प्रवचननुं वात्सल्य करे रे, त्रीजे पदे इम
॥ सं० ॥ वस्त्र श्राहार श्रौषध वली रे, श्रापे करी श्रति जक्त
ोथुं थानक इणी परे रे, श्राराधे निज शक्त ॥ ए ॥ सं० ॥ वीश
थी रे, साठ वरष वये वृद्ध ॥ सं० ॥ जघन्यथी समवायांग
थिविर जक्ति एम सिद्ध ॥ १० ॥ सं० ॥ बहुश्रुत अर्थ श्रपेक्षथी रे,
नित सेव ॥ सं० ॥ श्रन्न वस्त्रादिक श्रापवुं रे, पद ठठुं एम हेव
ं० ॥ तप उत्कृष्ट करे घणां रे, जेह तपस्वी लोक ॥ सं० ॥ उठंजो
ते रे, सतम पद इम रोक ॥ १२ ॥ सं० ॥ प्रश्न करे लीये
द्वादशांगीनी जेह ॥ सं० ॥ सूत्र श्ररथ उपयोगथी रे, श्रष्टम पद
॥ १३ ॥ सं० ॥ शंकादिक दूषण नहीं रे, धैर्यादिक गुण युत्त ॥ सं० ॥
ादिक थकी रे, दर्शन पद एम उत्त ॥ १४ ॥ सं० ॥ रत्नत्रयी उपचा-
िनय करे गुणगेह ॥ सं० ॥ प्रथमाध्ययन विनय कह्यो रे, उत्तराध्ययने

क्यांहि रे ॥ १२ ॥ ज० ॥ तिम सवि सज्जन आवी मल्यो रे, कर्मवशे इहां थाय ॥ आयुक्षये सहु थानके रे, कर्म कस्यां तिहां जाय रे ॥ १३ ॥ ज० ॥ हास्य लीला मद जेहथी रे, वली ममकार ते थाय ॥ जरा राखसी यौवन हरे रे, समय समय घटे आयो रे ॥ १४ ॥ ज० ॥ राज्य मांहे सुख नहीं कदी रे, सुख अजिमान ते जाण ॥ दीरघ जवफल पामतो रे, आ जव पण दुःख गणो रे ॥ १५ ॥ ज० ॥ खरज खननी उपमा रे, जवसुख जाण नरिंद ॥ तुछ अने दुःखमूल छे रे, कटु फलनां दीये वृंदो रे ॥ १६ ॥ ॥ ज० ॥ ते कारण आधार छे रे, धर्म जगत हितकार ॥ सार शाश्वत सुखदायको रे, जाणी अपूर्व उदारो रे ॥ १७ ॥ ज० ॥ पामी मनुजनो जव जलो रे, सांजलो धर्म विशेष ॥ करीये पण ए धर्मने रे, चिंतवीये शुज रेख रे ॥ १८ ॥ ज० ॥ सुख दुःख अर्थ ने काममां रे, चित्तगृद्ध नर जेह ॥ न करे ए जिनधर्मने रे, बहु हारे नर तेह रे ॥ १९ ॥ ज० ॥ अनंत पुजलपरिवर्त्त रे, अंते पाम्यो ए धर्म ॥ ते पण फोकट हारीयो रे, दुर्लज फरी ए मर्म रे ॥ २० ॥ ज० ॥ संवेगे पुलकित थइ रे, आंसु जरीयां रे नयण ॥ नृपति कर जोमी कहे रे, जेम कह्यो छो तेम वयण रे ॥ २१ ॥ ज० ॥ जेम जाख्युं स्वामी तुमे रे, तेम करशुं मुनिराय ॥ थापी जसमती पुत्रने रे, पुंमरीक निज गय रे ॥ २२ ॥ ज० ॥ पण स्वामी किरपा करी रे, जाखो मुऊने रे एह ॥ कारण शुं स्वामी कहो रे, जसमती उपर नेह रे ॥ २३ ॥ ॥ ज० ॥ चोथा ए अधिकारमां रे, जाखी सोलमी ढाल ॥ पद्मविजय कहे केवली रे, जाखे प्रेम विशाल रे ॥ २४ ॥ ज० ॥ सर्व गाथा ॥ ५२५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पूरव जवना नेहथी, बांध्यो अविहड प्रेम ॥ धनकुमार ने धनवती, प्रथम जवे तुम्हे एम ॥ १ ॥ ते जवमां समकित लह्युं, पाली प्रव्रज्या सार ॥ सौधर्मे सुर उपना, मित्रपणे श्रीकार ॥ २ ॥ चित्रगति ने रयणवई, श्री जरतारनो योग ॥ विद्याधर जवमां लह्या, महाव्रतनो उपजोग ॥ ३ ॥ माहिंद देवलोके मित्र दो, चोथा जवमां जाण ॥ अपराजित ने प्रीतिमती, पति जायां मन आण ॥ ४ ॥ आरणकल्पे उपना, मित्रपणे तिहां देव ॥ सातमे जव शंखकुमार तुं, जसमती नारी देव ॥ ५ ॥ अपराजित विमानमां, उपजशो बहु प्रेम ॥ तिहांथी जारतक्षेत्रमां, थाइश अरिहा नेम ॥ ६ ॥

राजिमती नामे धुया, उग्रसेननी सार ॥ तुज पासे संयम ग्रही, शिव वहेशे निर्धार ॥ ७ ॥ गुणधर जसधर बांधवा, मतिप्रभ मंत्री खास ॥ गणधरपदवी पामशे, ए पण ताहरी पास ॥ ८ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥ टूक अने टोडा वचे रे, मेंदीनां दोय रूंख ॥ मेंदी रंग लागो ॥ ए देशी ॥ शंखकुमर एम सांभली रे, उल्लसित अंग अपार ॥ संयमरंग लागो ॥ ए आंकणी ॥ पुंडरीक निज पुत्रने रे, थापे राज्य उदार ॥ १ ॥ सं० ॥ तृण परे रमणी रमा तजी रे ॥ शंख राय दोय बंधु ॥ सं० ॥ जसमती ने मतिप्रभ वळी रे, तजी संसार संबंध ॥ २ ॥ सं० ॥ केवली पासे आदरे रे, अति महोटे मंडाण ॥ सं० ॥ दीक्षा जिनवरनी कही रे, जेहथी थाय कल्याण ॥ ३ ॥ सं० ॥ शंख मुनि भणतां थका रे, गीतारथपद थाय ॥ सं० ॥ संयम पाळे निर्मळुं रे, नवि अतिचार लगाय ॥ ४ ॥ सं० ॥ तीर्थंकरपद अर्जीयुं रे, सेवी थानक वीश ॥ सं० ॥ भक्ति करे मुनि एणी परे रे, वाधे जगत जगीश ॥ ५ ॥ सं० ॥ अरिहंत तस प्रतिमा वळी रे, स्तवे पूजे मनरंग ॥ सं० ॥ अवर्णवाद बोले नहीं रे, अरिहंतपद इम चंग ॥ ६ ॥ सं० ॥ सिद्ध तणी स्तवना करे रे, सिद्ध स्थानकने देख ॥ सं० ॥ रात्रि जागरण उत्सव करे रे, ज्ञानादिक गुण पेख ॥ ७ ॥ सं० ॥ बालक ग्लान मुनि तणी रे, करे वेयावच्च सार ॥ ॥ सं० ॥ प्रवचननुं वात्सल्य करे रे, त्रीजे पदे इम धार ॥ ८ ॥ सं० ॥ वस्त्र आहार ओषध वळी रे, आपे करी अति भक्त ॥ सं० ॥ चोथुं थानक इणी परे रे, आराधे निज शक्त ॥ ९ ॥ सं० ॥ वीश वरष पर्यायथी रे, साठ वरष वये वृद्ध ॥ सं० ॥ जघन्यथी समवायांग भण्या रे, थिविर भक्ति एम सिद्ध ॥ १० ॥ सं० ॥ बहुश्रुत अर्थ अपेक्षथी रे, तेहनी करे नित सेव ॥ सं० ॥ अन्न वस्त्रादिक आपवुं रे, पद छठुं एम हेव ॥ ११ ॥ सं० ॥ तप उत्कृष्ट करे घणां रे, जेह तपस्वी लोक ॥ सं० ॥ तेहने दीये तेहने रे, सतम पद इम रोक ॥ १२ ॥ सं० ॥ प्रश्न करे लीये वाचना रे, द्वादशांगीनी जेह ॥ सं० ॥ सूत्र अरथ उपयोगथी रे, अष्टम पद पामे एह ॥ १३ ॥ सं० ॥ शंकादिक दूषण नहीं रे, धैर्यादिक गुण युत्त ॥ सं० ॥ सम संवेगादिक थकी रे, दर्शन पद एम उत्त ॥ १४ ॥ सं० ॥ रत्नत्रयी उपचारथी रे, विनय करे गुणगेह ॥ सं० ॥ प्रथमाध्ययन विनय कह्यो रे, उत्तराध्ययने

एह ॥ १५ ॥ सं० ॥ इछामिछादिक थकी रे, आवश्यक करे नित ॥ सं० ॥ अतिचारने परिहरे रे, एकादशमे रीत ॥ १६ ॥ सं० ॥ ईर्यासमिति आदि थकी रे, मूल उत्तर गुण सार ॥ सं० ॥ बारमुं पद आराधतो रे, करे सफलो अवतार ॥ १७ ॥ सं० ॥ करतो ते शुभ ध्यानने रे, क्षण क्षण लव लव जेह ॥ सं० ॥ करे परिहार प्रमादनो रे, तेरमुं पद शुभ रेह ॥ १८ ॥ सं० ॥ बाधारहितपणे करे रे, निरवांछकता युक्त ॥ सं० ॥ चौदमे पद तपनी करे रे, भुक्तभोगी एम मुक्त ॥ १९ ॥ सं० ॥ संविभाग तपसी विषे रे, अन्नादिकनो होय ॥ सं० ॥ त्रिकरण शुद्धे ते करे रे, पन्नरमुं पद जोय ॥ २० ॥ सं० ॥ आचार्यादिक दश तणे रे, वेयावच्चना कार ॥ सं० ॥ भक्त पान आणी दीये रे, सोलमे पद निर्धार ॥ ॥ २१ ॥ सं० ॥ साधु ने वली साधवी रे, श्रावक श्राविका सार ॥ सं० ॥ सर्व अपाय निषेधतो रे, सत्तरमुं पद धार ॥ २२ ॥ सं० ॥ सूत्र अर्थ अपूर्वनुं रे, ग्रहण करे ऋषिराय ॥ सं० ॥ एम अढारमुं पद भलुं रे, नित्य आराधन थाय ॥ २३ ॥ सं० ॥ श्रद्धाने दीपाववुं रे, अवर्णवादनो रोक ॥ इम श्रुतज्ञाननी भक्तिथी रे, उंगणीशमुं गतशोक ॥ २४ ॥ सं० ॥ विद्या निमित्त कविपणे रे, वाद कहे वली धर्म ॥ सं० ॥ शासननी उन्नति करे रे, विशमा पदनो ए मर्म ॥ २५ ॥ सं० ॥ तीर्थंकर नाम गोत्रने रे, अर्जे शंखकुमार ॥ सं० ॥ दीर्घ काल पाल्युं भलुं रे, संयम निरतिचार ॥ २६ ॥ सं० ॥ अंते अणसण आदरे रे, पादोपगमन विशाल ॥ सं० ॥ वृक्षभाल परे थिर थइ रे, करे समाधिमां काल ॥ २७ ॥ सं० ॥ अपराजित विमानमां रे, शंख ने जसमती दोय ॥ सं० ॥ तिम मतिप्रभ दोय बांधवा रे, देवपणे सहु होय ॥ २८ ॥ सं० ॥ तेत्रीश सागर आउखे रे, कल्पमां बत्रीश लाल ॥ सं० ॥ आठमा भवमां एणी परे रे, भोगवे भोग विशाल ॥ २९ ॥ सं० ॥ चोथे अधिकारे कही रे, ए सत्तरमी ढाल ॥ सं० ॥ ए अधिकार पूरण थयो रे, आठमो भव सुविशाल ॥ ३० ॥ सं० ॥ पहेले अधिकारे कही रे, ढालो चार उदार ॥ सं० ॥ नव भाखी बीजा तणी रे, त्रीजानी अग्यार ॥ ३१ ॥ सं० ॥ ॥ चोथानी सत्तर कही रे, सवि उंगणपचास ॥ सं० ॥ प्रथम खंड पूरण थयो रे, हुवे अधिक उल्लास ॥ ३२ ॥ सं० ॥ सत्यविजय गुरु राजीया रे, कपूरविजय तस शिष्य ॥ सं० ॥ क्षमाविजय तस पाटवी रे, अधिकी

जास जगीश ॥३३॥ सं० ॥ तस पटोदय उगीयो रे, मानुं अभिनव नाण ॥ सं० ॥ जिनविजयो जगमां जयो रे, जस नामे सुखखाण ॥३४॥ सं० ॥ श्रुतउदधि पारंगमो रे, उत्तमविजय गुरु नाम ॥ सं० ॥ रत्नविजय गणि कहेणथी रे, उद्यम कीध उद्दाम ॥ ३५ ॥ सं० ॥ पद्मविजय कहे जिन तणा रे, पूरव भव विस्तार ॥ सं० ॥ भाख्या अति हर्षे करी रे, सुणतां जय जयकार ॥ ३६ ॥ सं० ॥ सर्व गाथा ॥५६७॥ इति चतुर्थोऽधिकारः ॥४॥ खंड खंड सरसाइ घणी, जिम साकर भेली पय भणी ॥ गुरु श्रीउत्तमविजयथी लह्यो, प्रथम खंड एम पद्मे कह्यो ॥ ५३० ॥ प्रथमाधिकारे सर्व गाथा ॥ ३७७ ॥ द्वितीयाधिकारे ॥ ३२२ ॥ तृतीयाधिकारे ॥ ३७३ ॥ चतुर्थाधिकारे ॥ ५७० ॥ सर्व गाथा ॥ १६४३ ॥ इति प्रथमः खंडः समाप्तः ॥ १ ॥

॥ अथ नेमिनाथचरित्रे द्वितीयखंडस्य प्रथमोऽधिकारः प्रारभ्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रणमी सरसती गुणवती, जे मुखकज मंडाण ॥ बीजो खंड हवे वर्णवुं, श्रोता सुणो सुजाण ॥ १ ॥ सूरजमंडन पास वली, प्रणमुं धर्म जिणंद ॥ जे भव पास निवारीने, आपे धर्म अमंद ॥ २ ॥ श्रीमलधार गछे नमुं, हेमसूरि जस नाम ॥ जास वचनरस लव लही, लहीये ए कवि नाम ॥ ३ ॥ कुमारपाल भूपालनो, जे गुरु हेम सूरींद ॥ तस प्रणमी तस वचनथी, भाखुं चरित्र जिणंद ॥ ४ ॥ दीक्षा विद्यागुरु नमुं, उत्तम सुविधि जास ॥ शुद्ध प्ररूपक ने वली, बहु किरिया अभ्यास ॥ ५ ॥ जिम जिम भाखुं आगले, तिम रस अधिको थाय ॥ तिणे श्रोता सुणजो सवे, आलस दूर उडाय ॥ ६ ॥ एक हेम जो कर चडे, तो दुःखीयो नवि थाय ॥ दोय हेम जस हाथमां, तस भव किम न पूजाय ॥ ७ ॥ भविजन भक्ति धरी घणी, करो निद्रा तुमे दूर ॥ बांधे कांक्षा मोहनी, एह प्रमादथी भूर ॥ ८ ॥ आठ दोष प्रमादथी, होवे परगट भाव ॥ होय अजाण संशय वली, मिथ्याज्ञान स्वभाव ॥ ९ ॥ राग द्वेष मतिभ्रंश तिम, धर्म अनादर थाय ॥ दुःप्रणिधाने योगनो, एम अवगुण कहेवाय ॥ १० ॥ यतः ॥ भगवती-सूत्रे ॥ कहण्णं भंते जीवा कंखा मोहणिज्जं, कम्मं बंधंति ॥ गोयमा दपच्चयं

इत्यादौ,तदुक्तौ ॥ गाथा ॥ पमाउय मुणिंदेहिं,भणिउं अठ भेएउं ॥ अन्नाणं संसउ चेव, मिठानाणं तदेव य ॥ १ ॥ रागो दोसो मइप्पासो, धम्मंमि प्रणायरो ॥ जोगाण डुप्पणीहाणं, अठहा वज्जिअव्वउं ॥ २ ॥ ते कारण तुम्हे भविजना, मत करजो परमाद ॥ सुणशे जे सुणशे कथा, रसउकर्षे आह्लाद ॥ ११ ॥ आठे भव एम वर्णवी, नवमो भाखुं सार ॥ हरिवंशे प्रभु उपना, जिनवर नेमकुमार ॥ १२ ॥ ते कारण हरिवंशनी, कहुं उत्पत्ति उदार ॥ जे सांभलतां भव तणा, जाये पापविकार ॥ १३ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ अरज अरज सुणोने रुमा राजीया हो जी ॥ ए देशी ॥ ऋषभ ऋषभ जिनेश्वरना थया हो जी, चक्री भरत नरिंद ॥ पाट पाट असंख्याता वही गया हो जी, उपना सीयल जिणंद ॥ ऋ० ॥ १ ॥ तेहना तेहना तीर्थमां उपनो हो जी, सुमुख नामे नरिंद ॥ आव्यो आव्यो कोसंबी बाहिरे हो जी, रयवाडीने आणंद ॥ ऋ० ॥ २ ॥ वीर वीर कुविंदनी भारजा हो जी, वनमाला तिहां दीठ ॥ अतिशय अतिशय रूपवती भली हो जी, देखी मनमां उक्किठ ॥ ऋ० ॥ ३ ॥ नारीने नारीने अंतेउरे ठवे हो जी, तव ते वीर कुविंद ॥ तेहना तेहना वियोगथी आकलो हो जी, करतो बहुत आक्रंद ॥ ऋ० ॥ ४ ॥ फाटां फाटां वस्त्र पहेर्यां तिणे हो जी, धुले खरडी देह ॥ वनमाला वनमाला करतो थको हो जी, भिंभे परवस्यो तेह ॥ ऋ० ॥ ५ ॥ पुरमां पुरमां भमतां एक दिने हो जी, देखे ते नरनाह ॥ नारीए नारीए गोंखथी हो जी, दीठो हींडतो राह ॥ ऋ० ॥ ६ ॥ पामी पामी विषाद ते बेहु जणां हो जी, निंदे आतम आप ॥ इण समे इण समे वीजली तेहां पडी हो जी, मानुं लागो शाप ॥ ऋ० ॥ ७ ॥ काल काल करीने उपना हो जी, युगल हरिवर्ष खेत ॥ वीर पण वीर पण तप अज्ञानथी हो जी, सोहम देव संकेत ॥ ऋ० ॥ ८ ॥ अवधि अवधिथी वैर संभारतो हो जी, चंपा नयरीनो राय ॥ पुत्र पुत्र नहीं चंडकीर्त्तिने हो जी, ऋषभे तस जमराय ॥ ऋ० ॥ ९ ॥ भेला भेला नगरना जन थया हो जी, खोले रायने तेह ॥ चिंते चिंते देवता युगलने हो जी, मारी तो नवि शकुं रेह ॥ ऋ० ॥ १० ॥ जिम दुःख जिम दुःख पामे ए बहु हो जी, तिम करुं हुं निर्धार ॥ धनुशत धनुशतनी करी देहनी हो जी, लावे चंपानी बार ॥ ऋ० ॥ ११ ॥ न-

गर नगरनां लोकने एम कहे हो जी, तुमचो एह राजान ॥ लक्षण लक्षण सहित थाशो अबे हो जी, हरिवर्षथी एह यान ॥ कु० ॥ १२ ॥ हरि नाम हरि नाम राजा ए रुथनो हो जी, हरणी नामे ए नार ॥ कल्पवृक्ष कल्पवृक्ष लावे वली हो जी, चाखे वली तिणी वार ॥ कु० ॥ १३ ॥ मत्र ने मत्र ने मृग थादे देइ हो जी, जल थल खेचर जीव ॥ थामिष थामिष एहने थापजो हो जी, कल्पवृक्ष फलथी अतीव ॥ कु० ॥ १४ ॥ एणी परे एणी परे देज्यो तिहां लगे हो जी, जिहां मांस निःकेवल खाय ॥ मदिरा मदिरा प्रमुख देजो तुने हो जी, जिणी पेरे डुर्गति जाय ॥ कु० ॥ १५ ॥ हाथ हाथ जोमी सहु सांजले हो जी, वचन करे ते प्रमाण ॥ रथवर रथवरमां बेसामीने हो जी, करता वहोत मंनाण ॥ कु० ॥ १६ ॥ मस्तक मस्तक छत्र धरावतो हो जी, हरिणी देवी ते साथ ॥ वाजती वाजती अतीव डुंडुहि हो जी, विरुद बोले सहु साथ ॥ कु० ॥ १७ ॥ इणी परे इणी परे घर उद्यानथी हो जी, थाणी हर्ष अत्यंत ॥ अनुक्रमे अनुक्रमे नयविक्रम थकी हो जी, नाथ समुद्र पर्यंत ॥ कु० ॥ १८ ॥ जगमां जगमां ते परगट थयो हो जी, थायु पण थयुं ह्रास ॥ हरिवर्ष हरिवर्षथी थाव्युं युगलीयुं हो जी, तिणे हरिवंश विलास ॥ कु० ॥ १९ ॥ अथवा अथवा नाम हरि हतुं हो जी, तिणे ए थयो हरिवंश ॥ काल काल अनंते उपजे हो जी, एह अचेरुं असंश ॥ कु० ॥ २० ॥ एहवां एहवां ए चोवीशीए हो जी, दश आश्चर्य ते थाय ॥ ग्रंथ ग्रंथ विस्तारना जय थकी हो जी, नवि जाणुं इण ठाय ॥ कु० ॥ २१ ॥ यतः ॥ उवसग्ग गप्रहरणं, इत्थी तित्थं अनाविया पुरिसा ॥ कण्हस्स अवरकंका, अवरयणं चंदसूरेणं ॥ १ ॥ हरिवंसकुलुप्पत्ति, चमरुप्पाउ अ अठसय सिद्धा ॥ असंजयाण पूया, दसवियणं तेण कालेण ॥ २ ॥ हरिनृप हरिनृप पुत्र ते उपनो हो जी, पृथिवीपति नामे राय ॥ तेहनो तेहनो महागिरि सुत थयो हो जी, हिमगिरि नृप सुत सार ॥ कु० ॥ २२ ॥ तेहनो तेहनो वसुगिरि सुत थयो हो जी, मित्रगिरि सुत सार ॥ एणी परे एणी परे पाट असंख्य थया हो जी, उत्तम जस अवतार ॥ कु० ॥ २३ ॥ पुत्र पुत्र पद थापीने दीक्षाने हो जी, पाले संयम भार ॥ अनुक्रमे अनुक्रमे मुनिसुव्रत थयो हो जी, तीर्थंकरपद धार ॥ कु० ॥ २४ ॥ तेहुने तेहुने पाटे बहु नरपति हो जी, हुआ ते अतिक्रांत ॥ जिनवर जिनवर

कहे सुण बाल रे ॥ रा० ॥ क० ॥ पुत्री कोइक परणावशुं रे, जाचीने तत्काल रे ॥ रा० ॥ १३ ॥ क० ॥ धीरो थाजे बालका रे, तव चिंते नंदिषेण रे, ॥ रा० ॥ क० ॥ मातुलपुत्री इछे नहीं रे, अन्य वांछे कहो केण रे ॥ रा० ॥ १४ ॥ क० ॥ हुं तो दुःखित रूपथी रे, इम मन धरी वैराग्य रे ॥ रा० ॥ क० ॥ नीकल्यो मातुल घर थकी रे, कीधो नंदिपुर त्याग रे ॥ रा० ॥ १५ ॥ ॥ क० ॥ रत्नपुरे पहोतो वही रे, क्रीमा करतां जाम रे ॥ रा० ॥ क० ॥ दंपतीने देखी तिहां रे, निज निंदा करे ताम रे ॥ रा० ॥ १६ ॥ क० ॥ मरवानी इछा करी रे, कोइ वनांतरे जाय रे ॥ रा० ॥ क० ॥ देखीने प्रणमे तिहां रे, सुस्थित मुनि ऋषिराय रे ॥ रा० ॥ १७ ॥ क० ॥ जाणी ज्ञानथी मुनिवरु रे, जाखे एणी परे वाण रे ॥ रा० ॥ क० ॥ मरण न कर महाजाग तुं रे, पामीश दुःखनी खाण रे ॥ रा० ॥ १८ ॥ क० ॥ धर्म न कीधो परजवे रे, दुःख पामे तिणे आज रे ॥ रा० ॥ क० ॥ सुख अर्थी करो धर्मने रे, धर्मथी लहो शिवराज रे ॥ रा० ॥ १९ ॥ क० ॥ आत्मघात कीधा थका रे, सुख नवि होवे कोय रे ॥ रा० ॥ क० ॥ धर्म दीक्षाथी पामीये रे, जव जव सुख लहे सोय रे ॥ रा० ॥ २० ॥ क० ॥ सुणी प्रतिबोध ते पामीयो रे, लीये महाव्रत मुनि पास रे ॥ रा० ॥ क० ॥ गीतारथ अजिग्रह करे रे, साधु वैयावच्च खास रे ॥ रा० ॥ २१ ॥ क० ॥ बाल ग्लानादिक साधुनी रे, वेयावच्च करे तेह रे ॥ रा० ॥ क० ॥ अजिग्रह ते पूरो करे रे, गुणगणनो मुनि गेह रे ॥ रा० ॥ २२ ॥ क० ॥ एक दिन इंद्र प्रशंसता रे, देवसजा मांहि सार रे ॥ रा० ॥ क० ॥ नंदिषेण समो नहीं रे, वेयावच्च करनार रे ॥ रा० ॥ २३ ॥ क० ॥ शक्रवचन अणमानतो रे, देव एक कहे एम रे ॥ रा० ॥ क० ॥ पूर्णीयी नगर चंपाइयुं रे, ते मातुं कहो केम रे ॥ रा० ॥ २४ ॥ क० ॥ रूप धरी ग्लान साधुनुं रे, रतनपुर उद्यान रे ॥ रा० ॥ क० ॥ वेसारी ते साधुने रे, कूट धरी मन ध्यान रे ॥ रा० ॥ २५ ॥ ॥ क० ॥ रूप बीजुं वली साधुनुं रे, करी जाये पुर मांह रे ॥ रा० ॥ क० ॥ मुनि वसतिए आवतो रे, मनमां धरी उत्साह रे ॥ रा० ॥ २६ ॥ क० ॥ बीजे खंडे बीजी थइ रे, ढाल प्रथम अधिकार रे ॥ रा० ॥ क० ॥ पद्मविजय कहे सांजलो रे, मुनिदृढता अधिकार रे ॥ रा० ॥ २७ ॥ क० ॥ सर्व गाथा ॥ ७३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तप तपता अति आकरां, नंदिषेण मुनिराज ॥ पारणदिन तेहज थठे, करता आतम काज ॥ १ ॥ करवा वेगा आहार ते, कवल उपाडे जाम ॥ तव सुर साधुवेषधी, बोले वचन उद्दाम ॥ २ ॥ करी प्रतिज्ञा एहवी, वेयावच्च करुं सर्व ॥ पण तुं बोले एटलुं, नवि करतो धरे गर्व ॥ ३ ॥ अतिसार रोगे करी, पीडे मुनिवर अंग ॥ तृषाक्रांत मुनिवर जला, वनमां वेगा चंग ॥ ४ ॥ तेहनी खबर लीधा विना, जोजन करतो तुंही ॥ पेटजरा थातां थका, होय प्रतिज्ञा शुंही ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ श्रेणिक मुनिवर चाल्या गोचरी ॥ ए देशी ॥ समतासागर मुनिवर चालीया, मूकी कवल ते गमो जी ॥ पाणी लेवा रे मुनि घर घर जमे, लब्धि तणा गुरु धामो जी ॥ १ ॥ स० ॥ कल्प होय ते सुर अकल्प करे, पण मुनि लब्धिप्रजावे जी ॥ पाणी शुद्ध मल्युं तव लेइ वल्या, वन अजिमुख ते जावे जी ॥ २ ॥ स० ॥ ढुकडा आवे रे तव माया मुनि, जाखे वचन कठोर जी ॥ रे मूरख हुं अवस्था एहवी, पाम्यो वेगो कुठोर जी ॥ ३ ॥ स० ॥ जोजनलोलुप तुं तो थइ रह्यो, शीघ्र न आव्यो केन जी ॥ वेयावच्चनी प्रतिज्ञा ताहरे, कहे केम रहेशे एम जी ॥ ४ ॥ स० ॥ कहे नंदिषेण स्वामी माहारो, खमजो तुम्हे अपराधो जी ॥ सज्ज करुं तुम्ह थोडे दिन हवे, यद्यपि रोग अगाधो जी ॥ ५ ॥ स० ॥ पाणी एह उचित ठे मुनिवरु, एम कही पावे नीरो जी ॥ कहे चालो स्वामी जी उपाश्ररे, नंदिषेण मुनि धीरो जी ॥ ६ ॥ स० ॥ ग्लान मुनि कहे धिग् तुऊ मुंऊने, चालणने असमर्थो जी ॥ देखीने वली मुऊने शुं कहे, तुऊ प्रतिज्ञा व्यर्थो जी ॥ ७ ॥ स० ॥ खंध बेसारीने नंदिषेण जी, चाल्या मारग जामो जी ॥ पगे पगे क्रोध करे माया मुनि, जाखे एणी परे तामो जी ॥ ८ ॥ स० ॥ शीघ्र तुं केम चाले रे पापीया, मुऊने उपजे खेदो जी ॥ हलवे हलवे चाल तुं शुज परे, उपजे मुऊ प्रस्वेदो जी ॥ ए ॥ स० ॥ तव मुनि चाले मंद गते करी, देव अमर्ष धरंत जी ॥ करे वनीनीति मुनिनी उपरे, वली इणी परे जाखंत जी ॥ १० ॥ स० ॥ वेगनो जंग करे तुं किणी परे, तव चिंते ऋषिरायो जी ॥ रोग

थकी जाखे इणी परे सहु, पण किम रोग ए जायो जी ॥ ११ ॥ स० ॥ वचन कटुक पण इणी परे नवि गणे, मनमां नंदिषेणो जी ॥ तव परिणाम मुनिनो देखीने, मोद लहे सुर तेणो जी ॥ १२ ॥ स० ॥ करे संहार ते विष्टा देहथी, कुसुमनी वृष्टि करंत जी ॥ त्रण प्रदक्षिणा देइ देव ते, दिव्य सरूपे नमंत जी ॥ १३ ॥ स० ॥ शक्रप्रशंसा रे दिक सवि मुनि प्रते, वात कही सवि तेहो जी ॥ कहे खमावी शुं आपुं हवे, जाखो समतागेहो जी॥ १४ ॥ स० ॥ तव कहे मुनिवर सुण में पामीयो, धर्म जिनेश्वर सारो जी ॥ एह संसारमां ज्ञमतां दोहिलो, एहथी नहीं को श्रीकारो जी ॥ १५ ॥ स० ॥ इम कही देवता निज थानक गयो, मुनि उपाश्रये आवे जी॥ कारण पामे दख्यो निज आतमा, इम मन मांहे जावे जी ॥ १६ ॥ स० ॥ पूछे मुनि बहु तिहां नंदिषेणने, तव ते निरहंकारो जी ॥ वात कही सवि ते पण हरखीया, धन्य ताहरो अवतारो जी ॥ १७ ॥ स० ॥ बार हजार वरस लगी आकरां, तप तपीयां मुनिरायजी ॥ अंत अवस्था जाणी आदरे, अणसणमां इम ध्याय जी ॥ १८ ॥ स० ॥ जो दोर्जाग्य हतुं मुजने इहां, नवि इच्यो मुज केणे जी ॥ रमणीवल्लज तो हुं थाप जो, तपफलथी हुं पणे जी ॥ १९ ॥ स० ॥ करी नियाणुं तपफल हारीयो, महाशुक्रे थयो देवो जी ॥ तिहांथी चवी तुज सुतपणे उपनो, नंदिषेण वसुदेवो जी ॥ २० ॥ स० ॥ बीजे खंडे प्रथम अधिकारमां, जाखी बीजी ढालो जी ॥ पद्मविजय कहे श्रोताने घरे, होजो मंगलमालो जी॥ ॥ २१ ॥ स० ॥ सर्व गाथा ॥ १०९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नव नियाणां नवि करो, सांजलो विगते तेह ॥ प्रथम नियाणुं नृप तणुं, जावे इणी परे जेह ॥ १ ॥ नवि दीसे कोइ देवता, दीसे प्रत्यक्ष राय ॥ तिणे राजा परजवे थयो, नृप नियाणुं थाय ॥ २ ॥ राजाने चिंता घणी, सुखीया दीसे शेठ ॥ तिणे धनवंतनो पुत्र हुं, थाजो सहुमां जेठ ॥ ३ ॥ बहु व्यापार पुरुष प्रते, युद्धादिक होय तास ॥ तिण नारी थाउंयो नवी, एह नियाणुं त्रास ॥ ४ ॥ होय पराजव नारीने, पराधीन बहु दुःख ॥ तिणे करी नरपणुं पामजो, जिहां होवे बहु सुख ॥ ५ ॥ काम जोग ए मनुष्यना, एम चिंते दुःखदाय ॥ तिणे हुं देवपणुं चहुं, तो आतम सुख

थाय ॥ ६ ॥ देव देवीनां रूपने, करीने सेवुं जोग ॥ मनमां चिंते एहवुं, पामे तेह संयोग ॥ ७ ॥ दुर्लजबोधी ते होये, हवे कहुं अप्रविचार ॥ काम जोग इछा विणु, देव नियाणुं सार ॥ ८ ॥ सुलजबोधी थाये जलो, देशविरति नवि थाय ॥ नियाणुं ए सातमुं, अप्रविचार कहेवाय ॥ ९ ॥ दानादिक श्रावक करे, तिणे श्रावक थाउं सार ॥ सर्वविरति तिणे नवि लहे, ए आठमुं उदार ॥ १० ॥ करे नियाणुं दरिद्रनुं, न करे आरंज जेह ॥ तेहथी मोक्ष पामे नहीं, नवमुं जाख्युं एह ॥ ११ ॥ नंदिषेण जवे तिहां, कखुं नियाणुं एम ॥ तिणे सहु स्त्रीजन वालहो, वली नृप तुऊ अति प्रेम ॥ १२ ॥ तिण कारण तुमे जविजना, न करो कोइ नियाण ॥ चिंतामणि साटे लीये, कोमी कोण अजाण ॥ १३ ॥ अंधकवृष्णि इम सुणी, मन उपनो वैराग्य ॥ समुद्रविजय राज्ये ठवी, लीये दीक्षा महाजाग्य ॥ १४ ॥ पाली चारित्र पामीयो, केवलज्ञान अनूप ॥ अनुक्रमे ते मोक्षे गया, थया ते निज गुण जूप ॥ ॥ १५ ॥ उग्रसेन राज्ये ठवे, जोजवृष्णि महाराज ॥ ते पण दीक्षा आदरे, लेवा शिवपुरराज ॥ १६ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ राग विहाग ॥ मनमां आवजो रे नाथ ॥ ए देशी ॥ उग्रसेन नृप एक दिन हवे, देखे ते मथुरा बार ॥ तापस एक ते रुयनो, करे विनति मनुहार ॥ १ ॥ मुऊ घर आवजो रे नाथ, जिम थाउं हुं रे सनाथ ॥ ए आंकणी ॥ मास मासनुं करे पारणुं, धारे अजिग्रह एम ॥ पारणुं एक घरे करुं, बीजे घेर नहीं तेम ॥ २ ॥ मु० ॥ तस घरे योग जो नवि बने, तो वली मास उपवास ॥ तापसने इम करी विनति, आवे ते निज आवास ॥ ३ ॥ ॥ मु० ॥ राजा तो सहु विसरी गयो, नवि कह्युं को प्रतिहार ॥ आव्यो ते तापस तिहां कणे, नवि पामीयो कांइ आहार ॥ ४ ॥ मु० ॥ पाछो वलीने ते गयो, वली करे बीजो मास ॥ एक दिन वली देखी करी, नृप खमावे वली तास ॥ ५ ॥ मु० ॥ स्वामी हवे कृपा करी, पारणुं मुऊ घर थाय ॥ एम कहीने राय घरे गयो, वली विसरी ते जाय ॥ ६ ॥ मु० ॥ वली तापस ते फरी गयो, थया तेहने त्रण मास ॥ एक दिन वली देखी करी, राजा खमावे खास ॥ ७ ॥ मु० ॥ वली करे एम निमंत्रणा, क्रोधे करी ते जराय ॥ करे विनति आपे नहीं ,जुउं दुष्ट ठे ए राय ॥ ८ ॥ मु० ॥ एणी परे नि-

याणुं ते करे, तप तणुं फल जो होय ॥ तो नवांतर नृपवध जणी, थाउं कहीं तप खोय ॥ ए ॥ मु० ॥ तिहां थ्यायखुं पूरुं करी, उग्रसेन नृपनी नार ॥ धारणी तणे उदरे थयो, करतो अतिहि विकार ॥ १० ॥ मु० ॥ दोहद ते एहवो उपजे, पतिमांस नक्षण काज ॥ दिन दिन ते कृशता लहे, धरती ते मनमां लाज ॥ ११ ॥ मु० ॥ घणे कष्टथी दोहला तणी, कही वात सघली जाम ॥ राखी अंधारे उरडे, उग्रसेन नृपने ताम ॥ १२ ॥ मु० ॥ शशला तणुं आमिष ग्रही, बांधे ते नृपने पेट ॥ मंत्री ते कापी कापीने, आपे राणीने नेट ॥ १३ ॥ मु० ॥ दोहला ते राणीना थया, संपूर्ण नावे त्यांह ॥ मन मांहे राणी चिंतवे, जावुं हवे कहो क्यांह ॥ १४ ॥ मु० ॥ नरतार विना पुत्रे किस्युं, हवे जीववुं नहीं युत्त ॥ मरवा नणी ते सज्ज थइ, तव मंत्री कहे इम उत्त ॥ १५ ॥ मु० ॥ साते दिने देखावशुं, जीवतो स्वामी तुऊ ॥ एम स्वस्थ करी राणी प्रते, पण नवि कह्युं ते गुह्य ॥ १६ ॥ ॥ मु० ॥ देखावता दिन सातमे, उग्रसेन नृपने जाम ॥ करे महोत्सव हर्षशुं, धारणी राणी ताम ॥ १७ ॥ मु० ॥ पोष वदि चौदश दिने, विष्टि ने मूल नक्षत्र ॥ प्रसवे ते राणी यामिनी, विष वृक्ष परे कुपुत्र ॥ १८ ॥ मु० ॥ राणी ते बीहीनी तेहथी, दोहला तणे अनुसार ॥ पूर्वे करावी कांसनी, पेटी ते अति मनोहार ॥ १९ ॥ मु० ॥ पुत्रने तेहमां खेपवी, रतने करी ते पूर ॥ नृपनाम अंकित मुद्रिका, वली पत्रिका लखी तूर ॥ २० ॥ मु० ॥ आपी ते दासी हाथमां, वेवरावी जमुना मांहि ॥ रायने राणी कहे तदा, मृत पुत्र प्रसव्यो त्यांहि ॥ २१ ॥ मु० ॥ शौरी ते पुरनी बाहिरे, मंजूषा आवी जाम ॥ शौचने अर्थे आवीयो, सुनद्र देखे ताम ॥ २२ ॥ मु० ॥ काढे नदीना पूरथी, परजात समये तेह ॥ पत्रिका रत्ननी मुद्रिका, देखे शिशु गुणगेह ॥ २३ ॥ मु० ॥ पाम्यो ते विस्मय आकरो, आणे सुखे निज गेह ॥ निज नारीने दीये सुत नणी, लहे हर्ष अति ससनेह ॥ २४ ॥ मु० ॥ पेटी तणे नामे करे, दंपती अनिधा कंस ॥ दिन दिन ते हवे वाधतो, जणवे पोतानो वंश ॥ २५ ॥ मु० ॥ बालक तणा ते वृंदमां, क्रीमतो करे कल्लोल ॥ थाय ते राजा सहु तणो, कोइ न करे तस तोल ॥ २६ ॥ मु० ॥ बीजे ते खंडे ढाल ए, चोथी प्रथम अधिकार ॥ कहे पद्म नवि जाये कही, कर्मा पुण्य ते निर्धार ॥ २७ ॥ मु० ॥ सर्व गाथा ॥ १५२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रमतां ते बालक प्रते, मारे कूटे नित्य ॥ लोक उलंजा तस करे, मात पिता शुज रीत ॥ १ ॥ ते पण दंपती कंसने, आपे जइ वसुदेव ॥ मर्यादा दश वर्षनी, कंस करे तस सेव ॥ २ ॥ ॥ प्रीति वधी ते बेहुने, सकल कला जणे दोय ॥ क्रीमा पण साथे करे, यौवन पण तस होय ॥ ३ ॥ पाम्या तेह प्रसिद्धि एम, ते वसुदेव ने कंस ॥ चंद्र अने अंगार जेम, लोक करे परशंस ॥ ४ ॥ शुक्तिमती नयरी थकी, सुवसु वसुनो नंद ॥ नासी नागपुरे गयो, जाणी क्लेश आक्रंद ॥ ५ ॥ पुत्र वृहद्रथ तेहनो, राजगृहे ते जाय ॥ तेहना वंशमां उपनो, नाम वृहद्रथ राय ॥ ६ ॥ पुत्र जरासंध तेहनो, प्रतिवासुदेव महंत ॥ त्रणे खंमनो अधिपति, आण प्रचंम दुरंत ॥ ७ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ घोमी तो आइ धारा देशमां मारुजी ॥ ए देशी ॥ एक दिन दूत ते मोकले ॥ राजनजी ॥ समुद्रविजयने पास हो ॥ करो काम अमारुं एटलुं ॥ ए आंकणी ॥ गिरि वैताढ्य पासे वसे ॥ रा० ॥ सिंहपुरी सुखवास हो ॥ १ ॥ क० ॥ सिंह परे अति आकरो ॥ रा० ॥ सिंहरथ नामे राय हो ॥ ॥ क० ॥ बांधीने आणो इहां ॥ रा० ॥ तो करशुं हुं पसाय हो ॥ २ ॥ क० ॥ तेहने निज पुत्री आपशुं ॥ रा० ॥ वली मनवल्लज शुज गाम हो ॥ क० ॥ एम जरासंधे कहावीयो ॥ रा० ॥ बलवंत सुणी तुऊ नाम हो ॥ ३ ॥ क० ॥ समुद्रविजय जब सज्ज होये ॥ रा० ॥ तव वसुदेव ने कंस हो ॥ क० ॥ करी प्रणामने विनवे ॥ रा० ॥ हुं सिंहरथ करुं ध्वंस हो ॥ ४ ॥ क० ॥ समुद्रविजय कहे सांजलो ॥ रा० ॥ तुम्हे अति बालकुमार हो ॥ क० ॥ युद्धनो अवसर तुऊ नहीं ॥ रा० ॥ तुमे रहो इहां करो सार हो ॥ ५ ॥ क० ॥ आग्रहथी वली याचीयो ॥ रा० ॥ तव दीये सेना साथ हो ॥ क० ॥ शीघ्र आवे वसुदेवने ॥ रा० ॥ सन्मुख ते सिंहनाथ हो ॥ ६ ॥ ॥ क० ॥ युद्ध लागुं बेहुने तिहां ॥ रा० ॥ हारे वसुदेव सैन्य हो ॥ क० ॥ कंस थयो तव सारथी ॥ रा० ॥ युद्ध करे अति अदैन्य हो ॥ ७ ॥ क० ॥ सुर असुर परे अमर्षे ॥ रा० ॥ विविध शस्त्रे करे युद्ध हो ॥ क० ॥ परिघ लेइ एक हाथमां ॥ रा० ॥ कंस ते उछ्यो क्रुद्ध हो ॥ ८ ॥ क० ॥ जांज्यो सिंहरथ रथ प्रते ॥ रा० ॥ चूर्ण थइ गयो तेह हो ॥ क० ॥ तव

सिंहरथ क्रोधे चढ्यो ॥ रा० ॥ लेइ करवाल कर तेह हो ॥ ए ॥ क
मारवा धावे कंसने ॥ रा० ॥ तव क्षुरप्रे वसुदेव हो ॥ क० ॥ छेदी अ
बांधीयो ॥ रा० ॥ वृक जिम छागने हेव हो ॥ १० ॥ क० ॥ कंस न
वसुदेवना ॥ रा० ॥ रथमां ठल वल जाए हो ॥ क० ॥ सैन्य सवि न
गयुं ॥ रा० ॥ सिंहरथनुं सपराण हो ॥ ११ ॥ क० ॥ जय पाम्या व
व जी ॥ रा० ॥ शौरीपुरमां जाय हो ॥ क० ॥ समुद्रविजय हरख्या
॥ रा० ॥ करे प्रशंसा ते राय हो ॥ १२ ॥ क० ॥ समुद्रविजय वसुदेव
रा० ॥ जाखे एकांते एम हो ॥ क० ॥ कौष्टुक निमित्तिए जाखीयुं ॥ रा
मुजने धरी अति प्रेम हो ॥ १३ ॥ क० ॥ जीवयशा जरासंधने ॥ रा
पुत्री लक्षण हीन हो ॥ क० ॥ पति पितृकुल क्षय करी ॥ रा० ॥ एह
अति दीन हो ॥ १४ ॥ क० ॥ सिंहरथ राय आण्या थकी ॥ रा० ॥ पुत्री
तास हो ॥ क० ॥ तास निवारण चिंतवो ॥ रा० ॥ कहे वसुदेव ते ख
हो ॥ १५ ॥ क० ॥ कंसे सिंहरथ बांधीयो ॥ रा० ॥ आपो कन्या एण
॥ क० ॥ वणिकपुत्र राजा कहे ॥ रा० ॥ नहीं आपे कोइ वयण हो ॥ १
॥ क० ॥ विक्रम क्षत्रिय सारिखुं ॥ रा० ॥ देखी इहे निर्धार हो ॥ क० ॥
वणिकने नृपति ॥ रा० ॥ पूछे हवे वारंवार हो ॥ १७ ॥ क० ॥ वात कही स
कंसनी ॥ रा० ॥ आपे मुद्रिका जेह हो ॥ क० ॥ पत्रिका पण आपे तदा ॥ रा
पत्रिका वांचे तेह हो ॥ १८ ॥ क० ॥ वांची चिंते नृपति ॥ रा० ॥ उग्रसेन
सार हो ॥ क० ॥ ते विना वीर्य न एहवुं ॥ रा० ॥ जगमां कोइ निर्धार हो ॥ १९
क० ॥ समुद्रविजय लेइ कंसने ॥ रा० ॥ जाए जरासंध पास हो ॥ क० ॥ स
सिंहरथ राजीयो ॥ रा० ॥ कंस पराक्रम वास हो ॥ २० ॥ क० ॥ जीवयशा आ
तिणे ॥ रा० ॥ हवे कहे नगरी माग हो ॥ क० ॥ मथुरा नगरी मागतो ॥ रा
तात वैरनो लाग हो ॥ २१ ॥ क० ॥ मथुरा आपी कंसने ॥ रा० ॥ आव्यो मथु
ताम हो ॥ क० ॥ काष्ठपंजरमां खेपवे ॥ रा० ॥ उग्रसेन तिणे गम
॥ २२ ॥ क० ॥ पूर्वे वात सुणी हती ॥ रा० ॥ वणिके जाखी तिवार
॥ क० ॥ तेहथी क्रोधे धमधम्यो ॥ रा० ॥ मागी मथुरा प्यार हो ॥ २३
क० ॥ पुत्र घणा उग्रसेनने ॥ रा० ॥ अयमत्तादिक नाम हो ॥ क० ॥ अ
मंजस देखी तातने ॥ रा० ॥ होय वैराग्यनुं धाम हो ॥ २४ ॥ क०
अयमत्तो व्रत आदरे ॥ रा० ॥ तात दुःखे तिणी वार हो ॥ क० ॥ रा

तणां सुख जोगवे ॥ रा० ॥ माने सहु तस कार हो ॥ २५ ॥ क० ॥ जामाता जरासंधनो ॥ रा० ॥ वली विक्रम निज देख हो ॥ क० ॥ तृण सम जाणे सहु प्रते ॥ रा० ॥ अथ भुवन सुविशेष हो ॥ २६ ॥ क० ॥ बीजे खंडे पांचमी ॥ रा० ॥ ढाल प्रथम अधिकार हो ॥ क० ॥ पद्मविजय कहे सांजलो ॥ रा० ॥ सुणतां जय जयकार हो ॥ २७ ॥ क० ॥ सर्व गाथा ॥ १०६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शौरीपुरथी तेनीयो, सुजद्र वाणियो जेह ॥ बहु सुवर्णादिक दानथी, सत्कारे धरी नेह ॥ १ ॥ तव धारणी बहु विलपती, करे अनेक पोकार ॥ पण ते दुष्ट मूके नहीं, यमराजा अनुहार ॥ २ ॥ कंस मंजूषामां ठवी, मूक्यो जमुना मांहि ॥ उग्रसेन जाणे नहीं, मुज अपराध चे कांही ॥ ३ ॥ तिणे मुज नर्त्ता मूक तुं, नित नित जाखे एम ॥ पण मूके नहीं तेहने, पूर्व निदानथी तेम ॥ ४ ॥ समुद्रविजय राजा प्रते, दीधो अति सत्कार ॥ राजगृही नगरी थकी, आवे निज पुर सार ॥ ५ ॥

॥ ढाल ठही ॥

॥ धुर समरी सरसती माय, वली प्रणमी सद्गुरुराय ॥ धुलशुं अर्बुद गिरिराय, जविजन जेटीये जले जावे ॥ ए देशी ॥ वसुदेव शौरीपुर मांहि, करे क्रीडा अति उठांहि ॥ गाम गाम जमे सुख ज्यांहि ॥ १ ॥ सहु तिहां साजन मली आवे, वसुदेव तणा गुण गावे ॥ ए आंकणी ॥ वसुदेव हींडीर्या जाणो, विस्तार थकी मन आणो ॥ संक्षेप कहुं इण ठाणो ॥ २ ॥ स० ॥ जिम मंत्र आकर्षी आवे, तिम नगरनारी सहु धावे ॥ वसुदेवने मनमां ध्यावे ॥ ३ ॥ स० ॥ जिम कामण कीधुं होवे, फरी फरी वसुदेवने जोवे ॥ घरे सुखमां को नवि सोवे ॥ ४ ॥ स० ॥ मधुपुडा पुठे जेम नारी, घरमां जाये चित्त रांखी ॥ जाइ शीघ्र आवुं इम जाखी ॥ ५ ॥ स० ॥ घरमां नवि दीसे नारी, नवि जोजन करे दुःख धारी ॥ तरसी रहे ते निर्धारी ॥ ६ ॥ स० ॥ एक एकने ठेली जावे, पति जमतो मूकी आवे ॥ निशिदिन ध्यान तेहनुं ध्यावे ॥ ७ ॥ स० ॥ खंडण पीसण व्यापार, रंधण करणी तेणी वार ॥ नवि करती नारी ए सार ॥ ८ ॥ स० ॥ न उठावे बरणारण, करे नागरी तेहनुं शरण ॥ एहने पाडुं पूर्व चरण ॥ ९ ॥ स० ॥ घरकाम सवि ढोरतां, जावे वसुदेवने पेरी ॥ एम नगरलोक सहु देखी ॥ १० ॥ स० ॥

असमंजस वात ए थाय, नित नित एह तो न खमाय ॥ सहु राजद्वारे मली जाय ॥ ११ ॥ स० ॥ कहे समुद्रविजयने एम, कहो प्रभु करीये अमे केम ॥ कहे समुद्रविजय धरी प्रेम ॥ १२ ॥ स० ॥ शुं दुःख ले तुमने दाखो, तुमे स्पष्टपणे मुज भाखो ॥ तस उत्तर चित्तमां राखो ॥ १३ ॥ स० ॥ सुणो स्वामी वात हमारी, वसुदेव पुठे सहु नारी ॥ ध्यावे चित्तमां सहु तस धारी ॥ १४ ॥ स० ॥ कोइ नासे स्नान करंती, आभूषण अंगे धरंती ॥ विपरीत ते नासे फरंती ॥ १५ ॥ स० ॥ म्हेली त्रूटी वेएयो चाले, व्यंतरीनी परे पडे टाले, कामीजननां चित्त ते हाले ॥ १६ ॥ स० ॥ एम नगरमां थयुं विपरीत, अमने उपजे अप्रीत ॥ पण न घटे तुम ए रीत ॥ १७ ॥ स० ॥ ए कुमरने राखो वाली, के अमने मूको उचाली ॥ तुमने कहीये खाली खाली ॥ १८ ॥ स० ॥ एम सांजली राय ते बोले, तुमे शे कारण थया टोले ॥ शुं वात करो हइओले ॥ १९ ॥ स० ॥ तुम्ह इछित करशुं काज, नवि कहेजो वसुदेव राज ॥ एम कहुं वारंवार हुं आज ॥ २० ॥ स० ॥ विसर्जे सहुने राय, नमवा वसुदेव ते जाय ॥ बेसारे अंके जाय ॥ २१ ॥ स० ॥ कहे समुद्रविजय सुणो वात, कृश दीसे तुम्हारुं गात ॥ अम मनमां चिंता थात ॥ २२ ॥ स० ॥ मत जाजो क्रीडा करवा, बाहिर जाओ शे फरवा ॥ देखीजे एक दिन मरवा ॥ २३ ॥ स० ॥ नवनवी कला घरमां वेगा, जणो बुद्धि तणा तुम्हे जेगा ॥ अपूर्व महो उक्किठा ॥ २४ ॥ स० ॥ वेरी दोषी बहु दीसे, कोइ घात करे आवी रीपे ॥ तिणे कहीये विशवावीशे ॥ २५ ॥ स० ॥ वसुदेव विनीतमां चारु, आज्ञा मानी सुखकारु ॥ जेम कह्युं तेम करे अति चारु ॥ २६ ॥ स० ॥ नाटक ने गीत विनोद, करता पामे परमोद ॥ दाने जेम तेह पयोद ॥ २७ ॥ स० ॥ एक दिन तिहां आवती देखे, कुजा दासी शुज्ज वेषे ॥ गंध द्रव्य ते साथे पेखे ॥ २८ ॥ स० ॥ पूछे कुण काजे एह, गंध लेइ जाये ससनेह ॥ कुजा बोली सुणी तेह ॥ २९ ॥ ॥ स० ॥ शिवादेवी राणीए कीधुं, समुद्रविजयने दीधुं ॥ म्हें पण आदरची लीधुं ॥ ३० ॥ स० ॥ वसुदेव कहे सुणो दासी, माहरे अंगे ए थासी ॥ इम झोंटी लीये सुविलासी ॥ ३१ ॥ स० ॥ तव रोपे चढी अति कुजा, कूंजा तुं शुं करे जा जा ॥ सुख जोगवो वेगा ताजां ॥ ३२ ॥ स० ॥ जो एहवां चरित्र तुम्ह दीसे, तो यंत्री राख्या रीपे ॥ नीकलवा न दीये तीसे ॥ ३३ ॥

स० ॥ तब पूछे तास विचार, वीहीनी कहे तेणी वार ॥ जे नयरवात निर्धार ॥ ३४ ॥ स० ॥ बीजे खंडे सुविशाल, पहिले अधिकारे रसाल ॥ कहे पद्मविजय बठी ढाल ॥ ३५ ॥ स० ॥ सर्व गाथा ॥ २२६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ न ठरे वात नारी हृदय, श्वान उदर जिम खीर ॥ जिहां लगे नवि कोइने कहे, तिहां लगे करे तस पीर ॥ १ ॥ मुंज राय नारी थकी, खोयुं शिर ततकाल ॥ नारी चरित्रना अंतनो, नवि पामे कोइ पार ॥ २ ॥ तिहां चिंते वसुदेवजी, मनमां होशे एम ॥ समुद्रविजय राजा तणा, नहींतर इम करे केम ॥ ३ ॥ नगरनारी इछक घणो, फरे पुरमां वसुदेव ॥ यंत्र्यो इम चिंती करी, दृढ जाइजी हेव ॥४॥ एम चिंती दासी प्रते, विसरजी ततकाल ॥ क्षेत्रांतर सूरय गयो, थयो ते संध्याकाल ॥ ५ ॥ लज्जा ने अभिमानथी, देश जोवाने काज ॥ वेष परावर्तन करी, चाल्यो वसुदेव राज॥६॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ हरणी जब चरे लालना ॥ ए देशी ॥ वसुदेव चाल्यो वेगशुं लालना ॥ लाल हो पुर बाहिर ते जाय ॥ कुमर कलानिधो लालना ॥ काष्ट ग्रही तिहां डुकडां ॥ ला० ॥ ला० ॥ चय रचे तिहां एक ठाय ॥ १ ॥ कु० ॥ नाथ रहित एक शव तिहां ॥ ला० ॥ ला० ॥ वाले ते चय मांहि ॥ कु० ॥ भोजपत्रमां एणी परे ॥ ला० ॥ ला० ॥ इम लखे धरी उछांहि ॥ २ ॥ कु० ॥ जेहना दोष कहे जना ॥ ला० ॥ ला० ॥ बहु गुणवंत पण जेह ॥ कु० ॥ केम जीवे दुःख देइने ॥ ला० ॥ ला० ॥ पितरादिकने तेह ॥ ३ ॥ कु० ॥ शीलवंत पण शुं होवे ॥ ला० ॥ ला० ॥ गुणवंतो पण कांय ॥ कु० ॥ जेहथी होय प्रजा दुःखी ॥ ला० ॥ ला० ॥ दुःख पितरादिक थाय ॥ ४ ॥ कु० ॥ एम चिंती चयमां बल्यो ॥ ला० ॥ ला० ॥ पंचत्व लह्यो वसुदेव ॥ कु० ॥ मृतकारज करजो तुमे ॥ ला० ॥ ला० ॥ चीठी लखी एम हेव ॥ ५ ॥ कु० ॥ बांधी गोपुरथंभशुं ॥ ला० ॥ ला० ॥ देवलमां रह्या रात ॥ कु० ॥ नयरी बार रयणी गमी ॥ ला० ॥ ला० ॥ थयो उद्योत प्रभात ॥ ६ ॥ कु० ॥ नीकलीयो वसुदेवजी ॥ ला० ॥ ला० ॥ ब्राह्मणनो करी वेष ॥ कु० ॥ इणी अवसर कोइ अंगना ॥ ला० ॥ ला० ॥ रथ बेठी सुविशेष ॥ ७ ॥ कु० ॥ पीयर जातां बालिका ॥ ला० ॥ ला० ॥ देखी ब्राह्मण तेह ॥ कु० ॥ बालिका कहे

माता प्रते ॥ ला० ॥ ला० ॥ ब्राह्मण थाको एह ॥ ७ ॥ कु० ॥ बेसारो रथ ऊपरे ॥ ला० ॥ ला० ॥ सुणी बेसारे नार ॥ कु० ॥ अनुक्रमे पहोता ते गाममां ॥ ला० ॥ ला० ॥ स्नान करे वली आहार ॥ ए ॥ कु० ॥ यक्ष तणे देउल जइ ॥ ला० ॥ ला० ॥ सूतो संध्याकाल ॥ कु० ॥ पांमव पुठे आवीया ॥ ला० ॥ ला० ॥ जाएयो वसुदेव काल ॥ १० ॥ कु० ॥ खेद लहे सहु यादवा ॥ ला० ॥ ला० ॥ करे आक्रंद पोकार ॥ कु० ॥ हा वसुदेव तुं किहां गयो ॥ ला० ॥ ला ॥ तुं अमचो आधार ॥ ११ ॥ कु० ॥ समुद्रविजय बहु विलपता ॥ ला० ॥ ला० ॥ किहां मुऊ लागुं पाप ॥ कु० ॥ लोकवचनथी राखीयो ॥ ला० ॥ ला० ॥ घरमां कहीने आप ॥ १२ ॥ कु० ॥ तुम मुख क्यारे देखशुं ॥ ला० ॥ ला० ॥ करे मृत्युनां काम ॥ कु० ॥ वात सुणी वसुदेवजी ॥ ला० ॥ ला० ॥ थिर मन थाये ताम ॥ १३ ॥ कु० ॥ विजयखेटकपुरे आवीयो ॥ ला० ॥ ला० ॥ तिहां सुग्रीव वे राय ॥ कु० ॥ श्यामा विजयसेना धुवा ॥ ला० ॥ ला० ॥ रूप कलानो ठाय ॥ १४ ॥ कु० तेह कलाथी जीतीयो ॥ ला० ॥ ला० ॥ परणे तिहां दोय नार ॥ कु० ॥ सुख भोगवतां तेहशुं ॥ ला० ॥ ला० ॥ देव परे अति सार ॥ १५ ॥ कु० ॥ नामे अक्रूर नंदन थयो ॥ ला० ॥ ला० ॥ विजयसेनाने तेह ॥ कु० ॥ ते पण वसुदेव सारिखो ॥ ला० ॥ ला० ॥ मूके प्रछन्न गेह ॥ १६ ॥ कु० ॥ घोर अटवी मांहि गयो ॥ ला० ॥ ला० ॥ तरषा लागी तास ॥ कु० ॥ पोहतो सरतीरे जिसे ॥ ला० ॥ ला० ॥ आव्यो गज तस पास ॥ १७ ॥ कु० ॥ विंध्याचल पर्वत समो ॥ ला० ॥ ला० ॥ चढीयो तस शिर तेह ॥ कु० ॥ खेद पमामी गज प्रते ॥ ला० ॥ ला० ॥ बेठो शिर करी देह ॥ १७ ॥ कु० ॥ अर्चिमाली पवनंजयो ॥ ला० ॥ ला० ॥ विद्याधर ए दोय ॥ कु० ॥ देखी वसुदेव क्रीमतो ॥ ला० ॥ ला० ॥ तेह हरी गया सोय ॥ १ए ॥ कु० ॥ कुंजरावर्त उद्यानमां ॥ ला० ॥ ला० ॥ मूक्यो आणी त्यांहि ॥ कु० ॥ विद्याधर नरपति भलो ॥ ला० ॥ ला० ॥ अशनिवेग वसे ज्यांहि ॥ २० ॥ कु० ॥ श्यामा नामे कन्या भली ॥ ला० ॥ ला० ॥ परणावे तेह रायं ॥ कु० ॥ सुख भोगवे संसारनां ॥ ला० ॥ ला० ॥ दंपती काल गमाय ॥ २१ ॥ कु० ॥ एक दिन वीण वजावतां ॥ ला० ॥ ला० ॥ तूठो वसुदेव तास ॥ कु० ॥ माग तुं वर मुऊ पासथी ॥ ला० ॥ ला० ॥ तव कहे ते सुविलास ॥ २२ ॥ कु० ॥

तुम्ह विरह मुझ मत होजो ॥ ला० ॥ ला० ॥ पूछे कारण तास ॥ कु० ॥ तव श्यामा कहे एणी परे ॥ ला० ॥ ला० ॥ सांजलो धरी उल्लास ॥२३॥ कु० ॥ किन्नरगीतपुरी जली ॥ ला० ॥ ला० ॥ गिरि वेताढ्यमां सार ॥ कु० ॥ अर्चिमाली तिहां राजीयो ॥ ला० ॥ ला० ॥ तेहने दोय कुमार ॥ २४ ॥ कु० ॥ ज्वलन अशनिवेग नामथी ॥ ला० ॥ ल० ॥ ज्वलनवेग ठवे राज्य ॥ कु० ॥ अर्चिमाली व्रत आदर्युं ॥ ला० ॥ ला० ॥ साधे आतमकाज ॥ कु० ॥ २५ ॥ अंगारक तस सुत उपनो ॥ ला० ॥ ला० ॥ ज्वलननी विमला नारी ॥ कु० ॥ अशनिवेगनी हुं धुत्रा ॥ ला० ॥ ला० ॥ सुप्रजा मात मलार ॥ कु० ॥ २६ ॥ अशनिवेग जाइ प्रते ॥ ला० ॥ ला० ॥ ज्वलनवेग ठवे राज ॥ कु० ॥ देवलोक ते पामीया ॥ ला० ॥ ला० ॥ जूपति थयो मुझ ताय ॥ २७ ॥ कु० ॥ राज्य ग्रहे विद्याबले ॥ ला० ॥ ला० ॥ अंगारक जत्रीज ॥ कु० ॥ अशनिवेग अष्टापदे ॥ ला० ॥ ला० ॥ आवे मन धरी खीज ॥ २८ ॥ कु० ॥ चारण मुनि तिहां पेखीयो ॥ ला० ॥ ला० ॥ पूछे प्रश्न उदार ॥ कु० ॥ राज्य थशे मुझ के नहीं ॥ ला० ॥ ला० ॥ मुनि बोले तिणी वार ॥ २९ ॥ कु० ॥ तुझ पुत्री श्यामापति ॥ ला० ॥ ला० ॥ गज जीत्याथी जाण ॥ कु० ॥ तास प्रजाव थकी होशे ॥ ला० ॥ ला० ॥ हरख्यो मुनिवर वाण ॥ ३० ॥ ॥ कु० ॥ नगर वसावी मुझ पिता ॥ ला० ॥ ला० ॥ मुनिवचने इहां ठाय ॥ ॥ कु० ॥ विद्याधर दोय मोकले ॥ ला० ॥ ला० ॥ जलावर्त्ते नित राय ॥ ३१ ॥ ॥ कु० ॥ देखी गज उपर चढ्यो ॥ ला० ॥ ला० ॥ आण्या तुम इण ठार ॥ कु० ॥ मुझ परणावी वेगशुं ॥ ला० ॥ ला० ॥ श्यामा नामे नार ॥ ३२ ॥ ॥ कु० ॥ बीजे खंडे सातमी ॥ ला० ॥ ला० ॥ ढाल प्रथम अधिकार ॥ कु० ॥ पद्मविजय कहे पुण्यथी ॥ ला० ॥ ला० ॥ होवे जय जयकार ॥ ३३ ॥ कु० ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्यामा कहे सुण स्वामी जी, पुण्यवंत शिरदार ॥ तुम्हने घात करे रखे, ते अंगार कुमार ॥ १ ॥ धरणेंद्रे विद्याधरे, कीधो छे आचार ॥ अतीत काल बहु उपरे, सांजलजो निर्धार ॥ २ ॥ जिनवर चैत्यनी ढुकडा, नारी तथा मुनि पास ॥ मारे विद्या तेहनी, होवे सर्व निराश ॥ ३ ॥ ते कारण तुम्ह विनवुं, विरह म थाजो स्वाम ॥ एकाकी तुम्ह पापीयो, रखे हणे कोइ ठाम ॥ ४ ॥ वाणी तेहनी सांजली, अंगीकरे वसुदेव ॥ काल विनोद

गमावतो, एक दिन सुतां देव ॥ ५ ॥ अंगारक खेचर तिहां, हरी जाय आ
काश ॥ वलीयो पण ठलन्नेदथी, नवि पूगे कोइ तास ॥ ६ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ जीरे मारे जाग्यो कुंवर जाम ॥ ए देशी ॥ जीरे मारे जाग्यो वसु
देव जाम, चिंते कुणे मुऊ अपहस्यो ॥ जीरे जी ॥ जी० ॥ देखे अंगार
ताम, श्यामा खड्ग करे धस्यो ॥ जी० ॥ १ ॥ जी० ॥ युद्ध ते करता दोय
श्यामाने खंमित करी ॥ जी० ॥ जी० ॥ बे श्यामा जब थाय, तब जा
माया खरी ॥ जी० ॥ २ ॥ जी० ॥ करे मुष्टिप्रहार, अंगारक शिर उप
॥ जी० ॥ जी० ॥ वज्रे करी सुरेंद्रनाथ, न्नेदे पर्वत जिणी परे ॥ जी०
॥ ३ ॥ जी० ॥ अतिविस्तर सर मांहि, तरतो तरतो आवतो ॥ जी० ॥ जी०
वासुपूज्य चैत्य मांहि, आवे धन्य निज नावतो ॥ जी० ॥ ४ ॥ जी० ॥ पी
ड्यो तेह प्रकार, नाखी दीधो वसुदेवने ॥ जी० ॥ जी० ॥ पड्या सरोव
मांहि, चंपा नयरीने उपवने ॥ जी० ॥ ५ ॥ जी० ॥ पुण्यवंत नर जेह
ते नवि दुःख पामे कदा ॥ जी० ॥ जी० ॥ सर्प होय फूलमाल, पुण्य पूरव
कृत होय यदा ॥ जी० ॥ ६ ॥ जी० ॥ जलमां थल होय तास, जेहने पुण्य
होये सदा ॥ जी० ॥ जी० ॥ पग पग प्रगटे निधान, पुण्य होये पासे तद
॥ जी० ॥ ७ ॥ जी० ॥ वैरी होये मित्र, विष अमृत थाय तेहने ॥ जी०
॥ जी ॥ वन होवे आराम, पुण्य प्रगट होये जेहने ॥ जी० ॥ ८ ॥ जी०
पूरव पुण्यथी एह, पनीयो सरोवर लहेरमां ॥ जी० ॥ जी० ॥ पाम्यो
प्रनु दीदार, ते वसुदेव निज लहेरमां ॥ जी० ॥ ९ ॥ जी० ॥ वंदना
करे निज नाव, राति थाकती तिहां रह्या ॥ जी० ॥ जी० ॥ चंपा नयरमां
जाय, मल्यो विप्र मन गहगह्या ॥ जी० ॥ १० ॥ जी० ॥ पुरुष युवान ते
त्यांहि, वीणा हाथे सहु कने ॥ जी० ॥ जी० ॥ देखे ठामो ठाम, तब पूछे
द्विज नमीने ॥ जी० ॥ ११ ॥ जी० ॥ कहो कारण ए विप्र, द्विज वसुदेवने
एम कहे ॥ जी० ॥ जी० ॥ चारुदत्त इहां शेठ, पुत्री एक पुण्ये लहे ॥
॥ जी० ॥ १२ ॥ जी० ॥ गंधर्वसेना नाम, रूपवती कला आगली ॥ जी० ॥
॥ जी० ॥ कीधी प्रतिज्ञा एम, नर्त्ता ते करशुं कली ॥ जी० ॥ १३ ॥ जी० ॥
मुऊने जीते तेह, वीणावादे हर्षशुं ॥ जी० ॥ जी० ॥ सहु जाणे मन
एम, अमे पण तिहां कला वर्षशुं ॥ जी० ॥ १४ ॥ जी० ॥ तिणे सवि

नगरना लोक, वीण वजावे घर बारणे ॥ जी० ॥ जी० ॥ मास मास प्रते अत्र, मले परीक्षा कारणे ॥ जी० ॥ १५ ॥ जी० ॥ सुग्रीव ने यश-ग्रीव, गंधर्व आचारिज कने ॥ जी० ॥ जी० ॥ तिहां सुग्रीव अति सार, कहे ब्राह्मण इम शुज मने ॥ जी० ॥ १६ ॥ जी० ॥ जाये सुग्रीवनी पास, ब्राह्मण रूपे नीपनो ॥ जी० ॥ जी ॥ स्कंदिल महारुं नाम, गोतम गोत्रनो उपनो ॥ जी० ॥ १७ ॥ जी० ॥ गंधर्वसेना नारी, परणवानी इच्छा करुं ॥ जी० ॥ जी० ॥ तुम्ह पासे थइ शिष्य, वीणा शीखवा हर्षे करुं ॥ जी० ॥ १८ ॥ जी० ॥ मूर्ख ने गुण दोष, थानक नवि जाणे किमे ॥ जी० ॥ जी० ॥ ताडे झीणी तांति, वीण वजावे ते नवि खमे ॥ जी० ॥ १९ ॥ जी० ॥ सुग्रीव जाणी मूर्ख, नवि आदर तेहने करे ॥ जी० ॥ जी० ॥ लोक हसे बहु तास, ए पण जुर्ड होंशज करे ॥ जी० ॥ २० ॥ जी० ॥ गंधर्वसेना नारी, निश्चय ए नर परणशे ॥ जी० ॥ जी० ॥ बोले भामनी वाणी, गोपन आतम-करण वशे ॥ जी० ॥ २१ ॥ जी० ॥ रहे सुग्रीव घर नित्य, वाद दिवस थयो अन्यदा ॥ जी० ॥ जी० ॥ सुग्रीवनी तिहां नारी, आपे वस्त्र युगल तदा ॥ जी० ॥ २२ ॥ जी० ॥ स्यामा संबंधी वस्त्र, पहेरे ते खांते करा ॥ जी० ॥ जी० ॥ पहेरी चाल्यो ताम, सवि जनने कौतुक करी ॥ जी० ॥ २३ ॥ जी० ॥ कहे सहु राजकुमार, उंरा आवो राजीया ॥ जी० ॥ जी० ॥ भाग्यवंत शिरदार, तुम्हो गुणगणथी गाजीया ॥ जी० ॥ २४ ॥ जी० ॥ अम्ह-ने निश्चय एह, परणशो ए तुम्हे कामिनी ॥ जी० ॥ जी० ॥ जीतशो तुम्हे निर्धार, सफल थशे तुम्ह यामिनी ॥ जी० ॥ २५ ॥ जी० ॥ गंधर्वकला बहु हाथ, एम खलखड हसता सवे ॥ जी० ॥ जी० ॥ उंचे आसन तास, विचमें सहु मिलीने ठवे ॥ जी० ॥ २६ ॥ जी० ॥ गंधर्वसेना आवी, मानुं रंजा अवतरी ॥ जी० ॥ जी० ॥ सपरदेशी लोक, जीते गांधर्वे करी ॥ जी० ॥ २७ ॥ जी० ॥ रूप करे ते स्वजाव, समुद्रविजय अनुज जलो ॥ जी० ॥ जी० ॥ देव परे कामरूप, श्रीवसुदेवजी गुणनिलो ॥ जी० ॥ २८ ॥ जी० ॥ देखी कुमरनुं रूप, चित्त चमकी ते कुंवरी ॥ जी० ॥ जी० ॥ विस्मय वहे सवि लोक, कुण ए चिंते फरी फरी ॥ जी० ॥ २९ ॥ जी० ॥ आपे सहु तस वीण, कुंवर दूषण दाखवे ॥ जी० ॥ जी० ॥ गंधर्वसेना तास, आपे वीण वजाववे ॥ जी० ॥ ३० ॥ जी० ॥ वीणा सज्ज करी सार, कहे

वसुदेव सुणो तुम्हे ॥ जी० ॥ जी० ॥ एह वीणाए आज, कहो ते गाइ जे अम्हे ॥ जी० ॥३१॥ जी० ॥ बीजे खंडे ढाल, आठमी एह सोहामणी ॥ जी० ॥ जी० ॥ एम प्रथम अधिकार, पद्मविजय भावे भणी ॥ जी० ॥ ३२॥

॥ दोहा ॥

॥ गंधर्वसेना तव कहे, विष्णुकुमार चरित्र ॥ सुर खेचर नर गावतां, करतुं भुवन पवित्र ॥१॥ ते श्रीविष्णुकुमारनुं, गावो चरित्र रसाल ॥ पद्म चक्री अग्रज मुनि, जगमां अति हे रसाल ॥ २ ॥ कहे वसुदेव सुणो तुम्हे, मन करी एकण ठाम ॥ सुणतां होय पवित्र भव, लहीये शिवपुर ठाम ॥ ३ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ चंद्राउलानी देशी ॥ हथिणाउर नगरे वसे रे, नाम पद्मरथ राय ॥ लखमीमती तस भारया रे, तेहने सुत दोय थाय ॥ तेहने सुत दोय थाय कुमार, एक विष्णु महापद्म ते सार ॥ एक दिन सुव्रत नामे अणगार, पाउ धार्या ते नगरी मकार ॥ १ ॥ जी साजनजी जी रे ॥ ए आंकणी ॥ तेहनी पासे व्रत ग्रहे रे, विष्णुकुमार ने राय ॥ महापद्म राज्ये ठवी रे, संयम सन्मुख थाय ॥ संयम सन्मुख थाय महाराज, आणे कर्म शत्रुने वाज ॥ साधे नित नित आतमकाज, पाम्या ते अनुक्रमे शिवराज ॥ जी० ॥ २ ॥ विष्णुकुमर पण साधुजी रे, पाले संयम सार ॥ साठ सयां वरसां लगे रे, तप डुक्कर करनार ॥ तप डुक्कर करनार ते पाया, लब्धि उपनी बहु सुखदाया ॥ सूक्ष्म बादर रूप सुहाया, वैक्रिय लब्धि तणी करे काया ॥ जी० ॥ ॥ ३ ॥ गगनगामिनी तिम लही रे, कहेतां न आवे पार ॥ महापद्म चक्रीने अठे रे, नमुचि पुरोहित सार ॥ नमुचि पुरोहित सार करे ते, साधु संघाते वाद धरे ते ॥ सभा समक्ष तस हारी परे ते, लोक मांहे वात सहु पसरे ते ॥ जी० ॥ ४ ॥ एक दिन राजा रीकवी रे, वर माग्यो राय पास ॥ राज्य बेठो नमुचि तदा रे, आव्युं वासावास ॥ आव्युं वासावास तिवारे, साधु रह्या गजपुर शुभ वारे ॥ सवि परजा आणा शिर धारे, नमुचि साधु सहुने हंकारे ॥ जी० ॥ ५ ॥ कहे मुनिने सुणो साधुजी रे, महारे नहीं तुम्ह काम ॥ तुम्हे मुजरे नवि आवीया रे, तव साधु कहे आम ॥ तव साधु कहे आम नमुचि, अम्ह मुजरे तुज कीर्ति शी उंची ॥ अम्ह नवि जाणुं ए ताहरी कुंची, नमुचि कहे तव वाणी ते नीची ॥ जी० ॥ ६ ॥

माहरा राज्यमां नवि रहो रे, शुं कहुं जाउं तुम्ह ॥ जो रहेशो तो जाणशो रे, नवि सहेशुं कोइ अम्ह ॥ नवि सहेशुं कोइ अम्हे तुमारो, वांक कहे मुनिवर तिण वारो ॥ वर्षाए वाख्यो छे विहारो, शरद कालमां गमन विचारो ॥ जी० ॥ ७ ॥ तव नमुचि एणी परे कहे रे, सात दिवस मांहे जाउं ॥ तव आचारज चिंतवे रे, जेला सघला थाउं ॥ जेला सघला थाउं रे जाइ, पूछे एणी परे चित्तमां लाइ ॥ जेहने जेहवी रिद्धि ते पाइ, तेह दाखो प्रगटपणे आइ ॥ जी० ॥ ८ ॥ संघ तणुं ए काम छे रे, लाज कह्या छे महोटा ॥ एह वात तुमे सांजली रे, कोइ म थाजो खोटा ॥ कोइ म थाजो खोटा ए वात, साधु सुणीने बोले उजात ॥ गगनगामिनी लब्धि आयात, कारज कहो मुजने सुखदात ॥ जी० ॥ ९ ॥ संघ साधु मली एम कहे रे, मंदिरथी तेनी आवो ॥ विष्णुकुमार मुनि प्रते रे, तव ते आणंद पावो ॥ तव ते आणंद पावीने जावे, क्षण मांहे मेरुचूला पावे ॥ संघ तणी आणा कहे जावे, तव विष्णु मुनि कहे इण रावे ॥ जी० ॥ १० ॥ चालो हमणां जाइये रे, करो तुमे विश्राम ॥ सूता तव वेइ चड्या रे, गजपुर नयरने गाम ॥ गजपुर नयरने गाम ते आवे, संघ सहु तव वात सुणावे ॥ विष्णु कहे तुम्हे रहो थिर जावे, एह जार मुज शिर सोहावे ॥ जी० ॥ ॥ ११ ॥ जइ नमुचि बोलावीयो रे, ते पण उजो थाय ॥ कहे विष्णु सुणो वातनी रे, थो मुनि रहेवा गाय ॥ थो मुनि रहेवा गाय ते जापे, तुम्हे चक्रीना जाइ सुवासे ॥ तुमे मुजने किम मान्य न थाशो, श्रमण को नवि रहे माहरी पासे ॥ जी० ॥ १२ ॥ विष्णुकुमार कहे सुणो रे, जीव वहुल थया आज ॥ श्रमणलोकने वारीशुं रे, आज विहारनुं काज ॥ आज विहारनुं काज न थाय, ताहरी आणा जो कदी थाय ॥ तो नयरी उद्यान रहाय, वर्षाकाल अंते सहु जाय ॥ जी० ॥ १३ ॥ तोपण हुं एम जाणशुं रे, माहरुं वचन तें कीध ॥ तव नमुचि कहे सांजलो रे, ए पण वात न सिद्ध ॥ ए पण वात न सिद्ध ते कोय, ते मुजने वधयोग्य ते होय ॥ किम रहे ते उद्यान पलोय, विष्णुकुमार कहे तव जोय ॥ जी० ॥ १४ ॥ जरतादिक राजा थया रे, रक्षा करी तेणे साध ॥ पूजा मान्या इछीया रे, जक्ति करीने अगाध ॥ जक्ति करीने अगाध ते नमीया, ताहरा मनमां किम नवि गमीया ॥ एह महा मुनिवर उपशमीया, तव ते कहे मुज मन नवि

रमीया ॥ जी० ॥ १५ ॥ वळी नमुचि कहे विष्णुने रे, तें कही साची वात॥ बाप दादा जेहना राजवी रे, ते तो इणी परे थात॥ ते तो इणी परे थात ते न्याय, जेहना कुलमां होय मुनिराय ॥ हुं तो तुं सुण पहेलो राय, परनी वात मने न सुहाय ॥ जी० ॥ १६ ॥ मुजने दीठा नवि गमे रे, सात दिवस पछी एह ॥ देखीशुं जो चालतो रे, मारीशुं अम्हे तेह ॥ मारीशुं अम्हे तेहने जाणो, तुम विना जीवतो नहीं पीठाणो ॥ एह वात साची मन आणो, मन चिंते मुज न मले टाणो ॥ जी० ॥ १७ ॥ बीजे खंडे ए कही रे, नवमी ढाल रसाल ॥ पहेले अधिकारे नवी रे, सुणतां मंगळमाल ॥ सुणतां मंगलमाल ते थाय, पंमित उत्तमविजय कहेवाय ॥ तेहना शिष्यपणे सोहाय, नामे पद्मविजय गुण गाय॥ जी० ॥ १८ ॥ गाथा ॥ ३२४॥

॥ दोहा ॥

॥ वचन सुणी नमुचि तणां, चिंते विष्णुकुमार ॥ एह दुष्ट नमुचि थयो, मुनिवध उद्यमकार ॥ १ ॥ मुजने पण युगतुं नहीं, संघपीमा जिणे थाय ॥ ते उवेखी मूकवुं, महोटुं पाप कहाय ॥ २ ॥ संघनुं वेयावच करत, पामे लाज अपार ॥ जो ए अवसर नवि करुं, तोपण किम होय पार ॥ ३ ॥ शक्ति छे खेले होय, संघ तणे नहीं काम॥ शीखामण देउं एहने, राखुं शासन माम ॥ ४ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ देवमां नगीनो महारो, ध्यानमां लीनो महारो, केसर भीनो महारो, साहेबो॥ प्रनु मोरा रति एक रूप देखाम हो ॥ ए देशी ॥ विष्णु ऋषि कहे नमुचिने ॥ साजन महारा ॥ सांजल माहरी वाण हो॥ त्रण पग मुंइ तेटलुं ॥ सा० ॥ आप तुं मुजने ताण हो ॥ १ ॥ क्रोधे जराणो महारो, नवि माने राणो महारो, हठनो ए टाणो महारो, साहिबो ॥ साहिब महारा मधुर वचन समजाय हो ॥ ए आंकणी ॥ प्राण त्याग करे मुनिवरा ॥ ॥ सा० ॥ पण नवि करे विहार हो ॥ महारुं वचन इणी परे सुणो ॥ सा० ॥ ॥ रहेशे पण निर्धार हो ॥ २ ॥ क्रो० ॥ त्रण क्रम दीधी भूमिका ॥ सा० ॥ पछ नवि बीजो ठार हो ॥ जो देखीश अन्य थानके ॥ सा० ॥ जाणो जन अनुहार हो ॥ ३ ॥ क्रो० ॥ रोष चड्यो तेह सांनली ॥ सा० ॥ वधवा लागो तेह हो ॥ वैक्रिय शरीर प्रनावथी॥ सा० ॥ लाख योजन

होय देह हो ॥ ४ ॥ क्रो० ॥ पूर्व पश्चिम दोय पद धर्या ॥ सा० ॥ विश्व कंपावे तेण हो ॥ त्रीजो पद मूके तदा ॥ सा० ॥ नमुचि पुठे दुःख देण हो ॥ ५ ॥ क्रो० ॥ घाल्यो रसातल नमुचिने ॥ सा० ॥ अचला ते चल थाय हो ॥ पर्वत कंपे तिहां कणे ॥ सा० ॥ हालकलोल थइ जाय हो ॥ ॥ ६ ॥ क्रो० ॥ मर्यादा मूकी करी ॥ सा० ॥ समुद्र छोजाणा त्यांहि हो ॥ जय बहु लोकने उपजे ॥ सा० ॥ नवि धरे कोइ उछांहि हो ॥ ७ ॥ ॥ क्रो० ॥ देवने पण भ्रम उपनो ॥ सा० ॥ शुं थयुं एह अकाल हो ॥ शक्रने पण शंका थइ ॥ सा० ॥ जाणी ते विकराल हो ॥ ८ ॥ क्रो० ॥ अवधिज्ञानथी जाणीयुं ॥ सा० ॥ कोपनुं कारण तत्र हो ॥ गंधर्व देवने मोकले ॥ सा० ॥ विष्णुकुमार छे यत्र हो ॥ ९ ॥ क्रो० ॥ गीत नाटक करे तेहवां ॥ सा० ॥ जेहथी थाय उपशांत हो ॥ कोपथी दुर्गति पामीये ॥ सा० ॥ तुम्हो मुनिवर महांत हो ॥ १० ॥ क्रो० ॥ समतासागर मुनि थया ॥ सा० ॥ महापद्म प्रणमे पाय हो ॥ उलंजो देइ चक्रीने ॥ सा० ॥ आवे जिहां गुरुराय हो ॥ ११ ॥ क्रो० ॥ आलोइने पमिक्कमी ॥ सा० ॥ पाली शुद्ध चारित्त हो ॥ सा० ॥ मोक्ष गया मुनिराजीया ॥ सा० ॥ परमानंदे सित्त हो ॥ १२ ॥ क्रो० ॥ शांति थइ सहु जीवने ॥ सा० ॥ वरत्यो जय जयकार हो ॥ जनम थया सहुना नवा ॥ सा० ॥ विघन गयां दूर पार हो ॥ १३ ॥ क्रो० ॥ श्री वसुदेवजी इणी परे ॥ सा० ॥ वीण वजावी सार हो ॥ देखी सहु अजरिज लह्या ॥ सा० ॥ पाम्या अति चमत्कार हो ॥ १४ ॥ क्रो० ॥ बीजे खंडे इणी परे ॥ सा० ॥ दशमी ढाल विशाल हो ॥ पहेले अधिकारे कही ॥ सा० ॥ पद्मने मंगलमाल हो ॥ १५ ॥ क्रो० ॥

॥ दोहा ॥

॥ वीण वजावी तिणी परे, गंधर्वसेना नार ॥ जाति मानुं नरवेष धरी, आवी सरस्वती सार ॥ १ ॥ चारुदत्त ते देखी करी, सहु विसर्जे ताम ॥ श्री वसुदेवने तेडीने, आवे ते निज धाम ॥ २ ॥ सांजल कुंअर तुं वातनी, तुऊ मनमां छे एम ॥ वणिकसुता मात्रज तणुं, पाणिग्रहण करुं केम ॥ ३ ॥ पण ए वात कहेशुं सवि, अवसर पामी स्वाम ॥ पण हमणां परणो तुम्हे, अम कहुं तुं शिर नाम ॥ ४ ॥ इम करी परणावी तिणे, विद्याचारय दोय ॥ श्यामा विजया कन्यका, रूप मनोहर जोय ॥ ५ ॥ सुग्रीव यक्ष-

रमीया ॥ जी० ॥ १५ ॥ वली नमुचि कहे विष्णुने रे, तें कही साची वात॥ बाप दादा जेहना राजवी रे, ते तो इणी परे थात ॥ ते तो इणी परे थात ते न्याय, जेहना कुलमां होय मुनिराय ॥ हुं तो तुं सुण पहेलो राय, परनी वात मने न सुहाय ॥ जी० ॥ १६ ॥ मुजने दीठा नवि गमे रे, सात दिवस पछी एह ॥ देखीशुं जो चालतो रे, मारीशुं अम्हे तेह ॥ मारीशुं अम्हे तेहने जाणो, तुम विना जीवतो नहीं पीछाणो ॥ एह वात साची मन आणो, मन चिंते मुज न मले टाणो ॥ जी० ॥ १७ ॥ बीजे खंडे ए कही रे, नवमी ढाल रसाल ॥ पहेले अधिकारे चली रे, सुणतां मंगलमाल ॥ सुणतां मंगलमाल ते थाय, पंडित उत्तमविजय कहेवाय ॥ तेहना शिष्यपणे सोहाय, नामे पद्मविजय गुण गाय ॥ जी० ॥ १८ ॥ गाथा ॥ ३२४॥

॥ दोहा ॥

॥ वचन सुणी नमुचि तणां, चिंते विष्णुकुमार ॥ एह दुष्ट नमुचि थयो, मुनिवध उद्यमकार ॥ १ ॥ मुजने पण जुगतुं नहीं, संघपीडा जिणे थाय ॥ ते उवेखी मूकवुं, महोटुं पाप कहाय ॥ २ ॥ संघनुं वेयावच्च करत, पामे लाभ अपार ॥ जो ए अवसर नवि करुं, तोपण किम होय पार ॥ ३ ॥ शक्ति शे खेले होय, संघ तणे नहीं काम ॥ शीखामण देउं एहने, राखुं शासन माम ॥ ४ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ देवमां नगीनो महारो, ध्यानमां लीनो महारो, केसर भीनो महारो, साहेबो ॥ प्रभु मोरा रति एक रूप देखाड हो ॥ ए देशी ॥ विष्णु ऋषि कहे नमुचिने ॥ साजन महारा ॥ सांभल माहरी वाण हो ॥ त्रण पग भूंइ तेहनुं ॥ सा० ॥ आप तुं मुजने जाण हो ॥ १ ॥ क्रोधे भराणो महारो, नवि माने राणो महारो, हठनो ए टाणो महारो, साहिबो ॥ साहिब महारा मधुर वचन समजाय हो ॥ ए आंकणी ॥ प्राण त्याग करे मुनिवरा ॥ ॥ सा० ॥ पण नवि करे विहार हो ॥ महारुं वचन इणी परे सुणो ॥ सा० ॥ ॥ रहेशे पग निर्धार हो ॥ २ ॥ क्रो० ॥ त्रण क्रम दीधी भूमिका ॥ सा० ॥ पण नवि बीजो भार हो ॥ जो देखीश अन्य थानके ॥ सा० ॥ जाशो तुज अनुहार हो ॥ ३ ॥ क्रो० ॥ रोष चढ्यो तेह सांभली ॥ सा० ॥ वधवा लागो तेह हो ॥ वैक्रिय शरीर प्रभावथी ॥ सा० ॥ लाख योजन

देह हो ॥ ४ ॥ क्रो० ॥ पूर्व पश्चिम दोय पद धस्या ॥ सा० ॥ विश्व
तेण हो ॥ त्रीजो पद मूके तदा ॥ सा० ॥ नमुचि पुठे दुःख देण
॥ ५ ॥ क्रो० ॥ घाल्यो रसातल नमुचिने ॥ सा० ॥ अचला ते चल
हो ॥ पर्वत कंपे तिहां कणे ॥ सा० ॥ हालकलोल थइ जाय हो ॥
॥ क्रो० ॥ मर्यादा मूकी करी ॥ सा० ॥ समुद्र कोलाणा त्यांहि हो
भय बहु लोकने उपजे ॥ सा० ॥ नवि धरे कोइ उछांहि हो ॥ ७ ॥
क्रो० ॥ देवने पण भ्रम उपनो ॥ सा० ॥ शुं थयुं एह अकाल हो ॥
शक्रने पण शंका थइ ॥ सा० ॥ जाणी ते विकराल हो ॥ ८ ॥ क्रो० ॥
अवधिज्ञानथी जाणीयुं ॥ सा० ॥ कोपनुं कारण तत्र हो ॥ गंधर्व देवने
मोकले ॥ सा० ॥ विष्णुकुमार छे यत्र हो ॥ ९ ॥ क्रो० ॥ गीत नाटक
करे छेहवां ॥ सा० ॥ जेहथी थाय उपशांत हो ॥ कोपथी दुर्गति पामीये
॥ सा० ॥ तुम्हो मुनिवर महांत हो ॥ १० ॥ क्रो० ॥ समतासागर मुनि
थया ॥ सा० ॥ महापद्म प्रणमे पाय हो ॥ ठवंतो देइ चक्रीने ॥ सा० ॥
आवे जिहां गुरुराय हो ॥ ११ ॥ क्रो० ॥ आलोइने पडिक्कमी ॥ सा० ॥
पाली शुद्ध चारित्र हो ॥ सा० ॥ मोक्ष गया मुनिराजीया ॥ सा० ॥
परमानंद लित हो ॥ १२ ॥ क्रो० ॥ शांति थइ सहु जीवने ॥ सा० ॥
वरत्यो जय जयकार हो ॥ जनम थया सहुना नवा ॥ सा० ॥ विघन गयां
दूर पार हो ॥ १३ ॥ क्रो० ॥ श्री वसुदेवजी इणी परे ॥ सा० ॥ वीण व-
जावी सार हो ॥ देखी सहु अजब्जि लह्या ॥ सा० ॥ पाम्या अति चमत्कार
हो ॥ १४ ॥ क्रो० ॥ बीजे खंडे इणी परे ॥ सा० ॥ दशमी ढाल विशाल हो ॥
पहेले अधिकार कही ॥ सा० ॥ पद्मने मंगलमाल हो ॥ १५ ॥ क्रो० ॥

॥ दोहा ॥

॥ वीण वजावी इणी परे. गंधर्वसेनना नार ॥ जानि मानुं नरवेष ध-
री. आवी सरस्वती नार ॥ १ ॥ चारुदत्त ते देखी करी. सहु विसर्जे नाम
॥ श्री वसुदेवने तेडीने. आवे ते निज धाम ॥ २ ॥ सांभल कुंअर तुं वान-
नी. तुझ मननां छे एम ॥ वणिकसुता मात्रज गणुं. पाणिग्रहण करुं केम
॥ ३ ॥ पण ए वात कहेशुं सवि. अवसर पामी स्वाम ॥ पण इमणां परणो
तुम्हे. अम कहुं हुं शिर नाम ॥ ४ ॥ इम करी परणावी तिणे, विद्याचारण
दोय ॥ श्यामा विजया कन्यका, रूप मनोहर जोय ॥ ५ ॥ सुग्रीव घर

रमीया ॥ जी० ॥ १५ ॥ वली नमुचि कहे विष्णुने रे, तें कही साची वात॥ बाप दादा जेहना राजवी रे, ते तो इणी परे थात ॥ ते तो इणी परे थात ते न्याय, जेहना कुलमां होय मुनिराय ॥ हुं तो तुं सुण पहेलो राय, परनी वात मने न सुहाय ॥ जी० ॥ १६ ॥ मुजने दीठा नवि गमे रे, सात दिवस पठी एह ॥ देखीशुं जो चालतो रे, मारीशुं अम्हे तेह ॥ मारीशुं अम्हे तेहने जाणो, तुम विना जीवतो नहीं पीठाणो ॥ एह वात साची मन आणो, मन चिंते मुज न मले टाणो ॥ जी० ॥ १७ ॥ बीजे खंडे ए कही रे, नवमी ढाल रसाल ॥ पहेले अधिकारे जली रे, सुणतां मंगल-माल ॥ सुणतां मंगलमाल ते थाय, पंडित उत्तमविजय कहेवाय ॥ तेहना शिष्यपणे सोहाय, नामे पद्मविजय गुण गाय ॥ जी० ॥ १८ ॥ गाथा ॥ ३२४॥

॥ दोहा ॥

॥ वचन सुणी नमुचि तणां, चिंते विष्णुकुमार ॥ एह डुष्ट नमुचि थयो, मुनिवध उद्यमकार ॥ १ ॥ मुजने पण युगतुं नहीं, संघ पीमा जिणे थाय ॥ ते उवेखी मूकुं, महोटुं पाप कहाय ॥ २ ॥ संघनुं वेयावच करत, पामे लाज्ञ अपार ॥ जो ए अवसर नवि करुं, तोपण किम होय पार ॥ ३ ॥ शक्ति शे खेले होय, संघ तणे नहीं काम ॥ शीखामण देउं एहने, राखुं शासन माम ॥ ४ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ देवमां नगीनो महारो, ध्यानमां लीनो महारो, केसर जीनो महारो, साहेबो ॥ प्रजु मोरा रति एक रूप देखाड हो ॥ ए देशी ॥ विष्णु ऋषि कहे नमुचिने ॥ साजन महारा ॥ सांजल माहरी वाण हो ॥ त्रण पग मूकुं तेटलुं ॥ सा० ॥ आप तुं मुजने ठाण हो ॥ १ ॥ क्रोधे जराणो महारो, नवि माने राणो महारो, हठनो ए टाणो महारो, साहिबो ॥ साहिब महारा मधुर वचन समजाय हो ॥ ए आंकणी ॥ प्राण त्याग करे मुनिवरा ॥ ॥ सा० ॥ पण नवि करे विहार हो ॥ महारुं वचन इणी परे सुणो ॥ सा० ॥ ॥ रहेशे पण निर्धार हो ॥ २ ॥ क्रो० ॥ त्रण क्रम दीधी जूमिका ॥ सा० ॥ पग नवि बीजो ठार हो ॥ जो देखीश अन्य थानके ॥ सा० ॥ जाणो जन अनुहार हो ॥ ३ ॥ क्रो० ॥ रोष चड्यो तेह सांजली ॥ सा० ॥ वधवा लागो तेह हो ॥ वैक्रिय शरीर प्रजावथी ॥ सा० ॥ लाख योजन

दर्शनथी थयुं पुस्त ॥ मो० ॥ दुःखथी तुम्हे मूकावीया, तेहथी हुं जाणुं धन्य ॥ मो० ॥ १५ ॥ क० ॥ खेचर निज थानक गयो, हुं पण आव्यो निज गेह ॥ मो० ॥ मित्र साथे क्रीमा करूं, मनमां धरी अति ससनेह ॥ मो० ॥ ॥ १६ ॥ क० ॥ यौवन पाम्यो अनुक्रमे, परणावे मुजने ताय ॥ मो० ॥ मित्रवती नामे कन्यका, सर्वार्थ माउल धुच्या थाय ॥ मो० ॥ १७ ॥ क० ॥ क्रीमासक्त हुं नवि करूं, नारीथी जोगनी वात ॥ मो० ॥ नवि समजे ए जोगमां, इम चिंते मात ने तात ॥ मो० ॥ १८ ॥ क० ॥ कलिंगसेना गणिका तणी, वसंतसेना धुच्या सार ॥ मो० ॥ बार वरस तिहां हुं रह्यो, सोल कोडी सोनइया धार ॥ मो० ॥ १९ ॥ क० ॥ ऽव्यरहित जाणी करी, काढी मूक्यो तस माय ॥ मो० ॥ मात पिता मुज मरी गयां, घर हाट सहु पमी जाय ॥ मो० ॥ २० ॥ क० ॥ आजूपण तव नारीनां, लीधां व्यापारने हेत ॥ मो० ॥ माउल सहित हुं चालीयो, उशीरवर्त्तपुर लेत ॥ ॥ मो० ॥ २१ ॥ क० ॥ तिहां कर्पास लीधो अमे, ताम्रलिप्ती नयरीए जाय ॥ मो० ॥ वनमां अग्नि लाग्यो तिणे, कर्पास सहु बली जाय ॥ मो० ॥ २२ ॥ क० ॥ जाग्यरहित जाणी करी, मामे मूक्यो मुज वांक ॥ मो० ॥ घोटक उपर हुं चढ्यो, पश्चिम दिशि जावा मांड ॥ मो० ॥ २३ ॥ क० ॥ घोटक तेह मरी गयो, तव पादचारी थयो स्वाम ॥ मो० ॥ पंथ थकी थाको घणुं, बहु जूख पिपासा धाम ॥ मो० ॥ २४ ॥ क० ॥ प्रियंगु नगरे हुं गयो, जिहां वणिक लोक बहु होय ॥ मो० ॥ नामे सुरेंऽदत्त तिहां वसे, मुज तात मित्र ते कोय ॥ मो० ॥ २५ ॥ क० ॥ पुत्र परे मुज राखीयो, जोजन वस्त्रादिक आप ॥ मो० ॥ पण बहु लोज माहरे मने, करवा व्यवसाय ते आप ॥ ॥ मो० ॥ २६ ॥ क० ॥ ऽव्य उधार करी तिहां, ऽव्य लाख ग्रही लही योग ॥ मो० ॥ ना ना कहेतां नवि रह्यो, यानपात्रमां बेगे लोग ॥ मो० ॥ ॥ २७ ॥ क० ॥ जमुना द्वीपे हुं गयो, बहु गाम नयर फस्यो त्यांह ॥ मो० ॥ आठ कोमी सुवर्ण में, अर्ज्युं धरी मन उछाह ॥ मो० ॥ २८ ॥ क० ॥ बीजे खंडे ए कही, पहेले अधिकारे ढाल ॥ मो० ॥ पद्मविजये अग्यारमी, सुणतां होय मंगलमाल ॥ मो० ॥ २९ ॥ क० ॥ सर्व गाथा ॥ ३१९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ निज देशे जावा जणी, बेगे प्रवहण मांहि ॥ जलमारग जातां थका,

ग्रीव ते विहुं, परणावे धरी खांत ॥ चारुदत्त एक दिन हवे, भाखे इम एकांत ॥ ६ ॥ गंधर्वसेना नारीनुं, सांभलो हवे विरतंत ॥ मूल थकी मांडी कहे, जिणथी अचरिज हुंत ॥ ७ ॥

॥ ढाल अगीयारमी ॥

॥ कंत तमाकू परिहरो ॥ ए देशी ॥ इण नगरी मांहे थयो, भानु नामे धनवंत ॥ मोरा लाल ॥ सुभद्रा तस भारया, पण नहीं पुत्र ते संत ॥ मो० ॥ ॥ १ ॥ कर्म तणी गति सांभलो ॥ ए आंकणी ॥ दंपती पूछे एक दिने, चारण मुनिने एम ॥ मो० ॥ पुत्र ते होशे के नहीं, स्वामी कहो अम होय जेम ॥ मो० ॥ २ ॥ क० ॥ अनुक्रमे हुं तस सुत थयो, क्रीडा करवा एक दिन ॥ मो० ॥ मित्रनी साथे हुं गयो, करतो क्रीडा देइ मन्न ॥ मो० ॥ ॥ ३ ॥ क० ॥ स्त्रीपद सहित नरपद भखां, देखुं अतिहि मनोहार ॥ मो० ॥ ॥ केलि तणुं घर देखतो, आगल जातां श्रीकार ॥ मो० ॥ ४ ॥ क० ॥ खेचर एक देखुं तिहां, खीले खील्यो सब अंग ॥ मो० ॥ ओषधी वलय देखे तिहां, माहरे मन उपनो रंग ॥ मो० ॥ ५ ॥ क० ॥ विवरे ते घसी चोपडी, तव खीला पडीया हेव ॥ मो० ॥ संरोहणी वली चोपडी, व्रण चूरे चारु शेठ ॥ मो० ॥ ६ ॥ क० ॥ उंषधी जीजीए सज्ज थयो, तव मुजने कहे विरतंत ॥ मो० ॥ गिरि वैताढ्य मांहे वसुं, शिवमंदिर नयर ते कंत ॥ ॥ मो० ॥ ७ ॥ क० ॥ महेंद्रविक्रम नरपति, तेहनो हुं पुत्र विनीत ॥ मो० ॥ अमितगति नामे भलो, क्रीडा करतो सुविदित्त ॥ मो० ॥ ८ ॥ क० ॥ हरिवंत नामे पर्वते, एक दिन हुं गयो क्रीडंत ॥ मो० ॥ हिरण्यरोम तापस तणी, पुत्री दीठी रूपवंत ॥ मो० ॥ ९ ॥ क० ॥ नाम तेहनुं सुकुमालिका, तस तात धरी मुज प्रीत ॥ मो० ॥ परणावी ते सुंदरी, हुं पण परण्यो शुभ रीत ॥ मो० ॥ १० ॥ क० ॥ माहरो मित्र सोहामणो, तस धूमशिखा छे नाम ॥ मो० ॥ ते मुज नारीने देखीने, अंगे विंधाणो काम ॥ मो० ॥ ११ ॥ क० ॥ छिद्र गवेषे माहरां, पंचत्व पमाडवा हेत ॥ मो० ॥ नारी साथे हुं विचरतो, आव्यो ए ठाण संकेत ॥ मो० ॥ १२ ॥ क० ॥ एकाकी मुज जाणीयो, ते धूमशिखा इहां आय ॥ मो० ॥ मुजने इम खीली करी, मुज नारीने लेइने जाय ॥ मो० ॥ १३ ॥ क० ॥ तें मुज जीवतो राखीयो, निःकारण बंधु तुंही ॥ मो० ॥ माग तुं मागे ते दीयुं, तुं दुःख पामे हवे क्युंही ॥ क्रिय० ॥ १४ ॥ क० ॥ चारुदत्त कहे तेहने, तुज

दर्शनथी थयुं पुण्य ॥ मो० ॥ दुःखथी तुम्ह मूकावीया, तेहथी हुं जाणुं धन्य ॥ मो० ॥ १५ ॥ क० ॥ खेचर निज थानक गयो, हुं पण आव्यो निज गेह ॥ मो० ॥ मित्र साथे क्रीमा करुं, मनमां धरी अति ससनेह ॥ मो० ॥ ॥ १६ ॥ क० ॥ योवन पाम्यो अनुक्रमे, परणावे मुजने ताय ॥ मो० ॥ मित्रवती नामे कन्यका, सर्वार्थ माउल धुआ थाय ॥ मो० ॥ १७ ॥ क० ॥ क्रीमासक्त हुं नवि करुं, नारीथी जोगनी वात ॥ मो० ॥ नवि समजे ए जोगमां, इम चिंते मात ने तात ॥ मो० ॥ १८ ॥ क० ॥ कलिंगसेना गणिका तणी, वसंतसेना धुआ सार ॥ मो० ॥ बार वरस तिहां हुं रह्यो, सोल कोडी सोनइया धार ॥ मो० ॥ १९ ॥ क० ॥ द्रव्यरहित जाणी करी, काढी मूक्यो तस माय ॥ मो० ॥ मात पिता मुज मरी गयां, घर हाट सहु पमी जाय ॥ मो० ॥ २० ॥ क० ॥ आजूषण तव नारीनां, लीधां व्यापारने हेत ॥ मो० ॥ माउल सहित हुं चालीयो, उशीरवर्त्तपुर लेत ॥ ॥ मो० ॥ २१ ॥ क० ॥ तिहां कर्पास लीधो अमे, तामलिप्ती नयरीए जाय ॥ मो० ॥ वनमां अग्नि लाग्यो तिणे, कर्पास सहु बली जाय ॥ मो० ॥ २२ ॥ क० ॥ जाग्यरहित जाणी करी, मामे मूक्यो मुज ठांम ॥ मो० ॥ घोटक उपर हुं चढ्यो, पश्चिम दिशि जावा मांड ॥ मो० ॥ २३ ॥ क० ॥ घोटक तेह मरी गयो, तव पादचारी थयो स्वाम ॥ मो० ॥ पंथ थकी थाको घणुं, बहु जूख पिपासा धाम ॥ मो० ॥ २४ ॥ क० ॥ प्रियंगु नगरे हुं गयो, जिहां वणिक लोक बहु होय ॥ मो० ॥ नामे सुरेंद्रदत्त तिहां वसे, मुज तात मित्र ते कोय ॥ मो० ॥ २५ ॥ क० ॥ पुत्र परे मुज राखीयो, जोजन वस्त्रादिक आप ॥ मो० ॥ पण बहु लोज नाहरे मने, करवा व्यवसाय ते आप ॥ ॥ मो० ॥ २६ ॥ क० ॥ द्रव्य उधार करी तिहां, द्रव्य लाख ग्रही लही योग ॥ मो० ॥ ना ना कहेतां नवि रह्यो, यानपात्रमां बेठो लोग ॥ मो० ॥ ॥ २७ ॥ क० ॥ जमुना द्वीपे हुं गयो, बहु गाम नयर फर्यो त्यांह ॥ मो० ॥ आठ कोमी सुवर्ण में, अर्ज्युं धरी मन उछाह ॥ मो० ॥ २८ ॥ क० ॥ बीजे खंडे ए कही, पहेले अधिकारे ढाल ॥ मो० ॥ पद्मविजये अग्यारमी, सुणतां होय मंगलमाल ॥ मो० ॥ २९ ॥ क० ॥ सर्व गाथा ॥ ३७९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ निज देशे जावा जणी, बेठो प्रवहण मांहि ॥ जलमारग जातां थका,

प्रवहण भांग्युं त्यांहि ॥ १ ॥ पुण्यसंयोगे आवीयुं, फलक एक मुज हाथ ॥ सात दिवस सायर भम्यो, पण ते फलकनी साथ ॥ २ ॥ पाम्यो पार सायर तणो, राजपुरे वली जाय ॥ तेह नगर उद्यानमां, आश्रम एक शुभ ठाय ॥ ३ ॥ दिनकरप्रन्न नामे वसे, परिव्राजक अजिराम ॥ शांत दांत घणुं देखीये, धर्म तणुं मानुं धाम ॥ ४ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ किसके चेले किसके पूत ॥ ए देशी ॥ तेह त्रिदंमी देखी मुज्ज, कहे सांजल कहुं वात हुं तुज ॥ बाबू मान ले ॥ ए आंकणी ॥ तुं केम दुःखीयो पमो आज, तुं थाइश महोटो महाराज ॥ १ ॥ बा० ॥ तेरा दुःख में रम्यां न जाय, मेरा मनमें आरति थाय ॥ बा० ॥ गुरुकी हम हे पेसी सीख, जपो अलख उर जावकी भीख ॥ २ ॥ बा० ॥ कंथा पहेरुं लगावुं विजूति, परदुःखीये दुःखीयो सुण पुत ॥ बा० ॥ जगकुं सुख तब हमकुं सुख, जग दुःखीयो तब हमकुं दुःख ॥ ३ ॥ बा० ॥ मायामें सहु जग खपटाय, हम तो निल निरंजन ध्याय ॥ बा० ॥ वात कहे वे तेरी जेह, तुज देखी मुज थरहरे देह ॥ ४ ॥ बा० ॥ तब प्रणमी कहे चारुदत्त, पालखी जेटली थइ निज वत्त ॥ बा० ॥ चारुदत्तनां सांजली वयण, अभूत आंसु जरीयां नयण ॥ ५ ॥ बा० ॥ रे वत्स तुं हवे धीरो थाय, धीरजे सवि दोलत मले आय ॥ बा० ॥ तें धन अर्थी हे सुण वहोत, धन देवरावुं आव नुं पहोत ॥ ६ ॥ बा० ॥ तेरे घरकी दासी होय, लखमी तेम करीये तुं जोय ॥ बा० ॥ ते सुणी चाल्यो चारुदत्त, लोजीने होय वहुतुं सत्त ॥ ७ ॥ बा० ॥ बीजे दिन एक अटवी मांहि, पहोतो मन धरतो उछांहि ॥ बा० ॥ तिहां एक पर्वत मांहे जाय, नितम्ब शिला उघाडे पाय ॥ ८ ॥ बा० ॥ दुर्गपाताल नामे बिल तेह, तेहमां पेठो त्रिदंमी जेह ॥ बा० ॥ चलतां चलतां दीठो कूप, रस थानक महा दारुण रूप ॥ ९ ॥ बा० ॥ चार हाथनो ते विस्तार, मानुं नरक तणुं ए द्वार ॥ बा० ॥ तुंबडुं आपी कहे मुज एम, सुण कहुं वत्स धरी तुज प्रेम ॥ १० ॥ बा० ॥ एहमां रस जरीने तुं आव, एम कही मंचिका मांहि ठाव ॥ बा० ॥ रज्जु जाली मोकल्यो त्यांहि, नेखवा दीधो में तेह मांहि ॥ ११ ॥ बा० ॥ तिहां रस जरीयो दीठो जोर, लेतां वारे कोइ तिये ठोर ॥ बा० ॥ चारुदत्त वे माहरुं नाम,

मोकल्यो जगवंते ए गाम ॥ १२ ॥ वा० ॥ शे मुऊने तुं करे निषेध, मह्हारे ए रसशुं ठे वेध ॥ वा० ॥ ते पण कहे सुण मह्हारी वात, वणिक ने धनवांठक हुं यात ॥ १३॥ वा० ॥ एह त्रिदंमीए नाख्यो मुऊ, सुण वली आगल जाखुं तुऊ ॥ वा० ॥ रसमां मत तुं बोले हाथ, कोहीने घाशे ते काय ॥ १४ ॥ वा० ॥ जरीने आपुं तुऊने एह, पण मत बोलजे ताहरी देह ॥ वा० ॥ तव में तुंबडुं आप्युं तास, रस जरी आप्यो मुऊने खास ॥ १५ ॥ वा० ॥ मांची हेठे ते बांध्युं तुंब, रज्जु हलावी पानी लुंब ॥ वा० ॥ खेंची काढे तापस ताम, कूपने तटे आव्यो हुं जाम ॥ १६ ॥ वा० ॥ मागे तुंबडुं माहरी पास, तव ऊोही बोजी लह्यो तास ॥ वा० ॥ में रस ढोली नाख्यो सार, नाखी दीधो मुऊ तिवार ॥ १७ ॥ वा० ॥ तेह अकारण बंधु ताम, कहे मत कर तुं खेद ए ठाम ॥ वा० ॥ रसमां तो नथी पमीयो अत्र, रोगनी उत्पत्ति थाचे यत्र ॥ १८ ॥ वा० ॥ बीजो नहीं उपाय ते कोय, नीकलवानो सुण कहुं तोय ॥ वा० ॥ गोधा जब आवे इण ठाम, तेहने पुंठडे वलगजे ताम ॥ १९ ॥ वा० ॥ तव लग तुं इहां रहे शुज ध्यान, करी पंच परमेष्ठीनुं ज्ञान ॥ वा० ॥ तास वचने हुं लह्यो आनंद, तेह पंचत्व लह्यो सुखकंद ॥२०॥ वा० ॥ जीपण शब्द सुण्यो एक दिन्न, तव बीहीनो आकुल थयो मन्न ॥ वा० ॥ संजारी ते पुरुषनुं वयण, गोधा जाणी निश्चय नयण ॥ २१ ॥ वा० ॥ पान करीने पाठी जाय, पुंठडे वलग्यो हुं तिण ठाय ॥ वा० ॥ गाय पुंठडे वलगे गोवाल, तेम वलग्यो हुं अति सुकुमाल ॥ २२ ॥ वा० ॥ नरक मांहिथी नीकले जेम, अथवा गर्जावासथी तेम ॥ वा० ॥ देखी जीवलोकने वहार, नवो जनम एणे अवतार ॥ २३ ॥ वा० ॥ मूकी दीधुं पुंठडुं जाम, मूर्छा आवी मुऊने ताम ॥ वा० ॥ पमीयो जूमि वली लाधुं चेत, जंसो एक धायो डुःख देत ॥ २४ ॥ वा० ॥ एक शिला उपर चढ्यो रंग, तेह शिला चाले निज शृंग ॥ वा० ॥ अजगर वनजंसाने खाय, तव नासी गयो तिहांथी पलाय ॥ २५ ॥ वा० ॥ अटवी अंते पाम्यो गाम, तिहां मुऊ मातलमित्रनुं धाम ॥ वा० ॥ डुःखनी श्रेणि लही में तत्र, किम कही शकीये ते डुःख अत्र ॥ २६ ॥ वा० ॥ बीजे खंडे बारमी ढाल, पहेले अधिकारे ए रसाल ॥ वा० ॥ पंमित उत्तमविजयनो शिष्य, पद्मविजय कहे पुण्ये जगीश ॥ २७ ॥ वा० ॥ सर्व गाथा ॥ ४१० ॥

प्रवहण भांग्युं त्यांहि ॥ १ ॥ पुण्यसंयोगे आवीयुं, फलक एक मुज हाथ ॥ सात दिवस सायर भम्यो, पण ते फलकनी साथ ॥ २ ॥ पाम्यो पार सायर तणो, राजपुरे वली जाय ॥ तेह नगर उद्यानमां, आश्रम एक शुज गय ॥ ३ ॥ दिनकरप्रज्ञ नामे वसे, परिव्राजक अजिराम ॥ शांत दांत घणुं देखीये, धर्म तणुं मानुं धाम ॥ ४ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ किसके चेले किसके पूत ॥ ए देशी ॥ तेह त्रिदंमी देखी मुज्ज, कहे सांजल कहुं वात हुं तुज ॥ वालू मान ले ॥ ए आंकणी ॥ तुं केम दुःखीयो परजो आज, तुं थाइश महोटो महाराज ॥ १ ॥ वा० ॥ तेरा दुःख में सम्यां न जाय, मेरा मनमें आरति थाय ॥ वा० ॥ गुरुकी हम हे ऐसी शीख, जपो अलख उर जावकी जीख ॥ २ ॥ वा० ॥ कंथा पहेरुं ध्रगावुं विजूति, परदुःखीये दुःखीयो सुण पुत ॥ वा० ॥ जगकुं सुख तब हमकुं सुख, जग दुःखीयो तब हमकुं दुःख ॥ ३ ॥ वा० ॥ मायामें सह जग खपटाय, हम तो नित्य निरंजन ध्याय ॥ वा० ॥ वात कहे वे तेरी जेह, तुज देखी मुज थरहरे देह ॥ ४ ॥ वा० ॥ तब प्रणमी कहे चारुदत्त, पाउली जेटली थइ निज वत्त ॥ वा० ॥ चारुदत्तनां सांजली वयण, अ- धून आंसु जरीयां नयण ॥ ५ ॥ वा० ॥ रे वत्स तुं हवे धीरो थाय, धीरजे सवि दोलत मले आय ॥ वा० ॥ तें धन अर्थी हे सुण वहोत, धन देव- रावुं आव नुं पहोत ॥ ६ ॥ वा० ॥ तेरे घरकी दासी होय, लखमी तेम करीये नुं जोय ॥ वा० ॥ ते सुणी चाल्यो चारुदत्त, लोजीने होय बहुतुं सत्त ॥ ७ ॥ वा० ॥ बीजे दिन एक अटवी मांहि, पहोतो मन धरतो उ- ग्राहि ॥ वा० ॥ तिहां एक पर्वत मांहे जाय, नियम शिला उघाडे पाय ॥ ८ ॥ वा० ॥ दुर्गपाताल नामे बिल तेह, तेहमां पेठो त्रिदंमी जेह ॥ ॥ वा० ॥ चलतां चलतां दीठो कूप, रस थानक महा दारुण रूप ॥ ए ॥ वा० ॥ चार हाथनो ते विस्तार, मानुं नरक तणुं ए द्वार ॥ वा० ॥ तुंबडुं आपी कहे सुण एम, सुण कहुं वत्स धरी तुज प्रेम ॥ १० ॥ वा० ॥ एहमां रस जरीने तुं आव, एम कही मंचिका मांहि जाव ॥ वा० ॥ रज्जु जाली मोकल्यो त्यांहि, मेखला दीठी में तेह मांहि ॥ ११ ॥ वा० ॥ तिहां रस जरीयो दीठो जोर, ऊंडो वारे कोइ तिहि जोर ॥ वा० ॥ चारुदत्त ते माहरुं नाम,

मोकल्यो जगवंते ए गाम ॥ १२ ॥ वा० ॥ शे मुजने तुं करे निषेध, म
ए रसशुं ठे वेध ॥ वा० ॥ ते पण कहे सुण म्हारी वात, वणिक ने ध
वांठक हुं थात ॥ १३ ॥ वा० ॥ एह त्रिदंमीए नाख्यो मुज, सुण वली थाग
जाखुं तुज ॥ वा० ॥ रसमां मत तुं बोले हाथ, कोहीने थाशे ते का
॥ १४ ॥ वा० ॥ जरीने आपुं तुजने एह, पण मत बोलजे ताहरी दे
॥ वा० ॥ तव में तुंबडुं आप्युं तास, रस जरी आप्यो मुजने खास ॥ १५
वा० ॥ मांची हेठे ते बांध्युं तुंब, रज्जु हलावी पामी बुंब ॥ वा० ॥ खेंची
काढे तापस ताम, कूपने तटे आव्यो हुं जाम ॥ १६ ॥ वा० ॥ मागे तुंब-
डुं माहरी पास, तव डोही लोजी लह्यो तास ॥ वा० ॥ में रस ढोली
नाख्यो सार, नाखी दीधो मुज तिवार ॥ १७ ॥ वा० ॥ तेह अकारण
बंधु ताम, कहे मत कर तुं खेद ए गाम ॥ वा० ॥ रसमां तो नथी पमीयो
त्र, रोगनी उत्पत्ति थाये यत्र ॥ १८ ॥ वा० ॥ बीजो नहीं उपाय ते कोय,
.ीकलवानो सुण कहुं तोय ॥ वा० ॥ गोधा जब आवे इण गाम, तेहने
पुंठडे वलगजे ताम ॥ १९ ॥ वा० ॥ तव लग तुं इहां रहे शुज ध्यान,
करी पंच परमेष्ठीनुं ज्ञान ॥ वा० ॥ तास वचने हुं लह्यो आनंद, तेह
पंचत्व लह्यो सुखकंद ॥ २० ॥ वा० ॥ जीषण शब्द सुण्यो एक दिन, तव बीहीनो
आकुल थयो मन्न ॥ वा० ॥ संजारी ते पुरुषनुं वयण, गोधा जाणी
निश्चय नयण ॥ २१ ॥ वा० ॥ पान करीने पाठी जाय, पुंठडे वलग्यो हुं निण
ठाय ॥ वा० ॥ गाय पुंठडे वलगे गोवाल, तेम वलग्यो हुं अति सुकुमाल
॥ २२ ॥ वा० ॥ नरक मांहिथी नीकले जेम, अथवा गर्जावासथी तेम ॥
वा० ॥ देखी जीवलोकने वहार. नवो जनम एणे अवतार ॥ २३ ॥ वा० ॥
मूकी दीधुं पुंठडुं जाम. मूर्छा आवी मुजने नाम ॥ वा० ॥ पमीयो जूमि
वली लाधुं चेत. जेंसो एक धायो दुःख देत ॥ २४ ॥ वा० ॥ एक शिला
उपर चड्यो रंग. तेह शिला चाले निज शृंग ॥ वा० ॥ अजगर वनजेंसाने
खाय, तव नासी गयो तिहांथी पलाय ॥ २५ ॥ वा० ॥ अटवी अंते पाम्यो
गाम. तिहां मुज माउलमित्रनुं धाम ॥ वा० ॥ दुःखनी श्रेणि लही
में तत्र. किम कही शकीये ते दुःख अत्र ॥ २६ ॥ वा० ॥ बीजे खंडे बारमी
ढाल. पहेले अधिकारे ए रसाल ॥ वा० ॥ पंमित उत्तमविजयनो शिष्य,
पद्मविजय कहे पुण्ये जगीश ॥ २७ ॥ वा० ॥ सर्व गाथा ॥ ४१० ॥

॥ दोहा ॥

॥ रुद्रदत्त नामे मल्यो, मातलमित्र सुजाण ॥ तिण लाव्यो पाव्यो घ
करुणा मनमां आण ॥ १ ॥ अंग सज्ज माहरुं थयुं, चांरु ग्रह्यां तिहां तु
॥ रुद्रदत्त साथे गयो, मनमां हर्ष अतुल ॥ २ ॥ एक नदी तिहां मो
की, इक्षुगवती तस नाम ॥ उतरी गिरिकूटे गया, वेत्रवने अभिराम ॥ ३
अनुक्रमे पहोता अम्हे, टंकण देश मझार ॥ दोय ग्रह्या तिहां बोकडा, ति
अजपथ लह्या पार ॥ ४ ॥ रुद्रदत्त बोल्यो तिहां, हवे न चलाये पाव
पयचारीनो आशरो, नहीं को इणे ठाय ॥ ५ ॥ तिणे ए मारी बोकड
मांस करीने वार ॥ रोम करी अंतर वली, करीये इस्यो प्रकार ॥ ६
मांहि आपण पेसीये, नारंड पंखी आय ॥ मांसनी ज्रांतिए लेइ जशे, स
जूमिने ठाय ॥ ७ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ हो पियु पंखीयडा नारी गुणावली ताम जो, पंजरीयुं कर लीधुं क
लोयणे रे लो ॥ ए देशी ॥ हो सुण प्राणीयडा चारुदत्त कहे ताम जो
आपणने ए अज दोय उपगारी थया रे लो ॥ हो सु० ॥ डुर्ग उता
पण जो, तेहने केम हणीये करी बंधु परे मया रे लो ॥ १ ॥ हो० ॥ एह
कुण इहां नाथ जो, दीन हृदय पशु मुखथी नवि बोली शके रे
॥ हो० ॥ जीवनो वध डुःखदाय जो, जीव तणा वधथी सुकृत कोइ न
टके रे लो ॥ २ ॥ हो० ॥ नरग तणां फल थाय जो, जीवघातथी कडु
फल प्राणी लहे रे लो ॥ हो० ॥ ठाम ठाम कहे सूत्र जो, श्री दशवैका
लिक आचार प्रमुख कहे रे लो ॥ ३ ॥ हो० ॥ पुण्य कीलानी जूमि जो
पाप [illegible] विखेरणने वायु समी रे लो ॥ हो० ॥ जवसमुद्रमां नाव जो
[illegible] ॥ वयसि उपर मा[illegible] शिखा [illegible]टा रमी रे लो ॥ ४ ॥ हो० ॥ इती श्री
[illegible]वा० ॥ ज. देवलोक वननेसाने [illegible] नाखी दया रे लो ॥ हो० ॥ प्रि
[illegible]धार हायनो गी ए अंते पाम्यो [illegible] द्वार जोगल सम ए दया सया रे लो
हे सुरू एम, ॥ श्रेणि सर्ह तस्य डुःकृतरजःसंहारवात्या जवो,-दन्वन्नौ
वीने तुं आ बीजे खंडे वारम इती श्रियाम्॥ निःश्रेणिस्त्रिदिवौकसः, प्रियस
गहि, के० विजयनो शिष्य वपु क्रियतां कृपेव जवतु क्लेशैरशेषैः परैः ॥ १
होरि [illegible]ण्या ॥ ४१० ॥ [illegible] जो, कोइ प्रकारे मुजने एह घटे नहीं रे लो ॥

ढो० ॥ नहीं अपराधी एह जो, तुजने पण नवि मारवो मित्र घटे अहीं रे लो ॥ ६ ॥ ढो० ॥ रुद्रदत्त सुणी ताम जो, क्रोध थकी चारुदत्तने एणी परे रे लो ॥ ढो० ॥ तुज आयत्त न एह जो, किम मुज करे निषेध तुं मुज मन नवि सहे रे लो ॥ ७ ॥ ढो० ॥ निर्दयपणे हएयो एक जो, बीजो रे मारणने धायो पापीयो रे लो ॥ ढो० ॥ चारुदत्तनुं मुख जो, जोवे रे ते अज मन मांहि कांपीयो रे लो ॥ ८ ॥ ढो० ॥ कहे चारुदत्त ताम जो, माहरो जोरो नहीं ए आगल को हवे रे लो ॥ ढो० ॥ पण सुण माहरी वात जो, एह अवस्था मांहि सखाइ जे थवे रे लो ॥ ९ ॥ ढो० ॥ धर्म जिणंदनो धार जो, धीरज धरी सुण अज तुं माहरी वाणीने रे लो ॥ ढो० ॥ वीतराग करी देव जो, गुरु ते जाणजे जे देवनी धरे आणने रे लो ॥ १० ॥ ढो० ॥ जीवघात वली जूठ जो, दूर थकी अदत्तने पचखे तुं वली रे लो ॥ ढो० ॥ ब्रह्मचर्य धरी शुरू जो, परिग्रह ममत्व तजो इणी परे कहे केवली रे लो ॥ ११ ॥ ढो० ॥ तज चउविह तुं आहार जो, सर्व जीवशुं मैत्रीभावो चित्तथी रे लो ॥ ढो० ॥ वली विशेष रुद्रदत्त जो, मैत्रीभावे धरजे तुं शुभ रीतथी रे लो ॥ १२ ॥ ढो० ॥ ए नथी हणतो तुज जो, पूर्वउपार्जित कर्म तुने आवी मल्यां रे लो ॥ ढो० ॥ निमित्त मात्र ए जाण जो, पण विण कीधां कर्म कोइने नवि फल्यां रे लो ॥ १३ ॥ ढो० ॥ तें माम्या बहु जीव जो, पूर्व भवे ते कर्म अति तुजने दुःख दीये रे लो ॥ ढो० ॥ ते तुं कर्मशुं रोष जो, करीने दूर करे एणी परे निकामीये रे लो ॥ १४ ॥ ढो० ॥ सांभली वचन रसाल जो, अमृतनी परे तेहना हृदयमां परिणम्यां रे लो ॥ ढो० ॥ देता तिहां नवकार जो, चारुदत्तनां वयण ते अज मनमां रम्यां रे लो ॥ १५ ॥ ढो० ॥ रुद्रदत्ते हएयो ताम जो, बीजो रे ते बाकडो निर्दयपणे रे लो ॥ ढो० ॥ तेहनी खालमां दोय जो. हाथ मांहि छुरी लेइने बेठा मद घणे रे लो ॥ १६ ॥ ढो० ॥ भारंड पंखी नाम जो, लेइ चाल्यां अम्ह बे जणने आमिष गणी रे लो ॥ ढो० ॥ अन्य भारंड तिहां आय जो. जुद्ध करण लागो आमिष इछा घणी रे लो ॥ १७ ॥ ढो० ॥ चारुदत्त सुणी नाम जो, चंचूपुटथी कर्मवशे सरमां पड्यो रे लो ॥ ढो० ॥ छुरीए छेदी बंध जो, तेह सरोवर तरीयो कर्म थकी जस्यो रे लो ॥ १८ ॥ ढो० ॥ जातां अटवी मांहि जो, दीठो रे पर्व-

त ते उपर हुं चढ्यो रे लो ॥ हो० ॥ दीठा तिहां मुनिराय जो, काउस्सग्गध्याने ते कर्म थकी वढ्यो रे लो ॥ १९ ॥ हो० ॥ कर्म तणी गति जोय जो, कर्म करे शुं शुं नवि पामे प्राणीयो रे लो ॥ हो० ॥ कर्मे रामजी राण जो, वसीया रे सीताने कलंक ते आणीयो रे लो ॥ २० ॥ हो० ॥ वरस लगे नवि लद्ध जो, भिक्षा रे श्री ऋषभ जिनेसर राजीयो रे लो ॥ हो० ॥ मल्लि तीर्थंकर नारी जो, कर्म थकी जश जेहनो जगमां गाजीयो रे लो ॥ २१ ॥ हो० ॥ दश मस्तक जुउ खोय जो, रावण कर्मे करीने बहु दुःख पामीयो रे लो ॥ हो० ॥ कलावती गया हाथ जो, कर्मे रे ब्रह्मदत्त निज चक्षु वामीयो रे लो ॥ २२ ॥ हो० ॥ सुभूम चक्री देखी जो, सायरमां ते बूमो अणखूटे मुउ रे लो ॥ हो० ॥ सुर करता जस सेव जो, पण कोइ कर्म तणी गति नवि जावे जुउ रे लो ॥ २३ ॥ हो० ॥ कर्मे चारुदत्त जो, रिद्धि लही वली कर्मे ते सवि हारीयो रे लो ॥ हो० ॥ कर्म करे ते होय जो, कर्मे रे चारुदत्तने एम करावीयो रे लो ॥ २४ ॥ हो० ॥ कर्मे खेती थाय जो, कर्म विना ते सूकी जाय ततक्षणे रे लो ॥ हो० ॥ अथवा नृपन मरी जाय जो, कर्म विना ते पंच मांहि कोइ नवि गणे रे लो ॥ २५ ॥ ॥ हो० ॥ प्राणी जमवा जाय जो, कर्मे भोजन देनारी कृपण होवे रे लो ॥ हो० ॥ अथवा माखी आवी जो, जो जोगवाइ मले तो पातुं ते जवे रे लो ॥ २६ ॥ हो० ॥ कर्मे मुनिवर पाम जो, बीजे रे खंडे पहेला अधिकारमां रे लो ॥ हो० ॥ पद्मविजय कहे एम जो, तेरमी ढाल सुणो जवि जय जयकारमां रे लो ॥ २७ ॥ हो० ॥ सर्व गाथा ॥ ४४४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मुनि देखीने प्रणमीयो, पारे मुनि काउस्सग्ग ॥ धर्मलाभ देइ कहे, साधंता शिवमग्ग ॥ १ ॥ रे चारुदत्त शेठजी, केम आव्यो तुं आंही ॥ मनुष्य मात्र चारो नहीं, संभवीये कोइ प्राही ॥ २ ॥ खग विद्याधर सुर वली, आवे आणे ठाम ॥ तुं मुजने नवि उलखे, पण सांभल कहुं आम ॥ ३ ॥ अमितगति विद्याधरु, चंपा नयरी बार ॥ मूकाव्यो बंधन थकी, तें मुजने अवधार ॥ ४ ॥ अष्टापदनी दुकडो, दीठो वयरी तेह ॥ नासी अष्टापदे गयो, चेलशरण करे जेह ॥ ५ ॥ तब हुं महारी नारीने, लेइ चाल्यो निज धाम ॥ मुजने तब महारा पिता, थापे राज्यने ठाम ॥ ६ ॥ हिरण्यकुंभ

सुवर्णकुंज, मुनिवर दोय सुजाण ॥ चारण मुनि पासे ग्रहे, मुक पिता व्रत
जाण ॥ ७ ॥ मनोरमा स्त्री माहरे, तेहना पुत्र ते दोय ॥ सिंहयशा वराह-
ग्रीव, लक्षणवंता सोय ॥ ८ ॥ विजयसेना नारी वली, तेहनी कूखे एक ॥
धर्मसेना नामथी, अतिशय कला विवेक ॥ ९ ॥ राज देइ सिंहजस प्रते,
वराहग्रीव युवराज ॥ विद्या आपी दोयने, साधुं आतम काज ॥ १० ॥ तात
गुरु पासे ग्रही, दीक्षा पुण्यप्रभाव ॥ विचरंतो इहां आवीयो, भावाने निःपाव
॥ ११ ॥ लवणसमुद्र मांहे रह्यो, कुंजकंठ ए द्वीप ॥ कर्कोटक नामे गिरि,
तपीये तप जिहां खिप्प ॥ १२ ॥ तुं किम आव्यो इम कहे, में कही
सघली वात ॥ इण अवसर अचरिज थयुं, ते सुणजो अवदात ॥ १३ ॥
मुनिवर पासे आवीया, विद्याधर दोय जाय ॥ मुनि प्रणमी जब उपविशे,
तव भाखे मुनिराय ॥ १४ ॥ चारुदत्त ए जाणजो, जे कहेतो तुम्ह नित ॥
तव मुक ताय ताय करी, प्रणमे मन धरी प्रीत ॥ १५ ॥ वेला जब ते वेहु
जणा, तव आयो एक देव ॥ दिव्य रूप धरतो थको, प्रणमी करी मुक सेव
॥ १६ ॥ देइ प्रदक्षिणा मुनि प्रते, वंदे ते ऋषिराय ॥ तव पूछे विद्याधरा,
देव प्रते चित्त लाय ॥ १७ ॥ नृकया देव थइ तुम्हे, एम वंदन किम जोय ॥
धर्माचारय माहरो, देव कहे ए होय ॥ १८ ॥ ते कारण नवि चूकीयो, देव
कहे सुणो वात ॥ धर्माचारज माहरो, इणी परे ए कहे वात ॥ १९ ॥

॥ ढाल चोदमी ॥

॥ तुं कुल मांहे उपनी, उपजीने पायो हो परियागननुं पाणी ॥ हो
राज ॥ असरणी रहे मुक नयणथी, फट पापिणी हत्यारी हो मुरखई कांइ
हरखाइ ॥ हो राज ॥ ए देशी ॥ वाणारसी नयरी भली, दोय परिव्राजिका
निवसे हो निज दर्शन घणुं कुशला ॥ हो राज ॥ सुनंदा सुलसा अने.
नामे ते न ऊनाचे हो पंडित जो मंत्र बहुला ॥ हो राज ॥ १ ॥ याज्ञ-
वल्क्य परिव्राजका, अति पंडित ने फिरता हो विरुद ने पदवी धरावे
॥ ढा० ॥ सुलसने जे जीते इहां, तेहनो हुं थाउं शिष्य हो वर्षी करे तेह
करावे ॥ ढा० ॥ २ ॥ याज्ञवल्क्य जीत्यो तिहां, थइ परिव्राजिका नु-
क्षमा हो दास, नम कर सेवा ॥ ढा० ॥ यौवनवंते ने वेहु मल्या, कर्म
नाम परवशथी हो नित थइ भोगनी सेवा ॥ ढा० ॥ ३ ॥ एम करतां
एक सुत थया बालकना ढाल्यथी वीहींना हो सुत तजे पिप्पल हेठे ॥

॥ हो० ॥ नाठां हवे ते विहुं जणां, सुनद्रा ते जाणी हो परिव्राजक सुत नेठे ॥ हो० ॥ ४ ॥ पिंपल पान अदन करे, एहवा ते बालकने हो लेइ चाली मन हरखे ॥ हो० ॥ पिप्पलाद अनिधा ठवे, वेद नणंतां पामे हो पार ते वेदने परखे ॥ हो० ॥ ५ ॥ सुलसा याज्ञवल्क्य तिहां, आवे जीतण काजे हो पण ते उलटां हार्यां ॥ हो० ॥ माता पिता निज जाणीयां, मुफने नाखी दीधो हो इणी परे मनमां धार्यां ॥ हो० ॥ ६ ॥ पितृमेध मातृमेधना, यज्ञ प्ररूपे खेदे हो लाज ते नाखे रुनो ॥ हो० ॥ एम अनारज वेदने, तेह प्ररूपे पापी हो विहुंने होमे जूंनो ॥ हो० ॥ ७ ॥ हय गय सुत बंधु वली, खर ने उंट वृपजना हो यज्ञ प्ररूपे पापी ॥ हो० ॥ वाुलि नामे तेहने, तेह मरणने पामे हो हरखे शिष्य ते थापी ॥ हो० ॥ ॥ ८ ॥ तेह घणा जीववध करी, घोर नरकमां जावे हो पावे दुःख ते वहुलां ॥ हो० ॥ नरक मांहेथी नीकली, पशु मांहे हुं उपनो हो दुःख तणां जिहां वहुलां ॥ हो० ॥ ९ ॥ पंच वार एणी परे थयो, दुष्ट द्विजे मुफ हणीने हो नाख्यो अगनिकुंडे ॥ हो० ॥ टंकण देशे उपनो, अजने हुं अवतारे हो मारे रुद्र ते जूंडे ॥ हो० ॥ १० ॥ चारुदत्ते मुफ आपीयो, श्रीजिनवरनो धर्म हो तेहथी सुरपद पाम्यो ॥ हो० ॥ सौधर्मे सुरसुख नलां, नोगवतां में दीठो हो धर्माचारज नाम्यो ॥ हो० ॥ ११ ॥ तिण में पूरवे वांदीयो, तव दोय नाखे सुरने हो तुमने ए उपगारी ॥ हो० ॥ अम पण एह पिता समो, जीवनो दाता जाणयो हो अम्ह पितुबंध विदारी ॥ ॥ हो० ॥ १२ ॥ चारुदत्तने सुर कहे, तुफने शुं उपगरीये हो ते कहो स्वामी सुगुणा ॥ हो० ॥ तव कह्यो म्हें तुं आवजे, अवसर ते पामीने हो हित मन आणी दुगुणा ॥ हो० ॥ १३ ॥ तव ते सुर अदृश थयो, खेचरे मुफने आण्यो हो शिवमंदिर मंदिरमां जाणी ॥ हो० ॥ तेहनी नारी ने मात जी, नक्ति करे तस अधिकी हो मन जाणी गुणखाणी ॥ हो० ॥ १४ ॥ एक दिन मुफ करे विनति, तात जी दीक्षा लेतां हो नाख्युं एणी परे सारुं ॥ हो० ॥ ज्ञानीए इम मुफ नाखीयुं, जेह कलाए जीते हो नगिनी तुमची वारु ॥ हो० ॥ १५ ॥ ते पहनो नरता यशे, वसुदेव नामे रुडो हो नंदन देव समानो ॥ हो० ॥ ते नूचर ठे नूपति, रूपवती सुखे परणे हो तेहवो करवा तानो ॥ हो० ॥ १६ ॥ चारुदत्तने आपजो, कुमरी अमरी सरखी हो

नामे गंधर्वसेना ॥ हो० ॥ ते कारण प्रभु लीजीये, लेइने वेगे पधारो हो साथे बहुली सेना ॥ हो० ॥ १७ ॥ हवे तिहांथी जव चालीयां, चालतां तिहां आव्यो हो देव पूरव संकेते ॥ हो० ॥ खेचर अमर ते सहु मली, देव विमाने बेसारी हो मूक्यो मुज इहां हेते ॥ हो० ॥ १८ ॥ मणि माणिक मुक्ताफले, मह्रारुं घर तिणे भरीयुं हो करीयुं पुण्य ते आव्युं ॥ हो० ॥ सहु नमी निज थानक गया, माउल नारी वेश्या हो देखी अचरिज आव्युं ॥ हो० ॥ १९ ॥ ए गंधर्वसेना तणी, उत्पत्ति में भाखी हो साखी सहु जन जाणे ॥ हो० ॥ जाणी वणिकधुया तुम्हे, उवेखी मत मूको हो चूको रखे इण टाणे ॥ हो० ॥ २० ॥ बीजे खंडे चौदमी, पहेले ते अधिकारे हो ढाल ते भाखी सारी ॥ हो० ॥ पंकित उत्तमविजयनो, पद्मविजय कहे पूरो हो थयो अधिकार विचारी ॥ हो० ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ ४०४ ॥ इति श्रीमद्दसंविज्ञपक्षधरस्य श्रीमद्गुमचरणकर्तुः वंदितनिखिलजनभ्रमरचरणारविंदस्य पंकितश्रीउत्तमविजयगणेः शिष्यपंकितपद्मविजयविरचिते श्रीमदमरनिकरवंदितनेमिचरित्रे प्राकृतप्रबंधे द्वितीयखंडस्य हरिवंशादशदशार्हउत्पत्तिश्यामादिगंधर्वसेनावर्णनपर्यंतचारुदत्तचरित्रवर्णननामप्रथमोऽधिकारः समाप्तः ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीयखंडस्य द्वितीयोऽधिकारः प्रारभ्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रणमुं प्रथम जिनेशने, शारद लागुं पाय ॥ सरस कथा कहेतां थकां, सार करो मुज माय ॥ १ ॥ श्रीवसुदेवचरित्रने, सुणतां अचरिज थाय ॥ ते माटे सज्जा थइ सुणो, चित्त गर्वी इक नाय ॥ २ ॥ चारुदत्तना मुख थकी, गान सुणी वसुदेव ॥ हरख्यो मनमां अति घणो, प्रीति धरे अति हेव ॥ ३ ॥ एक दिन श्रीवसुदेवजी, रथ बेसीने जाय ॥ साथे नारी लेइने, उद्याने ते गाय ॥ ४ ॥ मानगंध धर्यो जिणे, मातंग पत्निन जेह ॥ कन्या रूपकी, रूप तणी मानु गेह ॥ ५ ॥ गंधर्वसेना देखीने मातंगीने [illegible] कहे एम रथ [illegible] देखी थइ, दोष करी त्रीकेम ॥ ६ ॥ उद्याने [illegible] आव्या [illegible] ॥ निज [illegible] अचरिज थयुं ते तुलजा उत्साह ॥ ७ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ इण अवसर तिहां डुंबनुं रे, आव्युं टोलुं एक रे ॥ चतुर नर ॥ उन्ना उलंगनी करे हो लाल ॥ ए देशी ॥ ते मातंगना यूथथी रे, आवी मातंगी एक रे ॥ चतुर नर ॥ दीये आशीष ते अति नली हो लाल ॥ बेसी पासे तेहने रे, कहे वसुदेवने वात रे ॥ च० ॥ उत्तर द्यो मुज सांनली हो लाल ॥ १ ॥ रुषन जिनेश्वर आपीयां रे, पुत्रने वहेंची राज्य रे ॥ च० ॥ नमि विनमि पासे नहीं हो लाल ॥ प्रनु दीक्षा लेइ अनुक्रमे रे, अष्टापद गिरि जाय रे ॥ च० ॥ आतमसरूप मांहे रही हो लाल ॥ २ ॥ नमि विनमि पण आवीया रे, राज्यना अर्थी जीव रे ॥ च० ॥ नित उटकाव करी तिहां हो लाल ॥ ढिंचण सम करे फूलना रे, दगला प्रनु मुख आव रे ॥ च० ॥ उलंग करे उन्ना जिहां हो लाल ॥ ३ ॥ तिहां धरणेंड नुगो घणुं रे, देखी प्रनु पर नत्ति रे ॥ च० ॥ आप्युं राज हरखे करी हो लाल ॥ दक्षिण उत्तर श्रेणिनुं रे, सुतने देइ निज राज्य रे ॥ च० ॥ लेइ चारित्र सिद्धि वरी हो लाल ॥ ४ ॥ नमिनो सुत मातंग थयो रे, लेइ दीक्षा गयो सग्ग रे ॥ च० ॥ तेहना वंशमां शोनतो हो लाल ॥ प्रहसित नामे खेचर थयो रे, तेहनी हुं तुं नारी रे ॥ च० ॥ नाम हिरण्यवती थतो हो लाल ॥ ५ ॥ सिंहदंष्ट्र सुत माहरे रे, नीलजशा धुया सार रे ॥ च० ॥ ते दीठी मारग जतो हो लाल ॥ तेह मारे करी पीमती रे, परणो धरी मन राग रे ॥ च० ॥ दिवस ते आज सोहावतो हो लाल ॥ ६ ॥ तव वसुदेव कहे इस्युं रे, कहीशुं वात विचारी रे ॥ च० ॥ एम सुणी ते थानक गइ हो लाल ॥ अन्य दिवस ग्रीष्म समे रे, जलक्रीमा करी राय रे ॥ च० ॥ सूतो नारी सह जइ हो लाल ॥ ७ ॥ तिहां एक आवी नूतमो रे, काली तेहनो पाण रे ॥ च० ॥ उठ उठ मुख बोलतो हो लाल ॥ पूठे बुकी मारतो रे, लेइ चाल्यो आकाश रे ॥ च० ॥ नूत ते नारथी डोलतो हो लाल ॥ ८ ॥ जइ चय पासे मूकीयो रे, धगधगती जस ज्वाल रे ॥ च० ॥ पासे हिरण्यवती खेचरी हो लाल ॥ आपी हिरण्यवती प्रते रे, श्रीवसुदेव कुमार रे ॥ च० ॥ नूत अदृष्ट थयो ते करी हो लाल ॥ ९ ॥ तव कहे हसीने खेचरी रे, कस्यो विचार के नाहीं रे ॥ च० ॥ करो विचार हवे थिर थइ हो लाल ॥ तिणे अवसर आवी तिहां रे, नीलयशा नामे नारी रे ॥ च० ॥ देवी परे सखीमां गइ हो लाल

॥ १० ॥ हिरण्यवती कहे तेहने रे, ले ताहरो नरनार रे ॥ च० ॥ सुणी लेइ आकाशे गइ हो लाल ॥ हिरण्यवती वसुदेवने रे, आवी कहे एम वात रे ॥ च० ॥ मेघप्रज वने सुणी लज्जा थइ हो लाल ॥ ११ ॥ नाम हिरिमंत तिहां अछे रे, विद्याधर अंगार रे ॥ च० ॥ विद्या साधतां तेहने हो लाल ॥ निःफल थाय छे स्वामी जी रे, साधे छे वली तेह रे ॥ च० ॥ बहु काले सिद्धि जेहने हो लाल ॥ १२ ॥ तुम नजरे सिद्ध थायशे रे, करो स्वामी उप-गार रे ॥ च० ॥ कुंवर कहे लखुं पहने हो लाल ॥ सुणी शिवमंदिर लेइ गइ रे, सिंहदंष्ट्र जिहां राय रे ॥ च० ॥ घर तेमी आवे तेहने हो लाल ॥ १३ ॥ नीलजशा निज पुत्रिका रे, परणावे धरी हेज रे ॥ च० ॥ कोलाहल एणी अवसरे हो लाल ॥ सांजली पूछे वातकी रे, तेकी तिहां प्रतिहार रे ॥ च० ॥ कहे वसुदेव एणी परे हो लाल ॥ १४ ॥ शे कारण एम थइ रह्युं रे, तव कहे ते प्रतिहार रे ॥ च० ॥ नयर शकटमुख जाणीये हो लाल ॥ नीलवंत राजा जलो रे, नीलवती तस नारी रे ॥ च० ॥ फरजन दोय वखाणीये हो लाल ॥ १५ ॥ नील नामे नंदन जलो रे, नीलांजना धुया तास रे ॥ च० ॥ रीति पहेलां तिहां इम हती हो लाल ॥ जाइ जगिनी हुए दंपति रे, तेहमां नहीं कोइ निंद्य रे ॥ च० ॥ पंचे मान्युं ते वती हो लाल ॥ १६ ॥ नीलकुमर ने नीलांजना रे, जोगवतां सुख जोग रे ॥ च० ॥ नीलकंठ सुत उपनो हो लाल ॥ नीलयशा संकेतथी रे, आवी मागे तेह रे ॥ च० ॥ इणी अवसर इहां नीपनो हो लाल ॥ १७ ॥ नाम बृहस्पति पूछीयुं रे, नीलयशानो नाथ रे ॥ च० ॥ कोण पति मुज धुयानो थशे हो लाल ॥ ते कहे वसुदेव राजीयो रे, इम सुणी आएयो तुज रे ॥ च० ॥ परणावो शुज दिन वशे हो लाल ॥ १८ ॥ तेह सुणीने आवीया रे, लाग्युं युद्ध महांत रे ॥ च० ॥ हारीने गया खे-चर हो लाल ॥ बीज खंड पहेली कही रे, बीज अधिकारे ढाल रे ॥ च० ॥ पद्म कहे ए मन धरो हो लाल ॥ १९ ॥ सर्व गाथा ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ते सांजली हर्षित थया, श्रीवसुदेव कुमार ॥ नीलयशा साथे करे, क्रीडा अतिहि उदार ॥ १ ॥ श्रीहिरिमंत गिरे गयां, एक दिन दंपती तेह ॥ रति क्रीडा करता तणी, जाणी ते ससनेह ॥ २ ॥ कदलीघर नारी रचे, र-मतां तिहां आनंद ॥ देखे मोर प्रते तिहां, नयण तणे सुखकंद ॥ ४ ॥

कला कलापी पूर्ण ए, देखी विस्मित थाय ॥ तेह लेवा गइ जेटले, अच-रिज होय तिण ठाय ॥ ३ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ मालीकेरे बागमां दो नारिंग पक्के रे लो, अहो दो नारिंग पक्के रे लो॥ ए देशी ॥ जाये तेहने जालवा, तव तेह कलापी रे लो ॥ अहो तव० ॥ गरुड परे ऊमी गयो, निज खंध आरोपी रे लो ॥ अहो निज० ॥ १ ॥ केके वसुदेव दोडीया, पण नारी न लही रे लो ॥ अहो प० ॥ रात रही कोइ थानके, चाल्यो ते सवही रे लो ॥ अ० ॥ २ ॥ दक्षिण दिशि जातां थका, गिरितट नामे नयरी रे लो ॥ अ० ॥ वेदध्वनि महोटी सुणी, पूछे तिहां शौरि रे लो ॥ अ० ॥ ३ ॥ वेदपाठ किणे कारणे, करे लोक ए हरखे रे लो ॥ अ० ॥ तव दशग्रीव ब्राह्मण कहे, इण नयरीए निरखे रे लो ॥ ॥ अ० ॥ ४ ॥ सुरदेव ब्राह्मण अछे, एह ग्रामनो स्वामी रे लो ॥ अ० ॥ क्षत्रियाणी तस भारजा, जेहने सुता पामी रे लो ॥ अ० ॥ ५ ॥ वेदनी जाण ते कन्यका, देखी तस तात जी रे लो ॥ अ० ॥ ज्ञानीने पूछे तव कहे, इणी परे सुणो वात जी रे लो ॥ अ० ॥ ६ ॥ वेदथी जीतशे एहने, ते परणशे नारी रे लो ॥ अ० ॥ तेहने जीतवा कारणे, बीजां काम निवारी रे लो ॥ अ० ॥ ७ ॥ वेद अभ्यास करे सहु, ब्रह्मदत्तनी पासे रे लो॥ अ०॥ तेह सुणी हर्षित थयो, करतो सुविलासे रे लो ॥ अ० ॥ ८ ॥ ब्राह्मण रूप धरी करी, गया ब्रह्मदत्त पासे रे लो॥ अ० ॥ स्कंदिल नामे ब्राह्मणो, गौतम गोत्रवासे रे लो ॥ अ० ॥ ए ॥ वेद भणावो मुजने, तव ब्रह्मदत्त भाखे रे लो ॥ अ० ॥ आर्य अनार्य बे भेदथी, आचारिज दाखे रे लो ॥ अ० ॥ १० ॥ तेहनी उत्पत्ति सांभलो, आर्य वेद तो कीधा रे लो ॥ अ० ॥ भरत चक्रीए जाणजो, तेह जग प्रसिद्धा रे लो ॥ अ० ॥ ११ ॥ वेद अनारज उपना, तेहनी सुणो वात रे लो ॥ अ० ॥ चारणयुगल-पुरे वसे, अयोधन नृप ख्यात रे लो ॥ अ० ॥ १२ ॥ सुलसा नामे वर सुता, मांडे स्वयंवरा मंडप रे लो ॥ अ० ॥ तव तस माता रोवती, देखी ते अजंप रे लो ॥ अ० ॥ १३ ॥ पूछे वात ते मातने, तव कहे तस कामे रे लो ॥ अ० ॥ तहारा तातनो भाणेजो, मधुपिंगल नामे रे लो अ० ॥ १४ ॥ वरवो तुजने ते घटे, बीजाने वरतां रे लो ॥ अ० ॥ मुजने

दुःख बहु उपजे, तिणे रुदन ते करतां रे लो ॥ अ० ॥ १५ ॥ तव कहे सांभलो मात जी, बीजो नहीं परणुं रे लो ॥ अ० ॥ एह वात करतां थका, थयुं एम तस हरणुं रे लो ॥ अ० ॥ १६ ॥ चेटी सगर राजा तणी, ठानी वात ते जाणी रे लो ॥ अ० ॥ सगर रायनी आगले, मंदोदरीए वखाणी रे लो ॥ अ० ॥ १७ ॥ सगर राय पण तिणे समे, उत्कट महा बलीयो रे लो ॥ अ० ॥ काढी मूकाव्यो तिहां थकी, मनमां खलभलीयो रे लो ॥ अ० ॥ १८ ॥ बलीया आदमी जे करे, ते सघलुं छाजे रे लो ॥ अ० ॥ जय जयकार सहु कहे, उपर तूर वाजे रे लो ॥ अ० ॥ ॥ १९ ॥ गलीया आदमी जे करे, ते सघलुं वाय रे लो ॥ अ० ॥ कोइ वचन माने नहीं, गनहा पाटू खाय रे लो ॥ अ० ॥ २० ॥ बलीयो जानु नरपति, काढी मूक्यो तेह रे लो ॥ अ० ॥ मधुपिंगल मन चिंतवे, जुउं शुं करे एह रे लो ॥ अ० ॥ २१ ॥ विष्णु राय सुत हुं जलो, अजोधननो जाणेज रे लो ॥ अ० ॥ सोम वंशमां उपनो, दीपतो छे तेज रे लो ॥ अ० ॥ २२ ॥ सूर्यवंशी ए नारी छे, मुजने घटे देवी रे लो ॥ अ० ॥ तोपण मुज अपमानीयो, ए वात ते केहवी रे लो ॥ अ० ॥ २३ ॥ एणी परे रूप धरी करी, थयो तपसी बाल रे लो ॥ अ० ॥ काल करीने उपनो, देवता महाकाल रे लो ॥ अ० ॥ २४ ॥ परमाधामी उपनो, अति ते विकराल रे लो ॥ अ० ॥ साठ सहस्र सुर अधिपति, महापापनो ढाल रे लो ॥ अ० ॥ २५ ॥ चिंते मनमां देवता, सगरादिक राजा रे लो ॥ अ० ॥ दुःख पामे तिम हुं करुं, नवि रहे जेम ताजा रे लो ॥ अ० ॥ २६ ॥ शुक्तिमती नयरी जली, तिहां हुउं विवाद रे लो ॥ अ० ॥ यज्ञ पशुना जाखीया, पर्वते ते विपाद रे लो ॥ अ० ॥ २७ ॥ लोके काढी मूकीयो, तस पासे आवे रे लो ॥ अ० ॥ तेह देवता इम कहे, एक वात सुहावे रे लो ॥ अ० ॥ २८ ॥ खीरकदंबक ताहरो, अध्यापक रुडो रे लो ॥ अ० ॥ हुं पण तेहनो शिष्य हुं, लोके कह्यो तुज कूडो रे लो ॥ अ० ॥ २९ ॥ ते सांभलीने आवीयो, ताहरो पक्ष थापुं रे लो ॥ अ० ॥ तेहनो उपाय करुं हवे, तुज जश आरोपुं रे लो ॥ अ० ॥ ३० ॥ एम कहीने देवता, विकुर्वे मारी रे लो ॥ अ० ॥ विविध रोग करे लोकने, एणी परे मन धारी रे लो ॥ अ० ॥ ३१ ॥ पर्वत यज्ञ करावतां, सहु लोकने सारे रे लो ॥ अ० ॥ रोग विलय जावे तिहां, देव

माया धारे रे लो ॥ अ० ॥ ३२ ॥ पर्वत पासे आवी करी, करे यज्ञ ते राजा रे लो ॥ अ० ॥ थलचर खेचर जीवना, वधथी थाये साजा रे लो ॥ ॥ अ० ॥ ३३ ॥ सगर रायनो पण करे, परिवार ते मांदो रे लो ॥ अ० ॥ अंतेउर परिजन सवे, बहु रोगे फांदो रे लो ॥ अ० ॥ ३४ ॥ एक हजार ने आठ ते, करे यज्ञ उदारा रे लो ॥ अ० ॥ बहु धन तिहां खरचावीयुं, जेम मेघनी धारा रे लो ॥ अ० ॥ ३५ ॥ जीवनो वध तिहां बहु थयो, कहेतां नावे पार रे लो ॥ अ० ॥ ब्राह्मणने संतोषीया, देइ दान उदार रे लो ॥ अ० ॥ ३६ ॥ ब्राह्मण पण सहु लोभीया, प्रशंसा करे तेहनी रे लो ॥ अ० ॥ नाम दिवाकर राजीयो, करे यज्ञनी श्रेणी रे लो ॥ अ० ॥ ३७ ॥ तिण अवसर नारद ऋषि, लेइ जाये ते पशुआ रे लो ॥ अ० ॥ जाणे देव ते वातमी, देखी वात विरसुआ रे लो ॥ अ० ॥ ३८ ॥ पश्चिमा ऋषभ जिनंदनी, थापे मनोहारी रे लो ॥ अ० ॥ विघन विघातने कारणे, मंगल सुखकारी रे लो ॥ अ० ॥ ३९ ॥ देखाडे ते विमानने, एणी परे कहे सुणजो रे लो ॥ अ० ॥ मरण लहे जे यज्ञमां, देवता थाये सुणजो रे लो ॥ ॥ अ० ॥ ४० ॥ लोक प्रवाद थयो तिहां, यज्ञथी सुर थाये रे लो ॥ अ० ॥ ते दिनथी मांमी करी, गोमेधादि कराय रे लो ॥ अ० ॥ ४१ ॥ स्वर्गहेतु जाणी करी, सगर ने सुलसा रे लो ॥ अ० ॥ होमाणां ते यज्ञमां, पामे दुःख विलसा रे लो ॥ अ० ॥ ४२ ॥ एणी परे पर्वतथी वली, मधुपिंगल बीजो रे लो ॥ अ० ॥ तेम पिप्पलाद ते जाणीये, अनारय खीज्यो रे लो ॥ अ० ॥ ४३ ॥ इणी परे वेद अनार्यनी, उत्पत्ति मन आणो रे लो ॥ अ० ॥ ४४ ॥ तेहना परण्यो विद्याधर सुता, नारद तेणे गणो रे लो ॥ अ० ॥ ४४ ॥ तेहना वंशमां ए थइ, सोमश्री अभिरामा रे लो ॥ अ० ॥ ते कारण सहु अभ्यसे, जीत्याना भामा रे लो ॥ अ० ॥ ४५ ॥ आर्य अनार्य दोये भणुं, तव तेह जणावे रे लो ॥ अ० ॥ अनुक्रमे जीती कुमरीने, तस पितु परणावे रे लो ॥ अ० ॥ ४६ ॥ तिहां सुख भर लीला करे, बीजे खंडे रसाल रे लो ॥ अ० ॥ बीजे अधिकारे कही, पढ़ी बीजी ढाल रे लो ॥ अ० ॥ ४७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिन रमवाने गयो, ते उद्यान मकार ॥ इंद्रशर्मा नामे तिहां, देखे त्यां इंद्रजाल ॥ १ ॥ कहे वसुदेवजी तेहने, विद्या आप तुं मुज ॥ ते कहे

विद्या आपशुं, पण सुण विधि कहुं तुऊ ॥ २ ॥ सांजे मांडे साधवा, पुर घाय सवार ॥ पण विघन थाये घणां, कोइ सखाइ धार ॥ ३ ॥ ते कहे तु परदेशीउं, माहरे नहीं सखाइ ॥ तव कहे ते इंद्रजालीउं, सांजल रे तुं जाइ ॥ ४ ॥ थाउं सखाइ ताहरो, म करो खेद लगार ॥ विद्या मांडे साधवा, ते वसुदेव कुमार ॥ ५ ॥ तिण समे ते इंद्रजालीयो, शिबिकाए हरी जाय ॥ जाएयो उपसर्ग तेहमां, वसुदेवजी थिर थाय ॥ ६ ॥ वहाणुं वाये जाणीयो, ए माया सद्भाव ॥ उतर्यो ते शिबिका थकी, नाठो तिहांथी ताव ॥ ७ ॥ रात शेष रही योनवी, तृणशोषकपुर जाय ॥ देउलमां सूतो जइ, तिहां एक अचरिज थाय ॥ ८ ॥ राक्षस आव्यो तिहां कणे, श्रीवसुदेव उठाय ॥ हरवा मांड्यो जेटले, तव करे मुष्टि घाय ॥ ९ ॥ बाहुयुद्ध करी तेह सम, करी युद्ध ते अस्त्र ॥ शिला तले पछाडतो, धोबी धुवे जिम वस्त्र ॥ १० ॥ मार्यो ते राक्षस प्रते, वहाणुं वहायुं जाम ॥ लोक ते देखी तेहने, आदरमान करे ताम ॥ ११ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ वाडी फुली अति जली ॥ मन जमरा रे ॥ ए देशी ॥ लोक हरख पामी करी ॥ सुणो सयणा रे ॥ रथ आरोपी कुमार ॥ लाल सुणो सयणां रे ॥ तूर वजावतां बहु परे ॥ सुणो० ॥ जाये नगर मकार ॥ १ ॥ ला० ॥ मानुं परणवाने चाल्यो ॥ सु० ॥ श्रीवसुदेव कुमार ॥ ला० ॥ पांचसें कन्या सहु मली ॥ सु० ॥ देवा मांडे तिवार ॥ २ ॥ ला० ॥ कहे वसुदेव हुं नहीं करुं ॥ सु० ॥ पाणिग्रहण ए वार ॥ ला० ॥ पण एक वात मुऊने कहो ॥ सु० ॥ कुण इनो पुरुष असार ॥ ३ ॥ ला० ॥ तव कोइ नर कहे सांजलो ॥ सु० ॥ श्रीकंचनपुर सार ॥ ला० ॥ देश कलिंगमां जाणीये ॥ सु० ॥ जिनशत्रु राय ते ठार ॥ ४ ॥ ला० ॥ सुदाम नाम ते सुत थयो ॥ सु० ॥ तेह राजाने खाम ॥ ला० ॥ पण ते सहज स्वजावथी ॥ सु० ॥ मांसलोलुप ठाम ॥ ५ ॥ ला० ॥ जेहनो जेह स्वजाव जे ॥ सु० ॥ टाल्या न टले तेह ॥ ला० ॥ श्वान ते पग उंचो करी ॥ सु० ॥ मुतरे कारण केह ॥ ६ ॥ ला० ॥ सोइ चाटे अंगुली ॥ सु० ॥ श्वानपुत्र रह वक्र ॥ ला० ॥ कुंत विटाले कागनो ॥ सु० ॥ शिर हरे चक्रीनुं चक्र ॥ ७ ॥ ला० ॥ लीब ते कडवो सहजथी ॥ सु० ॥ दूध उज्ज्वल नित होय ॥ ला० ॥ शुंठ हरे ते

वायने ॥ सु० ॥ अमृत मिष्ट ते जोय ॥ ८ ॥ ला० ॥ भद्रक विनीत ऋजु कह्या ॥ सु० ॥ क्रोधादिक तनु जास ॥ ला० ॥ मुनिवर भाख्या एहवा ॥ सु० ॥ सहज स्वभाव विलास ॥ ए ॥ ला० ॥ नवि मटे ते केमे कखुं ॥ सु० ॥ जेह-नो जेह स्वभाव ॥ ला० ॥ ते कारण सुदामने ॥ सु० ॥ मांस खाधानो भाव ॥ १० ॥ ला० ॥ राय तो उपकारी घणो ॥ सु० ॥ पण बूव्युं नवि जाय ॥ ला० ॥ दिन दिन मोर एकेकनुं ॥ सु० ॥ मांस अपावे राय ॥११॥ ला० ॥ वंशगिरिथी आणता ॥ सु० ॥ नित्त एकेको मोर ॥ ला० ॥ एक दिन तेहने भक्षवा ॥ सु० ॥ मलीयो मार्जार ते चोर ॥ १२ ॥ ला० ॥ तव तिहां सूपकारक भलो ॥ सु० ॥ बालक मांसने रांध ॥ ला० ॥ दीधुं ते स्वादी घणुं ॥ सु० ॥ पूछे तव तेह साध ॥ १३ ॥ ला० ॥ ते पण सहु संभला-वतो ॥ सु० ॥ कहे तव इणी परे तेह ॥ ला० ॥ मोरने थानके रांधजो ॥ सु० ॥ मांस मनुष्यनुं जेह ॥ १४ ॥ ला० ॥ नित नित लोकना बालका ॥ सु० ॥ लेइ जाये ते डुष्ट ॥ ला० ॥ एक दिन जाणे नरपति ॥ सु० ॥ कोपे थयो ते पुष्ट ॥ १५ ॥ ला० ॥ काढी मूक्यो नयरथी ॥ सु० ॥ बाप थकी ते भीत ॥ ला० ॥ वसतो पर्वत मांहे ते ॥ सु० ॥ पुरमांथी नर नित ॥ १६ ॥ ला० ॥ ते कारण तुम्हे कुमरजी ॥ सु० ॥ रुडुं कखुं एह काम ॥ ला० ॥ बहु नरहत्या उतरी ॥ सु० ॥ तुम्हे प्रभु गुणना धाम ॥ १७ ॥ ला० ॥ तेह सुणी मन हरखीया ॥ सु० ॥ श्रीवसुदेव कुमार ॥ ला० ॥ पांचसें कन्यानुं करे ॥ सु० ॥ पाणिग्रहण ते सार ॥ १८ ॥ ला० ॥ रात वसी ते गाममां ॥ सु० ॥ चाल्यो अचलपुर गाम ॥ ला० ॥ तिहां एक सारथवाह छे ॥ सु० ॥ मित्रश्री पुत्री नाम ॥ १९ ॥ ला० ॥ तेहने ज्ञानीए कह्यो ॥ सु० ॥ कन्यापति वसुदेव ॥ ला० ॥ तेह परणावे तस पिता ॥ सु० ॥ करतां बहु परे सेव ॥ २० ॥ ला० ॥ वेदसामपुरे तिहां थकी ॥ सु० ॥ जातां मली एक नार ॥ ला० ॥ वनमाला तेह नामथी ॥ सु० ॥ देवर कही वारंवार ॥ २१ ॥ ला० ॥ तेभी जाये निज घरे ॥ सु० ॥ देखाडे निज ताय ॥ ला० ॥ ए वसुदेव ते आवीयो ॥ सु० ॥ तव पूछे सुख साय ॥ २२ ॥ ला० ॥ कहे वसुदेवजी सांभलो ॥ सु० ॥ एह नगरनो राय ॥ ला० ॥ नामे कपिल ते जाणीये ॥ सु० ॥ कपिला कन्या थाय ॥ ॥ २३ ॥ ला० ॥ ज्ञानीए कह्यो एकदा ॥ सु० ॥ कन्यानो भरतार ॥ला०॥

नामे वसुदेव थायशे ॥ सु० ॥ ठे गिरितटपुर ठार ॥ २४ ॥ ला० ॥ फुलिंगवदन
नामे जलो ॥ सु० ॥ घोनो दमशे जेह ॥ ला० ॥ ते अहिनाणे जाणजो
॥ सु० ॥ देजो कुंअरी नेह ॥ २५ ॥ ला० ॥ ते सांजली सुफ तेमना ॥ सु० ॥
सुफ जमाइ नाम ॥ ला० ॥ इंद्रशर्मा इंद्रजालीउ ॥ सु० ॥ मूक्यो राये
ताम ॥ २६ ॥ ला० ॥ तिणे आवीने इम कह्युं ॥ सु० ॥ नासी गयो वसु-
देव ॥ ला० ॥ ते कारण तुम्हे वश करो ॥ सु० ॥ घोटकने थइ देव ॥ २७ ॥
॥ ला० ॥ तेह सुणीने वश कस्यो ॥ सु० ॥ परण्यो राजकुमारी ॥ ला० ॥
कपिल नामे सुत तिहां थयो ॥ सु० ॥ जोग जोगवतां सार ॥ २८ ॥ ला० ॥
त्रीजी वीजा खंममां ॥ सु० ॥ वीजे अधिकारे ढाल ॥ ला० ॥ पद्मविजय
कहे सांजलो ॥ सु० ॥ आगल वात रसाल ॥ २९ ॥ ला० ॥ सर्व गाथा ॥ ११७ ॥

॥ दोहा सोरठी ॥

॥ हस्तिशालाए इक दिन, वेठो हस्ती उपरे ॥ उनी गयो गगन, सुवे
हणे तस जली परे ॥ १ ॥ मूकी गयो सरतीर, नीलकंठ ते खेचरो ॥ आव्यो
करवा पीर, नीलयशा विवाहमें ॥ २ ॥ हवे वसुदेव कुमार, शालिगुहा-
पुरे आवीयो ॥ जाग्यसेन तिहां सार, राज्य करे महाराजीउ ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तेह रायने शीखवे. धनुर्वेद अभ्यास ॥ अग्रज ते राजा तणो. मेघ-
सेन सुविलास ॥ १ ॥ अनुज साथे अग्रज तिहां. करवा युद्ध ते आव ॥
तिहां वसुदेवे जीतीयो. जाग्यसेन जय थाव ॥ २ ॥ पद्मावती तेहनी
सुता. परणावी धरी प्रेम ॥ मेघसेन पण निज सुता. अश्वसेना दीये एम
॥ ३ ॥ पुण्यवंतने पाधरुं. वांकुं ते पण थाय ॥ रण करवाने नीकल्या,
परण्या कुमरी जाय ॥ ४ ॥ वे नारी साथे जला. जोगवी जोग रसाल ॥
जहिलपुर नगरे गया. तिहां अपुत्र नृप काल ॥ ५ ॥ तेह पुंड्र राजा तणी,
कन्या पुंड्रा नाम ॥ पण नररूपे पालती, राज्य अनिहि उद्दाम ॥ ६ ॥
र्वसुदेव जाणीयो. रागी थइ ततकाल ॥ परण्या तेहने सुत थयो. पुंड्र
नाम सुकुमाल ॥ ७ ॥ ते सुत तिहां राजा थयो. हवे खेचर अंगार ॥
प करी कलहंसनुं. ठल करतो निण वार ॥ ८ ॥ हरी जाये वसुदेवने,
खे गंगा मांहि ॥ प्रातःसमे ते आवीयो, इलावर्द्धनपुर ज्यांहि ॥ ९ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ माहारा वाल्हाजी हो,हवे नहीं जाउं मइ वेचवा रे लो ॥ ए देशी॥ तिहां एक सारथवाहनी रे लो, श्राज्ञा मागे एम ॥ माहारा वाल्हाजी हो॥ पुण्य तणां फल जोयजो रे लो॥ पुण्य तणी गति केहनी रे लो, कही जाये कहो केम ॥ माहारा० ॥ १ ॥ पुण्य० ॥ तेहने हाटे उपविशे रे लो, हवे जुर्ज पुण्यप्रजाव ॥ मा० ॥ पु० ॥ हेम लक्षलाजें लह्यो रे लो, मनमां चिंते ताव ॥ मा० ॥ २ ॥ पु० ॥ एह पुरुष महिमा थकी रे लो, पाम्यो धन हुं श्राप ॥ मा० ॥ पु० ॥ बहु माने बोलावीयो रे लो, कनकरथे तसु श्राप ॥ मा० ॥ ३ ॥ पु० ॥ घर तेमी परणावतो रे लो, रत्नवती सुता नाम ॥ मा० ॥ पु० ॥ इंड्र मोछव जोवा एकदा रे लो, श्वशुरा साथे जाम ॥ मा० ॥ ४ ॥ पु० ॥ रथमां वेसी जायतां रे लो, महापुर नगरनी बाहार ॥ मा० ॥ पु० ॥ देखे प्रासाद तिहां मोटिकां रे लो, नवीन कराव्यां सार ॥ मा० ॥ ५ ॥ पु० ॥ पूछे श्वशुरने तिहां कणे रे लो, एह किस्युं मंडाण ॥ मा० ॥ पु० ॥ सारथवाह कहे सांजलो रे लो, एह वात कल्याण ॥ मा० ॥ ६ ॥ पु० ॥ सोमदत्त इहां राजीयो रे लो, सोमश्री पुत्री तास ॥ मा० ॥ पु० ॥ तास स्वयंवर मांमीयो रे लो, करे प्रासाद विलास ॥ मा० ॥ ७ ॥ पु० ॥ तेड्या बहु इहां राजवी रे लो, पण मन मान्यो न कोय ॥ मा० ॥ पु० ॥ सहु निज निज थानक गया रे लो, जावी जाव ते जोय ॥ मा० ॥ ८ ॥ पु० ॥ इम सुणी श्रागल जायतां रे लो, हाहा रव थयो ताम ॥ मा० ॥ पु० ॥ त्रोमी श्रालान मूल हाथीयो रे लो, श्राव्यो तिणहीज गाम ॥ मा० ॥ ए ॥ पु० ॥ रथथी राजकुमारिका रे लो, पामी हेठी जाम ॥ मा० ॥ पु० ॥ दीन श्रशरण ते देखीने रे लो, श्रावे वसुदेव ताम ॥ मा० ॥ १० ॥ पु० ॥ ते गजने करी तर्जना रे लो, तव थयो सनमुख तास ॥ मा० ॥ पु० ॥ खेद पमामी बहु परे रे लो, कीधो तेहने निराश ॥ मा० ॥ ११ ॥ पु० ॥ श्रावे एकांते महाबली रे लो, लेइ ते राजकुमारी ॥ मा० ॥ पु० ॥ उत्तरीय पवनादिक थकी रे लो, करे श्राश्वास श्रपार ॥ मा० ॥ १२ ॥ पु० ॥ धाव लेइ तेहने गइ रे लो, वसुदेव गया निज थान ॥ मा० ॥ पु० ॥ नाही जोजन करी जेटले रे लो, वेग ठे बहु मान ॥ मा० ॥ १३ ॥ पु० ॥ प्रतिहारी श्रावी तिहां रे लो, देइ

ाशीष जयकार ॥ मा० ॥ पु० ॥ एणी परे कहे सुणो स्वामी जी रे लो,
मिदत्त सुता सार ॥ मा० ॥ १४ ॥ पु० ॥ स्वयंवरमंडप मांडीयो रे लो,
...हां एक अचरिज थाय ॥ मा० ॥ पु० ॥ केवलज्ञान ते उपनुं रे लो,
नाम सर्वांग ऋषिराय ॥ मा० ॥ १५ ॥ पु० ॥ देव घणा तिहां आवीया
रे लो, मोछव करवा काज ॥ मा० ॥ पु० ॥ ते देखी राजकन्यका रे लो, उछव
अति ऋषिराज ॥ मा० ॥ १६ ॥ पु० ॥ जातिसमरण उपनुं रे लो, मोन
धर्युं तिणे त्यांहि ॥ मा० ॥ पु० ॥ में एकांते पूछीयुं रे लो, तव कहे धरी
उछाह ॥ मा० ॥ १७ ॥ पु० ॥ सातमे देवलोके हता रे लो, देवता मुज
भरतार ॥ मा० ॥ पु० ॥ ते वल्लभगुं भोगव्या रे लो, भोग अनेक प्रकार
॥ मा० ॥ १८ ॥ पु० ॥ एक दिन मुज साथे चव्यो रे लो, नंदीश्वरादिक
जात ॥ मा० ॥ पु० ॥ जन्ममोछव जिनवर तणो रे लो. करी निज
थानक जात ॥ मा० ॥ १९ ॥ पु० ॥ ब्रह्मलोक जव आवीया रे लो, तव
नवि दीठे देव ॥ मा० ॥ पु० ॥ पवनाहत जिम दीवको रे लो. ऊसाइ
जाय ततखेव ॥ मा० ॥ २० ॥ पु० ॥ परवशहृदय ते हुं थइ रे लो, करती
गवेषणा नाम ॥ मा० ॥ पु० ॥ कुरु देशे जव हुं गइ रे लो, मूर्छा मन नि-
नाम ॥ मा० ॥ २१ ॥ पु० ॥ दीठा दोय तिहां केवली रे लो, पुछ्युं मे
धरी गाम ॥ मा० ॥ पु० ॥ मुज पति स्वामी किहां गयो रे लो, मुज कहे
सुण महाभाग ॥ मा० ॥ २२ ॥ पु० ॥ हरिवंशे जइ उपनो रे लो, नवी
नहारो भरतार ॥ मा० ॥ पु० ॥ तुं पण पछी राजकन्यका रे लो, थाइश
गुणगण धार ॥ मा० ॥ २३ ॥ पु० ॥ इम सांभळी तुजने रे लो, इवथी
[illegible] नेह ॥ मा० ॥ पु० ॥ तव तुज नर्मा ने पत्नी रे लो, परणी अति
ससनेह ॥ मा० ॥ २४ ॥ पु० ॥ करी केवलीने वंदना रे लो, गइ
देशी निज थान ॥ मा० ॥ पु० ॥ तेह वचने उपनो रे लो, [illegible] सुना
[illegible] ॥ मा० ॥ २५ ॥ पु० ॥ [illegible] देवता रे लो, [illegible]
[illegible] ॥ मा० ॥ पु० ॥ [illegible] रे लो, [illegible]
[illegible] ॥ पु० ॥ [illegible] उदार [illegible] रे लो, [illegible]
[illegible] ॥ पु० ॥ [illegible] रे लो, [illegible] मा० ॥
[illegible] रे लो, [illegible] मा०
[illegible] रे लो, [illegible] मा० ॥

२८ ॥ पु० ॥ वसुदेवजी गया तिण समे रे लो, ते प्रतिहारी साथ ॥ मा० ॥ पु० ॥ राजकन्या सोमश्री तणो रे लो, पकड्यो चोरीमां हाथ ॥ मा० ॥ २९ ॥ पु० ॥ तिहां सुख जर लीला करे रे लो, श्रीवसुदेव कुमार ॥ मा० ॥ पु० ॥ पुण्य परीक्षा इणी परे रे लो, थाये जय जयकार ॥ मा० ॥ ३० ॥ पु० ॥ बीजे खंडे एम कही रे लो, चोथी ढाल रसाल ॥ मा० ॥ पु० ॥ बीजे अधिकारे हुइ रे लो, पद्मने मंगलमाल ॥ मा० ॥ ३१ ॥ पु० ॥ सर्व गाथा ॥ १६० ॥

॥ दोहा ॥

॥ सूता श्री वसुदेवजी, एक दिन नारी साथ ॥ जागे तब देखे नहीं, निज नारी निज हाथ ॥ १ ॥ रुदन करंता तिण समे, त्रण दिवस शून्य चित्त ॥ एक दिन उपवनमां गया, वसुदेवजी शुज रीत ॥ २ ॥ देखे तिहां निज नारीने, तब पूछे इम तास ॥ तुं शे अपराधे गइ, कहे मुऊ करी विश्वास ॥ ३ ॥ तब ते नारी इम कहे, सुणो स्वामी विरतंत ॥ नियम धरीने इहां रही, तुम्ह काजे सुणो कंत ॥ ४ ॥ मौन धरी बेसी रहुं, त्रण दिवस थया स्वाम ॥ देव पूजी परणो फरी, ए विधि छे इण ठाम ॥ ५ ॥ परण्या ते वसुदेवजी, दिवस शेष रह्यो जाम ॥ मदिरा पाइ कुमरने, रतिक्रीडाने काम ॥ ६ ॥ यामिनी सूता जेटले, जाग्या वली ते जाम ॥ रूप फेर देखे तिहां, पूछे कुमरजी ताम ॥ ७ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ वीण म वाइश रे, विठल वारुं तुऊने ॥ ए देशी ॥ तुं कुण नारी अंग सुकुमाला, रूप अनोपम धारी ॥ तब ते कहे सुण रूप अनोपम, वात अति मनोहारी ॥ १ ॥ म्हें तो जवे दीठा रे, मनमोहन प्रजु तुम्हने ॥ ए आंकणी ॥ दक्षिण श्रेणिमां नगर ते रुडुं, नाम सुवर्णाज जाणो ॥ चित्रांग नामे तेहनो राजा, राजगुणे ते वखाणो ॥ २ ॥ म्हें० ॥ अंगारवती तास नारी कहाणी, मानसवेग सुत तास ॥ वेगवती नामे हुं पुत्री, रूपकला अज्यास ॥ ३ ॥ म्हें० ॥ पुत्रने राज्य ठवी परिव्राजक, थाये माहरो तात ॥ ते तुऊ नाइ हरे तुऊ नारी, काम इछा तस थात ॥ ४ ॥ म्हें० ॥ प्रार्थना माहरे बाइए कीधी, जोग तणी बहु वार ॥ पण ताहरी पत्नी नवि माने, सतीय शिरोमणि सार ॥ ५ ॥ म्हें० ॥ म्हारी पासे पण कहेवराव्युं, तब नवि मान्युं तेणे ॥ बेहेनपणां माहरे ने तेहने, चित्त तुऊ पाये

वातो सुणजो, नमिवंशे थयो राजा ॥ नामे पुलस्त्यनो मेघनाद सुत, जस पख विद्यु ठे साजा ॥ २५ ॥ म्हें० ॥ सुभूम चक्री तास जमाइ, दिव्य शस्त्र दीधां तेहने ॥ तेह शस्त्रनां नाम सुणो तुम्हे, नामे अर्थ ठे जेहने ॥ २६ ॥ ॥ म्हें० ॥ १ वंजसीर २ आग्नेय ठे वीजुं, ३ दारुण ४ माहिंद जाणो ॥ ५ जम-दंरु ६ ईशान ७ वायव नामे, ८ थंजोमोक्ष मन आणो ॥ २७ ॥ म्हें० ॥ ए शस्यु-ऊरण ने १० व्रणरोहण वली, ११ जसंयण जस नाम ॥ १२ ॥ लोकहरण वली १३ ठेदनजीवण, १४ सर्वठेद १५ गुणकाम ॥ २८ ॥ म्हें० ॥ वीजां पण बहु शस्त्र ते आपे, श्वशुरनो तेह जमाइ ॥ दोय श्रेणिनी लखमी आपी, पूरव पुण्य कमाइ ॥ २९ ॥ म्हें० ॥ तेहने वंशे रावण राजा, वलीय विजी-पण सारो ॥ तेह विजीपणवंशे उपनो, विद्युद्वेग पियु महारो ॥ ३० ॥ ॥ म्हें० ॥ कुलक्रमागत आव्यां एह ते, तुमने सफलां थाशे ॥ जाग्यरहित अम्हने सवि विफलां, ठे अम्ह घरमां वासे ॥ ३१ ॥ म्हें० ॥ जाग्य होये तो सफलां थाये, नहीं तो आपने मारे ॥ जुठं प्रतिवासुदेवने मारे, जे पोते चक्रने धारे ॥ ३२ ॥ म्हें० ॥ एम कहीने शस्त्र ग्रहीने, विधिपूर्वक ते साधे ॥ पुण्ये सिद्धि थाये सहु जगमां, देव परे आराधे ॥ ३३ ॥ म्हें० ॥ पुण्य थकी श्रीशांति जिणंदे, एक जव पद दोय पाम्या ॥ तेम कुंथु अरनाथने जाणो, पुण्यप्रकर्षे ए जाम्या ॥ ३४ ॥ म्हें० ॥ जुठं मरीचि श्रीऋषजनो पोत्रो, वाप ते चक्री जास ॥ वासुदेव चक्री जिनवरपद, ए सवि पुण्यप्रकाश ॥ ३५ ॥ ॥ म्हें० ॥ वासुदेवनी पदवी नांही, पण वासुदेव सरिखो ॥ त्रण खंडनो जे थयो जोका, कोणिक नृप तुम्हे परखो ॥ ३६ ॥ म्हें० ॥ वली कुमारपाल संप्रति राजा, पुण्य अतुल जेणे कीधां ॥ चक्री वासुदेव ने वलदेवा, पुण्य थकी सहु सीधा ॥ ३७ ॥ म्हें० ॥ पुण्य होय तो सघलुं सीके, नहीं तो उलटुं खीजे ॥ गांगो तेली पुण्यप्रजावे, राजसजा जय लीजे ॥ ३८ ॥ म्हें० ॥ बीजे खंडे वीजे अधिकारे, पांचमी ढाल गणीजे ॥ पद्मविजय कहे श्रोताने घर, मंगल चार जणीजे ॥ ३९ ॥ म्हें० ॥ सर्व गाथा ॥ २०६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चार मंगल घर घर हुवे, पुण्य होय जो आप ॥ नहीं तो फुलमाला तणो, करमां प्रगटे साप ॥ १ ॥ जंधुं ते सवलुं हुवे, पुण्य तणे परिमाण ॥ गांगो तेली पुण्यथी, पाम्यो जयत निशान ॥ २ ॥

॥ ढाल ७मी ॥

॥ देव तणी ऋद्धि जोगवी आव्यो ॥ ए देशी ॥ ब्राह्मण कोइक दक्षिण देशे, प्रतिष्ठानपुर जाय ॥ जणतां त्रीश वरस थयां तेहने, तव अहंकार थाय रे ॥ जविका पुण्य तणी गति पेखो ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ अंकुश ते निज हाथे राखे, उदरे पाटो बांधे ॥ निश्रेणी देइ सेवक खंधे, लेइ कुदाव ते साधे रे ॥ २ ॥ ज० ॥ पेट फाटणने पाटो बांध्यो, आवो आकाशे जेह ॥ निसरणी तिणे खोदी काढुं, पाताले गयो तेह रे ॥ ३ ॥ ज० ॥ जे हारे मुजथी तस आपुं, तृणपूलो मुख मांहि ॥ ते कारण पूलो लेइ चाले, मनमां अति उछांहि रे ॥ ४ ॥ ज० ॥ दक्षिण गुर्जर मरुधल जीनी, बहु बिरुदावली बोले ॥ जोज रायनी राजसजामां, आवे मन नवि डोले रे ॥ ५ ॥ ज० ॥ जोज राय बहु आदरमाने, उताऱ्यो पुर मांहि ॥ सजा मांहि करतां उन्नट, पंडित मलीया ज्यांहि रे ॥ ६ ॥ ज० ॥ वाद दाम श्रीनाचंद नामे, जवजूति अजिधाने ॥ ज० ॥ कालि-क्षोक करे बहु माने रे ॥ ७ ॥ ज० ॥ राय विचारे मनमां एहवुं, जुओ ब्राह्म-ण परदेशी ॥ माहरा ब्राह्मण जीत्या सघला, मान न रह्युं मुझ लेशा रे ॥ ८ ॥ ज० ॥ श्रीका अर्थे वनमां जातां, गांगा नामे एक तेली ॥ एक तेल कारने, कुंज मांहि ते नाखे ॥ ते देखी राजा मन चिंते, ... ते काणो, वस्त्र मेलां एह मेली रे ॥ ९ ॥ ज० ॥ घाणी मांहे ते राखे रे ॥ १० ॥ ज० ॥ काणा केरी बहि ते देखी [illegible] साचुं ॥ सघला रहित कलानो आगर, पंडित जीत तो साचुं रे ॥ ११ ॥ ज० ॥ तव ॥ पंडितमनमां हाथा, [illegible] ॥ [illegible] ॥ तेलीने तव राजा पूछे [illegible] ॥ तेली कहे अहंकार करीशुं [illegible] ॥ १२ ॥ ज० ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ १३ ॥ ज० ॥ [illegible] ॥ १४ ॥ ज० ॥ [illegible] ॥ १५ ॥ ज० ॥ [illegible]

कनक आभरण प्रमुख विभूषा, स्थूल वपु मन भावे रे ॥ १६ ॥ भ०
मदोन्मत्त जेम हाथी चाल्यो, राजसभामां आवे ॥ उठी उभो थाये राज
उभी सभा पण थावे रे ॥ १७ ॥ भ० ॥ बहु सन्मानादिक करी थापे
सिंहासने नरराय ॥ तब भट्टाचारय मन चिंते, स्थूल वपु ए भाय
॥ १८ ॥ भ० ॥ एहने केम जीताशे सहेजे, वचनकलह नवि कीजे
तत्त्व पूछुं ए पंडित पासे, सीधे पाक वदीजे रे ॥ १९ ॥ भ० ॥ एम चिं
एक आंगुली दाखी, तब तेली दाखे दोय ॥ मनमां करीय विचा
देखाडे, पंचांगुलि करे सोय रे ॥ २० ॥ भ० ॥ तब मुठी तेली देखा
देखी पंडित राय ॥ अंकुश मूकी पाटो ठोकी, निश्रेणी मंगाय रे ॥ २१
भ० ॥ तृणपूलामां कुहाडो घाले, मूकी निज अहंकार ॥ पाय पडी
इणी परे भाखे, सांभल वात श्रीकार रे ॥ २२ ॥ भ० ॥ मुजने कोइ
जीत्यो पहेलां, ए पंडित मुज जीत्यो ॥ राय कहे श्यो वाद तें कीधो
संभलावो सुविदित्तो रे ॥ २३ ॥ भ० ॥ कहे भट्टाचारय सुणो राजा, अंगु
एक देखाडी ॥ में कह्युं जगतनो शिव एक कर्ता, बे आंगुली इणे ता
रे ॥ २४ ॥ भ० ॥ एक शिव तेम शक्ति दीसे, एम भाख्युं मुज भट्टे ॥ त
पंच अंगुलीए में जणाव्युं, पंच इंद्रिय पण वट्टे रे ॥ २५ ॥ भ० ॥ त
तुम्ह भट्टे भाख्युं इणी परे, ते पण दमीया रुडा ॥ मुज पंडित ए मह
वैरागी, लक्षण नहीं कोइ भूंडां रे ॥ २६ ॥ भ० ॥ शां शां वखाण क
तुम्ह पंडित, नवि दीठो कोइ देशे ॥ भट्टाचारय गयो निज थानक
जीत्यो पुण्य विशेषे रे ॥ २७ ॥ भ० ॥ इणी परे तेलीने नृप भाखे,
श्यो कीधो वाद ॥ तब तेली कहे सांभलो स्वामी, जेम पाम्यो जयवाद रे ॥ २८
भ० ॥ एक आंख जे ताहरी दीसे, ते पण काढीश आज ॥ जो इहां तुं मु
साथे बोलीश, तो नहीं रहे तुज लाज रे ॥ २९ ॥ भ० ॥ में कह्युं आं
बे काढीश ताहरी, जो मुज कहे तुंकारो ॥ तब मुजने कहे मारुं चपेटो
एम मुज क्रोध हकार्यो रे ॥ ३० ॥ भ० ॥ मुष्टि देखाडी में जणाव्युं, आव
मारोमार ॥ धम्माधम्मी करतां तुजने, हुं मारीश इणी ठार रे ॥ ३१
भ० ॥ इम सांभली राजा ते हसतो, भाखे इणी परे वात ॥ पुण्य
तणा दिन पहने दीसे, पुण्ये सहु सुखशात रे ॥ ३२ ॥ भ० ॥ पुण्यवंत
वसुदेवे साधी, जे विधि कीधी सूधी ॥ अगुर मूकावण हेत जमाइ, कम

ते सवली लीधी रे ॥ ३३ ॥ ज० ॥ बीजे खंडे ने अधिकारे, छठी ढाल रसाल ॥
पंमित उत्तमविजयनो बालक, पद्मने मंगलमाल रे ॥ ३४ ॥ ज० ॥
सर्व गाथा ॥ २४२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ते त्रिशिखर राजा हवे, वात सुणी निज कान ॥ चूचरने दीधी इसी,
क्रोध वल्यो तिणे थान ॥ १ ॥ आव्या रण करवा जणी, युद्ध करे
महाघोर ॥ दधिमुख परिवृत कुमर जी, करता तेहशुं जोर ॥ २ ॥ इंद्र नाम
शस्त्रे करी, छेदे मस्तक तास ॥ दिव्यतिलक नगरे जइ, श्वशुर मूकावे पाश
॥ ३ ॥ श्वशुरगृहे आव्या वही, विलसे जोगविलास ॥ अनाधृष्ट सुत
उपनो, रूपवंत गुणवास ॥ ४ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ वीर वखाणी राणी चेलणाजी ॥ ए देशी ॥ श्रीवसुदेवजी एक दिने जी,
साथे मदनवेगा नार ॥ यात्र सिद्धायतने गया जी, तिहां मल्या खेचर वार
॥ १ ॥ श्री० ॥ सूर्पनखी नाम नारी अछे जी, त्रिशिखर रायनी ताम ॥
आवी ते नगर वाली गइ जी. रूप मन धरी तिण ठाम ॥ २ ॥ श्री० ॥ रूप
करी मदनवेगा तणुं जी. श्रीवसुदेव हरी जाय ॥ राजगृही नयर उद्यानमां
जी. नाख्यो दीधो तिणे ठाय ॥ ३ ॥ श्री० ॥ तृण तणा पुंज उपर पड्या
जी. दुःख नवि उपनुं कांइ ॥ पुण्यवंता जिहां पद धरे जी, होय कल्याण
तेह ठाय ॥ ४ ॥ श्री० ॥ यतः ॥ श्लोक ॥ वने रणे शत्रुजलाग्निमध्ये,
महार्णवे पर्वतमस्तके वा ॥ सुप्तं प्रमत्तं विषमस्थितं वा. रक्षंति पुण्यानि पु-
राकृतानि ॥ १ ॥ तिहां जरासंध गुण गावतां जी. देखीने चिंतवे तेह ॥
राजगृह नयर दीठे नवुं जी नयर मांहि गया जेह ॥ ५ ॥ श्री० ॥ द्यूत
रमीया तेह नयरमां जी. जीतीया कनकनी कोम ॥ दान दीधुं ते याचक
जने जी. नहि कोइ एहनी जोड ॥ ६ ॥ श्री० ॥ तिहां कोटवाल आवी करी
जी. बांधीया श्रीवसुदेव ॥ राजद्वारे लेइ जायतां जी. सुभटने पूछे ते देव
॥ ७ ॥ श्री० ॥ मुझ अपराध ते दाखवो जी. विण अपराध केम बंध ॥
ते कहे सांभलो वातनी. जेह कहुं एह संबंध ॥ ८ ॥ श्री० ॥ एक नेमि-
त्तिक नाखीयुं जी. श्रीजरासंध राजान ॥ प्रातसमे कोनी जीती करी जी,
देशे याचक दान ॥ ९ ॥ श्री० ॥ तेहनो पुत्र तमे जाणजो जी, ताहरो वध

करनार ॥ तेह तुफने श्रमे उलखी जी, श्रागविण हणुं निर्धार ॥ १० ॥ ॥ श्री० ॥ तेह श्रपवादथी बीहीता जी, पर्वत उपर जाय ॥ ढोली नाखे तस जेटले जी, वेगवती धाव तिहां श्राय ॥ ११ ॥ श्री० ॥ लेइ जातां मन चिंतवे जी, जारंरू खग मल्यो काय ॥ लेइ जाये चारुदत्त परे जी, गगन-मारग लेइ जाय ॥ १२ ॥ श्री० ॥ कोइ पर्वत जइ मूकीयो जी, निरखतो वेगवती त्यांहि ॥ पूठीयुं तुं केम मुफ मली जी, रुदन करती कहे प्रांही ॥ १३ ॥ श्री० ॥ जागी उठी हुं शय्या थकी जी, में नवि देखीया तुम्म॥ रुदन करती करुण स्वरे जी, रुवे परिवार सहु श्रम्म ॥ १४ ॥ श्री० ॥ तुम तणी वात मुफने कहे जी, वियापति श्रजिराम ॥ हरण ने पतन सहु दाखीयुं जी, तुफ विरहो तिणे गम ॥ १५ ॥ श्री० ॥ खोलवा हुं तुफ नी-कली जी, सिद्धायतने तुफ दीठ ॥ मदनवेगाने साथे मही जी, हुं पण श्रावी तुफ पीठ ॥ १६ ॥ श्री० ॥ में तिहां प्रछन्न रही सांजल्युं जी, तुमे कह्युं नारीने एम ॥ तुफ स्नेहे विरहो तज्यो जी, काल बहुनो सुणी क्षेम ॥ १७ ॥ श्री० ॥ तेह सुणी क्रोध मन उपनो जी, मदनवेगा गइ जाम॥ चैत्यमां दीप करवा जणी जी, सूर्पनखी हरे तुफ ताम ॥ १८ ॥ श्री० ॥ रूप धरी मदनवेगा तणुं जी, श्रोपधिवल थकी तेह ॥ हुं पण केडे धाइ खरी जी, तोही ते ठग तणी गेह ॥ १९ ॥ श्री० ॥ मानसवेग मुफ भ्रातनुं जी, रूप कीधुं तेणे सार ॥ तेह देखीने हुं नासती जी, जायती चैत्य दुवार ॥ २० ॥ श्री० ॥ में तिहां मुनिवर लंघीया जी, मुफ विद्या गइ सर्व ॥ मुनि तणी एह श्राशातना जी, दुइ फलवंती मानुं गर्व ॥ २१ ॥ श्री० ॥ धाव माहरी मली श्रन्यदा जी, मोकली खोलवा तुफ ॥ देखीयो नग थकी नाखतां जी, तिणे श्राणी दीयो मुफ ॥ २२ ॥ श्री० ॥ धाव मुफ लेइ तुफ तिहां थकी जी, श्रावी हिरिमंत जिहां तिठ ॥ जिहां नदी पंच नेसी मिले जी, मूकीयो थानक इठ ॥ २३ ॥ श्री० ॥ एम सुणी वेगवतीशुं रह्या जी, तापस श्राश्रमे ज्यांहि ॥ एक दिन एक कन्या तिहां जी, पाशबंधी थई त्यांहि ॥ २४ ॥ श्री० ॥ वेगवती नारीना कहेणथी जी, श्राप पण ते कृपावंत ॥ बंध देखी तस छोडवे जी, तेह मूर्छा लहे तंत ॥ २५ ॥ श्री० ॥ वारि छांटी तस सज्ज करी जी, देइ प्रदक्षिणा ताम ॥ श्रीवसुदेवने इम कहे जी, सांजलो सद्गुणधाम ॥ २६ ॥ श्री० ॥ सिद्ध विद्या थइ माहरी जी, भाग

तुं माहरी पास ॥ ताहरी आश पूरण करुं जी, पण एक वात सुण खास ॥ २७ ॥ श्री० ॥ खंड बीजे अधिकारमां जी, सातमी ढाल रसाल ॥ पंनित उत्तमविजयनो जी, पद्मविजय कहे बाल ॥ २८ ॥ श्री० ॥ सर्व गाथा ॥ २७४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ गगनवल्लभ नामे नगर, गिरि वैताढ्यमां सार ॥ नमिवंशे राजा थयो, विद्युद्दंष्ट्र तिणी वार ॥ १ ॥ पश्चिम महाविदेहमां, एक दिन एक मुनिराय ॥ दीठा प्रतिमाए रह्या, कोपवशे नृप थाय ॥ २ ॥ ए उत्पात किस्यो अछे, इम कहेतो मुख वाण ॥ वरुणाचल ते लेइ गयो, करे तर्जना दुःखखाण ॥ ३ ॥ जेम जेम मुनिवरने करे, ताडना तर्जना राय ॥ तेम तेम समतारस वधे, मुनिवरने सुखदाय ॥ ४ ॥ क्षपकश्रेणि मांहि चढ्या, शुक्लध्यानमां लीन ॥ केवलज्ञान ते उपनुं, पूर्णानंदे पीन ॥ ५ ॥ केवल महोत्सव कारणे, आव्या तिहां धरणेंद्र ॥ प्रत्यनीकपणुं मुनि तणुं, देखी क्रोधे फंद ॥ ६ ॥ विद्याभ्रष्ट तेहने कर्या, दीन थइ रह्या तेह ॥ तव धरणेंद्र तेहने कहे, तुमे अधमना गेह ॥ ७ ॥ केवली महिमा आवीयो, तुमे अज्ञाने अंध ॥ पापी तुमने शुं करुं, पण सुण एक संबंध ॥ ८ ॥ सिद्ध थशे महा क्लेशथी, पण जो करशो एम ॥ अरिहंत ने मुनिवर तणो, देखनो मनमां तेम ॥ ९ ॥ महाविद्या रोहणी प्रमुख. ते तो नवि होय सिद्ध ॥ विद्युद्दंष्ट्र संतानमां, नर नारीने निषिद्ध ॥ १० ॥ महापुरुष दर्शन थकी. अथवा थाशे सिद्ध ॥ इम कही धरण राजा गयो, निज थानक परसिद्ध ॥ ११ ॥ तेहने वंशे उपनी, केतुमती जस नाम ॥ तेहने विष्णु परणीया. हुं पण तेहने ठाम ॥ १२ ॥ बालचंद्रा मुझ नाम छे, परणो मुझने स्वाम ॥ मागो वर कांइक वली, ते शौरि कहे नाम ॥ १३ ॥ जो तुठी मुझ उपरे. वेगवतीने आप ॥ विद्या एम ते सांभली, श्रीवसुदेव आलाप ॥ १४ ॥ वेगवतीने लेइ गइ, गगनवल्लभपुर तेह ॥ वसुदेव तिहां रह्या. तापस तणे ते गेह ॥ १५ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ पल्लीसंयुत पोसह लीधो. सुव्रत शेठ अन्यदा जी ॥ ए देशी ॥ इणी अवसर तिहां नृपति आवे. दोय आनम निज निंदना जी ॥ तापसरूपे वली तेहने. वसुदेव उद्वेग विंदना जी ॥ १ ॥ पूछे कारण उद्वेग केरुं, तव

ते एणी परे उचरे जी ॥ सावत्थीमां नरपति वलीयो, एणीपुत्र अभिधा धरे जी ॥ २ ॥ प्रियंगुसुंदरी नामे पुत्री, तास स्वयंवरे तेडीया जी ॥ बहु राजा मली आव्या वरवा, पण कुंवरीए सहु फेडीया जी ॥ ३ ॥ क्रोध चड्या सहु राजा जाखे, करीये संग्राम ते एहशुं जी ॥ इम कहीने तिहां संग्राम मांड्यो, पण नवि हारे केहशुं जी ॥ ४ ॥ सहुने जीत्या तेह एकलडे, तव सहुए नासी गया जी ॥ गिरिमां केइक पेठा नवला, केइक मुख तृणे पशु थया जी ॥ ५ ॥ तापसव्रत अमे विहु जणे लीधुं, अम पुरुषारथ धिग् हुउं जी ॥ अमे नपुंसकनी परे जाणो, अम जुजपणो ते वृथा थयो जी॥ ६ ॥ वसुदेव सांभली इणी परे तेहने, जैनधर्मे भलो बूझव्यो जी ॥ व्रत अंगीकरे जिनवर केरां, तापसपणो तस उभव्यो जी ॥ ७ ॥ वसुदेव गया सावत्थी नगरी, तास उद्यानमां देखीयो जी ॥ त्रण द्वारनुं चैत्य ते रुडुं, देखी आश्चर्य ते लेखीयो जी ॥ ८ ॥ हेमाचारजकृत नेमिचरित्रमां, विस्तारे एम भाखीयां जी ॥ भवभावनामां त्रणे चैत्य रुडां, मलधारी हेमसूरे दाखीयां जी ॥ ९ ॥ अर्गला बत्रीश छे मूलद्वारे, दुःखे प्रवेश होये जिहां जी ॥ अन्य द्वारथी पेसतां देखे, एक गृहस्थप्रतिमा तिहां जी ॥ १० ॥ बीजुं मुनिनुं रूप ते देखे, त्रीजुं त्रिपद पाडा तणुं जी ॥ देखी अचरिज पामी पूछे, विप्र कहे अचरिज घणुं जी ॥ ११ ॥ इणहीज नयरमां जितशत्रु राजा, मृगध्वज सुत तस जाणीये जी ॥ शेठजी एक इहां कामदेव नामे, अग्रेश्वरी मन आणीये जी ॥ १२ ॥ दंडक नाम गोवालीयो तेहने, एक दिन इणी परे विनवे जी ॥ ए महिषीना पांच तनुज में, पूर्वे हणीया अभिनवे जी ॥ १३ ॥ छठो पुत्र में रुडो जाणी, जात मात्र मुजने नम्यो जी ॥ भयथी कंपतो देखी राख्यो, माहरा मन मांहे गम्यो जी ॥ १४ ॥ तुमे पण अभय देजो एहने, जातिसमरणवंत प्रांही छे जी ॥ एम सुणी रायने विनवी मागे, महिषने अभय देजो यांही छे जी ॥ १५ ॥ राय कहे सुण अभय में दीधुं, नयरी मांहि सुखे फरो जी ॥ कोइ न मारे एहने प्राणी, एम आणा पुरमां करो जी ॥ १६ ॥ मृगध्वज एक दिन एक पग छेदे, तेह महिषनो तिण समे जी ॥ वात सुणी राय कोप्यो तेहशुं, मन मांहि कांइ नवि गमे जी ॥ १७ ॥ पुत्र हतो पण काढी मूक्यो, राय ते कोपे कलकल्यो जी, ॥ जो सोनानी पाली पण ते, पेट मराये नवि मल्यो जी ॥ १८ ॥ दिवस अढारमे मरण ते

पाम्यो, लोहिताक्ष नामे असुर थयो जी ॥ मृगध्वज पण वैराग्य ते पामी, व्रत आदरी मुनिवर जयो जी ॥ १९॥ दिवस बावीशमे शुभ परिणामे, मृगध्वज केवल पामीया जी ॥ देव असुर नृप पर्षद आवी, जगवंत इम शिर नामीया जी ॥ २० ॥ भूपति पूछे वैरनुं कारण, केवली तव इणी परे कहे जी ॥ पूरव भव सुणो सहु जन जावे, वैरथी दुःख भविजन लहे जी ॥ २१॥ प्रतिवासुदेव ते पहेलो जाणो, राजगृह नयरे भलो जी ॥ अश्वग्रीव नामे ते रुमो, आस्तिकमति अति गुणनिलो जी ॥ २२ ॥ हरिश्मश्रु नामे अमात्य ते, नास्तिकवादी आकरो जी ॥ राय प्रधानने वाद ते होवे, वाधे विरोध ते दुःखकरो जी ॥ २३ ॥ त्रिपृष्ठ प्रथम वासुदेव ने वली, अचल नामे बलदेव जी ॥ तस हाथे मरी सातमी नरके, दुःख सहे कहे देव जी ॥ २४॥ तिहांथी बहु भव जमतां अश्वग्रीव, मृगध्वज नामे जाणजो जी ॥ नास्तिकवादी महिष थयो ए, तेह वैर मन आणजो जी ॥ २५॥ महिषनो पग में ठेद्यो वैरे, सुर बेठो आ पर्षदा जी ॥ ए जवनाटक सुणीने जविया, वैर न करशो को कदा जी ॥ २६ ॥ एक वार कीधां कर्म ते उदये, दश वेला आवे जघन्यथी जी ॥ तीव्र परिणामे अधिकुं आवे, इम जिन जाखे वचनथी जी ॥ २७ ॥ एम सुणी लोहिताक्ष देवना प्रणमी, चैत्यने त्रण मृगनि करे जी ॥ नेमचरित्रमां इणी परे जाख्युं, हेमाचार्य मुनिवरे जी ॥ २८ ॥ नवजावनामां इणी परे जाख्युं, कामदेव त्रिक गृह कर्यां जी ॥ ते कामदेवने वंश संप्रति, कामदत्त शेठ गुण जर्या जी ॥ २९॥ बंधुमती तस पुत्री जाणो, निमित्तिआने तस पिता जी ॥ पूछे पुत्री वर कुण थाशे, निमित्तिउं कहे सुण मिता जी ॥ ३० ॥ बत्रीश अर्गला द्वार उघाडे, ते वर जाणो तुक धुया जी ॥ श्रीवसुदेवजी सुणीय उघाडे, सांजले श्रेष्ठी तस सुया जी ॥ ३१ ॥ तिहां आवी परणावे कन्या, वात सुणे राय तिण समे जी ॥ कौतुके आवे नृप तस पुत्री, प्रियंगुसुंदरी मन गमे जी ॥ ३२ ॥ बीजे खंडे ने अधिकारे, आठमी ढाल सोहामणी जी ॥ पंडित उत्तमविजयना ताखे, पद्मविजय शिष्य सुणो गुणी जी ॥ ३३ ॥ सर्व गाथा ॥ ३२२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नाम प्रियंगुसुंदरी, देखी श्रीवसुदेव ॥ ततक्षण थइ वश कामने, चिंते युं कामदेव ॥ १ ॥ आवी एक प्रतिहार तव, कहे वसुदेवने एम ॥ ए

नारी घर आवजे, प्रातसमे तुं नेम ॥ २ ॥ एणीपुत्र चरित्र तस, जाखे जोशी पाण ॥ निज थानक गयो पोलीयो, जूए नाटक तिण ठाण ॥ ३ ॥ कोइ पुरुषना मुख थकी, सांजली एहवी वात ॥ नमिपुत्र वासव थयो, खेचर ते कहे वात ॥ ४ ॥ तस वंशे वासव घणा, एक थयो पुरुहूत ॥ एक दिन वेगे गजवरे, रमवाने आकूत ॥ ५ ॥ गौतमजार्या देखतो, नाम अहव्या तास ॥ ते साथे क्रीमा करे, राय अधिक उल्लास ॥ ६ ॥ तव गौतम आवी करी, असमंजस जोइ तेह ॥ लिंगछेद ते पुरुषनो, धरी ते मनमां खेह ॥ ७ ॥ वात सुणी वसुदेवजी, मनमां बीहीना जोर ॥ आव्या नहीं प्रियंगु घरे, रखे ते थाउं चोर ॥ ८ ॥ वंधुमती साथे तदा, सूता श्री वसुदेव ॥ जागे आगे तव खमी, देखे देवी हेव ॥ ९ ॥ मनमां चिंते कोण ए, देवी बोली ताम ॥ शुं मनमां चिंते अछे, सहु ए ताहरे नाम ॥ १० ॥ इम कहीने ते लइ गइ, अशोक वामी मांहि ॥ कहे सुण वात तुं माहरी, हुं कहुं धरी उछांहि ॥ ११ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ पंच सयां धण परहरी ॥ ए देशी ॥ श्रीचंदनपुर नयरमां, अमोघरेता.ते राजा रे ॥ चारुमती तस जारया, जेहना बेहु पख ताजा रे ॥ १ ॥ कर्म तणी गति एहवी, चारुचंड सुत तास रे ॥ अनंगसेना गणिका सुता, कामपताका छे जास रे ॥ २ ॥ क० ॥ यज्ञ करे ते जूपति, तापस बहु तिहां आवे रे ॥ कौशिक तापस तिहां बहु, साथे फल तेह लावे रे ॥ ३ ॥ ॥ क० ॥ फल आप्यां तेह रायने, तव राजा एम पूछे रे ॥ एह तुमे फल किहां थकी, पाम्या ते कहो शुं छे रे ॥ ४ ॥ क० ॥ तेह कहे सुणो नरपति, हरिवंशनी उत्पत्ति रे ॥ संजलावी तेह रायने, कल्पवृक्ष उपपत्ति रे ॥ ५ ॥ ॥ क० ॥ कामपताका तिण समे, नाटक करती दीठी रे ॥ चंडकुमार कौशिक तणां, मन हरती ते उक्किठी रे ॥ ६ ॥ क० ॥ यज्ञ ते संपूरण थइ, ते गणिकाने कुमार रे ॥ आप आधीन करे वरा, कौशिक हवे तिणी वार रे ॥ ॥ ७ ॥ क० ॥ रायने गणिका जाचतो, तव कहे इणी परे राय रे ॥ चंडकुमारे अंगीकरी, तिणे बीजे न अपाय रे ॥ ८ ॥ क० ॥ राय निषेध्यो इणी परे, कौशिक दीये शराप रे ॥ जे रमशे एह नारीशुं, मरण ते पामशे आप रे ॥ ९ ॥ क० ॥ राज सोंपी चंडकुमरने, तापस हुउं वनवास रे ॥

राणी पण साथे गइ, गर्भ न जाएयो तास रे ॥ १० ॥ क० ॥ गर्भ वधे ते दिन
थकी, कहे भरतारने आवी रे ॥ अनुक्रमे जनमी कन्यका, ऋषिदत्ता नामे
जावी रे ॥ ११ ॥ क० ॥ चारण मुनि पासे थइ, श्राविका ते धर्म कामे रे ॥
यौवन पामी अनुक्रमे, माता मरण ते पामे रे ॥ १२ ॥ क० ॥ नाम शिलायुध
राजीयो, आहेडे तिहां आवे रे ॥ ऋषिदत्ता जोइ मोहीयो, एकांते लेइ जावे रे
॥ १३ ॥ क० ॥ विविध प्रकार क्रीडा करी, ऋषिदत्ता तव जापे रे ॥ स्नान
कर्युं ऋतु अवसरे, यदि गर्भ तो केम थाशे रे ॥ १४ ॥ क० ॥ तव राजा
कहे इणी परे, इक्ष्वाकु कुले जायो रे ॥ सावत्थीपुरनो धणी, शतायुध मुफ
तायो रे ॥ १५ ॥ क० ॥ जो तुफ पुत्र ते उपजे, तो आवजे मुफ पासे रे ॥
तेह पुत्रने थापशुं, राज्यपदे सुविलासे रे ॥ १६ ॥ क० ॥ सैन्य आवी
मल्युं रायने, राजा पूठीने जाय रे ॥ ऋषिदत्ता कहे तातने, अनुक्रमे पुत्र
ते थाय रे ॥ १७ ॥ क० ॥ तेह प्रसवरोगे करी, मरण लहे ऋषिदत्ता रे ॥
अग्रमहिषी ज्वलनप्रभ तणी, नागकुमारमां पत्ता रे ॥ १८ ॥ क० ॥ अमो-
घरेता तस तात जी, बालकने लेइ हाथे रे ॥ रुदन करे तापस तिहां,
हाथ देइ तेह माथे रे ॥ १९ ॥ क० ॥ अवधिज्ञाने करी जाणीयो, पुत्र ते
अति सुकुमालो रे ॥ मृगलीनुं रूप करी तिहां, धवरावे तेह बालो रे ॥ २० ॥
क० ॥ एणी ते हरणीनुं नाम छे, तिणे धवराव्या माटे रे ॥ एणीपुत्र
नामे थयो, जगविख्यात ए वाटे रे ॥ २१ ॥ क० ॥ कौशिक तापस तिहां
मरी, साप दृष्टिविष थाय रे ॥ अमोघरेताने आश्रमे आवी, डंसे ते ताय
रे ॥ २२ ॥ क० ॥ देवांगना रूप करी लहे, ते पछि ने प्रतिबोधे रे ॥
मरी वसु नामे सुर थयो, देखो फल तुम्हे क्रोधे रे ॥ २३ ॥ क० ॥ हवे ऋषि-
दत्ता तणे, देवी मालती जाय रे ॥ सुत सोंपे तेह नृपने, नृपने विस्मय थाय
॥ २४ ॥ क० ॥ पुत्र मूकी देवी कहे, आकाशे जइ वाणी रे ॥ ऋषिदत्ता
कन्यका, वनमां नागरी जाणी रे ॥ २५ ॥ क० ॥ तुफ थकी पुत्र ए
जना, हुं ना पन्नग पामी रे ॥ देवी थइ मृगीरूपथी, वृद्धि करी सुख-
मा रे ॥ २६ ॥ क० ॥ एम पुत्र तुफ पुत्र ए सुणी ते वात सनाम रे
राज थाशे तेह पुत्रने साथे राज्य सुविकारी रे ॥ २७ ॥ क० ॥ देवलोक गयो
न एणीपुत्र हवे राय रे ॥ अवम नरम्या रे निहां देवी आगली ने
रे ॥ २८ ॥ क० ॥ नृपस्नान देवी थइ, पुत्री हीन, एक रे ॥ नामे प्रियंगु-

दरी, रूपवंत अतिरेक रे ॥ २ए ॥ क० ॥ तेह देवी हुं जाणजे, आगल सुण हवे वात रे ॥ स्वयंवरमंरूप मांडीयो, बहुला राय आयात रे ॥ ३० ॥ क० ॥ पुत्रीए न वस्यो को राजीयो, तव कोपे कलकलीया रे ॥ युद्ध करण‑ने सामटा, राजा एकठा मलीया रे ॥ ३१ ॥ क० ॥ सान्निध में करी रायनी, तव सवि नृप गया हारी रे ॥ तुऊ देखी पीनी घणुं, काम मांहे तेह धारी रे ॥ ३२ ॥ क० ॥ अठम करी आराधती, हुं पण थइ सुप्रसन्न रे ॥ में प्रतिहार साथे कयुं, पण न लयुं तुऊ मन्न रे ॥ ३३ ॥ क० ॥ तुं एहने रे अंगीकरे, तव कहे श्रीवसुदेव रे ॥ संचारुं तुऊने जदा, तव आवजे तत‑खेव रे ॥ ३४ ॥ क० ॥ अंगीकार करी ते गइ, बंधुमती घर मूकी रे ॥ अदृश्य थइ रुठे कुमर जी, रात गइ ते विसुकी रे ॥ ३५ ॥ क० ॥ प्रातसमे प्रतिहार‑शुं, आपतने वसुदेव रे ॥ आवे ते प्रियंगुसुंदरी, पाणिमहणने हेव रे ॥ ३६ ॥ क० ॥ गंधर्व विवाहे परणीया, दिवस अढार ते थाय रे ॥ रायने वात सहु कही, देवीदत्त वर राय रे ॥ ३७ ॥ क० ॥ इणी परे प्रतिहारे कयुं, तव जामानने लावे रे ॥ एणीपुत्र निज मंदिरे, सुखमां काल गमावे रे ॥ ३८ ॥ क० ॥ नवमी ढाल सोहामणी, खंम बीजे अधिकार रे ॥ पद्मविजय कहे सांजलो, सुणतां जय जयकार रे ॥ ३ए ॥ क० ॥ सर्व गाथा ॥ ३७२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इण अवसर वैताढ्यमां, गंधसमृद्धपुर सार ॥ प्रजावती कन्यापिता, गंधारपिंगल धार ॥ १ ॥ तेह प्रजावती कन्यका, जमती जमती आय ॥ सुवर्णाज नयरे सुखे, क्रीडा करवा जाय ॥ २ ॥ देखे निद्रां सोमश्री प्रत, सर्वोदणां करे दोय ॥ पतिविरही जाणी करी, कहे प्रजावती सोय ॥ ३ ॥ ननमां चिंता मन करे, आणुं तुऊ नरनार ॥ तव निसासा नाखीने, सोमश्री कहे तिण वार ॥ ४ ॥ वेगवती जेम आणीयो, तेम तुं आणीश आज ॥ तो ते वयोए कथ्यो, ते कहे हुं वरराज ॥ ५ ॥ प्रजावती कहे सांजले, वेगवती मन नाही ॥ रूप नऊ दोय उजवां, महा अंतर ए मांहि ॥ ६ ॥ सावत्री नगर जइ, आवशे श्री वसुदेव ॥ रूप परावर्तन करी, सुम्ब जोगवे स्वयमेव ॥ ७ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

१ आज हुं तो अवजद रे बहेनी ॥ ए देशी ॥ श्री वसुदेवजी रे नामी ... तेज ना ... ॥ श्री० ॥ ए आंकणी ॥ जाणे मानस रे वेग, त...

तिहां आव्यो अति अविवेग ॥ १ ॥ श्री० ॥ श्रीवसुदेवजीने बांधे, तव बहु
कलकल शब्द ते वाधे ॥ श्री० ॥ गरडा खेचर रे आवी, श्रीवसुदेवजीने
मूकावी ॥ २ ॥ श्री० ॥ करे वसुदेवजीने साथे, वादविवाद ते वलीया हाथे ॥
श्री० ॥ गया वेजयंती रे नयरी, बलसिंह नृप जेणे जीत्या वयरी ॥ ३ ॥ श्री०
॥ मानसवेग तव रे बोले, सोमश्री आपी मुजने खोले ॥ श्री० ॥ परण्यो
महारी रे बहेणी, ते कहो अमने कहेनी केहणी ॥ ४ ॥ श्री० ॥ कहे वसु-
देवजी रे वात, मुजने आपे एहनो तात ॥ श्री० ॥ तेहने हरी गयो रे एह, सहु
जन जाणे वातनी तेह ॥ ५ ॥ श्री० ॥ न गम्यो नारीना मनमां, तो शुं
फोकट रुवे रणमां ॥ श्री० ॥ वेगवतीए जे वरीयो, ते तो नारी गम्यो ते करीयो
॥ ६ ॥ श्री० ॥ धणी धणीयाणी जो राजी, तो क्या करतहे मीयां काजी
॥ श्री० ॥ इणी परे वादे ते जीत्यो, श्रीवसुदेवजी जगमां वदीतो ॥ ७ ॥
श्री० ॥ प्रज्ञप्ति विद्या रे आपे, ते प्रजावती मनमां थापे ॥ श्री० ॥ विद्या-
धर बहु रे वयरी, जीते लीलाए ते शोरि ॥ ८ ॥ श्री० ॥ मानसवेगने रे
बांधी, सोमश्री आगल मूक्यो सांधी ॥ श्री० ॥ वेगवतीने रे वचने, मूके
मानसवेगने जतने ॥ ९ ॥ श्री० ॥ बहु विद्याधर रे साथे, थयो मानस-
वेगादिक नाथे ॥ श्री० ॥ सोमश्री साथे रे लेइ, बेसी विमाने खेचर केइ
॥ १० ॥ श्री० ॥ महापुर नयरे रे आवे, जोग ते जोगवे मनने जावे ॥
श्री० ॥ सूर्पक खेचर रे आइ, घोटकरूपे हरी गयो माइ ॥ ११ ॥ श्री० ॥ वसु-
देवजी तेह रे जाणी, मारे मुठी ते वज्र समाणी ॥ श्री० ॥ मूकी दीयो दुःख
रे आणी, पडीया मंदाकिनीने पाणी ॥ १२ ॥ श्री० ॥ उतरी गंगानुं नीर,
तापसआश्रमे पहोंतो वीर ॥ श्री० ॥ तिहां एक नारीने देखे, हाडनी
माला कंठे पेखे ॥ १३ ॥ श्री० ॥ तापसने तिहां रे पूछे, ए कन्यानी वात ते
शुं छे ॥ श्री० ॥ तव तापस कहे रे स्वाम, नंदीपेणा एहनुं नाम ॥ १४ ॥
श्री० ॥ एह जरासंधनी धूआ, परिव्राजकने वश एक दीया ॥ श्री० ॥ ते परि-
व्राजकने मारयो, एह अन्याय गये नवि धार्यो ॥ १५ ॥ श्री० ॥ तेहनां हाड ए
रे दीसे, कामण कीधुं विशवावीशे ॥ श्री० ॥ मंत्र कीधुं ते दूरे, कामण
वसुदेव सपूरे ॥ १६ ॥ श्री० ॥ ते जितशत्रुनी लज्जा, केतुमती परणावी
इज्जा ॥ श्री० ॥ तिहां जरासंधने रे नाप्युं, हाथपात्र इणी परे जइ वास्युं ॥
७ ॥ श्री० ॥ नंदीपेणानो रे भ्राता, स्वामी ८ पुंड्र विख्याता ॥ श्री० ॥ रथ

बेसीने ते राय, श्रीवसुदेवनी पासे जाय ॥ १८ ॥ श्री० ॥ बांध्यो तिहां कोटवाले, तव कारण पुढे तिणे ताले ॥ श्री० ॥ तव कोटवाल ते नापे, सांजलो वात श्रवल सुविलासे ॥ १९ ॥ श्री० ॥ श्रीजरासंधने रे एम, निमित्तिए नाख्युं धरी प्रेम ॥ श्री० ॥ तुऊ पुत्रीनो जे त्राता, तस सुत हणशे तुम्हने ख्याता ॥ २० ॥ श्री० ॥ ते कारण तुऊ रे हणीये, इहां पाप पुण्य नवि गणीये ॥ श्री० ॥ वधथानक लेइ रे जावे,पशु परे वसुदेवजी आवे॥ २१ ॥ श्री० ॥ तव प्रजावती लेइ जाय, गंधसमृद्ध नयरे सुखदाय ॥ श्री०॥ श्रीगंधारपिंगल जे तात,परणावे पुत्री सुविख्यात ॥२२॥ श्री०॥ सुख जोगवतां ते ठाम, बहु विद्याधरी परण्या ताम ॥ श्री० ॥ गया सुकोशला नयरी, परण्या सुकोशला ते कुमरी ॥ २३ ॥ श्री० ॥ अष्ट प्रकारे रे जोग, जोगवे पामी तेह संयोग ॥ श्री० ॥ दशमी ढाले रे पूरो, बीजो ए अधिकार सनूरो ॥ २४ ॥ श्री० ॥ यतः ॥ सुगंधो वनिता वस्त्रं, गीतं तांबूलजोजनं ॥ मंदिरं वाहनं चैव, अष्टो जोगाः प्रकीर्त्तिताः ॥ १ ॥ दश ढाले करी रे जाख्यो, जविजन लोके श्रवणे चाख्यो ॥ श्री० ॥ पंमित उत्तमनो शिष्य, जाखे पद्मविजय सुजगीश ॥ २५ ॥ श्री० ॥ सर्व गाथा ॥ ४०४ ॥ इति श्रीमत्संविज्ञपक्षधरस्य चरणकरणगुणधरस्य वंदितनिखिलजनज्रमरचरणारविंदस्य पंमितश्रीउत्तमविजयगणेः शिष्यपंमितपद्मविजयेन विरचिते श्रीमदमरनिकरवंदितनेमिचरित्रे प्राकृतप्रबंधे द्वितीयखंमस्य वसुदेवाधिकारे मातंगादिसुकोशलांतखेचरीजूचरीपरिणयनो नामा द्वितीयोऽधिकारः समाप्तः ॥२॥

॥ अथ द्वितीयखंडस्य तृतीयोऽधिकारः प्रारज्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ शारद सार दयाकरु, जिनवर वर शिवदाय ॥ गुरु गुरु गुणदायक नमुं, तिम विद्यागुरु राय ॥ १ ॥ ए अधिकार पूरण कस्यो, कहुं त्रीजो अधिकार ॥ जेम जेम श्रागल सांजले, तेम तेम हर्ष अपार ॥ २ ॥ कनकवती विवाहनो, जाखुं ए अधिकार ॥ विस्तारे करी वर्णवुं, ते सुणजो सुखकार ॥ ३ ॥ सुणतां बोध होये जलो, बोधे समकित थाय ॥ समकितथी चारित्रगुण, त्नथी मोक्ष जाय ॥ ४ ॥ एह परंपर कारणे, शिवपदनुं दातार ॥ सांजलवुं जिन श्रागमे, जाख्युं डे निर्धार ॥ ५ ॥ सांजली जाण

पापने, सांजली जाणे श्रेय ॥ पाप श्रेय सुणी जाणतो, आदरे जे आदेय ॥ ६ ॥ ते माटे सज्ज थइ सुणो, सुणतां लाज अपार ॥ वक्ता पण ह-र्पित हुइ, श्रोता देखी सार ॥ ७ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ माला किहां छे रे ॥ ए देशी ॥ इण जरते जिहां बहु गुण वरते, अलका उपम नयरी रे ॥ पेढालपुर ते सुखनो अंकुर, जागी जाय सवि वयरी रे ॥ १ ॥ जविजन सुणीये रे ॥ गुणिजन वात विनोद, नित नित ज-णीये रे ॥ ए आंकणी ॥ गजशालामां कलह ते दीसे, स्नेहनो क्षय छे दीवे रे ॥ मार शब्द सोगठीने माथे, जन सहु सुखमां जीवे रे ॥ २ ॥ ज० ॥ सहु जन हरखे करी तिहां बोले, घर घर ध्वज करी ऊंची रे ॥ मानुं रत्नाकर विषधर ए, ढाया जे पके नीची रे ॥ ३ ॥ ज० ॥ ते नगरीनो सघलो जन ते, करतो धर्मनी वातो रे ॥ नील राग जेम धर्म राग वली, जिहां अधर्म खाय लातो रे ॥ ४ ॥ ज० ॥ ते नयरी मांहि जितवयरी, हरिचंद नामे राजा रे ॥ राजा परे राजे राजेश्वर, बिहु पखथी जे ताजा रे ॥ ५ ॥ ज० ॥ मानुं रिद्धि हरिनो अनुज ए, चंद्र उज्ज्वल जिम सोहे रे ॥ तिणे हरिचंद्र युगन जस अजिधा, सहु जन मनडुं मोहे रे ॥ ६ ॥ ज० ॥ दासीपणुं करे सुरेवीनुं, लखमी दिन दिन वाधे रे ॥ स्पर्द्धा करतो, त्रण जुवनने साधे रे ॥ ७ ॥ ज० ॥ जस जशराशि गाये वर खयरी, सुरदेवी मनोहारी रे ॥ जश पण मानुं लखमीपतिने लखमीनी परे, लख-मीवती नम नारी रे ॥ ८ ॥ ज० ॥ शील लज्जा वली प्रेम ने दाक्षिण, वि-नय प्रमुखे करी नारी रे ॥ पतिमनकुमुदानंदन चंडिका, रंजा रूपे हारी रे ॥ ९ ॥ ज० ॥ जाम कला ते पल्लव जाणो, लज्जादिक गुरुणल रे ॥ पतिनी जक्ति ते फल जस उग्यां, जंगम वेली अमूल रे ॥ १० ॥ ज० ॥ वाचा ते होय अमृत सरिखी, लागे लोकने मीठी रे ॥ सुख जोगवतां पियु संयोगे, पुण्ये पुत्री दीठी रे ॥ ११ ॥ ज० ॥ निज कांते करी दीपिका सरखी, सूतिकागृहमां राजे रे ॥ जात मात्र सहु लक्षण पूरां, लखमी परे एह गाजे रे ॥ १२ ॥ ज० ॥ पूर्व जन्मनो जत्ता आवी, धनद नामे लोकपाल रे ॥ आवी कनकनी वृष्टि करे तिहां, पूरव स्नेहने पाले रे ॥ १३ ॥ ज० ॥ कनकवृष्टि देवीने हरख्यो, लखमीवती पति वाम रे ॥ ते

पुत्रीनुं नाम ते थापे, कनकवती मनोहारु रे ॥ १४ ॥ ज० ॥ एक अंकथी बीजे अंके, संचरती ते वाधे रे ॥ ढलुए ढलुए पगलां मांडे, मानुं कामी मन साधे रे ॥ १५ ॥ ज० ॥ ताली देइ बोलावे माता, ते पगथी चालंती रे ॥ नव नव उल्लापे करी गावे, कुमरी मुख जालंती रे ॥ १६ ॥ ॥ ज० ॥ हलवे हलवे बोलवुं शीखे, मुण मुण वाणी बोले रे ॥ सारिकानी परे वली बोलावे, धाव्यो लेइ निज खोले रे ॥ १७ ॥ ज० ॥ कुंतल जेहनो फकमी बांध्यो, कुंमल चपल ते सोहे रे ॥ रणफणकार करे नेउर पग, रतिपति लंपट मोहे रे ॥ १८ ॥ ज० ॥ रत्नकंडुकथी ते रमे नारी, मानुं रमा ए सारी रे ॥ कृत्रिम पुत्र करी नित्य रमती, वधती अति मनोहारी रे ॥ १९ ॥ ज० ॥ क्षीरकंठपणुं अनुक्रमे तजती, सा कला ग्रहणने योग्य रे ॥ जाणी गुणखाणी मन आणी, जोवरावे शुन्न योग रे ॥ २० ॥ ज० ॥ शुन्न दिवसे कला ग्रहेवा हेते, कलाआचारय पासे रे ॥ मूके नणवा कनकवतीने, करवा श्रुत अन्यासे रे ॥ २१ ॥ ज० ॥ तेह अढार लिपी तिहां शीखे, वली शीखे नाममाला रे ॥ नणती ते निज नाम परे अति, अन्यासे लघु बाला रे ॥ २२ ॥ ज० ॥ हंसलिपी वली नूतलिपी ने, जक्की रक्सी नामे रे ॥ उड्डी जवणी तुरुक्की कीरी, ड्राविकी नवमे गमे रे ॥ २३ ॥ ज० ॥ सिंधवी मालविणी नमी नागरी, लामलीवी वली जाणो रे ॥ पारसी लिमित्ति चाणक्की, मूलदेवी मन आणो रे ॥ २४ ॥ ज० ॥ एह अढार लिपी नेद तेहना, अंकपल्लवी घरपल्लवी रे ॥ तिम करपल्लवी नेत्रपल्लवी वली, जाणे गगापल्लवी रे ॥ २५ ॥ ज० ॥ तर्क अन्यास वली बंद ज्योतिष, अलंकारनो पार रे ॥ पामे वली खट नापा जाणे, काव्यकुशल थइ सार रे ॥ २६ ॥ ज० ॥ चित्र करे ते नव नव नाते, पुस्तक वांचे तेह रे ॥ क्रिया कारक गुप्त ते जाणे, अर्थ विकट करे जेह रे ॥ २७ ॥ ज० ॥ क्रियागुप्तत्वं चैवं ॥ यतः ॥ कुमारपालनूपाल, त्वमहो जीवरक्षणे ॥ सन्नासमक्षमादिष्टं गुरुणा हेमसूरिणा ॥ १ ॥ कारकगुप्तत्वं चैवं ॥ यतः ॥ गौरीपदं नखाकारं, शशिनं शिरसा दधौ ॥ इहैव गोपितः कर्त्ता, दत्तपाएमासिकोऽवधिः ॥ २ ॥ जाणे प्रहेलिका रूमी रीते, द्यूतकला मांहि डाही रे ॥ सारथीनी ते कला मांहे कुशला, रसवती कला अवगाही रे ॥ २८ ॥ ज० ॥ इंद्रजाल देखामवा मांही, बाजित्रनी कला जाणे रे ॥ एहवी कोइ कला नहीं जगमां, एहना

चित्तमां न आवे रे ॥ २ए ॥ ज० ॥ इंडुकलाथी चउगुणी जेहमां, दीसे
रूनी नारी रे ॥ यौवनवय आवी तेह बाला, रतिरूपे करी हारी रे ॥ ३० ॥
ज० ॥ त्रीजे अधिकारे ए पहेली, ढाल ते बीजे खंडे रे ॥ उत्तमविजयनो
पद्मविजय कहे, पूरी रंग अखंडे रे ॥ ३१ ॥ सर्व गाथा ॥ ३८ ॥

॥ दोहा ॥

.॥ यौवन आवी नारी ते, पद जस अलतारंग ॥ सुरदंतिकर सम ऊरू,
रोमराजी जस चंग ॥ १ ॥ सिंहलंकी अति सोहती, मदनशय्या मानुं
गाजि ॥ हृदय ते शोभे रूयडुं, सूचवे ते श्रीलाज ॥ २ ॥ गोल कठिन कुच
ोहता, चुंचुक कृष्ण ठे जास ॥ काम नृपति कंको करण, मानुं नोबत
ांडुं पास ॥ ३ ॥ चंड परे मुख देखीये, फाल फबुके कान ॥ जाल विशा-
दीपे घणुं, शोभा तास अमान ॥ ४ ॥ नासा ते नाला समी, कर्ण ते
ां विशाल ॥ नेत्रकमल शोभा इसी, पामे अति सुकुमाल ॥ ५ ॥ जार
। याक्यो घणुं, कहीये जे शेषनाग ॥ आवी रह्यो वेणीमिषे, पामी
.. वो लाग ॥ ६ ॥ सरिता लावण्यजल तणी, मध्यम वय लही तेह ॥
कला सफल करवा जणी, रूप कलानुं गेह ॥ ७ ॥ मान पिता देखी निते,
चिंते इणी परे चित्त ॥ वरने योग्य थइ हवे, धरनां मनमां प्रीत ॥ ८ ॥
मांके मंरूप स्वयंवरा, राय धरी आणंद ॥ बहु राजा तेडावीया, धरना
हर्ष अमंद ॥ ए ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ देशी चांदलीया ॥ एक दिन बेठी निज सदने, शशी जीत्यो जेणे
वदने ॥ थानक कीधुं मानुं मदने रे ॥ रंगीली ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ देखे एक
हंस उदार, चंनु चरण ने लोचन सार ॥ अशोकपल्लव रत धार रे ॥ रंगी-
लीο ॥ २ ॥ उज्ज्वल जस पंख विराजे, सुरसरिता फेन ज्युं ठाजे ॥ जेम जंड
मानु दीवाजे रे ॥ रंगीο ॥ ३ ॥ सोनानी घुघरी रणके, पग मांडे वाजे रणक-
णके ॥ मन मोहे सहुनां मणके रे ॥ रंगीο ॥ ४ ॥ जस नाद मधुर अति दीसे,
हर्षीने मनडुं हीसे ॥ वाणीवाहन विशवाबीशे रे ॥ रंगीο ॥ ५ ॥ तेह
दनकश्री मन चिंते, होशे कोइ घर पुण्यवंते ॥ ए नो तास विनोदने संते
॥ रंगीο ॥ ६ ॥ कोइ स्वामी एहनो होशे, अन्यथा नृपण कोण खोशे ॥
हने लाक वेठा जोशे रे ॥ रंगीο ॥ ७ ॥ जस होय तेहनुं हो एह,

पण ए गमीउं मन गेह ॥ गोंखे बेठो सोहे जेह रे ॥ रंगी० ॥ ७ ॥ ए तो मंगल चामर सोहे, करफरस करे मन मोहे ॥ हलुए हलुए ते दोहे रे ॥ रंगी० ॥ ए ॥ पुंमरीक कमल परे क्रीमा, करती नारी गतव्रीमा ॥ नवि करती तेहने पीमा रे ॥ रंगी० ॥ १० ॥ फरसे कर मस्तके तास, सोहे पिछ जार उल्लास ॥ जेम डिंज तणो केशपाश रे ॥ रंगी० ॥ ११ ॥ कहे सखीने सांजल वात, दारुपंजर सुख शात ॥ लावी एहने मांहे घात रे ॥ रंगी० ॥ १२ ॥ खग नवि रहे एकण थाने, इम दीठुं सांजव्युं काने ॥ लेवा उठी ते जब शाने रे ॥ रंगी० ॥ १३ ॥ तव बोल्यो तेह मराल, लागे ते अतिहि रसाल ॥ मानुषजाषा सुविशाल रे ॥ रंगी० ॥ १४ ॥ रे राजसुता सुण वाच, तुं निपुण अठे कहुं साच ॥ पंजरमां मूकी मत माच रे ॥ रंगी० ॥ १५ ॥ जो मुजने तुं नवि घात, पंजरमां तो विख्यात ॥ संजलावीश एक तुज वात रे ॥ रंगी० ॥ १६ ॥ तेह हंस तणी सुणी वाणी, विस्मित थइ ते सपराणी ॥ ते अमृत सम गुणखाणी रे ॥ रंगी० ॥ १७ ॥ जेम प्राहुणो घर आवे, तिणी रीतें तास बोलावे ॥ पूछे कुशल ते मनने जावे रे ॥ रंगी० ॥ १८ ॥ संजलाव तुं मुजने हंस, ताहरा रुडा दीसे अंस ॥ तुं राजहंस अवतंस रे ॥ रंगी० ॥ १९ ॥ हंस कहे सुणो कोशला नयरी, तस कोशल राय जितवयरी ॥ तस डुहिता सुकोशला खयरी रे ॥ रंगी० ॥ २० ॥ तस जर्त्ता वसुदेव नाम, जस रूपे जीत्यो काम ॥ ते तो लोकोत्तर गुणधाम रे ॥ रंगी० ॥ २१ ॥ तस सरिखुं रूप ते दीसे, आदर्श मांहे मन हींसे ॥ जगमां बहु जास जगीशे रे ॥ रंगी० ॥ २२ ॥ जेम पुरुष मांहि ते दोगो, तुज नारीमां रूप उक्किठो ॥ तुम संग होवे तो मीठो रे ॥ रंगी० ॥ २३ ॥ तुज स्वयंवर जाणी हुं आयो, वसुदेव पण आवशे जायो ॥ तेहनो जश जगमां गवायो रे ॥ रंगी० ॥ २४ ॥ उडुपति जेम उडुमां राजे, सहु रायमां ते जेम गाजे ॥ जस तेजें करी रवि जाजे रे ॥ रंगी० ॥ २५ ॥ ते कारण मूक तुं मुजने, कल्याण थाउं थाइ तुजने ॥ अपजश राख्या थशे बूजने रे ॥ रंगी० ॥ २६ ॥ इम बोली रह्यो ते पंखी, तेह कनकवती मन हरखी ॥ चिंते नहीं जोनए सरखी रे ॥ रंगी० ॥ २७ ॥ कोइ नहीं रे सामान्य पुंस, क्रीमाए कर्युं रूप हंस ॥ पण वचन होशे ए वंश रे ॥ रंगी० ॥ २८ ॥ इण वचने पति मुज थाशे, नहीतर डुःसह्यं सहु जाशे ॥ इम चिंती मूकी दीयें तासे रे ॥ रंगी० ॥ २९ ॥

गयो उडी हंस आकाशे, चित्रपट्ट नाख्यो तस पासे ॥ इणी परे भाखे उल्ला-
से रे ॥ रंगी० ॥ ३० ॥ त्रीजे खंडे अधिकारे, बीजी ढाल भली सुप्रकारे ॥
बीजे खंडे मन धारे रे ॥ रंगी० ॥ ३१ ॥ गुरु उत्तमविजयनो शिष्य, कहे
पद्मविजय सुजगीश ॥ भवि सुणीये ए निशिदीस रे ॥ रंगी० ॥ ३२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कनकवती सुणी वातकी, श्रीवसुदेवनुं रूप ॥ दीठुं जिम आलेखीयुं,
शक्ति तणे अनुरूप ॥ १ ॥ एह रूप देखी करी, जाणजे तुं निर्धार ॥ शीघ्र थइ-
ने आवीयो, इम कहे हंस उदार ॥ २ ॥ कनकवती हर्षित थइ, सांभली
हंसनी वाण ॥ अंजलिपुट करीने कहे, सांभल तुं गुणखाण ॥ ३ ॥ हंस
अंस तुज रुयडा, लोक करे परशंस ॥ हंस मांहे अवतंस तुं, भाख पोता-
नो वंश ॥ ४ ॥ रूप परावर्त्तन करी, कुंडल कांचन कान ॥ अंग चंग नेप-
थ्यरंग, उत्तर आपे आण ॥ ५ ॥ चंद्रातप खेचर अछे, सुण चंद्रानना
नार ॥ भावी तुज भर्त्ता भलो, तस सेवक हुं सार ॥ ६ ॥ वियाना महि-
मा थकी, रूप कर्युं में फेर ॥ भावी भर्त्ता भाखवा, इनपुन इण पेर ॥ ७ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ गेबमागररी पाळ, उभी दोय नागरी ॥ माहारा लाल ॥ पेरण दक्ष-
णीरो चीर, ठंडण पीली पामरी ॥ माहारा लाल ॥ ए देशी ॥ देइ आशी सुख-
वासी, खेचर विसर्जीयो ॥ माहारा लाल ॥ कनकवती मन चिंते, ए देव
तें सर्जीयो ॥ मा० ॥ तेह चित्र देखी मन, तृप्ति नवि लहे ॥ मा० ॥ संभारे
ते खेचर, ते मन गहगहे ॥ मा० ॥ १ ॥ दीये उघाडे चित्र-पट्ट ज्युं
नयनने ॥ मा० ॥ क्षण मांहे मूके मस्तके, देखे वयनने ॥ मा० ॥ क्षण
मांहे कंठ धरे वली, हृदये कामिनी ॥ मा० ॥ विरहतापानें संभारे, दिवस
ने जामिनी ॥ मा० ॥ २ ॥ हवे चंद्रातप खेचर, ते पण कौतुकी ॥ मा० ॥
विद्याधरपुरे पहोतो, विद्याबल थकी ॥ मा० ॥ महोटी शक्ति विद्यानी,
अनिल परे गयो ॥ मा० ॥ खलना रहितपणे, संचरतो जग जयो ॥
॥ मा० ॥ ३ ॥ रात समे वासभुवनमां, पेठो खेचरो ॥ मा० ॥ श्रीवसुदेवजी
दक्षत्र, सहित पेखे वरो ॥ मा० ॥ सुकुमाली शय्यामां, सूतो देखीयो
॥ मा० ॥ खेचरी भुजबलना उर्शीके, कर्युं पेखीयो ॥ मा० ॥ ४ ॥
इ वसुदेवना पाइ, उलासे शुभ परे ॥ मा० ॥ सेवा करतो वास-भुव-

नमां इणी परे ॥ मा० ॥ रतिक्रीडाना श्रमथी, निद्रा भर भयो ॥ मा० ॥
तोपण ते क्षण मांहे, जागी सज्ज थयो ॥ मा० ॥ ५ ॥ उत्तम पुरुषने निद्रा,
नवि होय आकरी ॥ मा० ॥ सुखबोधी निद्रा ते, जिणी परे कूकमी ॥ मा० ॥
देखीने ते सहसा, वामनी ने यादवो ॥ मा० ॥ नवि बोल्यो नवि कोप्यो, ते
कुलपादवो ॥ मा० ॥ ६ ॥ नवि चिंते कोइ एह, पुरुष अति गुणनिलो॥
मा० ॥ सेवा करतो दीसे, तिणे में अटकल्यो ॥ मा० ॥ सेवा करता जननी,
उपेक्षा नवि घटे ॥ मा० ॥ ए वेगां मुक निद्रा, करवी किण सटे ॥ मा० ॥
॥ ७ ॥ इम चिंती उठाके, नारी सुकोशला ॥ मा० ॥ ते पण शय्या मूकी,
वेगां वेगलां ॥ मा० ॥ रत्नाभरणे भूषित, चंद्रातप भलो ॥ मा० ॥ भके
प्रणमे पाय ते, वसुदेवने मल्यो ॥ मा० ॥ ८ ॥ वसुदेवे पण उंलख्यो, तेह
विद्याधरो ॥ मा० ॥ पूछे कुशल ने क्षेम, ते गुणगण आगरो ॥ मा० ॥
चंद्रातप चंद्रातप, शीतल वाणीये ॥ मा० ॥ प्रज्ञावंत ते भाखे, इणी
परे जाणीये ॥ मा० ॥ कनकवतीने भाखी, वात ते में जइ ॥ मा० ॥
तें जे कह्युं ते सांभली, मन हर्षित थइ ॥ मा० ॥ ९ ॥ विद्यावलथी
ताहरुं, रूप आलेखीयुं ॥ मा० ॥ आकाशे जइ में तस, अंके क्षेपीयुं
॥ मा० ॥ ते पट्ट लेइ हृदय, विचे ते थापती ॥ मा० ॥ मानुं विरहमां
भाग, करण दुःख कापती ॥ मा० ॥ १० ॥ मुझने तेह बाला कहे, सांभ-
लो माहरी ॥ मा० ॥ माहरो तुं ईश्वर, खरी वात ते ताहरी ॥ मा० ॥ ते
माटे तुं भर्त्ता, माहरो लावजे ॥ मा० ॥ एहवी वात भली वली, मुझने
कहावजे ॥ मा० ॥ ११ ॥ वदि दशमी छे आज, वसुदेव सांभलो ॥ मा० ॥
सुदि पांचम पूर्वाह्णे, तास विवाहलो ॥ मा० ॥ ते माटे तुम्हे स्वामी,
जावा जोग छो ॥ मा० ॥ करो उपगार स्वामी तुमे, नित गतशोक छो
॥ मा० ॥ १२ ॥ कहे वसुदेव सुणो पूछी, सवि सयणने ॥ मा० ॥ जोता
जाशुं ने सुख, देशुं नयनने ॥ मा० ॥ रहो तुमे महारी पास, जवाने
कारणे ॥ मा० ॥ करवा सफल प्रयास, अलीक निवारणे ॥ मा० ॥ १३॥
एम कहेतां ते अदृश्य, विद्याधर थयो ॥ मा० ॥ सूतो श्री वसुदेव, निचिं-
तो मन भयो ॥ मा० ॥ वहाणुं वाये स्वजनने, पूछी चालीया ॥ मा० ॥
अनुक्रमे पेढालपुरने, उपवने आवीया ॥ मा० ॥ १४ ॥ लखमी वन नामे,
आराम ते दीपतुं ॥ मा० ॥ तास शोभाए नंदन, वन मानुं जीपतुं ॥

॥ मा० ॥ पाडल मोघर अशोक, पल्लव ने मालती ॥ मा० ॥ सतपत्र नारिंग,
नाग ने केतकी ॥ मा० ॥ १५ ॥ कृष्ण इक्षु मचकुंद, कुइमल शोभावली
॥ मा० ॥ ते उपवनमां पंच, वरण राढा मली ॥ मा० ॥ तिहां वेग वसु-
देवजी, जोवे वेगशुं ॥ मा० ॥ इण अवसर हरिचंद, भूपति विवेकशुं ॥
॥ मा० ॥ १६ ॥ कीधां महोटां प्रासाद ते, उछव कामथी ॥ मा० ॥ शब्द
सुण्यो इम ते, तिणहीज गामथी ॥ मा० ॥ श्री नमिनाथ जिनेश्वर, पाउ
धार्या इहां ॥ मा० ॥ चउविह देव निकाय, सेवा करता जिहां ॥ मा० ॥
॥ १७ ॥ ते श्री नमि जिनवरनी, आगल नाचती ॥ मा० ॥ गुण संभारी जिन-
वर, आगल राचती ॥ मा० ॥ बहु देवांगना साथे, घणे हरखे कह्युं ॥
॥ मा० ॥ लखमीरमण उद्यान, ते दिने अभिधा धर्युं ॥ मा० ॥ १८ ॥ तेह
सुणी वसुदेव, मने हरख्यो घणुं ॥ मा० ॥ परशंसे तिहां वेग, निज आ-
तमपणुं ॥ मा० ॥ पूजा जिनप्रतिमानी, त्यां हरखे करे ॥ मा० ॥ उंचुं
चैत्य देखी, वसुदेवनुं दिल ठरे ॥ मा० ॥ १९ ॥ बीजे खंडे अधिकारे,
त्रीजे ए कही ॥ मा० ॥ त्रीजी ढाल रसाल, सुजन मन वालही ॥ मा० ॥
पंडित उत्तमविजय, गुरुनी सान्निधे ॥ मा० ॥ पद्म कहे करो पूजा, भवि-
जन इण विधे ॥ २० ॥ सर्व गाथा ॥ १०६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ लखमीरमण उद्यानमां, वेठो वसुदेव सोय ॥ इण अवसर अचरिज
थयुं, ते सुणजो सहु कोय ॥ १ ॥ उतरतुं आकाशथी, देखे एक विमान
॥ रत्नमयी अति दीपतुं, जंगम मेरु समान ॥ २ ॥ लहकंगमे ध्वज फर-
कती, द्रुम फलीयो मानुं एह ॥ हय गय मकर चित्रित जिहां, भानुमं-
डल परे जेह ॥ ३ ॥ घनगर्जारवनी परे, गाजी रह्युं आकाश ॥ मंगल वाजां
वाजतां, देखे अनिहि प्रकाश ॥ ४ ॥ विद्याधर ए उपार्जीयुं, देवी तेह
विमान ॥ कौतुक विद्याधर भणे, पूछे इम तिण थान ॥ ५ ॥ ते कहे ध-
नद ए देवता, मर्त्य लोकमां आय ॥ अरिहंतनी पूजा करी, स्वयंवर
जोवा जाय ॥ ६ ॥ चिंते तिहां वसुदेवजी, कनकवती धन्य एह ॥ महो-
छव जोवा आवता, सुर पण आणी नेह ॥ ७ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ सुरपति सेवित त्रिभुवन धणी ॥ ए देशी ॥ धनद उतरी जिनवर

तणी, करे पूजा भक्ति ते अति घणी ॥ जिनप्रतिमानी करी अर्चा, वली गीत नाटक करे चर्चा ॥ १ ॥ त्रूटक ॥ मन धरी पूजे, पाप धूजे, श्रीवसु-देवजी, इणी परे ॥ देखी पामे, हर्ष ठामे, वली वली, स्तवना करे ॥ पुण्य-वंतो, ए हसंतो, भक्ति करे, जिनवर तणी ॥ करे प्रभावना, जैनशासन, हुं पण पुण्य, तणो धणी ॥ २ ॥ एहवुं अद्भुत में लह्युं, इणी परे श्रीवसुदेवे कह्युं ॥ पूजा संपूरण करी चाल्यो, तव वसुदेवने तिहां भाल्यो ॥ ३ ॥ त्रू० ॥ चिंते चित्तमां, कुण ठे ए, रूप अनुप, सुहामणो ॥ अमर खेचर, असुर मांहे रूप नहीं, कहीं कामणो ॥ ४ ॥ हस्तसंज्ञाए तेमीयो, मन चिंते वसुदेव नेमीयो ॥ हुं मनुज ने एह ते देव, एहनी जइने करवी सेव ॥ ५ ॥ त्रू० ॥ सेव करवी, आण धरवी, एम चिंतवी, ते गयो ॥ धनदने एक, काम हुंतुं, तिणे आदर, बहु थयो ॥ ६ ॥ पूजा करी ते भली परे, तव बोले वसुदेव शुभ स्वरे ॥ एक विनीत ते सहजथी पोते, वली करी पूजा सहु जोते ॥ ७ ॥ त्रू० ॥ सहु जोते, हाथ जोमी, मान मोडी, ने कहे ॥ करो आणा, स्वामी मुऊ, करुं कारज, गहगहे ॥ ८ ॥ कहे वैश्रमण सुणो तुमे, एक वात कहुं तुमने अमे ॥ करो दूतपणुं अमारुं, कारय थाशे वली तुमारुं ॥ ९ ॥ त्रू० ॥ तुमथी अमारुं, काम थाशे, जाउं हरिचंद, नृप घरे ॥ कनकवतीने, जइ भाखो, अमे कहीये, तिणी परे ॥ १० ॥ तव निज था-नक जइ करी, मूके अलंकार ते मन धरी ॥ दूतनेज उचित जे होय, महेलां वस्त्र पहेरे सोय ॥ ११ ॥ त्रू० ॥ सोय महेलां, वस्त्र देखी, धनद भाखे, सांभलो ॥ आमंबरे सहु, लोक पूजे, तुं केम आव्यो, श्यामलो ॥ १२ ॥ यतः ॥ आमंबरो हि सर्वेषां, मान्यो जगति वर्त्तते ॥ आमंबरेण हीनानां कोऽपि नाख्यत्प्रियं वचः ॥ १ ॥ शौरि कहे सुणो स्वामी जी, नहीं महेलां वस्त्र काम जी ॥ दूतने तो वचन ते सार, ते तो मुऊने ठे आधार ॥ १३ ॥ त्रू० ॥ आधार ठे एम, कहे भाखी, ढाल चोथी, ए भली ॥ गुरु उत्तम,-विजय साथे, पद्मविजये ए, कही वली ॥ १४ ॥ सर्व गाथा ॥ १२७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ स्वस्ति तुऊने होयजो, धनद कहे जाउं त्यांहि ॥ तव चाल्या उता-वला, हरिचंद्र गृह ज्यांहि ॥ १ ॥ हय गय रह नरु बहु मल्या, रोध्युं रा-यनुं द्वार ॥ पेसीने को नवि शके, थइ अदृश्य तिणी वार ॥ २ ॥ चाल्यो

वायुनी परे, अप्रतिहत गति जास ॥ अंजनसिद्ध योगी परे, आव्यो अंत आवास ॥ ३ ॥

॥ ढाळ पांचमी ॥

॥ फूंबखडुं फूंबी रह्युं, फूंब ते माजिम राती ॥ संयमराय फूंबखडुं ॥ ए देशी ॥ पहेला घरमां देखतो, बहु परिकरे करी रूढ ॥ वसुदेव चमकतो ॥ चित्रामण जस हाथमां, इंद्रनील तल बद्ध ॥ १ ॥ व० ॥ कांति मनोहर जेहनी, निर्मल जल जिहां वाव ॥ वसु० ॥ भ्रम मनमां आवे घणो, देखी मनने चाव ॥ व० ॥ २ ॥ दिव्याभरण धरी करी, रंभानो ज्युं वृंद ॥ व० ॥ रूपवती सरिखी वये, देखे मुख ज्युं चंद ॥ व० ॥ ३ ॥ आगल चाल्यो अनुक्रमे, बीजा घरमां जाम ॥ व० ॥ मणिमय थंभे सोहती, पांचाली जुवे ताम ॥ व० ॥ ४ ॥ त्रीजुं घर जब देखीयुं, त्रिभुवनमां अद्भुत ॥ व० ॥ उज्ज्वल गोक्षीर सारिखुं, देखे धनदनो दूत ॥ व० ॥ ५ ॥ पेसे ऐरावत जिस्यो, क्षीरसमुद्रमां सार ॥ व० ॥ देखे तिहां नारी घणी, दिव्य आभरणनी धार ॥ व० ॥ ६ ॥ माये नहीं देवलोकमां, तिण आवी मानुं आंही ॥ व० ॥ चिंते मनमां ए किस्युं, इंद्रजाल के नांही ॥ व० ॥ ७ ॥ चोथे कक्षांतरे गयो, जलकुट्टिम तिहां जोय ॥ व० ॥ बहुल तरंग तिहां अछे, चक्रवाक युग होय ॥ व० ॥ ८ ॥ हंस प्रमुख क्रीडा करे, वदन जुवे बहु नार ॥ व० ॥ दर्पणनुं कारज नहीं, निर्मल एहवुं वार ॥ व० ॥ ९ ॥ सारिका शुक मंगल कहे, बहु दासी जन जळ ॥ व० ॥ गीत नाटक होय अति घणां, देखे वसुदेव नळ ॥ व० ॥ १० ॥ पांचमा घर मांहे गयो, मरकतकुट्टिम भास ॥ व० ॥ देवलोकनुं विमान ज्युं, शोभे अति सुविलास ॥ व० ॥ ११ ॥ मोतीनी माला घणी, वली विद्रुमनी माल ॥ व० ॥ चामर ढलके चिहुं दिशे, ते पण अतिहि विशाल ॥ व० ॥ १२ ॥ मानुं मायाए कर्यो, ए सवि थान बनाव ॥ व० ॥ वेश अलंकृत थइ घणुं, दासी ते पुनली दाव ॥ व० ॥ १३ ॥ हवे छठा घरमां गयो, पद्मकुट्टिम तिहां होय ॥ व० ॥ पद्म सरोवरनी परे, पद्मसमूह सह जोय ॥ व० ॥ १४ ॥ मणिनां पात्र देखे तिहां, देव संबंधी तेह ॥ देव संबंधी वस्त्रने, देखे तिहां धरी नेह ॥ व० ॥ १५ ॥ करमजी राग अशुंक जसां, पहेर्यां छे तिहां नार ॥ व० ॥ संध्यामृगि धरी करी, मानुं आवी इण ठार ॥ व० ॥ १६ ॥ चमकी चतुर ते चालीयो, सातमा घर मांहे मोद

॥ व० ॥ लोहिताक्षनुं नीपनुं, कुट्टिम देत प्रमोद ॥ व० ॥ १७ ॥ कर्केतन तिहां मणिमयी, थंज ते अतिहि उदार ॥ व० ॥ कल्पवृक्ष वली देखतो, वली आजरण ते सार ॥ व० ॥ १८ ॥ पूर्ण कलश करवा जणी, तिहां बहु दासी लोक ॥ व० ॥ तेह कला बहु जाणती, हर्षवंत गतशोक ॥ ॥ व० ॥ १९ ॥ जाणे देश अनेकनी, जाषा अतिहि विवेक ॥ व० ॥ काने कुंडल शोजतां, प्रतिहारी अतिरेक ॥ व० ॥ २० ॥ चिंते तिहां वसुदेवजी, शुं करवुं इण गर ॥ व० ॥ जइ शकीये हवे आगले, नहीं ते कोइ प्रकार ॥ व० ॥ २१ ॥ जब इणी परे ते चिंतवे, तव तिहां अचरिज थाय ॥ व० ॥ ते कहीये हवे आगले, सुणजो मन थिर गय ॥ व० ॥ २२ ॥ बीजे खंडे इणी परे, वली त्रीजे अधिकार ॥ व० ॥ पांचमी ढाल कही जली, पद्मविजय जयकार ॥ व० ॥ २३ ॥ सर्व गाथा ॥ १५३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इणी अवसर आवी तिहां, गगनपंथथी एक ॥ कनककमल जस हाथमां, दासी अति सुविवेक ॥ १ ॥ ते दासीने पूठती, सघली इणी परे वाच ॥ कनकवती जे स्वामिनी, किहां ठे कहे अम साच ॥ २ ॥ ते कहे प्रमदवने अठे, दिव्य वेष धर तेह ॥ सप्तजूमि प्रासादमां, ठे एकाकी जेह ॥ ३ ॥ सुर सान्निध करे जेहनी, ते अतिरूप निधान ॥ तव वसुदेव ते चमकीयो, इणी परे सांजली कान ॥ ४ ॥ वसुदेव नीकलीयो वली, प्रमदवने ते जाय ॥ सप्तजूमि प्रासादने, तेह समीपे थाय ॥ ५ ॥ उंचो गढ देखे तिहां, चढीया श्रीवसुदेव ॥ देखे कनकावती तिहां, कल्पलता परे हेव ॥ ६ ॥ सर्व ऋतु कुसुमे करी, दीपे तास शरीर ॥ मानुं ते वनदेवता, दिव्य धर्यां तिणे चीर ॥ ७ ॥ जद्रासने बेठी थकी, जूइ चित्रपट्ट सार ॥ प्रश्न करंती देखीये, चित्रपट्ट चित्त धार ॥ ८ ॥

॥ ढाल ठही ॥

॥ अइ प्रीतमशुं एक वार, सलूणी बोलो हो ॥ ए देशी ॥ कनकवती वसुदेवने रे, देखी हर्षित थाय ॥ चित्ररूप सम निरखीने, जिम प्रात अंबुज तिम थाय ॥ १ ॥ वसुदेव रूमो हो, अइ देखी नयन ठोजाय ॥ ए आंकणी ॥ नेत्र इंदीवरथी करी रे, पूजे श्रीवसुदेव ॥ अंजलि करी उठी तिहां रे, आसनथी ततखेव ॥ व० ॥ अ० ॥ २ ॥ इणी परे कहे वसुदेवने

रे, महारा पुण्यथी आज ॥ आव्या स्वामी जी वेगथी, तुम दासी तुं महाराज ॥ व० ॥ अ० ॥ ३ ॥ तव वसुदेव कहे इस्युं रे, मुजने प्रणमो कांय ॥ ताहरो सेवक जाणजे, तुं स्वामिनी माहरी थाय ॥ व० ॥ अ० ॥ ४ ॥ जे तुज योग्य पति होय रे, तेहने कर परणाम ॥ कुल जाण्या विना मुज नणी, मत कर प्रणाम तुं आम ॥ व० ॥ अ० ॥ ५ ॥ कनकवती कहे सांजलो रे, माहरो तुं जरतार ॥ जे देवताए नाखीयो, वली चित्र तणे अनुहार ॥ ॥ व० ॥ अ० ॥ ६ ॥ कहे वसुदेव हुं नहीं पति रे, हुं तुज पतिनो दास ॥ उत्तर दिशिनो अधिपति, तुज जर्त्ता धनद ते खास ॥ व० ॥ अ० ॥ ॥ ७ ॥ तेहनो दूत हुं स्यनो रे, आव्यो ताहरी पास ॥ ते कहे तुजने इणी परे, सांजल तुं वचन विलास ॥ व० ॥ अ० ॥ ८ ॥ पट्टराणी तुं माहरी रे, थाजे स्वयंवर ठाम ॥ अमरी बहु सेवा करे, तव कनकवती कहे स्वाम ॥ व० ॥ अ० ॥ ए ॥ धनद किहां वली हुं किहां रे, ए तो महोटो देव ॥ हुं तो नारी मनुष्यणी, किटिकाने तोले हुं देव ॥ व० ॥ अ० ॥ १० ॥ दूत करी तुज मोकल्यो रे, ते तो कीजा हेत ॥ कोइ दिवस नवि संनवे, मानुष्यणी देवने देत ॥ व० ॥ अ० ॥ ११ ॥ कहे वसुदेव ए नवि घटे रे. तुमने वात उवेख ॥ तुमे पण दमयंती परे. उद्देशो दुःख आगल देख ॥ व० ॥ अ० ॥ १२ ॥ कनकवती कहे ए खरूं रे. कोइ पूरव संबंध ॥ सदेव आवे सही नवि शके. देवना मानुषिणीनो गंध ॥ व० ॥ अ० ॥ १३ ॥ यत ॥ चत्तारि पंच जोयण. सयाइं गंधोय मणुअ लोअस्स ॥ उड्ढं वच्चइ जेणं. नहु देवा तेण आवंति ॥ तथा चोक्तं हेमकृतनेमिचरित्रे ॥ दुर्गंधस्य शरीरस्यौ-दारिकस्य सुधाशना ॥ नेशते गंधमपि हि. सोढुमित्यार्हतं वचः ॥ ॥ १ ॥ इतनिपे तु माहरो रे. तो जरतार ए नीम ॥ जड कहो उत्तर दिशिपति, जिम हुं करुं निराहार नीम ॥ व० ॥ अ० ॥ १४ ॥ दर्शनने पण ताहरा रे. पाम्य नथी हुं स्वाम ॥ तसधातु प्रतिमा करी. तुं ना पूजणने काम ॥ व० ॥ अ० ॥ १५ ॥ अदृश्यमान थइ करी रे. जेम आव्या तेम जाय ॥ धनदने रहे सहु जाणकी. तव धनद कहे तिण ठाय ॥ व० ॥ अ० ॥ १६ ॥ सहु सुर माहे प्रशंसीयो रे. धनद देइ सन्मान ॥ दिव्यांशुक युग आपनो. गये गामिन तिण पान ॥ व० ॥ अ० ॥ १७ ॥ नृपयश मुकुट सोहामणो रे. कनक रकनां नाम ॥ हार शशिनप्रभ वली. उज्जिनप्रज स्पूर काम ॥ व० ॥

॥ अ० ॥ १८ ॥ पोंचिका आपे रुअमी रे, ते तो अतिहि अमूल ॥ कटक सुदर्शन नामथी, मणिमंमित अनुकूल ॥ व० ॥ अ० ॥ १९ सरदारुण नामे दीये रे, कटिसूत्रक मनोहार ॥ कुसुममाल महमहकती, आत दिव्य विलेपन सार ॥ व० ॥ अ० ॥ २० ॥ इणी परे दइ वसुदेवने रे, कीधो आप समान ॥ देखी साथे आवीया, शालादिक हरख्या असमान ॥ व० ॥ अ० ॥ ॥ २१ ॥ बीजे खंडे ए कही रे, ठठी ढाल रसाल ॥ त्रीजे अधिकारे जली, सुणतां होय मंगलमाल ॥ व० ॥ अ० ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ १७३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हरिचंद राजा आवीयो, जोवा आश्चर्य काम ॥ करी प्रणाम करे विनति, सांजलो गुणना धाम ॥ १ ॥ जरतक्षेत्र पावन कर्युं, तुमे आव्या जिणे अत्र ॥ एम कही स्वयंवर सज्ज करे, नानाश्चर्य एकत्र ॥ २ ॥ मांचा महोटा मांमीया, विविध आसन मनोहार ॥ चाल्यो धनद जोवा जणी, जोवा तेह उदार ॥ ३ ॥ पृथिवी आपद टालतो, तेह विमाननी गाय ॥ देव देवीशुं परवस्यो, बहु बंदी बोलाय ॥ ४ ॥ देखे स्वयंवर एहवो, जिहां बांध्या उल्लोच ॥ मानुं अंबर गाइयो, नहीं मनाक् संकोच ॥ ५ ॥ तोरण बांध्यां बाहिरे, दीसे सज्ज कर्यां चाप ॥ मानुं काम जूपति तणुं, यंत्रा बाण करे आप ॥ ६ ॥ रत्ने जमित प्रदेश ते, मानुं उग्या जाण ॥ द्वारजूमि अति शोजती, अष्ट मंगल तिण गण ॥ ७ ॥ उडे ध्वज आकाशमां, संभ्रम बगनो थाय ॥ पृथिवी शोजे रत्नथी, मानुं सुधर्मा जाय ॥ ८ ॥ दृष्टिविनोदने कारणे, पूतली रची मनोहार ॥ तिहां उत्तर दिशिनो पति, आवे हर्ष अपार ॥ ९ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ सखी चैत्रज महीने चाख्या ॥ ए देशी ॥ हवे धनद ते बेगा आवी, बहु अप्सरा साथी सोहावी, वसुदेवनी आगल गावी हो राज ॥ पुण्य तणां फल जोजो ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ राज आगल जेम जुवराय, तेम वसुदेव आगल सोहाय, रूपे अनंग हराय हो राज ॥ पु० ॥ २ ॥ बीजा पण राजा बेगा, जे रिद्धे अतिहि उक्किठा, देवांशी पुरुष सम दीठा हो राज ॥ ॥ पु० ॥ ३ ॥ अर्जुन सोनानी रुमी, आपे एक वली मुदरमी, घमी शिल्पीए मानुं न कूमी हो राज ॥ पु० ॥ ४ ॥ कनिष्ठा अंगुलीए आपे, वसुदेव

लेइ सुख व्यापे, तव धनद सदृश थयो आपे हो राज ॥ पु० ॥ ५ ॥ तव लोकने विभ्रम आव्यो, कुबेर मूरति दोय लाव्यो, एम लोकवचने सोहाव्यो हो राज ॥ पु० ॥ ६ ॥ हवे कनकवती तिहां आवे, एक हाथमां हार सोहावे, कंदर्प हिंचोलाने दावे हो राज ॥ पु० ॥ ७ ॥ हवे स्वयंवर निरखी जोवे, मन मांहे हर्षित होवे, पण वसुदेव तिहां नवि जोवे हो राज ॥ पु० ॥ ८ ॥ ते चित्रमां रूप जे दीठुं, दूतरूपे वली उकिठुं, ते तो जोतां लागे मीठुं हो राज ॥ पु० ॥ ९ ॥ तव म्लान वदन थयुं तास, जेम कमलिनी संध्या पास, थइ कनकवती निराश हो राज ॥ पु० ॥ १० ॥ जेम चित्रपूतली मनोहार, तेम थिर रही तेहज सार, नवि क्षेपवे कंठे ते हार हो राज ॥ पु० ॥ ११ ॥ निज साहसुं सघला जोइ, शुं दूषण अम्ह होशे कोइ, केम वरती नथी ए मोइ हो राज ॥ पु० ॥ १२ ॥ सखी कनकवतीने जाखे, तुं शुं चित्तमां हजी राखे, केम माल न कंठे नाखे हो राज ॥ पु० ॥ १३ ॥ तव कनकवती एम बोले, ते तो जगमां दीसे अमोले, जस रूप ते चित्रने तोले हो राज ॥ पु० ॥ १४ ॥ पण नवि आव्यो हजी तेह, तिणे थाय विलंब ते एह, शी गति होशे मुफ देह हो राज ॥ पु० ॥ १५ ॥ केम हृदय द्विधा नवि थाय, केम जीव हजी नवि जाय. मुफ प्रीतम हजी नवि आय हो राज ॥ पु० ॥ १६ ॥ तव कहे वसुदेव एम वाणी. कनकवतीनी करुणा आणी, जाणी हो राज ॥ पु० ॥ १७ ॥ केम चिंतातुर ए नारी. तुमे चित्तथी केम उतारी. ए दीने दुःखमां नारी हो राज ॥ पु० ॥ १८ ॥ तव धनद कहे सुणो वात. नामे मुद्रा कुबेरकांत. ते हर करो सुखशान हो राज ॥ पु० ॥ १९ ॥ जव हाथथी तेह उतारे. तव मूल रूप निज धारे. कनकवतीने हर्ष वधारे हो राज ॥ पु० ॥ २० ॥ माला हवे नाम पहेरावे. धनद दुदुंभि वजडावे. अप्सरा तिहां गीत ते गावे हो राज ॥ पु० ॥ २१ ॥ करे लोक ते एम प्रशंस. धन्य हरिचंद नृपनो वंश. जस जामाना देवाश हो राज ॥ पु० ॥ २२ ॥ कुबेरनी आणा पावे. देवता तिहां वसु वरसावे ॥ महामोत्सव तम परणावे हो राज ॥ पु० ॥ २३ ॥ इम कनकवती ने वसुदेव. सुख भोगवतां नितमेव. बीजे खंडे नवमेव हो राज ॥ पु० ॥ २४ ॥ बीजे अधिकारे दाखी. ढाल उत्तमविजय

वे साखी; सातमी पन्ने चित्त राखी हो राज ॥ पु० ॥ २५ ॥ सर्व गाथा ॥ २१७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पूछे श्री वसुदेवजी, धनद प्रते हवे एम ॥ शे कारण आव्या तुमे, एवडो तुम केम प्रेम ॥ १ ॥ तव वैश्रमण कहे हवे, सांभल थइ सावधान ॥ कारण मुफ आव्या तणुं, कर्णामृत मानुं पान ॥ २ ॥ जंबुद्वीपना भरतमां, नयरी संगर नाम ॥ अष्टापदने ढुकडी, तिहां मम्मण नृप गाम ॥ ३ ॥ वीरमती प्रिया तेहनी, अछे ते रूपनिधान ॥ एक दिन दंपती नीसख्यां, रमवाने उद्यान ॥ ४ ॥ साथ एक तिहां देखीयो, दीठो तिहां एक साध ॥ क्षमाश्रमण ते मुनिवरु, रजनो मेल अगाध ॥ ५ ॥ तव नृप मनमां चिंतवे, थयां अशुकन ए आज ॥ मृगटोलाथी मृग परे, लेइ गयो ते मुनिराज ॥ ६ ॥ राजकुले लावी करी, राख्या घटिका चार ॥ हवे आगल शुं नीपजे, ते सुणजो अधिकार ॥ ७ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ हांरे हांरे साहिवा रे, गोकुल गामने गोंदरे रे ॥ उभो कुसमोरारी रे लाल, वलिहारी तुफ वेशनी ॥ ए देशी ॥ हांरे हांरे साहिवा रे, कांइक करुणा आणीने रे, भाखे एणी परे वाणी रे लाल ॥ वलिहारी तुफ वेषनी रे ॥ ए आंकणी ॥ हांरे किहांथी आव्या ने किहां जायशो रे, तव कहे मुनि गुणखाण रे लाल ॥ व० ॥ १ ॥ हांरे रोहितकपुरथी आवीया रे, जाशुं अष्टापद ठाण रे लाल ॥ व० ॥ हां० ॥ करशुं जात्रा जिन तणी रे, जे थापे निर्वाण रे लाल ॥ व० ॥ २ ॥ हां० ॥ मुफ पकड्यो तुम्हे दंपती रे, कीधो साथ विजोग रे लाल ॥ व० ॥ हां० ॥ अमे नवि जात्रा करी शक्या रे, धर्ममां विघननो जोग रे लाल ॥ व० ॥ ३ ॥ हां० ॥ राग जेम वध्यो मुनि उपरे रे, वैर विसाखुं ताम रे लाल ॥ व० ॥ हां० ॥ जेम कुस्वन्न ते विसरे रे, हृदय कोमल थयुं जाम रे लाल ॥ व० ॥ ४ ॥ हां० ॥ मुनि पण परउपगरीया रे, जीवदया कह्यो धर्म रे लाल ॥ व० ॥ हां० ॥ योग्य जीव जाणी करी रे, दया जिनशासन मर्म रे लाल ॥ व० ॥ ५ ॥ हां० ॥ मुनिवर भाख्यो धर्मने रे, सांभली दंपती तेह रे लाल ॥ व० ॥ हां० ॥ धर्म पाम्यां जिनवर तणो रे, पडिलाभ्या मुनि नेह रे लाल ॥ व० ॥ ६ ॥ हां० ॥ मुनिवर अष्टापद गया रे, श्राद्धनां व्रत धरे चार रे लाल ॥ व० ॥ हां० ॥ जेम करपी

धन साचवे रे, तेम व्रत साचवे सार रे ॥ व० ॥ ७ ॥ हां० ॥ शासनदेवता एकदा रे, थिर करवाने हेत रे लाल ॥ व० ॥ हां० ॥ अष्टापद ते लेइ गइ रे, धर्म तणे संकेत रे लाल ॥ व० ॥ ८ ॥ हां० ॥ तिहां सुर असुर पूजा करे रे, जिनप्रतिमानी सार रे लाल ॥ व० ॥ हां० ॥ देखीने आनंद उपनो रे, अपनी आवी निज द्वार रे लाल ॥ व० ॥ ९ ॥ हां० ॥ रतन जनित सोना तणां रे, तिलक करे चोवीश रे लाल ॥ व० ॥ हां० ॥ जिन एक एक निमित्तनां रे, आंबिल कीधां वीश रे लाल ॥ व० ॥ १० ॥ हां० ॥ एक दिन अष्टापद गइ रे, साथे लेइ परिवार रे लाल ॥ व० ॥ हां० ॥ पूजा करी स्तवना करी रे, जिनवरनी मनोहार रे लाल ॥ व० ॥ ११ ॥ हां० ॥ चोवीश तिलक चढावीयां रे, चोवीश जिनने ललाट रे ॥ व० ॥ हां० ॥ तपतपती अति आकरां रे, धर्म करे तेह राट रे लाल ॥ व० ॥ १२ ॥ हां० ॥ कृतकृत्य आतमने मानती रे, आवी नगरे तेह रे लाल ॥ व० ॥ हां० ॥ जिन्न शरीर मन एक छे रे, इणी परे दंपती नेह रे लाल ॥ व० ॥ १३ ॥ हां० ॥ मरण समाधि तिहां करी रे, उपन्यां ते देवलोक रे लाल ॥ व० ॥ हां० ॥ देव देवी सुख जोगवे रे, मन हरखे गतशोक रे लाल ॥ व० ॥ १४ ॥ हां० ॥ मन्मथ जीव हवे चवी रे, उपनो वहुली देश रे लाल ॥ व० ॥ हां० ॥ पोतनपुर नगरे इहां रे, आहीरपणे सुविशेष रे लाल ॥ व० ॥ १५ ॥ हां० ॥ धन्मिल्लनो पुत्रज थयो रे, रेणुका माता जाण रे लाल ॥ व० ॥ हां० ॥ धन्य नामा पुण्यपात्र छे रे, जाग्यवंत गुणखाण रे लाल ॥ व० ॥ १६ ॥ हां० ॥ वीरमती चवी उपनी रे, धुसरी नामे नारी रे लाल ॥ व० ॥ हां० ॥ वर्षा रुतु आवी एकदा रे, करे दर्डुर पोकार रे लाल ॥ व० ॥ १७ ॥ हां० ॥ ज्युं अमावास्यानी यामिनी रे, तेम अंधारुं घोर रे लाल ॥ व० ॥ हां० ॥ घर चूए चालणी परे रे, थाये गाजनो शोर रे लाल ॥ व० ॥ १८ ॥ हां० ॥ केशवती पृथिवी थइ रे, उग्यां हरियां ताम रे लाल ॥ व० ॥ हां० ॥ मानुं नारीए पहेरीयां रे, सेवाल वस्त्रने ठाम रे लाल ॥ व० ॥ १९ ॥ हां० ॥ वीजली चिहुं दिशि चमकती रे, कर्दम जानु समान रे लाल ॥ व० ॥ हां० ॥ पंथिशत्रु प्रगट थयो रे, जीवाकुल थानो थान रे लाल ॥ व० ॥ २० ॥ हां० ॥ इणी परे वर्षा उन्मह्यो रे, वरसे अखंमित धार रे लाल ॥ व० ॥ हां० ॥ महिषी चारवा नीकल्यो रे, आहीर धन्यकुमार रे

लाल ॥ व० ॥ २१॥ हां० ॥ मेघघटा महिषी बहु रे, प्रोढा शब्द करंत रे लाल ॥ व० ॥ हां० ॥ वरण श्यामल ने पय करे रे, जू गगने विचरंत रे लाल ॥ व० ॥ २२ ॥ हां० ॥ छत्र धरुं निज मस्तके रे, पाणी करे ते दूर रे लाल ॥ व० ॥ हां० ॥ महिषीनी पूठे जमे रे, वरसे जलनुं पूर रे लाल ॥ व० ॥ २३ ॥ हां० ॥ बीजे खंडे आठमी रे, ढाल त्रीजे अधिकार रे लाल ॥ व० ॥ हां० ॥ गुरु उत्तमनी साखथी रे, पदमविजय जयकार रे लाल ॥ व० ॥ २४ ॥ हां० ॥ सर्व गाथा ॥ २४० ॥

॥ दोहा ॥

॥ वरसे महा वर्षा तिहां, शीत होये जन जोर ॥ व्यापारी व्यापारना, करे उद्यम निज गेर ॥ १ ॥ जमतां जमतां देखीया, पुण्यप्रकृतिने जोर॥ मेरु परे निश्चल मुनि, एक पगे एक गेर ॥ २ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ जयो जयो जगचिंतामणि रे ॥ ए देशी ॥ बीजा मुनिवर एहवा रे, यया दुर्बल करी उपवास रे ॥ शीत पीडाए अति कंपता रे, जेम वृक्ष अनिले थिर नास रे ॥ १ ॥ जीरे जयो जयो मुनिवर गुणधरु रे ॥ ए आंकणी ॥ उग्र परीषहने सहे रे, ते मुनिपुंगव महाधीर रे ॥ देखी करुणा उपनी रे, धरे छत्र शिर आनीर रे ॥ जी० ॥ २ ॥ तव मुनिने शाता थइ रे, मानुं वेला वसति मांहि रे ॥ वृष्टि नवि विरमे किमे रे, मयपानीने पुन स्युं माही रे ॥ जी० ॥ ३ ॥ मुनिवरने अनिमह थये रे, जिहां लगे वरसे ए वारि रे ॥ तिहां लगे नवि हालुं किमे रे, पण वरसे अलंबित धार रे ॥ जी० ॥ ४ ॥ तेह घनाघन विरमीयो रे, प्रणमी ते महिषीपास रे ॥ पग-लवीयां उंबासीने रे, करी अंजलि ते निज वास रे ॥ जी० ॥५॥ सामी किहांथी आवीया रे, आ विषम काल दुःखदाय रे ॥ कहे मुनि पांडु देशथी रे, अमे आव्या आणे गाय रे॥ जी० ॥ ६॥ लंका नगरीए जायता रे, गुरुपाद वंदनने हेत रे ॥ वाट मांहि वर्षा थइ रे, धाराधर धारासंकेत रे ॥ जी० ॥ ७॥ एह जीमूतने वरसतां रे, मुनिने नवि कल्पे विहार रे ॥ तिणे अभिग्रह करी इहां रह्या रे, वरसे जिहां लगे घनधार रे ॥ जी० ॥ ८ ॥ सात दिवस थया तेहने रे, विरम्यो ए जलद ते आज रे ॥ पूर्ण प्रतिज्ञा माहरे रे, थइ इर्या परे कहे मुनिराज रे ॥ जी० ॥ ९ ॥

रहेशुं थानक जोइने रे, तव बोले ते आजीर रे॥ स्वामी महिषी उपर चढो रे, वाढे कर्दम ने बहु नीर रे ॥ जी० ॥ १० ॥ तव मुनिवर कहे इणी परे रे, जीव उपर चढे साध रे ॥ परपीमा मुनि नवि करे रे, जीवदया प्रतिपाल अगाध रे ॥ जी० ॥ ११ ॥ पायचारी मुनिवर कह्या रे, तिणे नवि वेसुं कांइ रीति रे ॥ इम कही बिहुं जण चालीया रे, धन्य धरतो मुनिशुं प्रीति रे ॥ जी० ॥ १२ ॥ करे मुनिने इम विनति रे, तुमे उजा रहो इणी ठार रे ॥ हुं आवुं ज्ञंप दोही करी रे, तिहां लगे मुज करी उपगार रे ॥ जी० ॥ ॥ १३ ॥ इम कहीने निज घर गयो रे, महिषी दोही जस्यो कुंज रे ॥ हर्षथी आव्यो मुनि कने रे, मन मांहि पणोज अदंज रे ॥ जी० ॥ १४ ॥ मुनिवरने पमिलाजीया रे, निज जीवने माने धन्य रे॥ पारणुं तिहां मुनिवर करे रे, जस मन निर्मम अति पुण्य रे ॥ जी० ॥ १५ ॥ चोमासुं तिण पुर रही रे, मुनिवरजीए कीधो विहार रे ॥ श्रावकव्रत ते दंपती रे, पाले अति उदार रे॥ जी० ॥ १६ ॥ धन्य ने धुसरी श्राविका रे, अंगीकरे महाव्रत चार रे ॥ सात वरस लगे पालीयुं रे, चारित्र समाधिमां सार रे ॥ जी० ॥ ॥ १७ ॥ काल करीने उपन्यां रे, हेमवंत क्षेत्रमां दोय रे ॥ युगलजावथी ते मरी रे, दोय देवपणे ते होय रे ॥ जी० ॥ १८ ॥ देव चवीने उपनो रे, इणहीज जरत मकार रे ॥ कोशल देशमां दीपती रे, नगरी कोशला सुखकार रे ॥ जी० ॥ १९ ॥ कुल इक्ष्वाकुमां उपनो रे, ठे नामे निषध महाराज रे ॥ सुंदरा उदरे उपनो रे, धन्य जीव नल नामे ते राज रे ॥ जी० ॥ २० ॥ सुत बीजो कुबेर जलो रे, बीजे खंडे त्रीजे अधिकार रे ॥ ढाल कही नवमी जली रे, मुनि पद्मविजये सुखकार रे ॥ जी० ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ २३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ देश विदर्ज नामे अठे, कुंमिनपुर तिहां सार ॥ जीम पराक्रम जीमरथ, पुष्पदंती तस नार ॥ १ ॥ त्रण वर्ग नित्य साचवे, जोगवे जोग रसाल ॥ हवे आजीर देवी चवी, उपजे तिहां तिण ताल ॥ २ ॥ सूती राणी एकदा, देखे स्वपन उदार ॥ यामिनी अंते रूयडुं, कहे आवी जरतार ॥ ३ ॥ स्वामी आज में स्वप्नमां, दीठो हाथी एक ॥ दवथ्रिथी नासतो, आव्यो तुम घर ठेक ॥ ४ ॥ ते प्रलब्धपणे करी, दीठो तव कहे राय ॥ गर्ज उपजशे अति जलो, सहु जनने सुखदाय ॥ ५ ॥ राय राणी इणी परे बिहुं, करतां

वचन विलास ॥ अचरिज एक ते उपन्युं, ते सुणजो उल्लास ॥ ६ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ महाविदेह क्षेत्र सोहामणुं ॥ ए देशी ॥ इणी अवसर एक हाथीयो, उज्ज्वल वर्ण शरीर लाल रे ॥ आवी राय राणी प्रते, खंधे धरे गंभीर लाल रे ॥ १ ॥ दान तणां फल देखजो ॥ ए आंकणी ॥ चोक फेर ते फेरवे, लहे अचरिज सवि लोक लाल रे ॥ पुष्प प्रमुखे पूजा करे, लोक तणा थोके थोक लाल रे ॥ दा० ॥ २ ॥ राजद्वारे आवी करी, उतारे ते दोय लाल रे ॥ जइ आलान मूले रह्यो, वृष्टि कुसुम रत्न होय लाल रे ॥ दा० ॥ ३ ॥ राय उतारे आरती, करी पूजा सत्कार लाल रे ॥ चंदन प्रमुख विलेपीयां, गज-मुख आगल सार लाल रे ॥ दा० ॥ ४ ॥ मास पूरण थइ अन्यदा, शुभ जोग ने शुभ वार लाल रे ॥ मेघघटा विद्युत परे, प्रसवे पुत्री उदार लाल रे ॥ दा० ॥ ५ ॥ श्रीवत्स ज्युं वक्षस्थले, महापुरुषने होय लाल रे ॥ तेम भाले शोभे घणुं, सहेजे तिलक ते जोय लाल रे ॥ दा० ॥ ६ ॥ तास जनमप्रभावथी, सहु राजा शिरदार लाल रे ॥ भीम निसीम ते विक्रमे, तेज प्रताप भंकार लाल रे ॥ दा० ॥ ७ ॥ स्वप्न संभारी राय ते, दवथी दंती आयात लाल रे ॥ ॥ दवदंती अभिधा ठवे, कुंडिन नृपति तास लाल रे ॥ दा० ॥ ८ ॥ कनकनी मुद्रिका उपरे, रत्न जडित जेम होय लाल रे ॥ तेम श्रुति शोभे एहनी, करे प्रशंस सहु कोय लाल रे ॥ दा० ॥ ए ॥ दिन दिन वधती ते हवे, श्वास सुगंधित तास लाल रे ॥ मात धौम्य पण वाहली, पुण्य प्रबल ठे जास लाल रे ॥ दा० ॥ १० ॥ पाय नेउर रणझण करे, पद चंक्रमणे तेह लाल रे ॥ लखमी परे क्रीडा करे, तिणे दीपावे गेह लाल रे ॥ दा० ॥ ११ ॥ आठ वरसनी सा थइ, भणवा मूके तास लाल रे ॥ साक्षी मात्र गुरुने करी, करती कला अन्यास लाल रे ॥ दा० ॥ १२ ॥ जेम आदर्शमां संक्रमे, प्रतिबिंब परे थाय लाल रे ॥ कर्मप्रकृति मुख शास्त्रनी, पारंगामी कहेवाय लाल रे ॥ दा० ॥ १३ ॥ स्याद्वाद शैली भली, जिनधर्मे मति होय लाल रे ॥ पंडित तेहवो जग नहीं, आवी जीते कोय लाल रे ॥ दा० ॥ १४ ॥ कलासायर ते कुंवरी, वाचेश्वरी परे तेह लाल रे ॥ तात पासे आवे हवे, कलाचारय सह तेह लाल रे ॥ ॥ दा० ॥ १५ ॥ निज कला कोशलपणुं, देखावे तेह तात लाल रे ॥ तात

घणुं हर्षित थयो, देखी एहवी वात लाल रे ॥ दा० ॥ १६ ॥ एक लख एक सहस्र दीये, पाठकने दीनार लाल रे ॥ शासनदेवता नारीने, जिनप्रतिमा दीये सार लाल रे ॥ दा० ॥ १७ ॥ कहे दवदंतीने एहवुं, सोलमा श्रीजिन शांति लाल रे ॥ भावी जिनप्रतिमा अछे, पूजो धरी मन खांत लाल रे ॥ दा० ॥ १८ ॥ इम कही अदृश्य ते थइ, प्रतिमा लेइ तेह लाल रे ॥ हर्षित वदने ते नमी, तुरत आवे निज गेह लाल रे ॥ दा० ॥ १९ ॥ सखीउंमां रमती थकी, योवन पावन पामी लाल रे ॥ पर्वते लावएयजल तणी, मदन खेलणनुं ठाम लाल रे ॥ दा० ॥ २० ॥ त्रीजे अधिकारे कहे, बीजे खंडे ढाल लाल रे ॥ दशमी उत्तमविजयनो, पद्मविजय सुविशाल लाल रे ॥ दा० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिन दवदंती पिता, देखी योवन वाल ॥ तस विवाहने कारणे, करे ते सवले भाल ॥ १ ॥ पण तस सरिखो नवि जड्यो, चिंतातुर ते राय ॥ वरस अढारनी सा थइ, पण तस वर नवि थाय ॥ २ ॥ कन्या महोटी घर थइ, तस स्वयंवर ते युत्त ॥ कोइ पुरुष एम सांजली, आवी रायने उत्त ॥ ३ ॥ स्वयंवरमंमप मांमीयो, बहु राजा आवंत ॥ तरुणवयी बहु राजसुत, ऋद्धिवंत गुणवंत ॥ ४ ॥ निषध राय पण आवीयो, कौशल देश अधिप ॥ नल कुंबेर सुत साथ लही, हर्ष लही अति खिप्प ॥ ५ ॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

॥ देशी नाखीना गीतनी ॥ जे जे आव्या राजवी, दीये सहुने सत्कार ॥ राजन जी ॥ पालक नाम विमान ज्युं, मंमप कीध उदार ॥ राजन जी ॥ वात सुणो विवाहनी, वात कहां ठां, हर्ष धरां ठां, जाणो पुण्यनो खेल ॥ राजन जी ॥ वात० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ मांचा मांड्या अति भला, मानुं देवविमान ॥ राजन जी ॥ शक्र सामानिकनी परे, दीपे तेह राजान ॥ रा० ॥ वा० ॥ २ ॥ केइक कमलक्रीमा करे, कुसुमकंदुक केइ सार ॥ ॥ रा० ॥ काम समान स्वरूपथी, दीपे तास देदार ॥ रा० ॥ वा० ॥ ३ ॥ दवदंती आवी तिहां, वर वरवाने हेत ॥ रा० ॥ प्रतिहारी बहु दाखवे, राय तणा संकेत ॥ रा० ॥ वा० ॥ ४ ॥ पण मनमां कोइ नवि रुच्यो, अनुक्रमे स्तवतां तास ॥ रा० ॥ ॥ कोशल देशनो भूपति, नामे निषध ते खास ॥ रा० ॥ वा० ॥ ५ ॥ एहनो सुत नल नामथी, महा बलवंतो जेह ॥ रा० ॥

कुवेर अनुज एहनो अछे, वर जाणी गुणगेह ॥ रा० ॥ वा० ॥ ६ ॥ वरमाला तव कुंवरी, नल महाबल गले थाप ॥ रा० ॥ वाणी थइ आकाशमां, वर वस्यो रुमो आप ॥ रा० ॥ वा० ॥ ७ ॥ धूमकेतु परे ऊठीयो, कृष्ण राय कुमार ॥ रा० ॥ खड्ग लेइने इम कहे, मूक मूक एह नार ॥ रा० ॥ वा० ॥ ८ ॥ घाली फोकट माल ए, दवदंतीए तुज ॥ रा० ॥ केम तुं परणे सह जमां, वलीया बेठा मुज ॥ रा० ॥ वा० ॥ ९ ॥ नीमसुता मूको हवे, नहींतर करो संग्राम ॥ रा० ॥ कृष्ण राय जीत्या विना, केम लेइ जाशो धाम ॥ रा० ॥ वा० ॥ १० ॥ तव नल मन हसतो कहे, खेद करे केम मूढ ॥ रा० ॥ दवदंतीए मुजने वस्यो, केम न विचारे मूढ ॥ रा० ॥ वा० ॥ ११ ॥ परनारीने इछतां, तुजने केम कल्याण ॥ रा० ॥ एम वास्यो पण नवि रह्यो, तव कस्युं खड्ग ते पाण ॥ रा० ॥ वा० ॥ १२ ॥ नल ते अनल परे थयो, दीसे अति विकराल ॥ रा० ॥ नल ने कृष्ण राजा तणां, अनीक ते थयां विसराल ॥ रा० ॥ वा० ॥ १३ ॥ दवदंती मन चिंतवे, धिग् धिग् मुजने आंही ॥ रा० ॥ क्षय थाये मुज कारणे, पुण्यहीन हुं प्राही ॥ रा० ॥ वा० ॥ १४ ॥ जो हुं दृढ जिनशासने, तो थाउं ए शांत ॥ रा० ॥ जय थाये नल कुमरनो, दोय कटक सुखशात ॥ रा० ॥ वा० ॥ १५ ॥ इम कही कलश पाणी तणुं, लेइ छांटे त्रण वार ॥ रा० ॥ कृष्ण राय तव तेम थयो, जेम निर्वात अंगार ॥ रा० ॥ वा० ॥ १६ ॥ शासनदेवी प्रनावथी, कृष्ण राय तरवार ॥ रा० ॥ पाकुं फल जेम डुम थकी, हेठी पडी तेणी वार ॥ रा० ॥ वा० ॥ १७ ॥ कृष्ण राय चिंते इस्युं, नहीं सामान्य ए कोय ॥ रा० ॥ ए तो योग्य छे वंदवा, देव सान्निध्य जस होय ॥ रा० ॥ वा० ॥ १८ ॥ करकज जोमी इम कहे, तुं मुज वंदवा योग्य ॥ रा० ॥ इणी परे कृष्ण ते बोलतो, धरी मनमां शुन योग ॥ रा० ॥ वा० ॥ १९ ॥ करी विवाह मनोछव तिहां, सहुने विसर्जे राय ॥ रा० ॥ हय गय रह जरु बहु दीये, करमोचनने ठाय ॥ रा० ॥ वा० ॥ २० ॥ गावे मंगल गोरमी, बांधे कंकण हाथ ॥ रा० ॥ महदेवनी पूजा करे, निषध नीम दोय साथ ॥ रा० ॥ वा० ॥ २१ ॥ महा उत्सव करीने तिहां, करमोचन करी खांत ॥ रा० ॥ नीम विसर्जे निय धने, पुत्र सहित नल। जांत ॥ रा० ॥ वा० ॥ २२ ॥ दवदंतीने शीखवे, मात पिता धरी नेह ॥ रा० ॥ आपदे पण तजीये नहीं, ढाया परे पतिदेह ॥

॥ रा० ॥ वा० ॥ २३ ॥ बेइ आणा माय तायनी, रथमां बेसे तेह ॥ रा० ॥ कोशला सन्मुख चालीयो, मनमां धरी निज गेह ॥ रा० ॥ वा० ॥ २४ ॥ जल आशय आवे जिहां, कर्दम शेष रहंत ॥ रा० ॥ धूले गगन ते गाइयुं, बीजी धरा मानुं हुंत ॥ रा० ॥ वा० ॥ २५ ॥ बीजे खंडे अति जली, कही त्रीजे अधिकार ॥ रा० ॥ ढाल अग्यारमी सांजलो, पद्म कहे सुखकार ॥ रा० ॥ वा० ॥ २६ ॥ सर्व गाथा ॥ ३२ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ मारग हवे इण अवसरे, अर्क अस्तंगत थाय ॥ तम व्याप्युं सहु लोकमां, तिहां नवि कांइ देखाय ॥ १ ॥ पण निज पुर जावा तणी, इछा अधिकी थाय ॥ पण आलोक विना थया, परवश सघला जाय ॥ २ ॥ नवि स्वजनी मालिम पडे, जल पण नवि देखाय ॥ गर्त्ता वृक्ष अलक्ष सहु, मानुं चोरिंद्रिय थाय ॥ ३ ॥ नल दवदंतीने कहे, जालतिलकथी आज ॥ सहुने अजुवालुं करो, ए महोटुं अम काज ॥ ५ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ देशी रसीयानी ॥ दवदंती निज जाल प्रमार्जती, दूर थयो अंधकार ॥ राजेसर ॥ जालतिलक आदित्य परे तपे, हुउं प्रकाश तिवार ॥ राजेसर ॥ १ ॥ पुण्य तणां फल देखो इणी परे ॥ ए आंकणी ॥ सहु सुखमां हवे आगल चालीया, तव मुनिवर तिहां दीठ ॥ रा० ॥ मेरु परे काउस्सग मांहि रह्या, सही उपसर्ग उकिठ ॥ रा० ॥ पु० ॥ २ ॥ तव नल कुमार कहे निज नारने, करो दर्शन ऋषिराज ॥ रा० ॥ आठ मांहि प्रसंगे फल थयुं, सारो आतमकाज ॥ रा० ॥ पु० ॥ ३ ॥ मदमातो करिवर निज गातने, घसतो वृक्षनी भ्रांत ॥ रा० ॥ तस मदगंधथी भ्रमर ते आवीया, पण मुनिवर अति शांत ॥ रा० ॥ पु० ॥ ४ ॥ पुरव पुण्यथी ए मुनि पामीया, नल ते निरुपम राजान ॥ रा० ॥ पुत्र परिवृद सहित सेवा करे, जगत नाथ मान ॥ रा० ॥ पु० ॥ ५ ॥ नल कुबेर बेहु भ्रात धर्मी तिहां, करी उपसर्ग ते दूर ॥ रा० ॥ करे प्रशंसा हर्ष धरी घणा, [illegible]ग्या पुण्यपडूर ॥ रा० ॥ पु० ॥ ६ ॥ अनुक्रमे कोशला नयरीने ढुकडा, [illegible]ता नल कहे नाम ॥ रा० ॥ दवदंती सुणी कोशला नगरी, जिनचैत्य उद्दाम ॥ रा० ॥ पु० ॥ ७ ॥ दवदंती चिंते धन्य हुं थइ, नल

साधो भरतार ॥ रा० ॥ जास प्रसादे चेतनने वंदशुं, नित नित हर्ष अपार ॥ रा० ॥ पु० ॥ ८ ॥ शुभ दिवसे पुरमां प्रवेश करी, दंपती करे हवे केल ॥ रा० ॥ कोइ दिन हिंचोले विहुं हिंचतां, नव नव खेलतां खेल ॥ रा० ॥ पु० ॥ ए ॥ कोइ दिन धम्मिल गुंथे नारीनो, कुसुम सुगंध ते धार ॥ रा० ॥ कोइ दिन सोगठे ने पाशे रमे, तूर वजावे किवार ॥ ॥ रा० ॥ पु० ॥ १० ॥ अवसर लही एकांते कोइ दिने, नल दवदंतीनी पास ॥ रा० ॥ नाटक तेह करावे हर्षशुं, नव नव रीति विलास ॥ रा० ॥ ॥ पु० ॥ ११ ॥ एक दिन निषध राजा नल कुमरने, थापी राज्यनो भार ॥ रा० ॥ युवराजे थापे लघु पुत्रने, आप लीये व्रत सार ॥ रा० ॥ पु० ॥ ॥ १२ ॥ निज प्रजा पाले दिने दिने नृपति, लोक सुखे तस सुख ॥ रा० ॥ नल राजा पण तस जो दुःख होये, तो नलने होय दुःख ॥ रा० ॥ पु० ॥ ॥ १३ ॥ एक दिन राजा पूछे मंत्रीने, न्यून अछे मुझ कांय ॥ रा० ॥ मंत्री कहे तव सांभलो स्वामी जी, जेह तुमारो रे ताय ॥ रा० ॥ पु० ॥ ॥ १४ ॥ भरतमां त्रीजा अंशनो अधिपति, ताहरो तात ते जाण ॥ रा० ॥ ॥ तुं तो सकल भरतने भोगवे, तात अधिक गुणखाण ॥ रा० ॥ पु० ॥ ॥ १५ ॥ योजन शत बे जाणो इहां थकी, तक्षशिलापुर गाम ॥ रा० ॥ नाम कदंब अछे महाराजीयो, माने आण न स्वाम ॥ रा० ॥ पु० ॥ १६ ॥ इम सांभली ते दूतने मोकल्यो, पण नवि मानी रे आण ॥ रा० ॥ करवा रण ते साथे चालीयो, युद्ध करे निज पाण ॥ रा० ॥ पु० ॥ १७ ॥ तेह कदंब नृप मनमां चिंतवे, नवि जीतुं इण गाम ॥ रा० ॥ जो जीवतो नासुं हवे इहां थकी, तो मुझ व्रतशुं रे काम ॥ रा० ॥ पु० ॥ १८ ॥ इम चिंतीने नाठो तिहां थकी, लीधो संयमभार ॥ रा० ॥ हवे नल राय कदंब ख-मावतो, शिर धूणावे तिण वार ॥ रा० ॥ पु० ॥ १ए ॥ अनुक्रमे पहोतो नरपति तिहां थकी, कोशला नयरीए राय ॥ रा० ॥ अरध भरतनो अधि-पति रुयडो, वासुदेव परे थाय ॥ रा० ॥ पु० ॥ २० ॥ त्रीजे अधिकारे ए बारमी, बीजे खंडे रे ढाल ॥ रा० ॥ उत्तमविजयनो पद्मविजय कहे, पुण्यथी मंगलमाल ॥ रा० ॥ पु० ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ ३५५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुलमां अंगारा समो, कुबेर अनुज ते जाण ॥ छल खोले नल राय;

नां, व्यंतर परे तिण गाम ॥ १ ॥ हवे एक दिन नल रायने, द्यूत रमणनी टेव ॥ न्यायवंत पण उपनी, दुःखदायी ततखेव ॥ २ ॥ लागे गुणवंता भणी, कलंक एकेकुं आय ॥ चंद्र कलंकी कमलने, कंटक लाग्या जाय ॥ ३ ॥ सागरमां खारापणुं, चंदन पादपे नाग ॥ होय जरा श्रीरलने, निर्धन पंडित लाग ॥ ४ ॥ कृपणपणुं धनवंतने, हिमगिरि लाग्यो गार ॥ पालक पुत्र ते कृष्णने, उपनो कुल अंगार ॥ ५ ॥ श्रेणिकने कोणिक थयो, उग्रसेनने कंस ॥ मल्लिनाथ स्त्री उपना, उत्तम कुल जशवंत ॥ ६ ॥ ते माटे नल रायने, द्यूत रमणनी टेव ॥ नित प्रत्ये ते नवि मटे, सुर जस करता सेव ॥ ७ ॥ एकसो आठ ते बुद्धनी, हती रावणने माल ॥ तव एके नवि संपडी, जब आव्यो विटण काल ॥ ८ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ देशी मन वसीयानी ॥ कुवेर मनमां चिंतवे रे, जीतुं एहनुं राज्य रे ॥ सुणो भविया ॥ पण नवि जय पामे किमे रे, करत क्रिया जय काज रे ॥ १ ॥ दुःख पवियां ॥ एक दिन भावी भावथी रे, नल हार्यो देवजोग रे ॥ सुण ॥ अनुकूल अक्ष पडे नहीं रे, लोक धरे मन शोग रे ॥ दुःण ॥ २ ॥ कुवेर मारे सांगठी रे, नलनी वारंवार रे ॥ सुण ॥ गाम खर्वट खेट हारीयो रे, अनुक्रमी हार्यो सार रे ॥ दुःण ॥ ३ ॥ सूके सरोवर जिणी परे रे, तेम सूकाणो तेह रे ॥ सुण ॥ लोक विषाद करे घणो रे, असमंजस जोइ एह रे ॥ दुःण ॥ ४ ॥ कुवेर मन हरखे घणुं रे, देखी आपनी जीत रे ॥ सुण ॥ लोक तो नलनो रागीयो रे, करे हाकार ज्युं गीत रे ॥ दुःण ॥ ५ ॥ तेह सुणी आवी तिहां रे, दवदंती तिण वार रे ॥ सुण ॥ इणी परे कहे कर जोडीने रे, मूको ए व्यवहार रे ॥ दुःण ॥ ६ ॥ धन न लेवो साहिबा रे, कहुं हुं वारंवार रे ॥ सुण ॥ अनुजने हाथे आपीये रे, स्वामी राज्य उदार रे ॥ दुःण ॥ ७ ॥ पण नवि इणी परे कीजीये रे, जेहथी अपजश थाय रे ॥ सुण ॥ अपलक्षण महोटुं कह्युं रे, लखमी एहथी जाय रे ॥ दुःण ॥ ८ ॥ द्युत रमतां तुने पानगमे रे, पाम्या राज्य विशाल रे ॥ सुण ॥ ते नुम हाथथी साहिबा रे, ते थाय विसराल रे ॥ दुःण ॥ ९ ॥ मदमाता गजनी परे रे, नवि माने ते वण रे ॥ सुण ॥ दवदंती रुदनां घणां रे, कहे सहुने सुणो लपण रे ॥ दुःण ॥ १० ॥ नलने वारो द्युतथी रे, नव सहु वारे नास रे ॥ सुण ॥ पण नवि वार्यो

ते रहे रे, हार्यो सहु आवास रे ॥ डुः० ॥ ११ ॥ अंतेउर सवि हारीयो रे, दव- दंती पण ताम रे ॥ सु० ॥ आजरणादिक अंगथी रे, उतारे तिण गाम रे ॥ डुः० ॥ १२ ॥ ते पण सहु हारी रह्यो रे, कुबेर बोल्यो त्यांहि रे ॥ सु० ॥ राज्य थकी हवे नीकलो रे, जार्उ मन माने ज्यांहि रे ॥ डुः० ॥ १३ ॥ तव नल राजा नीकल्या रे, मूकी राज्य जंमार रे ॥ सु० ॥ दवदंती साथे थइ रे, देवर बोले तिवार रे ॥ डुः० ॥ १४ ॥ में तुजने जीती अछे रे, जाण नहीं देउं कोय रे ॥ सु० ॥ अंतेउर मांहे रहो रे, इम कहे कुबेर सोय रे ॥ डुः० ॥ १५ ॥ मंत्री सामंत मली कहे रे, कुबेरने तिणी वार रे ॥ सु० ॥ दव- दंती तो महासती रे, मत छेडो ए लगार रे ॥ डुः० ॥ १६ ॥ जो तुमे हरवी रालशो रे, तो नवि होशे कल्याण रे ॥ सु० ॥ वाली करशे जस्मने रे, ए सती गुणखाण रे ॥ डुः० ॥ १७ ॥ करशे अनरथ ए घणो रे, कोप थशे मन मांहि रे ॥ सु० ॥ एहने तुमे आदर करी रे, करो अतिहि उत्साह रे ॥ डुः० ॥ १८ ॥ गाम नगर आपो वली रे, मत करो तुमे अपमान रे ॥ सु० ॥ ते तो आपनुं सहु रहुं रे, पण कांय संबल दान रे ॥ डुः० ॥ १९ ॥ आपो रथ एक सारथी रे, इम मन लावो शान रे ॥ सु० ॥ आखर तुम अग्रज अछे रे, देह सुजो- मल वान रे ॥ डुः० ॥ २० ॥ इणी परे सांजली लोकनां रे, कुबेर वयण रसाल रे ॥ सु० ॥ जीमसुता रथ सारथी रे, कुबेर दीये तिण ताल रे ॥ डुः० ॥ २१ ॥ जरत अर्द्ध लखमी हती रे, ते गइ महारी आज रे ॥ सु० ॥ तो रथनुं कारज नथी रे, इणी परे कहे महाराज रे ॥ डुः० ॥ २२ ॥ तव सर्वे कहे साहिबा रे, आवुं अमे तुम साथ रे ॥ सु० ॥ नल कहे सेवो रायने रे, कुबेर पृथिवीनाथ रे ॥ डुः० ॥ २३ ॥ तव सहु कर जोडी कहे रे, नलने इणी परे वाण रे ॥ सु० ॥ दवदंती सुकुमाल छे रे, तुमे पण राजपने गाण रे ॥ डुः० ॥ २४ ॥ हींडी नहीं शके पायथी रे, मारग विषमे एह रे ॥ ॥ सु० ॥ तडका ताप घणा पडे रे, ऊन्न अग्नि सम जेह रे ॥ डुः० ॥ २५ ॥ ते कारण रथ लीजीये रे, करो सामी सुपसाय रे ॥ सु० ॥ बेसो देवीशुं तुम्हे रे, होय कल्याण सदाय रे ॥ डुः० ॥ २६ ॥ प्रार्थना इणी परे करे रे, बहु प्रधान ते लोक रे ॥ सु० ॥ बेसी रथमां नीकल्यां रे, मनमां धरतां शोक रे ॥ डुः० ॥ २७ ॥ मानुं एक वस्त्र पहेरीयुं रे, स्नानार्थे उजमाल रे ॥ सु० ॥ नागर नागरी सहु रडे रे, देखी नारी जंजाल रे ॥ डुः० ॥ २८ ॥

वीजे खंडे तेरमी रे, ढाल त्रीजे अधिकार रे ॥ सु० ॥ गुरु उत्तमविज
तणो रे, पद्मविजय कहे सार रे ॥ सु० ॥ २९ ॥ सर्व गाथा ॥ ३९२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जातां पुर मांहे घर, दीठो थंभ ते एक ॥ उंचो हाथ ते पांचसें, भारे
ते अतिरेक ॥ १ ॥ कौतुकथी उपानीयो, मानुं हुं इणी जात ॥ नवि जाणे
ए चित्तमां, राज्यभ्रंश दुःख खांत ॥ २ ॥ कदली उपाने यथा, सामज ली-
ला मांहे ॥ नल उपाडे थंभने, आणी मन उत्साह ॥ ३ ॥ पाछो आरोपे
लवी, देखी महाबल तेह ॥ नल पण आपद इम लहे, लोक कहे जुओ एह
॥ ४ ॥ पहेलां महाऋषिए कह्युं, भरत अर्द्धनो स्वाम ॥ नल थाशे मुनिदा-
नथी, इम जन कहे ठाम ठाम ॥ ५ ॥ जे थंभो उपाडशे, ते जाणो परधाण
॥ ए तो आज मल्या सवे, पण न मल्युं एक ठाण ॥ ६ ॥ ए नल रायने
जीवतां, नहीं थाये वीजो राय ॥ एह तो वात भली नहीं, कोण जाणे किम
थाय ॥ ७ ॥ पुण्य वधो नल रायनुं, सुणतां इम जनवात ॥ दवदंती रोतां
थका, रथ अनि जीनो घात ॥ ८ ॥ कोशला मूकी इणी परे, पूछे नल सुणो
नार ॥ किहां जाशुं कहो तव कहे, भीमसुता सुविचार ॥ ९ ॥ आवो पीयर मा-
हरे, तव चाल्यां नल राय ॥ विषम वाट उजाडमां, चाल्यां ते थिर थाय ॥ १० ॥

॥ ढाल चौदमी ॥

॥ राग मारुणी ॥ श्रीसीमंधर साहेब, आगे विनति रे ॥ ए देशी ॥ हवे
आगल जातां मारग मांहि मले रे, वाघ करत धुनकार ॥ झूंका रे झूंका रे
नहीं रूका दीठां थका रे ॥ १ ॥ श्वापद आपददायक दीसे अति घणा रे,
पृथिवी खाता धाय ॥ मानुं रे मानुं रे हाणुं जम पासे जवा रे ॥ २ ॥ सिंहे
मारिन गजदंते दंतुर मही रे, दीसे अति विकराल ॥ पीते रे पीते रे दीसे
दांत नाकण परे रे ॥ ३ ॥ भिल्ल ते यम उपम दीसे अति पाडुआ रे, लेइ
धनुष निज हाथ ॥ आवे रे आवे रे हावे दुःख ने सन्मुखे रे ॥ ४ ॥ केइक
भिल्ल ते नाचे राचे रंगमां रे, मानुं मदिरा पान ॥ कीधा रे कीधा रे दीधा
करस्फोटण घणा रे ॥ ५ ॥ केइक नीर नीर परे वरसे बाणना रे, केइक करे
पोकार ॥ रुंधे रे रुंधे रे युद्ध गज कूनर परे रे ॥ ६ ॥ नल राजा रथथी
तरीया तिहां किणे रे, नागी करी तरवार ॥ जावे रे जावे रे आवे दवदंती
दा रे ॥ ७ ॥ शशला उपर सिंह तणुं कारय नहीं रे, एम कहे नलनारी ॥

नथी रे, ते द्रुम नग रण एह रे॥ पण नवि नल देखुं किहां रे, प्राणवल्लभ मुज जेह रे ॥ ७ ॥ वो० ॥ नवि देखे नल रायने रे, सुपन संजारे ताम रे ॥ अंब समो नल राजीयो रे, राज्य फलादिक ठाम रे ॥ ८ ॥ वो० ॥ राज्यनुं सुख फलस्वाद जे रे, परिजन जाणो ते भृंग रे ॥ वनहाथी मल्यो तेहने रे, उपाड्यो ते रंग रे ॥ ९॥ वो० ॥ वृक्ष थकी पमवुं थयुं रे, ते नल राय वियोग रे ॥ जाणुं ए सुपने करी रे, डुर्लज पतिसंयोग रे ॥ १० ॥ ॥ वो० ॥ महोटे स्वर तिहां रोवती रे, कहे इणी परे मुख वाच रे ॥ आपद लहे नारी यदा रे, धीरज रहे किम साच रे ॥ ११ ॥ वो० ॥ स्वामी केम मुजने तजी रे, नार जणी थइ तुज रे ॥ थाउं प्रसन्न वनदेवता रे, स्वामी देखामो मुज रे ॥ १२ ॥ वो० ॥ धरती मात विवर दीयो रे, पेसुं धरती मांहि रे ॥ नाथ विना नवि रही शकुं रे, नवि पामुं सुख क्यांहि रे ॥ १३ ॥ वो० ॥ आंसुधारा रेमती रे, सिंचे वननां रुंख रे ॥ जल थल आतप ठांहिडे रे, नवि पामे कहीं सुख रे ॥ १४ ॥ वो० ॥ अटवीमां जमतां यका रे, अक्षर देखे ताम रे॥ वस्त्र अंचले हरखे तदा रे, चिंते मनमां आम रे ॥ १५ ॥ वो० ॥ पियु मन सरोवर हंसली रे, निश्चय तुं हजी आज रे ॥ नहींतर केम लखे अक्षरा रे, मुज पति नल महाराज रे ॥ १६ ॥ वो० ॥ वांची चिंते एहवुं रे, जाउं तातने गेह रे ॥ नाथ वचन ए मानवुं रे, वेये कहुं मन जेह रे ॥ १७ ॥ वो० ॥ वटमारग चाली हवे रे, जोती अक्षर तेह रे ॥ जाणे नल पासे अवे रे, अक्षर तेह गुणगेह रे ॥ १८ ॥ वो० ॥ वाघ उठे खावा घणा रे, दीसे जयंकर रूप रे॥ पासे नवि आवी शके रे, पासे शील अनूप रे ॥ १९ ॥ वो० ॥ फणिधर मणिधर मोटका रे, देखी उपजे त्रास रे॥ पण नवि आवे ढुकमा रे, शील अचल जस पास रे ॥ २० ॥ वो० ॥ मद करता मयंगल घणा रे, दीसे जे अति क्रूर रे॥ सिंह परे नावे ढुकमा रे, जेहने शील सनूर रे ॥ २१ ॥ वो० ॥ इत्यादिक उपद्रव घणा रे, मारग जातां थाय रे ॥ तेहने सहु विलये गयां रे, जेहने शील सखाय रे ॥ २२ ॥ वो० ॥ केश विंधाय कंयरथी रे, तेम रुधिरे जरे पाय रे॥ दव वीहीनी जिम हायणी रे, शीघ्र यइ तेम जाय रे ॥ २३ ॥ वो० ॥ मारगे साथ मल्यो हवे रे, महारिद्धि नरपूर रे ॥ देखीने हर्षित यइ रे, जिम तरक जलपूर रे ॥ २४ ॥ ॥ वो० ॥ पत्तरमी बीजा खंडमां रे, ढाल त्रीजे अधिकार रे ॥ पद्मविजय

कहे शीलथी रे, होवे जय जयकार रे ॥ २५ ॥ थो० ॥ सर्व गाथा ॥ ४३४

॥ दोहा ॥

॥ साथ मांहे भेली थइ, तव आव्या तिहां चोर ॥ रुंध्यो आवी साथने फरता ते अति जोर ॥ १ ॥ बीक होये धनवंतने, निर्धनने शी बीक ॥ बीक साचनापक जणी, जिम जाणुं हुं अलीक ॥ २ ॥ चिंता व्रतवंता जणी, पासलो निरजीक ॥ शीलवंत बीये घणुं, नवि जाय नारी नजीक ॥ ३ ॥ जाय होय तेहनुं सदा, नवि होय तस शुं जाय ॥ देवपणुं हारी करी, जुओ एकेंद्रिय थाय ॥ ४ ॥ ते माटे ए लोकने, लागी महोटी बीक ॥ आसा अवला ासता, आव्या चोर नजीक ॥ ५ ॥ दवदंती कहे सांजलो, न करो बीक गार ॥ कुलदेवी वाणी परे, सहु सांजले तिण वार ॥ ६ ॥

॥ दोहा सोलमी ॥

॥ उठ कलालण जर घडो हे, दारुडारो मूल सुणाय ॥ ए देशी ॥ मुफ वेठां केम लूंटशो हे, इम कहे दवदंती नार ॥ पण नवि जाये तसकरा हे, तव कीधो हुंकार ॥ १ ॥ रायजादी बोले वचन रसाल ॥ ए टेक ॥ तव नाठा ते नसकरा हे, बधिर थयुं सवि वन्न ॥ तेह साथना सहु जना हे, चिंते इणी परे मन्न ॥ २ ॥ रा० ॥ आपणने पुण्ये करी हे, आवी कोइ वनदेवी ॥ चोर थकी राख्या इणे हे. हुंकारे ततखेव ॥ ३ ॥ रा० ॥ प्रणमी सार्थप विनवे हे. केम रणमां फरो मात ॥ कोण नमे ठो ते कहो हे. तव कही घरनी वात ॥ ४ ॥ रा० ॥ सार्थप कहे कर जोडीने हे. नलनारी अम माय .. तस्करथी राख्या वली हे. तिणे तुमे जीवित दाय ॥ ५ ॥ रा० ॥ करी आश्राम रार्वा घरे हे. देवी परे आराध ॥ वर्षा तिण टाणे थइ हे, वरसे वारि अगाध ॥ ६ ॥ रा० ॥ त्रण रात्रि वरस्यो तिहां हे, विरम्यो मेघ तिवार ॥ साथ मूकी आगल गइ हे, दवदंती मनोहार ॥ ७ ॥ रा० ॥ नल वियोगना दिवसथी हे. चोथ नक्त करे नित्त ॥ मंद मंद जातां थका हे, देखे एक ते जीन ॥ ८ ॥ रा० ॥ राक्षस एक दीठो तिहां हे, यम नृपति मानुं पुत ॥ श्याम अमावास्या परे हे, काजल परे जेम नूत ॥ ९ ॥ रा० ॥ खाउं खाउं करतो थको हे. शेषनाग परे तेह ॥ नारी धैर्य धरी कहे हे, आपुं मारी देह ॥ १० ॥ रा० ॥ पण एक माहरी वातडी हे, सांजल तुं थिर थाय ॥ जन्म्या ते मरवा जणी हे, तेहमां बीक न कांय ॥ ११ ॥ रा० ॥ कर्म कर्यां

ते भोगवे हे, प्राणी आपहि एक ॥ तेहमां करत विषाद श्यो हे, इम कहे वचन विवेक ॥ १२ ॥ रा० ॥ बाह्य प्राण हरे माहरा हे, पण नहीं माहरी हाण ॥ रत्नत्रयी जे माहरी हे, ते तो थिर रहे जाण ॥ १३ ॥ रा० ॥ ते माटे तुजने कहुं हे, हुं तुं पारकी नार ॥ मत ठेडो मुजने इहां हे, इम तुज नहीं श्रीकार ॥ १४ ॥ रा० ॥ धैर्य वचन ते सांजली हे, हरख्यो तेह पलाद ॥ तूठो तुं तुज उपरे हे, कहे मत कर विषवाद ॥ १५ ॥ रा० ॥ दव दंती कहे सांजलो हे, जो तूठो महाजाग ॥ तो कहो माहरा स्वामीनो हे, कब संयोगनो लाग ॥ १६ ॥ रा० ॥ बारे वरसे ताहरो हे, मलशे नल जरतार ॥ पीयरमां रहेतां थका हे, यक्ष कहे एह प्रकार ॥ १७ ॥ रा० ॥ जो तुं कहे तो ताहरा हे, मूकुं तातने गेह ॥ तव ते दवदंती कहे हे, आणी अतिहि सनेह ॥ १८ ॥ रा० ॥ वात कही स्वामी तणी हे, तिणे कस्युं सघलुं काम ॥ पर नर साथे नवि घटे हे, जावुं मुजने धाम ॥ १ए ॥ रा० ॥ ते कारण जाउं सुखे हे, तव निज परगट रूप ॥ देखाडी दवदंतीने हे, थयो अदृश्य स्वरूप ॥ २० ॥ रा० ॥ निज जरतार वियोगडे हे, बार वरसने प्रमाण ॥ जाणी अनिग्रह इम करे हे, त्रिकरण शुद्ध सुजाण ॥ २१ ॥ रा० ॥ वस्त्र तांबूल नूषण वली हे, विगय विलेपन सार ॥ करे निषेध नल जिहां मले हे, सती शिरोमणि सार ॥ २२ ॥ रा० ॥ एक गिरिनी गुफा लही हे, करती तिहां निवास ॥ माटीमय जिन शांतिनी हे, मूरति करे ते उल्लास ॥ ॥ २३ ॥ रा० ॥ खूणे थापी तेहने हे, विरचे पूज उदार ॥ त्रण टंक जिनवर तणां हे, चोथनक्त तप सार ॥ २४ ॥ रा० ॥ शीले उपद्रव सवि मटे हे, शीले संग सुजाण ॥ अटवीमां सान्निध करे हे, शीले कोडि कल्याण ॥ ॥ २५ ॥ रा० ॥ बीजे खंडे सोलमी हे, ढाल त्रीजे अधिकार ॥ पंडित उत्तम विजयनो हे, पद्मविजय कहे सार ॥ २६ ॥ रा० ॥ सर्व गाथा ॥ ४ए६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे सार्थप निज साथमां, नवि देखे ते नार ॥ पगलांना अनुसारथी, आव्यो तिणहीज गार ॥ १ ॥ तेह गुफामां आवीयो, दवदंतीनी पास ॥ दवदंती पूजा करे, आणी अंग उल्लास ॥ २ ॥ कुशल क्षेम जाणी करी, दवदंतीने ताम ॥ सार्थवाह हर्षित थयो, देखी पूजा गम ॥ ३ ॥ पूजा ते पूरी करी, पूछे कुशलनी वात ॥ तेहशुं मीठी वाणीए, नाखे निज अव-

दात ॥ ४ ॥ केइ तापस आव्या तिहां, पासे वसता जेह ॥ अंबुद वरसे आकरो, ऊठे शब्द अछेह ॥ ५ ॥ किहां जइये तापस कहे, नहीं आपण आधार ॥ आपदनी परे दोमता, देखे नारी तिवार ॥ ६ ॥ कहे मत बीहो वापमा, इम कीधो आश्वास ॥ दवदंती नारी करे, कुंडालुं चिहुं पास ॥ ७ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥ राय कहे राणी प्रते ॥ सुणो कामिनी ॥ ए देशी ॥ सतीया मांहि शिरोमणि ॥ जयवंती जी ॥ दवदंती ते नार ॥ गुणवंती जी ॥ शीलवंती जो हुं अछुं ॥ ज० ॥ तो ए कुंमथी वार ॥ गु० ॥ १ ॥ वर्षो पण मांहे नहीं ॥ ज० ॥ इणी परे चाल्युं जाम ॥ गु० ॥ तव नवि बुंद पडे तिहां ॥ ज० ॥ वरसे बाहिर गाम ॥ २ ॥ गु० ॥ तब सहु तापस चिंतवे ॥ ज० ॥ ए वनदेवी कोय ॥ गु० ॥ सार्थप पूछे नारीने ॥ ज० ॥ कोण देव ए होय ॥ ३ ॥ गु० ॥ ते कहे परमेश्वर तणी ॥ ज० ॥ मूरति अति मनोहार ॥ गु० ॥ क्षुद्र जीव नवि उपद्रवे ॥ ज० ॥ एह प्रसादे ए वार ॥ ४ ॥ गु० ॥ धर्म सुणी तस मुख थकी ॥ ज० ॥ अंगीकरे धरी प्रेम ॥ गु० ॥ कामधेनु तुं धर्मनी ॥ ज० ॥ सार्थप नाखे एम ॥ ५ ॥ गु० ॥ तापस पण तस वचनथी ॥ ज० ॥ करता अंगीकार ॥ गु० ॥ मूकी तापसधर्मने ॥ ज० ॥ जैनधर्म जग सार ॥ ६ ॥ गु० ॥ खीर पान लीधा पछी ॥ ज० ॥ कांजी कुण करे पान ॥ गु० ॥ जैनधर्म लीधा पछी ॥ ज० ॥ अन्य धर्म कुण मान ॥ ७ ॥ गु० ॥ सार्थवाह ते थानके ॥ ॥ ज० ॥ नगरी वासे त्यांहि ॥ गु० ॥ तापस बोधने कारणे ॥ ज० ॥ तापसपुर उत्साह ॥ ८ ॥ गु० ॥ शांतिनाथ जिनवर तणुं ॥ ज० ॥ चैत्य करावे शेठ ॥ गु० ॥ शेठ तापस सहु इम कहे ॥ ज० ॥ जैन थकी सहु हेठ ॥ ९ ॥ ॥ गु० ॥ एक दिन रात समे हवे ॥ ज० ॥ गिरिशिर उपर जोय ॥ गु० ॥ सुर आवता जावता ॥ ज० ॥ अजुआलुं तिहां होय ॥ १० ॥ गु० ॥ जय जय शब्द ते सांजले ॥ ज० ॥ दवदंती तिण वार ॥ गु० ॥ जोवा गइ गिरि उपरे ॥ ज० ॥ तापस शेठ परिवार ॥ ११ ॥ गु० ॥ ते थानक सिंहकेशरी ॥ ज० ॥ पाम्यो केवलज्ञान ॥ गु० ॥ करवा महोत्सव तेहनो ॥ ज० ॥ आव्या सहु तिण थान ॥ १२ ॥ गु० ॥ पाय प्रणमी मुनिवर तणा ॥ ज० ॥ बेठा निज निज ठाम ॥ गु० ॥ देशना दीधी तिण समे ॥ ज० ॥ नवि उपगारने काम ॥ १३ ॥ गु० ॥ दुर्लज नरजव पामीने ॥ ज० ॥ न करो को

परमाद ॥ गु० ॥ दवदंती मुखने कहे ॥ ज० ॥ करी रुमो संवाद ॥ १४ ॥ गु० ॥ कुलपतिने केवली कहे ॥ ज० ॥ दवदंती ए नार ॥ गु० ॥ धर्मे कह्यो तिम जाणजो ॥ ज० ॥ एह सती निर्धार ॥ १५ ॥ गु० ॥ महोटो महिमा एहनो ॥ ज० ॥ तिणे वाख्यो घन घोर ॥ गु० ॥ हुंकारे करी त्रासव्या ॥ ज० ॥ डुर्जय ते महा चोर ॥ १६ ॥ गु० ॥ देव एक आव्यो तिहां ॥ ज० ॥ वंदे केवली पाय ॥ गु० ॥ दवदंतीने एम कहे ॥ ज० ॥ सांजल तुं सुखदाय ॥ १७ ॥ ॥ गु० ॥ शिष्य हतो तापस तणो ॥ ज० ॥ आ वनमां हुं सार ॥ गु० ॥ कूर्पर नाम सोहामणुं ॥ ज० ॥ डुर्धर तपनो कार ॥ १८ ॥ गु० ॥ पंचाग्निने साधतो ॥ ज० ॥ पण तापस हुं एह ॥ गु० ॥ पूजा स्तवना नवि करे ॥ ज० ॥ क्रोध आव्यो मुऊ तेह ॥ १९ ॥ गु० ॥ तेह थानक मूकी गयो ॥ ज० ॥ डुःख लेहेतो तिण वार ॥ गु० ॥ क्रोधे काल करी थयो ॥ ज० ॥ महा विषधर डुःखकार ॥ २० ॥ गु० ॥ एक दिन श्रीअरिहंतने ॥ ज० ॥ रुसवा दोड्यो ताम ॥ गु० ॥ तें नवकार सुणावीयो ॥ ज० ॥ मुऊ श्रवणे गुणकाम ॥ २१ ॥ गु० ॥ दरमां पेठो हुं वली ॥ ज० ॥ एक दिन सुणीया कान ॥ गु० ॥ तापस आगल जाखती ॥ ज० ॥ जीवाजीवनां थान ॥ २२ ॥ गु० ॥ जीवहिंसाथी डुःख लहे ॥ ज० ॥ इम सांजली तुऊ वाण ॥ गु० ॥ में मन मांहि चिंतव्युं ॥ ज० ॥ हिंसावंत हुं जाण ॥ २३ ॥ गु० ॥ महापापी हुं सरजीयो ॥ ज० ॥ नाग तणो अवतार ॥ गु० ॥ शी गति माहरी ॥ ज० ॥ इहापोह तिण वार ॥ २४ ॥ गु० ॥ जातिसमरण उपनुं ॥ ज० ॥ तापस देखी मुऊ ॥ गु० ॥ वैराग्ये अणसण मह्युं ॥ ज० ॥ वाणी लही में तुऊ ॥ २५ ॥ गु० ॥ सौधर्मे सुर हुं थयो ॥ ज० ॥ तपनुं फल नवि जाय ॥ गु० ॥ कुसुमसमृद्ध विमानमां ॥ ज० ॥ नाम कुसुमप्रन थाय ॥ २६ ॥ गु० ॥ सहु ताहरो महिमा अछे ॥ ज० ॥ अवधिज्ञानथी जाण ॥ गु० ॥ धर्मपुत्र हुं ताहरो ॥ ज० ॥ उपगारी तुऊ वाण ॥ २७ ॥ ॥ गु० ॥ स्वामी सहु तापस प्रते ॥ ज० ॥ कहे तापसने एम ॥ गु० ॥ श्रावकव्रत पालो तुमे ॥ ज० ॥ मनमां धारी प्रेम ॥ २८ ॥ गु० ॥ पूरव नव जे नागनुं ॥ ज० ॥ खांतुं लेइ शरीर ॥ गु० ॥ वृक्ष उपर जइ टांगीयुं ॥ ॥ ज० ॥ इणी परे कहे महावीर ॥ २९ ॥ गु० ॥ कोप करे जे मानवी ॥ ॥ ज० ॥ लहे एहवा अवतार ॥ गु० ॥ जेम कूर्पर पूरव नवे ॥ ज० ॥

लह्यो हीणो जमवार ॥ ३० ॥ गु० ॥ बीजा खंम मांहे कही ॥ ज० ॥ ढाल त्रीजे अधिकार ॥ गु० ॥ सत्तरमी सोहामणी ॥ ज० ॥ पद्मविजय सुखकार ॥ ३१ ॥ गु० ॥ सर्व गाथा ॥ ५३४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुलपति समकितधर पुरा, वली पाम्यो वैराग ॥ केवलीने प्रणमी करी, इम नाखे महानाग ॥ १ ॥ स्वामी महाव्रत दीजीये, कहे केवली नगवान ॥ महारा गुरुजी आपशे, तुम्ह दीक्षानुं दान ॥ २ ॥ जशोजद्र नामे रुयमा, सूरीश्वर गुणगेह ॥ ममत्व नहीं जस देहनुं, व्रत आपे तुम तेह ॥ ३ ॥ तव कुलपति महामति कहे, विलय पामी एम ॥ दीक्षा लीधी स्वामी जी, तस कारण कहो केम ॥ ४ ॥ केवली कहे तुमे सांजलो, जे कहुं हुं अवदात ॥ आयु अथिरपणुं वली, संसारे दुःखव्रात ॥ ५ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥

॥ करुवां रे फल ठे क्रोधनां ॥ ए देशी ॥ कोशला नयरीए राजीयो, कुबेर इणे नामे ॥ तेहनो पुत्र हुं उपन्यो, आव्यो यौवन गामे रे ॥ १ ॥ आयु अथिर जवि प्राणीया ॥ ए आंकणी ॥ परणी कन्या एकदा, वलीयो घर ताहनो ॥ सूरि जशोजद्र देखीया, शोजन जस नामो रे ॥ २ ॥ आ० ॥ पद-कज प्रणम्यो तेहनां, दीधो मुफ उपदेश ॥ में पूछ्युं अवसर लही, कहो आयु मुफ शेष रे ॥ ३ ॥ आ० ॥ देइ उपयोग गुरु कहे, पांच दिवस तुज शेष ॥ सुणी विलखो थइ फूरतो, तव गुरु कहे उपदेश रे ॥ ४ ॥ आ० ॥ मत कर आरत तुं हवे, सांजल माहरी वाण ॥ चरण दिवस एक अनुज-वे, तोपण होय शिवगण रे ॥ ५ ॥ आ० ॥ पांच दिवस हजी ताहरे, ले तुं संयमजार ॥ तव में चारित्र आदर्युं, शिवसुखनुं दातार रे ॥ ६ ॥ आ० ॥ गुरु उपदेशथी आवीयो, विचरंतो इण गामे ॥ शुक्लध्यानथी क्षय कर्यां, घातीकर्म ए ठामे रे ॥ ७ ॥ आ० ॥ आवरण सहु दूरे थयां, प्रगट केवलज्ञाने ॥ लोकालोकने देखतो, विचरुं तुं इण थाने रे ॥ ८ ॥ आ० ॥ एम कही योगने रुंधीया, जव उपमाही कर्म ॥ क्षांत करी शिवमां गया, जिहां शाश्वत हुआं शर्म रे ॥ ९ ॥ आ० ॥ देव दहन करे तस वपु, हवे कुलपति लीये दीक्षा ॥ दवदंती पण एम कहे, मुफने दीयो गुरु शिक्षा रे ॥ ॥ १० ॥ आ० ॥ तव जशोजद्र गुरु कहे, नल साथे तुज जोग ॥ जोगववा

बहु दिन लगे, तेणे नहीं व्रतयोग रे ॥ ११ ॥ आ० ॥ सूरीसर हवे उतरी, तापसपुर मांहि आवे ॥ चैत्य तणी प्रतिष्ठा करे, समकित बीजने वावे रे ॥ १२ ॥ आ० ॥ सात वरस एम वही गयां, तेह गुफा मांहि रहेतां ॥ एक दिन श्रवणे सुणे इस्युं, नल दीठो हतो कहेतां रे ॥ १३ ॥ आ० ॥ दवदंती तिहां नीकली, सांजली एहवी वाण ॥ चोकफेर जोयुं फरी, दीठो नहीं किण ठाण रे ॥ १४ ॥ आ० ॥ तेह गुफा दूरे रही, शब्दकथक नवि मलीयो रे ॥ उजय भ्रष्ट नारी हवे, अटवीमां दुःख वलीयो रे ॥ १५ ॥ आ० ॥ रुदन करे ते महासती, किहां जाउं शुं करीये ॥ ते गुफा सन्मुख थइ, पण दैवे दुःख करीये रे ॥ १६ ॥ आ० ॥ राक्षसी एक आवी तिहां, खाइश तुजने हुं आज ॥ नूखी कूख माहरी अछे, माहरे मांसशुं काज रे ॥ ॥ १७ ॥ आ० ॥ नैमी कहे नल पति विना, जो डर चित्त न होवे रे ॥ हत आशा राक्षसी तणी, थाउं सहु सिद्ध जोवे रे ॥ १८ ॥ आ० ॥ देव गुरु जे जैनना, जैन तणो वली धर्म रे ॥ ते विनु मन नवि मानीउं, जे आपे शिवशर्म रे ॥ १९ ॥ आ० ॥ तो उपद्रव थाउ वेगला, सांजली ते सती वाणी ॥ राक्षसी अदृश्य थइ गइ, सुपन परे तिण ठाण रे ॥ २० ॥ आ० ॥ शील अचल होय जेहनां, तेहने विघन न होवे रे ॥ दवदंती परे जाणजो, ते नवनिधि घर जोवे रे ॥ २१ ॥ आ० ॥ बीजे खंके अढारमी, ढाल त्रीजे अधिकार रे ॥ पंडित उत्तमविजयनो, पद्म कहे जय जयकार रे ॥ २२ ॥ आ० ।

॥ दोहा ॥

॥ पर्वत पासे एक नदी, दीठी पाणी शून्य ॥ तरसी दवदंती हवे, जेहनुं पुण्य अगण्य ॥ १ ॥ सम्यक्दर्शन माहरे, जो चित्तमां थिर होय ॥ तो गंगा परे निर्मलुं, जल प्रगटावो कोय ॥ २ ॥ पाहु प्रहार करे तिहां, इम जाखी ते नारी ॥ क्षीरसमुद्रनी सारिखुं, प्रगट थयुं तिहां वारि ॥ ३ ॥ पाणी पीधुं तिहां कणे, आगल चाली जाय ॥ शील तणा महिमा थकी, सघले मंगल थाय ॥ ४ ॥ शीले संकट सवि टले, शीले रण पुर थाय ॥ शील विना जे मानवी, नाम न को लेवाय ॥ ५ ॥ साप कुसुममाला हुवे, विष ते अमृत थाय ॥ सुरवर नित सेवा करे, शीलवंतनी न्याय ॥ ६ ॥ ते दवदंती महासती, गुणवंती पथ मांहि ॥ शीलवंती वट पामती, वेसंती उत्साह ॥ ७ ॥

॥ ढाल उंगणीशमी ॥

॥ जोबीमा हंसा रे विषय न राचीये ॥ ए देशी ॥ पंथीलोक आव्या इण अवसरे, पूछे नारीने तामो जी ॥ वनमां एकली तुं केम इहां वसे, दव- दंती कहे आमो जी ॥ १ ॥ सांजलो माहरी वात सोहामणी ॥ ए टेक ॥ साथथी चूकी हुं रणमां वसुं, तापसपुर मुज जावो जी ॥ पंथी कहे पश्चिम दिशि जायजे, तुज पुर आवशे गावो जी ॥ २ ॥ सां० ॥ साथ अमारो जातो रहे तिणे, आवी न शकुं साथो जी ॥ अमे अमारा साथमां जायशुं, वारि लेइ निज हाथो जी ॥ ३ ॥ सां० ॥ जो अम साथे आवो मात जी, तो चावो जली जांते जी ॥ इम कही साथे तेमी नारीने, पहोता साथमां खांते जी ॥ ४ ॥ सां० ॥ नामथी ते धनदेव सारथपति, पूछ्या पढी कहे वातो जी ॥ यानक मूको मुजने स्वामी जी, था मुजने सुखशातो जी ॥ ५ ॥ सां० ॥ अचलपुरे अमे जाशुं सांजलो, तुमे पण आवो साथो जी ॥ पुत्री परे वेसारी यानमां, सार्थप ग्रही तस हाथो जी ॥ ६ ॥ सां० ॥ एक दिन साथ पमाव कस्यो तिहां, राते सुएयो नव- कारो जी ॥ सारथवाह सहित ते देखवा, जोवा चाखी उदारो जी ॥ ७॥ ॥ सां० ॥ चैत्यवंदना करतो जावशुं, दीठो श्रावक तामो जी ॥ दवदंती तेहने अनुमोदती, निज गुण परगट कामो जी ॥ ८ ॥ सां० ॥ पट उपर जिन- बिंब आलेखीउं, श्याम वरणयो तेह जी ॥ देखी पूछे दवदंती इस्युं, पूजो कारण केह जी ॥ ९ ॥ सां० ॥ केहनुं बिंब अछे ए मुज कहो, तव कहे श्रावक सारो जी ॥ मल्लिनाथ उंगणीशमा जिनवरु, जावी जस अवतारो जी ॥ १० ॥ सां० ॥ कारणथी पूजा करुं एहनी, तेह सुणो हवे वातो जी ॥ कांचीपुरमां वास ते माहरो, ज्ञात वणिक मुज तातो जी ॥ सां० ॥ ॥ ११ ॥ धर्मगुप्त ज्ञानी गुरु एकदा, विचरंता जयानो जी ॥ समव- सख्या वंदी में पूछीयुं, कुण तीर्थे शिवयानो जी ॥ सां० ॥ १२ ॥ तव ज्ञानी गुरु मुजने इम कहे, मल्लिनाथने वारे जी ॥ प्रसन्नचंद्र राजा थइ सिऊशो, इम मुजने कहे त्यारे जी ॥ सां० ॥ १३ ॥ ते दिनथी पूजुं हुं सुण सती, बिंब करी जिनराजो जी ॥ मुजने वात कहे हवे ताहरी, तव कही नवमुख राजो जी ॥ सां० ॥ १४ ॥ अश्रुपात करी श्रावक कहे, म करो वहेन विषादो जी ॥ तात समो सारथपति एह छे, इम कही वचन

विवादो जी ॥ सां० ॥ १५ ॥ अचलपुरे पहोतो ते अनुक्रमे, हवे मूकीने जाय जी ॥ तृपावंत गइ एक वाविमां, जलदेवी मानुं आय जी ॥ सां० ॥ ॥ १६ ॥ दवदंतीनो पग पकड्यो हवे, गोधाए जल मांहि जी ॥ जव नवकार संजारे तिहां कणे, मूक्यो पग तव त्यांहि जी ॥ सां० ॥ १७ ॥ पग ने वदन पखाळी महासती, आवी वाविने बहार जी ॥ चेटी चंद्रजशा राणी तणी, आवी जरवा वारि जी ॥ सां० ॥ १८ ॥ दवदंतीनुं रूप देखी करी, राणीने कही वातो जी ॥ चंद्रजशा कहे तेडो अम घरे, सांप्रतीये अवदातो जी ॥ सां० ॥ १९ ॥ पुत्रीनी परे तेहने राखशुं, दासी तेडवा जाय जी ॥ वात कहे ऋतुपर्ण राजा तणी, राणी तेडे जेम माय जी ॥ सां० ॥ २० ॥ एकाकी रहेतां तुज दुःख थशे, आवो रायने गेह जी ॥ आवी दवदंती तव ठंलखे, मासी मारी एह जी ॥ सां० ॥ २१ ॥ चंद्रजशा नवि उंलखे तेहने, दीठी पहेलां वालो जी ॥ पण देखीने स्नेह ते उपनो, मोहवशे तिणे तालो जी ॥ सां० ॥ २२ ॥ अश्रुपात मानुं करती तिण समे, श्रम उतारण नीरो जी ॥ किहांथी आवी वत्स मुजने कहे, तव कहे वात जे पीरो जी ॥ सां० ॥ २३ ॥ मुज पति मूकी चाल्यो रातमां, नवि मलीयो मुज तेह जी ॥ तव कहे पुत्री परे मुज घर रहे, दुःख मत दे हवे देह जी ॥ सां० ॥ २४ ॥ बीजे खंडे त्रीजा अधिकारमां, इगुणवीशमी ढालो जी ॥ दवदंती रही राणीने घरे, पद्म कहे सुरसालो जी ॥ सां० ॥ २५ ॥ सर्व गाथा ॥ ५८३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चंद्रयशाने एक धुआ, चंद्रवती इण नाम ॥ कहे एक दिन सुण दीकरी, वात जली एक आम ॥ १ ॥ दवदंती ए दीसती, बहेन सुता अनुहार ॥ पण तस इम आगमननो, संजव नहीं किंवार ॥ २ ॥ ते तो नल राजा तणी, पत्नी छे मनोहार ॥ शत चोआलीश जोयणां, दूर इहांथी धार ॥ ३ ॥ चंद्रयशा पुर बाहिरे, देवे नित इम दान ॥ दीन अनाथ जणी तदा, बांधे पुण्य अमान ॥ ४ ॥ दवदंती कहे एकदा, कहो तो आपुं दान ॥ याचक मुख वेपे करी, स्वामी लहुं कहीं शान ॥ ५ ॥ पूछे सहु जिक्षु प्रते, नर दीठो कोइ जाय ॥ एहवा रूप ने वरणथी, इम दीये दान

सुगाय ॥ ६ ॥ पण को नल राजा तणी, शुद्धि न लाधी क्यांहि ॥ इण अवसर एक वातनी, सांजलजो उत्साही ॥ ७ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥

॥ पिउमा जिन चरणारी सेवा प्यारी मुने लागे ॥ ए देशी ॥ जाइउं जीवितदान देइने, मुऊ कोय राखो करुणा दाखो॥ एक दिन चोर दीगे तिहां वेगां, लोक मल्या तस लाखो ॥ १॥ जा० ॥ हणो हणो इम वाणी उच्चरतां, माथे सुपडुं धारी ॥ निंब कणेर प्रमुखनी माला, कंठे तेहने मारी ॥ २ ॥ जा० ॥ मुंमित शिर करी चोपमी चूनो, वाजंते अति वाजे ॥ कंठे लोइ धरी सहु लोका, इणी परे मुखथी गाजे ॥ ३ ॥ जा०॥ जो जो लोका सघला सुणजो, चोरी करे नर जेह ॥ तेहनो एह हवाल ते करशे, राजा न्यायी एह ॥ ४ ॥ जा० ॥ यष्टि मुष्टि प्रहार करे सहु, केइ करे तस हांसी ॥ केइक कर्मविपाक विचारे, कर्मविपाक अन्यासी ॥ ५ ॥ जा० ॥ कोइ कहे जे एहवा कीधा, तेहवा पाम्यो न्याय ॥ कोइ कहे नहीं फरी कोइ करशे, एहवो महा अन्याय ॥ ६ ॥ जा० ॥ इम वधमंमन देखी पूछे, दवदंती कोटवाल ॥ श्यो अपराध कस्यो ए पुरुषे, जाखे ते तिण ताल ॥ ७॥ ॥ जा० ॥ रत्नकरंमक लीधो एणे, चंद्रवतीनो सारो ॥ चोर कहे सुण तुऊने वेगां, हुं केम पामुं मारो ॥ ८ ॥ जा० ॥ कहे दवदंती बीक म कर तुं, इम कही शीलप्रजावे ॥ बंधन तेहनां त्रूटां सघलां, पाणीने छटकावे ॥ ए॥ ॥ जा० ॥ वात ते पसरी सघले गामे, आवे ऋतुपर्ण राय ॥ दवदंतीने इम मुख जाखे, किम अन्याय ए थाय ॥ १०॥ जा० ॥ दुष्टनिग्रह वली शिष्टने पाले, राजधरम ए दीसे ॥ चोर चोरने पापे मरतां, दोष कहो अम कीसे ॥ ११ ॥ जा० ॥ जो एहनो नवि निग्रह कीजे, तो सहु चोर ते थाय ॥ कहे दवदंती मुऊ देखतां, तोपण केम मराय ॥ १२ ॥ जा० ॥ आव्यो मारे शरणे स्वामी, खमो सघलो अपराध ॥ तव राजा तस्करने जाखे, तुऊने नहींय बाध ॥ १३ ॥ जा० ॥ धर्मधुया ए महारी वाली, तेहने वचने मूक्यो ॥ चोर कहे नहीं एहवुं कीजे, जे चूक्यो ते चूक्यो ॥ १४॥ जा०॥ दवदंतीने नित्य संजारे, चोर ते प्राणनी दाता ॥ एक दिन पूछे चोरने एहवुं, तुऊने छे सुखशाता॥ १५ ॥ जा० ॥ कहांथी आव्यो ने तुं कोण छे, तव इम चोर ते जाखे ॥ तापसपुरमां सार्थपति छे, रुडो वसंत ते आखे

॥ १६ ॥ ना० ॥ तेहनो पिंगल दास हुं जाणो, पण मुक व्यसननी टेव ॥ खात्र खणीने वसंतना घरनो, कोश हर्स्यो ततखेव ॥ १७ ॥ ना० ॥ नाठो ते धन लेइ वेगे, प्राण त्राणने काजे ॥ वाटे चोरे लूंट्यो मुजने, पापी पापे दाजे ॥ १८ ॥ ना० ॥ इहां आवी राजाने सेव्यो, पण डुर्मति नवि नाठी ॥ दूध ग्रहण टेवे मांजारी, नवि देखे शिर लाठी ॥ १९ ॥ ना० ॥ एक दिन चंद्रवती देवीनो, दीठो करंरुक रुडो ॥ लेवाने उजमाल थयो हुं, चोरी व्यसन ठे जूंडो ॥ २० ॥ ना० ॥ पकडीने बांध्यो कोटवाले, जातां तुमने दीठां ॥ देखी तुमने मुज पूरवनां, पाप कस्यां ते नीठां ॥ २१ ॥ ना० ॥ बीजे खंडे वीशमी ढाले, त्रीजे ए अधिकार ॥ उत्तमविजयनो पद्मविजय कहे, शीलथी जय जयकार ॥ २२ ॥ ना० ॥ सर्व गाथा ॥ ६२२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चोर कहे वली सांजलो, तापसपुरनी वात ॥ जे दिनथी मूकी गया, तापसपुर तुमे मात ॥ १ ॥ सार्थवाह ते दिन थकी, जोजन ठंडे मात ॥ आचारिज मुख बहु मली, दे प्रतिबोध विख्यात ॥ २ ॥ सात दिवस जूख्यो रह्यो, जूंजे आठमे दिन्न ॥ लइ नेटणुं एक दिन गयो, कुवेरने आसन्न ॥ ३ ॥ कुवेर त्रूठो तेहने, तापसपुरनुं राज्य ॥ ठत्रादिक आपे जलां, निज सामंत करी साज ॥ ४ ॥ वसंतश्रीशेखर दीधुं, नाम ते बीजुं सार ॥ वाजंते वाजे करी, आव्यो निज पुर गार ॥ ५ ॥ दवदंती कहे चोरने, ल्यो दीक्षा महाजाग ॥ चोर कहे आणा करुं, मात धरी तुम राग ॥ ६ ॥ मुनिवर बे आव्या तिहां, आहार गवेषण काज ॥ प्रतिलाजीने इम कहे, सुणो स्वामी महाराज ॥ ७ ॥ योग्य पुरुष देखो तुमे, तो द्यो स्वामी दीख ॥ जोग्य जाणी हवे मुनिवरु, लेइ तेहनी शीख ॥ ८ ॥ देहरामां जइ तेहवे, दीक्षा आपे तास ॥ मुनिवर विचरंता गया, अन्य गाम सुखवास ॥ ९ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥

॥ सतीय सुजद्रा ॥ ए देशी ॥ जीम राय हवे सांजली, सखि हास्या नल ते राय ॥ परदेशे जमतां थका, सखि किहां किण गामे जाय ॥ १ ॥ एह वात ते अति डुःखनी थइ ए ॥ ए आंकणी ॥ जीवे के नथी जीवतो, सखि खबर नहीं तस कोय ॥ पुष्पदंती ते सांजली, सखि रुदन ते तेहने होय ॥ एह० ॥ २ ॥ आतुरपणुं थयुं नारीने, सखि अश्रु नवि होय दूर ॥ पुष्प-

ती रोवे घणुं, सखि करे विलाप ते जूर ॥ एह० ॥ ३ ॥ हरिमित्र राये
नोकल्यो, सखि ते खोलणने काज ॥ एक वटुक घणुं रुयडो, सखि अचल-
पुरे आव्यो साज ॥ एह० ॥ ४ ॥ पूठे चंद्रजशा हवे, सखि क्षेम कुशलनी
वात ॥ ते कहे कुशल ते सहु अठे, सखि पण एक सुणो अवदात ॥
। एह० ॥ ५ ॥ नल नैमीनी चिंता घणी, सखि यूत प्रमुख कही वात ॥
श्रवणे सांजली नवि शके, सखि दुःख धरे वहु गात ॥ एह० ॥ ६ ॥ करे
विलाप ते अति घणा, सखि जूल्यो वडुउं तेह ॥ आरतियां सहु देखीने, सखि
मागे न जोजन जेह ॥ एह० ॥ ७ ॥ जूख अति जन दुःख दीये, सखि
जूख न राखे लाज ॥ जूख थकी सूके नहीं, सखि घरमां पण कांहि काज
॥ एह० ॥ ८ ॥ नाचे कूदे अन्न थकी, सखि अन्न विना सवि दीन ॥ अन्न
विना ए देहमी, सखि पण नवि थाये पीन ॥ एह० ॥ ए ॥ शब्दशास्त्र
जणतां थका, सखि काव्य मांहे मन जाय ॥ काव्य पठंतां गीतनी, सखि
होंश घणी मन थाय ॥ एह० ॥ १० ॥ गीत सुणतां जीवने, सखि नारी
मांहि मन जाय ॥ नारीविलास जागे वली, सखि लागे जूख जे गाय ॥
॥ एह० ॥ ११ ॥ यतः ॥ पेट कपटकी कोट करावही, पेट प्रसाद महीं सव
गाही ॥ पेट घरोघर टूक मगावहीं, पेट प्रसादपें जार गहाइ ॥ पेट सटे जट
शीश कटावहीं, पेट प्रसादे लहे दुःख जाइ ॥ उर देव तजो उर पेट जजो, पेट
समो परमेसर नांही ॥ १ ॥ मूकी ते स्थानक हवे, सखि वडुउं चाल्यो
जाय ॥ पहोतो दानशाला हवे, सखि जोज्य चिंता मन थाय ॥ एह० ॥
॥ १२ ॥ जोजन अर्थे उपविशे, सखि दवदंती तव देख ॥ उलखी जीमसुता
खरी, सखि मानुं चंद्रनी लेख ॥ वात ते अति सुखनी थइ ॥ ए आंकणी ॥ १३ ॥
पाय पडे हर्षित थइ, सखि वडुउं जाखे एम ॥ जूख तो सहु विसरी गइ,
सखि तुज अवस्था ए केम ॥ एह० ॥ १४ ॥ दीठी जीवती तुज प्रते, सखि
सघलुं थयुं कल्याण ॥ चंद्रजशाने जइ कह्युं, सखि तुज घर सवि मंगाण ॥
एह० ॥ १५ ॥ चंद्रयशा आवी करी, सखि आलिंगन करे तास ॥ धिक्
पडो इहां मुजने, सखि नहीं उपयोग ए जास ॥ एह० ॥ १६ ॥ तें किम
मूक्यो नल प्रात, सखि किम मूकी तुज एह ॥ उगे सूर्य पश्चिमे, सखि
पण शीलखंम न देह ॥ एह० ॥ १७ ॥ ताहरे जाल तिलक हतुं, सखि तेह
गयुं किहां तुज ॥ तव परमार्जे जालने, सखि अजुआलुं थयुं सुज ॥ एह० ॥ १८ ॥

नवरावी लूही अंगने, सखि आवे नृपने पाय ॥ रात पडी तिणे अवसरे, सखि काजल सम तम थाय ॥ एह० ॥ १९॥ जेमीने तिलके करी, सखि कीधो सवि उद्योत ॥ तव राजा मन चिंतवे, सखि दीप विना किशी ज्योत ॥ एह० ॥ २० ॥ तव राणी कहे सांजलो, सखि एह तिलक उद्योत ॥ कौतुक पामी राजीयो, सखि ढांके तिलक उद्योत ॥ एह० ॥२१॥ तिण समे गिरिनी गुफा परे, सखि पसरे तिहां अंधकार॥ जब उघाड्युं तिलक ते, सखि तव उद्योत विस्तार॥एह०॥२२॥ अधिकारे त्रीजे कह्ी, सखि एकवीशमी ढाल ॥ पंमित उत्तमविजयनो, सखि पद्मविजय कहे या ॥ एह० ॥ २३ ॥ सर्व गाथा ॥ ६५४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पूछे राजा तेहने, राजवंशादिक वात ॥ दवदंती सघलो कहे, पुरवी नल अवदात ॥ १ ॥ इण अवसर एक देवता, आवी लागो पाय ॥ पिंगल चोर हुं जाणजे, देव ते तुऊ पसाय ॥२॥ दीक्षा लेइ विचरीयो, तापस पुरने बहार॥ चय अग्नि लागो तिहां, दावानल दुःख वार ॥ ३ ॥ बाळो ते अगने करी, पण नवि दाधुं ध्यान॥ आराधनथी हुं मरी, उपनो सर्ग विमान ॥ ४ ॥ वरसे सात कोडी तिहां, हिरण्य तणी अति वेग ॥ अदृश थइ आकाशमां, वीज परे सुविवेग ॥ ५ ॥ दवदंती गइ पितुघरे, आंसु हर्षनां आय॥ भूरि कर्दम तेहथी थयो, स्नेहपणे कहेवाय ॥६॥ अंक बेसारी पुत्रला, वात ते सघली तात॥ तात कहे अम घर रहो, जोगवो तुमे सुख दान ॥७॥ आपे हरिमित्रज तणी, नृपति पांचसें गाम ॥ नल मलशे तो आपशुं, राज्य अर्ध उद्दाम॥८॥ सात दिवस उत्सव करी, कहे नेमीने तीन ॥ करशुं तेह उपाय अमे, जेम तुम पति मले नीम॥९॥ हवे ते नल राजा तणी, सांजलो वात रसाल॥ केम दवदंतीने मले, शमे विरहनी झाल॥ १०॥

॥ ढाल ॥ बावीशमी ॥

॥ देशी चटाउनी ॥ नल राजा हवे चाल्यो एकाकी, दवदंतीने मूकी रे॥ वनदावाग्नी नीकलवा तिहां, धूमनी रेखा टूंकी ॥ १ ॥ कहे मुऊ राखोने, इम दावानलमां नाग ॥ कहे मुऊ राखोने ॥ ए आंकणी॥ धूम तणी तिहां बहु घटा दीसे, जाणी आकाशे तेह रे॥ मानुं पक्षवंतो कोइ पर्वत, उड्यो नल पर्वत पर ॥कहे० ॥ २ ॥ ज्वाला सहसगमे अति वधती, मानुं ए

मेघमां वीज रे॥ त्रट त्रट शब्द थाये घणा रे, मानुं गर्जारव दीज ॥ कहे० ॥ ३॥ श्रापद रोवे शब्द सुणावे, नल सुणे मनुजनी वाचा रे॥ राखो राखो मुजने पोकारे, इक्ष्वाकु कुलमां जाजा ॥ कहे० ॥ ४ ॥ निःकारण तुं बे उपगारी, सांजली शब्द ते चाल्यो रे॥ दीगे एक उरग तिहां महोटो, तेह फणाटोप फाड्यो ॥ कहे० ॥ ५ ॥ पूबे नागने इणी परे प्यारो, मुजने उंलखे केम रे॥ केम तुं मनुजनी जाषा बोले, तव कहे नाग ते एम ॥ कहे० ॥ ॥ ६॥ पूरव जव हुं मनुज हतो सुण, तिणे नरनी कहुं वाणी रे ॥ बे मुज अवधिज्ञान अति उज्ज्वल, तिणे जाणुं सवि जाणी॥ कहे० ॥ ७ ॥ तव नल राजा करुणा श्राणी, वस्त्र मांहे तिणे लीधो रे॥ ऊपर देशे जइ करी जूपति, मूकवा उद्यम कीधो ॥ कहे० ॥ ८ ॥ उतरतां करड्यो नल नृपने, तव बोले इम राय रे ॥ तुं कस्या गुणनो जाण न हुर्ज, तुं कृतघन मुज थाय ॥ कहे० ॥ ए ॥ में उपगार कस्यो मुज करड्यो, जेम गृह कोकिल माखी रे ॥ पन्नगनो विश्वास न करवो, शास्त्र घयां मुज साखी ॥ कहे०॥ ॥ १० ॥ सर्पने दूधनुं पावुं जाणो, विष वधवानुं हेत रे॥ ते उखाणो साचो हुर्ज, करड्याने संकेत ॥ कहे० ॥ ११ ॥ विष वधतां वधतां तिहां हुर्ज, रूप कूबनो जूंनो रे ॥ करज परे खंध उंच विराजे, मस्तक नहीं कांइ ऊनो ॥ कहे० ॥ १२ ॥ कर पद टूंका तेहना दीसे, पेट गागर परे महोटुं रे ॥ मुख लाल श्रांखो अति पीली, मुख तुंबड जिस्युं खोटुं ॥ कहे० ॥ १३ ॥ कान ते ठीकर सारिखा जूंरा, नाक गयुं जस वेसी रे ॥ हृदये पूठे टेकरो महोटो, कोट मानुं गइ पेसी ॥ कहे० ॥ १४ ॥ इम ते घोर वीहामणो दीसे, जेम नाटकीर्ज तेह रे॥ चिंते ए रूपे जीववुं नहीं, वंडुं हवे हुं देह॥ कहे० ॥ ॥ १५॥ लेइ दीक्षा श्रातम हुं तारुं, तव ते सापनुं रूप रे ॥ उंनी दिव्य श्राजरण धइ ते, दीसे अतिहि अनूप ॥ कहे० ॥ १६ ॥ वत्स म कर तुं खेद ते चित्तमां, हुं तुं ताहरो तात रे॥ ब्रह्मलोकमां दीक्षाफलथी, उपनो सांजल वात ॥ कहे० ॥ १७ ॥ अवधिज्ञाने तुजने दीगे, श्राव्यो सर्पने रूपे रे ॥ रूपविपर्यय कीध ते कारण, सांजल तुं ते चूंपे ॥ कहे० ॥ १८ ॥ तें सहु रायने जीती कीधा, वैरी उंलखे तुज रे॥ हवे नहीं तुज उंलखे कोइ, ए जाएयुं तुज गुज ॥ कहे० ॥ १ए॥ दीक्षा मत तुं लेजे हमणां, कर्म हजी तुज जोग रे ॥ अवसर थाशे तव तुज श्रावी, देइश हुं उपयोग ॥ कहे० ॥

॥ २० ॥ श्रीफल रत्नकरंडक आपी, नाखे इणी परे देव रे ॥ रूप स्वभाव तुं इछे तिवारे, श्रीफल फोमजे हेव ॥ कहे० ॥ २१ ॥ देवडूष्य नीकलशे रुडां, फोमजे रत्नकरंम रे ॥ हार प्रमुख आजरण ते देखीश, जेहनुं तेज प्रचंड ॥ कहे० ॥ २२ ॥ डूष्य तथा जूषण ते पहेरे, थाइश देव स्वरूप रे ॥ पूठ्या पठी कह्युं सघळुं देवे, ते दवदंती स्वरूप ॥ कहे० ॥ २३ ॥ देव कहे कां खेद खहे ठे, मूकुं इछित गाम रे ॥ नल कहे सुसमारपुर मूको, तेम करी गयो निज धाम ॥ कहे० ॥ २४ ॥ बीजे खंडे त्रीजे अधिकारे, ढाल चाली शमी सारी रे ॥ पद्मविजय कहे इछित होवे, पुण्य होवे जस जारी ॥ कहे० ॥ २५ ॥ सर्व गाथा ॥ ६०९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीनमि जिन एकवीशमा, वंदे ते उद्यान ॥ जेह चैत्य अति शोभतुं, जाणे स्वर्ग विमान ॥ १ ॥ जाये नयर मांहि हवे, तिहां बूटो गजराज ॥ हाटश्रेणिने जांजतो, करतो गुलगुल गाज ॥ २ ॥ दधिपर्ण राजा तिहां, चढे वप्र शिर तेह ॥ नाखे इणी परे शोर करी, सांजलजो सहु एह ॥ ३ ॥ गज वश आणो माहरो, तो देउं वांछित तास ॥ तेह सुणीने कुबडो, नाखे धरी उल्लास ॥ ४ ॥ ए गजने हुं वश करुं, इम कही वश करे तास ॥ जय जयरव पुरमां थयो, नृपति तेडे पास ॥ ५ ॥ एह कला जेम ताहरी, तिम बीजी ठे कोय ॥ तो मुफ नाखी वसुंधरा, बहु रहे जरी जोय ॥ ६ ॥ सूर्यपाक रसवती करुं, बीजुं जाणुं एह ॥ राजा चमक्यो चित्तमां, आण्यो मन संदेह ॥ ७ ॥

॥ ढाल चोथीशमी ॥

॥ आव्य धूतारा नंदना रे, तें तो मूक्युं गोकुल गाम ॥ साजन मूक्युं गोकुल गाम ॥ ए देशी ॥ रसवती नीपनी तेटले जी, राजा जमीयो त्यांहि ॥ साजन राजा जमीयो त्यांहि ॥ राजा कहे हवे इणी परे जी, ए तो आज रे, ए तो जाणे नल नृप प्राहि ॥ १ ॥ वात तो ए अचरिज तणी जी, जुठं अचरिज सहु कोय ॥ साजन जुठं अचरिज सहु कोय ॥ ए आंकणी ॥ रूप पराजवने कह्युं जी, नल दीसे महाराज ॥ सा० ॥ न० ॥ वे शत जो जन इहां थकी जी, वे तो दूर रे वे तो दूर ठे अति आज ॥ २ ॥ सा० ॥ २ दश एकाकी इहां जी, जरत अरधनो स्वाम ॥ सा० ॥ ज० ॥ कां

रतिपति सारिखो जी, ते होवे रे ते होवे किम एक आम ॥ ३ ॥ वा०
टका लाख देइ करी जी, वस्त्र आजरण अनेक ॥ सा० ॥ व० ॥ पांचसे
गाम ते नवि लीये जी, ते तो जाणे रे ते तो जाणे सकल विवेक ॥ ४ ॥ वा० ॥
मागो राय कहे वली जी, जे तुम मनने चाव ॥ सा० ॥ जे० ॥ कूबरू
कहे मृगया वली जी, मदपान रे मदपान ते पुरमां वराव ॥ ५ ॥ वा० ॥
नृपति पण तिणी परे करे जी, तस वात करे नहीं कोय ॥ सा० ॥ त० ॥
एक दिन एकांते रही जी, पूछे इम रे पूछे इम तेहने सोय ॥ ६ ॥ वा० ॥
तुं कुण किहांथी आवीयो जी, वली किहांनो वसनार ॥ सा० ॥ व० ॥
तव कहे हुं नल रायनो जी, कोशलामां रे कोशलामां हुं सूपकार ॥ ७ ॥
वा० ॥ नल राजा हारी करी जी, चाल्यो लेइ नार ॥ सा० ॥ चा० ॥ नल
तो यमने घर गयो जी, नृप पासे रे नृप पासे शीख्यो ए सार ॥ ८ ॥ वा० ॥
मायावी वली पात्रने जी, नवि जाणे तस व्रात ॥ सा० ॥ न० ॥ ते माटे
मूकी आवीयो जी, तुम्ह पासे रे तुम्ह पासे सुणो ए वात ॥ ९ ॥ वा० ॥
मृतकारज करे नल तणां जी, वज्राहत परे राय ॥ सा० ॥ व० ॥ आंसु
आंख न खंचनी जी, तिहां बोले रे तिहां बोले आक्रंद ते थाय ॥ १० ॥
वा० ॥ अचरिज देखे कूबडो जी, देखी मृत्युनां काज ॥ सा० ॥ दे० ॥
हवे एक दिन कांय कारणे जी, दूत मूके रे दूत मूके महाराज ॥ ११ ॥
वा० ॥ भीम नृपनि पासे हवे जी, पहोंतो अनुक्रमे दूत ॥ सा० ॥ प० ॥
एक दिन करतां वातडी जी, दूत जाखे रे दूत जाखे ते शुज उत्त ॥ १२ ॥
वा० ॥ आव्यो अम स्वामी कने जी, नल नृपनो सूपकार ॥ सा० ॥
॥ १३ ॥ वा० ॥ सांजली दवदंती कहे जी, सूर्यपाक रे सूर्यपाक रसोइ करे सार
॥ नल विण को जाणे नहीं जी, विज्ञान रे विज्ञान तणो ते विलास
॥ १४ ॥ वा० ॥ आतम गापी आवीयो जी, होशे मानुं तेह ॥ सा० ॥ हो० ॥
कुशल द्विज मोकले जी, जोवाने रे जोवाने धरी नेह ॥ १५ ॥ वा० ॥
सारपुर ते आवीया जी, दीठुं कूबड रूप ॥ सा० ॥ दी० ॥ चिंते ब्राह्मण
ना जी, ए तो होने रे ए तो होने अनिहि अनूप ॥ १६ ॥ वा० ॥ सरोवर
किहां जी, किहां दुष्टु गजराज ॥ सा० ॥ कि० ॥ क्रूर वली किहां
जी, मृगलो रे वली मृगलो ने मृगराज ॥ १७ ॥ वा० ॥ किहां नल

ने किहां कूबरो जी, ए तो अति विपरीत ॥ सा० ॥ ए० ॥ निश्चय करब तेहनो जी, भाखे रे ते भाखे श्लोक ए रीत ॥ १८ ॥ वा० ॥ नल राजा जूंठो जिस्यो जी, तेहवो जग नहीं कोय ॥ सा० ॥ ते० ॥ निर्दयी ने लज्जा नहीं जी, पापी रे अति पापी जाणो सोय ॥ १९ ॥ वा० ॥ एकाकी मूकी गयो जी, अटवीमां ते नार ॥ सा० ॥ अ० ॥ चित्त किम चाल्युं एहनुं जी, ए तो हृदये रे ए तो हृदये निठुर धार ॥ २० ॥ वा० ॥ धरशे केम जीवितपणुं जी, एकली ते रण मांहि ॥ सा० ॥ ए० ॥ कोइ आधार थाये नहीं जी, कष्टे रे ते कष्टे विशेषे ग्राही ॥ २१ ॥ वा० ॥ मूढ गमार इणी परे जी, नल राजा थयो काय ॥ सा० ॥ न० ॥ एणी परे वली जाणतां जी, जुउ रे तुमे जुउ आगल शुं थाय ॥ २२ ॥ वा० ॥ बीजे खंडे एम कही जी, त्रेवीशमी ए ढाल ॥ सा० ॥ त्रे० ॥ अधिकारे त्रीजे जले जी, पद्म रे कहे पद्म अति सुरसाल ॥ २३ ॥ वा० ॥ सर्व गाथा ॥ ७१९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तेह सुणी कूबज हवे, रुदन करे असराल ॥ तव पूछे ते ब्राह्मणो, किम रोवे इण काल ॥ १ ॥ सूपकार हुंफिक कहे, करुणा रस ए गीत ॥ सांभली रुदन ते आवीयुं, कहे कूबरु एणी रीत ॥ २ ॥ श्लोक अर्थ नाखो मने, तव द्विज कहे सहु वात ॥ भीम राजाए मोकल्यो, तुझ पासे इण भात ॥ ३ ॥ नल जाणे ए रसवती, पण न वि जाणे कोय ॥ मोकलीयो अचरिज धरी, दीठो में वली तोय ॥ ४ ॥ माठी आकृति ताहरी, नल तो देवसरूप ॥ किहां खजुउ किहां दिनपति, किहां सायर किहां कूप ॥ ५ ॥ किहां दर्पण किहां चंद्रमा, किहां वाघ ने छाग ॥ रतन किहां वली कांकरो, हंस किहां वली काग ॥ ६ ॥ पण आवंतां माहरे, थयां शकुन अति सार ॥ ते पण सहु निष्फल गयां, दीठो तुम्ह निवार ॥ ७ ॥ रोवे कूबज अति घणुं, दवदंतीने ध्याय ॥ अशन करीने कुशल द्विज, निज नगरीए जाय ॥ ८ ॥ रोवुं गजवश रसवती, प्रमुख टंक मुख वात ॥ संभलावी भैमी प्रते, वली भीमने कहे वात ॥ ९ ॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥

॥ आरन उदासी सुंदरी सुविलासी ॥ भाजे वेठी साद करुं घर आंगणे रे लो, दीठना बारजी रे लो ॥ ए देशी ॥ हवे बोले भैमी, शील ते नेमी, नमी तेहने रे लो ॥ स्वामी साहं जी रे लो ॥ कोइ आहारने दीपे, कर्म

विशेपे, थयुं तेहने रे लो ॥ स्वा० ॥ १ ॥ रुडुं रूप ते फरीयुं, अथवा करीयुं,
एहने जाणी रे लो ॥ स्वा० ॥ नवि वीजो जाणे, ए परमाणे, कहुं एम आणी
रे लो ॥ स्वा० ॥ २ ॥ ते कारण तेनो, करुं नीवेडो, कूवज देखी रे
लो ॥ स्वा० ॥ तव वोले राजा, विहुं पाखे साजा, सर्व उवेखी रे लो ॥
॥ स्वा० ॥ ३ ॥ करीये वली फेरी, स्वयंवर केरी, ताहरी वातो रे लो
॥ स्वा० ॥ दधिपर्ण ते आवे, साथे लावे, कूवज गातो रे लो
॥ ४ ॥ जो नल ते होशे, तो नवि सहेशे, वीजो वरतां रे लो ॥ स्वा० ॥
प्राकृत पण होवे, सुखे न सोवे, नारी हरतां रे लो ॥ स्वा० ॥ ५ ॥ नल
तो नहा वलीयो, कुणे न छलीयो, प्राणी जाय रे लो ॥ स्वा० ॥ दिन पंचमी
कावे, दूत तिधावे, तेहनी पाय रे लो ॥ स्वा० ॥ ६ ॥ घोडे जव मीनो,
टलवले दीनो, तेम नृप हुउं रे लो ॥ स्वा० ॥ ते नयरी दूरे, पुण्य अधूरे,
जावुं ते जूउं रे लो ॥ स्वा० ॥ ७ ॥ तव कूवज विचारे, ए इणी वारे, अचरिज
दीसे रे लो ॥ स्वा० ॥ जेमी नवि परणे, वीजा नरने, सती आशीपे रे
लो ॥ स्वा० ॥ ८ ॥ याने आरोपी, जाउं गोपी, आतम माहरो रे लो ॥
पीयुजा वारुजी रे लो ॥ ए आंकणी ॥ कहे कूवज चालो, मुजने आलो,
रथ एक ताहरो रे लो ॥ पी० ॥ ९ ॥ मुहूरतनी पहेलां, जइये वहेला, परणो
स्वामी रे लो ॥ पी० ॥ वेसाडे रथमां, मन मन्मथमां, रायनुं पामी रे लो ॥
पी० ॥ १० ॥ नव एक पछेडी, दूरे उडी, जाये वाटे रे लो ॥ पी० ॥ राखो
रथ तुम्हे, लेउं वस्त्र अम्हे, तिणे माटे रे लो ॥ पी० ॥ ११ ॥ जोजन
पणवीश, चाल्या ईश, वात करंतां रे लो ॥ पी० ॥ ए धोरी मध्यम,
नाही उत्तम, जाणे इम चरना रे लो ॥ पी० ॥ १२ ॥ जाइ पचास, वात
विलास, योजन धोरी रे लो ॥ पी० ॥ उत्तम जो होवे तो नहु जोवे,
वात ते मोरी रे लो ॥ पी० ॥ १३ ॥ इम जातां आगे, दीठो मागे, पादप
अक्ष रे लो ॥ पी० ॥ जाखे इम राय, वार ते थाय, मांनस दक्ष रे लो ॥ पी०
॥ १४ ॥ कौतुक एक महोटुं, नही कांइ खोटुं, तुजने जाणुं रे लो ॥ पी०
॥ पाठा ते वसनां, फल अणगणनां, तुमने टाणुं रे लो ॥ पी० ॥ १५ ॥
कहे कूवज नाम, इणहीज ठाम, नाखो एह रे लो ॥ पी० ॥ नही थाय
असुर, जाणुं नूर, वीरो केहे रे लो ॥ पी० ॥ १६ ॥ नव कूवज पाडे, नुष्टि-
प्रहारे, वृक्ष ते वाधो रे लो ॥ पी० ॥ कहे महस अढार, फलना जार,

गणीने साधो रे लो ॥ पी० ॥ १७ ॥ ते तिमहीज दीठुं, कूबजने मीठुं, लागुं मनमां रे लो ॥ पी० ॥ खेरूणने गणवुं, मांहे जणवुं, कीधुं वनमां रे लो ॥ पी० ॥ १८ ॥ इम बीजे खंडे, रंग अखंडे, त्रीजे अधिकारे रे लो ॥ पी० ॥ चोवीशमी ढाले, रंग रसाले, पद्म ए धारे रे लो ॥ पी० ॥१९॥ सर्व गाथा ॥७४७॥

॥ दोहा ॥

॥ दवदंती इण अवसरे, देखी सुपनुं एक ॥ जाखे आवी तातने, ते सुणजो सुविवेक ॥ १ ॥ आंबो दीठो सुपनमां, फुल्यो फल्यो मनोहार ॥ कोशल देश उद्यानमां, शोजित दीसे सार ॥ २ ॥ कमल एक मुज हाथमां, वली पुरुष तिहां एक ॥ चढीयो पहेलां ते पड्यो, धरणी तले अतिरेक ॥ ३ ॥ फल जाखे तस जूपति, मलशे वालिम तुज ॥ कुवेरनुं पद्मुं थशे, एह सुपननुं गुज ॥ ४ ॥ प्रातसमे दीठुं तमे, तिणे फलशे ततकाल ॥ सुपनशास्त्र इणी परे कहे, ते जाख्युं जूपाल ॥ ५ ॥

॥ ढाल पचीशमी ॥

॥ घावा कीसनपुरी, तुम विना मढीयां उजर परी ॥ ए देशी ॥ मंगल नाम आव्यो प्रतिहार, जीम राजा पूछे तिणी वार ॥ मोहन वात कहो ॥ आया जी जले तुम्हे अहो जी अहो ॥ ए आंकणी ॥ तव बोल्यो प्रतिहार ते एम, स्वामी सुणो मुज वात ते प्रेम ॥ मो० ॥ १ ॥ आयो दधिपर्ण राय ते द्वार, मोकल तुं वहेलो इणी वार ॥ मो० ॥ आव्यो तव कहे जीमजी राय, सूर्यपाक रसोइ ते थाय ॥ मो० ॥ २ ॥ करे आस्वाद ते जीम राय, मनमां आनंद अधिक सोहाय ॥ मो० ॥ देखाडे दवदंतीने थाल, आस्वादी कहे नल ए जाल ॥ मो० ॥ ३ ॥ ज्ञानीए जाख्यो छे स्वाम, नल विणु नहींय कला कोइ धाम ॥ मो० ॥ कूबरू रूप कह्युं पण स्वाम, निश्चय नल ए छे एणे गाम ॥ मो० ॥ ४ ॥ माहरा तिलकने थानक एह, आंगलि मूके माहरी देह ॥ मो० ॥ माहरुं अंग विकस्वर थाय, तो नल जाणो माहरा ताय ॥ मो० ॥ ५ ॥ तेमज करावे जीमजी राय, तव दवदंती फूली जाय ॥ मो० ॥ रूप करो परगट हवे स्वामी, छाना रहो स्वामी किण काम ॥ मो० ॥ ६ ॥ गुप्त करंमक लीधो रे साथ, वस्त्र आजरण पहेरे निज हाथ ॥ मो० ॥ जाणी नल प्रणमे जूपाल, दधिपर्णादिक तिहां ततकाल ॥ मो० ॥ ॥ ७ ॥ सार्थवाह उपगारी जाण, आदर दीये तेनी तिण ठाण ॥ मो० ॥

ऋतुपर्ण चंद्रजशा तस नारी, चंद्रवती तस पुत्री धार ॥ मो० ॥ ८ ॥ वसंत-श्रीशेखर मुख जेह, तेमी आदर दीये अति नेह ॥ मो० ॥ राय सजा मेहीने गाय, तिणे अवसर सुर एक तिहां आय ॥ मो० ॥ ए ॥ दवदंतीने जाखे तेह, हाय जोमी प्रणमे ससनेह ॥ मो० ॥ कुलपति तापस जाणे मात, तुऊ उपगार ते मुऊने यात ॥ मो० ॥ १० ॥ नाम केशर हुं देवता सार, केशर नाम विमाने धार ॥ मो० ॥ सौधर्मे सुर उपनो जाण, मिथ्या-ची समकितने गाण ॥ मो० ॥ ११ ॥ ते सवि जाणुं तुऊ पसाय, सात कोमी द्रव्य वरसी जाय ॥ मो० ॥ दधिपर्ण ऋतुपर्ण जीम वसंत, थापे राज्य मली सामंत ॥ मो० ॥ १२ ॥ निज निज सैन्य लेइने आय, सहु साथे निज पुर जणी जाय ॥ मो० ॥ आव्यो जाणी नल राजान, कुबेर वीहीनो कंठ गत प्राण ॥ मो० ॥ १३ ॥ दूत साथे कहावे ताम, युद्ध कस्यानुं शुं छे काम ॥ मो० ॥ आपण जेम पूरवे रम्या जाय, तेम रमीये मांमीने दाय ॥ मो० ॥ १४ ॥ अंगीकार करे सही तेह, चढते चढतुं देखे जेह ॥ मो० ॥ रमतां रमतां नलनी जीत, देखी लोक थयां अति प्रीत ॥ मो० ॥ १५ ॥ जीत थइ जेम हाख्या तेम, लखमी अथिर जणावे एम ॥ मो० ॥ युवराज्ये कुबेरने थाप, पाले पृथवी नल हवे आप ॥ मो० ॥ १६ ॥ सज्जन तेहज सज्जा-न होय, वैरीनुं न वगाडे सोय ॥ मो० ॥ जरत अर्धनो स्वामी राय, आवी प्रतिबोधे निज ताय ॥ मो० ॥ १७ ॥ श्रीऋषिराय पासे त्रण ज्ञान, अजितसेन जेहनुं अजिधान ॥ मो० ॥ दीक्षा लीधी तेहनी पास, पूरव जव सांजली उल्लास ॥ मो० ॥ १८ ॥ मुनिदाने ए पाम्युं राज्य, पूछे वियोग कह्यो कुण काज ॥ मो० ॥ मुनि कहे मुनि उपर कस्यो क्रोध, घटिका वार तणो महा जोध ॥ मो० ॥ १९ ॥ वार वरस लगे थयो वियोग, सुणी एम व्रत पाले शुज योग ॥ मो० ॥ दवदंती देखी चस्युं मन्न, नल ऋषिराज-नुं हवे एक दिन्न ॥ मो० ॥ २० ॥ गुरुए काढी मूक्यो ताम, निषध देवे तव आएया गाम ॥ मो० ॥ व्रत बहु काल लगे न पलाय, तिणे अणसण उच्चरे तिणे गाय ॥ मो० ॥ २१ ॥ दवदंती पण करती तेम, कनकवती थइ पाली नेम ॥ मो० ॥ धनद थयो हुं नलनो जीव, आव्यो प्रेम संचारी अतीव ॥ मो० ॥ २२ ॥ धनद कहे वसुदेवने एह, धुरथी मांमीने कही जेह ॥ ॥ मो० ॥ सांजल श्रीवसुदेव ए वात, आगल पण उत्तम अवदात ॥ मो० ॥

॥२३॥ आ नव मांहे थाशे सिद्ध, ए तो जगमां ढे परसिद्ध ॥ मो० ॥ तीर्थंकर महाविदेह मांहि, विमल नामे विचरंता त्यांहि ॥ मो० ॥ २४ ॥ इंद्र सहित वंदनने काज, पहोता अमे सांजल महाराज ॥ मो० ॥ लोकालोक प्रकाशक तेह, केवलज्ञान दर्शनधर जेह ॥ मो० ॥ २५ ॥ घातीकर्म गयां क्षय जास, जोगवे आतम रुद्धि विलास ॥ मो० ॥ जगत जीवने करे उपगार, देशना वरसे अमृतधार ॥ मो० ॥ २६ ॥ क्षायिक जावे प्रगटी रुद्ध, आयुक्षये लेहशे जे सिद्ध ॥ मो० ॥ तेहना मुखथी सांजली वात, जाखुं तुजने ए अवदात ॥ मो० ॥ २७ ॥ कुबेर अदृश्य एम कही थाय, जोग जोगवे ससरा घर ठाय ॥ मो० ॥ बीजे खंडे त्रीजो अधिकार, पूरण हुउ थयो जय जयकार ॥ मो० ॥ २८ ॥ पणवीश ढाल कही एह मांहि, क्षमाविजय जिन सान्निधि आंही ॥ मो० ॥ श्रीगुरु उत्तमविजयनो बाल, पद्मविजय कहे रंगरसाल ॥ मो० ॥ २९ ॥ सर्व गाथा ॥ ७०१ ॥ इति श्रीमन्महानाप्यादिप्रकरणोक्तन्यायवेत्तारः । वाङ्मयोपनिषद्ज्ञातारः उत्तमविजयास्तेषां चरणकजभृंगतुल्येन पद्मविजयेन विरचिते प्राकृतप्रबंधे सुरासुरवंदिते नेमिचरित्रे कनकवतीपरिणयनतत्पूर्वजववर्णननामकद्वितीयखंडस्य तृतीयोऽधिकारः समाप्तः॥प्रथमाधिकारे गाथा॥ ४७४ ॥ द्वितीयाधिकारे गाथा ॥४०४॥तृतीयाधिकारे गाथा ॥ ७०१ ॥ सर्व गाथा॥१६६९॥ सर्व ढाल ॥४५॥

॥ अथ द्वितीयखंडस्य चतुर्थोऽधिकारः प्रारभ्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ शांतिनाथ समरुं सदा, संनव सुख दातार ॥ बीजा खंड तणो कहुं, हवे चोथो अधिकार ॥ १ ॥ थोडो पण रुडो घणुं, [illegible] आनंद थाय ॥ अमृतना एक लव थकी, ज्वर पद [illegible]
[illegible] सधु, पण नेदे गजवग्ग ॥ अष्टापद
नग्ग ॥ ३ ॥ दीवो पण अति नानडो, दा[illegible]
गिरि, उंपध रोग विकार ॥ ४ ॥ सद्गुरु
न्याय ॥ न्हाने पण आवी मल्यो, ए [illegible]
पद सुणो, ए अधिकार उदार ॥ [illegible]

थाही ॥ ६ ॥ श्रोता जो रोता परे, होता तो बने केम ॥ जो त
साहसुं पठे, पोताने डुःख एम ॥ ७ ॥ श्री वसुदेवने परणवा, शेष
अधिकार ॥ जे दाखुं ते सांजलो, आणी हर्ष अपार ॥ ८ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ अमदावादना खेल्या रे, वालिम आवजो रे ॥ ए देशी ॥ श्री व
देवजी सूता रे, एक दिन सेजमां रे ॥ नारी सहित शुज योगे रे, मनन
हेजमां रे ॥ सूर्पक विद्याधर तिणे ठाम, आव्यो हरवाने ते काम ॥ १ ॥
पुण्यवंतनी वातो रे, जविका धारजो रे ॥ ए आंकणी ॥ वसुदेवने हरी
जातो रे, तिणे समे जागीयो रे ॥ मुष्टिप्रहार ते कीधो रे, तव ते जागीयो
रे ॥ नाखी दीधो वसुदेव त्यांहि, पडीया गंगासरिता मांहि ॥ पु० ॥
॥ २ ॥ तेह नदी तरी तिहांथी रे, कोल्लागपुर गया रे ॥ पद्मरथ राजानी
रे, पुत्री लघुवया रे ॥ परण्या पद्मश्रीय ते नार, नीलकंठ हरी जाय
तिवार ॥ पु० ॥ ३ ॥ मूकी दीधो तेहने रे, चंपासर पड्यो रे ॥ नीकल्यो
तिहांथी नरनो रे. कर्मे अनवड्यो रे ॥ परण्यो मंत्रिसुता तिहां सार, वली
सूर्पक हरी जाय ए वार ॥ पु० ॥ ४ ॥ गंगाजलमां नाख्यो रे, वली
तिहांथी नरी रे ॥ विचरंता पंथी साथे रे, पाली पाम्या वली रे ॥ पल्लिपतिनी
जरा इणे नाम. कन्या परणया गुणनी धाम ॥ पु० ॥ ५ ॥ नामे जरा-
कुमार रे. एक तिहां उपनो रे ॥ रूपवंतो बलवंतो रे. ते सुत नीपनो
रे ॥ वली अवंतिसुंदरी नाम. सूरसेनना अति रूपनुं धाम ॥ पु० ॥ ६ ॥
जीवजशा वली आदि रे. बहु कन्या वर्या रे ॥ एक दिन श्रीवसुदेव रे,
सारग संचर्या रे ॥ देवना तिहां एक नासे वाण. सांजल वसुदेव तुं गुण-
वाण ॥ पु० ॥ ७ ॥ नाम अरिष्टपुरे राजा रे. शूरवीर ते जाणीये रे ॥
कन्या रोहिणी तेहने रे. रूपे वखाणीये रे ॥ में तुजने दीधी ते आज,
तेहने परणो तुमे महाराज ॥ पु० ॥ ८ ॥ जइने पडह वजावो रे, मन
हर्ष करी रे ॥ इम सांजलीने चाल्या रे. वसुदेव तिहां फरी रे ॥ तिहां
मलीया बहु राजान. जरासंध प्रमुख अनिधान ॥ पु० ॥ ९ ॥ स्वयं-
वरमंडप आवी रे. रोहिणी तिण समे रे ॥ मानुं निशापति नारी रे,
ने मन गमे रे ॥ आवी जोतुं सहुने नारी. मन नवि गमीयो कोइ
काज ॥ पु० ॥ १० ॥ वेषांतर करी वेठा रे. वसुदेव तिहां किणे रे ॥

॥२३॥ आ भव मांहे थाशे सिद्ध, ए तो जगमां छे परसिद्ध ॥ मो० ॥ तीर्थंकर महाविदेह मांहि, विमल नामे विचरंता त्यांहि ॥ मो० ॥ २४ ॥ इंद्र सहित वंदनने काज, पहोता अमे सांजल महाराज ॥ मो० ॥ लोकालोक प्रकाशक तेह, केवलज्ञान दर्शनधर जेह ॥ मो० ॥ २५ ॥ घातीकर्म गयां क्षय जास, जोगवे आतम शुद्धि विलास ॥ मो० ॥ जगत जीवने करे उपगार, देशना वरसे अमृतधार ॥ मो० ॥ २६ ॥ क्षायिक जावे प्रगटी रुद्ध, आयुक्षये लेहशे जे सिद्ध ॥ मो० ॥ तेहना मुखथी सांजली वात, जाखुं तुजने ए अवदात ॥ मो० ॥ २७ ॥ कुवेर अदृश्य एम कही थाय, जोग जोगवे ससरा घर ठाय ॥ मो० ॥ बीजे खंडे त्रीजो अधिकार, पूरण हुर्ज थयो जय जयकार ॥ मो० ॥ २८ ॥ पणवीश ढाल कही एह मांहि, क्षमा-विजय जिन सान्निधि आंही ॥ मो० ॥ श्रीगुरु उत्तमविजयनो वाल, पद्म-विजय कहे रंगरसाल ॥ मो० ॥ २९ ॥ सर्व गाथा ॥ ७०१ ॥ इति श्रीमन्महा-जाष्यादिप्रकरणोक्तन्यायवेत्तारः । वाङ्मयोपनिषद्ज्ञातारः उत्तमविजयास्ते-षां चरणकजभृंगतुल्येन पद्मविजयेन विरचिते प्राकृतप्रबंधे सुरासुरवंदिते नेमिचरित्रे कनकवतीपरिणयनतत्पूर्वजववर्णननामकद्वितीयखंडस्य तृतीयोऽधिकारः समाप्तः॥प्रथमाधिकारे गाथा ॥ ४०४ ॥ द्वितीयाधिकारे गाथा ॥४०४॥तृतीयाधिकारे गाथा ॥ ७०१ ॥ सर्व गाथा ॥१६६९॥ सर्व ढाल ॥४५॥

॥ अथ द्वितीयखंडस्य चतुर्थोऽधिकारः प्रारभ्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ शांतिनाथ समरुं सदा, संजव सुख दातार ॥ बीजा खंड तणो कहुं, हवे चोथो अधिकार ॥ १ ॥ थोमो पण रुडो घणुं, सुणतां आनंद थाय ॥ अमृतना एक लव थकी, ज्वर पट्ट मासनो जाय ॥ २ ॥ गजथी पंचानन लघु, पण नेदे गजवग्ग ॥ अष्टापद सिंहथी लघु, पण देवरावे मग्ग ॥ ३ ॥ दीवो पण अति नानमो, टाले बहु अंधकार ॥ वज्र लघु नेदे गिरि, उंषध रोग विकार ॥ ४ ॥ लघुनो पण दोहडो कहे, लोक उखाणो न्याय ॥ म्हारे पण थावी मल्यो, ए उखाणो थाय ॥ ५ ॥ ते माटे सज्ज थइ सुणो, ए अधिकार उदार ॥ श्रोता सुणतां देखीने, वक्ता रीझे

श्राही ॥ ६ ॥ श्रोता जो रोता परे, होता तो वने केम ॥ जो ताके साहसुं पठे, पोताने कुःख एम ॥ ७ ॥ श्री वसुदेवने परणवा, शेष रह्यो अधिकार ॥ जे दाखुं ते सांजलो, श्राणी हर्ष अपार ॥ ८ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ श्रमदावादना खेड्या रे, वालिम श्रावजो रे ॥ ए देशी ॥ श्री वसुदेवजी सूता रे, एक दिन सेजमां रे ॥ नारी सहित शुज योगे रे, मनना हेजमां रे ॥ सूर्पक विद्याधर तिणे गम, श्राव्यो हरवाने ते काम ॥ १ ॥ पुण्यवंतनी वातो रे, जविका धारजो रे ॥ ए आंकणी ॥ वसुदेवने हरी जातो रे, तिणे समे जागीयो रे ॥ मुष्टिप्रहार ते कीधो रे, तव ते जागीयो रे ॥ नाखी दीधो वसुदेव त्यांहि, पमीया गंगासरिता मांहि ॥ पु० ॥ २ ॥ तेह नदी तरी तिहांथी रे, कोल्लागपुर गया रे ॥ पद्मरथ राजानी रे, पुत्री लघुवया रे ॥ परण्या पदमश्रीय ते नार, नीलकंठ हरी जाय तिवार ॥ पु० ॥ ३ ॥ मूकी दीधो तेहने रे, चंपासर पड्यो रे ॥ नीकल्यो तिहांथी तरतो रे, कर्मे श्रनवड्यो रे ॥ परण्यो मंत्रिसुता तिहां सार, वली सूर्पक हरी जाय ए वार ॥ पु० ॥ ४ ॥ गंगाजलमां नाख्यो रे, वली तिहांथी तरी रे ॥ विचरंता पंथी साथे रे, पाली पाम्या वली रे ॥ पल्लिपतिनी जरा इणे नाम, कन्या परण्या गुणनी धाम ॥ पु० ॥ ५ ॥ नामे जराकुमार रे, एक तिहां उपनो रे ॥ रूपवंतो बलवंतो रे, ते सुत नीपनो रे ॥ वली श्रवंतिसुंदरी नाम, सूरसेना श्रति रूपनुं धाम ॥ पु० ॥ ६ ॥ जीवजशा वली श्रादि रे, बहु कन्या वस्यो रे ॥ एक दिन श्रीवसुदेव रे, मारग संचस्यो रे ॥ देवता तिहां एक जाखे वाण, सांजल वसुदेव तुं गुणखाण ॥ पु० ॥ ७ ॥ नाम श्ररिष्टपुरे राजा रे, शूरधीर ते जाणीये रे ॥ कन्या रोहिणी तेहने रे, रूपे वखाणीये रे ॥ में तुजने दीधी ते श्राज, जइने परणो तुमे महाराज ॥ पु० ॥ ८ ॥ जइने पमह वजावो रे, मन मोद करी रे ॥ इम सांजलीने चाल्या रे, वसुदेव तिहां फरी रे ॥ तिहां पण मलीया बहु राजान, जरासंध प्रमुख श्रजिधान ॥ पु० ॥ ए ॥ स्वयंवरमंमप श्रावी रे, रोहिणी तिण समे रे ॥ मानुं निशापति नारी रे, सहुने मन गमे रे ॥ श्रावी जोयुं सहुने जाली, मन नवि गमीयो कोइ तिण काल ॥ पु० ॥ १० ॥ वेषांतर करी वेठा रे, वसुदेव तिहां किणे रे॥

पमह वजावण मांड्यो रे, परगट परे इणे रे ॥ सहु विचमां बेसीने एम, ते सांजलजो धरीने प्रेम ॥ पु० ॥ ११ ॥ मृगलोचना मुज पासे रे, आवी उतावली रे ॥ मृगलोचन परे जोवे रे, तुं श्याने वली रे ॥ तुज सरिखो हुं जत्तां जाण, ताहरो संग उत्सुक मन आण ॥ पु० ॥ १२ ॥ तेह वचन सांजलीने रे, रोहिणी हरखती रे ॥ पुलकांगित थइने रे, श्रीवसुदेवने निरखती रे ॥ थापे स्वयंवरमाला कंठ, तव रूठा राजा बहु लंठ ॥ पु० ॥ १३ ॥ पुण्य तणुं बल जेहने रे, ते जग पूजीये रे ॥ पुण्य विना धनवंत होय, पण भूजीये रे ॥ पुण्ये पहेरे वसुदेव माल, बीजा राय रह्या सहु न्हाल ॥ ॥ पु० ॥ १४ ॥ बीजे खंडे चोथे रे, अधिकारे कही रे ॥ पहेली ढाल रसाल रे, जविजने सदहीं रे ॥ पंमित उत्तमविजयनो बाल, पद्म कहे सुणो मंगलमाल ॥ पु० ॥ १५ ॥ सर्व गाथा ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वन रण शत्रु आगले, पर्वत उपर जेह ॥ सूता ने वली जागतां, राखे पुण्य अमेह ॥ १ ॥ मंत्र तंत्र ने यंत्र वली, दान दीये लख कोम ॥ पण पुण्यवंत प्राणी तणी, कोइ न आवे होम ॥ २ ॥ मंत्र तंत्र पण तो फले, जो होय पुण्य सहाय ॥ पुण्य सखाइ नवि होये, तो साहमां खाता थाय ॥ ३ ॥ पुण्यहीन जे मानवी, देवे दाननी कोम ॥ पण अपजश होय तेहनो, पामे सबले खोम ॥ ४ ॥ जत्तां पांच शिरे धरे, सती मांहि शिरदार ॥ जश पामे जग डोपदी, पुण्य तणे अनुसार ॥ ५ ॥ पश्चिम साहमो चालतो, अंबर तजी विशाल ॥ सूर कहावे लोकमां, ए पण पुण्य संजाल ॥ ६ ॥ वरमाला वसुदेवजी, पहेरी सहु जन शाख ॥ ते सहु नृप रोपे चड्या, बोले पहवी जाख ॥ ७ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ केशरीयो केदार घस्यो रे, वालिम केशरीयो ॥ कांइ केशर तिलक ललाट, हो वालम केशरीयो ॥ ए देशी ॥ नृपति उठ्या धमधमी रे, पणुं मगराला ॥ कहे कोपे पहवी वाणी रे, मदना मतवाला ॥ जो पहने परणावशो रे ॥ ध० ॥ तो तेहना अम इणी गण हो, परणावा वाला ॥ १ ॥ तोर्दिक नर इणे वस्यो रे ॥ ध० ॥ किम जाउं अमे घर वारी हो, खेइ मुख कालां ॥ पहनो मान आवी करी रे ॥ ध० ॥ केम ठीक न करे निर्धार हो ॥

सुणो नूपाला ॥ २ ॥ तात कहे कुमरी तणो रे ॥ सुणो नूपाला ॥ मनमां धरी एहवो न्याय जो ॥ घणुं मछराला ॥ कन्याने मन नवि नावीया रे ॥ वर लटकाला ॥ तुम मन केम खेद ते थाय हो ॥ सुणो नूपाला ॥ ३ ॥ स्वयंवर नाम यथार्थ छे रे ॥ सुणो० ॥ मनगमतो वरे नरतार हो ॥ वर लटकाला ॥ वांक नहीं इमां माहरो रे ॥ सुणो० ॥ योग मेलवे सवि किरतार हो ॥ न थाउं लाला ॥ ४ ॥ तव बोले सवि नूपति रे ॥ क्रोधे काला ॥ तुमे वात कही ते साच हो ॥ सुण नूपाला ॥ तोपण कुल पूछ्युं घटे रे ॥ सुण० ॥ अम्हे कहुं तुम्ह साची वाच हो ॥ सुण० ॥ ५ ॥ कहे वसुदेवजी इणी परे रे ॥ खाशो गाला ॥ केम लेशो हठथी एह हो ॥ गुणवंती बाला ॥ कुल जाण्यानुं काम शुं रे ॥ म करो चाला ॥ वरमाला पहेरी वर तेह हो ॥ सुणो नूपाला ॥ ६ ॥ परस्त्री अजिलाषे करी रे ॥ थया पापाला ॥ थाउं शुद्ध तुमे हवे आज हो ॥ वही करवाला ॥ कुल जुजबल देखाडशुं रे ॥ उठो नरपाला ॥ चिंते जरासिंध राज हो ॥ घणुं मछराला ॥ ७ ॥ उद्धत वचन ते नीचनां रे ॥ जुवो नूपाला ॥ केम सहे ते उत्तम जात हो ॥ मदे मतवाला ॥ समुद्रविजयादिक प्रते रे ॥ कहे वचमाला ॥ सज्ज थाउं सवि तुम्हे भ्रात हो ॥ ल्यो कर नालां ॥ ८ ॥ शूरधीर राय तोर्यिक वलीरे ॥ हणो दुःखजाला ॥ थया नूपति सज्ज तिण वार हो ॥ अति विकराला ॥ समुद्रविजय मुख उठीया रे, लेइ करवाला ॥ जरासंध आणा शिर धार हो ॥ घणुं मछराला ॥ ९ ॥ दधिमुख खेचर राजीयो रे ॥ तिहां ततकाला ॥ थयो सारथि मन धरी राग हो ॥ घूघरमाला ॥ घमघमते रथे थापीयो रे ॥ अति रूपाला ॥ वसुदेव लहो महाजाग हो ॥ मदे मतवाला ॥ १० ॥ वेगवती माता दीयां रे ॥ अति विकरालां ॥ करवा रण शस्त्र अपार हो ॥ अति धारालां ॥ जीत्या सहु राजेसरु रे ॥ बहु बलवाला ॥ जेम सिंहनादे गजवार हो ॥ अति शुंढाला ॥ ११ ॥ जरासिंध चिंते इस्युं रे ॥ नावी थाला ॥ वली जीत्या अमने एण हो ॥ कस्या जांखाला ॥ समुद्रविजयने इम कहे रे ॥ उठो मूछाला ॥ तुमे हारो एहथी केण हो ॥ अति जुजाला ॥ १२ ॥ तव बिहु जाइ झूझता रे ॥ तिणहीज ताला ॥ तव श्रीवसुदेव विचारी हो ॥ व्यंजन माला ॥ बाण उपर लखी नाखीयो रे ॥ लीये नूपाला ॥ वांचे ते मन धार हो ॥ मन हरखाला ॥ १३ ॥ प्रणमे श्रीवसुदेव रे ॥ सुणो नूपाला ॥ इम वांची वारे जुझ हो ॥ मन हरखाला ॥ वत्स वत्स

कही भेटीयो रे॥ सहु भूपाला ॥ अति हर्षे लही ते गुरु हो ॥ हवे बीबे वाला ॥ १४ ॥ बीजी बीजा खंममां रे ॥ सुणजो ढाला ॥ चोथे अधिकारे एह हो ॥ सुणो शरधाला ॥ उत्तमविजय गुरु तणी रे ॥ किरपा माला ॥ कहे पद्मविजय होय देह हो ॥ मंगलमाला ॥ १५ ॥ सर्व गाथा ॥ ४५ ॥

॥ दोहा ॥

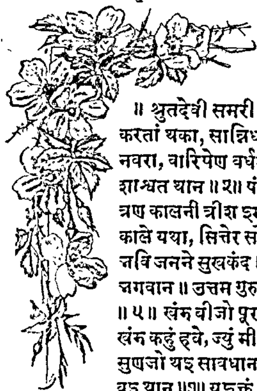
॥ आवी श्रीवसुदेवजी, प्रणमे ततक्षण पाय ॥ समुद्रविजय राजा हवे नाखे सुण हे जाय ॥ १ ॥ शत वरसां लगे किहां रह्यो, तव कहे श्रीवसुदेव ॥ गुरथी मांमी ते सुणी, ते हरखे ततखेव ॥ २ ॥ शूरधीर राय हर्षित सुणी, वसुदेव अधिकार ॥ कोप जरासिंधज तणो, शमीयो तिणहीज वार ॥ ३ ॥ सहु राजा मली तेहने, परणावे धरी प्रेम ॥ देइ सन्मान विसर्जीया, सहु राजा सुखक्षेम ॥ ४ ॥ यादव संवछर लगी, रहे ते साथे कंस ॥ श्री वसुदेव तणी करे, सघला जन परशंस ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ मदनेश्वर मुख बोले ब्रटकी ॥ ए देशी ॥ पूछे श्रीवसुदेव एकांते, मनमां आणी भ्रांति हे ॥ मनमोहन वाणी, नाखे इणी परे हर्षशुं ॥ ए आंकणी ॥ *सांभल तुं नार सनूरी, तुं रूपे न अधूरी हे ॥ मन० ॥ १ ॥* बीजा रायने तुं नवि परणी, केम थइ माहरी घरणी हे ॥ म० ॥ तव ते बोली रोहिणी नारी, वात सुणो तुमे सारी हे ॥ मन० ॥ २ ॥ प्रज्ञप्ति विद्या मुफ पासे, करती निल विलासे हे ॥ म० ॥ मुफने ते विद्या कहे एम, वसुदेव तुफ पति नेम हे ॥ म० ॥ ३ ॥ पफह बजावण वेशे जाणे, आवशे ते मन आणे हे ॥ म० ॥ ते कारण में तुफने वरीयो, बीजो पति नवि करीयो हे ॥ म० ॥ ४ ॥ समुद्रविजयजी निज घर आव्या, साथे परिजन लाव्या हे ॥ म० ॥ एक दिन जोमी सना मांहि बेठा, मंत्री अमात्य बहु शेठा हे ॥ म० ॥ ५ ॥ अर्द्ध जरती नारी कोइ आवी, देखे सहु जन चावी हे म० ॥ गगन थकी उतरी इम नाखे, वसुदेवने सहु साखे हे ॥ म० ॥ ६ ॥ धनवती माहरुं नाम ते जाणो, हुं आवी इण गाणो हे ॥ म० ॥ हुं तो बालचंद्रा नारीनी जननी, ते तो हरणी मननी हे ॥ म० ॥ ७ ॥ बालचंद्रा ने वली वेगवती ते, तुफ वियोग जोगवती हे ॥ म० ॥ तुम्हने तेमवा

आवी स्वामी, चाखो कहुं शिर नामी हे ॥ म० ॥ ८ ॥ समुद्रविजय सनमुख निरखे, तव राय चितडुं परखे हे ॥ म० ॥ जाउं सुखे पण वहेला आवो, वार घणी मत लावो हे ॥ म० ॥ ९ ॥ गगनवल्लभपुर पहोतो वेगे, वसुदेव अतिहि विवेगे हे ॥ म० ॥ समुद्रविजयजी जोवे नित, वाट ते घणुंज विनीत हे ॥ म० ॥ १० ॥ बालचंद्रा परणा तिहां जाइ, कन्या सहु एम गाइ हे ॥ म० ॥ भूचर खेचरशुं परवरीयो, मानुं अपार ए दरियो हे ॥ म० ॥ ११ ॥ शौरीपुर मांहि आव्या हरखे, मलीया सज्जन सहु निरखे हे ॥ म० सहु नारी तिहां विजोग ते भागा, पहेरे सखरा वाघा हे ॥ म० ॥ १२ ॥ बीजे खंडे इणी परे भाखी, ढाल त्रीजी चित्त राखी हे ॥ म० ॥ संपूरण चोथो अधिकारो, हुउं हर्ष अपारो हे ॥ म० ॥ १३ ॥ खंड बीजो संपूरण हुउं, चोद ढाल पूरी जुउं हे ॥ म० ॥ बीजे अधिकारे दश रुडी, त्रीजे पणवीशनी कुंडी हे ॥ म० ॥ १४ ॥ चोथे अधिकारे त्रण ढाल, सवि बावन सरवाल हे ॥ म० ॥ एकसो एक बइ दोय खंडे, भाखी रंग अखंडे हे ॥ म० ॥ १५ ॥ सत्यविजय पंडित वैरागी, कपूरविजय वडभागी हे ॥ म० क्षमाविजय तस शिष्य सोभागी, शुभ मति जेहनी जागी हे ॥ म० ॥ तास शिष्य जिनविजय ने त्यागी, जिनधर्मे मति लागी हे ॥ म० ॥ १६ ॥ शिष्य गुरु उत्तमविजयो, जगत मांहि जे विजयो हे ॥ म० ॥ नाम जय गुरु ज्ञान दमारा, तस कहेणथी प्यारा हे ॥ म० ॥ १७ ॥ रत्नविउद्यम कीधो, जग जसवाद प्रसिद्धो हे ॥ म० ॥ १८ ॥ चोपाई ॥ खंड रस अधिको घणो, श्रीजिन नेमिचरित्र तणो ॥ गुरु श्रीउत्तमविज वर्षो छद्यो, बीजो खंड इम पद्म कह्यो ॥ १ ॥ इति गद्दिणीवरिणयनो नाम चतुर्थोऽधिकार समाप्त ॥ ४ ॥ सर्व गाथा ॥ ६८ ॥ प्रथमाधिकारे ४७७ ॥ द्वितीयाधिकारे ॥ ४०४ ॥ तृतीयाधिकारे ॥ ७३१ ॥ चतुर्थाधिकारे ॥ ६८ ॥ सर्वस्मिन् संख्या ॥ १३३८ ॥ द्वितीयखंडे ॥ प्रथमखंडे १६४७ ॥ उभयोर्खंडयोर्मिलित्वा ॥ ३३८५ ॥ इति श्रीविजिनानंदसूर्वादिपंडितोत्तमउत्तमविजय शिष्यपंडितपद्मविजयविरचिते प्राकृतप्रबंधे श्रीमज्जिनचरित्रे समाप्तो द्वितीय खंड ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीयखंडस्य प्रथमोऽधिकारः प्रारभ्यते ॥



॥ दोहा ॥

॥ श्रुतदेवी समरी करी, ज्ञान तणी दातार॥ ज्ञानगोष्ठि करतां थका, सान्निध करो संजार ॥१॥ रूपज चंद्रानन जिनवरा, वारिषेण वर्धमान ॥ शाश्वत नामे जिनवरु, नमतां शाश्वत थान ॥ २॥ पंच नरत ऐरावते, चोवीशी दश जोय॥ त्रण कालनी त्रीश इम, नमतां पातक खोय ॥ ३ ॥ उत्कृष्टे काले यथा, सित्तेर सो जिनचंद॥ पदकज प्रणमुं तेहनां, नवि जनने सुखकंद ॥ ४ ॥ सीमंधर प्रमुखा नमुं, विहरमान नगवान ॥ उत्तम गुरु पदकज नमुं, नवोदधि जहाज समान ॥ ५ ॥ खंड बीजो पूरण कस्यो, करी उद्यम परचंड ॥ त्रीजो खंड कहुं हवे, ज्युं मीश्रीना खंड ॥६॥ निद्रा प्रचला परहरी, सुणजो थइ सावधान ॥ बांधे कर्म सत्त थड प्रते, बोले नगवइ थान ॥७॥ यदुक्तं नगवत्यंगे ॥ जीवेणं नंते निद्दायमाणे, पयलायमाणेवा ॥ किति कम्म पगडिओ बंधइ, गोयमा सत्तविह बंधपवा अठविह बंधपवा ॥ १ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ रूप न धरीये लालन, रूप न धरीये ॥ ए देशी ॥ हस्तिनागपुर नयरी अति सोहे, जे देखी सुरवर मन मोहे ॥ लालन वर मन मोहे ॥ कोइक शेठ वसे तिण गामे, तेहने सुत थयो ललित नामे ॥ ला० ॥ ल० ॥ १ ॥ माताने घणुं वल्लन तेह, वली एक गर्ज ते तेहने देह ॥ ला० ॥ ते० ॥ डुःखदायक घणुं पीमाकारी, विविध उपाय करे पाडवा नारी ॥ ला० ॥ पा० ॥ २ ॥ तोपण गर्न पमे नहीं तास, अनुक्रमे जनम थयो सुविलास ॥ ला० ॥ थ० ॥ नाखी देवा दासीने आपे, देखी शेठ ते पूठत आपे ॥ ला० ॥ पू० ॥ ३ ॥ जेहवी वात हती तेम नाखी, गानो ते पुत्रने शेठजी राखी ॥ ला० ॥ शे० ॥ गंगदत्त तस नाम ते दीधुं, ललित ने शेठ बे जाणे जे कीधुं ॥ ला० ॥ जा० ॥ ४ ॥ ललित कहे निज तातने एम, नाखी

नेला जमीये ते प्रेम ॥ ला० ॥ ज० ॥ शेठ कहे माता तुझ देखे, ललित कहे करुं जेम नवि पेखे ॥ ला० ॥ जे० ॥ ५ ॥ आगल वेहु जण बेसी आपे, जोजन तेहने जाजने थापे ॥ ला० ॥ जा० ॥ इम करतां तस माता जाणे, मनमां द्वेष ते अधिकेरो आणे ॥ ला० ॥ अ० ॥ ६ ॥ काली केश ने कूटी काढे, ललित ने शेठ उद्द्वाणा गाढे ॥ ला० ॥ उ० ॥ इण अवसर मुनि दोय गोचरीए, आव्या देखी हर्ष ते जरीये ॥ ला० ॥ ह० ॥ ७ ॥ पूछे तेहने प्रणमी पाय, ललित ने शेठने मोद न माय ॥ ला० ॥ मो० ॥ वेरनुं कारण तव मुनि एक, जाखे सांजलो धरीय विवेक ॥ ला० ॥ ध० ॥ ८ ॥ ये जाइ एक गामे वसता, काष्ट लेवा एक दिन नीकसता ॥ ला० ॥ दि० ॥ गामी जरीने मद्दोटो जाइ, सापण देखे आगल आइ ॥ ला० ॥ आ० ॥ ए ॥ लेहुने कहे गंत्री राखो, सापण उगारी सुख चाखो ॥ ला० ॥ री० ॥ तव सापणने करी विश्वास, अनुज तिहां आव्यो अनु तास ॥ ला० ॥ आ० ॥ १० ॥ अग्रजे तो एहने उगारी, हुं तो जाउं एहने मारी ॥ ला० ॥ ए० ॥ सापण चिंते मारो ए वेरी, मरण लही इम करतां केरी ॥ ला० ॥ क० ॥ ११ ॥ तेह सापण ए ताहरी नार, ज्येष्ट जाइ थयो ललित कुमार ॥ ला० ॥ ल० ॥ गंगदत्त लघु जाइ जाणो, पूरव कर्म ते एम वखाणो ॥ ला० ॥ ए० ॥ १२ ॥ पामी वैराग्य ने दीक्षा लेवे, शेठ ललित महा शुक्रे सुर होवे ॥ ला० ॥ शु० ॥ नानजीव नरनव अही सीधो, गंगदत्त मान अनिष्ट प्रसिद्धो ॥ ला० ॥ अ० ॥ १३ ॥ करी नियाणुं ने चरण विराधे, थाजो सहुने हुं इष्ट ए साध ॥ ला० ॥ हुं० ॥ गंगदत्त पण तिहां उप्पन्न, रोहिणी उदरे ललित निप्पन्न ॥ ला० ॥ ल० ॥ १४ ॥ चार सुपन देखे तिहां राणी, गज शशी सिंह समुद्रनुं पाणी ॥ ला० ॥ स० ॥ हलधर जनमने सूचवे तेह, सुत मांहि पेमनां देख जेह ॥ ला० ॥ दे० ॥ १५ ॥ रोहिणी रोहिणीरवि सम वदना, पुत्रने प्रसवे दाडिमकली रदना ॥ ला ॥ दा० ॥ अभिराम राम नाम तस थाप्युं, नाम शरीर कलाए माप्युं ॥ ला० ॥ क० ॥ १६ ॥ कंस समुद्रविजय वसुदेव, वेठा करे सहु अग्रज सेव ॥ ला० ॥ अ० ॥ नारद ऋषीश्वर तेहवे आया, उना थइ आदर बहु दाया ॥ ला० ॥ आ० ॥ १७ ॥ क्षण रहीने उत्पतिया आकाशे, कंस राजा तव इयो परे नापे ॥ ला० ॥ ६० ॥ कोण अत्रे स्वामी कहो एह, समुद्रविजय कहे सांजलो तेह ॥ ला० ॥ सां० ॥ १८ ॥ पुर बाहिर जझजश अभिराने, ब्रह्मदना नार

शुभ वाने ॥ ला० ॥ ना० ॥ सुमित्र नाम नंदन थयो तास, सोमजशा नारी सुविलास ॥ ला० ॥ ना० ॥ १ए ॥ तेहनी कूखे ए नारद आयो, बहु तापस मलीने हुलरायो ॥ ला० ॥ म० ॥ जृंजक देव मांहिथी तेह, बालक उपनो वधते सनेह ॥ ला० ॥ व० ॥ २० ॥ सहु तापस गया एक दिन वार, बालक एकलो मूकी ते ठार ॥ ला० ॥ मू० ॥ जृंजक देवता देखे तास, अवधिज्ञाने जाएयो मित्र ते खास ॥ ला० ॥ मि० ॥ २१ ॥ लेइ चाल्या बालकने तेह, मूक्यो वैताढ्ये धरी नेह ॥ ला० ॥ वै० ॥ थंजावी ठाया ते अशोक, हेठल थाप्यो जुं रह्यो उंक ॥ ला० ॥ जुं० ॥ २२ ॥ जृंजक देवता तेहने पाले, वैताढ्य गिरिकंदरा अजुआले ॥ ला० ॥ द० ॥ आठ वरसनो ते थयो जेते, विद्या शिख्यो अतिशय तेते ॥ ला० ॥ अ० ॥ २३ ॥ प्रज्ञप्ति मुख विद्याए ए वलीयो, नवमा नारदमां एह जलीयो ॥ ला० ॥ ए० ॥ चरमशरीरी जाख्यो एह, कंसने समुद्रविजय कहे नेह ॥ ला० ॥ वि० ॥ २४ ॥ मुनि सुप्रतिष्ठ मुजने जाख्युं, ते में तुज आगल इम दाख्युं ॥ ला० ॥ आ० ॥ होय कलेश अति प्रिय एहने, नवि रहे एकण थानक केहने ॥ ला० ॥ था० ॥ २५ ॥ त्रीजे खंडे प्रथम अधिकारे, पहेली ढाल जाखी जयकारे ॥ ला० ॥ जा० ॥ पंमित उत्तमविजयनो शिष्य, पद्मविजय कहे विशवावीश ॥ ला० ॥ वि० ॥ २६ ॥ सर्व गाथा ॥ ३३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कंस कहे वसुदेवने, मुज पुर आवो स्वामी ॥ आणा मागी रायनी, चाल्या मथुरा गाम ॥ १ ॥ वली वसुदेवने इम कहे, मृत्तिकावती पुर सार ॥ देवक नामे राजीयो, मुज पीतरीयो धार ॥ २ ॥ देवकी नामे तेहने, कन्या रूप-निधान ॥ परणो स्वामी तेहने, हुं तुम्ह अनुचर थान ॥ ३ ॥ कंस साथे लेइ गया, श्रीवसुदेवजी जाम ॥ मारग नारद ऋषि मव्या, पूठे इम ऋषि ताम ॥ ४ ॥ किणी कारण किहां जाउं ठो, नारदने कहे एम ॥ देवक राय तणी धुया, देवकी परणवा प्रेम ॥ ५ ॥ वसुदेवने परणावशुं, इणी परे जाखे कंस ॥ नारद कहे आगल जइ, करुं वसुदेव प्रशंस ॥ ६ ॥ इम कही जइ देवकी कने, करतो तास प्रशंस ॥ उचित योग वसुदेवनो, जाखुं तुमने अंश ॥ ७ ॥ पूठे तव इम देवकी, कुण ते श्रीवसुदेव ॥ तव नारद कहे देवता, जेहनी करता सेव ॥ ७ ॥ यादववंशे उपनो, वय युवान गुणवंत ॥ सुरमां पण ए सारिखुं, रूप नहीं कोइ कंत ॥ ए ॥ इम कही नारद ऋषि गया, आव्या शौरि कंस ॥

आपे आसन आदरे, देवक राय शुज वंश ॥ १० ॥ आगम कारण पूठीयुं, कंस कहे इम ताम ॥ श्रीवसुदेवने देवकी, परणावो इण गाम ॥ ११ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ तुमे पीतांबर पहेरो जी, मुखने मरकलडे ॥ ए देशी ॥ हवे नाखे देवक राय जी, नहीं परणावीये ॥ कन्याने अरथे साहमो जी, वर केम लावीये ॥ इम सांजलीने विलखाणा जी, पहोता निज डेरे ॥ जाय अंतेउरमां राजा जी, देवक एणी परे ॥ १ ॥ राणीने नाखे इम जी, कंस ते आवीयो ॥ वसुदेव ते देवकी काजे जी, साथे लावीयो ॥ में तो कह्यो तास निषेध जी, तव उठी गया ॥ ते सांजली करय विषाद जी, दिलमां धरी मया ॥ २ ॥ तव देवक राये जाएयो जी, नाव धुवा तणो ॥ कहे राय विषाद न कीजे जी, वसुदेवने परणो ॥ वसुदेव कंसने तेमी जी, आदर आपीया ॥ पुएय दिवसे परणयां तेह जी, मंगल थापीयां ॥ ३ ॥ दश गोकुल नंद गोवाल जी, आपे एहने ॥ बहु स्वर्णादिकनुं दान जी, आपे एहने ॥ मथुरा नगरीए आव्या जी, कंस वसुदेव ॥ करे नयरीमां उछव कंस जी, प्रेम थकी हेव ॥ ४ ॥ अयमंतो ऋषि एक दिन जी, कंस घरे आयो ॥ पारण दिन गोचरी काजे जी.नपथी मोहायो ॥ नव जीवजशा मदवंती जी.वलगी उठली ॥ देवर जले आव्या आज जी.एम कहे वली वली॥५॥ आज उछव दिवस छे सारो जी, मीये हेवशुं ॥ इम बहु उपजाव्यो त्रास जी. खेद उदवेगशुं ॥ तव बोल्या ज्ञानी ध्यानी जी. उछव जेहनो ॥ ६ ॥ मानमा गर्नथी होशे जी. तुज नात पति हणनारो जी, गर्न जे देग तन नाठी जी. एम काने सुणी ॥ नयथी लवी ॥ थाये वज्र मोघ मुनि वाणी जी. मूके नेह मुणी ॥ जइ कंसने तेह सुणावे जी, ते पण सांतें गर्न जी. नवि होवे वली ॥ ७ ॥ जइ अन्य उगाय वहेला ॥ कोइ जएया पहेलां ॥ नहीं आपे तो वली करशुं वसुदेव करे परणासा जी. इम चिंती कंस ते जाये जी, वसुदेवनी पासे सांजलो मुज वाणी ॥ उठी उल्लासे ॥ ८ ॥ कर जोडी कंस ते नाखे ॥ तुम जानमात्र सात गर्न जी. मुज जीवजशा परणावी जी, करुणा बहु जी. आपुं तुजने ॥ ९ ॥ देवकी पण माने वातो जी. आपो मुजने ॥ वसुदेव कहे इम वात सुणी वसुदेवे जी, साची सद्दही ॥ छलीया कंसे ए वाते जे कंसे कही

जी, मुजने भोलव्यो ॥ हवे करीये किश्यो उपाय जी, इम मन भोलव्यो ॥ १० ॥ इण अवसरे भद्दिलनयरे जी, नाग ते व्यवहारी ॥ सुलसा नामे तस नारी जी, श्रावक व्रतधार ॥ अयमंता रुपिए भाख्युं जी, ए निंदु नारी ॥ हरिणगमेषी आराध्यो जी, तन्मय थइ प्यारी ॥ ११ ॥ जब तुष्टमान थयो तेह जी, तव सुलसा मागे ॥ मुज आपो पुत्र ते स्वामी जी, चित्तशुं धरी रागे ॥ तव बोले देवता तेह जी, सांजल रे बाइ ॥ देवकीना पुत्र ते देशुं जी, तुजने हुं लाइ ॥ १२ ॥ जे कंसे माग्यो तेह जी, मारणने काजे ॥ इम कही रुतुवंती साथे जी, देव करे साजे ॥ बेहुए प्रसव्या पुत्र जी, साथे तेहमां ॥ मृतबालक सुलसा पामे जी, हवे जुर्ज एहमां ॥ १३ ॥ लेइ देवकी गर्भ ते आप्या जी, सुलसाने सारा ॥ सुलसा गर्भ ते मूक्या जी, देवकीने न्यारा ॥ ते आपे कंसने गर्भ जी, मृतबालक देखी ॥ शिला उपर पछाडे जी, तेहने उवेखी ॥ १४ ॥ सुलसाने घर ते वधता जी, पुत्र परे पाले ॥ तस नाम अनीकजश बीजा जी, अनंतसेन भाले ॥ वली अजितसेन निहतारि जी, देवजशा नाम ॥ छठा शत्रुसेन ते जाणो जी, रूप कला धाम ॥ १५ ॥ रुतुस्नान कस्तुं देवकीए जी, एक दिन सुविलासे ॥ एह सात सुपन ते देखे जी, मनने उल्लासे ॥ सिंह सूर्य अग्नि ध्वज जाणो जी, वली एक गज राजे ॥ वली पद्म सरोवर छठे जी, देवविमान छाजे ॥ १६ ॥ देखे ते रजनी अंते जी, गंगदत्त रुडो ॥ चवी शुक्र थकी ते आयो जी, सूचत नहीं कूडो ॥ श्रावण वदि आठम जायो जी, देव सान्निध करे ॥ मूक्या हता जे रखवाला जी, तस निद्रा धरे ॥ १७ ॥ जेम विष खाइने सूता जी, तेम ऊंघी गया ॥ ए पुण्य प्रबलनो जोरो जी, देव पद्धे थया ॥ तेमी वसुदेवने भाखे जी, कंस ते पापीयो ॥ कूप मांहि आपण फांसी जी, दोर ते कापीयो ॥ १८ ॥ सहु पुत्रने एह तो मारे जी, शुं करीये हवे ॥ जइ नंदगोकुलमां मूको जी, पुत्र ए तो रहेवे ॥ रुडुं रुडुं एम भाखे जी, सुत निज कर लेइ ॥ देव छत्र करे शिर तास जी, चामर करे केइ ॥ १९ ॥ करे मंगलदीवा आठ जी, मारग अजुआले ॥ देवता तिहां द्वार उघाडे जी, पण को नवि भाले ॥ देखे उग्रसेन ते राय जी, पूछे इणी परे ॥ शुं अचरिज एह उदारे जी, कहे रह्या पंजरे ॥ २० ॥ तुज वयरी हणशे जेह जी, ते एह जाय छे ॥ मत कोइ आगल तुमे कहेजो

जी, तस महिमाय ते ॥ हवे नंद गोपाल घरे पोहतो जी, तस घर तिण समे ॥ पुत्री प्रसवे ते जशोदा जी, नारी अति प्रेमे ॥ २१ ॥ तस पुत्री लेइ आपे जी, पुत्र ते आपनो ॥ जस पुण्य प्रबल होय पोते जी, चारो न पापनो ॥ त्रीजे खंडे पहेले अधिकारे जी, ढाल बीजी कही ॥ मुनि पद्मविजय मनरंगे जी, भविजने सद्दही ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ ६६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ देवकीने पुत्री दीये, श्रीवसुदेवजी आय ॥ पूछे रक्षक पुरुष ते, कहो आव्युं तुम कांय ॥ १ ॥ देखावे तव ते धुया, कंस धुणावे शीश ॥ एह गरज मुझ मारशे, नारीमात्र ते कीश ॥ २ ॥ एहने मारे शुं होये, नाक कान करी छेद ॥ देवकीने पाछी दीये, देखीने स्त्रीवेद ॥ ३ ॥ अंग कुब्ज माटे हवे, कुब्ज थोखावे नाम ॥ देव घणा सान्निध करे, नंद गोवालने धाम ॥ ४ ॥ देवकी कहे वसुदेवने, जाउं जोवा पुत्त ॥ कहे वसुदेवजी सांभलो, एक अमारुं उत्त ॥ ५ ॥ सहसा जातां जाणशे, कंस तुमारी वात ॥ कोइ कारण उद्देशीने, जावुं जुगतुं थात ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ गो वाछरुआं चारती, आहिरनो अवतार ॥ ए देशी ॥ बहु नारीशुं परवरी, गोकुल पूजवा जाय ॥ मनना मोहनीया ॥ अनुक्रमे पहोती देवकी, जिहां जशोदा धाय ॥ मनना मोहनीया ॥ १ ॥ श्रीवछे उर सोहतुं, नील कमल सम काय ॥ मन० ॥ लक्षण लक्षिन देहनी, देखी आणंद थाय ॥ मन० ॥ २ ॥ मन चिंते इम देवकी, हुं पापी शिरदार ॥ मन० ॥ एहवा पुत्र वियोगथी. हुं रहुं नित घर बार ॥ मन० ॥ ३ ॥ धवरावी पण नवि शकुं. आव्यां कीधां पाप ॥ मन० ॥ धन्य जशोदा एहने, एह रमाडे आप ॥ मन० ॥ ४ ॥ इम गोकुल नित पूजवा, मिप करी जाये तेह ॥ म० ॥ पुत्र रमाडी मोदशुं. आवे ते निज गेह ॥ मन० ॥ ५ ॥ सूर्पक विद्याधर तणी. आवे पुत्री दोय ॥ मन० ॥ विषमिश्रित थण आपती. कृष्णमुखे ते ॥ मन० ॥ ते शकटे हणी तेहने, करतां कृष्णनी सेव ॥ मन० ॥ ६ ॥ शकट रच्युं जव मारवा. तव तिहां आवी देव ॥ मन० ॥ ७ ॥ नंद जशोदाने कहे, देखी अचरिज तेह ॥ मन० ॥ सूनो नवि मूको तुमे, पुत्र ते गुणनुं गेह ॥ मन० ॥ ८ ॥ ढलना मूकी घृत घरो. पण नवि जाउं

क्यांहि ॥ मन० ॥ आलिंगे ते पुत्रने, मनमां धरी उछांहि ॥ मन० ॥ ॥ ए ॥ पण चपलाइ अति घणी, उख करी नासी जाय ॥ मन० ॥ उदर दामे करी बांधती, उखला साथे माय॥मन०॥ १०॥ दामोदर नामज थयुं, ते दिनथी परसिद्ध ॥ मन० ॥ सूर्पकसुत तिहां आवीयो, जस बहु विद्या सिद्ध ॥ मन० ॥ ११ ॥ अर्जुन वृक्ष विकुर्वीने, जमल परस्पर थाप ॥ ॥ मन० ॥ उखलथी तिहां लावीयो, हणवा मांडे आप ॥ मन० ॥ १२ ॥ तिणे समे आवी देवता, नांज्यो अर्जुन रुंख॥मन० ॥ जमलार्जुन उन्मूलीया, दूर कखुं ते दुःख ॥ मन० ॥ १३ ॥ आवे तिहां गोपांगना, उर अंके शिर धारी ॥ मन० ॥ रात दिवस नवि वेगली, रहे ते गोपनी नारी ॥ मन० ॥ १४ ॥ दूध दहीं लूंटी लीये, कृष्ण ते चपल अपार ॥ मन० ॥ महियारी पासे थकी, घृत लेइ जाय किंवार ॥ मन० ॥ १५ ॥ पण स्नेहे वारे नहीं, कौतुकथी ते नार ॥ मन० ॥ करे प्रहार ढोली दीये, तेह दधि दधिसार ॥ मन० ॥ १६ ॥ उलंजो दीये नंदने, आवी गोपनी नार ॥ ॥ मन० ॥ पण घरे राखी नवि शके, देखी सुत गुणधार ॥ मन० ॥ १७ ॥ दिन दिन बलथी वाधतो, वात सुणे वसुदेव ॥ मन० ॥ विद्याधरी खेचर तणी, तेह मुवां ततखेव ॥ मन० ॥ १८ ॥ मन चिंते वसुदेवजी, गोप्यो पण न गोपाय ॥ म० ॥ बल देखे जो एहनुं, कंस ते करशे अपाय ॥ मन० ॥ १९ ॥ तेडावी बलदेवने, शीखामण देइ तास ॥ मन० ॥ कृष्णरक्षाने कारणे, मूके तेहनी पास ॥ मन० ॥ २० ॥ दश धनु उंचा ते विहु, सुंदर जस आकार ॥म०॥ काम मूकी घरनां सहु, जुवे अनिमेष विकार ॥ मन० ॥ २१ ॥ बलदेवनी पासे नणे, कृष्ण कलाभंमार ॥ म० ॥ कला बहोंतेर पारंगमी, कृष्ण ते पुण्य अपार ॥ मन० ॥ २२ ॥ कोइ काले मित्रज होये, आचारय कोइ काल ॥ मन० ॥ न खमे ते एक एकनो, विरह ते क्षण संनाल ॥ मन० ॥ २३ ॥ पुत्र महे रुपनज तणुं, बलवंतो महावीर ॥ म० ॥ देखी तस बलरामजी, थाये उदासीन धीर ॥ मन० ॥ २४ ॥ त्रीजी त्रीजा खंमनी, ढाल प्रथम अधिकार ॥ मन० ॥ गुरु उत्तम किरपा थकी, पद्मने जय जयकार ॥ मन० ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ केइ बहु गोपांगना, मन्मथ प्रेरी जाय ॥ ज्युं भ्रमरी कज उपरे, चोफेर लपटाय ॥ १ ॥ गाय दुहे गोपांगना, मन श्रीकृष्णनी पास ॥

भाजन विनु हेतुं डहे, खबर ते न पमे तास ॥२॥ दधि मथतां करे वात-
नी, घृत तपावतां तास ॥ जमतां बेठां उठतां, कृष्ण तणे मन पास ॥३॥
गीत गाय नाटक करे, सिंडुवारादिक दाम ॥ गुंथी स्वयंवरनी परे, थापे
कंठ उद्दाम ॥ ४ ॥ जेह तेह प्रकारथी, ध्यावे कृष्ण मन मांहि ॥ दूध दहीं
घृत लूंटतो, तिहां पण कृष्ण उछांहि ॥ ५ ॥ गोपी उलंजो दीये, देखी
एहवी वात ॥ तुं तो आव्यो किहां थकी, जिणे अम लूंटी जात ॥ ६ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ तुं तो किहांनो रसीयो रे ॥ मारा नंदना वाला ॥ मारग आवी वसीयो रे ॥
मारा नंदना वाला ॥ ए देशी ॥ गोपी कहे इम वातो रे ॥ मारा नंदना वाल्हा
अमने लूंटी जातो रे ॥मा०॥ मानुं ते किहांनो दाणी रे ॥मा०॥ दहींनी दोणी
जाणी ॥ मा० ॥ १ ॥ तुं ते किहांनो ठाकर रे ॥ मा० ॥ चांपे अमशुं चाकर
रे ॥ मा० ॥ तुं ते किहांनो शेठो रे ॥ मा० ॥ अम डुःख देवा बेठो रे ॥ मा० ॥
॥ २ ॥ तुकने केणे मान्यो रे ॥ मा० ॥ अम दधि लूंटवा आव्यो रे ॥
॥ मा० ॥ तुं ते किहांनो स्वामी रे ॥ मा० ॥ अमची दोणी नामी रे ॥ मा० ॥ ३ ॥
जो तुक कंस ते जाणे रे ॥ मा० ॥ तो तुक शिक्षा दाणे रे ॥ मा० ॥
अमने मत तुमे ठेको रे ॥ मा० ॥ केम पकडो अम केको रे ॥ मा० ॥ ४ ॥
नंदने जइ जव कहेशे रे ॥ मा० ॥ नंद ते ठपको देशे रे ॥ मा० ॥ गोपी इणी
परे जापे रे ॥ मा० ॥ मनने गमे ते आखे रे ॥ मा० ॥ ५ ॥ आवी रामने
साखे रे ॥ मा० ॥ अमे कहुं तुमची साखे रे ॥ मा० ॥ दीठां हरतो चित्तडुं
रे ॥ मा० ॥ एहवुं अमने हितडुं रे ॥ मा० ॥ ६ ॥ अणदीठां जाय प्राण रे
॥ मा० ॥ कृष्ण ते काले बाण रे ॥ मा० ॥ मोरली वजावे कान्ह जी रे ॥
॥ मा० ॥ अमची हरनो शान जी रे ॥ मा० ॥ ७ ॥ इम उलंजो रामने रे ॥
॥ मा० ॥ फोडे अमचा ठामने रे ॥ मा० ॥ इम क्रीमा करतां गया रे ॥ मा० ॥
बहु दिन आणे सहु मया रे ॥ मा० ॥ ८ ॥ शौरीपुर हवे जाणो रे ॥ मा० ॥
॥ समुद्रविजय नस राणो रे ॥ मा० ॥ घरमां सुख जोगवता रे ॥ मा० ॥
मणिदीवा कलकलता रे ॥ मा० ॥ ए ॥ रुडी मोतीमाला रे ॥ मा० ॥
टके चोक विशाला रे ॥ मा० ॥ कृष्णागरु जिहां दाके रे ॥ मा० ॥ गंध
आवे जाके रे ॥ मा० ॥ १० ॥ कुसुम तणा तिहां ढगला रे ॥ मा० ॥
मणिक थानक सघलां रे ॥ मा० ॥ महोटी शय्या उर्ली रे ॥ मा० ॥

कोमल माखण रूमी रे ॥ मा० ॥ ११ ॥ सूती शय्या राते रे ॥ मा० ॥ शिवादेवी सुखशाते रे ॥ मा० ॥ पाछली राते देखे रे ॥ मा० ॥ चौद सुपन मन हरखे रे ॥ मा० ॥ १२ ॥ चोदंतो गजराज रे ॥ मा० ॥ बीजे वृषभ समाज रे ॥ मा० ॥ सिंह लांगुल उछालतो रे ॥ मा० ॥ त्रीजे सुपन सोहावतो रे ॥ मा० ॥ १३ ॥ लखमी फूलमाला जली रे ॥ मा० ॥ चंद्रकला अति निर्मली रे ॥ मा० ॥ दिनकर ध्वज ते सोहतो रे ॥ मा० ॥ कनककलश मन मोहतो रे ॥ मा० ॥ १४ ॥ पद्म सरोवर जाणीये रे ॥ मा० ॥ सागर मनमां आणीये रे ॥ मा० ॥ वली विमान ते बारमे रे ॥ मा० ॥ रत्नराशि कही तेरमे रे ॥ मा० ॥ १५ ॥ धूमरहित अग्नि कही रे ॥ मा० ॥ चौदमे सुपने राणी लही रे ॥ मा० ॥ जागी पीयु पासे जइ रे ॥ मा० ॥ जाखे सुपनां ते सइ रे ॥ मा० ॥ १६ ॥ चोथी त्रीजा खंडनी रे ॥ मा० ॥ ढाल ते रंग अखंमनी रे ॥ मा० ॥ पहेले अधिकारे कही रे ॥ मा० ॥ पद्मविजय जवि सईही रे ॥ मा० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा ॥ १२० ॥

॥ दोहा ॥

॥ समुद्रविजय राजा कहे, सुपन तणुं फल रोक ॥ सुत होशे शुभ लक्षणो, कुलदीपक गतशोक ॥ १ ॥ तेह सुणी हर्षित थइ, तेह शिवादेवी नार ॥ राजा पण प्रमुदित थया, समुद्रविजय तिण वार ॥ २ ॥ मंत्री सामंते परवस्यो, बेठो सजा मजार ॥ पूछे कौटुक निमित्तिउं, जाव कहे इम सार ॥ ३ ॥ इण अवसर चारण मुनि, शमतावंत महंत ॥ तपतापित जस देहमी, आव्या ते गुणवंत ॥ ४ ॥ तव राजा जजो थइ, आपे आसन तास ॥ प्रणमी परिगल जावशुं, बेठा मुनिनी पास ॥ ५ ॥ राय निमित्तिउं विहु जणा, करकज जोमी जाम ॥ पूछे सुपन विचार ते, मुनिवर जाखे ताम ॥ ६ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ नारी ते पीयुजीने विनवे हो राज ॥ ए देशी ॥ मुनिवर जाखे इण परे हो राज, आठ प्रकारे निमित्त ॥ वारी मोरा साहिबा ॥ अंग सुपन स्वर जाणीये हो राज, उत्पाद चोथुं चित्त ॥ वा० ॥ १ ॥ अंतरिक्ष जोम वली हो राज, व्यंजन लक्षण एह ॥ वा० ॥ तेहमां सुपन निमित्त कहु हो राज, सुख ःख आपे तेह ॥ वा० ॥ २ ॥ वहोंतेर सुपनां जाखीयां हो राज, हीणां तेहमां त्रीश ॥ वा० ॥ बहेंतालीश उत्तम कह्यां हो राज, तेहम

महोटां त्रीश ॥ वा० ॥ ३ ॥ तेह त्रीश मांहे थकी हो राज, चक्री तीर्थंकर माय ॥ वा० ॥ चोद सुपन देखे जलां हो राज, जब ते गर्भे आय ॥ वा० ॥ ४ ॥ माता श्रीवासुदेवनी हो राज, देखे सुपनां सात ॥ वा० ॥ चार देखे बलदेवनी हो राज, उत्तम गर्भे मात ॥ वा० ॥ ५ ॥ मंडलिक माता खहे हो राज, तेम वली चरमज देह ॥ वा० ॥ एक देखे तस मातृका हो राज, देखे बे अथ ते ॥ वा० ॥ ६ ॥ दीठां चोद ए राणीए हो राज, तिणे जाणुं महाजाग ॥ वा० ॥ पूजित चोसठ इंद्रने हो राज, तीर्थंकर वडजाग ॥ वा० ॥ ७ ॥ चोत्रीश अतिशय राजतो हो राज, वाणी गुण पांत्रीश ॥ वा० ॥ परम पुरुष परमातमा हो राज, होशे विशवावीश ॥ वा० ॥ ८ ॥ ते कारण धन्य नृपति हो राज, तहारे घर जिनराज ॥ वा० ॥ परम शरण प्राणी तणो हो राज, करशे महोटां काज ॥ वा० ॥ ९ ॥ इम कही मुनिवर उतपत्या हो राज, राजा हर्षित अंग ॥ वा० ॥ संजलावे राणी प्रते हो राज, मुनिवच विमल ज्युं गंग ॥ वा० ॥ १० ॥ अपराजित विमानमां हो राज, तेत्रीश सागर आय ॥ वा० ॥ पालीने तिहां उपनो हो राज, शंखकुमर जीव आय ॥ वा० ॥ ११ ॥ कार्त्तिक वदि बारस दिने हो राज, चित्रा नखेतर जोग ॥ वा० ॥ त्रण ज्ञानशुं राजता हो राज, जोगवता शुज जोग ॥ वा० ॥ १२ ॥ इण अवसर आसन चल्युं हो राज, जाणी शक्रे वात ॥ वा० ॥ उठ्यो हर्ष अमंदशुं हो राज, सात आठ पय जात ॥ वा० ॥ १३ ॥ सन्मुख शक्र स्तव करे हो राज, आवे शिवादेवी पास ॥ वा० ॥ गंजीर स्वरे स्तवना करे हो राज, पामी अधिक उल्लास ॥ वा० ॥ १४ ॥ तुं धन्य तुं कृतपुण्य छे हो राज, पुरुषरतन धर्युं जेण ॥ वा० ॥ दीवो जगमां तें कर्यो हो राज, उजर्युं जुवन ते एण ॥ वा० ॥ १५ ॥ तीर्थंकर हरि तें धर्यो हो राज, उदर गुफा मांहि एह ॥ वा० ॥ जवसायर प्रवहण समो हो राज, धरीयो पुत्र ते देह ॥ वा० ॥ १६ ॥ उत्पत्ति इम जिननी कही हो राज, पूरे रत्ननिधान ॥ वा० ॥ शक्र निरंतर इम कहे हो राज, राय दीये घणां मान ॥ वा० ॥ १७ ॥ शुज दोहला तस उपजे हो राज, ते सहु पूरे राय ॥ वा० ॥ श्रावण सुदि पांचम दिने हो राज, चित्रासंगे चंद्र आय ॥ वा० ॥ १८ ॥ अर्द्ध रात्रिने अवसरे हो राज, प्रसवे पुत्ररतन्न ॥ वा० ॥ पूरव दिशि सूरय परे हो राज, करतो अतिशय यत्न

॥ वा० ॥ १९ ॥ मरकतमणि छवि जेहनी हो राज, पंकजदल सम नयण ॥ ॥ वा० ॥ प्राणी पण सहु सुख पामीया हो राज, ते वेला सुणो सयण ॥ वा० ॥ २० ॥ नारकी पण सुख पामीया हो राज, होय उद्योत तिवार ॥ वा० सुख वाया तिहां वायरा हो राज, थाय प्रसन्न दिशि सार ॥ वा० ॥ २१ ॥ पांचमी त्रीजा खंममां हो राज, ढाल प्रथम अधिकार ॥ वा० ॥ गुरु उत्तमनी सान्निधे हो राज, पद्मने जय जयकार ॥ वा० ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ १४० ॥

॥ दोहा ॥

॥ छप्पन्न दिशिकुमरी तणां, आसन चल्यां जिवार ॥ जाणी जनम जिणंदनो, दइ उपयोग तिवार ॥ १ ॥ रहेती जे अधलोकमां, आवे आठ कुमार ॥ ईशाने घर सूतिनुं, करती ते मनोहार ॥ २ ॥ संवर्त्तक वायु करी, जोजन तिहांथी एक ॥ शुद्ध करे ते भूमिका, धारी अतिहि विवेक ॥ ३ ॥ आठ आवे ऊरध तणी, वरसे पाणी फूल ॥ पूरव रुचकथी आवी अरु, दर्पण धरे अमूल ॥ ४ ॥ आवे आठ दक्षिण थकी, पूर्ण कलश लेइ हाथ ॥ गीत गान करे तिहां रही, जिनवर श्रीजगनाथ ॥ ५ ॥ आवी पश्चिम रुचकथी, विंजणो लेइ पाण ॥ आठ तिहां उभी रहे, करती गीत मंमाण ॥ ६ ॥ आठ आवी उत्तर थकी, विंजे चामर सार ॥ दर्पण हस्त लेइ रहे, विदिश रुचकथी चार ॥ ७ ॥ रुचक द्वीपथी आवती, चार देवांगना ताम ॥ चउ अंगुलथी छेदवुं, नाल ते एहनुं काम ॥ ८ ॥ खोदी खाडु तेहमां ठवे, वैडूर्य ते पुर ॥ पीठ करे ते उपरे, लेइ रत्न ते भूर ॥ ९ ॥ पूरव दक्षिण उत्तरे, जन्मना घरथी तेह ॥ निपजावे त्रण भुवनने, केलि तणां ते गेह ॥ १० ॥ अभ्यंगन दक्षिण घरे, स्नान अर्चा करे पूर्व ॥ उत्तर घरमां लेइने, आवे तेह अपूर्व ॥ ११ ॥ अरणीथी अग्नि करी, चंदननो करे होम ॥ बांधे रक्षा पोटली जिनमाता अनुमोद ॥ १२ ॥ अहो आयु पर्वत समुं, इम कही मूके नाम ॥ निज निज दिशि उभी रही, करती जिन गुणग्राम ॥ १३ ॥ देव सामानिक चउ सहस, चार महत्तरा देव ॥ सोल सहस अंगरक्षका, सात कटक तस देव ॥ १४ ॥ जोजन मान विमानमां, बेसी आवे अत्र ॥ एकेकी देवी तणो, ए परिवार सर्वत्र ॥ १५ ॥ सहु निज निज थानक गइ, हवे सुणो सोहम देव ॥ पुण्य तणुं बल जेहने, तस करे सुर नर सेव ॥ १६ ॥

॥ ढाल ठठी ॥

॥ विजा जी हो रखकूर्ड मुख सांकडो हो विजा, केम करी करुं प्रवेश
सयण रुना, वयण वाला ॥ ए देशी ॥ सुरवर जी हो अचल ते सिंहासन
चल्युं हो देवा, जाण्युं अवधे ताम ॥ धन्य मारे पुण्य पूरो ॥ ए आंकणी ॥
॥ सु० ॥ नेमि जिनेसर जनमीया हो देवा, हर्षे घणो तिणे ठाम ॥ ध० ॥
॥ १ ॥ सु० ॥ हरिणगमेषी हकारीयो हो देवा, वजनी घंटा तेह ॥ ध० ॥
॥ सु० ॥ वज्र तणी वजनावता हो देवा, तव सहु वागी जेह ॥ ध० ॥ २ ॥ सु० ॥
सहुने इम संजलावतो हो देवा, सहु सुणी हर्षित थाय ॥ ध० ॥ सु० ॥ उद्यम करे
तिहां जायवा हो देवा, आकाशे न समाय ॥ ध० ॥ ३ ॥ सु० ॥ पालक नाम
करे तिहां हो देवा, योजन लाख विमान ॥ ध० ॥ सु० ॥ बेसे इंद्र तिहां
कणे हो देवा, अग्रमहिषी पुर थान ॥ ध० ॥ ४ ॥ सु० ॥ सहस चोराशी
सामानिका हो देवा, सिंहासन तेम तास ॥ ध० ॥ सु० ॥ अभ्यंतर पर्षद
तणा हो देवा, बार सहस दक्षिण पास ॥ ध० ॥ ५ ॥ सु० ॥ मध्यम पर्ष-
दना कह्या हो देवा, चौद सहस सुर खास ॥ ध० ॥ सु० ॥ बाह्य पर्षदना
जाणीये हो देवा, सोल सहस छे जास ॥ ध० ॥ ६ ॥ सु० ॥ सात अनी-
कना अधिपति हो देवा. आतमरक्षक वली देव ॥ ध० ॥ सु० ॥ त्रण लाख
त्रीश सहस छे हो देवा. करता इंद्रनी सेव ॥ ध० ॥ ७ ॥ सु० ॥ देव
प्रमाण सिंहासनां हो देवा. बीजा पण बहु आय ॥ ध० ॥ सु० ॥ केइक
इंद्र आणा धर्यां हो देवा. केइक मित्र संचाय ॥ ध० ॥ ८ ॥ सु० ॥ केइक
नारी प्रेर्या थका हो देवा. केइक आपने भाव ॥ ध० ॥ सु० ॥ केइक को-
तुक आवीया हो देवा. केइक भक्तियें आव ॥ ध० ॥ ९ ॥ सु० ॥ वाहने
वेग बहु परे हो देवा. बाजां वजावे तेह ॥ ध० ॥ सु० ॥ कोलाहल बहु
उत्संग हो देवा. न पडे समजण जेह ॥ ध० ॥ १० ॥ सु० ॥ गजपतिने
सिंहपति कहे हो देवा दूर करो गजराज ॥ ध० ॥ सु० ॥ दुर्धर छे अमे
केसरी हो देवा हणशुं गजने आज ॥ ध० ॥ ११ ॥ सु० ॥ नागपतिने गरुड-
पति कहे हो देवा नागपतिने चित्रस्वामी ॥ ध० ॥ सु० ॥ पक्षीयो कहे
पक्षी प्रते हो देवा. दूर करो तुमे ठाम ॥ ध० ॥ १२ ॥ सु० ॥ पहोतुं
मारग पंथ हो देवा इणपरे ते आकाश ॥ ध० ॥ सु० ॥ निज मूर्छा
इ आनंद हो देवा नयन पर्की गुणग्राम ॥ ध० ॥ १३ ॥ सु० ॥ केइक

कहे उंचा रहो हो देवा, इमणां म कहो ए वात ॥ ध० ॥ सु० ॥ परव
दिवस होय सांकका हो देवा, कोइक कहे सुखशात ॥ ध० ॥ १४ ॥ सु० ॥
मौन करो कोइक कहे हो देवा, इम सहु करत कल्लोल ॥ ध० ॥ सु० ॥
नंदीश्वरे आवी करी हो देवा, करत सहु रंगरोल ॥ ध० ॥ १५ ॥ सु० ॥
विमान संखेपी आवीया हो देवा, त्रण प्रदक्षिणा देय ॥ ध० ॥ सु० ॥ प्रणमीने
इणी परे कहे हो देवा, सांजल माहरो जेय ॥ ध० ॥ १६ ॥ सु० ॥
माताजी हो जन्म मोछवने कारणे हो माता, आव्यो हुं देवेश ॥ ध० ॥ सु० ॥
वावीशमा जिनवर तणो हो माता, वीहीक न करशो लेश ॥ ध० ॥ १७ ॥
॥ सु० ॥ इम कहीने अवस्वापिनी हो देवा, मूके करी प्रतिबिंब ॥ ध० ॥
॥ सु० ॥ लेइ चाल्या करसंपुटे हो देवा, जाणे मरुमां अंबलुंब ॥ ध० ॥
॥ १० ॥ सु० ॥ पंच रूप करे सुरपति हो देवा, एक लीये जिनराज ॥ ध० ॥
॥ सु० ॥ चामर विहु जण विंजता हो देवा, एक छत्र शिर काज ॥ ध० ॥
॥ १९ ॥ सु० ॥ आगल वज्रधर चालतो हो देवा, स्तवना करे मांहोमांह
॥ ध० ॥ सु० ॥ आगल जातो पाछुं जुवे हो देवा, जिनमुख जोवा उछाह
॥ ध० ॥ २० ॥ सु० ॥ मेरुशिखरे आवीया हो देवा, वैमानिक दश इंद ॥
॥ ध० ॥ सु० ॥ बत्रीश व्यंतर अधिपति हो देवा, सूरय ने वली चंद ॥ ध० ॥
॥ २१ ॥ सु० ॥ वीश जवनपति जाणीये हो देवा, इम चोसठ सुरराज ॥
॥ ध० ॥ सु० ॥ सौधर्मपति अंके लीये हो देवा, जिनवर आतम काज ॥
॥ ध० ॥ २२ ॥ सु० ॥ उंचा पणवीश जोयणां हो देवा, बार जोजन वि-
स्तार ॥ ध० ॥ सु० ॥ जोजन कलशनुं नालवुं हो देवा, एक कोडी साठ लाख
सार ॥ ध० ॥ २३ ॥ सु० ॥ रत्नकरंडक दर्पणा हो देवा, पुष्प चंगेरी
चंग ॥ ध० ॥ सु० ॥ उपगरण पूजानां सहु हो देवा, अष्ट प्रकारना नंग
॥ ध० ॥ २४ ॥ सु० ॥ अष्ट उत्तर सहस जर्यां हो देवा, बहु तीरथनां
नीर ॥ ध० ॥ सु० ॥ कुंज हृदये घणुं शोजता हो देवा, मानुं करे जवजल
तीर ॥ ध० ॥ २५ ॥ सु० ॥ सहु अजिषेक तिहां करे हो देवा, केइक
करे शिर छत्त ॥ ध० ॥ सु० ॥ केइक चामर विंजता हो देवा, धूप करंत
केइ सत्त ॥ ध० ॥ २६ ॥ सु० ॥ केइक दर्पण कर लीये हो देवा, केइ करे
गीत गान ॥ ध० ॥ सु० ॥ नाचे केइक देवता हो देवा, केइ करे बहु मान
॥ ध० ॥ २७ ॥ सु० ॥ वृष्टि करे केइ फूलनी हो देवा, केइ करे गज शब्द ॥

॥ ध० ॥ सु० ॥ इय हेपारव केइ करे हो देवा, केइ करे सिंहनाद ॥ ध० ॥
॥२८॥ सु० ॥ हर्ष उत्साह घणो ।तिहां हो देवा,कहेतां नावे पार ॥ ध० ॥ सु० ॥
दीठे तेह सहु थणे हो देवा, अच्युतथी धुर सार ॥ ध० ॥ २९ ॥ सु० ॥
परिपाटी अनुक्रमे करे हो देवा, ते अभिषेक विलास ॥ ध० ॥ सु० ॥ ग्रंथां-
तरथी जाणजो हो देवा, एह विस्तार ते खास ॥ ध० ॥ ३० ॥ सु० ॥
त्रीजे खंडे छठी कही हो देवा, ढाल अतिहि विशाल ॥ ध० ॥ सु० ॥
उत्तम गुरुनी सान्निधे हो देवा, पद्मने मंगलमाल ॥ ध० ॥ ३१ ॥ सु० ॥

॥ दोहा ॥

॥ ग्रंथांतरथी जाणजो, एह सहु विस्तार ॥ तिछोगाली प्रमुखमां, छे महोटा अधिकार ॥ १ ॥ ग्रंथ वध्याना जय थकी, नवि नाखुं हुं अत्र ॥ हवे सोहमपतिनो कहुं, जिम करे तेह सनात्र ॥ २ ॥ पंच रूप करी नक्तिथी, हवे ते इन्द्र ईशान ॥ अंके जिनवर थापीने, बेसे अति बहु मान ॥ ३ ॥ चार रूप हवे वृषजनां, करे ते सोहम स्वामी ॥ आठ शिंगथी नीकले, सलिल धार तिण ठाम ॥ ४ ॥ नवरावी इम नक्तिथी, अंग लूहे जिनराय ॥ लींपे चंदन प्रमुखने, वस्त्र आजरण पहेराय ॥ ५ ॥ तास हर्ष तेहज लहे, नवि मुखथी कहेवाय ॥ वारे कोमाकृख हवे, स्तवना करे सुरराय ॥ ६ ॥ हर्ष अधिक सोहमपति, थुणे ते गंजीर वाण ॥ सहु एकाग्र थइ सुणे, उजा रही तिण ठाण ॥ ७ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ देशी फतमलनी ॥ जिनपति नवतरु नंग समीर, गुणमणि मकराकर नलो ॥ जि० ॥ जीम मोह करिकुंज, नेदवा सिंह ते गुणनिलो ॥ १ ॥ जि० ॥ जवदव उपशम मेघ, पापपंक दूरे करु ॥ जि० ॥ पदकज नमीये स्वामी, अमल कलानो आगरु ॥ २ ॥ जि० ॥ पापपडल हिमपूर, हरवा सूर्य परे तपे ॥ जि० ॥ बुद्धि सिद्धिनो गेह, तुजने सहु सुर नर जपे ॥ ३ ॥ जि० ॥ मायावेलिनो दाह, दारुण दावानल जया ॥ जि० ॥ सिद्धि कमल वर भृंग, उत्तम कुल मांहि थया ॥ ४ ॥ जि० ॥ नव तारण तुं देव, नरक वारक प्रजु जाणीये ॥ जि० ॥ रामासंग विरक्त, करुणा रस मन आणीये ॥ ५ ॥ जि० ॥ अचल असंग निरीह, निःकारण उपगारीयो ॥ जि० ॥ गरुम राग नाग स्वामी, खोज सायर बहु

कारीयो ॥ ६ ॥ जि० ॥ कुनय कुसंग कुवास, हास मत्सर नग दारणो। जि० ॥ जनम जरा रोग शोग, मरण मोहरिपु वारणो ॥ ७ ॥ जि० । सायर सम गंजीर, नव विरहो मुऊ आपीये ॥ जि० ॥ सेवक जाणी स्वामी, सांसारिक उःख कापीये ॥ ८ ॥ जि० ॥ स्तवना करे सुरराय, प्रणमे पाय जिनेसरु ॥ जि० ॥ जननी पासे आवी, मूके तेह सुरेसरु ॥ ए ॥ जि० ॥ रतन सुवर्ण निधान, पूरे जिनवर धामने ॥ जि० ॥ संहरी ते प्रतिबिंब, पाम्या सहु निज गमने ॥ १० ॥ जि० ॥ जनम मोछव विस्तार, जंबू पन्नतिथी जाणजो ॥ जि० ॥ लेश मात्र ते अत्र, नविजन मनमां आणजो ॥ ११ ॥ जि० ॥ हुर्ड जाम प्रजात, सहसकिरण जब उगीयो ॥ जि० ॥ दासी जइ नरराय, पुत्र जनमथी वधावीयो ॥ १२ ॥ जि० ॥ तद्यथा ॥ तो पियं वइय नामेण चेमीतया, पीण थण वट्टथोलंत मुत्तावया ॥ रय समुक्खित्तपय रणिरमंजीरया, व्हसिय धम्मिल्ल तहखिसिय उत्तरियया ॥ हरिसरो मंचविंचइय वर तणुलया, सेय जलबिंडुरेदंत मुहपंकया ॥ नर वर पुत्तजम्मेण वऊावए, सोवि चेमिए बहु दविणु दावावए ॥ मंतिपुरविऊ सबे विसऊावए, गुरुयवऊावणं पुरिपय दावणं ॥ १ ॥ जि० ॥ दासीपणुं करे दूर, समुद्रविजय हवे राजीयो ॥ जि० ॥ इंद्रपूजित जोइ तेह, मोछव करे जग गाजीयो ॥ १३ ॥ जि० ॥ पइ गेह पयट्टिय चारुमहं, चंदणरस सित्तसमग्गयहं ॥ पुर रमणि पवित्तिय मंगलयं, वर नट्ट तुट्ट बहु हार लयं ॥ वंदीयण विहिय कोलाहलयं, दीसंत विचित्त कुऊहलयं ॥ नच्चाविय बहुजण वाहुलयं, ढुंडुहि वरपूरिय दिसीवलयं ॥ घरि धरिणी वऊरुतोरणयं, परिघुम्मिरवामण दासणयं ॥ परितुष्ठ जमिर बहुमग्गणयं ॥ अन्य चाल ॥ पवि संत अक्खवत्तयं, हीरंतसीसवत्थयं ॥ वजंत नेरीजाणयं, दिजंत नूरि दाणयं ॥ निवऊ हट्टसोहयं, सुचंत महुरगेययं ॥ जुजंतविविह नोजयं, पिजंत नूरिदाणयं ॥ सोहिज्ञा माण चारयं, मुचंत वंदि चारयं ॥ करसोक दंरुवजियं, सुवण्ण कलस सज्जियं ॥ २ ॥ जि० ॥ बारमे दिन हवे राय, मोछव महोटा तिहां करी ॥ जि० ॥ नाम ठवे नरनाह, गरज सुपन मनमां धरी ॥ १४ ॥ जि० ॥ रिष्ट रत्नमयी नेम, सुपन मांहि देख्या थकी ॥ जि० ॥ अपमंगल थयां दूर, अथवा इष्ट अरि वकी ॥ १५ ॥ जि० ॥ अरिष्टनां फल सम श्याम, नाम अरिष्टनेमि कह्युं

॥ जि० ॥ सुर नर सेवित तेह, उपगारे विग्रह धर्युं ॥ १६ ॥ जि० ॥ जिम गिरिमां तरु छोरू, बीजनो चंद वधे यथा ॥ जि० ॥ रमता नेमि जिणंद, तेह मुणींद वधे तथा ॥ १७ ॥ जि० ॥ समुद्रविजय घर एम, जनम सुणे वसुदेवजी ॥ जि० ॥ मोछव मथुरा मांहि, करता ते ततखेव जी ॥ १८ ॥ जि० ॥ नरपति एक दिन कंस ते दुष्ट, पहोतो वसुदेवने घरे ॥ न० ॥ कन्या देखीने ते छिन्न, मनमां चिंते इणी परे ॥ १९ ॥ न० ॥ करतो अतिहि विकल्प, देह प्रकंप थयो तिहां ॥ न० ॥ पूछे घर जइ मित्त, वात कहे मुजने इहां ॥ २० ॥ न० ॥ देवकी सातमो गर्भ, मुनिए वध जणी मुज कह्यो ॥ न० ॥ मुनिवच थयुं अलीक, के ठवशी ए रिपु वह्यो ॥ ॥ २१ ॥ न० ॥ अथवा थयो फेरफार, तव नेमित्तिर्ड बोलीयो ॥ न० ॥ अलीक न होय वचन्न, मुनिवच किणही न रोलीयो ॥ २२ ॥ न० ॥ तुज रिपु जीवतो आज, पण तुज खबर न किहां अछे ॥ न० ॥ एक उपाय सुण तुज, वळी बीजो नाखीश पछे ॥ २३ ॥ न० ॥ अरिष्ट वृषभ तुज दुष्ट, महाबल दर्प घणो धरे ॥ न० ॥ तीखां जेहनां शृंग, जीव घणानो वध करे ॥ २४ ॥ न० ॥ घोटक केशी नाम, वळीयो तुज घर बांधीयो ॥ न० ॥ गर्दभ पुष्ट शरीर, मेष दारुण पण सांधीयो ॥ २५ ॥ न० ॥ वृंदारक वन मांहि, छूटा मूको एहने ॥ न० ॥ वध करशे जे आवी, जाणजे वयरी तेहने ॥ २६ ॥ न० ॥ सुण हवे बीजो उपाय, सारंग धनुष ताहरे घरे ॥ न० ॥ पूजाये नित जेह, आरोपण जे तस करे ॥ २७ ॥ न० ॥ ज्ञानीए कह्युं एम, कोइ न आरोपी शके ॥ न० ॥ जरत अरधनो स्वामी, ते एहनी आगळ टके ॥ २८ ॥ न० ॥ काळीय दमे नागीए, चाणूर मल्लनो वधकरु ॥ न० ॥ पद्मोत्तर ने चंपक, हणशे हाथी नरवरु ॥ २९ ॥ न० ॥ विसर्जे रे निमित्त, ते सांजळी चित्त खळजल्यो ॥ न० ॥ निश्चय करवा तेह, कंस चिंते अहो किम ठल्यो ॥ ३० ॥ न० ॥ न सहे हवे रति क्यांहि, निद्रा पण सुखे नवि करे ॥ न० ॥ सुख नवि वेदे तेह, कारण विनु कोपज धरे ॥ ३१ ॥ न० ॥ सातमी त्रीजे खंम, ढाळ ते जाखी मनोहरु ॥ न० ॥ उत्तमविजयनो शिष्य, पद्मविजय कहे सुखकरु ॥ ३२ ॥ सर्व गाथा ॥ २३४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुखमां निद्रा नवि करे, करे ते कोप अपार ॥ अपमाने मंत्री प्रमुख,

दंभे प्रजा तिवार ॥ १ ॥ वलगा व्यंतरनी परे, अंतेउर पुर सर्व ॥ विरक्त थयुं मन तेहनुं, जाणुं गयो तस गर्व ॥ २ ॥ निज परहित ते नवि वहे, कार्याऽकार्य विचार ॥ मरण समीपे जेहने, सूझ न तास लगार ॥ ३ ॥ राम कृष्ण क्रीमा करे, रह्या ते गोकुल मांहि ॥ वूटा ते सहु मूकीया, कंसे तिण समे त्यांहि ॥ ४ ॥

॥ ढाल आवमी ॥

॥ प्रजुने बोलकीये ॥ ए देशी ॥ वृषज ते हवे इणी अवसरे, मानुं काल जमंतो एह रे ॥ आव्यो बलीयो गोकुलमां, मदवंती जेहनी देह ॥ सांजलो वातमीयां ॥ नासे नासे रे सहु इण ठाण ॥ सां० ॥ हाको हाको रे कोइ नर जाण ॥ सां० ॥ मागो मागो रे आपुं दाण ॥ सां० ॥ जांगे जांगे रे अम घर घाण ॥ सां० ॥ पड्यां पड्यां रे बहु जंगाण ॥ सां० ॥ आवे आवे रे नहीं तिणे टाण ॥ सां० ॥ सुके सुके रे नहीं को काण ॥ सां० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ शिंगे जांगे जाजनां कांइ, त्रोडे मेमी माल रे ॥ घृतजाजनने जांजतो ते, दीसंतो विकराल ॥ सां० ॥ २ ॥ जांजे जाजन दूधनां कांइ, वली दधि केरां ठाम रे ॥ गोपीजन बहु त्रासवे तिहां, नासवे गायनो ग्राम ॥ सां० ॥ ३ ॥ गोपी नासे दश दिशे कांइ, क्रोध चढ्या गोवाल रे ॥ लेइ लकुट ने उठीया तस, मारणने ततकाल ॥ सां० ॥ ४ ॥ मदमाता मयगल परे कांइ, न गणे तेह लगार रे ॥ कृष्ण कृष्ण राम रामजी सहु, जाखे इम तिणी वार ॥ सां० ॥ ५ ॥ असमंजस ते देखीने हवे, नंद तणो ते बाल रे ॥ साहमो धावे तिण समे, सहु वारे वाल गोपाल ॥ सां० ॥ ६ ॥ काम नथी घर गायनुं, वली द्रव्य तणुं इणी वार रे ॥ मत जावो तुम्हे कृष्णजी इम, वृद्ध वारे वारंवार ॥ सां० ॥ ७ ॥ कोटि शिला उपाडशे जे, तस ए कहेतां मात रे ॥ जुद्ध कस्यो बहु जंगथी लेइ, पुछ नमामे गात ॥ सां० ॥ ८ ॥ मुष्टि मारे कूखमां जेम, पाम्यो निधनने वाल रे ॥ जय जय शब्द करतां थकां सहु, गोपीजन तेणे ताल ॥ सां० ॥ ए ॥ हृदये जीने कृष्णने करे, आलिंगन वारंवार रे ॥ राग देखाडे परपरे तिहां, गोपी हर्ष अपार ॥ सां० ॥ १० ॥ क्रीमा करतां कृष्णने कांइ, कंसनो केशी किशोर रे ॥ तेह कीनाशनी सारिखो आव्यो, बीजे दिन तिणे ठोर ॥ सां० ॥ ११ ॥ लंबोदर दामोदरे कांइ, दीठो दाढ विकराल रे ॥ जीषण हेषारव करे मारे, गाय

तणां बहु वाद्य ॥ सां० ॥ १२ ॥ उंड जाली फाले तिहां तस, करतो क्रिया जाग रे ॥ जीरण वस्त्र तणी परे सहु, जाले धन्य महाजाग ॥ सां० ॥ ॥ १३ ॥ वृंदारक वने एक दिने, गया कृष्ण तथा वलदेव रे ॥ जमुना नदी तीरे रहे करे, दंश ए नागनी टेव ॥ सां० ॥ १४ ॥ दृष्टिविष ते नागने कांइ, कृष्ण ते काढे वार रे ॥ जलक्रीमा सुखे शिशु करे, धरी आणंद अंग अपार ॥ सां० ॥ १५ ॥ मेष ने खर एक दिन हणे, ते वलदेव ने वली कान्ह रे ॥ वात ते कंसे सांजली, तव नाठी तेहनी शान ॥ सां० ॥ १६ ॥ निश्चय करवा कंसनो, ते पमह वजावे त्यांहि रे ॥ धनुष सजामां मूकीयुं, तस पूजा तणे उत्साह ॥ सां० ॥ १७ ॥ एह धनुष आरोपतो, जे देखुं नजरे अत्र रे ॥ सत्यजामा मुऊ बहेनमी, परणावुं नहीं उंडुत्र ॥ सां० ॥ ॥ १८ ॥ अरधुं राज ते आपशुं इम, मोछव मांड्यो राय रे ॥ सामंत राय प्रमुख घणा तिहां, उत्साही सहु आय ॥ सां० ॥ १९ ॥ नंदन मदनवेगा तणो ते, श्रीवसुदेवनो पुत रे ॥ शोरीपुरथी सांजली ते, आवे धरी आकूत ॥ सां० ॥ २० ॥ वलदेवनी पासे रह्या ते, नंद गोठमां रात रे ॥ आणा लही वलदेवनी ते, कृष्णने लेइ जात ॥ सां० ॥ २१ ॥ रथवरमां ते बेसी-ने जाय, मारग चाल्या दोय रे ॥ शाखा वलगी वट तणी कांइ, रथ ते उंचो सोय ॥ सां० ॥ २२ ॥ अनाधृष्ट कुंअर तिहां नवि, मूकावी शके तेह रे ॥ कृष्णे वरु ते जांजीयो महा, वलीयो धरत सनेह ॥ सां० ॥ २३ ॥ देखी भुजवल तेहवुं मन, हरख्यो तेह कुमार रे ॥ पहोता चापघरे हवे, तिहां देखे चाप ने नार ॥ सां० ॥ २४ ॥ देखत विंधाणी घणुं लाग्यां, कामबाण ते नार रे ॥ मांहोमांहे देखतां कांइ, उपन्यो हर्ष अपार ॥ सां० ॥ २५ ॥ देव अधिष्ठित चाप ते नवि, लेइ शके अनाधृष्ट रे ॥ लेवा जाये दृष्टिथी पण, पमीयो ते त्रूपृष्ठ ॥ सां० ॥ २६ ॥ सत्यजामा हसती तदा, तव कृष्णे खम्युं नवि जाय रे ॥ लीलाए लेइ तेहने, आरोपे चाप ते गाय ॥ सां० ॥ २७ ॥ बहु राजा वलीया मल्या ते, हरख्या देखी तास रे ॥ नारी विशेषे हरखती कांइ, देखी पुण्य विलास ॥ सां० ॥ २८ ॥ त्रीजे खंमे आवमी कही, ढाल प्रथम अधिकार रे ॥ पद्मविजय कहे पुण्यथी कांइ, हवे जय जयकार ॥ सां० ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अनाधृष्ट कुंअर हवे, कृष्ण लेइ निज जाय ॥ पहोतो तात तणे घरे,

मनमां हर्ष न माय ॥ १ ॥ द्वारे मूकी कृष्णने, गयो ते तातने पाय॥ चाप तणी ते वारता, संभलावे तिण ठाय॥ २॥ कोप करी वसुदेवजी, कहे तुं वहे-लो जाय ॥ शूनो मत मूको तुमे, कृष्ण तुमारो भाय ॥ ३ ॥ धनुष आरो-प्युं जाणशे, कंस तो हणशे तास ॥ इम सुणी तेह कुमर हवे, आवे कृष्ण-नी पास ॥ ४ ॥ नंदना गोकुलमां जइ, सोंपे श्रीबलदेव ॥ शौरीपुर चाल्यो हवे, आणा लही ततखेव ॥ ५ ॥ पुरमां वात तो विस्तरी, नंद गोपनो पुत ॥ चाप आरोप्युं सांभली, कोप्यो कंस कपूत ॥ ६ ॥ हवे ते चाप उत्सव भणी, कृष्णने मारण काज ॥ महोटा मांचा मांमतो, तेमावी बहु राज ॥ ७ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ देशी जीरानी ॥ ससरा जी रे, मारे पहेला जवना तात जी हो जीरुं ल्यो ॥ ए देशी ॥ कृष्णजी रे मारे बलदेवने कहे इम जी हो ॥ चालोने ॥ उ-त्सव ते जोवाने जाइये आपणे हो ॥ चा० ॥ तब बलदेव कहे जशोदाने सांभलो हो॥ चा० ॥ नावानी सामग्री कीजे तापणे हो ॥ चा० ॥ १ ॥ नारी जशोदा करे विलंब ते तिणे समे हो॥ चा० ॥ दासी नाम कहीने दीधी गाल जी हो ॥ चा० ॥ डुहवाणा सुणी बलदेवथी तब कृष्ण जी हो॥ चा०॥ माताने परिभव देखी तिणे ताल जी हो ॥ चा० ॥ २ ॥ नवरावी हवे चाल्या बहु गोवालशुं हो ॥ चा० ॥ जमुना रे नदीए जइ श्री बलदेव जी हो ॥ चा० ॥ दीर्घ निशासो नाख्यो तुम शे कारणे हो ॥ चा० ॥ बोल्या तब सुणो कृष्ण कहे ततखेव जी हो ॥ चा० ॥ ३ ॥ म्हारी मात निर्भंछी तुम्हे मुज देखतां हो ॥ चा० ॥ तुम सरखा नरने न घटे ए वात जी हो ॥ चा० ॥ राम कहे सुण नहीं ताहरी ए मावकी हो ॥ चा० ॥ तुजने जाणण कारणने अवदात जी हो ॥ चा० ॥ ॥ ४ ॥ नंद ते तात तुम्हारो नहीं सुणो वातमी हो ॥ चा० ॥ ताहरी तो छे देवकी रूमी मात जी हो ॥ चा० ॥ सोभागी जादव उत्तम सुण मित्र जी हो ॥ चा० ॥ नामे श्रीवसुदेवजी ताहरो तात जी हो ॥ चा० ॥ ५ ॥ महीने महीने तुजने जोवा आवती हो ॥ चा० ॥ गोमग्ग पूजणने मिष करीने धवरावती हो ॥ चा० ॥ हुं तो ताहरो महोटो भाइ जाण-जे हो ॥ चा० ॥ मूक्यो मुजने ताहरी रक्षाने वती हो ॥ चा० ॥ ६ ॥ तब चमक्यो कहे कृष्ण इहां शे कारणे हो ॥ चा० ॥ वसीये गोकुलमां तब बोल्यो भ्रात जी हो ॥ चा० ॥ मुनिवरे भाख्युं ने षट् भाइ मारीया हो ॥ चा० ॥

तेह सुणीने कोप मांहि आयात जी हो ॥ चा० ॥ ७ ॥ कृष्ण कहे ए शत्रुने हवे मारवो हो ॥ चा० ॥ तव बलदेव करे तेहना बहु यत्न जी हो ॥ चा० ॥ तेडे बहु निज बंधवने तिहां उछवे हो ॥ चा० ॥ समुद्रविजयादिकने पण तेडे प्रयत्न जी हो ॥ चा० ॥ ८ ॥ बेठा सहु ते मांचे निज उचिते जले हो ॥ चा० ॥ बे हाथी छे कंसने तिहां रुडा जी हो ॥ चा० ॥ शिखामण आरोहकने दीधे कंस जी हो ॥ चा० ॥ बे जाइने हणजो ते छे भूंडा जी हो ॥ चा० ॥ ९ ॥ तेह सुणीने मारगमां ते ताकतो हो ॥ चा० ॥ आवंता बे हाथी प्रेख्या तेहने हो ॥ चा० ॥ हरि हणता तिहां पद्मोत्तर हाथी प्रते हो ॥ चा० ॥ चंपक हाथी बलदेवे हएयो देहने हो ॥ चा० ॥ १० ॥ बहु गोवाल ते विस्मय पाम्या देखीने हो ॥ चा० ॥ उठाडे तिहां एक मांचाथी कोइ जी हो ॥ चा० ॥ सूरय चंद्र परे बिहुं बेठा शोभता हो ॥ चा० ॥ मल्ल ते उठ्या सहु राजान पलोइ जी हो ॥ चा० ॥ ११ ॥ चाणूर उठे मल्ल महाबलीयो तिहां हो ॥ चा० ॥ रंगमंडप कोजावे कर आस्फालतो हो ॥ चा० ॥ जो भुजबलनो गर्व होय तो आवजो हो ॥ चा० ॥ कृष्ण सुणीने उठ्यो तिहांथी म्हालतो हो ॥ चा० ॥ १२ ॥ लोक कहे बालकने जुद्ध न रुयडुं हो ॥ चा० ॥ इम सुणी बोल्यो क्रोध चढ्यो ते कंस जी हो ॥ चा० ॥ तेमणने कहो कोण गया हता एहने हो ॥ चा० ॥ जुद्ध करे ए उपनो गोपना वंश जी हो ॥ चा० ॥ १३ ॥ खीर पान करनार ए करशे किशी परे हो ॥ चा० ॥ एह निवारण करवानुं शुं काम छे हो ॥ चा० ॥ इम सुणीने लोक सहु मौने रह्यो हो ॥ चा० ॥ कृष्ण कहे गोपाल बालक मुज नाम छे हो ॥ चा० ॥ १४ ॥ जेह करे खीर पान बालक ते देखजो हो ॥ चा० ॥ नवमी ढाल ते त्रीजा खंडमां रुयडी हो ॥ चा० ॥ पद्मेखे अधिकारे कही पद्मविजय कहे हो ॥ चा० ॥ जविजन सुणजो एह नहीं छे कूयडी हो ॥ चा० ॥ १५ ॥ सर्व गाथा ॥ २८५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सहु जनने कहे कृष्णजी, बालक तुं पण आज ॥ एह तणो मद टालशुं, जेम वज्रे गिरिराज ॥ १ ॥ युद्धना चार प्रकार छे, प्रथम वचनजुद्ध जाण ॥ दृष्टि नियुद्ध ने शस्त्रनयी, शस्त्रयुद्ध अपहाण ॥ २ ॥ त्रण युद्ध परधान छे, मल्लने जाण नियुद्ध ॥ वचनयुद्ध होय वादीने, शस्त्र अधमनयी उध ॥ ३ ॥ उत्तम पुरुषने जाणीये, दृष्टिजुद्ध परधान ॥ हमणां ने

नियुक्तो, अवसर मल्लने थान ॥ ४ ॥ कृतउद्यम ए मल्ल छे, मुफ तो उ-द्यम नांहीं ॥ पण अंतर सहु देखजो, जाखे कृष्ण उछांहि ॥ ५ ॥ कंस सुणीने शंकीयो, मुष्टिक मल्ल वली एक ॥ संज्ञा करी उठावीयो, वीहीक लही अतिरेक ॥ ६ ॥ ते देखी हलधर हवे, आवे कृष्णनी पास ॥ हवी हरि एक दिशे रह्या, दोय मल्ल एक पास ॥ ७ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ फुलना चोसर प्रजुने शिर चढे ॥ ए देशी ॥ जुद्ध ते करवा रे लाग्या ते बिहुं, कृष्णजी ने चाणूर जी रे ॥ मुष्टिक ने बलदेवजी बिहुं मल्या, वधते अति घणे शूर जी रे ॥ १ ॥ पुण्यथी बलीयो रे को नवि पामीये ॥ ए आंकणी ॥ करे चपेटा रे विविध प्रकारना, करे प्रहार अनेको जी रे ॥ नजतल गाजे चेत-ननी परे, वीहीक होये अतिरेको जी रे ॥ पु० ॥ २ ॥ हृदय ते ओडे मल्लनुं कृष्ण जी, मुष्टिनो करे वली घातो जी रे ॥ तव करे मुष्टिप्रहार ते कृष्णने, करतो देतो लातो जी रे ॥ पु० ॥ ३ ॥ लीलां पीलां देखे कृष्णजी, पडीया धरणी तेह जी रे ॥ कंस ते त्रुठो वली संज्ञा करे, वली मारो तुमे एह जा रे ॥ पु० ॥ ४ ॥ चा-णूर मारवा आवे जेटले, तव आवी बलदेव जी रे ॥ मुष्टिक मल्ल मूकी तस आ-मीयो, जेम पमीयो ततखेव जी रे ॥ पु० ॥ ५ ॥ मल्ल ने कृष्णजी वली उव्या बिहुं, तव करे शिरमां घायो जी रे ॥ चाणूर बलीयो रे ते धरणी ढल्यो, चढी हृदये ते गायो जी रे ॥ पु० ॥ ६ ॥ काढी आंख्यो रे ते चाणूरनी, चाल्या रुधिर प्रवाहो जी रे ॥ नाक श्रवण ने मुखथी लोही वमे, मरण लह्यो लही दाहो जी रे ॥ पु० ॥ ७ ॥ कंस ते बोल्यो रे देखी एहवुं, पकमो वांधो मारो जी रे ॥ मारो नंद ते परिजन सह वली, द्रव्य हरो सहु सारो जी रे ॥ पु० ॥ ८ ॥ एहनो पक्ष करे वली तेहने, मारो निःसंदेह जी रे ॥ मुफ अहितनो रे कर्त्ता एह छे, इम कहे कोपथी तेह जी रे ॥ पु० ॥ ९ ॥ कोप चराणो रे कृष्ण ते सांज-ली, बोले एहवी वाण जी रे ॥ बालक हणीया रे पट्ट मुफ बांधवा, तेहनां फल ए जाण जी रे ॥ पु० ॥ १० ॥ इम जाखीने रे मांचा उपरे, चढीने पाड्यो कंस जी रे ॥ मुकुट ते चकचूरण करी नाखीयो, कंस थयो हवे भ्रंश जी रे ॥ पु० ॥ ११ ॥ कृष्ण कहे सुण मरणनी वीहीकथी, बहोला कीध उपायो जी रे ॥ तेहज मरण जणी तुफने थया, आपनुं पाप ते आयो जी रे ॥ पु० ॥ १२ ॥ ते देखीने रे सहु विस्मय लह्या, देखी इम बलदेव

जी रे ॥ मुष्टिक मल्लने रे तिणी परे जीतीयो, जेम करे जमनी सेव जी रे ॥ पु० ॥ १३ ॥ इण अवसरे हवे मुजट ते कंसना, आवे मारण तामो जी रे ॥ कोप्यो यंज उपाती मंचनो, आवे बलदेव श्रामो जी रे ॥ पु० ॥ १४ ॥ यम सम देखी सहु नाठा तिहां, कृष्ण माख्यो कंस जी रे ॥ रंगमंडपने रे बाहिर नाखीयो, लोक करे परशंस जी रे ॥ पु० ॥ १५ ॥ पहेलां कंसे रे सैन्य तेडावीयुं, मागी जरासंध पास जी रे ॥ रण करवाने रे ते सहु सज्ज थया, धरता अधिक उल्लास जी रे ॥ पु० ॥ १६ ॥ समुद्रविजय प्रमुख उठे पहवे, यादव बहु बलवंता जी रे ॥ जुद्ध करतां रे नाठा ते हवे, नायक विणु ते अकंता जी रे ॥ पु० ॥ १७ ॥ नाम अनाधृष्टकुमर ते आवीयो, रथ वेसाडे तास जी रे ॥ यादव सहुने जेला मेलीया, श्रीवसुदेव आवासो जी रे ॥ पु० ॥ १८ ॥ हरखे देखी रे बलदेव कृष्णने, सामो जइ आलिंगे जी रे ॥ निज अंके वेसारे कृष्णने, बलदेवने निज संगे जी रे ॥ पु० ॥ ॥ १९ ॥ चुंबे शिर हवे श्रीवसुदेवजी, संजलावे सहु वात जी रे ॥ करे प्रशंसा रे समुद्रविजय सवे, देवकी प्रमुख ते मात जी रे ॥ पु० ॥ २० ॥ यादव सहुए रे कृष्णनी आणथी, मथुरा नयरी राय जी रे ॥ करे अभिषेक उग्र ते सेनने, जग जशवाद गवाय जी रे ॥ पु० ॥ २१ ॥ सत्यजामा परणावी कृष्णने, मोहव करीय अपारो जी रे ॥ यादव सहुए रे इम सुखमां रहे, पाम्या सहु जयकारो जी रे ॥ पु० ॥ २२ ॥ पहेले अधिकारे दशमी कही, ढाल ते त्रीजे खंडे जी रे ॥ पंमित उत्तमविजयनो शिशु कहे, पद्म ते रंग अखंडे जी रे ॥ पु० ॥ २३ ॥ सर्व गाथा ॥ ३१९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जीवजशा ते सांचली, करती बहु पोकार ॥ शिर कूटे पीटे हियुं, मरण सुणी भरतार ॥ १ ॥ जीवजशा ते कोपथी, जल अंजलि नवि दाय ॥ कहे इणी परे वाचा मुखे, सांजलजो सहु राय ॥ २ ॥ सहु जादवनो क्षय करी, एह कृष्ण बलदेव ॥ नंद कुटुंब सहित वली, क्षय करशुं हवे हेव ॥ ३ ॥ मृतकारज करशुं पछे, इणी परे कही ते नार ॥ राजगृही नगरे गइ, धरती दुःख अपार ॥ ४ ॥ छूटा केश रुदन करे, तात आगे पोकार ॥ वर्त्तावध संजलावीयो, पूछे व्यतिकर सार ॥ ५ ॥ अयमत्ता मुनि प्रमुखनो, जाखे सहु विरतंत ॥ जरासंध बोले तदा, शुं कहीये तुज कंत

॥ ६ ॥ कह्युं होत मुफ आगले, करत हुं देवकी नाश ॥ खेत्र विना कृषि किहां थकी, धर्म विना दयावास ॥ ७ ॥ सीम गाम विणु नवि होये, नारी विना सुत नांही ॥ प्रज्ञा विणु विद्या नहीं, देवकी विना ए क्यांहि ॥ ८ ॥ दोष कुशील नारी वली, व्याधि शत्रु खल दुष्ट ॥ अग्नि वली ए सात ने, दुःख दीये करतां पुष्ट ॥ ए ॥ मत रोवे तुं बालिका, फेडुं एहनुं गाम ॥ जामाता जेणे हएयो, एह अनार्य कर्युं काम ॥ १० ॥

॥ ढाल अगीयारमी ॥

॥ देशी हांमानी ॥ जरासंध हवे मोकले, सोमक अनिधाने, शीखवीयो माने, संजलावो काने, समुद्रविजयने, तुम्हे इणी परे रे ॥ १ ॥ ते पण जइ तस पास रे, जाखे इम वाणी, कंसनी जे राणी, तुम्हथी दुःखाणी, इम मन जाणी, मुफ मोकल्यो रे ॥ २ ॥ जामाता अमचो हएयो, कृष्णे वली रामे, तुम्हे सेवक ठामे, सुखमां रहो धामे, मारण कामे, अम्ह विहुं आपीये रे ॥ ३ ॥ जो निज वांछो रिद्धिने, तो वार म लावो, समुद्र राय चावो, बोले इम ठावो, वैर वधरावो, किण कारणे रे ॥ ४ ॥ बंधुवेरे मारीयो, जो कृष्णे कंस, न करो खेद अंश, न्याये होये शंस, वखाणे वंश, लोक आपणो रे ॥ ५ ॥ एहमां अनीति नथी कांय रे, दीधी तुम्हे बेटी, ते दुःखनी पेटी, विधिए तुम्ह नेटी, सुख मेटी, दुःख केम करो रे ॥ ६ ॥ ते माटे निज बंधुनां, सहेशे कुण वेर, इम कह्युं बहु पेर, म करो ए चेर, जाउं घेर, तुम्हे इम सुणी रे ॥ ७ ॥ प्राण समा मुफ पुत्रने, जाचंतां एह, नवि लज्जा केह, वसुदेव कहे जेह, काम तेह, केम कीजीये रे ॥ ८ ॥ सोमक बोले ताम रे, न घटे तुम्ह एहवुं, जुत्ताजुत्त कहेवुं, जस आणे रहेवुं, वहेवुं, जेह कहे सवे रे ॥ ए ॥ तेहनुं बल बहु देखीये, सायर जोनावे, तुमे गोपद दावे, महोटाश जणावे, मंगावे, गोवालीया रे ॥ १० ॥ तेह नहीं असमत रे, लेवाने पोते, बलीयाशुं जोते, विरोध न होते, अणमोते, न मरी जीये रे ॥ ११ ॥ यतः ॥ अनुचितकर्मारंजः, स्वजनविरोधो बलीयसी स्पर्द्धा ॥ प्रमदाजनविश्वासो, मृत्युद्वाराणि चत्वारि ॥ १ ॥ कृष्ण बोले तव एम रे, शो गर्व वहो ठो, अम्हे बहु इम कहो ठो, नवि शोन लहो ठो, काम दहो ठो, तुम्हे निज तणो रे ॥ १२ ॥ बहु ताराए करी परवस्यो, देखो तुम्हे चंदो, राहु करे फंदो, इम कहे गोविंदो, अमचो इंदो, ए अम्हे

नवि गणुं रे ॥ १३॥ बहु पत्त परिगत रुंख रे, पण आवे वाय, सहु दूर उडा-य, तेम बहु तुम्हे थाय, गर्व कांय, रे करो थापका रे ॥ १४॥ स्नेह ते पालवा कारणे, अमे बोलुं नांहीं, तिणे सेवक आंही, तुम्हे ठाकुर मांहि, कहेतां उछांहि, लाजो केम नहीं रे ॥ १५॥ विक्रम नित आयत्त रे, जाणो प्रभुताइ, तुमने केम आइ, जली बुद्धे पाइ, बुद्धि न आइ, जली तुम्ह कने रे ॥ १६॥ आमह जे अकार्यमां, तो केम जय थाय, कुलनो क्षय राय, घन जेम हो वाय, खोटी थाय, जरासिंधजी रे ॥ १७॥ अम्हे सेवक नहीं एहना, नहीं अमचो स्वाम, अम्ह कंसने गाम, सोमक कहे ताम, कह्यो वो आम, इये कारणे रे॥ १८॥ कुल अंगारा सारिखो, ए कृष्ण ते उठ्यो, स्वामी तुम्ह रूठ्यो, म करो मद जूठो, थाउ उठो, अदश्य तेहथी रे ॥ १९॥ समुद्रविजय कहे ताम रे, म करो ताणोताण, एहमां थाय हाण, मागो इण ठाण, पुत्र मागण विण, ते दीयुं रे ॥ २०॥ दूत कहे आपो नहीं रे, तो जाउं दूरे, पाताले पूरे, नहीं तो ते चूरे, ठाम संपूरे, चक्री राजीयो रे ॥ २१॥ अनाधृष्ट कुमार रे, कोपे कलकलीयो, बोले ते वलीयो, जामाता गलीयो, तेहथी चलीयो, रे चित्त तुम्ह तणो रे॥ २२॥ अम्ह जाइ मार्या एणे रे, तिणे अम्हने छलीया, कुंअर मुख वलीया, जो अमे सलसलीया, मलीया, रे जाणो अम्ह जम परे रे॥ २३॥ नहीं खमीये अम्हे तुझ रे, इहांथी जा वहेलो ॥ कहे ते जइ पहेलो, नीकलीयो घेलो, महे-लो, रे अपजश पामीने रे॥ २४॥ त्रीजे खंडे अग्यारमी रे, पहेले अधिकार, कही ढाल उदार, पदने सुखकार, सुणो विस्तार, बोले एहवुं रे ॥ २५॥ ३५४॥

॥ दोहा ॥

॥ दश दशार्ह भेला मली, बीजे दिन सहु राय ॥ नेमितिआने तेडीयो, समुद्रविजय तिण ठाय ॥ १॥ पूछे कह्यो करवुं किस्युं, जरासंध महाराय ॥ त्रणे खंडनो अधिपति, तास विरोध पड्यो आय॥ २॥ तेह कहे सुणो नृप-ति, राम कृष्ण ए दोय॥ त्रणे खंडना अधिपति, थाशे सुणो सहु कोय ॥ ॥३॥ पश्चिम दिश जाउं तुम्हे, सायरतीरे स्वाम॥ सुख समाधि मांहे रह्यो, शत्रुक्षय तिण ठाम ॥ ४॥ सत्यभामा प्रसवे जिहां, पुत्रयुगल ते थान ॥ नगर निवेश करजो तिहां, इम सुणीये तस दान ॥ ५ ॥ मथुरा नगरी मांहिथी, एकादश कुलकोड ॥ शौरीपुरथी नीकली, कुलकोडि सत जोड

॥ ६ ॥ यतः ॥ कुलकोमीमान ॥ एगा कोमाकोमी, सत्ताणवइं च सयसहस्साइं ॥ पन्नासं च सहस्सा, कुलकोमीणं मुणेयव्वा ॥ १ ॥ दोहो ॥ उग्रसेन मुख राजवी, समुद्रविजय भूपाल ॥ अष्टादश कुलकोमिशुं, चाल्या पुण्य विशाल ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ दक्षिण दोहिलो हो राज, दक्षिण दोहिलो हो राज ॥ ए देशी ॥ सोमक दूते हो राज, वात सुणावी हो राज, जरासंधे पावी रे, कोपे ते अति कलकल्या ॥ कालकुमरने हो राज, मोकले राजा हो राज, साथे साजा रे, पांचसें कुमरने मोकल्या ॥ १ ॥ करत प्रतिज्ञा हो राज, कालकुमार हो राज, खावुं हार रे, पेठो जो होय अग्निमां ॥ बहु बल साथे हो राज, जातां तेहने हो राज, तेहवे वेहुने रे, अंतर नवि तेह रानमां ॥ २ ॥ अरध भरतनी हो राज, देवीए जाण्युं हो राज, मनमां आण्युं रे, परवत एक विकुर्वीयो ॥ उंचो पहोलो हो राज, एक दूवारी हो राज, आवी धारे रे, बहु चय बलती ज्वलतीउं ॥ ३ ॥ शिबिर ते देखे हो राज, हस्ति तुरंग हो राज, देखे चंग रे, शूना थांभे बांधीया ॥ केइक बलतो हो राज, प्रहरण निरखे हो राज, पाखर परखे रे, ठाम ठाम ते सांधीया ॥ ४ ॥ एक चय पासे हो राज, वृद्ध ते नारी हो राज, वरवेश धारी रे, करुण स्वरे रोती थकी ॥ काल ते पूछे हो राज, रोवे शाने हो राज, तव ते काने रे, संजलावे इणी परे वकी ॥ ५ ॥ जरासंध जयथी हो राज, यादव नाठा हो राज, सांजली घाठा रे, बलथी काल ते आवतो ॥ नासी न शकीया हो राज, पेठा ए चयमां हो राज, क्षयकर घरमां रे, पुत्र कलत्र जन दाऊतो ॥ ६ ॥ कृष्ण ने राम हो राज, जादव बीजा हो राज, अधि निज्ञा रे, बलीया ए चयमां वली ॥ तिणे हुं रोवुं हो राज, हुं पण मरशुं हो राज, होम ते करशुं रे, देह तणो ते कलकली ॥ ७ ॥ इम कही पेठी हो राज, चयमां सहसा हो राज, देखी तहसा रे, कालादिक कुमर हवे ॥ चिंते एम हो राज, में तो प्रतिज्ञा हो राज, एहवी कन्या रे, खावुं जिहां होये सवे ॥ ८ ॥ इम कही पेठो हो राज, चयमां तेह हो राज, बाली देह रे, कीधी राख ते तिहां कणे ॥ गइ तिहां राति हो राज, विहाणुं विहाणुं हो राज, कांय न पायुं रे, यादव राय प्रमुख जिणे ॥ ९ ॥ देवीविलास हो राज, ते सहु देखी हो राज, तेह उवेखी रे, मनमां इणी

परे चिंतवे ॥ देवता पदमां हो राज, एहने शुं कहीये हो राज, एहथी मरीये रे, करतां एहशुं केतवे ॥ १० ॥ पुण्य ते लूटे हो राज, सहु पलटाय हो राज, बुद्धि पण जाये रे, होय प्रतिकूल सहु आपणा ॥ देव जो थाय हो राज, तेहथी दूरे हो राज, होय अधूरे रे, पुण्ये नवि होय थापना ॥ ११ ॥ राम केशवनो हो राज, अभिनव पुण्यो हो राज, थायछे शून्यो रे, अम्ह स्वामीनुं संप्रति ॥ माटे करवुं हो राज, जुद्ध ते साथे हो राज लेवा वाये रे, अंगार सुणो नृपति ॥ १२ ॥ जइने कहीये हो राज, चिंती वलीया हो राज, ते घणुं वलीया रे, पण गलीया थया सहु तिहां ॥ कही सहु वात हो राज, मगधनो स्वामी हो राज, मस्तक नामी रे, रोवे कहे शुं थयुं इहां ॥ १३ ॥ पमीयो धरणी हो राज, चेतन वलीयो हो राज, बहु टलवलीयो रे, परिजन सहित ते सांभली ॥ कंस ने काल हो राज, मूआ ते साले हो राज, वा जिम हाले रे, इछित वात ते नवि मली ॥ १४ ॥ सुखमां जातां हो राज, वात ते सुणतां हो राज, तेहज वहेता रे, प्रलय कोष्ठक निमित्तिउं ॥ पूछी चाल्यो हो राज, मुनिवर मलीयो हो राज, ते तो वलीयो रे, चारण ते चारित्रीयो ॥ १५ ॥ कहे इम वाणी हो राज, समुद्रविजयने हो राज, नमि जिनवरने रे, हरिसेन चक्रीने इणी परे ॥ जिणवर थाशे हो राज, तुमचो पुत्त हो राज, इणी परे उत्त रे, नाम अरिष्ठनेम तुम्ह घरे ॥ १६ ॥ राम ने कृष्ण हो राज, नवमा जाणो हो राज, मनमां आणो रे, बलदेव ने वासुदेव ए ॥ इम सुणी हरख्या हो राज, रेवत पासे हो राज, कीधा उल्लासे रे, सन्निवेश ततखेव ए ॥ १७ ॥ कोमी अढार हो राज, कुल तिहां रहेतां हो राज, श्रेयता सहेतां रे, शुभ दिवसे एक दिन हवे ॥ प्रसवे पुत्त हो राज, सत्य ते भामा हो राज, भामरभामा रे, भानु नाम ठरयुं ववे ॥ १८ ॥ त्रीजे खंडे हो राज, प्रथम अधिकारे हो राज, मनमां धारे रे, बारमी ढाल सोहामणी ॥ गुरु उत्तमनो हो राज, पद्म ते भाखे हो राज, जोए चाखे रे, होंश ते होय तेहने घणी ॥ १९ ॥ सर्व गाथा ॥ ३०० ॥

॥ दोहा ॥

॥ उत्तम दिवस जोइ करी, नाही हवे गोविंद ॥ करी सायर पूजा वली, अठम करे सुखकंद ॥ १ ॥ लवणाधिप आराधीयो, त्रीजा दिननी रात ॥ आसन कंप्युं देवनुं, जाणी कृष्णनी वात ॥ २ ॥ आवी देव ते थानके, रतन

आभरण ते लेय ॥ कुसुम मुख पूजा करी, कृष्ण भणी ते देय ॥ ३ ॥ पंच वदन आपे वली, नाम बीजुं पंचजन्य ॥ शंख वली ते रामने, आपे सुघोपह पुण्य ॥ ४ ॥ वस्त्र मणि प्रमुखे करी, पूजे कृष्ण ने राम ॥ केम समरयो मुजने हवे, जाखो स्वामी काम ॥ ५ ॥ कृष्ण कहे तुम्हे आपीयुं, वासुदेव धुर चार ॥ त्रिपृष्ठ प्रमुख सायर तटे, थानक अति मनोहार ॥ ६ ॥ वासुदेव नवमो अनुं, ए नवमो बलदेव ॥ थानक हवे आपो तुम्हे, अम्हने इहां ततखेव ॥ ७ ॥ समुद्र उंसारयो तिहां थकी, धनद ते शक्रवचन्न ॥ एक अहोरात्रे करी, नगरी साव रतन्न ॥ ८ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ उंलगडी आदिनाथनी जो जो ॥ ए देशी ॥ नव जोजन विस्तारथी जो, कांइ बार जोजन लंबाण जो ॥ द्वारिका नामे ते पुरी जो, कांइ अति उन्नत मंडाण जो ॥ पुण्य तणां फल पेखजो जो ॥ १ ॥ ए टेक ॥ भूमि मग्न नव हाथ जे जो, कांइ उंचो हाथ अढार जो ॥ पहोलो नव कर देखीये जो, कांइ दुर्ग ते अति मनोहार जो ॥ पु० ॥ २ ॥ रत्नमय ते निपनो जो, कांइ यंत्रशते सोहंत जो ॥ कोसीसां अति रम्य डे जो, बहु ध्वज महोटा फरकंत जो ॥ पु० ॥ ३ ॥ ॥ शिला संचय तिहां थापीयो जो, कांइ सिंह तणां प्रतिरूप जो ॥ गोल माआए शोनतो जो, कांइ गोपुर दीसे अनूप जो ॥ पु० ॥ ४ ॥ चोक फेर तिहां खातिका जो, कांइ रतने करी जेह बद्ध जो ॥ विमल जले पूरी घणुं जो, कांइ जलचर बहु तेह मध्य जो ॥ पु० ॥ ५ ॥ कमले संकुल तेह डे जो, शत्रु मने पण न लंघाय जो ॥ पद्मराग मरकत वली जो, कांय वैडूर्य रत्न सोहाय जो ॥ पु० ॥ ६ ॥ विविध रतन मणि कंचणे जो, कांइ विविध प्रकार प्रासाद जो ॥ वली गिरिआयन वली जो, जे स्वर्गेशुं मंडे वाद जो ॥ पु० ॥ ७ ॥ सर्वतोभद्र स्वस्तिक वली जो, वली गिरिकूट मंदिर नाम जो ॥ वर्द्धमान नामे वली जो, कांय अवतंसक वली धाम जो ॥ पु० ॥ ८ ॥ एक नूमि केइ दीपतां जो, कांइ दोय नूमि केइ सार जो ॥ त्रण चार वली केटलां जो, केइ पण षट् सग नूमि धार जो ॥ पु० ॥ ९ ॥ अनेक नूमि वली केटलां जो, कांइ जिनवर गेह उदार जो ॥ मह्मगने तिहां निरमीयां जो, कांइ रत्न माणिक करी सार जो ॥ पु० ॥ १० ॥ स्वस्तिक नाम सोहामणो जो, कांइ अग्नि कूणे वर भुन जो ॥ भुवन समुद्रविजय तणुं जो, कांइ तेहने तेहज भुन जो ॥ पु० ॥ ११ ॥ अशोग्य निमित तणा

करे जो,कांइ नंदावर्त गिरिकूट जो ॥ तेहनी पासे शोजता जो,कांइ ते पण स-
हेत ते कोट जो ॥ पु० ॥ १२ ॥ ईशान कूणे वसुदेवनो जो, कांइ कुवेरछं-
द एहवुं नाम जो ॥ श्रीविहारक्रम नामथी जो, कांइ उग्रसेननुं धाम जो
॥ पु० ॥ १३ ॥ सागर धरण पूरण वली जो, कांइ अजिचंद्र नाम कुमार
जो॥ तेहनां नाम घणां अछे जो, पण ग्रंथ थाये विस्तार जो ॥ पु० ॥ १४ ॥
कल्पवृक्षे करी शोजता जो,हवे सहुने मध्ये एक जो ॥ पृथिविजय नामे
जलो जो, बलदेव काजे अतिरेक जो ॥ पु० ॥ १५ ॥ सर्वतोजद्र नामे वली
जो, अष्टादश जूमि विशाल जो ॥ वासुदेवनो दीपतो जो, करे महोत्र ते
सुर ततकाल जो ॥ पु० ॥ १६ ॥ जेहवी सुधर्मा सजा अछे जो, छे नाम ते
सर्व प्रवास जो ॥ राम कृष्ण गृहपुर जलुं जो, निपजावे देव ते खास जो ॥
॥ पु० ॥ १७ ॥ एकसो आठ जिनबिंबथी जो, एक शोजित जिनवर चैत्य
जो ॥ मेरुशृंग परे शोजतुं जो, कांइ रत्न हिरण्ये करी सहित जो ॥ पु० ॥
॥ १८ ॥ वनवाडी फूली रही जो, कांइ सरोवर दीर्घिका वाव जो ॥ क्रीमा
पर्वत घणुं शोजता जो, कांइ जुवन ते उपर ठाव जो ॥ पु० ॥ १९ ॥ अहो-
रात्रे करीने गयो जो, ते नगरी द्वारामती नाम जो ॥ निपजावी कुबेरनी
जो, ए तो दीठे वने शुज ठाम जो ॥ पु० ॥ २० ॥ कौस्तुज रतन आपे हवे
जो, आवी लवणाधिप सुरराज जो ॥ कौमुदी गदा आपे वली जो, कांइ
शक्ति शस्त्र अतिव्राज जो ॥ पु० ॥ २१ ॥ नंदक खड्गरतन जलुं जो, कांइ
रुडी रतन वनमाल जो ॥ अक्षय तूण जुगल दीये जो, कांइ कृष्णने
पुण्यविशाल जो ॥ पु० ॥ २२ ॥ वाण आशीविष जुत जलुं जो, कांइ शार्ङ्ग
चाप वली अख जो ॥ गरुडध्वज संयुत दीये जो, घणुं रमणिक रथ बहु
शस्त्र जो ॥ पु० ॥ २३ ॥ हय गय मुशल आपतो जो, कांइ तालध्वजे
करी जुत जो ॥ रथ आपे घणुं घणुं रूयडो जो, निज थानक जाय गुप्त जो ॥ पु०
॥ २४ ॥ पूर्णजद्र जद्र आदि दे जो, वसावे उचित गृह तास जो ॥ वास
करे ते थानके जो, सहु जन करता सुविलास जो ॥ पु० ॥ २५ ॥ साडा
त्रण दिवस लगे जो, कांइ वरसे आजरण राशि जो ॥ वस्त्र ने रतन कनक
वली जो, धन धान्ये जरे आवास जो ॥ पु० ॥ २६ ॥ ऋद्धिवंता सहु
मानवी जो, सकल संपूर्ण जे कोश जो ॥ शुं कहीये घणुं तेहनुं जो, थयो सुर
नगरी सम जोश जो ॥ पु० ॥ २७ ॥ सुखमां इम जन सहु रहे जो, कांइ श्रीजि

खंडे सार जो ॥ तेरमी अति हर्षे करी जो, कांइ ढाल प्रथम अधिकार जो ॥ पु० ॥ २८ ॥ क्षमाविजय जिनराजनी जो, कांइ सान्निधे भाखी एह जो ॥ उत्तमविजय गुरु तणो जो, कहे पद्मविजय गुणगेह जो ॥ पु० ॥ ॥ २९ ॥ सर्व गाथा ॥ ४१७ ॥ इति श्रीमदुत्तमविजयपदपद्मभृंगतुल्यपद्मविजयविरचिते श्रीमन्नेमिजिनचरित्रे प्राकृतप्रबंधे रामकृष्णअरिष्टनेमिजन्मकंसवधद्वारिकानिवेशकीर्त्तननामनि तृतीयखंडे प्रथमोऽधिकारः समाप्तः॥॥

॥ अथ तृतीय खंमस्य द्वितीयोऽधिकारः प्रारभ्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ जिन शारद गुरुपद नमी, नमी विद्यागुरु राय ॥ कहुं बीजो अधिकार हवे, अचरिज अधिक सोहाय ॥ १ ॥ अरिहा नेमकुमर हवे, बाल अवाल चरित्त ॥ सुर नर सेवित जगपति, सकल कलागम चित्त ॥ २ ॥ त्रण ज्ञानी जिनवर कहे, नावी वात समग्ग ॥ अद्भुत नाण जिणंदनुं, देखी यादववग्ग ॥ ३ ॥ राम कृष्ण सेवा करे, क्रीडा करे जिन साथ ॥ यौवन पाम्या जिनवरु, उंचा चालीश हाथ ॥ ४ ॥ सार सार पुजले करी, कयुं जिणंद शरीर ॥ निज गुणथी जिनराज जी, अधकृत सायर नीर ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ समुद्रविजय सुत चंदलो ॥ साहेलडीयां ॥ ए देशी ॥ मरकत मणि छाया समी ॥ सामलीया जी ॥ जस कांति दीपे मनोहार ॥ वलथी वलीया जी ॥ पदतल शोभित जेहवां ॥ सा० ॥ कमलने ते अनुहार ॥ व० ॥ १ ॥ मोह नगरी पुर बारणे ॥ सा० ॥ तोरणने काजे थंन ॥ व० ॥ मरकत मणिमयी एह ठे ॥ सा० ॥ जंघानो मानुं विजुंन ॥ व० ॥ २ ॥ दुर्गति नयरी बारणे ॥ सा० ॥ मानुं अर्गला एह तेयार ॥ व० ॥ त्रणे भुवनने राखवा ॥ सा० ॥ मानुं बांहनी जेहनी सार ॥ व० ॥ ३ ॥ धर्मधुरा वहेवा नणी ॥ ॥ सा० ॥ वृषनोन्नत जेहना खंध ॥ व० ॥ नवजलधर गंनीरठे ॥ सा० ॥ जस शब्द तणे परबंध ॥ व० ॥ ४ ॥ विद्रुम सम राजे नला ॥ सा० ॥ जस अधर अरुण सुरसाल ॥ व० ॥ दंत जिसा दाडिमकली ॥ सा० ॥ शोभे जेहने तिणे नाल ॥ व० ॥ ५ ॥ नासिका सरल ते मन धरे ॥ सा० ॥ जे नेत्र कमलनी नाल ॥ व० ॥ अर्द्धचंद्र सम नाल ठे ॥ सा० ॥ वदन ते चंद

साव ॥ व० ॥ ६ ॥ वर्णन कोण करी शके ॥ सा० ॥ जिन गुणनो अगम अपार ॥ व० ॥ जिन पण जिन गुण वर्णवे ॥ सा० ॥ पण कहे सामान्य विचार ॥ व० ॥ ७ ॥ सहु सुर जो नेला मली ॥ सा० ॥ करे रूप अंगुष्ठ प्रमाण ॥ व० ॥ जिनवर अंगुष्ठ आगले ॥ सा० ॥ शोन्ने इंगालने गण ॥ व० ॥ ८ ॥ राम कृष्णना रूपथी ॥ सा० ॥ होय अनंत गुणुं सुररूप ॥ व० ॥ गणधर रूप अनंत गुणुं ॥ सा० ॥ जिन अनंत गुणुं ते अनूप ॥ व० ॥ ए ॥ रूप कथा पूरी थइ ॥ सा० ॥ एह उपर जगमां नांहि ॥ व० ॥ तो अम्ह शक्ति ते केटली ॥ सा० ॥ शिरोमणि मूरख मांहि ॥ व० ॥ १० ॥ जिहां जिहां प्रनुजी संचरे ॥ सा० ॥ तिहां सघली पुरनी नार ॥ व० ॥ हसतां रमतां वेसतां ॥ सा० ॥ सहु ध्यावे नेमकुमार ॥ व० ॥ ११ ॥ घर कारय पण नवि करे ॥ सा० ॥ नवि नोजन करे चित्त लाय ॥ व० ॥ वरते चित्तडुं ते नेममां ॥ सा० ॥ उंघमांथी नरुकी धाय ॥ व० ॥ १२ ॥ नेमजी देखी दिल ठरे ॥ सा० ॥ थाय सहुए परवश काम ॥ व० ॥ तिलतुप मात्र चले नहीं ॥ सा० ॥ जिनवरनुं शील उद्दाम ॥ व० ॥ १३ ॥ ब्रह्मचारी जे बालथी ॥ सा० ॥ योवनमां जीत्यो काम ॥ व० ॥ काम महाबलीयो कह्यो ॥ सा० ॥ नवि राखे कोयनी माम ॥ व० ॥ १४ ॥ यतः ॥ योवनेऽसौ स्मरजयो, विशेषादिह योगिनां ॥ दुस्तरोब्धिः स्वनावेन, किं पुनर्ग्रीष्मन्नीषणे ॥ १ ॥ काम महाग्रह बोलीयो ॥ सा० ॥ दुःखदायक विरही लोक ॥ व० ॥ मेलां रहेवुं सोहेलुं ॥ सा० ॥ तेहमां नवि उपजे शोक ॥ व० ॥ १५ ॥ सुकर ते दुःकर तप कस्यो ॥ सा० ॥ इंद्रिय जय सोहिलो थाय ॥ व० ॥ वनवासीपणुं सोहिलुं ॥ सा० ॥ उन्ना ते सहेल रहेवाय ॥ व० ॥ १६ ॥ क्रिया ते करवी सोहिली ॥ सा० ॥ उतरवो सहेल समुद्र ॥ व० ॥ सहेल कही आतापना ॥ सा० ॥ पुन्ये वंश इंद्र नरेंद्र ॥ व० ॥ १७ ॥ मौनपणुं वली सोहिलुं ॥ सा० ॥ सहेली गुरुसेवा जाण ॥ व० ॥ शास्त्र ते नणवां सोहिलां ॥ सा० ॥ जीते बहुला राजान ॥ व० ॥ १८ ॥ सहुथी दुःकर काम डे ॥ सा० ॥ सहुने एह पाडे माम ॥ व० ॥ त्रणे खंडनो अधिपति ॥ सा० ॥ रावणने ठंमाव्युं गाम ॥ व० ॥ १९ ॥ यतः ॥ मत्तेनकुंजदलने नुवि संति शूराः, केऽपि प्रचंमम्रृगराजजयेऽपि शक्ताः ॥ किंतु ब्रवीमि बलिनां नवतां पुरस्ता,–त्कंदर्पदर्पदलने विरला मनुष्याः

॥ ९ ॥ नेमि जिनेश्वरे कामने ॥ सा० ॥ करी मूक्यो दासने गाम ॥ व०॥ यौवन अपजश विणु रह्युं ॥ सा० ॥ हुं प्रणमुं तस शिर नाम ॥ व० ॥२०॥ यतः ॥ अतिवाहितमतिगहनं, विनापवादेन यौवनं येन ॥ दोपनिधाने जन्मनि, किं न प्राप्तं फलं तेन ॥ ३ ॥ बलिहारी प्रजु नेमनी ॥ सा० ॥ यौवन वय मांहि जेण ॥ व० ॥ अंगथी अनंगने जीतीयो ॥ सा० ॥ उपजे मुऊ अचरिज तेण ॥ व० ॥ २१ ॥ अग्नि मांहि पेसे घणा ॥ सा० ॥ दारे निज शस्त्रे अंग ॥ व० ॥ विधि चित्र प्राणी रचे ॥ सा० ॥ विरला जग जीत अनंग ॥ व० ॥ २२ ॥ यतः ॥ अह्नाय वह्नौ वहवो विशंति, शस्त्रे स्वगात्राणि विदारयंति ॥ कृच्छ्राणि चित्राणि समाचरंति, मारारिवीरं विरला जयंति ॥ ४ ॥ अक्रूरादिक बांधवा ॥ सा० ॥ सहु जिनवरना गुण गाय ॥ व० ॥ नवि रहे जिनथी वेगला ॥ सा० ॥ रमणी गुणी सुजट सहाय ॥ व० ॥ २३ ॥ प्रजु विक्रम सौजाग्यमां ॥ सा० ॥ सहु लोक तिहां आसक्त ॥ व० ॥ बहु कन्या वरवा जणी ॥ सा० ॥ राय आवी बहुल कहंत ॥ व० ॥ २४ ॥ जिनवर नेम माने नहीं ॥ सा० ॥ विवाहनाम मन मांह ॥ व० ॥ जाणे स्वरूप संसारनुं ॥ सा० ॥ हणीयो कंदर्प उठाह ॥ व० ॥ २५ ॥ त्रीजे खंडे ए कही ॥ सा० ॥ बीजे अधिकारे ढाल ॥ व० ॥ पहेली पद्मे हर्षेशुं ॥ सा० ॥ जिनवरनुं चरित्र रसाल ॥ व० ॥ २६ ॥ सर्व गाथा ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिन नारद आवीया, जमतां कृष्णने गेह ॥ गया अंतेउरमां हवे, पूज्या पछे सनेह ॥ १ ॥ आरीसो जोतां थका, न दीये आदरमान ॥ रूठा नारद ऋषि तदा, सत्यजामा जणी जाण ॥ २ ॥ मन चिंते ऋषि इणी परे, आणुं एहने शोक्य ॥ शोक्य शोक जाजन थशे, फल पामे ए रोक ॥ ३ ॥ कुंम्निपुर पहोतो वली, जीष्मक रायने गेह ॥ जसोमती नारी रुख्मी, रुकमी सुत ससनेह ॥ ४ ॥ रुक्मिणी पुत्री तेहने, रूपकलानुं गेह ॥ रायसजामां जइ कहे, कृष्णने योग्य छे एह ॥ ५ ॥ रुक्मिणी कृष्ण रागी थइ, ध्यान धरे नित तास ॥ रुक्मिणी रूप आलेखीने, आवे कृष्णनी पास ॥ ६ ॥ कृष्ण पूछे नारद प्रते, कुण ए देवीरूप ॥ तव हसतो नारद कहे, मानुष्यणी ए अनूप ॥ ७ ॥ वात सुणी रागी थयो, कृष्ण मोकले दूत ॥ तेह कहे नहीं आपीये, एह तो गोपनो पुत ॥ ८ ॥ परणावुं शिशुपालने, दूत वह्यो

सुणी वात ॥ वात कही ते कृष्णने, ते पण कोप जरात ॥ ए ॥

॥ ढाल वीजी ॥

॥ चंद्रवाहु जिनराज, थां परवारीहो ॥ ए देशी ॥ अपहरी ते रुक्मिणी मृगनयणी, केळी करी शिशुपाले हो ॥ राम कृष्ण दोय पुण्यथी जारी हो ॥ ए आंकणी ॥ बहु आश्चर्य नारीने देखावी, जीत लीधो ततकाल हो ॥ राम० ॥ १ ॥ रुक्मिणी कहे सुणो स्वामी जी मोरा, बहोत अछे तुम्ह नारी हो ॥ राम० ॥ बहु रिद्धि परिवारे आवी, हुं तो एकाकिणी हारी हो ॥ राम० ॥ २ ॥ हसवा योग्य न थाउं तेहने, तेम करजो मुज स्वामी हो ॥ रा० ॥ कृष्ण कहे तेम करशुं सरवे, जेम तुजने सहु नामी हो ॥ रा० ॥ ॥ ३ ॥ करी गंधर्वविवाह ते साथे, जोगवे जोग ते राते हो ॥ राम० ॥ जामा पूछे प्रियाने देखावो, तव इणी परे कहे वाते हो ॥ राम० ॥ ४ ॥ उद्याने लखमी घरे बेठी, तुज देखावशुं देव हो ॥ रा० ॥ लखमीथानक रुक्मिणी थापी, करवा छल ततखेव हो ॥ राम० ॥ ५ ॥ चाली सपत्नी सहित ते जोवा, लखमी रूप वखाणे हो ॥ रा० ॥ कोइ शिल्पी एह रुनो दीसे, रूप एहवुं इण गाणे हो ॥ रा० ॥ ६ ॥ इम कहेती लली लळी पाय प्रणमे, मुख इणी परे कहे वाणी हो ॥ रा० ॥ लखमी देवी तेम करो मुजने, जेम नवि माने नवी राणी हो ॥ रा० ॥ ७ ॥ जो मुज वंछित थाशे सघलां, पूजा करीश तुज आवी हो ॥ रा० ॥ इम करी कृष्ण पासे जइ जाखे, स्वामी प्रिया किहां दावी हो ॥ रा० ॥ ८ ॥ कृष्ण उठीने जोवा रे चाल्या, साथे जामा नारी हो ॥ रा० ॥ कृष्णदेखीने उठी थावे, रुक्मिणी नारी ते सारी हो ॥ रा० ॥ ए ॥ हरि हसीने कहे दोष न एहमां, इहा वंदन कारी हो ॥ रा० ॥ थइ विलखी घर आवी जामा, रुक्मिणी मानी ते वारी हो ॥ रा० ॥ १० ॥ रुक्मिणीने बहु रुद्धि आपीने, प्रीति करी तिणे जारी हो ॥ रा० ॥ वास दीधो जामा घर पासे, जोग जोगवे सुखकारी हो ॥ रा० ॥ ॥ ११ ॥ नारद कहे एक दिन इहां आवी, वात ए मुज मन आय हो ॥ ॥ रा० ॥ वेताढ्ये जंबु नगरीए, जंबव नाम ते राय हो ॥ रा० ॥ १२ ॥ शिवचंदा नामे तस नारी, जांबुवती नाम धुया हो ॥ रा० ॥ तस गुण सांजली कृष्ण ते चाल्या, ते अपहरीने आया हो ॥ रा० ॥ १३ ॥ जुद्ध थयुं तस तात संगाथे, जीत्या ते ततकाल हो ॥ रा० ॥ परणी पुत्री जंबव रायनी,

लइ चाल्या ते बाल हो ॥ रा० ॥ १४ ॥ सिंहलद्वीप अधिपनी पुत्री, परण्या लखमणा रुमी हो ॥ रा० ॥ राष्ट्रवर्द्धन राय पुत्री परणे, सुसीमा नाम न कूमी हो ॥ रा० ॥ १५ ॥ युद्ध करी जीत्या महाराया, लखमणा पासे आवास हो ॥ रा० ॥ वीतजय नयरना स्वामीनी पुत्री, गोरी नाम सुवास हो ॥ रा० ॥ ॥ १६ ॥ तेहने पण जइ कृष्ण ते परण्या, हवे हिरण्यनाज राजा हो ॥ रा० ॥ पद्मावती तस पुत्री रुमी, मात पिता पख ताजा हो ॥ रा० ॥ १७ ॥ अपहरी रण करी तेहशुं जीती, परण्या प्रेमथी नारी हो ॥ रा० ॥ गंधारस्वामीनी गंधारी पुत्री, परण्या मनमां धारी हो ॥ रा० ॥ १८ ॥ अग्रमहिषी परणी आठे, करे आवास समीपे हो ॥ रा० ॥ सुख जोगवतां काल गमावे, सुरसुखने पण जीपे हो ॥ रा० ॥ १९ ॥ रुक्मिणीने घरे एक दिन आव्या, अयमत्ता ऋषिराय हो ॥ रा० ॥ जामा पण रुक्मिणी घर आवी, देखी ऋषि तिणे गय हो ॥ रा० ॥ २० ॥ त्रीजे खंडे बीजे अधिकारे, बीजी ढाल रसाली हो ॥ रा० ॥ उत्तमविजय गुरु सान्निधयी, पद्म कहे ग्रंथ नाली हो ॥ रा० ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ ६१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मुनिवरने पूछे इस्युं, मुनिने करी परणाम ॥ पुत्र यशे के मुफ नहीं, कहे मुनिवर गुणधाम ॥ १ ॥ पुत्र थशे कृष्णज समो, इम कही मुनिवर जाय ॥ रुक्मिणीने जामा कहे, पुत्र ते माहरे थाय ॥ २ ॥ मुनिवर मुफने कही गया, रुक्मिणी जाखे ताम ॥ उत्तर्या मुनिवच नवि फले, पुत्र महारो इण ठाम ॥ ३ ॥ इम विवाद करती थकी, गइ ते कृष्णनी पास ॥ दुर्योधन राजा तिहां, बेठो ठे सुविलास ॥ ४ ॥ दुर्योधनने इम कहे, सत्यजामा सुणो स्वाम ॥ जामाता तुम्हचो थशे, अमचो सुत सुखकाम ॥ ५ ॥ रुक्मिणी पण इणी परे कहे, दुर्योधन कहे ताम ॥ देशुं पुत्री तेहने, पुत्र थशे जस जाम ॥ ६ ॥ जामा कहे सुत प्रथम जे, प्रसवे तास विवाह ॥ आपे केश मस्तक तणा, इम पण कहे उठाह ॥ ७ ॥ राम कृष्ण मुख राजवी, साखी राखी जाय ॥ नाखी इम उजरु थकी, पहोती निज निज ठाय ॥ ८ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ हांरे दिन उगारे बादल वरणी, हांरे चित्त हरणी ॥ दिन० ॥ ए देशी ॥ हांरे सूनी एक दिन कृष्णनी घरणी, हांरे जे बीजी परणी ॥ ए आंकणी ॥ बेठी

वृषभ उज्ज्वल हुं उपर, देखे सुपनुं एहवुं ॥ सु० ॥ महा शुक्रथी कोइ देव चवीने, गर्भ मांहि थयुं रहेवुं ॥ सु० ॥ १ ॥ हरिने तेह सुपन संभलावे, हरि कहे तुज सुत होशे ॥ सु० ॥ वात सुणी जामा मन खीजी, कोपी अति असंतोषे ॥ सु० ॥ २ ॥ एक दिन कपटे हरिने भाखे, सुपने गज में दीठो ॥ सु० ॥ कूट जाएयुं पण कहे सुत थाशे, रूपे अतिहि उकिठो ॥ सु० ॥ ३ ॥ देवयोगे रह्यो गर्भ भामाने, उदर वधे हवे निते ॥ सु० ॥ भामा उदर तो गागर सरखुं, होतां काल व्यतीते ॥ सु० ॥ ४ ॥ रुक्मिणी घणुं गर्भ ते उत्तम, न जणाये तस उदरे ॥ सु० ॥ भामा भाखे हरिने इणी परे, जुर्ड अम्ह बेहुने उदरे ॥ सु० ॥ ५ ॥ रुक्मिणीए मायाए भाख्युं, इम जव बोली भामा ॥ सु० ॥ आवी वधामणी पुत्र ते प्रसवे, तुम्ह रुक्मिणी जे वामा ॥ सु० ॥ ६ ॥ क्रोध विह्वल थइ भामा सुणीने, प्रसवे पुत्र ते एहवे ॥ सु० ॥ भानु नाम भामाना सुतनुं, दीधुं सुणो हवे तेहवे ॥ सु० ॥ ७ ॥ हरि एक दिन गया रुक्मिणी सदने, पुत्र लीये निज खोले ॥ सु० ॥ नाम प्रद्युमन ते नाम वे तेहनुं, मुण मुण शब्द ते बोले ॥ सु० ॥ ८ ॥ धूमकेतु सुर पूरववेरे, रुक्मिणी रूपने धरतो ॥ सु० ॥ कृष्णनी पासे आवी मागी, तेह बालकने हरतो ॥ सु० ॥ ९ ॥ भूतरमण उद्याने पहोतो, टंकशिलानी पासे ॥ सु० ॥ चिंते आस्फाली नवि मारुं, मरशे सहेजे ए आशे ॥ सु० ॥ ॥ १० ॥ इम चिंती ते मूकी चाल्यो, चरमशरीरी ते बाल ॥ सु० ॥ निरुपक्रम आयुने धरतो, सुखमां रहे तिणे काल ॥ सु० ॥ ११ ॥ अग्निज्वाल पुरथी निज नगरे, संवर खेचर जातो ॥ सु० ॥ तास विमान खल्युं तिणे थाने, बाल जुए शुभ गातो ॥ सु० ॥ १२ ॥ कनकमाला निज नारीने आपे, निज नगरे ते जावे ॥ सु० ॥ गूढगर्भा प्रसवे मुज नारी, सुत एम लोक जणावे ॥ सु० ॥ १३ ॥ पुत्र उत्छव करी नाम ते थापे, प्रद्युम्न रुडुं जास ॥ सु० ॥ रुक्मिणी हवे हरि पासे मागे, पुत्र दीउ उल्लास ॥ सु० ॥ १४ ॥ रुक्मिणीने पूछे हरि एहवुं, ताहरो सुत कहे किहां छे ॥ सु० ॥ कहे स्वामी तुम्हे हमणां लीधो, ठगविद्या केम इहां छे ॥ सु० ॥ १५ ॥ विलखा थया हवे कृष्णजी मनमां, चिंते ठग्यो मुज कोइ ॥ सु० ॥ खोल करी पण नवि कहीं लीधो, सहु दिश चाली जोइ ॥ सु० ॥ १६ ॥ मूर्छा रुक्मिणी पामे चेतन, वलवले परिजन सघलो ॥ सु० ॥ यादव यादवपत्नी रोवे, दुःख मांहे थयो

ढगलो ॥ सु० ॥ १७ ॥ कृष्ण बेठा सहु यादव मांहि, सर्व सजामां डुःखीश ॥ सु० ॥ नारद आवी तेहने पूछे, केम तमे डुःखीया न सुखीया ॥ सु० ॥ १८ ॥ कृष्ण कहे रुक्मिणी सुत हरीयो, मुज करथी करी छलने ॥ सु० ॥ जो शुद्धि जाणो तो तुमे जाखो, जश्ये बहु लेइ बलने ॥ सु० ॥ १९ ॥ बोले नारद सुणो दामोदर, अयमत्तो महाज्ञानी ॥ सु० ॥ तेह तो मोक्ष पधास्या हमणां, चिहु अमृत यथा पानी ॥ सु० ॥ २० ॥ पूछुं जइ सीमंधर जिनने, विचरे संशय हरता ॥ सु० ॥ नारद प्रजु पासे हवे आव्या, जिनने नति ते करता ॥ सु० ॥ २१ ॥ पूछे रुक्मिणीनो सुत किहां छे, तव प्रजु सघलुं जापे ॥ सु० ॥ नारद पूछे धूमकेतुने, वेर ते शे अज्यासे ॥ सु० ॥ २२ ॥ केवलज्ञानी जिनवर जाखे, पूरव जवनी वातो ॥ सु० ॥ नारद सुणे इहां जविजन सुणजो, उत्तम ए अवदातो ॥ सु० ॥ २३ ॥ त्रीजे खंडे बीजे अधिकारे, जाखी ए त्रीजी ढाल ॥ सु० ॥ उत्तमविजयना पद्मविजयने, होवे मंगलमाल ॥ सु० ॥ २४ ॥ सर्व गाथा ॥ ७३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जंबुद्दीपना जरतमां, मगध देश शालिग्राम ॥ उपवन अति सोहामणुं, अछे मनोरम नाम ॥ १ ॥ ते उद्याननो अधिपति, यक्ष सुमन अभिधान ॥ सोमदेव द्विज नामथी, वसे ते पुरमां जाण ॥ २ ॥ पुत्र थया दोय तेहने, अग्निजूति वायुजूति ॥ वेद अर्थ पंमित बहु, पाम्या योवनजूति ॥ ३ ॥ नंदीवर्द्धन नामथी, तेह उद्यान मफार ॥ आचारय पाउधारीया, प्रणमे लोक अपार ॥ ४ ॥ द्विजसुत बेहु अमरष जस्या, आव्या सूरीश्वर पास ॥ कोलाहल उपदेशमां, करतां देखे तास ॥ ५ ॥ सत्य नाम सूरि तणो, शिष्य ते बोल्यो ताम ॥ जेंसा परे किम थार्ज गे, आवो कहुं तुं आम ॥ ६ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ चंद्रानन चतुर सुजाण, धातकी खंडे रे ॥ ए देशी ॥ किम जेंसा जाखी आज, वर्त्तीया अमने रे ॥ तव सत्य कहे मुनि साच, जाखुं तुमने रे ॥ एक जेंसो वनमां जोर, मदथी मातो रे ॥ एक दिन जल पीवा काज, सरमां जातो रे ॥ १ ॥ मांहि पेसी कह्योलुं नीर, पीवुं दोहिलुं रे ॥ बीजाने तो अंतराय, करवुं सोहिलुं रे ॥ जो गो तुम्हे पंमित आज, अम्हने जापो रे ॥ आव्या तुम्हे किहांथी अत्र, तेह प्रकाशो रे ॥ २ ॥ जेम हंस-

सजामां काक, दीसे तेहवा रे ॥ अज्ञाने आवृत देह, उत्तर देवा रे ॥ मुख नीचुं करी रह्या जाम, मुनिवर बोल्या रे॥ तुम्हे पूरव जव शीयाल, मांस-ना खोल्या रे ॥ ३ ॥ एक दिन एक खेतर मांहि, कलची मूकी रे॥ रज्जु प्रमुख सवि रात, मतिथी चूकी रे ॥ हवे आवी तेह शीयाल, करमी खाधा रे ॥ तिहांथी मरी ब्राह्मण दोय, करता वाधा रे ॥ ४ ॥ हवे हालिक करीने काल, स्वपासुत जायो रे ॥ जातिसमरण हवे तास, करमे आयो रे ॥ पुत्रनी वधू माता थाय, ए केम सहीये रे ॥ इम चिंती मूंगो तेह, दिनथी रहीये रे ॥ ५ ॥ नवि मानो तेडो तास, अमची पासे रे ॥ सहु मखीने तेमी तास, खावे रासे रे ॥ कहे मुनिवर सांजल वात, जवमां जमतां रे ॥ ॥ सहु मात पिता ने पुत्र, कलत्रपणे रमता रे ॥ ६ ॥ एक एक अनंती वार, जवस्थिति एहवी रे ॥ केम मूकपणुं कखुं आज, लज्जा केहवी [illegible] ॥ तव प्रणमी मुनिना पाय, जाखे वाणी रे ॥ तुमची कीर्त्ति जग मांहि, सत्य गवाणी रे ॥ ७ ॥ स्वामी कही साची वात, सघली माहरी रे ॥ माहरी मति स्वामी आज, तुम्हे उद्धारी रे ॥ लीये दीक्षा सुणी तेह वाणी, बहु जन बूज्या रे॥ हालिक बूज्यो द्विज दोय, मोहमां मुंज्या रे ॥ ८ ॥ हवे हांसी करे सहु लोक, घर लगे पहोता रे ॥ पण वैर जराणुं तेह, मुनिशुं रहेता रे ॥ हणवाने आव्या तेह, यामिनी मांहि रे ॥ यक्षे थंजाव्या तेह, करी उछांहि रे ॥ ए ॥ विहाणे सहु देखे लोक, करत निभ्रंछा रे॥ तस मात पिता करे पोक, जीवन वंछा रे ॥ तव बोल्यो यक्ष प्रत्यक्ष, यक्ष ते वाणी रे ॥ मुनिवध करनारा एह, थंन्या जाणी रे ॥ १० ॥ जो दीक्षा ले तो आज, मूकुं एहने रे ॥ तव बोल्या डुक्कर वात, एह सहु केहने रे ॥ अम श्रावक धाशुं शुरू, इम सुणी मूक्या रे ॥ तस मात पिता हवे जैन, धर्मथी चूक्या रे ॥ ११ ॥ अग्निभूति वायुभूति, काल करीने रे ॥ पट्ट पल्य आयु सौधर्म, कल्प वरीने रे ॥ गजपुरमां अर्हद्दास, वणिकने बेटा रे ॥ पूर्ण-भद्र मणिजद्र, नाम धर्मे लेटा रे॥ १२॥ तिहां मुनिवर मलीया सार, म-हेंड नामे रे ॥ तस पूछे मननी वात, संशय गामे रे ॥ शुनी ने ए चंमाल, देखी नेह रे ॥ आवे ठ कारण कांय, जाग्यो तेह रे ॥ १३ ॥ कहे मुनिवर पूरव नाम, अग्नि ने वाय रे ॥ सोमदेव तुमारो तात, अनिला माय रे ॥ तुम तात मरी थयो राय, जितशत्रु नाम रे ॥ परदारा रस नाम, बहुलो

काम रे ॥ १४ ॥ तुज माता मरीने तेह, सोमभूति विप्र रे ॥ तस रुक्मि-
णी नामे नाम, हुइ ते क्षिप्र रे ॥ जितशत्रुए दीठी नार, निज घर लावे रे
॥ मरी त्रण पल्योपम आय, नारक थावे रे॥ १५ ॥ तिहांथी वली हरण
थाय, घाय लहीने रे ॥ श्रेष्ठिसुत वली गज थाय, कर्म वहीने रे ॥ जाति-
समरण वली पामी, तिहांथी चवीने रे ॥ वैमानिक सुर त्रण पल्य, आय
भवीने रे॥ १६ ॥ चवी तिहांथी थयो चंमाल, एह ते दीसे रे ॥ रुक्मि-
णी भव भमी शुनी एह, देखी हींसे रे ॥ ते तो पूरणभद्र, जाति संभारी रे॥
चंमाल शुनी प्रतिबोध, दीये तिण वारी रे॥ १७॥ वैराग्य लही चंमाल, अण-
सण मास रे ॥ पाली नंदीसर द्वीप, सुर थयो खास रे ॥ हवे शुनी अण-
सण पाली, शंखपुरीमां रे ॥ सुदर्शना राजनी धूय, रूप धूरीमां रे ॥ १८॥
मुनि महेंद्र आव्या फेर, पूछे तास रे ॥ पूर्णभद्र मणिभद्र वात, बोध्या
जास रे ॥ पूर्णभद्र मणिभद्रे तास, वली कह्यो बोध रे ॥ लेइ दीक्षा गइ
देवलोक, करती शोध रे॥ १९ ॥ पूर्णभद्र मणिभद्र दोय, सोहमदेव रे ॥
श्रावकव्रत पूरे भाव, कीधी सेव रे ॥ हथिणाउर नगरे राय, विष्वक्सेन
रे ॥ मधु कैटभ नामे दोय, शुभ धर्मेण रे॥ २० ॥ वटपुरमां थयो राजान,
कनकप्रभ नामे रे ॥ बहु भव भमी नंदी देव, पुण्ये जामे रे ॥ बहु भव
भमी नारी देव, हवे ते राणी रे ॥ थइ चंद्राभा इण नाम, जगमां जाणी
रे॥ २१ ॥ विष्वक्सेन थापे राज्य, मधु निज सुतने रे ॥ कैटभ युवराज्ये
थापी, थइ गुणयुतने रे ॥ लेइ दीक्षा गयो देवलोक, हवे मधु राय रे ॥ त्रण
भुवनमां जश ने कीर्त्ति, जास गवाय रे ॥ २२ ॥ एक भीम पल्लिपति तास,
देशने लूसे रे ॥ मधु चढीयो हणवा तास, वह्वोले रोपे रे ॥ वटपुरे कन-
कप्रभ राय, मारग मलीयो रे॥ करी पूजा ने सत्कार, हेजे हलीयो रे॥२३॥
त्रीजे खंडे ढाल, चोथी भाखी रे ॥ एह बीजे अधिकार, चित्तमां राखी रे
॥ गुरु उत्तमविजयनी सेव, मुजने लाधी रे ॥ कहे पद्मविजय भली भात,
उद्यम साधी रे ॥ २४ ॥ सर्व गाथा ॥ १२३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ भोजन कनकप्रभने घरे, करे ते मधु राजान ॥ चंद्राभा नारी सहित,
प्राभृतनुं करे दान ॥१॥ मधुने प्रणमी नारी ते, गइ अंतेउर मांहि ॥ कामा-
तुर मधु नृप थयो, चाल्यो जीतण त्यांहि ॥ २ ॥ जीतीने पाछो वल्यो,

आव्यो चतुर नेह ॥ मांने चंद्रानन कंत, पण नवि आवे मुज ॥ ३ ॥ जे वहाल तुं हो दवे, नारी दोषी तेम जाय ॥ एक हाणि हुं तुं बळी, मनडुं ऊन मांहि थाय ॥ ४ ॥ नवि दोषी ते कारणे, वळती ते छेह जाय ॥ कनककळश मूर्छित पडी, आंसुडाम न माय ॥ ५ ॥ तेम हुहीने आणंद, करे विलाप अनेक ॥ मदनाला देखा दवे, पडी कनक अविवेक ॥ ६ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ दोरी हो प्रभु, दोरी जगगुरु गुरु ॥ ए देशी ॥ गजा हो कुंवे गजा चंद्रानना पाय, जावे हो कुंवे जाती तप पुंठे करवुं रे ॥ आदरा हो कुंवे आदरा गुरुडे बहु थाय, कादव हो प्रभु कादव आवो गुणडे किम्युं रे ॥ १ ॥ आतसा हो कुंवे आता धंधे नाम, शिखा हो कुंवे शिखा कुंवाने कहा रे ॥ वरखो हो वरखो वरखो दोझ नाम, जावे हो नाठो आवे ते गुरुवण कहा रे ॥ २ ॥ बोहे हुं नव बोहे मनु गुप पय, आपदा हो नाखी आप ना कुंव ने धंधमां रे ॥ नांखी हुं तव नांखी बहु हुं विसारी, न्याय हो प्रभु न्याय विविधविध चंचमां रे ॥ ३ ॥ मोनधी हो गव पांनधी आव्यो नेह, देवे हो निद्रा देवे दर्शी व्यवसार करी रे ॥ मानव हो गुप मानो आपणो दाढ, आमी हो निद्रा आमी चंद्रानन नहि देख्यो रे ॥ ४ ॥ विजि हो नेह विजिवरि हल दीठ, चित्रवे हो तव चित्रवे चंद्रानना निद्रा रे ॥ माटे हो पद माडे विरोधे पल, वामे हो मुज वामे दुःख विण गुरु रुदां रे ॥ ५ ॥ मधुने हो निद्रा मधुने देश्याये नाम, ते वन हो वहां ते वन वखा- आवने रे ॥ पुंधु हो गुल पुंधुने पाणी राम, केदल हो पुन केदल पुन अन पाणीने रे ॥ ६ ॥ जिनप हो गुरु जिनपयादनी पास, नव नवी हो विदु नव नवी छादश अंग तपया रे ॥ अनशन हो करी अनशन महा सुद पाप, देव हो कल्प देव लावानिकपणे सुणता रे ॥ ७ ॥ कनक हो प्रन कनक- प्रन मही दुःख, धूम हो केतु धूमकेतु ज्योतिष पणी रे ॥ नांगरुं हो नव नांगरुं गुरव देव, नर्धायो हो तेह गधयो दुःख देइ नवि नयो रे ॥ ८ ॥ पर्यनि हो तेह पर्यनि नावव पाप, देवता हो थयो देवता वैमानिक नसो रे ॥ निद्रां पण हो तेह निद्रां पण महा ऋद्धिवंत, देइ हो दुःख देइ नवि सास्यो एकलो रे ॥ ९ ॥ पर्यनि हो वद्यो नर्यने जन्यो संसार, कर्म हो पयो कर्म पुनकेतु वद्यो रे ॥ इण सर्गे हो तेह इण सर्गे मधुनो जीव, शुकपी हो दवे शुकपी रुक्मिणीउरे वद्यो रे ॥ १० ॥ पूरव हो तेह पूरव वैर ॥

संजारी, हरीयो हो तेणे हरीयो सीमंधर कहे रे ॥ सोले हो वली सोले वरसे तास, मलशे हो माय मलशे तव मन सुख लहे रे ॥ ११ ॥ नारद हो हवे नारद पूछे एम, प्रजुजी हो प्रजु प्रजुजी शे करमे करी रे ॥ रुक्मिणी हो प्रजु रुक्मिणी लहीय वियोग, जाखे हो प्रजु जाखे सीमंधर चरी रे ॥ १२ ॥ जरते हो सुणी जरत जंबुद्वीप मांहि, मगधे हो वसे मगधे लखमीपुर जलुं रे ॥ ब्राह्मण हो तिहां ब्राह्मण ठे सोमदेव, लखमी हो वती लखमीवतीशुं मन मव्युं रे ॥ १३ ॥ वनमां हो हवे वनमां एक दिन जाय, मोरनुं हो तिहां मोरनुं इंडुं देखती रे ॥ फरसे हो करे फरसे जव ते अंड, अंकनी हो तिहां अंकनी मात ते पेखती रे ॥ १४ ॥ इंडुं हो तेह इंडुं वर्णांतर थाय, मात हो तस माता नवि उंलखे यदा रे ॥ काले हो वली काले लही ते इंम,उंलख्युं हो तव उंलख्युं इंडुं निज तदा रे ॥ १५ ॥ एक दिन हो वली एक दिन जाये उद्यान,देखे हो तेह देखे अंक महोटुं थयुं रे ॥ लेइ हो तस लेइने जाये गेह, माता हो तस माता जाणे मुज सवि गयुं रे ॥ १६ ॥ रोती हो हवे रोती तेहनी मात, थानक हो तेह थानक नवि मूके किमे रे ॥ थावी हो तस थावी कहे इम लोक, मरशे हो एहनी माता तिणे मूको तुमे रे ॥ १७ ॥ मूके हो वली मूके केतेक काल, तेहथी हो तस तेहथी कर्म ते बांधीयो रे ॥ सोल मास हो तेह सोल मास राख्युं बाल, षोमश हो थब्द षोमश विरहनुं सांधीयो रे ॥ १८ ॥ नामे हो तिहां नामे समाधिगुप्त, मुनिवर हो जला मुनिवर जिक्षा थावीया रे ॥ तस पति हो कहे तस पति जिक्षा थाप, इम कही हो गया इम कही गया कोइ तेनीया रे ॥ १९ ॥ थु थु हो करी थु थु काट्यो तास, कर्म हो तस कर्म डुगंछानुं वली रे ॥ सातमे हो दिन सातमे गलित ते कुष्ठ, तेहथी हो तेह तेहथी मरण ते लहे चवी रे ॥ २० ॥ गर्दजी हो तेह गर्दजी रजकने गेह, तिहांथी हो वली तिहांथी वली सुकरी थइ रे ॥ कूतरी हो थइ कूतरी करी तिहां काल, धीवर हो घर धीवरनी पुत्री जइ रे ॥ २१ ॥ डुर्गंगा हो वली डुर्गंगा ने डुर्गंध, काणा हो नामे काणा नदयद्विने तटे रे ॥ योवन हो तेह योवने थाहे नाव, जीवे हो नित जीवे तस जाग्य सटे रे ॥ २२ ॥ मुनिवर हो तिहां मुनिवर समाधिगुप्त, राते हो मुनि राते काउस्सग्गे रह्या रे ॥ शीत हो तेह शीते पीड्या देखी, चिंते हो काणा चिंते डुःख कम

जाये सह्यां रे ॥२३॥ मुनिनी हो तव मुनिनी ढांके देह, विहाणे हो मुनि विहाणे धर्म कहे मुदा रे ॥ काया हो तव काया चिंते एम, दीठा हो मुनि दीठा में किमहीक कदा रे ॥२४॥ पूछे हो तेह पूछे मुनिने जाम, जाखे हो मुनि जाखे पूरव जव सवे रे ॥ कर्मे हो तुंहि कर्मे थइ दुर्गंध, बांध्यां हो सहु बांध्यां जोगवे पूरवे रे ॥ २५ ॥ सांजली हो ते सांजली श्राविका थाय, सोंपे हो मुनि सोंपे साधवीने तिहां रे ॥ साधवी हो तस साधवी श्रावक गेह, सोंपे हो तेह सोंपे धर्म करे जिहां रे ॥ २६ ॥ उपवास हो करे उपवास एक अंतर, वरस हो तिहां वरस बार गमावती रे ॥ अणसणे हो मरी अणसणे अच्युत इंद्र, महिषी हो थइ महिषी घणुं सोहावती रे॥२७॥ पचास हो पल्य पचास उपर पांच, तिहांथी हो चवी तिहांथी रुक्मिणी थइ रे॥ अंगने हो कह्यो अंगने वली वियोग, तिणथी हो एह तिणथी विरहिणी ए जइ रे ॥२८॥ नारद हो नमी नारद गयो मेघकूप, नयर हो तेह नयर देखी मन हरख्यो घणुं रे ॥ आवी हो कहे आवी कृष्णने वात, पूरव हो जव पूरव लह्युं विरहपणुं रे ॥ २९ ॥ त्रीजे हो खंडे त्रीजे वीजे अधिकार, जाखी हो एह जाखी पांचमी ढाल ए रे॥ पंमित हो गुरु पंमित उत्तम नाम, पद्म हो कहे पद्म ते मंगलमाल ए रे ॥ ३० ॥ सर्व गाथा ॥ १५९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रुक्मिणी सुणी हर्षित थइ, जक्ते बे कर जोम ॥ सीमंधर जिनवर जणी, प्रणमे मनने कोम ॥ १ ॥ जिनवर लोकालोकने, देखो ज्युं आदर्श ॥ तुम्ह प्रजुजी विचरो सदा, साथे ज्ञान ने दर्श ॥ २ ॥ स्वामी पर्षदमां रह्या, पण एकाकी जाव ॥ सिद्धकार्य स्वामी थया, न करो कांइ हावजाव ॥ ३ ॥ जवि उपगारने कारणे, करो ते नित उपदेश ॥ आतम रमण रमो सदा, नहीं पर परिणति लेश ॥ ४ ॥ जिहां विचरो तुमे स्वामी जी चोत्रीश अतिशय युत ॥ तुम्हने सिद्धपणे करी, कोइ नयांतरे उत्त ॥ ५ ॥ तुम्ह गुण कहीये केटला, गुणह अनंतानंत ॥ बाह्य संपद पण नवि कही, राखीये तुम एकांत ॥ ६ ॥ अंतर गुणह अनंत जे, तेहनी केही वात ॥ तुम्ह विण स्वामी माहरो, कुण कहे ए अवदात ॥ ७ ॥ संशय कुण टाले वली, स्वामी तुम्ह विण एम ॥ एम स्तवना वली वली करे, रुक्मिणी जिनवर प्रेम ॥ ८ ॥

॥ ढाल ७मी ॥

॥ चालो जोवा रे हेली ॥ ए देशी ॥ हथिणाउर पुर रे मांहि, धृतराष्ट्र राजा उछांहि ॥ दुर्योधन मुख पुत, जेहने शत वरुवीर ते उत्त ॥ १ ॥ धृतराष्ट्रनो पांडु भाइ, दोय नारी तस गेह सोहाइ ॥ कुंती पहेली ते जाणो, त्रण पुत्र हुवे तास वखाणो ॥ २ ॥ नाम युधिष्ठिर ने भीम, त्रीजो अर्जुन नाम नीम ॥ माद्री बीजी रे नारी, दोय पुत्र तस गुणथी भारी ॥ ३ ॥ नकुल ने सहदेव ए नामे, पंचानन परे पांच सुठामे ॥ कांपिल्लपुरे महाराय, द्रुपदनी बेटी द्रौपदी थाय ॥ ४ ॥ तास स्वयंवर रे ताम, मांनी तेड्या बहु नृप काम पांमव पांचे ते जाय, पूजा रचे द्रौपदी तिण ठाय ॥ ५ ॥ ज्ञातासूत्र बोले, तोपण कुमति दिल नवि खोले ॥ ते कहे परणवा वेला, पूजा कीधी करतां केला ॥ ६ ॥ ते केम मानुं रे पूजा, जीवहिंसाथी बहु अम्हे धूजा ॥ पण नवि जाणे रे एम, वर माग्यो नवि भाखो रे केम ॥ ७ ॥ कहे जिन त्रिणिज्ञेय, अवधि मनः केवल गतखेय ॥ श्रीठाणांगे रे बोल्या, तिणे अमचां चित्तडां नवि मोल्यां ॥ ८ ॥ ते पण जूतुं रे जाणो, शक्रस्तव न अन्यने ठाणो ॥ शक्रस्तव कह्युं रे एणे, कहो अवधि मनःपुर कह्युं केणे ॥ ए ॥ जिणाणं जावयाणं, नवि माग्यो वर इणे ठाणं ॥ जिनवर कीधुं केणे, श्रावक विणु भाखो शुभ वयणे ॥ १० ॥ विघने आंबिल रे कीध, श्राविका विणु केम तेह प्रसिद्ध ॥ इत्यादिक बहु वात, ग्रंथे छे महोटा अवदात ॥ ११ ॥ तेह सुणीने रे भवीया, पूजा करतां कर्म ते खवीयां ॥ पूजा कीजे रे भावे, शिवसुख करतल मांहे आवे ॥ १२ ॥ द्रौपदी पूजा कीधी, वरमाला कर मांहि लीधी ॥ पांमव कंठे ते नाखी, ए तो अचरिज सहुने भाखी ॥ १३ ॥ मुनिवर वहोरण रे आव्या, पांच पतिनां कर्म संभलाव्यां ॥ त्रण भाइ बहु वित्त, सोम आगल देव भूति ने दत्त ॥ १४ ॥ नागश्री सोमदेवने नारी, अथ भूतश्री सोमभूतिने सारी ॥ यक्षश्री सोमदत्तने जाणो, सहुने स्नेह ते बहुल पिछाणो ॥ १५ ॥ वारे सहु एक गेह, जमतां अधिक धरीय सनेह ॥ सोमदेव घरे वारो, नागश्री जिमण कर्यो अति सारो ॥ १६ ॥ करूंवुं तुंबडुं लावी, व्यंजन ठामे तास पचावी ॥ चाख्याथी तिणे जाण्युं, थुंकी नाख्युं मुख मचकाणुं ॥ १७ ॥ ठानुं राख्युं ते शाक, कोइने न आप्युं ते सराख ॥ इण अवसर तिहां आव्या, धर्मघोष मुनिवर गुण भाव

॥ १८॥ धर्मरुचि तस शिष्य, मासखमण पारणशुं जगीश ॥ गोचरी फरता ते आव्या, नागसीरीने घरमन जाव्या ॥ १९॥ तुंबम तास वहोरावे, मुनिवर लइ गुरु देखावे ॥ गुरु तस गंधे करीने जाणे, कहे परठवो ए एकण ठाणे ॥२०॥ मुनिवर परठववा चाल्या, स्थंमिल शुद्ध थानक जइ चाल्या ॥ बिंडु पमीयो ते एक, मरण लहे कीमीउं तिहां ठेक ॥ २१ ॥ मन चिंते रुषिराय, बहु प्राणीनो वध इहां थाय ॥ एक बिंडुथी ए दीसे, बहु परठव्याथी बहु जीव हिंसे ॥ २२ ॥ एक महारो वध रुमो, पण ए जीवराशि वध चूंमो ॥ आराधना मुनि रे करता, तेह आहारथी उदर ते जरता ॥ २३ ॥ सर्वारथसिद्ध मांहि, उपना काल मासे सुख प्राही ॥ आचारिज मन जाणे, वार घणी केम थइ इण ठाणे ॥ २४ ॥ जोवा मोकले रे साध, देखी अकारय तेह अगाध ॥ गुरु पासे जइ जापे, खेद थकी ते करीय निसासे ॥ २५ ॥ सूरि अतिशय ज्ञानी, नागश्रीनुं कहे चरित्र वखाणी ॥ सोमदेवादिके जाणी, घरथी काढी ते धणीयाणी ॥ २६ ॥ त्रीजे खंडे रे जाणो, बीजे ए अधिकारे वखाणो ॥ जाखी छठी रे ढाल, पद्मविजय कहे मंगलमाल ॥ २७ ॥ सर्व गाथा ॥ १९४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नागसीरी काढी तिहां, लोक निभ्रंछे तास ॥ कास श्वास ने ज्वर घणो, सोल रोग इम जास ॥ १ ॥ आ जवमां नारक तणां, दुःख पामी असराल ॥ जूख तृषा सहेती घणी, तम पुढवी गइ काल ॥ २ ॥ तिहांथी म्लेछ थइ करी, सातमी नरगे जाय ॥ मछ थइ वली सातमी, मछ मांहे वली आय ॥ ३ ॥ इम बे बे वारे करी, साते नरगे जाय ॥ पृथवी प्रमुख मांहि जमी, वार अनेक बहु ठाय ॥ ४ ॥ तिहां अकामनिर्जरा थकी, चंपानगरी मांहि ॥ सागरदत्त पुत्री थइ, सुजद्राउरे त्यांहि ॥ ५ ॥ सुकुमारिका ते नामथी, गृहजामाता कीध ॥ जिनदत्त शेठनो सुत जलो, सागरने ते दीध ॥ ६ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ लाल सुरंगा रे प्राणीया ॥ ए देशी ॥ एक दिन सूतां ते सेजमी, फरसे सुत जिनदत्त रे ॥ अंगारा सम तेहने, लागो आपने गत्त रे, कथनमां आवे न वत्त रे, तास गली गयो सत्त रे, हवे नवि वांछे ते जत्त रे ॥ १ ॥ कर्म न छूटे रे प्राणीया ॥ ए आंकणी ॥ निद्रा पामे नारी हवे, नाठो वेगे

ते जाय रे ॥ जागी देखे न निज पति, तव करे रुदन ते गाय रे, आवी कहे माय ताय रे, जिनदत्तने कहे जाय रे, ते पण सुतने कहे आय रे ॥ क० ॥ २ ॥ पंचमां जेह अंगीकरी, ते केम मूके तुं नार रे ॥ जाउं नारी पासे हवे, सागर कहे तिणी वार रे, पेसुं अग्नि मजार रे, सुणीयो तेह विचार रे, प्रछन्न सागरदत्ते धार रे ॥ क० ॥ ३ ॥ थइ निराश पाछो वव्यो, कहे निज पुत्रीने तेह रे ॥ बीजो पति परणावशुं, खेद म कर मन एह रे, भिक्षुक दीठो दुःख रेह रे, माखीए बींटी छे देह रे ॥ क० ॥ ४ ॥ खप्पर हाथमां जालीयुं, अंबर जीर्ण ते खंभरे ॥ शेठे घर निज तेमीयो, मूकावे तस चंम रे, दीप्ति करे परचंम रे, दीये शुज आहारनो पिंम रे, आपे वस्त्र अखंम रे ॥ क० ॥ ५ ॥ पुत्री आपी ते नेहथी, रात्रे शयन ते कीध रे ॥ अग्नि फरस लागे तेहने, उठी निज वेष लीध रे, नाठो जाइ दुःख गिद्ध रे, कर्मे दुःख तस सिद्ध रे, तव तस पितु कहे इद्ध रे ॥ क० ॥ ॥ ६ ॥ दान दीयो तुम्हे बालिका, रही म्हारे नित धाम रे ॥ तेमज करे सुकुमारिका, आर्या आवे एक ताम रे, पडिलाजे तस ठाम रे, धर्म सुणे निज काम रे, व्रत लेवे अजिराम रे ॥ क० ॥ ७ ॥ गुरुणी नाम गोपालिका, साथे विचरे ते नित्य रे ॥ छठ अठमादिक तप करे, एक दिन जाखे इणी रीत रे, आतापना करुं हित रे, गुरुणी कहे शुज चित्त रे, आपणे नहीं एह जीत रे ॥ क० ॥ ८ ॥ नीकलवुं वसती बाहिरे, आगम मांहि निषिद्ध रे ॥ नवि मान्युं तेणे वयणडुं, जइ आतापना लीध रे, गणिका तिहां परसिद्ध रे, एक पुरुष कामे विद्ध रे, गणिका अंके ते कीध रे ॥ ॥ क० ॥ ए ॥ एके छत्र ते धारीयुं, बीजे चामर एक रे ॥ एक वहे तस पावमी, पय ठेलांसे अतिरेक रे, देखी गणिकानी टेक रे, करे नियाणुं ते छेक रे, नाठो तास विवेक रे ॥ क० ॥ १० ॥ मुज पण ए गणिका परे, थाउं पंच पति सार रे ॥ ॥ ए तपना परजावथी, शौच करे अतिवार रे, वारे आर्या तिवार रे, चिंते चित्त विचार रे, मुज उपर करे खार रे॥ क०॥ ॥ ११ ॥ जिक्षा लेवा रे मुज घरे, गुरुणी आव्यां ते आज रे ॥ तामना तर्जना मुज करे, एहशुं नहीं मुज काज रे, इण लोपी मुज लाज रे, रहे जूदी इम साज रे, इछाचारीनुं राज रे ॥ क० ॥ १२ ॥ व्रत पाल्युं बहु दिन लगे, संलेखना अर्द्ध मास रे ॥ अणआलोइ तिहांथी मरी, सोधर्म करे

वास रे, आयु नव पल्य जास रे, देवांगना सुविलास रे, तिहांथी द्रोप-दी खास रे ॥ क० ॥ १३ ॥ पूर्वे नियाणाथी ए थइ, पांच भर्तारनी नार रे ॥ शुं अचरिज एहमां अछे, इम मुनि जाले तिवार रे, वाणी आकाशे थइ सार रे, साधु साधु ए धार रे, परणावे सहु त्यार रे ॥ क० ॥ १४ ॥ निज थानक सहुए गया, हवे पांडु महाराय रे ॥ युधिष्ठिर निज पुत्रने, थापे राज्यने ठाय रे, परजव पांडु माडी जाय रे, धृतराष्ट्र सुत आय रे, राज्यना लोजी ते थाय रे ॥ क० ॥ १५ ॥ नल परे हाख्या ते पांचवा, हाख्या द्रौपदी जेह रे ॥ क्रोधे आंख राती करी, पाली नार ले तेह रे, काढी मूके गतनेह रे, वन तेहज कख्यां गेह रे, मांहोमांहि ससनेह रे ॥ क० ॥ ॥ १६ ॥ तेह दशार्ह आणा थकी, कुंती सुत निज पांच रे ॥ द्वारिका नगरी-मां तेकती, करवा पुण्यनो संच रे, मलीयो कुटुंबनो पंच रे, चिंतवे बहु पर-पंच रे, करवा तेहने वंच रे ॥ क० ॥ १७ ॥ कृष्णनी पर्षदे आवीया, कृष्ण दीये बहु मान रे ॥ मांहोमांहि प्रणमे तिहां, कृष्ण कहे इण थान रे, जले आव्या शुज थान रे, रहेवुं न घटे तुम्ह रान रे, करो जोजन वली पान रे ॥ क० ॥ १८ ॥ कहे युधिष्ठिर इणी परे, अम्ह माता कुल जाण रे, अनुवालुं तुमे स्वामी जी, इम करी शंसानी वाण रे, आपे रहे-वाने ठाण रे, एक एक कन्यानुं दान रे, रूप तणी तेह खाण रे ॥ क० ॥ ॥ १९ ॥ कर्म तणी गति एहवी, न गणे रांक ने राय रे ॥ पांडव सरिखा ते हारीया, महाबलवंता कहाय रे, ताप न जास खमाय रे, करमे नल महाराय रे, दवदंती मूकी जाय रे ॥ क० ॥ २० ॥ त्रीजे खंडे ए रचनी, वीजे अधिकारे ढाल रे ॥ सातमी जाखी ए हर्षशुं, पद्मविजये सुविशाल रे, पुण्य करो वृद्ध बाल रे, पुण्ये पाप विसराल रे, पुण्ये मंगलमाल रे ॥ २१ ॥ क० ॥

॥ दोहा सोरठी ॥

॥ हवे प्रद्युम्न कुमार, यौवन पाम्यो जेटले ॥ देखी व्याप्यो मार, कनक-मालाने तेटले ॥ १ ॥ एहवो नर सुर मांहि, न जडे पुरुष बीजे हवे ॥ मन-मां धरी उछांहि, जोग करुं एहशुं जलो ॥ २ ॥ इम चिंती कहे तास, विद्या दोय माहरी कने ॥ आव तुं माहरी पास, आपुं तुजने शुज मने ॥ ३ ॥ मुजने छे वहाल, पण नवि द्युं तेहने ॥ तुजने साहमुं कहेत, ते माटे आदर मने ॥ ४ ॥ कहे प्रद्युम्न हे मात, हुं तुं ताहरो सुत जलो ॥ केम

कहे एहवी वात, कनकमाला कहे सांजलो ॥ ५ ॥ नहीं तुं माहरो पुत, हुं ताहरी माता नहीं ॥ जाण तुं मुऊ आकूत, तव बोले कुंअर सही ॥ ६ ॥ विद्या आपो मुऊ, कहेशो तिम करशुं पठे ॥ आपुं विद्या तुऊ, तव कुंअर बोले अठे ॥ ७ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ पारिजातकनुं फूल स्वरगथी ॥ ए देशी ॥ प्रद्युम्न कहे सुण वात, तुं माहरी तें मुऊने पहेलो पाल्यो ॥ वली प्रज्ञप्ति गौरी विद्या, आपी मुऊने लाड्यो ॥ १ ॥ ना जो के नहीं जो के, जाणो मन आणो ॥ ना रे माता नहीं करुं जोग तुऊ साथे रे ॥ नहीं करुं नहीं करुं माहरी माता, हवे गुरुणी मुऊ हुइ रे ॥ ए आंकणी ॥ पुर बाहिर गयो कुमर ते जाम, तव ते अंग विदारी ॥ पूठे पति तव जाखे एहवुं, तुऊ पुत्रे इम कारी ॥ ना जो० ॥ २ ॥ करे प्रहार प्रद्युम्नने जइने, तव ते साहमो थाय ॥ मरण लह्या बहु पुत्र संवरना, क्रोधे देह जराय ॥ ना जो० ॥ ३ ॥ संवरने प्रद्युम्न ते जाखे, कनकमाला तणी जेह ॥ वात सुणी थिर थइ तिणे हरखी, आलिंगे तस देह ॥ ना जो० ॥ ४ ॥ पश्चात्ताप करे मन बहुलो, नारद ऋषि तव आव्यो ॥ नारदने उंलखावे प्रज्ञप्ति, तव तेहने मन जाव्यो ॥ ना जो० ॥ ५ ॥ पूजी कहे नारदने वात, कनकमाला तणी जाइ ॥ तव नारद बोले सुण माहरी, वात ते मनमां लाइ ॥ ना जो० ॥ ६ ॥ सीमंधरजीए जाख्युं तेह, सघलुं तस संजलावी ॥ कहे ताहरी माताने पण ठे, ते सुण वात ते गावी ॥ ना जो० ॥ ७ ॥ पुत्रविवाहे केश ते आपे, आगल थाये जेहनो ॥ ते जामानो सुत जानु ठे, थाये विवाह ते एहनो ॥ ना जो० ॥ ८ ॥ एक तो केशनुं दान ने बीजुं, वियोग पड्यो ताहरो जेह ॥ ते रोगे पीमित तुज माता, मरणने लहेशे तेह ॥ ना जो० ॥ ९ ॥ प्रज्ञप्तिए विमान विकूर्वी, बेसी हवे तेह मांहि ॥ नारद ने प्रद्युम्न दोय चाल्या, द्वारिका जणी उत्मांहि ॥ ना जो ॥ १० ॥ नारद कहे ए द्वारिका ताहरी, धनदे रतने पूरी ॥ प्रद्युम्न कहे विमानने ठावो, करुं आश्चर्य इण पूरी ॥ ना जो० ॥ ११ ॥ जोजो केइ जइये के, वहेला के वाढ ॥ के वाल्हा माहरा आवो, शुज दीदारु रे ॥ ए आंकणी ॥ जानुनी कन्या उपाडी, मूकी नारद पासे ॥ नारद कहे बाला मत बीजे, कृष्णनो सुत सुविलासे ॥ जो० ॥ १२ ॥ वानरनुं एक रूप करीने, एक वानर

रखवालो ॥ प्रद्युम्न कहे सुण वनपालकने, म्हारो कपि भूखालो ॥ जो० ॥ १३ ॥ फल आपो अमने तव बोले, जानु विवाहने काजे ॥ रक्षा करीये ते कारणथी, कृष्ण तणे एह राजे ॥ जो० ॥ १४ ॥ द्रव्य आपी तस अति लोभावी, मूक्यो वानर वनमां ॥ खाली कीधी वाडी सघली, थयो वणिग हवे खिनमां ॥ जो० ॥ १५ ॥ जातिवंतो वाजी करी हाथे, तृण हाटे हवे जावे ॥ द्रव्य देइ करे तरणां खाली, पाणी मीठां पी जावे ॥ जो० ॥ १६ ॥ घोटक दीठो जानुए एहवे, तव बोले ते जानो ॥ घोनो आपो अम्हने वहेलो, मो माग्युं देउं दानो ॥ जो० ॥ १७ ॥ तव बोले घोटकनो रक्षक, परखी ल्यो तुमे घोडो ॥ परख्या विणु नवि आपुं कोइने, उपर वेसीने दोडो ॥ जो० ॥ १८ ॥ घोटक उपर जानु बेठो, नाचतां पाड्यो हेठो ॥ तव सहु लोक हसे तिण समये, जानुने दुःख दिल पेठो ॥ जो० ॥ १९ ॥ जानु वासुदेवनी पर्षदमां, आवे रोता रोता ॥ ते देखी पर्षदना जन सहु, हसता साहामुं जोता ॥ जो० ॥ २० ॥ त्रीजे खंडे बीजे अधिकारे, ढाल ते आठमी जाखी ॥ पद्मविजय कहे सुणो श्रोताजन, वसुदेव हींमी ठे साखी ॥ जो० ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ २३९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रूप करी ब्राह्मण तणुं, जणतो वेदना पाठ ॥ चमतो शेरी शेरीए, करतो अतिहि ठाठ ॥ १ ॥ कुब्जा दासी तिण समे, सत्यजामानी तेह ॥ विप्राए ते रुजु करी, नेत्रलता परे देह ॥ २ ॥ पाय पडी पूछे इस्युं, स्वामी तुं किहां जाय ॥ कहे प्रद्युम्न जाउं अम्हे, जोजन मले जिणे ठाय ॥ ३ ॥ ते कहे मुज स्वामिनी घरे, विवाह अर्थे आज ॥ बहु मोदक निपजावीया, ते आपुं तुम्ह काज ॥ ४ ॥ ते साथे चाल्यो हवे, सत्यजामाने गेह ॥ उजो राखी बारणे, जामा ते गइ तेह ॥ ५ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ अमदावाद गामने गोंदरे रे ॥ ए देशी ॥ जामा कहे तुं कुण ठे रे, तव बोले तेह जारी ॥ वाल्हा ॥ दासी कुब्जा तुम्ह तणी रे, फरी बोले इम धारी ॥ वाल्हा ॥ १ ॥ सरल करी तुजने किणे रे, तव कहे ब्राह्मण वात ॥ वाल्हा ॥ ते ब्राह्मण कहे किहां अछे रे, ते कहे द्वारे आयात ॥ वाल्हा ॥ २ ॥ जामा कहे तेमो इहां रे, दासी लावी तास ॥ वाल्हा ॥

देइ आशिष ऊजो रह्यो रे, जामा कहे सुविलास ॥ वा० ॥ ३ ॥ रूप अधिक रुक्मिणी थकी रे, थाउं तिम करो स्वाम ॥ वा० ॥ विप्र कहे तुऊ सारिखी रे, नारी नहीं गुणधाम ॥ वा० ॥ ४ ॥ जामा कहे तोपण खरुं रे, कीजे अधिको रूप ॥ वा० ॥ विप्र कहे सुण वातमी रे, थाउं मूल विरूप ॥ वा० ॥ ५ ॥ रूप अनूप पठे थशे रे, तव जामा कहे नार ॥ वा० ॥ कह्यो तेम करीये स्वामीजी रे, द्विज बोले तिणी वार ॥ वा० ॥ ६ ॥ माथुं मुंमावो तुम्हे रे, कां लीपो मषी अंग ॥ वा० ॥ जीर्ण खंम पहेरो वस्त्रने रे, मुऊ आगल रहो रंग ॥ वा० ॥ ७ ॥ रूप लावण्य सोजाग्यने रे, आरोपुं तुऊ देह ॥ वा० ॥ अर्थिणी तेह अंगीकरे रे, द्विज बोले ससनेह ॥ वा० ॥ ८ ॥ जूख घणी मुऊ पेटमां रे, तिणे नवि सूके कांइ ॥ वा० ॥ जामा कहे सूपकारने रे, जोजन द्यो मन जाय ॥ वा० ॥ ए ॥ तव ते द्विज जामा जणी रे, जाखे इणी परे वात ॥ वा० ॥ जपी जोजन करुं तिहां लगे रे, कुलदेवी पुर मंत ॥ वा० ॥ १० ॥ रुरु बुरु रुडु बुरु मंत्रने रे, स्वाहापद संयुत ॥ वा० ॥ जामा मंत्र जपे हवे रे, जोजन करे द्विज रीत ॥ वा० ॥ ११ ॥ जामाथी बीहीती कहे रे, जाली हाथने एम ॥ वा० ॥ उठ उठ तव ते कहे रे, जूख्यो काढे केम ॥ वा० ॥ १२ ॥ तृप्त थयो नहीं हुं हजी रे, जाशुं तृप्ति ज्यांहि ॥ वा० ॥ इम कही गया मुनिवेषथी रे, रुक्मिणी घर उढाह ॥ वा० ॥ १३ ॥ आसन लेवा रुक्मिणी रे, जाये मंदिर मांहि ॥ वा० ॥ बेसे आसने कृष्णने रे, मुनि बालक देखे त्यांहि ॥ वा० ॥ १४ ॥ विस्मयथी कहे रुक्मिणी रे, मत बेसो इण गर ॥ वा० ॥ गोविंद गोविंदसुत विना रे, नवि बेसे इम धार ॥ वा० ॥ १५ ॥ देव सहे नहीं अन्यने रे, तव साधु बोलंत ॥ वा० ॥ अमचा तपपरजावथी रे, देव न कोइ ठलंत ॥ वा० ॥ १६ ॥ रुक्मिणी कहे केम आवीया रे, तव कहे साधु बाल ॥ वा० ॥ तप कखुं षोमश वर्षनुं रे, आहार रहित त्रिकाल ॥ वा० ॥ १७ ॥ धावण मातनुं धावीयो रे, जन्म थकी नहीं जेण ॥ वा० ॥ पारण अर्थे आवीयो रे, जूख टले मुऊ तेण ॥ वा० ॥ १८ ॥ रुक्मिणी कहे नवि सांजल्युं रे, सोल वरस तप क्यांहि ॥ वा० ॥ वरसी तप लगे जाखीयुं रे, मुनिने आगम मांहि ॥ वा० ॥ १९ ॥ मुनि कहे काम शुं ताहरे रे, आपवुं होय तो आप ॥ वा० ॥ नहीं आपे तो जायशुं रे,

सत्यजामा घर आप ॥ वा० ॥ २० ॥ नवमी त्रीजा खंममां रे, ढाल वीजे अधिकार॥वा०॥ पद्मविजय कहे पुण्यथी रे,प्रद्युम्न करे चमत्कार ॥वा० ॥२१॥

॥ दोहा ॥

॥ रुक्मिणी कहे रांध्युं नथी, उद्वेगे करी आज ॥ मुनि कहे श्यो उद्वेग छे, ते कहे सुणो महाराज ॥ १ ॥ पुत्रवियोग पूजा करुं, कुलदेवी धरी प्रीत ॥ शिरनो बलि देवा भणी, थइ तत्पर ए रीत॥ २ ॥ तव बोली कुलदेवता, फलशे एमां कंद ॥ तव मलशे सुत ताहरो, म कर फोक आक्रंद ॥ ३ ॥ ते पण थांयो मोहरीयो, नवि आव्यो मुज पुत ॥ माटे तुम्हे होता जुओ, ए माहरो आकूत ॥ ४ ॥ तव बोले मुनिवर हवे, न फले खाली हाथ ॥ होरा जोरावर थशे, दुःखीयाने दीये बाथ ॥ ५ ॥ यतः ॥ रिक्तपाणिर्न पश्येत,राजानं देवतं गुरुम्॥ नैमित्तज्ञं विशेषेण,फलेन फलमादिशेत् ॥ १ ॥ रुक्मिणी कहे आपुं किस्युं, तव कहे मुनिवर वाण ॥ पेया रांधी मुज जण, आपो तपसी जाण ॥ ६ ॥ तेह पचावे जेटले, पण नवि लागे आग ॥ मुनि कहे भूख्यो बहु थतुं, ए मोदक थो राग ॥ ७ ॥ तुम्हने न पचे लाडुआ, एह जरे गोविंद ॥ पचशे तपपरभावथी, भाखे एम मुणींद ॥ ८ ॥ जेम आप्या तेम खाइ गयो, रुक्मिणी विस्मय पाम॥ मननां हसती हर्षशुं, अचरिज थयुं इण गाम ॥ ९ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ जिनवचने वैरागीयो हो धन्ना ॥ ए देशी ॥ वनपालक आवी कहे हो भामा, फल कोइ खाइ जाय ॥ तृणरक्षक कहे तृण नहीं हो भामा, कोइक लोलव्या थाय रे ॥ हो मोरी भामा ॥ १ ॥ अम्ह कोइ ठगी आवे॥ ए टेक॥ परवमांथी जल पी गयो हो भामा, भानु परणीयो हेठ ॥ भामा कहे द्विज किहां गयो हो दासी,तेडी लावो जली पेठ रे॥ हो मोरी दासी ॥अम्ह० ॥२॥ दासी कहे सवि वातनी हो भामा, खाइ गयो सवि अन्न॥ सत्यभामा ते सांभली हो दासी, विलखाणी घणुं मन्न रे ॥ हो मोरी दासी ॥ अम्ह० ॥ ३ ॥ भामा कहे तुम्हे सांजलो हो दासी, लावो रुक्मिणी केश॥ दासी जइ रुक्मिणी कने हो मागे, केश दीयो सुविशेष रे॥ हो मोरी भामा ॥ अ० ॥ ४ ॥ तव माया मुनि तेहना हो भामा, कुंतल लीधे ततकाल ॥ वस्त्र मांहि भरीने दीये हो भामा, दासी गइ तिणे ताल रे ॥

हो मोरी जामा ॥ अ० ॥ ५ ॥ आवी जामानी कने हो माता, जामा पूछे तास ॥ आ अचरिज दीसे किस्युं हो दासी, कोणे दीधो पास रे ॥ हो मोरी दासी ॥ अ० ॥ ६ ॥ दासी कहे जामा सुणो हो माता, स्वामी तेहनो परिवार ॥ होय नहीं तो शोजे नहीं हो माता, तिणे एहवुं मन धार रे ॥ हो मोरी माता ॥ अ० ॥ ७ ॥ खेद लही ते सांजली हो जामा, मोकले नापित ताम ॥ माया मुनिए तस मुंडीया हो जामा, सहु नाठा तिण गाम रे ॥ हो मोरी माता ॥ अ० ॥ ८ ॥ नापित मुंरू देखी करी हो जामा, जनकी क्रोधे जराय ॥ दामोदर पासे गइ हो स्वामी, मुखथी कहे तिण गय रे ॥ हो मोरा स्वामी ॥ अ० ॥ ९ ॥ केश दान पण तुम्ह कने हो स्वामी, कीधुं छे महाराज ॥ तेह अपावो मुऊने हो मोरा स्वामी, मुंमी रुक्मिणी आज रे ॥ हो मोरा स्वामी ॥ अ० ॥ १० ॥ ताम हरि हसीने कहे हो जामा, मुंमित दीसो आप ॥ ते कहे हांसीथी सखुं हो स्वामी, केश अपावो आप रे ॥ हो मोरा स्वामी ॥ अ० ॥ ११ ॥ कृष्णजी रामने मोकले हो स्वामी, जिहां प्रद्युम्न कुमार ॥ रूप करी तिहां कृष्णनुं हो स्वामी, बिचाए तिणी वार रे ॥ हो मोरा स्वामी ॥ अ० ॥ १२ ॥ बलदेव लज्जा लही वल्या हो स्वामी, पूरव थानके आय ॥ तिहां पण कृष्ण देखी करी हो स्वामी, बलदेव कहे इम जाय रे ॥ हो मोरा स्वामी ॥ अ० ॥ १३ ॥ हांसी करो केम इणी परे हो स्वामी, आव्या तुम्हे तिहां जाय ॥ इहां थकी नथी उठीयो हो स्वामी, इहां पण माया थाय रे ॥ हो मोरा स्वामी ॥ अ० ॥ १४ ॥ जामा गइ निज थानके हो स्वामी, नारद रुक्मिणी पास ॥ आवी कहे सुत ताहरो हो नारी, प्रद्युम्न नाम ते खास रे ॥ हो रुमी नारी ॥ अ० ॥ १५ ॥ तव निज रूप प्रगट करी हो माता, प्रणमे मोद कुमार ॥ कहे कुमार एणी परे हो माता, देखो एक चमत्कार रे ॥ हो मोरी माता ॥ अ० ॥ १६ ॥ रथ माया करी तेहमां हो माता, रुक्मिणीने बेसारी ॥ लेइ चाल्यो आकाशमां हो माता, शंख पूरे वली सार रे ॥ हो मोरी माता ॥ अ० ॥ १७ ॥ मुखथी इणी परे जाखतो हो माता, लेइ जाउं छुं ए नार ॥ बलीया हो तो आवजो हो माता, हरि लहे शंक तिवार रे ॥ हो मोरा स्वामी ॥ अ० ॥ १८ ॥ मरवानी इछा ए कुण करे हो स्वामी, चाल्यो सबलथी राय ॥ धनुष टंकारव तिहां करे हो स्वामी, प्रद्युम्न साहमो थाय रे ॥ हो मोरा स्वामी ॥ अ०

॥ १९ ॥ विद्यावलथी कृष्णने हो स्वामी, आयुध विनु करे तेह ॥ सैन्य सवे जागी गयुं हो स्वामी, खेद लहे हरि देह रे ॥ हो मोरा स्वामी ॥ अ० ॥ २० ॥ दक्षिण अंग फरक्युं तिहां हो स्वामी, तव तिहां नारद आय ॥ रुक्मिणी सहित ए पुत्रने हो स्वामी, द्यो अनुग्रह करो राय रे ॥ हो मोरा स्वामी ॥ अ० ॥ २१ ॥ युद्ध करो किण कारणे हो स्वामी, तव प्रद्युम्न कुमार ॥ पाय पडे वल्ल कृष्णने हो स्वामी, हर्ष लहे ते अपार रे ॥ हो मोरा स्वामी ॥ अ० ॥ २२ ॥ प्रद्युम्न ने वली रुक्मिणी हो स्वामी, पेसे द्वारिका मांहि ॥ हरि त्राचीनी परे शोजता हो स्वामी, थया घर घर उत्साह रे ॥ हो मोरा स्वामी ॥ अ० ॥ २३ ॥ टल्या वियोग माय तायना हो स्वामी, त्रीजे खंमे एम ॥ बीजे अधिकारे जली हो स्वामी, ढाल दशमी कही प्रेम रे ॥ हो मोरा स्वामी ॥ अ० ॥ २४ ॥ ए अधिकार पूरण थयो हो स्वामी, क्षमाविजय जिन नाम ॥ उत्तम गुरु आणा लही हो स्वामी, पद्मविजय इण ठाम रे ॥ हो मोरा स्वामी ॥ अ० ॥ २५ ॥ सर्व गाथा ॥ २९९ ॥

इति श्रीमडुत्तमोत्तमविजयपादपद्मभृंगतुल्यपद्मविजयविरचिते श्रीमन्नमरनिकरवरवंदितपादपद्मनेमिजिनचरित्रे प्राकृतप्रबंधे रुक्मिण्यादिपरिणयनपांमवद्रौपदीस्वयंवरप्रद्युम्नचरित्रकीर्त्तनो नाम तृतीयखंडे द्वितीयोऽधिकारः२

॥ अथ तृतीयखंडस्य तृतीयोऽधिकारः प्रारन्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीशंखेसर पासजी, पूरे आश सुवास ॥ परतो जास प्रगट घणो, प्रणमुं पदकज तास ॥ १ ॥ शारद गुरु चरणे नमी, वली विद्या दातार ॥ त्रीजा खंम तणो कहुं, हवे त्रीजो अधिकार ॥ २ ॥ हवे प्रद्युम्न आगमननो, वरते उत्सव सार ॥ दुर्योधन कहे कृष्णने, स्वामी सुणो इण वार ॥ ३ ॥ मुऊ पुत्री तुम सुतवधू, खेइ गयो कोइ आय ॥ खोजी लावो तेहने, जेम परणे सुत राय ॥ ४ ॥ कही प्रद्युम्न कुमारने, तेनी कन्या तेह ॥ परणो कहे प्रद्युम्नने, पण नवि परणा जेह ॥ ५ ॥ परणाव्यो ते जानुने, हवे प्रद्युम्नने आय ॥ खेचरी जूचरी हर्षथी, परणावे बहु राय ॥ ६ ॥ नारदनी पूजा करी, वर्जे रुक्मिणी काहान ॥ इण अवसर जे निपजे, ते सुणो थइ सावधान ॥ ७ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ चांदलीयो ते उग्यो रे हरणी आथमी रे ॥ ए देशी ॥ भामा जइ सूती रे जूनी खाटमां रे, आमण दूमणी तेह ॥ कृष्णजी पूछे रे नारी बोलो नहीं रे, कहो अम कारण जेह ॥ भामा० ॥ १ ॥ तुऊ किण डुहवी रे अपमानी किणे रे, सत्यभामा कहे ताम ॥ प्रद्युम्न सरिखो सुत माहरे नहीं रे, तिणे अमे मरशुं रे गाम ॥ भा० ॥ २ ॥ अठम करीने कृष्णे आराधीयो रे, हरिणगमेषी रे देव ॥ प्रगट थइ कहे केम समस्यो अछे रे, कृष्ण कहे ततखेव ॥ भा० ॥ ३ ॥ सुर कहे हार ए आपजो तेहने रे, होशे सुत मनोहार ॥ देव अदृश्य थयो भामा हरखती रे, पामी ते शुभ हार ॥ भा० ॥ ४ ॥ प्रज्ञप्ति विद्याथी जाणीयुं रे, हार प्रद्युम्न कुमार ॥ अपहरी निज माता आगल कहे रे, द्यो ए माताजी हार ॥ भा० ॥ ५ ॥ मुऊ सरिखो तुम्ह बीजो सुत थशे रे, तव कहे रुक्मिणी नार ॥ दो सुत नारी उत्तम प्रसवे नहीं रे, बोले तेह कुमार ॥ भा० ॥ ६ ॥ कहो तेहने आपुं सुत कारणे रे, बोली तव तस माय ॥ तुऊ विरहे डुःखिणी मुऊ सारिखी रे, जांबुवती नित्य थाय ॥ भा० ॥ ७ ॥ ते कारण सुत आपो एहने रे, तव आपे तस हार ॥ भामा सरिखुं रूप करे वली रे, कृष्ण घरे गइ सार ॥ ॥ भा० ॥ ८ ॥ रतिक्रीमा करी तिण समे देवता रे, महाशुक्र कल्पथी आय ॥ कैटभ जांबुवतीनी कूखमां रे, उपना सिंह स्वप्न पाय ॥ भा० ॥ ९ ॥ जांबुवती हवे निज थानक गइ रे, आवी भामा तिवार ॥ कृष्णजी चिंते रे भोगतृप्ति नहीं रे, अहो अहो नारी संसार ॥ भा० ॥ १० ॥ हमणां जइने वली आवी फरी रे, अथवा भामाने वेश ॥ छलीयो मुऊ इण टाणे किणही कें रे, इम करी रमे ते विशेष ॥ भा० ॥ ११ ॥ भेरी वजावे रमण समय तिहां रे, श्रीप्रद्युम्न कुमार ॥ ते सुणी कृष्ण विचारे ए समे रे, काम प्रद्युम्न ए वार ॥ भा० ॥ १२ ॥ नारी होय ते निश्चे नीपजे रे, प्रातसमय हवे थाय ॥ जांबुवती घरे कान गया हवे रे, देखी कहे इम राय ॥ भा० ॥ १३ ॥ पूछे हार ते पाम्यो किहां थकी रे, जांबुवती कहे ताम ॥ आज कनुं केम जाउं विसरी रे, तुम्ह प्रसादे ए नाम ॥ भा० ॥ १४ ॥ सिंहस्वप्न सुणीने कहे कृष्णजी रे, प्रद्युम्न सम तुऊ पुत्र ॥ थाशे कहीने गया ठाम नामथी रे, जांबुवती सुत प्रसूत ॥ भा० ॥ १५ ॥ बीजी पण प्रसवीने सुत

यया रे, एक दिन प्रद्युम्न कुमार॥ जोजकट नगरे मोकले दूतने रे, रुक्मिण राय सुसार ॥ जा० ॥ १६ ॥ तेहनी वेदर्भी नामे सुता रे, ते प्रद्युम्नने काज ॥ ते पण जइ जाखे तव ते कहे रे, जइ कहेजे तुज राज ॥ जा० ॥ १७ ॥ देउं चंकालने पण विष्णुकुले रे, नवि आपुं कोइ वार ॥ दूते पण आवीने ते कह्युं रे, तव ते रुक्मिणी नार॥ जा० ॥ १८ ॥ खेद वही तव पूछे सुत जलो रे, माता केम लहो खेद॥ जाखे कारण रुक्मिणी तेहने रे, कुमर कहे शुज वेद ॥ जा० ॥ १९ ॥ एहने उचित करी अमे परणशुं रे, एम कही शांबनी साथ ॥ जोजकटे चांकालरूपे गया रे, सहु जन मन करे हाथ ॥ जा० ॥ २० ॥ किन्नर स्वर गावे ते बिहु जणा रे, जाणे रुक्मिण राय॥ तेजावी गवरावे तेहने रे, पुत्री उत्संगमां ठाय ॥ जा० ॥ ॥ २१ ॥ दान देइ पूछे ते नरपति रे, आव्या किहां थकी आज ॥ ते कहे स्वर्ग थकी आव्या अम्हे रे, कृष्ण महाराजने काज ॥ जा० ॥ २२ ॥ पूछे वेदर्भी तव तेहने रे, कृष्णने रुक्मिणी नार ॥ तेहनो सुत प्रद्युम्न ते सांजल्यो रे, जाणो छो तुमे सार ॥ जा० ॥ २३ ॥ शांब कहे तस कुण न उंलखे रे, विश्व मांहे रे विख्यात ॥ तेह सुणी उत्कंठित ते थइ रे, सुणो एहवे अवदात ॥ जा० ॥ २४ ॥ त्रीजे खंडे ने अधिकारमां रे, पहेली ढाल रसाल ॥ पंमित उत्तमविजय गुरु थकी रे, पद्मने मंगलमाल ॥ जा० ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ गज छूटो बंधन थकी, थयो ते हालकल्लोल ॥ तेहने वश करी नवि शके, बहु जननो करे रोल ॥ १ ॥ पटह वजावी इम कहे, वश करे जे गजराज ॥ वांछित आपुं तेहने, सारुं तेहनुं काज ॥ २ ॥ शांब प्रद्युम्ने ते धस्यो, कस्यो ते वश गजराज ॥ वर मागे राजा कने, पुत्री रंधण काज ॥ ३ ॥ नृपति कोप्यो ते सुणी, काढ्या नयरी बहार ॥ रात पडे प्रद्युम्न हवे, सूतां लोक तिवार ॥ ४ ॥ विद्याथी चाल्यो हवे, सप्तम भूमि आवास ॥ स्नेहपत्र आपे तदा, वेदर्भी कहे तास ॥ ५ ॥ माग तुं मागे ते दउं, तव कहे ताहरुं काम ॥ तुज इछा प्रद्युम्ननी, ते हुं जाण ए ठाम ॥ ६ ॥ विद्याए अग्नि करी, परणया प्रद्युम्न नार ॥ क्रीमा करी कहे केहने, कहेशो न एह विचार ॥ ७ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ हरिया मन लागो ॥ ए देशी ॥ प्रद्युम्न कुंवर गया हवे, क्रीमा करी संसार रे ॥ कन्या मन वाहाली ॥ रतिश्रमथी जागी नहीं, वहाणुं वाहे तिवार रे ॥ कन्या० ॥ १ ॥ राय प्रमुख सहु आवीया, देखे विवाहनां चिह्न रे ॥ क० ॥ विह्वल मन राजा थयो, कुल कीधुं मुफ किन्ह रे ॥ क० ॥ ॥ २ ॥ में परणावी न केहने, इछाए करी क्रीम रे ॥ क० ॥ दीधी चंमालने रुक्मी, थइ ए अकार्यथी पीम रे ॥ क० ॥ ३ ॥ ते चांमालने आपतो, करतो अनेक विलाप रे ॥ क० ॥ कहे चंमाल ते इणी परे, वात सुणो एक आप रे ॥ क० ॥ ४ ॥ चर्म्मकाज करवुं पडे, थाय तो आवो आज रे ॥ क० ॥ कन्याने कहे राजा हवे, करावे छे ए अकाज रे ॥ क० ॥ ५ ॥ करशुं सहु अम्हे इम सुणी, तेह गया लेइ नार रे ॥ क० ॥ करे विलाप राजा हवे, मन चिंते ते वार रे ॥ क० ॥ ६ ॥ धिक्कार हो मुफने इहां, रुक्मिणी सुत नवि दीध रे ॥ क० ॥ क्रोधे करी चंमालने में, एह अकारय कीध रे ॥ क० ॥ तूर ध्वनि सुणी पूछतो, कोण वजावे ए तूर रे ॥ क० ॥ शांब प्रद्युम्न कुमर विहु, तूर वजमावे भूर रे ॥ क० ॥ ८ ॥ तव तेडे हर्षित थइ, सांजली सहु विरतंत रे ॥ क० ॥ पूछीने निज पुरे गयो, क्रीमा करे पुण्यवंत रे ॥ क० ॥ ॥ ए ॥ द्यूत तणी क्रीमा करे, शांब ने भीरु कुमार रे ॥ क० ॥ हारे भीरु धन बहु, भामाने कहे वारंवार रे ॥ क० ॥ १० ॥ भामा जइ कहे कृष्णने, जांबुवतीने कहे कहान रे ॥ क० ॥ जांबुवती पाछुं कहे, सांजलो कान्ह देइ कान रे ॥ क० ॥ ११ ॥ म्हारो सुत नवि एहवो, कोइ काले दुःखदाय रे ॥ क० ॥ समफे न कांइ मुफ वालको, इम केम भाखो आय रे ॥ क० ॥ ॥ १२ ॥ कृष्ण कहे सुण सिंहणी, समफे नहीं तुफ वाल रे ॥ क० ॥ पण तस जाणे वारता, नागघटा विकराल रे ॥ क० ॥ १३ ॥ वात कहो केम एहवी, कोइ दिन नवि सुणी स्वाम रे ॥ क० ॥ कृष्ण कहे भीरु प्रते, मारे तुफ सुत आम रे ॥ क० ॥ १४ ॥ त्रीजे खंडे रुयडी, त्रीजे अधिकारे ढाल रे ॥ क० ॥ बीजी पद्मविजय कहे, सुणतां मंगलमाल रे ॥ क० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कृष्ण कहे सुण नार तुं, जाणे मुज सुत बाल ॥ पण बालक चेष्टा हवे, देखावुं ततकाल ॥ १ ॥ आभीररूप करी हवे, आभीरी करी नार ॥

द्वारिका मांहे पेसतां,माथे तक्रनो जार ॥ २ ॥ शांब कुमरे दीठां हुवे, आजीरी आजीर ॥ खेठाचारी इम कहे, आजीरीने धीर ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ साबरमतीए आवीळां जरपूर जो ॥ ए देशी ॥ सुण महियारी शांब कहे इम वाणी जो, गोरस लेशुं तुज पासे विक्रय करी रे ॥ इम कहीने देवकुलमां गयो जइ तास जो, बोलावे तुं आवे उरी आजीरी रे ॥ १ ॥ कहे आजीरी नहीं पेसुं एह मांहि जो, मूल्य आप मुजने तुं आपुं गोरसुं रे ॥ तव कहे निश्चय आववुं पमशे अत्र जो, नहीं आवे तो गोरस ताहरुं फोमशुं रे ॥ २ ॥ इम कही जाली हाथ ते शांब कुमार जो, खेंचे रे देवकुलमां ताणे चुनमी रे॥ आजीरी कहे मत कर एहवुं काम जो, फाटे चुनमी म्हारी ते अति जूनमी रे ॥ ३ ॥ दोणी गोरस केरी जांगशे आज जो, करशुं रे फरीयादी कृष्ण नरिंदने रे ॥ देवकुलमां तेड्यानुं शुं तुज काम जो, इम करतां होइ निंद्य ते सुर नरिंदने रे॥ ४ ॥ बोले तव आजीर शांब कुमार जो, प्राणप्रिया केम म्हारी लेइ जाये अठे रे ॥ इम कहेतां तस शब्द तणे अनुसार जो, जांबुवती हरि जाणी लाज्यो तव पठे रे ॥ ५ ॥ मुख ढांकीने नाठो शांब कुमार जो, देखाड्युं सुतचरित्र ते जांबुवती प्रते रे॥ बीजे दिन हवे शांबने सजा मजार जो, तेडे हरि मन हर्ष धरी वहुले मते रे ॥ ६ ॥ आवे खीली घमतो हरिने पास जो, पूछे तुं शुं एह करे छे तव कहे रे॥ जे कहेशे गतकालनी वात ते मुज जो, तेहना रे मुख मांहि मारशुं गहगहे रे ॥७॥ ते माटे ए खीली घमीये खास जो, आगामिक मुज बुद्धि ते स्वामी जली चकी रे॥ इम सुणीने कहे कृष्ण ए खेठाचार जो, काम तणे परवश ए काढ्यो पुर थकी रे ॥८॥ स्नेही ने वली पूर्व जव जाइ जाणी जो, शांबने प्रज्ञप्ति दीधे प्रद्युम्न एकलो रे ॥ जीरुक मर्दन करतो प्रद्युम्न नित्य जो, जामा कहे तुं शांब परे जा वेगलो रे ॥ ए ॥ जाउं पण हुं आवुं क्यारे मात जो,जामा कहे कर जाली आवुं तेडवा रे ॥ कुमर कहे ए आण करुं तुज मात जो, इम कहे शांब प्रद्युम्न तणो थयो जोमवा रे॥१०॥एके ऊणी सो कन्या विवाह जो,कीधो जीरु कुमर संघाते तेहनो रे ॥ प्रज्ञप्ति संजलावे जइने तास जो, जाणी वात प्रद्युम्ने शांब छे जेहनो रे ॥ ११ ॥ जितशत्रु राजानुं सैन्य करंत जो, शांब कन्यानुं रूप करीने तिहां रहे रे ॥ जामानी दासी आवी तिण थान जो, ते

देखीने जइने भामाने कहे रे ॥ १२ ॥ भामा कहे जितशत्रुने इम वाणी जो, तुम्ह पुत्री परणावो अम्ह सुतने भली रे ॥ जितशत्रु कहे परणावुं हुं ताम जो, हाथ झाली तुम्हे लेइ जावो अम्हे मोकली रे ॥ १३ ॥ इम सुणी भामा तेणे आवे तास जो, तव तिहां शांब कुमार विचारे एहवुं रे ॥ लोक सहु देखो मुज शांबनुं रूप जो, भामा देखो रूप ते कन्या जेहवुं रे ॥ १४ ॥ हाथ झाली तेनी जाय शांबने नारी जो, नर नारी सहु विस्मय पामे तिणे समे रे ॥ कर झाले बीजी कन्यानो आप जो, आप तणो कर आपे भीरु हाथमें रे ॥ १५ ॥ परणी वासभुवनमां जावे जाम जो, तव भृकुटी करी शांब कहे जा वेगलो रे ॥ जइ संभलावे भामाने ते वात जो, ए तो आव्यो शांब ते मानुं मयगलो रे ॥ १६ ॥ भामा कहे कोणे तेड्यो तुजने ज जो, तव कहे तुम्हे तेड्यो ने परणाव्यो वली रे ॥ साखी सघला द्वारिका-वासी लोक जो, लोके पण तस साखा भरी आवी मली रे ॥ १७ ॥ कृष्णे पण आवीने सघली नार जो, सहु साखे परणावी शांब कुमारने रे ॥ एक दिन श्रीवसुदेवनी पासे तेह जो, आवे रमता रमता नमसाकारने रे ॥ १८ ॥ शांब कहे बहु काल भम्या तुम्हे बाहार जो, बहु नारी परण्या तेहमां अचरिज किशुं रे ॥ गाम वेगां कन्या शत परण्या स्वामी जो, अंतर जाणो तुम्हे ने अम विचे इस्युं रे ॥ १९ ॥ कहे वसुदेव तुं कूपमंडूकनी तुल्य जो, काढी मूक्यो ने ठलथी तुं आवीयो रे ॥ देश भ्रमण करतां मुजने बहु मान जो, समुद्रविजय करीने घर तेडी लावीयो रे ॥ २० ॥ पामी ते अपमान ने प्रणमे पाय जो, स्वामी में अज्ञानपणे इम भाखीयुं रे ॥ म्हारो ए अपराध ते खमजो स्वामी जो, फरी नहीं भाखुं जेह अम्हे तुम्ह दाखीयुं रे ॥ २१ ॥ त्रीजे खंडे ने त्रीजे अधिकार जो, त्रीजी ढाल ते भाखी एह मनोहरु रे ॥ पंमित उत्तमविजयनो शिष्य कहंत जो, पद्मविजय इम भविका सुणजो गुणधरु रे ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ ७९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ यवनद्वीपथी इण समे, बहु व्यापारी लोक ॥ आव्या करियाणां भरी, दान करे तस रोक ॥ १ ॥ वेची करियाणां सवे, राजगृहे ते जाय ॥ रत्न-कंबलने वेचवा, लाभ अधिक इहाय ॥ २ ॥ शीत उष्ण हरता सदा, अद्भुत रोम होय तास ॥ जीवजशा ते देखीने, मूल्य करे तस पास ॥ ३ ॥ व्या-

पारी रोवे घणुं, अमचुं महा अजाग ॥ द्वारिका मूकी आवीया, बहुला लाजने राग ॥ ४ ॥ जीवजशा पूछे तदा, द्वारिका नयरी कोण ॥ राजा पण तिहां कोण छे, तव बोले ते वयण ॥ ५ ॥ देवे कीधी द्वारिका, तिहां कृष्ण महाराय ॥ तव रोती नारी कहे, जीवे यदुसमुदाय ॥ ६ ॥ तेह जरासंधे सुण्युं, काल कंसनुं वेर ॥ संचारी सेनापति, तेमी कहे इणी पेर ॥ ७ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ लाल पीयारीनो साहिबो रे ॥ ए देशी ॥ मंत्री मोरा रे ॥ अर्ध भरतना सहु राजवी रे, तेमो मूकीने दूत राज ॥ जइये यादव उपरे रे, हणीयें वसुदेव पुत राज ॥ १ ॥ पुण्य प्रमाणे सहु निपजे रे ॥ ए आंकणी ॥ मं० ॥ बहु मंत्रीश्वर वारता रे, चलितगलित मति तेह राज ॥ दक्षिण जानु उपाडतां रे, ठीक करे जे संदेह राज रे ॥ पु० ॥ २ ॥ मं० ॥ श्याम बिलाडी आडी फरी रे, चढतां गजवर खंध राज ॥ त्रूटो हार सोहामणो रे, पडीयो मुकुट शिरबंध राज ॥ पु० ॥ ३ ॥ मं० ॥ तूर शब्द विरसो हुवे रे, वाजे प्रचंड वाय राज ॥ जेहथी उद्वेग उपजे रे, कांकरी उडे ते गाय राज ॥ पु० ॥ ॥ ४ ॥ मं० ॥ छत्र ध्वजा दंड भांगीयां रे, हय जन रथ ने तुरंग राज ॥ बहु सैन्ये तेह परवर्यो रे, रचना होय तिहां भंग राज ॥ पु० ॥ ५ ॥ मं० ॥ मूत्र पुरीष अंतर नहीं रे ॥ रुधिर विरस पडे त्यांहि राज ॥ विरस शिवा तिहां बोलती रे, गर्दभ भूंके छे राहि राज ॥ पु० ॥ ६ ॥ मं० ॥ वाम नयन फरक्युं तिसे रे, शकुन निमित्त इम वारे राज ॥ मति उपारे लखी जेहनी रे, अवर्युं मन मांहि धारे राज ॥ पु० ॥ ७ ॥ मं० ॥ नारद आवीने कृष्णने रे, वात सवे संभलावे राज ॥ भेरी सुघोषा घंटा परे रे, कृष्णजी तिहां वजडावे राज ॥ पु० ॥ ८ ॥ मं० ॥ देव परे सहु राजवी रे, भेला यादव पाय राज ॥ उग्रसेनादि बलीया घणुं रे, दश दशार्ह वली राय राज ॥ ॥ पु० ॥ ९ ॥ मं० ॥ समुद्रविजय तस सुत आवीया रे, महानेमि सत्यनेमि राज ॥ दृढनेमि रथनेमिजी रे, अरिष्टा अरिष्टनेमि राज ॥ पु० ॥ १० ॥ मं० ॥ उग्रसेन ने महाजय भला रे, तेजसेन जय मेघ राज ॥ चित्रक गोतम आवीये रे, श्वफल्क नामे ज्युं मेघ राज ॥ पु० ॥ ११ ॥ मं० ॥ अर्प ने शिवनंदन भला रे, महारथ विष्फसेन राज ॥ धन सुत संयुत आवीया रे, अक्षोभ नाम यदुसेन राज ॥ पु० ॥ १२ ॥ मं० ॥ पच सुत स्तिमित ने आवीया

रे, सागर पट्ट सुत खेय राज ॥ हिमवान त्रण पुत्रथी रे अचल ते
सग एय राज ॥ पु० ॥ १३ ॥ मं० ॥ पांच पुत्रशुं आवीया रे, धरण नामे
महाराय राज ॥ पूरण चउ सुत तेहीने रे, अभिचंद्र पट्ट सुत आय
राज ॥ पु० ॥ १४ ॥ मं० ॥ श्रीवसुदेवजी आवीया रे, बहु सुतने परिवारे
राज ॥ अक्रूर ने क्रूर नामथी रे, ज्वलन अशनिवेग धारे राज ॥ पु० ॥
॥ १५ ॥ मं० ॥ वायुवेग अमितगतिजी रे, महेंद्रगति वली नाम राज ॥ सिद्धा
र्थ दारु रुयका रे, सुदारु वीर्यधाम राज ॥ पु० ॥ १६ ॥ मं० ॥ सिंह ने
मतंगज सुत भला रे, नारद ने मरुदेव राज ॥ सुमित्र कपिल वलीया घणुं
रे, पद्म कुमुद आदे देव राज ॥ पु० ॥ १७ ॥ मं० ॥ अश्वसेन पुंड्र नामथी
रे, रत्नगर्भ अभिधान राज ॥ वज्रबाहु बाहुभृत वली रे, महाबलीया सद्
ज्ञान राज ॥ पु० ॥ १८ ॥ मं० ॥ चंद्रकांत शशिप्रभ सुणो रे, वेगवान वायु-
वेग राज ॥ अनाधृष्ट दृढमुष्टिजी रे, हिममुष्टि अति तेग राज ॥ पु० ॥
॥ १९ ॥ मं० ॥ बंधुषेण सिंहसेनजी रे, युधिधृष्ठए नाम राज ॥ शिलायुध
ने गंधार वली रे, पिंगल आवे रणकाम राज ॥ पु० ॥ २० ॥ मं० ॥ जरा-
कुमर वाल्हिक कह्या रे, सुमुख ने दुर्मुख जाण राज ॥ राम ते रोहिणी-
कुखना रे; महाबलीया गुणखाण राज ॥ पु० ॥ २१ ॥ मं० ॥ वज्रदंष्ट्र अमित-
प्रभ रे, रामना बहु आवे पुत राज ॥ मुख्य तणां अभिधा सुणो रे,
उल्मूक निषध ते उत्त राज ॥ पु० ॥ २२ ॥ मं० ॥ प्रकृतिद्युति चारुदत्त भुव
रे, शत्रुदमन ने वली पीठ राज ॥ श्रीध्वज नंदन चित्र रुयगा रे, श्रीमान्
दशरथ दृढ राज ॥ पु० ॥ २३ ॥ मं० ॥ देवानंद ने नंदजी रे, विप्रथु शांत
कुमार राज ॥ पृथु ने शतधनु नामथी रे, नरदेव महाधनु सार राज ॥ पु० ॥
॥ २४ ॥ मं० ॥ दृढधनु आदि आवे घणा रे, ए बलदेव कुमार राज ॥
कृष्णना सुत हवे सांभलो रे, भानु ने भामर धार राज ॥ पु० ॥ २५ ॥ मं० ॥
महाभानु अनुभानुजी रे, बृहद्ध्वज सुविदित्त राज ॥ अग्निशिख धृष्णु
संजयो रे, अकंपित शुभ्रवित्त राज ॥ पु० ॥ २६ ॥ मं० ॥ महासेन उदधि
गौतम वली रे, सुधर्म ने वली धीर राज ॥ प्रसेनजित सूरय चंद्रजी रे,
वर्मा ने वली गंभीर राज ॥ पु० ॥ २७ ॥ मं० ॥ चारुकृष्णक कृष्णना रे,
सुचारु देवदत्त राज ॥ भरत ने शंख प्रद्युम्नजी रे, शांब प्रमुखजी आयात राज
॥ पु० ॥ २८ ॥ मं० ॥--विष्णुपुत्र सहसागमे रे, उग्रसेन राजान राज ॥

तेहना सुत पण आवीया रे, सांजलो तास अजिधान राज ॥ पु० ॥ २९ ॥ ॥ मं० ॥ धरगुणधर शक्तिक दुर्धरा रे, चंद्र ने सागर आवे राज ॥ नामनो पार न पामीये रे, यादव पार न पावे राज ॥ पु० ॥ ३० ॥ मं० ॥ शुज दिन कोष्टुके आपीयुं रे, शुज शकुने ते प्रयाण राज ॥ तेह जनार्दन चालीया रे, करता बहु नृप जाण राज ॥ पु० ॥ ३१ ॥ मं० ॥ एक एकथी चलीया घणुं रे, त्रियाए महाबलीया राज ॥ हाकारे शत्रुसैन्यने रे, त्रासवे ते जलजलीया राज ॥ पु० ॥ ३२ ॥ मं० ॥ त्रीजे खंडे अधिकारमां रे, त्रीजे चोथी ए ढाल राज ॥ पद्मविजय कही सोहामणी रे, सुणतां मंगलमाल राज ॥ पु० ॥ ॥ ३३ ॥ मं० ॥ सर्व गाथा ॥ ११९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पूर्वोत्तर दिशि चालीया, जोजन पिस्तालीश ॥ कृष्ण आवासे तिहां कणे, करवा जयत जगीश ॥ १ ॥ अनाधृष्ट आवी कहे, चार जोजन ले दूर ॥ जरासंध नृप तिहां थकी, पण अपशकुन ले जूर ॥ २ ॥ दीये अपमान बंधु प्रते, मित्रने करे उद्वेग ॥ वांक विना कोपे घणुं, स्वेछाए अविवेग ॥ ३ ॥ सज्जनने संतापतो, साधु उपर द्वेष ॥ देव गुरु अपमानतो, रात न निद्रा रेख ॥ ४ ॥ दिवसे नित निद्रा करे, प्रजालोक विरक्त ॥ अपनिमित्त अपशकुन ते, दीसे सहु आसक्त ॥ ५ ॥ आणा मात्र पार्थिव सहु, सघला वंछे तुम्ह ॥ जीत थशे ए थानके, ए आशिष ले अम्ह ॥ ६ ॥ जादव सहु हवे सज्ज होइ, जरासंध सुणी तेह ॥ कहे किम ए अणवूफता, आव्या थानक एह ॥ ७ ॥ नवि चूके गोवालीया, समुद्रविजय केम आज ॥ आव्यो अणजाएयो थइ, निश्चय मरवा काज ॥ ८ ॥ मारा सैन्य समुद्रमां, साथुचूर्ण समान ॥ इम कहेतां बोल्यो हवे, हंसक मंत्री ते थान ॥ ९ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ सुण मोरी सजनी रजनी न जावे रे ॥ ए देशी ॥ जादव बल पण तुछ म जाणो रे, बल विष्णु जिनवर एणे ठाणो रे ॥ बीजा रायथी बहु बल बलनुं रे, हवे कहुं सांजलो बल जे विहनुं रे ॥ १ ॥ हितनी स्वामी कहीये वात रे, जादव बलीया आज विख्यात रे ॥ ए आंकणी ॥ सोल सहस बल सहित राजानो रे, संकलबद्ध थइ तिणे थानो रे ॥ विष्णु संकल लीये कर वाम रे, नवि खेंचाय सहु तिणे ठाम रे ॥ हित० ॥ २ ॥

कोटी शिला उपाडे जेह रे, ते वासुदेव सुणीये एह रे ॥ वमणा वलीशं चक्री होय रे, अनंत गुणुं बल तेहथी जोय रे ॥ हि० ॥ ३ ॥ ते तीर्थंकर जेहनी पास रे, तेहशुं युद्धथी थइये निराश रे ॥ पृथिवी छत्र ने मेरुनो दंम रे, करवा जेह समर्थ अखंड रे ॥ हि० ॥ ४ ॥ लोक अलोकमां नाखे स्वामी रे, तेहने चालो प्रजु शिर नामी रे ॥ तेह अरिष्टनेमि जगवानो रे, जीते त्रण जगतने मानो रे ॥ हि० ॥ ५ ॥ चोसठ इंद्र ते किंकर जेहना रे, अम्ह सरिखा शी गणती एहना रे ॥ वात वली एक स्वामी सुणीये रे, चार रथी शास्त्र मांहे मुणीये रे ॥ हि० ॥ ६ ॥ अतिरथी ने महारथी कहेवाय रे, समरथी अर्द्धरथी चउ थाय रे ॥ तेहमां चार अतिरथी कहीये रे, आपण सैन्य तुमे एक लहीये रे ॥ हि० ॥ ७ ॥ तेहना सैन्यमां तो त्रण दीसे रे, ए पण वात छे विशवावीशे रे ॥ महारथी प्रमुख तो बिहुं दल मांहि रे, परमारथ पण तेहनो नांही रे ॥ हि० ॥ ८ ॥ हस्तिपदमां सहु पद पेसे रे, यद्यपि तुम्ह बल महोटुं दीसे रे ॥ पण अरिहा हरि बल ते साथे रे, बलीयो दीसे न एहने माथे रे ॥ हि० ॥ ९ ॥ दीठो स्वयंवर रोहिणी देव रे, जीत्यो किणी परे श्रीवसुदेव रे ॥ केम न संजारो स्वामी तेह रे, आज तो बहु दल मलीयो एह रे ॥ हि० ॥ १० ॥ चोसठ इंद्रने नमवा जोग रे, जेहथी जाय जवजय शोग रे ॥ तेहशुं विक्रम करवुं नांही रे, नमवुं जोग्य छे स्वामी आंही रे ॥ हि० ॥ ११ ॥ इम सुणी हंसक मंत्रीनी वाणी रे, मगधेश्वर तव क्रोध ते आणी रे ॥ ते कहे बलीया एहवा होता रे, तो केम जयथी पश्चिम पहोता रे ॥ हि० ॥ १२ ॥ शौरि मथुरा केम पणे छांमी रे, हंसक बोले वातनी मांमी रे ॥ जीरु एह न जाणो कोइ रे, कालादिक लही फल सहु होइ रे ॥ हि० ॥ १३ ॥ गजवर साथे ते दिन जायो रे, न करे रण पंचानन आयो रे ॥ व्यालो बालो न रुंके चांप रे, ते कारण विचारो आप रे ॥ हि० ॥ १४ ॥ अथवा रिपु हणवा ए उपाय रे, लही संकोच उसरवुं थाय रे ॥ इम सुणी कोपे नृप कलकलीयो रे, यादवे निश्चे एहने छलीयो रे ॥ हि० ॥ १५ ॥ तिण अवसर कहे डिंजक मंती रे, रायने गमती वातनी पंती रे ॥ जय पराजय तो पुण्यथी थाय रे, पण व्यवहार ते केम मूकाय रे ॥ हि० ॥ १६ ॥ चक्रव्यूह इम करी मंडावे रे, आवी कृष्णने चर संजलावे रे ॥ गरुडव्यूह ते करे विस्तारे रे, खेचर आवे बहुल ते

वारे रे॥ हिं० ॥ १७ ॥ श्रीवसुदेवने पक्षे जेह रे, कृष्णनी पासे आवे तेह रे ॥ प्रतिपक्षी जाय जरासंध पासे रे, कायर प्राणी दूरे नासे रे ॥ हिं० ॥ १८ ॥ कृष्ण सोंपे वली नेमने शोरि रे, वेयड्ड खेचर जीतवा वयरी रे॥ शस्त्र न लागे मूलिका तेहवी रे, मेरु शिखरे बांहे बांधी एहवी रे ॥ हिं० ॥ १९ ॥ वसुदेव दीये जिनवर नेम रे, वसुदेव चाल्या वेयड्डगिरि एम रे ॥ इणी अवसर तिहां शक्र आदेशे रे, मातलि नामे सारथि वेशे रे॥ हिं० ॥ २० ॥ दिव्य शस्त्र भरी रथ ते लावे रे, नेमि जिनेसर मांहे पधरावे रे ॥ हय हेषारवे गजवर गाजे रे, रथ रणके कायर बहु भाजे रे ॥ हिं० ॥ २१ ॥ जुद्ध ते लागां बिहुं अप्रमाणी रे, पांची तेल ज्युं पीले घाणी रे ॥ जादव नाठा कृष्णने शरणे रे, बली कहे मरवुं ए व्यूहने करणे रे ॥ हिं० ॥ २२ ॥ त्रण जाग करो जीतवा काजे रे, दक्षिण दिशि नेमि जिन गाजे रे ॥ नाम अनाधृष्ट मध्ये राजे रे, उत्तरे प्रद्युम्नकुमार विराजे रे॥हिं०॥२३॥ नेमि जिनेश्वर पक्षे राजा रे, जीते रिपुदल अंगे साजा रे॥पांडव ने वली कौरव लागा रे,कौरव मरता केइक जागा रे ॥ हिं० ॥ २४ ॥ केर पणो ते हुर्ड सवाइ रे, कहेतां नावे तास वडाइ रे ॥ शरण करे जइ जरासंध पासे रे, पुण्य विना सहु होइ निराशे रे ॥ हिं० ॥ २५ ॥ नेमिचरित्र जोजो इण थाने रे, जुद्ध हुर्ड ते न आवे माने रे॥ त्रीजे खंडे त्रीजे अधिकारे रे,पांचमी ढाल कही सुप्रकारे रे॥हिं०॥२६॥ नेमि जिनेश्वरनो ए रास रे,सुणतां होवे लील विलास रे॥ पंडित उत्तमविजयनो शिष्य रे, पद्मविजय कहे विशवावीश रे॥ हिं० ॥ २७॥ सर्व गाथा ॥ १५५॥

॥ दोहा ॥

॥ नाठो सेनानी हवे, गयो जरासंध पास ॥ हुंकारे खेचर बहु, स्नेहेतो मनमां त्रास ॥ १ ॥ दश हजार राजा तिहां, करवाने संग्राम ॥ मगधेसर उठायतो, अमरष धरतो ताम ॥२॥ काल कंस संभारतो, वली ते देखी हार ॥ जरासंध मन चिंतवे, पडे आपणने मार ॥ ३ ॥ ते कारण हवे हुं चढुं, इम चिंतवतां तास ॥ सज्ज सुभट सघला थया, करता महोटी आश ॥ ४ ॥

॥ ढाल छठी ॥

॥ कनकवानी देशी ॥ जुद्ध करे युद्ध धइ, सुभट रणभूमिमां, रण करण त्रण, संदेश ठठे ॥कान्ह पण साज, मन मान आपी हवे, चारुखे सुर्पाप, ठठे ते रुठे ॥ जु० ॥ १ ॥ दोय दल लकल तिहां, सबल फुकरणे, आग

धरी लाग लही, मागधेश ॥ जवण नामे जलो, खवण जडुसेन्यने, उठीयो समर वर, करण वेश ॥ जु० ॥ २ ॥ सारण कारण, कृय मगधेशनो, जवणने जमग्रहे, तवण कीधो ॥ तीर जिम नीर, वरसी करे पीर तस, एह जशवाद सुत, कृष्ण लीधो ॥ जु० ॥ ३ ॥ सांजली तिहां वली, देहली रायनी, वल हकारे निज, रीश आणी ॥ सैन्य जादव तणुं, दैन्य तिण समे थयुं, नेम विणु इम, थरहरे प्राणी ॥ जु० ॥ ४ ॥ यतः ॥ तदवसरे यादवसैन्यं कीदृशमनूवडु॰ च्यते ॥ चाल ॥ विमुक्क पवर जाणयं, समुज्जियाजिमाणयं ॥ गलंतलग्ग हृठयं, निवमंत सुहरुजठयं ॥ १ ॥ विमुक्क धीर धीरयं, विमग्गमाण नीरयं, लुलंत थत्त चिंधयं, नचंत वडु कवंधयं ॥ २ ॥ ससामिणो विरत्तयं, पलाय णेक्कचित्तयं ॥ मतेज संपणोल्लियं, तुरंग थट्ट पेल्लयं ॥ ३ ॥ जयाउ लुविव ठयं, रहोह रुऊ पठयं ॥ अनोन्न पेलणुग्घयं, पलाण तीरुत्तग्गयं ॥ ४ ॥ मयहेस वाण तालियं, संगाम जूमि पालियं ॥ संजायसावसेसयं, विमुक्क जीवियासयं ॥ ५ ॥ नेमिजिनसज्ञ, लेइ हठ वेगा रथे, सैन्य तिहां दैन्य, देखीने पूरे ॥ शंख तिम धनुष्य, दुःखदाय शत्रु तणे, धनुषटंकारथी, बधिर कूरे ॥ जु० ॥ ५ ॥ सह तिहां शंखनो, रव लागे घणो, पामी मूर्छा पड्या, ठाम त्यांहि ॥ करे अनुमह तथा, निग्रह विश्वने, जिनवरा मगध, राजेश कांही ॥ जु० ॥ ६ ॥ सद्य सावद्य जिन, अद्य ते नवि करे, विष्णु प्रति विष्णुने, हणत नित्ये ॥ तेह कारण जिने, निवारणो ए कह्यो, क्रोध ते जोष नहीं, जिनह चित्ते ॥ जु० ॥ ७ ॥ नकुल अर्जुन वली, जीम युधिष्ठिरो, समुद्र विजय सारण, आदि देइ ॥ रुंधीयो चिहुं दिशे, दश दिशे जट गया, जुऊ करे शूर थइ, क्रूर केइ ॥ जु० ॥ ८ ॥ नाम शिशुपाल, महाकाल परे आवीयो, त्रास यडुराशिने, तेह देतो ॥ समर शरजर तिहां, देखे सुरवर नजे, तेह जमरायने, गाय पहोतो ॥ जु० ॥ ए ॥ सहस दश सामटा, राय सम समय ते, उठीया निज निज, सैन्य लेइ ॥ सुर असुर चिंतवे, न हरि हवे नहीं हवी, अन्य सहु राय पण, नहींय केइ ॥ जु० ॥ १० ॥ शंख पूरे प्रजु, धनुष आस्फालता, रथ चिहुं फेर, सहु मांहि घाली ॥ सिंह श्वापद परे, नाद सिंहनो करे, तिणे चिहुं दिशे, जूमि चाली ॥ जु० ॥ ११ ॥ गमगमी कूट, गिरिनां पडे जमम ले, त्रास लही नास चिहुं, पास करता ॥ हय गय रह निवह, केह तिहां करे, चूर्ण संपूर्ण थया, चित्त मरता ॥ जु० ॥ १२ ॥ मृग॰

पति मृग परे, सहु तिहां नासता, भ्रमत चिहुं पास, जिनराज दीसे ॥ करत डंवारुीयुं, शिशु जेम रामते, दोज अक्षोजपणे, करत तीसे ॥ जु० ॥ १३ ॥ सर तणो निकर, जिनवर तिहां मूकता, पतत चामर ध्वज, छिन्न थाये ॥ कवच पाखर प्रमुख, स्फाटित ततक्षणे, सहु तणा तेज परताप जाये ॥ जु० ॥ १४ ॥ अशरण मरण, आसन्न वीसन थया, एक एक मांहि, पेसे विशेषे ॥ देति ने सत्ति, दीसंती नहीं तस कने, नवि जपे नवि चले, तेह लेखे ॥ जु० ॥ १५ ॥ रण अचल तरुण रवि, जिनवर नेमि जी, ग्रहगणतार, अंधार नासे ॥ केइ कहे कान्ह ए, आप आयो इहां, केइ कहे सत्ति नहीं, एह तासे ॥ जु० ॥ १६ ॥ चक्रधर चक्र परे, वक्र दश दिश फरे, कोइ कहे चरम, द्वादशम होशे ॥ ते ए एपे यशे, चक्री किहांथी हशे, शक्ति पण तास, एहवी न जोशे ॥ जु० ॥ १७ ॥ शक्र आव्यो तिणे, जादव पक्षमां, केइ परमठ, ज्ञाता विख्याता ॥ त्रण जग रूप, अनूप अनंत बल, एह जिन नेम सुख खेम दाता ॥ जु० ॥ १८ ॥ केइ कहे मूढ, नवि गूढ जाणे किस्युं, ए जरासंध, राजा न रुडो ॥ जास पख करत रख, एहवा जिनवरा, तास सम केम ए, करत कूंडो ॥ जु० ॥ १९ ॥ नइ तरी समुद्र वरी, तरण इछा करे, नाश पामे कहो, नहींय केम ॥ थाय प्रतिकूल मति, शकति पण नवि रहे, देव रूठो जस, होय एम ॥ जु० ॥ २० ॥ चावी चावा, स्वचावा अवश्ये होये, तेणे तिहां मगधेश बोले ॥ आपो गोपाल, रखवाल करुं सहु तणी, समुद्रविजयो चित्त, केम न खोले ॥ जु० ॥ २१ ॥ सुणी असंबद्ध, संबद्ध थइ उठीया, पुत्त मागध तणा, इगुणसयरी ॥ कान्हने रानमां, विंटीयो सहु मली, पुत्त अठ्ठवीस मली, राम वयरी ॥ जु० ॥ २२ ॥ शेष बल शेषशुं, युद्ध अवशेषपणे, काल ततकाल, रामे पमाड्या ॥ तव जरासंध, जूझे अति रोषशुं, रुधिर वमतो करे, केइ पाड्या ॥ जु० ॥ २३ ॥ पुत्त अगणोत्तर, तव हणे कृष्णजी, शोप मन आणी करी, रोप चापे ॥ रे रे गोवाल तुझ, काल आव्यो हवे, कहे रे गोविंद इम, बलीय तासे ॥ जु० ॥ २४ ॥ अंध संबंध लहे, जीतिनो तव फिरे, अंध अधिको लह्यो, तुझ नीको ॥ एह अनठ, देखंत पण अधिक रस, मान मत कर इहां, तुं अलीको ॥ जु० ॥ २५ ॥ नहीं दोष ताहरो, जाव जावी थयो, गोवकुल हीण, देखो हुं दीण ॥ कंस ने काल, ततकाल जमघर ठव्या, ताहरुं पण शिर, याशे क्षीण ॥ जु० ॥ २६ ॥ क्षत्रिकुलने कलामां

कुशल देखीये, इम सुणी बोध लह्यो, क्रोध तास ॥ कुंत ने शब्य करवाल दल विहुं लडे, घोर महाशोर पऋदंद जास ॥ जु० ॥ २७ ॥ जयकरा कुंअरा, रणधरा ते थइ, धरणी नज्ञ बाणथी, तेह पूरे ॥ शंख मगधेशनो, सुणीय जादव तिहां, कृष्ण शरणे कहे, मुआ अधूरे ॥ जु० ॥ २८ ॥ कृष्ण छेदे महा, ध्वज क्षुरप्रे करी, नीर जिम तीर, मगधेश वरसे ॥ तेह नेदी, अखेदी कहे कृष्ण इम, हास्य करतो कहे, फुःख फरसे ॥ जु० ॥ २९ ॥ कान्ह अभिधान, जुवान हुं जाणजे, वृद्धमति मूढ तुम्हे, असरि एह ॥ जाउ निज गेह धरी, तेह में मूकीया, कोपथी ऊलहल्या, सुणीय तेह ॥ जु० ॥ ३० ॥ देव अधिष्ठ, ते इष्ट समरे तिहां, शस्त्र आव्यां निज, हाथ मांहि ॥ कृष्ण पण समरतो, इष्ट निज देवता, मंत्रनां शस्त्र, मूके ते त्यांहि ॥ जु० ॥ ३१ ॥ शस्त्र प्रतिपक्ष, मूके हरि तेहने, तेह कहेतां नवि, पार आवे ॥ रिक्तशस्त्रे करी, चित्त निराशय थइ, चिंतवे मुजह, धिक्कार थावे ॥ जु० ॥ ३२ ॥ समुद्र लही पार, गोपद परे गोप ए, तेहमां बूडतो, आज देखो ॥ सहस्र आरा तणुं, जानुमंकुल मुणुं, चक्र संजारतो, तेह पेखो ॥ जु० ॥ ३३ ॥ सुरपरिकरित, सुर जीत देवे घणुं, चिंतवे कैतवे, हवे हणाणो ॥ मूकीयुं चक्र, महावक्र अरि नेदवा, वज्र परे सहस, जालानुं ठाणो ॥ जु० ॥ ३४ ॥ यक्ष ने सिद्ध, गांधर्व सुर जय लहे, ज्योतिषी खेचरा, सर्व नागा ॥ सुर असुर नरवरा, शिव शिव बोलता, ईटी नाखे केइ, केइ जागा ॥ जु० ॥ ३५ ॥ वली नयण वारिनी, धार रेडे घणुं, शस्त्र मूके तिहां, दिव्य साहामां ॥ मुसल हल ठवे, हलहरो तिण समे, महागदा नाखतो, जीम तेहमां ॥ जु० ॥ ३६ ॥ सब सबल तिहां, पद्म नाखे वली, परिघ सेनानी, नाखे तिवारे ॥ नकुल नाखंत तिहां, कुंत ऊलसंत ते, खड्ग नाखे, सहदेव त्यारे ॥ जु० ॥ ३७ ॥ देत नाराच ते, समुद्रविजयो जयो, शल्य मोघर प्रवर, जल्ल मांहि ॥ शेष नरेश निज, शस्त्र नाखे वली, पण न आक्रम करे, तास कांही ॥ जु० ॥ ३८ ॥ शुं थशे शुं थशे, सुर नरा बोलता, चक्र आव्युं तिहां, कृष्ण पासे ॥ तुंब वक्षस्थले, लगत नहु धार तस, कज परे करकजे, धरे विखासे ॥ जु० ॥ ३९ ॥ कृष्ण हस्ते अधिक, तेज वस्ते थके, देव पण देखी, मन मांहि चमक्या ॥ शांति सघले थइ, वाणी जय जय जइ, सुजट कारय जिको, तेह धमक्या ॥ जु० ॥ ४० ॥ कुसुम वृष्टि परि, तुष्ट सुर तिहां करे, नवम

वासुदेव परगट हुउं॥ केवली महाऋषीश्वरे, अम्ह जाणीयो, अहो अहो पुण्य, एहनां ते जुउं ॥ जु० ॥ ४१ ॥ वाजत दुंदुहि, सुरहि गंधोदके, फूल अमूल्यनी, वृष्टि करता ॥ कान्ह कहे वाणी हवे, मूक तुं मान निज, आण शिर गण मुज, जाउं धरता ॥ जु० ॥ ४२ ॥ करुण वयन तिणे, जाणीये तुज वयण, जीवता देखता, जड प्राणी ॥ शूरनुं पूर ते, दाखीयुं क्रूरपणे, पण होय जावी, जावे पराणी ॥ जु० ॥ ४३ ॥ चक्र सुरपतिवती, नवि होय अन्यथा, मुज वासुदेव, देवे कहाव्यो ॥ मूक विपवाद, अपवाद नहीं ताहरो, कहे जरासंध, माने जरायो ॥ जु० ॥ ४४ ॥ वासुदेवो थशे, गोप ए देखजो, कल्पित गर्व मन, को निवारे ॥ नवम वासुदेव अहं,—मेवपणे शीखवे, लोह कटके मन, मान धारे॥ जु०॥४५॥ श्वान लही अडि, मन हिठ धाये घणुं, जंबुक आमिष, खंन पामी ॥ तृण परे इंद्र, गणतो मने गोप तेम, गर्व उतारुं हुं, इणहि गामे॥ जु० ॥ ४६ ॥ सुणी कोपे हवे, खेपवे चक्रने, छेद शिर करत, आव्युं ते हवे ॥ सहस्र करे देव, तस सेव ततखेव हत, नरक चोथी गयो, पाप जहे ॥ जु० ॥ ४७ ॥ उक्तं च ॥ परमगुरु-जिरागमे ॥ आसग्गीवे तारय, मेरय महुकेतवे निसुंभे य ॥ बलि पहराए तह रा,-वणेय नवमे जरासिंधु ॥१॥ ए ए खलुपनिसत्तू,कित्ती पुरिसाण वासुदेवाणं ॥ जिणवर बलदेवा पुण,सवे विहयासचक्कवइ ॥२॥ अमर खेचर प्रमुख,कुसुम-वृष्टि करे,जयो जयो नवम,वासुदेव एह ॥ दुंदुहि वाय,बहु गाय तिणे हर्षथी, जणत कल्याण, आणंद देह ॥ जु० ॥४८॥ सत्यविजयो जयो, कपूरविजयो जयो, तास ययो शिष्य क्षमा, तेहि विजयो ॥ जिनविजय पंडितो,सुगुणथी मंडितो, तास उत्तमविजय, शिष्य हुउं ॥ जु० ॥ ४९॥ ढाल छठी, अधिकार पूरो थयो, खंडे त्रीजे ए, त्रीजो वखाणो ॥ पद्मविजये जलो, नेमि जिन रासमां, सुणत मंगलिक, माला पिछाणो ॥ जु० ॥ ५० ॥ सर्व गाथा ॥ २०९॥ इति श्रीमदुत्तमोत्तमविजयस्य लब्धकुवादिवृंदजयस्य वाङ्मयपारप्राप्तस्य पद्मविजयशिष्येण विरचिते नेमिजिनचरित्रे प्राकृतप्रबंधे शांबप्रद्युम्नविवाहजरासंधवधकीर्त्तनो नाम तृतीयखंडे तृतीयोऽधिकारः समाप्तः ॥ ३ ॥

॥ अथ तृतीय खंडस्य चतुर्थोऽधिकारः प्रारभ्यते ॥

॥दोहा॥शारद जिन गुरुने नमी,कहुं चोथो अधिकार॥जावे त्रीजा खंडमां,

सुणजो हर्ष अपार ॥ १ ॥ मूक्या नेमि जिनवरे, कृष्ण अरिना राय ॥ जरा· संध सुत थापीयो, सहदेवने पितु ठाय ॥ २ ॥ शौर्यपुरे महानेमजी, समुद्र· विजय सुत थाप ॥ हिरण्यनाभ कोशल ठवे, कृष्णजी हर्षे आप ॥ ३ ॥ धर नामे मथुरा ठवे, उग्रसेन सुत सार ॥ मातलि निज थानक गयो, प्रणमी नेमकुमार ॥ ४ ॥ खेचरी एक आवी कहे, जीत्या श्रीवसुदेव ॥ नारद मुखथी सांजली, नवमा तुम्हे वासुदेव ॥ ५ ॥ एम कहे आव्या तुरत, शांब प्रद्युम्नने ताम ॥ परणावी बहु कन्यका, कीधां उत्तम काम ॥ ६ ॥ जीव· जशा अग्नि जखे, हय गय रह नरु कोश ॥ नित वधे गोविंदने, वधते परम संतोष ॥ ७ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ श्रीधर्म जिणंद दयाल जी, धर्म तणो दाता ॥ ए देशी ॥ श्रीनेमि जिनेश्वर आगे जी ॥ हर्षथी अति माता ॥ सहु कूदे नाचवा लागे जी ॥ पामी जगत्राता ॥ सहु परमाणंद ते पामे जी ॥ ह० ॥ आणंदपुर वसे तिणे ठामे जी ॥ पा० ॥ १ ॥ जिनज्जुवन मांहि मनोहार जी ॥ ह० ॥ तिहां तीर्थ प्रसिद्ध थयुं सार जी ॥ पा० ॥ हरि साधवा चाल्या देश जी ॥ ह० ॥ जरता· र्द्धमां आणी निवेश जी ॥ पा० ॥ २ ॥ साथे सोल सहस राजान जी ॥ ह० ॥ बहु खेचरपतिशुं कान जी ॥ पा० ॥ जिहां कोटिशिला सन्निवेश जी ॥ ह० ॥ तिहां आवे जरतार्द्धेश जी ॥ पा० ॥ ३ ॥ तेह उंची ने विस्तार जी ॥ ह० ॥ योजनपरिमाण श्रीकार जी ॥ पा० ॥ सुरसमूह आश्रितशुं हाली जी ॥ ह० ॥ तस बल परीक्षा करे चाली जी ॥ पा० ॥ ४ ॥ तिहां पहेला वासुदेव आवी जी ॥ ह० ॥ धरे वाम जुजाग्रे ठावी जी ॥ पा० ॥ बीजा वासुदेव शिरे लावे जी ॥ हा० ॥ त्रीजा कंठ देशे ठावे जी ॥ पा० ॥ ५ ॥ वक्षस्थले चोथा जाणो जी ॥ ह० ॥ हृदये पंचम मन आणो जी ॥ पा० ॥ लावे छठा केमने देशे जी ॥ ह० ॥ सातमा ऊरु लगे सुविशेषे जी ॥ पा० ॥ ॥ ६ ॥ ढिंचण लगे आठमा सार जी ॥ ह० ॥ नवमा चउ अंगुल धार जी ॥ पा० ॥ अवसर्प्पिणीए बल प्रांही जी ॥ ह० ॥ सहु नरनां घटतां थांही जी ॥ पा० ॥ ७ ॥ जय जय तिहां शब्द प्रयुंजे जी ॥ ह० ॥ सुर असुर सहु हरि पूजे जी ॥ पा० ॥ खट् मासमां त्रण खंम साधी जी ॥ ह० ॥ पगनी पुण्य पूरव लाधी जी ॥ पा० ॥ ८ ॥ द्वारिका नयरीमां आव्या जी ॥ ह० ॥ बहु

मोछव कौतुक जाव्या जी॥ पा० ॥ सहु जादव निज निज गामे जी ॥ ह०॥ थापे हरि महागुण कामे जी ॥ पा०॥ए॥ शुज दिवसे शुज मुहूरते जी ॥ ह०॥ सहु श्रावे निज निज सत्ते जी ॥ पा० ॥ सिंहासने थापी कान जी ॥ ह० ॥ वली बलदेवने बहु मान जी॥ पा० ॥ १०॥ अजिषेक करे मन रंगे जी ॥ ह०॥ सुर सान्निधे जादव संगे जी ॥ पा०॥ सोल सहस मली राजान जी ॥ ह०॥ मंगल जय जय तिणे थान जी ॥ पा० ॥ ११ ॥ गंगा मागधनां पाणी जी ॥ ह० ॥ देवता ते थानक श्राणी जी ॥ पा० ॥ मणि कनकना कलश ते जरीया जी ॥ ह० ॥ अजिषेक करे परवरीया जी ॥ पा० ॥ १२ ॥ सोल सहस ते गोविंद परणे जी॥ ह०॥ श्राठ सहस करे वली शरणे जी ॥ पा०॥ जादवना कुमरने श्रापे जी॥ ह०॥ शेष श्राठ सहस जिन्न थापे जी ॥ पा० ॥ १३ ॥ करे विवाहमोछव जारे जी ॥ ह० ॥ हवे विसर्जे सहुने त्यारे जी ॥ पा० ॥ दशार्ह ते दश बलदेव जी ॥ ह०॥ सोल सहस राजान वली देव जी ॥ पा० ॥ १४॥ साढा त्रण कोमी कुमार जी॥ ह०॥ प्रद्युम्न प्रमुख वली सार जी ॥ पा० ॥ शांब प्रमुख ते साठ हजार जी ॥ ह० ॥ डुर्दांत महा जोधार जी ॥ पा० ॥ १५ ॥ वीरसेन प्रमुख वली जेह जी ॥ ह० ॥ एकवीश सहस कह्या तेह जी ॥ पा० ॥ बीजा पण केइ हजार जी॥ ह०॥ पाले कृष्णनी श्राणा सार जी ॥ पा० ॥ १६ ॥ करे क्रीमा नव नव रंगे जी ॥ ह० ॥ बहु कौतुके श्रति उछरंगे जी॥ पा०॥ कानन श्राराम उद्यान जी ॥ ह० ॥ सरिता सर वावि ने थान जी ॥ पा० ॥ १७ ॥ क्रीमापरवते विचरंता जी ॥ ह० ॥ निज नारी सहित सुखवंता जी ॥ पा० ॥ सुरलोकमां सुर परे जाणो जी ॥ ह० ॥ गयो काल न जाणे तिण टाणो जी ॥ पा० ॥ १८ ॥ हवे समुद्रविजय शिवादेवी जी ॥ ह०॥ सहुनी वात देखी एहवी जी ॥ पा० ॥ कहे नेमि कुंवरने वाणी जी ॥ ह० ॥ नारी परणो एक गुणखाणी जी ॥ पा० ॥ १९ ॥ श्रम पूरो मनोरथ पुत जी ॥ ह० ॥ सफलुं यौवन नारी जुत्त जी ॥ पा० ॥ त्रण ज्ञानी जव उदवेगी जी॥ ह०॥ कहे नेमि जिणंद वेरागी जी ॥ पा० ॥ २० ॥ कन्या जब योग्य ते लहीये जी ॥ ह० ॥ तब परणुं एम श्रमे कहीये जी ॥ पा० ॥ ए नारी नरगनी बारी जी ॥ ह० ॥ डुःखफल जववननी क्यारी जी ॥ पा० ॥ २१ ॥ जे मूरख लोके सेवी जी ॥ ह० ॥ सुणो माता तुमे शिवादेवी जी ॥ पा० ॥ योवनुं घटे

एहवुं नांही जी ॥ ह० ॥ कहे बालगोपाल एम आंही जी ॥ पा० ॥ २२ ॥ यतः ॥ ईयर महिला न रुच्चइ, सुंदर महिलाए नवि संपत्ति ॥ एमेव विरह परिव,–ज्ञिएहिं दियहा गमिद्यंति ॥ १ ॥ इम विनये गंभीर कही वाणी जी ॥ ह० ॥ नारी प्रतिषेधे मन आणी जी ॥ पा० ॥ जितमार कुमार श्रीनेम जी ॥ ह० ॥ माय ताय समजावे एम जी ॥ पा० ॥ २३ ॥ त्रीजे खंडे अधिकारे जी ॥ ह० ॥ चोथे ढाल प्रथम उदार जी ॥ पा० ॥ गुरु उत्तमविजयने संगे जी ॥ ह० ॥ कहे पद्मविजय मन रंगे जी ॥ पा० ॥ २४ ॥ सर्व गाथा ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अपराजितथी इण समे, चवी जसमतीनो जीव ॥ उग्रसेन घर धारिणी, कुखे आव्यो खीव ॥ १ ॥ रूप लक्षण गुणथी भरी, प्रसवे पुत्री नाम ॥ राजिमती अभिधा ठवे, उग्रसेन नृप ताम ॥ २ ॥ पांडव यादव मो हसे, कृष्णजी करी बहु मान ॥ इण समे द्वारिकामां वसे, धनसेन अभिधान ॥ ३ ॥ कमलामेला नामथी, तेहने पुत्री एक ॥ नभसेनने आपे भली, रूपे रति अतिरेक ॥ ४ ॥ नारद नमता आवीया, ते नभसेनने गेह ॥ नभसेन विवाह व्यग्रथी, नवि पूज्यो धरी नेह ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ स्वामी सीमंधर विनति ॥ ए देशी ॥ कलिप्रिय नारद उतपत्या, करवाने अनर्थ रे ॥ शांब प्रिय मित्र घर आवीयो, सागरचंद्र ते तत्र रे ॥ कलि० ॥ १ ॥ बहु भगतो ने पूछे इस्युं, तुमो जाउ गामो गाम रे ॥ कोइक कौतुक पेखीयुं, कहो अम तुमे स्वाम रे ॥ कलि० ॥ २ ॥ कहे रे नारद अमे पेखीयुं, अचरिज मनोहार रे ॥ कमलामेला धनसेननी, सुता रूपभंडार रे ॥ कलि० ॥ ३ ॥ सांभल दीधी नभसेनने, गया कहीने आकाश रे ॥ सागर कमलामेला तणो, थयो रागी अति खास रे ॥ कलि० ॥ ४ ॥ नारद कमलामेला घरे, गया तव इम पूछे रे ॥ आश्चर्य कहो तव ते कहे, दीठां अचरिज दु बे रे ॥ कलि० ॥ ५ ॥ रूपमां सागरचंदजी, कुरूपी नभसेन रे ॥ सागर रागी ते वर थइ, चाहुं मोहनुं वेन रे ॥ कलि० ॥ ६ ॥ नारद सागरने कहे, ताहरी रागी ते तेह रे ॥ सागर विरहसागर पड्यो, दीठे विरह दुःख देह रे ॥ कलि० ॥ ७ ॥ पीत नदिया हवे नारद जी, आवे सागर पास रे ॥ हाथ जोडी रे सागर तणो, सहु कुमर सुविलास रे ॥ कलि० ॥ ८ ॥

सागर कहे कमलामेला तुमे, तव शांब कहे वाणी रे ॥ कमलामेलक मुज जाणजे, कहे सागर तिणे ठाणी रे ॥ कवि० ॥ ९ ॥ मेलवो कमलामेला मने, तव शांब पण माने रे ॥ मद गयो जेटले शांबनो, चित्त आव्युं ते थाने रे ॥ कवि० ॥ १० ॥ डुःकर एह अंगी थयुं, अहो केम थशे एह रे ॥ तोही पण तुटवुं निर्वही, पोते अंगीकृत जेह रे ॥ कवि० ॥ ११ ॥ यतः ॥ प्रतिपन्नानि महतां, युगांतेऽपि चलंति न ॥ अगस्तिवचनेर्वद्धो, विंध्योऽद्यापि न वर्द्धते ॥ १ ॥ समरे प्रज्ञप्ति विद्या हवे, आवे शांब उद्यान रे ॥ बहु रे कुमारशुं परवस्यो, हवे सुर्ज तिणे थान रे ॥ कवि० ॥ १२ ॥ कमलामेला तेणावे तिहां, सागरचंद्र लावे रे ॥ ते बिहुंने परणावीयां, हवे सुर्ज किस्युं थावे रे ॥ कवि० ॥ १३ ॥ कमलामेला घर नवि जडे, पिता श्वशुर सहु खोले रे ॥ तेह उद्यानमां आवीया, देखे कन्या तिहां टोले रे ॥ कवि० ॥ ॥ १४ ॥ तेह जइ कृष्णने विनवे, सुणी कृष्ण पण रूसे रे ॥ जुद्ध करवा जणी नीकले, महा चढत मन धूसे रे ॥ कवि० ॥ १५ ॥ शांब ने कमलामेला हवे, वली सागरचंद रे ॥ शीघ्र आवीने पाये पडे, देखी तेह गोविंद रे ॥ कवि० ॥ १६ ॥ थइ रे विलखा हवे कृष्णजी, कहे वंचीयो मुज रे ॥ शुं करीये कहो एहने, नवि पडे कांइ सुज रे ॥ कवि० ॥ १७ ॥ हवे नजसेन समजावीयो, मोकलीयो निज धाम रे ॥ कमलामेला ते सागर जणी, दीये कृष्ण गुणकाम रे ॥ कवि० ॥ १८ ॥ त्रिह्न खोले ते सागरतणां, नजसेन दवे नित्य रे ॥ तास अपहरीय तो नवि शके, एम धरत अप्रीत रे ॥ कवि० ॥ १९ ॥ एम चोथा अधिकारनां, त्रीजे खंडे विशाल रे ॥ ढाल बीजी एसोहामणी, सुणतां मंगलमाल रे ॥ कवि० ॥ २० ॥ सर्व गाथा ॥ ५६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इण अवसरे प्रद्युम्नने, अछे वैदर्जी नार ॥ पुत्र थयो एक तेहने, नाम अनिरुद्ध कुमार ॥ १ ॥ यौवनवये आव्यो जदा, शुजनिवासपुर ताम ॥ बाण नाम राजा वसे, उखा कन्या तस धाम ॥ २ ॥ रूपवंत निज सारिखो, वहुल वहेरा काज ॥ आराधे विद्या प्रते, गौरी कहे शुज काज ॥ ३ ॥ कृष्ण तणो प्रद्युम्न सुत, तेहनो सुत अनिरुद्ध ॥ सुर उपम रूपे करी, धारो तेह सुबुद्ध ॥ ४ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ बापलडी रे जीजलडी, तुं कां नवि बोले मीठुं ॥ ए देशी ॥ गोरी प्रिय सुर बाण आराधे, शंकर नाम ते जास ॥ ते तुठो कहे संग्रामे तुज, जय थाशे सुविलास रे ॥ १॥ सांजलजो ए कर्म तणी,जुवो वात बने ठे केहवी ॥ ए आंकणी ॥ शंकर देवने गोरी जाखे, ए वर खोटो आप्यो ॥ एहनी धुआने वर में आप्यो, ते तें केम उथाप्यो रे ॥ सां० ॥ २ ॥ तव शंकर हवे बाणने जाखे, नारीनुं कारय टाली ॥ बीजे सघले जय तुऊ थाशे, ए में वात संजाली रे ॥ सां० ॥ ३ ॥ बहु खेचर जूचर तस जाचे, पण नवि बाण ते आपे ॥ हवे अनिरुद्ध कुमरने तेऊी, निज पासे ते थापे रे ॥ सां० ॥ ४ ॥ तिहां गंधर्वविवाहे परणया, हवे ते उखा नारी ॥ लेइ आकाशे कहे इम वाणी, नारी लेइ जाउं तुं सारी रे ॥ सां० ॥ ५ ॥ तव ते बाण बाणावली बोले, कुण ए डुष्ट ते दीसे ॥ एम कही अनिरुद्ध कुमरने रुंधे, मनमां धरी अति रीशे रे ॥ सां० ॥ ६ ॥ पाठसिद्ध विद्या दीये उषा, निज पतिने धरी राग॥ जुद्ध करी बहु काल ते साथे, बाण थकी महाजाग रे ॥ सां० ॥ ७ ॥ नागपाशे करी कवज तणी परे, बांधे प्रद्युम्न पुत ॥ बाण महाबलीयो इम करतो, विद्याधर संजूत रे॥ सां० ॥ ८ ॥ प्रज्ञप्ति जइ कृष्णने जाखे, तव ते हरि हखी आवे ॥ शांब प्रद्युम्न संयुत चतुरंगी,सेना साथ सोहावे रे ॥ सां० ॥ ए॥ गरुडध्वज देखीने त्रुटे, नागपाश ततकाल ॥ बाण कहे हरिने इम वाणी, हुं तुं महा विकराल रे ॥ सां० ॥ १० ॥ सहुनी कन्या तुमे हरी जाओ,पण तुमे फल तस पेखो ॥ कृष्ण कहे इहां वचन तणी सुणी, युक्ति तणो श्यो लेखो ॥ सां० ॥११॥ कन्या देवी परने आखर,तस हरतां शो दोष ॥ इम सुणतां ते बाण नृपतिने, क्रोध तणो थयो पोष रे ॥ सां० ॥१२॥ बाण तणो वरसाद वरसावे, कृष्ण उपर ते जाम ॥ तेह जनार्दन आवत ठेदे, बाणनो राशि ते ताम रे ॥ सां० ॥ ॥ १३ ॥ खंम खंम तिहां बाणने कीधो, हवे अनिरुद्ध ने राम ॥ शांब प्रद्युम्न हरि उषा सहु, आव्या द्वारिका गाम रे ॥ सां० ॥ १४ ॥ जे उठेश ते कृष्णे कीधा, ते ते सघला सीधा ॥ घर घर मंगलमाला पजणी, जग जशवाद ते लीधा रे ॥ सां० ॥ १५ ॥ श्रीविजयदेव सूरीश पटोधर, श्रीविजयसिंह सवाया ॥ कृतकिरिया उद्धार ते जेणे, सत्यविजय गुरुराया रे ॥ सां० ॥ १६ ॥ शिष्य कपूरविजय तस शिष्यो, क्षमाविजय

तस जाणो ॥ तास शिष्य जिनविजय ते महोटा, महापंमित मन आणो रे ॥ सां० ॥ १७ ॥ उत्तमविजय ते शिष्य कहाया, त्रीजा खंममां एह ॥ चोथे अधिकारे ए त्रीजी, ढाल अधिक गुणगेह रे ॥ सां० ॥ १८ ॥ रत्नविजय गणि कहेणथी जाख्यो, चोथो ए अधिकार ॥ त्रीजो खंम पण पूरण हुउं, सुणतां जय जयकार रे ॥ सां० ॥ १ए ॥ ढाल प्रथम अधिकारे तेरह, बीजे दश कही सारी ॥ खट्ट ढालो त्रीजे चोथे त्रण, सहु बत्रीश सुखकारी रे ॥ सां० ॥ २० ॥ ढाल उंगणपचास प्रथम खंडे, बीजे कही बावन ॥ त्रीजे बत्रीश सहु मली एकसो, जाणो त्रीश ने त्रण रे ॥ सां० ॥ २१ ॥ इम त्रण खंम अधिक उल्लासे, उत्तमविजयनो बाल ॥ पद्मविजय कहे सुणतां होवे, घर घर मंगलमाल रे ॥ सां० ॥ २२ ॥ चोपाई ॥ खंम खंमथी मीठो घणुं, श्री श्रीनेमिचरित्रे जणुं ॥ उत्तमविजय गुरुथी लह्यो, त्रीजो खंम एम पद्ये कह्यो ॥१॥ सर्व गाथा ॥ ७३ ॥ इति श्रीमदुत्तमचरणधरोत्तमविजयज-यलब्धकुवादिवृंदस्य वाङ्मयापारपारप्राप्तस्य शिष्यपद्मविजयेन विरचिते श्री-मन्नेमिजिनचरित्रे प्राकृतप्रबंधे सागरचंद्रोपाख्यानउपाहरणबाणवधवर्ण-नो नाम तृतीयखंडे चतुर्थोऽधिकारः ॥ ४ ॥ इति तृतीयखंमः संपूर्णः ॥ प्रथमा-धिकारे ॥ ४१७ ॥ द्वितीयाधिकारे ॥ ३एए ॥ तृतीयाधिकारे ॥ २०ए ॥ तुर्याधिकारे ॥ ७३ ॥ सर्वस्मिन् मूल्या ॥ १००८ ॥ एवं प्रथम खंडे ॥ १६४७ ॥ द्वितीयखंमे ॥ १७३८ ॥ तृतीयखंडे ॥ १००८ ॥ त्रण मलीने ॥ ४३ए३ ॥

॥ अथ ॥

॥ चतुर्थखंडस्य प्रथमोऽधिकारः प्रारभ्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ शारदपदपंकज नमुं, नमुं ते जिन चोवीश ॥ शाश्वत जिनप्रतिमा नमुं, विहरमान जिन वीश ॥१॥ उत्कृष्टे काले नमुं, सित्तेर सो जिनराय ॥ जास कल्याणके नरकमां, पण अजुआलुं थाय ॥ २ ॥ जंबु धातकी पुष्करा, दश क्षेत्रे त्रिहुं काल ॥ त्रीश चोवीशी ते नमुं, सातसें वीश विशाल ॥ ३ ॥ नमुं ते गुरु गुण आगला, समतावंत महंत ॥ जास प्रसाद लही करी, लहीये जवने सांत ॥ ४ ॥ नमुं ते विद्यागुरु वली, उग्र क्रियाधर जेह ॥ जास कृपाथी कीजीये, उद्यम रुमो एह ॥ ५ ॥ त्रीजो खंम पूरण करी, कहुं चोथो हवे खंम ॥

सुणतां बोध होये जलो, सुणजो एह श्रसंग ॥ ६ ॥ बोधथी श्रद्धा निर्मली, श्रद्धाथी चारित्त ॥ चारित्रथी शिवसंपदा, लहीये जिहां सुख नित ॥ ७ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ लुहारण जायो दीकरो ॥ लोहारी हे ॥ सोनारण जायो सुत के ॥ लाल सुरंगी हे ॥ ए देशी ॥ रमतां रमतां आवीया ॥ जिनवरजी हे ॥ कृष्ण आयुधशाला मांहि के ॥ लाल जिणंद हे ॥ चक्र शंख जीपण गदा ॥ जि० ॥ चाप शस्त्र वली त्यांहि के ॥ ला० ॥ १ ॥ कुंदधवल पंचमुख जलो ॥ जि० ॥ पंच वरण जे शंख के ॥ ला० ॥ लेवा जावे जेटले ॥ जि० ॥ बहु सित ज्युं हंसपंख के ॥ ला० ॥ २ ॥ आयुधशाला रक्षक तिहां ॥ जि० ॥ आवी प्रणमी पाय के ॥ ला० ॥ यद्यपि अतुलबली तुमो ॥ जि० ॥ तोपण ए न लेवाय के ॥ ला० ॥ ३ ॥ तो वजाववो वेगलो ॥ जि० ॥ मूकी एक गोविंद के ॥ ला० ॥ नेम लगारक हसी करी ॥ जि० ॥ तेह लीये जिनचंद के ॥ ला० ॥ ४ ॥ नेमजी वदने ठावीयो ॥ जि० ॥ तव राजे अति जेह के ॥ ला० ॥ फूंकी नेमजी पूरीयो ॥ जि० ॥ उठ्यो अपूर्व ध्वनि तेह के ॥ ला० ॥ ५ ॥ पृथिवीवलय ते कंपतुं ॥ जि० ॥ सायर तजता सीम के ॥ ला० ॥ जवण ने वनखंम कंपीयां ॥ जि० ॥ जन जाणे थयुं किम के ॥ ला० ॥ ६ ॥ त्रण भुवन लोजावीयां ॥ जि० ॥ मानुं गगन ते पेसे पाताल के ॥ ला० ॥ अथवा पाताल आकाशमां ॥ जि० ॥ पेसे इम सहु तिणे ताल के ॥ ला० ॥ ७ ॥ जुग पलटाणो मानता ॥ जि० ॥ सहु लोक करे आक्रंद के ॥ ला० ॥ देवनिर्मित नयरी तिणे ॥ जि० ॥ शतधा नवि थइ गुणवृंद के ॥ ला० ॥ ८ ॥ वर वाजी नासे तिहां ॥ जि० ॥ त्रोमी बंधन पाश के ॥ ला० ॥ करिवर सांकल त्रोमता ॥ जि० ॥ सहु देखी बीहीता तास के ॥ ला० ॥ ९ ॥ मूर्छा आवी लोकने ॥ जि० ॥ मृत परे रक्षक सहु थाय के ॥ ला० ॥ सहु नट कृष्ण शरण करे ॥ जि० ॥ धरे जीति हरि हृदी जाय के ॥ ला० ॥ १० ॥ यतः ॥ चाल ॥ धरणी धरहरूप, गिरि खमहरूप, जलके सायर नीर ॥ रवि चंद दिवायर, कंप कायर, मूके सत्व शरीर ॥ गज बंधन त्रोमे, खीला मोमे, नासे तरल तुरंग ॥ वन मांहि बीहे, शरणुं ईहे, सूयर सिंह कुरंग ॥ १ ॥ रमणी जय धरती, पति अणुसरती, दश दिशा जोये वाट ॥ हसंती उमे, वाजनमढे, कन

नवि संचारे घाट ॥ कोलाहल कोमे, जननी जोमे, नवि संजलाये साद ॥ मन शंके यादव, दानव मानव, वादी ठंडे वाद ॥ २ ॥ ढाल ॥ कृष्ण चिंते चक्री उपनो ॥ जि० ॥ मुजथी पण शक्ति अतोल के ॥ ला० ॥ मुज पूरे जन क्षोजता ॥ जि० ॥ ए क्षोजावे समुद्रकल्लोल के ॥ ला० ॥ ११ ॥ आयुधरक्षक आवीयो ॥ जि० ॥ जाखे कृष्णने एम के ॥ ला० ॥ शंख पूर्यो ए स्वामी जी ॥ जि० ॥ आवी अरिहा नेम के ॥ ला० ॥ १२ ॥ तेह सुणी हरि हलफल्यो ॥ जि० ॥ आवी प्रशंसे जिणंद के ॥ ला० ॥ एकांते कहे रामने ॥ जि० ॥ लेशे ए राज्यनो वृंद के ॥ ला० ॥ १३ ॥ रण करतां पण महा-वली ॥ जि० ॥ दीग ए नेमकुमार के ॥ ला० ॥ तव हसीने कहे रामजी ॥ जि० ॥ एह विकल्प म धार के ॥ ला० ॥ १४ ॥ स्त्रीसंसर्ग न इछतो ॥ जि० ॥ केम लेहशे ताहरुं राज्य के ॥ ला० ॥ महापाप मन मानतो ॥ जि० ॥ ए तो वावीशमो जिनराज के ॥ ला० ॥ १५ ॥ यतः ॥ जो होइ वल्लवस्को, अणंत सोरकंमि तम्मि मोस्कंमि ॥ किह वचइ तस्स मणं, अणंत छुहयंमि नरयम्मि ॥ ३ ॥ त्रिभुवन लखमी वरमाला ॥ जि० ॥ होवे जे नरनी पास के ॥ ला० ॥ टूंटी मूंगी काणी कूबडी ॥ जि० ॥ केम इछे सुविलास के ॥ ला० ॥ १६ ॥ स्वप्न सूचित तीर्थंकरो ॥ जि० ॥ जाण्यो नेमि जिनराय के ॥ ला० ॥ इम कही कान्हने थिर कस्यो ॥ जि० ॥ वली केटला दिवस गमाय के ॥ ला० ॥ १७ ॥ वल परखीजे आपणां ॥ जि० ॥ एम कहे जिनने गोविंद के ॥ ला० ॥ जिनवर जाणे ज्ञानथी ॥ जि० ॥ जणे हाकारो जिनचंद के ॥ ला० ॥ १८ ॥ व्यायामशालामां आवीया ॥ जि० ॥ वेगा सिंहासने दोय के ॥ ला० ॥ देव दाणव सिद्ध गुह्यका ॥ जि० ॥ जोवा अचरिज नेला होय के ॥ ला० ॥ १९ ॥ शे जुद्धे कहो जूऊशुं ॥ जि० ॥ कहे नेमि जे तुम मन जाव के ॥ ला० ॥ कृष्ण कहे अमे पेखीयुं ॥ जि० ॥ शस्त्रजुद्ध रणदाव के ॥ ला० ॥ २० ॥ मल्लयुद्धथी जूऊी-चे ॥ जि० ॥ ते जिनवरे मानी वात के ॥ ला० ॥ वलगे नमे उल्लसे वली ॥ जि० ॥ सिंहनाद मूके सुखशात के ॥ ला० ॥ २१ ॥ ते सिंहनादथी खलजले ॥ जि० ॥ हय गय नयरी जनलोक के ॥ ला० ॥ जादव सहु जयंकर थयां ॥ जि० ॥ मनमां धरता शोक के ॥ ला० ॥ २२ ॥ नेमि जिनेश्वर तव कहे ॥ जि० ॥ अनुचित ए वालने योग के ॥ ला० ॥ वालो

लगारेक वांहनी ॥ जि० ॥ लो तुम जीतण जोग के ॥ ला० ॥ २३॥
केशव कहे जुर्ज केटलो ॥ जि० ॥ करे मनमां अहंकार के ॥ ला० ॥ क
पण वाली नवि शके ॥ जि० ॥ इम कहे नेमकुमार के ॥ ला० ॥ २४॥
अमर्ष धरी हवे कृष्णजी ॥ जि० ॥ करे वाम वांह प्रसार के ॥ ला०॥
कमलनाल परे वालता ॥ जि० ॥ लीलाए नेमकुमार के ॥ ला० ॥ २५॥
हवे नेमजी लांबी करे ॥ जि० ॥ निज वांह अति सुकुमाल के ॥ ला०॥
वाली न वले वांहनी ॥ जि० ॥ तव वलगो थइ विकराल के ॥ ला० ॥ २६॥
तोपण न वली तेहथी ॥ जि० ॥ तव वलगे दोय कर लेय के ॥ ला०॥
जाव कहे जिन विष्णुनो ॥ जि० ॥ हरि मन पाम्यो खेय के ॥ ला० ॥ २७॥
वांह प्रजु उंची करे ॥ जि० ॥ वृक्षशाखा परे जाम के ॥ ला० ॥ हरि प
हींचे हरि तिहां ॥ जि० ॥ खरुं कीधुं निज हरिनाम के ॥ ला० ॥ २८॥
बल अनंत जगवंत जी ॥ जि० ॥ जाणीने मूके वांही के ॥ ला० ॥ बल
देखीने रंजीयो ॥ जि० ॥ आलिंगे हरि त्यांहि के ॥ ला० ॥ २९॥ हरि ना
जरथी एम कहे ॥ जि० ॥ पण मनमां अति विलखाय के ॥ ला० ॥ तुम
बल शक्ति अगाध छे ॥ जि० ॥ देखी हरख ते थाय के ॥ ला० ॥ ३०॥
चोथा खंममां जाणीयें ॥ जि० ॥ ढाल प्रथम अधिकार के ॥ ला० ॥ पद्मे श्री
उत्तमविजयनो ॥ जि० ॥ पद्मविजय कहे सार के ॥ ला० ॥ ३१ ॥ गा० ॥ ३०॥

॥ दोहा ॥

॥ कृष्ण कहे धन्य हुं थयो, देखी तुम बल शक्ति ॥ पृथिवीने पावन करी, सुर नर करे तुम जक्ति ॥ १ ॥ देव ते दिवसे चमकीया, कहे परस्पर एम ॥ जुर्ज बालक जिन नेमजी, हरि अंदोल्यो केम ॥ २ ॥ हरि हवे आव्या थानकें, धरता मनमां खेद ॥ तेमी कहे बलदेवने, राज्य तणो थयो नेद ॥ ३ ॥ बल कहे ते केम तव कहे, सघलो निज वृत्तांत ॥ तव हसी हरिने बल कहे, पूर्व परे करे शांत ॥ ४ ॥ हरि कहे जाणुं नुं खरो, जिनवर वारो पद ॥ पण विवाहादिक जोगव्यां, राज्य नहीं संदेह ॥ ५ ॥ चिंते श्री बलदेवजी, नवि लागे उपदेश ॥ हरि हसी निज निज थानकें, पहोता प्रेम विशेष ॥ ६ ॥ आनंदशे दिन निर्गमे, न लहे रति को जाण ॥ कुलदेवी जागी करी, हरिने वाले वाण ॥ ७ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ जाव श्रावकना जाखीये ॥ ए देशी ॥ कुलदेवी कहे वाणी ए, तुमे सांजलो शारंगपाणि ए, जाणीए, तुफ संताप आवी इहां ए ॥ १ ॥ मनमां मत करो खेद ए, ए परमेश्वर गतखेद ए, वेद ए, जोग करवा विण व्रत लीये ए ॥२॥ शत्रु मित्र तृण मणि समो ए, एम जाखे जिन एकवीशमो, नमि नमो, महारूपिए तेम जाखीयुं ए ॥३॥ राज्य हरणनी शी शंका ए, एहने सघला सम नृप रंका ए, वंका ए, कांही विकल्प मने करे ए ॥४॥ गतसंशय थयो कान्ह ए, आणी मनमां शान ए, मान ए, मूकी आतम निंदतो ए ॥५॥ अंतेउरमां वेसी ए, नेम बोलावे हेसी ए, शुज लेशी ए, आवे जिन केशव कने ए ॥६॥ आलिंग्यो हरखे जारी ए, तव दीयर दीयर कहे नारी ए, प्यारी ए, हांसीमां बोलावती ए ॥ ७ ॥ जिनवर पण जिन साथे ए, पण जोजाइ दीए वाथे ए, हाथे ए, वलगी हसे रमे हर्षधी ए ॥ ८ ॥ रतनआसन वेसारी ए, जिनअंग लूहे जली सारी ए, वखगारी ए, माल विलेपे देहनी ए ॥ ९ ॥ रसवती साथे जुंजी ए, कहे कृष्ण ते सहु प्रयुंजी ए, नेमजी ए, सघले प्रवेश करे सुखे ए ॥ १० ॥ वामी वन आरामे ए, वली क्रीडापर्वत ठामे ए, गोठीकामे ए, सहकारकेलि कमलवने ए ॥ ११ ॥ इम सुखमां सुविलास ए, आव्यो वसंत ते मास ए, उल्लास ए, काम नृपति पामे घणो ए ॥ १२ ॥ गोपीने कहे हरि आवो ए, नेमने विवाह मनावो ए, ठावो ए, मदनधाममां पहने ए ॥ १३ ॥ वसंत वर्णनं ॥ पुन्नाग नाग चंपयं, एला लवंग मंनियं ॥ खजूर केलि नालियं, असोगसें अखंकियं ॥ १ ॥ वर नागवल्लि सुंदरं, फल पुष्फ पत्त निप्परं ॥ उजाणतठ सिरिकरं, रेहंति दमण मणहरं ॥ २ ॥ मानुं जलपे लोकशुं, सरस शब्द जे थावे ए, मावे ए, हर्ष लोक मनमां नहीं ए ॥ १४ ॥ पल्लव विकसित मिष हसे, वात कंपित मानुं नाचे ए, साचे ए, शाखापल्लव करे स्तव करे ए ॥ १५ ॥ सरस कुसुम रस चूवे ए, मानुं एह ते रोवे ए, सोवे ए, विरही सुखे नहीं ते वती ए ॥ १६ ॥ फलजर नमीया ते वती, मानुं प्रणमे पाय ए, तिहां आय ए, प्रियजनने ते हर्षधी ए ॥ १७ ॥ शाखा चलित मानुं तेडे ए, लोकने क्रीडा देवे ए, चेते ए, लोक वसंत ते आवीयो ए ॥ १८ ॥ कामे उन्मत्त लोक ए, क्रीडा करे थोकाथोक ए, शोक ए, नहीं कोइना चित्तमां तदा ए

॥ १ए ॥ नारी लेइ निज साथे ए, उद्याने सहु आवे ए, सोहावे ए, नव नव आभूषण थकी ए ॥ २० ॥ पण श्रीनेमि जिणंदने, मदन खोजावी नवि शके ए, धके ए, मारी काढ्यो मूलथी ए ॥ २१ ॥ कोकिल तिहां कूजित करे, वनपालक आवी भापे ए, विलासे ए, कृष्णजी वन फल फूलीयो ए ॥ २२ ॥ डिंडिम देवरावे तिहां, वनलक्ष्मी जोवा जाय ए, राय ए, सहु जन रुद्धिशुं आवजो ए ॥ २३ ॥ ते सुणी सहु जन हलफल्यो, तरुणलोक मन हरखे ए, वरखे ए, मयण ते बाण समासडे ए ॥ २४ ॥ चोथे खंडे बीजी ए, ढाल प्रथम अधिकारे ए, प्यारे ए, पद्मविजय भाखी भली ए ॥ २५ ॥ सर्व गाथा ॥ ७० ॥

॥ दोहा ॥

॥ इय गय रह भम परिवर्यो, अंतेउर सहु साथ ॥ समुद्रविजय मुख राजनी; वली साथे नेमनाथ ॥ १ ॥ सुर अनुत्तरथी अनंत गुण, रूपे नेमकुमार ॥ श्वेत छत्र धरते थके, सोहे गुण श्रीकार ॥ २ ॥ धवल तनु ने धवल ध्वज, धवल छत्र शिर जास ॥ धवल जसे बलदेवजी, रथ चाले वाम पास ॥ ३ ॥ उल्मुक नाम सेनापति, भानु भामर अक्रूर ॥ शांब प्रद्युम्न सारण निसढ, पुंडू प्रमुख वली भूर ॥ ४ ॥ भट कोटीथी परिवर्यो, हरि वली नेमि तीन ॥ नगर नागरी देखती, करी कटाक्ष ते पीन ॥ ५ ॥ नजर ठरी जे उपरे, तास प्रशंसे तेह ॥ आवी वाद करे इस्यो, भाखे आप सनेह ॥ ६ ॥ कोइ प्रशंसे कान्हने, कोइ प्रशंसे नेम ॥ कोइक श्रीबलदेवने, स्तवती धरती प्रेम ॥ ७ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ तन मन कीधुं तुने भेट ॥ म्हारा वाल्हा ॥ तन० ॥ ए देशी ॥ कानजी जावे उद्यान ॥ ए आंकणी ॥ रमवा चालो जाइए वनमां, पल्हवथी थाये विन्नाण ॥ मारा वाल्हा ॥ क्रीडा वसंतनी करवा चाल्या, बेसी निज निज यान ॥ मा० ॥ का० ॥ १ ॥ तिहां मंदार ने दमणो मरुउं, कुंद चंदननां थान ॥ मा० ॥ जाइ जूई ने केतकी वेली, वली रुद्राक्षनां रान ॥ मा० ॥ का० ॥ २ ॥ पारिजात ने धातकी सल्लकी, रायण चूत अमान ॥ मा० ॥ कोरिंट ने मंदार मनोहर, जोवे नेम वली कान्ह ॥ मा० ॥ ॥ का० ॥ ३ ॥ रुखनी जाति न जगमां एहवी, न जसे तेह उद्यान ॥ ॥ मा० ॥ सहु जादव तिहां केलि करता, ज्युं नंदन सुर तान ॥ मा० ॥ ॥ का० ॥ ४ ॥ खाद्य खाये हसे खेले रंगे, केइ करे मद्यपान ॥ मा० ॥

केइ करे वीजणे वली वायु, केइ कदली केरे पान ॥ मा० ॥ का० ॥५॥
क्रीडा करी एम हवे दामोदर, मज्जन केरे काज ॥ मा० ॥ कान्हजी जाये
महाराज ॥ ए आंकणी ॥ वेणु वीणा मृदंग वजावे,कलकल रव जिम गाज
॥ मा० ॥ का० ॥ ६ ॥ पुष्करिणी मांहे स्नान करीने, आवे सरोवर पाज
॥ मा० ॥ केइक नाटक करती रमणी, मदवंती मूकी लाज ॥ मा० ॥
॥ का० ॥ ७ ॥ बहु वाजित्र ध्वनि तिहां उठे, दश दिशे दीसे गाज ॥
॥ मा० ॥ गोविंद रुक्मिणी ने सत्यभामा, कमल क्रीडा करे साज ॥ मा०
॥ का० ॥ ८ ॥ प्रीतमनी प्रिया आणा पामी, आवे नेमनी पाज ॥ मा०
॥ देवर देवर कहेती वलगे, आवो रमीये आज ॥ मा० ॥ का० ॥ ए ॥
नेमजी तो अविकारथी करता, क्रीडा तेह समाज ॥ मा० ॥ अच्युत आणं-
द अंतर पामे, देखी श्रीजिनराज ॥ मा० ॥ का० ॥ १० ॥ अंतेउर परि-
जननी साथे, ते रजनी तिहां जाय ॥ मा० ॥ हरि हखी नेमि जिनराय ॥
ए आंकणी ॥ इम नित नित तस क्रीडा करता, वारु वसंत वही जाय ॥
॥ मा० ॥ ह० ॥ ११ ॥ ग्रीष्म ते दुःखदायक तव आयो, आकुल जन
सहु थाय ॥ मा० ॥ जादव कमल सरोवर सेवे, शीतल गंध लगाय ॥ मा०
॥ ह० ॥ १२ ॥ स्नान करण एक दिन वली पहोता, साथ अंतेउर लाय
॥ मा० ॥ मणिमय सिंहासन पर बेठा, सोल सहस नारी आय ॥
॥ मा० ॥ ह० ॥ १३ ॥ जादवकुमर हजारगमे तिहां, देवकुमर सम
काय ॥ मा० ॥ कुसुमाभरण विभूषित सघला, देखत नारी वेधाय ॥ मा० ॥
॥ ह० ॥ १४ ॥ कुंकुम चंदन कपूर कस्तूरी, पाणी सुगंध ठंठाय ॥ मा० ॥
क्रीडा सघली करती तेहवे, ते वर्णन न कराय ॥ मा० ॥ ह० ॥ १५ ॥
नेमि जिनेश्वरशुं पण रमती, दीसे अति मनोहार ॥ मा० ॥ अचरिज परे
तिणी वार ॥ ए आंकणी ॥ मज्जन मूकी सघला आवे, जोवा नेमकुमार ॥
॥ मा० ॥ अ० ॥ १६ ॥ कौतुक लीधा देवता आवे, लेइ निज निज नार
॥ मा० ॥ हरि पण मज्जन मूकी आवे, हरि ज्युं सुर परिवार ॥ मा० ॥ अ०
॥ १७ ॥ निज चक्षा वृत बंधव देखे, पण प्रभुजी अविकार ॥ मा० ॥
जन्म थकी प्रभुजी अविकारी, जिनजी नेमकुमार ॥ मा० ॥ अ० ॥ १८ ॥
नेमजी करे ते किणे न थाये, मार मार कस्यो मार ॥ मा० ॥ मेरुशिखर
परे थिर चित्त देखी, वधतो जाये तार ॥ मा० ॥ अ० ॥ १९ ॥ मदिरा मद-

माती सोल सहस्रा, स्नान करावे नार ॥ मा० ॥ नेमचरित्र विमल ति
गावे, देवरनो राग धार॥ मा०॥ अ० ॥२०॥ बाहु ऊंची करी नाचे सघली
रंजित जिन गुण वार ॥ मा० ॥ रुक्मिणी जामा प्रमुख एम जाखे, दु
दुःख लीयुं इण वार॥ मा०॥ अ०॥२१॥ आलिंगन प्रजु नेमने करती, नेम
जी आलिंगे ते वार ॥ मा०॥ पण अविकारी जाइ देखीने, नेमजीनो अव
तार॥ मा०॥ अ०॥२२॥ कान चिंते विस्मय पामीने, जात विमल शील ए
॥ मा० ॥प्रेरणाथी पण चित्त न चलीयुं, जोइ मुज नारी सनेह ॥ मा०
प्रजुजी गुणगण गेह ॥ ए आंकणी॥ २३ ॥ रुक्मिणी प्रमुख एकेकी नारी
परणी युद्ध करेह ॥ मा०॥ जे देखी सुर पण क्षोजाये, रूप गुणे ए अछे
॥ मा० ॥ प्र० ॥ २४ ॥ ते कंठ वलगी पण न क्षोजाये, एहथी अधि
नरेह ॥ मा० ॥ अमने ए अज्ञान ते जाणो, जे करुं इहां संदेह ॥ मा
॥ प्र०॥ २५ ॥ इम कहेतो नेमजी आलिंगे, हर्ष ते माय न देह ॥ मा
चोथे खंमे प्रथम अधिकारे, ढाल त्रीजी कही एह ॥ मा० ॥ प्र० ॥२६
क्षमाविजय जिनवर गुण गातां, उत्तम पदवी वरेह ॥ मा०॥ पद्मविजय कहे
मार जे जीते, धन धन जगमां तेह॥ मा०॥ का० ॥ २७ ॥ सर्व गाथा ॥ १०४ ॥

॥ दोहा ॥

॥स्नान करी ते वावमां, रुक्मिणी प्रमुख सहु नार ॥ आवी वावनी बाहिरे, टोले थइ तिणी वार॥ १ ॥ प्रजु पण आव्या बाहिरे, ऊठी सघली नार ॥ बोलावे देवर प्रते, आवो नेमकुमार ॥ २ ॥ बेसो रयणसिंहासने, इम कही जाली हाथ ॥ बेसारे सिंहासने, गोपीना मली साथ ॥ ३ ॥ अंग लूइ विलेपन करे, वस्त्राजरण पहेराय ॥ कुसुमे केश अलंकरे, विनय करी तिण ठाय ॥ ४ ॥ स्वामी तुम मुख आगले, बोली जाणे कुण ॥ नारी चपल स्वजावथी, बुद्धि थकी पण ऊण ॥ ५ ॥ स्वामी जुवनाधिक गुणे, रोष न करजो कोय ॥ साचुं कहेतां रीसमी, मूरखने पण न होय ॥ ६ ॥ तुम गुणगण न गणी शकुं, पण सहु सफला ताम ॥ घर नारी शोजावती, देवर अम परे जाम ॥ ७ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ वाला वंसीवटने चोवटे, उजला नंदकिशोर ॥ गोरस ढलशे रे॥ ए देशी ॥ देवरजी तुमे सांजलो, वाला परणो नारी एक॥ देवर सुणीये रे॥

ए टेक ॥ शूनुं घर घरणी विना ॥ वा० ॥ चिंतवो धरीय विवेक ॥ दे० ॥ १ ॥ मात पिता जाइ जला ॥ वा० ॥ मागे फरी फरी एह ॥ दे० ॥ योवन वय जातुं रहे ॥ वा० ॥ परणो धरी ससनेह ॥ दे० ॥ २ ॥ वृद्ध थइ व्रत पाळजो ॥ वा० ॥ पण नवि शोजे आज ॥ दे० ॥ वनकुसुम परे निगमो ॥ वा० ॥ स्त्री विणु योवन राज ॥ दे० ॥ ३ ॥ मोनपणुं मुनिपणे जलुं ॥ वा० ॥ किम करो नेमजी मोन ॥ दे० ॥ लोक रंखोळ वांढो कहे ॥ वा० ॥ करे विश्वास ते कोण ॥ दे० ॥ ४ ॥ जमतो घर घर एह ते ॥ वा० ॥ नारी विना कहे एम ॥ दे० ॥ रुक्मिणी कहे ते कारणे ॥ वा० ॥ मानो वचन धरी प्रेम ॥ दे० ॥ ५ ॥ कामिनी वहन कायर तुमे ॥ वा० ॥ न घटे एह विचार ॥ दे० ॥ बत्रीश सहस भ्राता जलो ॥ वा० ॥ वहे तुमचो जली नार ॥ दे० ॥ ६ ॥ एक अधिक वहेशे वळी ॥ वा० ॥ शी चिंता तेह मांहि ॥ दे० ॥ एम कही पय प्रणमे जसे ॥ वा० ॥ सत्यजामा कहे त्यांहि ॥ दे० ॥ ७ ॥ ऋषज प्रमुख जिनवर थया ॥ वा० ॥ ते परण्या निर्धार ॥ दे० ॥ राजेश्वर पण ते थया ॥ वा० ॥ नीति प्रमुख सुविचार ॥ दे० ॥ ८ ॥ विषय सुख जोगव्यां तिणे ॥ वा० ॥ सुत बहु उपन्या तास ॥ दे० ॥ तीरथ थापी शिव गया ॥ वा० ॥ शाश्वत सुख सुविलास ॥ दे० ॥ ९ ॥ तेहथी केम नवा थया ॥ वा० ॥ मोक्षना जावणहार ॥ दे० ॥ चित्त विचार करी हवे ॥ वा० ॥ परणो रुडी नार ॥ दे० ॥ १० ॥ जांबुवती हवे जलपती ॥ वा० ॥ वेगळी मूकी लाज ॥ दे० ॥ हरिवंशे विभूषण थया ॥ वा० ॥ मुनिसुव्रत जिनराज ॥ दे० ॥ ११ ॥ ते पण गृहवासे वस्या ॥ वा० ॥ सुत उपनो वळी सार ॥ दे० ॥ सुख विलसे वळी शाश्वतां ॥ वा० ॥ ए तुम वंश विचार ॥ दे० ॥ १२ ॥ पद्मावती कहे पदमिणी ॥ वा० ॥ नारी विना नहीं कांय ॥ दे० ॥ नर विश्वास न को करे ॥ वा० ॥ घरनी शोजा जाय ॥ दे० ॥ १३ ॥ गांधारी घणुं बोलती ॥ वा० ॥ सद्ज्ञानजात्रा काम ॥ दे० ॥ संघसाथ पर्वोछवे ॥ वा० ॥ वळी विवाहने ठाम ॥ दे० ॥ १४ ॥ तेम उजाणी चालवुं ॥ वा० ॥ वळी क्षण परपद होय ॥ दे० ॥ शोजे नहीं ए सर्वथा ॥ वा० ॥ नारी विना सहु कोय ॥ दे० ॥ १५ ॥ गोरी कहे गोरी तमी ॥ वा० ॥ सुणो देवरजी वात ॥ दे० ॥ अज्ञानी घणुं पंखीया ॥ वा० ॥ पृथिवी जमवा जात ॥ दे० ॥ १६ ॥ निज नीडे आवी वसे ॥ वा०

॥ कांताकंठ विलग्ग ॥ दे० ॥ सोवे सांजे सुख थकी ॥ वा० ॥ तेह जा सहु जग्ग ॥ दे० ॥ १७ ॥ लक्ष्मणा लटकाली कहे ॥ वा० ॥ स्नानादि संजाल ॥ दे० ॥ विश्रंजपात्र ते नारी छे ॥ वा० ॥ ते विणु कोण ततका ॥ दे० ॥ १८ ॥ सुसीमा साहसुं बोलती ॥ वा० ॥ नारी विना कह नेम ॥ दे० ॥ घर परहूणो आवीयो ॥ वा० ॥ तस जालवीये केम दे० ॥ १ए ॥ मुनिवर घर पाउ धारीया ॥ वा० ॥ कुण पमिलाने तास ॥ दे० दामोदर आवी कहे ॥ वा० ॥ बहु युक्ते सुविलास ॥ दे० ॥ २० ॥ ते जादव प्रणमी कहे ॥ वा० ॥ प्रेम रसालां वयण ॥ दे० ॥ परणी प्रेयस स्वामिजी ॥ वा० ॥ ठारो अमारां नयण ॥ दे० ॥ २१ ॥ चोथे खं चोंपशुं ॥ वा० ॥ ढाल प्रथम अधिकार ॥ दे० ॥ चोथी एह सोहामणी वा० ॥ पद्म कहे मनोहार ॥ दे० ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ १३३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नेमि जिनेसर चिंतवे, जुर्ज ए मोहविलास ॥ जिहां केवल दुःख उपजे, तिहां आमह करे खास ॥ १ ॥ बुधवर्जित गृहवास ए, मानुं केवल पाश ॥ आमह जुर्ज करे केटलो, युक्ते थापे तास ॥ २ ॥ जो नवि मानुं वचन ए, सहु कहे घेलो एह ॥ लोकनीति जाणे नहीं, ते कारण करुं केह ॥ ३ ॥ जवदव मांहि खेपवे, मात पितादि कुटुंब ॥ पण जवपा तो उतरुं, जो कर खेउं तुंब ॥ ४ ॥ मात पिताए प्रेरीयां, नवि बूझे कहुं तोय ॥ पण संजम परणा विना, लेवुं निश्चय होय ॥ ५ ॥ इत्यना दिक दृष्टांत जे, ते रोगीने होय ॥ जास नीरोगी देहमी, उषध न करे कोय ॥ ६ ॥ माने जिन विवाहने, एम कहे नेमिचरित्र ॥ नव जावनमां पण अठे, कल्पवृत्ति इण रीत ॥ ७ ॥ मौन करे जव नेमजी, तव सहु गोपीवृंद ॥ मान्युं मान्युं सहु कहे, हरख्यां सहु गोविंद ॥ ८ ॥ ग्रीषम गमावी तिहां कण, पहोता द्वारिक मांहि ॥ रात गमावी चतुरनुज, प्रातसमे उबांहि ॥ ए ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ सोनागी गुरुजी महोल यो ॥ ए देशी ॥ सहु रे गोपांगनाने कहे ए, गोविंद हर्षे न माय ॥ गोपांगना सांजलो ए ॥ ए टेक ॥ कोइ कन्या जग एहवी ए, जिनवर योग्य जे थाय ॥ गो० ॥ १ ॥ सत्यनामा ते सांजु कहे ए, गर्जनती मुज बहेन ॥ गो० ॥ तेह पुत्री उग्रसेननी ए, रूपथी जीतो ठे मयण

॥गो०॥ २॥ तेहने योग्य छे नेमजी ए, नहीं कोइ जगतमां अन्य ॥गो०॥ तास तोले तो अमरी नहीं ए, तो किहां मनुजनी कन्य ॥ गो० ॥ ३ ॥ कान कहे अमे जायशुं ए, राजीमती मागवा काज ॥ गो० ॥ में पण रूप सुणीयुं हतुं ए, वली कह्युं इणी परे आज ॥ गो० ॥ ४ ॥ चतुरबुद्धि ते अमात्यने ए, मोकले निरखवा रूप ॥ गो० ॥ तेह पण आवीने एम कहे ए, वचन चतुराइ अनूप ॥ गो० ॥ ५ ॥ रूप ए दोयनुं चिंतवी ए, प्रथम घडे नेम जिणंद ॥ गो० ॥ राजीमती पछी तव पछे ए, एह प्रजापति विंद ॥ गो० ॥ ६ ॥ पुजल शेष तिणे लह्या ए, शक्ति तणो रे अजाव ॥ गो० ॥ तिणे करी न्यून कांय निपनुं ए, एम मन मानुं हुं जाव ॥ गो० ॥ ७ ॥ रूप अतिशय वचचातुरी ए, सुणी कहे रामजी जाय ॥ गो० ॥ तुफ परे कुण एम कही शके ए, याचना करो तुमे जाय ॥ गो० ॥ ८ ॥ ते पण जइ तिहां जाचतो ए, राजीमती नेमने काज ॥ गो० ॥ ते कहे अमे तो इछुं घणुं ए, जाग्य महोटुं अम आज ॥ गो० ॥ ९ ॥ किहां थकी दुर्गतिने घरे ए, होय ऐरावत बद्ध ॥ गो० ॥ सुरतरु सग मरुभूमिका ए, पामीरी शक्र संबंध ॥ गो० ॥ १० ॥ किहां थकी नेमने मुफ धुआ ए, एह बहु हर्षनो ठाय ॥ गो० ॥ ते सुणी थानके आवीया ए, वात कही कृष्ण राय ॥ गो० ॥ ११ ॥ ए जव जावनामां कह्युं ए, नेमचरित्रमां एम ॥ गो० ॥ कृष्णजी उग्रसेन घर गया ए, राजीमती मागे प्रेम ॥ गो० ॥ १२ ॥ समुद्रविजय जणी जाखीयुं ए, ते पण हर्षित थाय ॥ गो० ॥ कोष्टुक निमित्तिउं पूछीयो ए, लगन समुद्रविजय राय ॥ गो० ॥ १३ ॥ कहे रे निमित्तिउं तिणे समे ए, एह विवाहनां काम ॥ गो० ॥ तेह वर्षासमे नवि होये ए, शास्त्र बोले घणे गाम ॥ गो० ॥ १४ ॥ अन्य पण काज नवि कीजीये ए, तो किशी परणवा वात ॥ गो० ॥ समुद्र जाखे तव तेहने ए, काल बहु एम वही जात ॥ गो० ॥ १५ ॥ नेम मनावीयो महा वले ए, एह विवाहनुं काज ॥ गो० ॥ धीरति जो कदी कीजीये ए, नीकली जाय जिनराज ॥ गो० ॥ १६ ॥ तेह सुणी कहे रे नेमित्तिउं ए, श्रावण सुदि दिन छठ ॥ गो० ॥ देइ सत्कार विसर्जीयो ए, निमित्तिउं करी हठ ॥ गो० ॥ १७ ॥ उग्रसेनने तिहां कहावीयुं ए, लग्न दिन जेह आयात ॥ गो० ॥ बिहुं रे गामे ते विवाहना ए, महोछव नित नित थात ॥ गो० ॥ १८ ॥ दशह दशार्द्द जेला मिले ए, कृष्ण

ने तिम बलदेव ॥ गो० ॥ शेष पण जादव आवीया ए, सहु करे नेमनी सेव ॥ गो० ॥ १९ ॥ कनक ने रत्नना ढग करे ए, पंथ जिहां त्रण अथ चार ॥ गो० ॥ दान देवाय ते थानके ए, शोधता कार आगार ॥ गो० ॥ २० ॥ तोरण घर घर बांधीयां ए, धवल मंगल बहु थाय ॥ गो० ॥ जादव सहु तिहां नाचता ए, शिवादेवी हर्ष न माय ॥ गो० ॥ २१ ॥ खंम चोथे कही पांचमी ए, ढाल प्रथम अधिकार ॥ गो० ॥ नेमि जिनरासमां रुयमी ए, पद्म कहे सुणतां जयकार ॥ गो० ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ १६४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वेसारी पूरव दिशे, जिनवर नेमकुमार ॥ रत्नजमित वर आसने, सहु जादव परिवार ॥ १ ॥ रत्न कनक रूपा तणा, मणिमय ने मृद्रूप ॥ करी कलशा बहु आदरे, पद्म' पिधान अनूप ॥ २ ॥ तीर्थोदकथी पूरीया, सुर नर जादव वग्ग ॥ वाजंते वर डुंडुहि, नवरावे ते समग्ग ॥ ३ ॥ अंग लुहे जिनवर तणुं, करे विलेपन सार ॥ कस्तूरी कृष्णागरु, मांहि कपूर उदार ॥ ४ ॥ मालती मोघर प्रमुखनी, कुसुममाल पहेराय ॥ कनक रतन मुक्ताफले, जमित मुकुट शिर ठाय ॥ ५ ॥ मुक्ताफल रचना करी, अष्टादश सर हार ॥ बाजुबंध ने बहेरखा, कंठ बाहु निज ठार ॥ ६ ॥ सुर उपनित जली मुद्रिका, करती फाकफमाल ॥ क्षौमयुगल पहेरावता, खल अने सुकुमाल ॥ ७ ॥ मोतीमाला मोटिकी, कमी बांधी मनोहार ॥ चरण पत्त सोहे घणुं, मुख तंबोल श्रीकार ॥ ८ ॥ कल्पवृक्ष परे सोहता, नेमि जिनेसर राय ॥ वरघोडे सहु संचरे, मनमां हर्ष न माय ॥ ९ ॥

॥ ढाल बही ॥

॥ आज रहो रंग महोलमां ॥ केसरीया नेम ॥ ए देशी ॥ नेमजी वरघोडे चढ्या ॥ सामलीया लाल ॥ मातने हरख कल्लोल रे ॥ सा० ॥ मुखमां ते पाननुं बीमलुं ॥ सा० ॥ करता अति रंगरोल रे ॥ ॥ सा० ॥ ने० ॥ ॥ १ ॥ दशह दशार्हशुं परवस्या ॥ स० ॥ कृष्णजी ने बलदेव रे ॥ सा० ॥ जादवकुमर सहसागमे ॥ सा० ॥ सांबेलां होय हेव रे ॥ सा० ॥ ने० ॥ २ ॥ मयगल चाले मलपता ॥ सा० ॥ मलयाचल परे तेह रे ॥ सा० ॥ हयवर हेषारव करे ॥ सा० ॥ पाखर्या खग परे जेह रे ॥ सा० ॥ ने० ॥ ३ ॥ मंगल शब्द घणा करे ॥ सा० ॥ सुरवरनो नहीं पार रे ॥ सा० ॥ कौतुक जोवा

आवीया ॥ सा० ॥ परणे नेमकुमार रे ॥ सा० ॥ ने० ॥ ४ ॥ मात शिवा-
देवी लीये ॥ सा० ॥ लामणवीवो हाथ रे ॥ सा० ॥ दशे दशार्हनी राणीउं
॥ सा० ॥ जानमीउं बहु साथ रे ॥ सा० ॥ ने० ॥ ५ ॥ श्रीवसुदेवनी
राणीउं ॥ सा० ॥ देवकी रोहिणी आदि रे ॥ सा० ॥ बहोंतेर सहस रथमां
रही ॥ सा० ॥ गावे मंगल महोटा नाद रे ॥ सा० ॥ ने० ॥ ६ ॥ अग्र-
महिषी कृष्णनी ॥ सा० ॥ आव ते मंगल सार रे ॥ सा० ॥ सत्यभामा
रुक्मिणी मुदा ॥ सा० ॥ तेम बत्रीश हजार रे ॥ सा० ॥ ने० ॥ ७ ॥ मंगल
गाये मोजमां ॥ सा० ॥ तेम बहु जादव नार रे ॥ सा० ॥ जय जय जय
जय तिहां करे ॥ सा० ॥ सहुने मोद अपार रे ॥ सा० ॥ ने० ॥ ८ ॥ बिहुं
पासे मयगल घटा ॥ सा० ॥ आरूढ महोटा राय रे ॥ सा० ॥ दश दशार्ह
चाले आगले ॥ सा० ॥ केइक रहवर ठाय रे ॥ सा० ॥ ने० ॥ ९ ॥ लाखो-
गमे तिहां पालखी ॥ सा० ॥ लाखोगमे असवार रे ॥ सा० ॥ सुजट
कोनिगमे आगले ॥ सा० ॥ पाठल चाले नार रे ॥ सा० ॥ ने० ॥ १० ॥
लहेके ध्वज तिहां चिहुं दिशे ॥ सा० ॥ नेजा फुरे निशाण रे ॥ सा० ॥
वाजे देवनी दुंदुहि ॥ सा० ॥ इम महोटे मंमाण रे ॥ सा० ॥ ने० ॥ ११ ॥
वंदिजन बिरुदावली ॥ सा० ॥ किन्नरी गावे गीत रे ॥ सा० ॥ आवे चोक
बाजारमां ॥ सा० ॥ त्रण जगतना मित्त रे ॥ सा० ॥ ने० ॥ १२ ॥ चोक
चोक बहुटे मिल्यां ॥ सा० ॥ नर नारीनां वृंद रे ॥ सा० ॥ महोल गोंख
मेमी चढी ॥ सा० ॥ जोवे हर्षे अमंद रे ॥ सा० ॥ ने० ॥ १३ ॥ एक तणे
एक नारीने ॥ सा० ॥ राजीमती वर एह रे ॥ सा० ॥ ते कहे राजुल धन्य
ठे ॥ सा० ॥ एहशुं मांमशे गेह रे ॥ सा० ॥ ने० ॥ १४ ॥ एक कहे वली
एकने ॥ सा० ॥ उंसर इहांथी दूर रे ॥ सा० ॥ ते कहे जाउं दूरे तुमे
॥ सा० ॥ अमने हर्षे ठे पूर रे ॥ सा० ॥ ने० ॥ १५ ॥ तव एक बोले एणी
परे ॥ सा० ॥ देव अटारो जोय रे ॥ सा० ॥ एहवी वस्तु न लभी शके
॥ सा० ॥ नवि जाणुं किणी परे होय रे ॥ सा० ॥ ने० ॥ १६ ॥ तव एक
बोले हर्षशुं ॥ सा० ॥ धिग् धिग् हो तुझ नार रे ॥ सा० ॥ अपमंगल किम
उच्चरे ॥ सा० ॥ थाउं मंगल इण वार रे ॥ सा० ॥ ने० ॥ १७ ॥ एक कहे एम
नारीने ॥ सा० ॥ एहवो लहुं भरतार रे ॥ सा० ॥ तो मुझ मनवंछित
फले ॥ सा० ॥ सफल थाये संसार रे ॥ सा० ॥ ने० ॥ १८ ॥ एम कांइ

प्रनु स्तवना करे ॥ सा० ॥ कांइक वांछे काम रे ॥ सा० ॥ कांइक हर्षे नाचती ॥ सा० ॥ नेत्रकमल पुजा गाम रे ॥ सा० ॥ ने० ॥ १ए ॥ एम महोटे आडंबरे ॥ सा० ॥ उग्रसेन घर पास रे ॥ सा० ॥ नेम जिनेसर आवीया ॥ सा० ॥ करुणानिधि आवास रे ॥ सा० ॥ ने० ॥ २० ॥ खंम चोथे ए ही कही ॥ सा० ॥ ढाल प्रथम अधिकार रे ॥ सा० ॥ हवे आगल श्रोता सुणो ॥ सा० ॥ पद्म कहे विस्तार रे ॥ सा० ॥ ने० ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ १७४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ बहु कोलाहल सांनली, उज्ज्वल एक चोसाल ॥ देखी पुछे सारथि, जिनवर नाग्य विशाल ॥ १ ॥ कहो ए मंदिर केहनुं, दीसे अति उत्तंग ॥ धवल मंगल थाये घणां, सहु जन नव नव रंग ॥ २ ॥ तव ते बोले सारथि, उग्रसेननुं धाम ॥ धवल मंगल तुम सासरे, तुम विवाहने काम ॥ ३ ॥ गोखे तुम नारी तणी, बेठी दीसे दोय ॥ चंडानना मृगलोचना, वात करंती जोय ॥ ४ ॥ ते वातो किण विध करे, तेह कहुं परपंच ॥ नेम जिणंदने देखीने, कहे मूकी खलखंच ॥ ५ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ वीर माता प्रीतिकारणी ॥ ए देशी ॥ नेम देखीने चंडानना, कहे इणी परे वाणी ॥ सुण सखी स्त्री तणा वर्गमां, ए राजुल वखाणी ॥ १ ॥ वात सखीउ इणी परे करे, जेहने ए वर थाशे ॥ जोगक्रीडा रे करतां थकां, नहि काल जणाशे ॥ वा० ॥ २ ॥ तव मृगलोचना इम कहे, सखी सांनलो एह ॥ धन्य राजीमती जगतमां, एहशुं मांमशे नेह ॥ वा० ॥ ३ ॥ रूप राजीमती बेहेननुं, निपजाववनो धाता ॥ एहवो योग नवि मेलवे, तो किमह विख्याता ॥ वा० ॥ ४ ॥ तूरना शब्द सुणती थकी, तिहां राजुल आवे ॥ दोय सखीउ विचे पेसीने, इण परे मन लावे ॥ वा० ॥ ५ ॥ एकली केम जुओ हे सखी, वडो वर ए आवंतो ॥ बहुल आडंबरे परवर्यो, दीसे ए लटकंतो ॥ वा० ॥ ६ ॥ अमे पण जोशुं ए वर प्रते, कही वचमांहि पेसे ॥ नेम देखी इम चिंतवे, मन मोद विशेषे ॥ वा० ॥ ७ ॥ इंद्र के मकरध्वज चंडमा, इसे एह मुणंदो ॥ अहव मुज पुण्य प्राग्नारनो, वळ्यो मूर्त ए कंदो ॥ वा० ॥ ८ ॥ एह सौनाग्यनुं गुणनिधि, इम मनमां हरखे ॥ काम धनंजे धवनां थका, नानुं अमृत वरसे ॥ वा० ॥ ए ॥ जाणी मृगलोचना हृदयनी, नली एहनी

वात ॥ हास्यथी कहे रे चंद्रानना, सुण वात विख्यात ॥ वा० ॥ १० ॥ एह वर गुणनिधि अति नलो, पण एक ने दोष ॥ ते हमणां रे केहतां थका, चडे राजुल रोष ॥ वा० ॥ ११ ॥ तव कहे तास चंद्रानना, एह में पण जाण्युं ॥ सांप्रत काले कहेवुं नहीं, नलुं मोन वखाण्युं ॥ वा० ॥ १२ ॥ लाजती कहे रे राजीमती, जेहनो ए वर थाशे ॥ तेहनां नाग्य नलशे वली, त्रण लोक गवाशे ॥ वा० ॥ १३ ॥ पण सुणो गुणनिधि एहमां, काढे दूषण जेह ॥ दूधमांथी जोइ जोइने, पुरा काढवा तेह ॥ वा० ॥ १४ ॥ कृपणपणुं कल्पपादप तणुं, खीरसागरे खार ॥ चंदन मांहि दुर्गंधता, नानु मांहि अंधकार ॥ वा० ॥ १५ ॥ जेम सुराचल मांहे चलपणुं, वली कनकमां श्याम ॥ लछीने जेम दरिद्रता, शारदा शठ नाम ॥ वा० ॥ १६ ॥ तव हसी तेह सखीठ कहे, सुण राजुल वाण ॥ गोर वर जोइये प्रथमथी, ते तो काजल वान ॥ वा० ॥ १७ ॥ अपर गुण परिचये जाणीये, तव राजुल बोले ॥ चतुर तुमे विभ्रम मुक हतो, तुम वचनथी खोले ॥ वा० ॥ १८ ॥ जेह नूषण थले सर्वने, तेह दूषण दाखो ॥ पण सुणो वात त्रण माहरी, सुणी चित्तमां राखो ॥ वा० ॥ १९ ॥ केवल श्याममां गुण सुणो, नरा गोरमां दोष ॥ गोरमां श्याम थावे थके, होवे गुण तणो पोष ॥ वा० ॥ २० ॥ तथाहि ॥ केवलश्यामत्वे गुणाः ॥ श्याम अपला प्रशंसीये, वली चित्रावेलि ॥ अगरु कस्तूरिका तिम मेघ गुणगेलि ॥ वा० ॥ २१ ॥ कीकी ते सामली सोहीये, केश कसवटी तेम ॥ रात्री पण सामली सोहीये, होवे काजल एम ॥ वा० ॥ २२ ॥ जेम जेम एह दोष सानलो, तेम मूल्य बहु पामे ॥ हवे सुणो केवल गोरमां, कहुं दोष ठान ठामे ॥ वा० ॥ २३ ॥ यतः ॥ नू चित्तवल्लि अगरु, कछूरी पण कपीणिगा केसा ॥ कसवटी ममी रयणी, कसिणा एए अपग्घफला ॥ इति कृष्णत्वे गुणाः ॥ अथ केवल गोरत्वे दोषाः ॥ लूण जो गोर तो खार ठे, हिम श्वेत तो बाले ॥ गोर अति कोढीयो बालीये, चूनो परवश बाले ॥ यतः ॥ खारं लवणं दहणं, हिमं च अइगोरविग्गहो रोगी ॥ परवश गुडीय चुलो, केवल गोरत्तणे दोसा ॥ १ ॥ इति गोरत्वे दोषाः ॥ अथ गोरस्य कृष्णवस्तुसंभवणे गुणाः ॥ श्वेत हीर पण तो रहे, नहि होय अंगारो ॥ आंख काजले करी सोहीये, वली खीर सारो ॥ वा० ॥ २४ ॥ नोजन स्वाद निरपे करी, चित्रानो गेहा

प्रजु स्तवना करे ॥ सा० ॥ कांइक वांठे काम रे ॥ सा० ॥ कांइक हुं नाचती ॥ सा० ॥ नेत्रकमल पूजा ठाम रे ॥ सा० ॥ ने० ॥ १ए ॥ एम महोटे आडंबरे ॥ सा० ॥ उग्रसेन घर पास रे ॥ सा० ॥ नेम जिनेसर आवीय ॥ सा० ॥ करुणानिधि आवास रे ॥ सा० ॥ ने० ॥ २० ॥ खंम चोथे ठर्ह कही ॥ सा० ॥ ढाल प्रथम अधिकार रे ॥ सा० ॥ हवे आगल श्रोता सुणे ॥ सा० ॥ पद्म कहे विस्तार रे ॥ सा० ॥ ने० ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ १ए४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ बहु कोलाहल सांजली, उज्ज्वल एक चोसाल ॥ देखी पूठे सारथि जिनवर नाग्य विशाल ॥ १ ॥ कहो ए मंदिर केहनुं, दीसे अति उत्तंग। धवल मंगल थाये घणां, सहु जन नव नव रंग ॥ २ ॥ तव ते बोले सारथि उग्रसेननुं धाम ॥ धवल मंगल तुम सासरे, तुम विवाहने काम ॥ ३ ॥ सखीर्ड तुम नार्या तणी, बेठी दीसे दोय ॥ चंद्रानना मृगलोचना, वात करंती जोय ॥ ४ ॥ ते वातो किणविध करे, तेह कहुं परपंच ॥ नेम जिणंदने देखीने, कहे मूकी खलखंच ॥ ५ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ वीर माता प्रीतिकारणी ॥ ए देशी ॥ नेम देखीने चंद्रानना, कहे इणी परे वाणी ॥ सुण सखी स्त्री तणा वर्गमां, ए राजुल वखाणी ॥ १ ॥ वात सखीर्ड इणी परे करे, जेहने ए वर थाशे ॥ नोगक्रीमा रे करतां थका, नवि काल जणाशे ॥ वा० ॥ २ ॥ तव मृगलोचना इम कहे, सखी साचलुं एह ॥ धन्य राजीमती जगतमां, एहशुं मांमशे नेह ॥ वा० ॥ ३ ॥ रूप राजीमती वहेननुं, निपजावतो धाता ॥ एहवो योग नवि मेलवे, तो किमह विख्याता ॥ वा० ॥ ४ ॥ तूरना शब्द सुणती थकी, तिहां राजुल आवे ॥ दोय सखीर्ड विचे पेसीने, इण परे संजलावे ॥ वा० ॥ ५ ॥ एकली केम जुर्ड हे सखी, नलो वर ए आवंतो ॥ बहुल आडंबरे परवर्यो, दीसे ए लटकंतो ॥ वा० ॥ ६ ॥ अमे पण जोशुं ए वर प्रते, कही वचमांहि पेसे ॥ नेम देखी इम चिंतवे, मन मोद विशेषे ॥ वा० ॥ ७ ॥ इंद्र के मकरध्वज चंद्रमा, दरो एह सुरंदो ॥ अहव मुज पुण्य प्राग्नारनो, वन्यो मूर्त्त ए कंदो ॥ वा० ॥ ७ ॥ एह सौनाग्यनुत्र गुणनिधि, इम मनमां हरखे ॥ काम अनले बलतां थका, मानुं अमृत वरखे ॥ वा० ॥ ए ॥ जाणी मृगलोचना हृदयनी, नली एहवी

वात ॥ हास्यथी कहे रे चंद्रानना, सुण वात विख्यात ॥ वा० ॥ १० ॥ एह वर गुणनिधि अति जलो, पण एक ठे दोप ॥ ते हमणां रे केहतां थका, चढे राजुल रोप ॥ वा० ॥ ११ ॥ तव कहे तास चंद्रानना, एह में पण जाण्युं ॥ सांप्रत काले कहेवुं नहीं, जलुं मौन वखाण्युं ॥ वा० ॥ १२ ॥ लाजती कहे रे राजीमती, जेहनो ए वर थाशे ॥ तेहनां जाग्य जलशे वली, त्रण लोक गवाशे ॥ वा० ॥ १३ ॥ पण सुणो गुणनिधि एहमां, काढे दूषण जेह ॥ दूधमांथी जोइ जोइने, पूरा काढवा तेह ॥ वा० ॥ १४ ॥ कृपणपणुं कल्पपादप तणुं, खीरसागरे क्षार ॥ चंदन मांहि डुर्गंधता, जानु मांहि अंधकार ॥ वा० ॥ १५ ॥ जेम सुराचल मांहे चलपणुं, वली कनकमां श्याम ॥ लक्षीने जेम दरिद्रता, शारदा शव नाम ॥ वा० ॥ १६ ॥ तव हसी तेह सखीर्ड कहे, सुण राजुल वाण ॥ गोर वर जोइये प्रथमथी, ते तो काजल वान ॥ वा० ॥ १७ ॥ अपर गुण परिचये जाणीये, तव राजुल बोले ॥ चतुर तुमे विभ्रम मुफ हतो, तुम वचनथी खोले ॥ वा० ॥ १८ ॥ जेह जूषण अठे सर्वने, तेह दूषण दाखो ॥ पण सुणो वात त्रण माहरी, सुणी चित्तमां राखो ॥ वा० ॥ १९ ॥ केवल श्याममां गुण सुणो, नरा गोरमां दोप ॥ गोरमां श्याम आवे थके, होवे गुण तणो पोप ॥ वा० ॥ २० ॥ तथाहि ॥ केवलश्यामत्वे गुणाः ॥ श्याम अचला प्रशंसीये, वली चित्रावेलि ॥ अगरु कस्तूरिका तिम मेघ गुणगेलि ॥ वा० ॥ २१ ॥ कीकी ते सामली सोहीये, केश कसवटी तेम ॥ रात्री पण सामली सोहीये, होये काजल एम ॥ वा० ॥ २२ ॥ जेम जेम एह होय सामलां, तेम मूल्य बहु पामे ॥ हवे सुणो केवल गोरमां, कहुं दोप ठाम ठामे ॥ वा० ॥ २३ ॥ यतः ॥ जू चित्तवल्लि अगरु, कच्छूरी घण कणीणिगा केसा ॥ कसवटी मसी रयणी, कसिणा एए अणग्घफला ॥ इति कृष्णत्वे गुणाः ॥ अथ केवल गोरत्वे दोपाः ॥ लूण जो गोर तो क्षार ठे, हिम श्वेत तो बाले ॥ गोर अति कोढीयो चालीये, चूनो परवश चाले ॥ यतः ॥ खारं लवणं दहणं, हिमं च अइगोरविग्गहो रोगी ॥ परवश गुणीअ चुन्नो, केवल गोरत्तणे दोसा ॥ १ ॥ इति गोरत्वे दोपाः ॥ अथ गोरस्य कृष्णवस्त्वाश्रयणे गुणाः ॥ श्वेत कर्पूर पण तो रहे, मांहे होय अंगारो ॥ आंख काजले करी सोहीये, वली कीकीए सारो ॥ वा० ॥ २४ ॥ जोजन स्वाद मिरचें करी, चित्रामणे रेहा

॥ कृष्ण गुणहेतु इम जाणीये, वली गुण कहुं केहा ॥ वा० ॥ २५ ॥ इम सखी वात करतां थका, कही सातमी ढाल ॥ पद्म कहे सांजलो जविजना, प्रजुचरित्र रसाल ॥ वा० ॥ २६ ॥ सर्व गाथा ॥ २२५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राजीमती इण अवसरे, मूके दीर्घ निसास ॥ तव सहीयर पूछे इस्युं, करती कोडि विखास ॥ १ ॥ आग्रह करी जब पूठीयुं, सा कहे तव सविषाद ॥ दाहिण फुरके लोयणं, अपमंगल अविवाद ॥ २ ॥ हृदय मांहि छेदाय जिम, छुरीए छेदे तेम ॥ जगअद्भुत जगवालहो, देखतां प्रजु नेम ॥ ३ ॥ इम सुणीने सहीयरो कहे, मत कहे एहवुं वयण ॥ अपमंगल दूरे गयां, सांजल रे अम वयण ॥ ४ ॥ निरुपम जोग तुमे जोगवो, निरुपम नेमनी संग ॥ विलंब नहीं एहमां हवे, करजो नव नव रंग ॥ ५ ॥ मनवल्लज तुज वालहो, ए आव्यो निर्धार ॥ मत कायर था एहमां, एम जंपे सहु नार ॥ ६ ॥ इण अवसर जगतातजी, आगल चाले जाम ॥ परमेश्वर जिनजी सुणे, करुण दीन स्वर ताम ॥ ७ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ नंद सलूणा नंदना रे लो ॥ ए देशी ॥ नेमजी कहे सुण सारथि रे लो, कुण रुवे छे दुःखजारथी रे लो ॥ केवल करुणाहेतु छे रे लो, तव सारथि इम कहेत छे रे लो ॥ १ ॥ केम पूछो प्रजु जाणता रे लो, तुम विवाहे पशु आणता रे लो ॥ जादव जोजन कारणे रे लो, एह पशु संहारणे रे लो ॥ २ ॥ गाम नगरवासी तणा रे लो, गुफा पर्वत निकुंज घणा रे लो ॥ जलचर थलचर नजचरा रे लो, जीव घणा नेला कस्या रे लो ॥ ३ ॥ आणी वांध्या एहमां रे लो, नहीं श्वासोश्वास जेहमां रे लो ॥ निज निज जाषाए रडे रे लो, मरणना जयथी तडफडे रे लो ॥ ४ ॥ नेम कहे वैरागीया रे लो, रथ फेरो सोजागीया रे लो ॥ जोउं नजरे माहरी रे लो, एहनां नहीं कोइ वाहरी रे लो ॥ ५ ॥ मृग सूअर घणां रोझनां रे लो, गाडर ससलां लुंसडा रे लो ॥ राशियद्ध केइ पांजरे रे लो, वेनीवद्ध विनति करे रे लो ॥ ६ ॥ मोर तित्तर लावां घणां रे लो, पंखी लगो नवि जाये गण्यां रे लो ॥ गोह नकुल बहु रुंधीयां रे लो, निर्दय पुरुषे वेधीयां रे लो ॥ ७ ॥ शून्य ने संभ्रांत लोयणां रे लो, जीवितनी वांछा तणा रे लो ॥ प्रजु-

जी निरखे जेटले रे लो, एक हरिण हवे तेटले रे लो ॥ ८ ॥ निज नारी कोट उपरे रे लो, आप तणी ग्रीवा धरे रे लो ॥ मानुं प्रजुने विनतिं जणे रे लो, करुणानिधि आगल तणे रे लो ॥ ९ ॥ हरणी कहे हरणा प्रते रे लो, विनवो प्रजुजी सांप्रते रे लो ॥ त्रिजुवनबंधु एह छे रे लो, षट्काय पालक जेह छे रे लो ॥ १० ॥ सहु जीवनी रक्षा तणी रे लो, विनति कीजे जिन जणी रे लो ॥ मृगलो नारी कह्या थकी रे लो, बोले एम मनमां चकी रे लो ॥ ११ ॥ निऊरणां जल पीवीये रे लो, अटवी तरणे जीवीये रे लो ॥ नित्य वनमां वसीये अमे रे लो, निरपराधी राखो तुमे रे लो ॥ १२ ॥ स्वामी पण एहवुं सुणी रे लो, जग आशा चिंतामणि रे लो ॥ गुरु करुणा संवेगीयो रे लो, जवडुःख-थी उदवेगीयो रे लो ॥ १३ ॥ ब्रह्मचारी शिर सेहरो रे लो, स्वामी शिवपुर गेहरो रे लो ॥ मूकावे सवि प्राणीया रे लो, दयावंत एम जाणीया रे लो ॥ १४ ॥ सारथिने कहे वालीये रे लो, रथ पाछो फिरी चालीये रे लो ॥ नहीं परणुं जीववध करी रे लो, एम कही चाल्या प्रजु फिरी रे लो ॥ १५ ॥ समुद्रविजय सुणी एहवी रे लो, वात ते जोवा जेहवी रे लो ॥ नारायण बलदेवजी रे लो, संब्रात थया ततखेव जी रे लो ॥ १६ ॥ शिवादेवी मुख बहु मल्यां रे लो, यादववर्ग तिहां सलसल्या रे लो ॥ मूकी निज निज वाहणां रे लो, आवे सहु पाय चारणां रे लो ॥ १७ ॥ कहे प्रजुने केम कीजीये रे लो, नरजव लाहो लीजीये रे लो ॥ टलवले स्वामीजी सहु रे लो, घरमां रहो परणो वहु रे लो ॥ १८ ॥ दानादिक घरमां करो रे लो, अनुक्रमे शिवपद विचरो रे लो ॥ घरमां केम नवि धर्म छे रे लो, जाणपणाना जुर्छ मर्म छे रे लो ॥ १९ ॥ चोथा खंनमां जाणीये रे लो, पहेले अधिकारे वखाणीये रे लो ॥ आठमी ढाल पद्मे कही रे लो, प्रजु समजावे हवे सही रे लो ॥ २० ॥ सर्व गाथा ॥ २५२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नेम कहे सुण कृष्णजी, तुमे निपुण महाजाग ॥ मध्य दशा करीने जुर्छ, मनमां धरी वैराग ॥ १ ॥ जलचर थलचर नजचरा, हणवा धुरथी एह ॥ नवि अपराध तुमचो कह्यो, किहां धर्म छे गेह ॥ २ ॥ राग दोष अत्रा-णथी, रसरुद्धी जे लोक ॥ अशरण हणे अनाथने, किहां धर्म छे ठंक ॥ ३ ॥ एक पंचेंद्रियने हणे, तो सातमीए जाय ॥ एटला जीवनो वध करे, तिहां

किम धर्म कहाय ॥ ४ ॥ जिहां परजीव विवाह छे, निज पण तिहां विवाह ॥ इहां परभव बाधा तणो, हेतु भाव विवाह ॥ ५ ॥ यतः ॥ तानूण विवाहोच्चिय, परस्स तइ अप्पणोवि वीवाहो ॥ इह परभव वाहाणं, वीवाहण हेउ भावेणं ॥ १ ॥ दानादिक गृहपति तणा, यद्यपि धर्म अनेक ॥ पण संयम तोले नहीं, भावशुद्धि अतिरेक ॥ ६ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ तुंगीया गिरि शिखर सोहे ॥ ए देशी ॥ सुण नरेसर धर्मनी तुं, वात महोटी होय रे॥ धर्म धर्म कहे सहु पण, मर्म न लहे कोय रे॥ १ ॥ उपदिशे एम नेम जिनजी ॥ए आंकणी॥ सांजलो जविलोक रे॥ धर्म ते चारित्र जाणो,एह धन निज रोक रे ॥ उप० ॥ २ ॥ भावघरमां यद्यपि आवे, तोहि जाणो प्राहि रे ॥ अनंत गुण आरंज तेहथी, भाव अशुभ घर मांहि रे॥ उप० ॥ ३ ॥ यतः ॥ जोच्चिय कहमवि दाणो,गिहिण कईयावि होइ सुहभावो ॥ आरंजेणंतगुणो, पायो तत्तो असुहभावो ॥ १ ॥ अशुभ भाव ते होय नित्ये, शुभ तो क्षण क्षण नाश रे ॥ वली प्रभुजी एम भणे, जाणजो घर पाश रे ॥ उप० ॥ ४ ॥ रत्नमयी कोइ करे जिनघर, पृथिवी मंडित तेण रे ॥ तेहथी चारित्र मोहोटुं, होय होशे केण रे॥ उप० ॥ ५ ॥ रंक पण जे चरण पामी, पूजित इंड नरिंद रे ॥ शम दम सुख सुख आगले सहु, दुःख केरां वृंद रे ॥ उप० ॥ ६ ॥ आदरवुं भावे करी शुद्ध, चरण सुण नरनाह रे ॥ गृहवासे आरंज करवो, नरकहेतु विवाह रे ॥ उप० ॥ ७ ॥ सांजल नरवर एक उपनय, घेली टोली मांहि रे ॥ *माह्यो निज परशंस करतो, हांसी पामे प्राहि रे ॥ उप० ॥ ८ ॥* घेला जाणे एह घेलो, मोहे मुंजित मूढ रे ॥ तेम सवे तुमे करो आमह, न लहो केम ए गूढ रे ॥ उप० ॥ ९ ॥ परिग्रह मैथुन विषयवृद्धि, साधारण मातंग रे॥ नीच जन आचीर्ण एहमां, किस्यो करीये रंग रे ॥ उप० ॥ १० ॥ अनुस्रोते जन वहु चाले, न करे कोइ तस शंस रे ॥ प्रतिस्रोते तरे तेहनी करे, ताऊ पण परशंस रे ॥ उप० ॥ ११ ॥ अज्ञानी पण नवि जाय, देखीने उन्मग्ग रे ॥ जाणतो केम विषय सेवुं, विषय दुर्गति मग्ग रे॥ उप० ॥ १२ ॥ नारायण सुण तेह कारण, गेहिनी गिहवास रे ॥ पाम्यो पूर्वे वार अनंती, नवि राचुं एह पाश रे ॥ उप० ॥ १३ ॥ नाइ भगिनी मित्र

रुक्मिणी, मात ने वली तात रे॥ सज्जन शत्रु एकने सहु, वार अनंत विख्यात रे॥ उप०॥ १४॥ यदुक्तं जगवत्यंगे॥ अयणं जंते जीवे सव्व जीवाणं, माइत्ताए, जाइत्ताए, जगिणीत्ताए, जज्जात्ताए, पुत्तत्ताए, धुयत्ताए, सुएहत्ताए, उववन्नपुव्वे हंता गोयमा असइं अदुवा अणंतखुत्तो सव्वजीवाविणं इमस्स जीवस्स माइत्ताए जाव उववन्नपुव्वाहंता गोयमा जाव अणंतखुत्तो इत्यादि आलापका ज्ञेयाः॥ कुहावास गिहवास सेवी, नरकादिक वह्यां दुःख रे॥ तिण कारण उद्वेग पाम्यो, वांछुं हुं शिवसुख रे॥ उप०॥ १५॥ ते अपूरव तेह सहुने चतुर्भुज सुण वाण रे॥ चोथे खंडे सज्जन सहुने, समजावे जिन जाण रे॥ उप०॥ १६॥ पहेले अधिकारे मनोहर, ढाल नवमी एह रे॥ पद्म कहे हरि पमुह कहे पण, जिनपति आगे केह रे॥ उप०॥१७॥ सर्व गाथा॥२७५॥

॥ दोहा॥

॥ एह संसार पखेवणुं, सुखनो नहीं लवलेश॥ शाश्वत सुख तिणे इछीये, सांजल कृष्ण नरेश॥ १॥ जे सुखनो अंतज नहीं, जरा जनम पण नांहि॥ परमाणंद स्वरूपमय, नहीं एहवुं सुख क्यांहि॥ २॥ ते कारण सुण नरवरु, नहीं मांडुं गृहवास॥ जावुं पूर्वे जाये अपर, ते केम वहे निज वास॥ ३॥

॥ ढाल दशमी॥

॥ शेठ सेनापति वार्द्धिको, पुरोहित ने परधान वे॥ केरु न मूके रे कामिनी, सहस बत्रीश राजान वे॥ प्राणजीवन घर आवनां, आवनां वे दिल ल्यावनां वे॥ प्रा०॥ ए देशी॥ समुद्रविजय बलदेवजी, दशे दशार्ह राजान वे॥ कंसारि पमुहा वली, सेनापति परधान वे॥ प्राणजीवन दिल ल्यावनां, ल्यावनां वे सुख पावनां वे॥ प्रा०॥ १॥ ए आंकणी॥ शिवादेवी मुख जामिनी, जादव अनेक कुमार वे॥ जामा मुख हरि जामिनी, विलपे बत्रीश हजार वे॥ प्रा०॥ २॥ रमणी श्रीवसुदेवनी, आवी बहोंतेर हजार वे॥ विनति करे पाये पडे, रुवे सयल परिवार वे॥ प्रा०॥ ३॥ केशव पाय पमी कहे, सुण बंधव जगनाथ वे॥ वात मानो प्रजु अम तणी, करीये अमने सनाथ वे॥ प्रा०॥ ४॥ जे संसार असारता, देखानी जगतात वे॥ हुं पण जाणुं ते सवे, पण विलवे मात तात वे॥ प्रा०॥ ५॥ शास्त्र मांहे परसिद्ध छे, लोकनीति पण एह वे॥ माय तायने

पालीये, केम रहेशे प्रजु तेह वे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ यतः ॥ मातृजक्तिं सुधी कुर्या,–दपि संसारपारगः ॥ वर्धमानश्च तद्भक्त्या, यथाजिग्रहमग्रही ॥१॥ पुनः ॥ यदुक्तं ॥ श्चास्तन्यपानाज्जननी पशूना,–माहारखाजाच्च नराध मानाम् ॥ श्चागेहकृत्याच्च विमध्यमाना,–माजीवितात्तीर्थमिवोत्तमानाम् ॥ २ ॥ ते पण जाणो छो तुमे, माता पिता पूजनीक वे ॥ ते रूतां मूके तुमे, जेम मूके प्रत्यनीक वे ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ जगवत्सल जिनराजी कहे सुणो तुमे सुजाण वे ॥ मुऊ दीक्षा लेतां थका, कांइ न होवे हाण वे ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ राज्य लखमी घर आंगणे, तुमे वली आणाकार वे । वचन न लोपो तातनुं, तुमो विनीत शिरदार वे ॥ प्रा० ॥ ९ ॥ रहनेमि सत्यनेमि वली, दृढनेमि त्रण ज्रात वे ॥ सहोदर माहरा तेह छे, विनयवंत विख्यात वे ॥ प्रा० ॥ १० ॥ वृद्धजाव ए पालशे, नहीं गुण अतिशय हीन वे ॥ वली एक सुण तुं नरपति, आयु न सांधे को क्षीण वे । प्रा० ॥ ११ ॥ ते पण कोय खबर नहीं, कोण पठे ने पुर्वे वे ॥ पालशे के नहीं पालशे, कर्म परिणाम अपुर्वे वे ॥ प्रा० ॥ १२ ॥ फलहलते दावानले, पमतां वारे लोय वे ॥ तो मुऊ नीकलतां प्रते, केम नाखो सहु कोय वे ॥ प्रा० ॥ १३ ॥ जो हुं तुमने वाहलो, मूको आमह एह वे ॥ जेम जव जलनिधि हुं तरुं, डुत्तर सुर नर जेह वे ॥ प्रा० ॥ १४ ॥ दीक्षा लेइ सुणो नरपति, करशुं तुम उपगार वे ॥ शिवसुख कारण धर्मना, थाशुं अमे दातार वे ॥ प्रा० ॥ १५ ॥ सात व्यसन पूरां जिके, पुत्र थये शुं होय वे । केवल क्लेश कारण होये, मूढ अज्ञानी लोय वे ॥ प्रा० ॥ १६ ॥ कोण कोनां माप ताय छे, वस्तु मते नहीं कोय वे ॥ एक आव्यो एकलो जशे, सांजलजो सहु कोय वे ॥ प्रा० ॥ १७ ॥ कृष्ण विचारे चित्तमां, महावैरागी नेम वे ॥ सुर पण नवि वाली शके, वाली शकुं अमे केम वे ॥ प्रा० ॥ १८ ॥ सांजलीये एम शास्त्रमां, धीर पुरुष महाजाग वे ॥ तेहने डुकर को नहीं, कायरनो नहीं लाग वे ॥ प्रा० ॥ १९ ॥ इण परे केशव चिंतवी, मोहे मूर्छित मन्न वे ॥ समुद्रविजय मुख सहु मली, करे आक्रंद रुदन्न वे ॥ प्रा० ॥ २० ॥ शिवादेवी मुख्य सहु रडे, डुःख लागुं असराल वे ॥ जेम वनराजी सहु रने, तेम विलपे तिण ताल वे ॥ प्रा० ॥ २१ ॥ नेहनिगम एम जंजतो, गंजतो मोहनृपाल वे ॥ रथ वाली वल्या नेमजी, सहु जीवोना रख-

लाल वे ॥ प्रा० ॥ २२ ॥ चोथे खंडे ए कही, दशमी ढाल रसाल वे ॥ पद्म कहे जिनजी नमो, जिणे टाल्यो मोहजंजाल वे ॥ प्रा० ॥ २३ ॥ सर्व गाथा ॥३०१॥

॥ दोहा ॥

॥ जिनवर आव्या निज घरे, सहु समकावी साथ ॥ लोकांतिक आवी कहे, तीर्थ वर्तावो नाथ ॥ १ ॥ सारस्वत आदे देव, तेहनी छे नव जात ॥ स्वयंबुद्ध जिन तोहि पण, तस आचार आयात ॥ २ ॥ यतः ॥ सारस्सय माइचा, वह्नि वरुणा य गद्दतोया य ॥ तुसिया अव्वाबाहा, अग्गिचा चेव रिठाय ॥ १ ॥ ए ए देवनिकाया, नयवं बोहिंति जिणवराणं तु ॥ सव्वजगजीवहियं, नयवं तित्थं पवत्तेहि ॥ २ ॥ सम्यग्दृष्टि देवता, पंचम कल्पे वास ॥ कृष्णा राजीने अंतरे, रह्या ते सुख आवास ॥ ३ ॥ एक नव्य ते जीवमा, सुखबोधिकानी साख ॥ प्रवचनसारउद्धारमां, सात आठ पण नाख ॥ ४ ॥ इत्यादिक शास्त्रांतरे, छे महोटा अधिकार ॥ तेह ग्रंथथी जाणजो, इहां थाये विस्तार ॥ ५ ॥ हवे जिनवर नेमीश्वरु, देवे दान उदार ॥ तेह दान प्रभु तिम दीये, जेम पुष्कल जलधार ॥ ६ ॥

॥ ढाल अगीयारमी ॥

॥ नरत नृप नाववशुं ए ॥ ए देशी ॥ हवे सूरय उगे थके ए, दान दीये जिनराय ॥ अमर पूरे सवे ए, हय गय रथ समुदाय ॥ १ ॥ नविक दीये हरखशुं ए ॥ ए टेक ॥ शृंगाटक त्रिक चाचरे ए, राजमारगे करे जाण ॥ मागो मागो एम कहे ए, जिनवर दीये वरसी दान ॥ नवि० ॥ २ ॥ प्रात नोजन अवसर लगे ए, जे मागे ते तास ॥ आपे अदलकपणे ए, धण कण कनकनी राश ॥ नवि० ॥ ३ ॥ देव दानव जक्ख राखसा ए, नूत प्रेत सहु आय ॥ जिनेश्वर घर नरे ए, ऊरण पृथिवी थाय ॥ नवि० ॥ ४ ॥ देव दानव जादव सहु ए, द्वारिका नगरी मांहि ॥ करे पुंज द्रव्यना ए, गाम गाम एम प्राहि ॥ नवि० ॥ ५ ॥ एक कोनी आठ लाख नला ए, कनक दीये नितमेव ॥ वरस लगे सामटा ए, उद्घोषणा करे देव ॥ नवि० ॥ ॥ ६ ॥ एम करतां वरसे दीया ए, त्रणसें अठ्ठासी कोम ॥ संख्या एम जाणीये ए, लाख एंशी वली जोम ॥ नवि० ॥ ७ ॥ दान पसाय पामी हवे ए, याचक जाये निज गेह ॥ हय गय वर चढ्या ए, नारी न पेसण देह ॥ नवि० ॥ ८ ॥ वली कहे तुमे कोण छो ए, सम खाये तव तेह ॥ एहवुं

अचरिज थयुं ए, दान लीये जव्य जेह ॥ जवि० ॥ ए ॥ आवश्यक नि
जुक्तिए ए, जाख्यो बहु अधिकार ॥ तिहांथी सहु जाणजो ए, इहां था
विस्तार ॥ जवि० ॥ १० ॥ चोथे खंडे रुयमी ए, ढाल प्रथम अधिका
॥ अग्यारमी सांजली ए, पद्म कहे श्रीकार ॥ जवि० ॥ ११ ॥ सर्व गाथा ॥३१७

॥ दोहा ॥

॥ राजीमती इण अवसरे, वात सुणी निर्धार ॥ रथ फेरी पाठा वल्या
जिनवर नेमकुमार ॥ १ ॥ वज्राहत धरणी ढली, मूर्छा पामी तेह
धावमात सखीर्ज वली, धावे ऊलफल देह ॥ २ ॥ चंदन रस शीतल जले
सिंचे तास शरीर ॥ लेइ हाथमां वींजणा, देवे तास समीर ॥ ३ ॥ चे
वल्युं महाकष्टथी, तव मूके महा पोक ॥ करे विलाप रोवे घणुं, हृदं
करती शोक ॥ ४ ॥ तेम विलपे राजीमती, कविथी पण न कहाय
आजूषण सहु खसी गयां, चीवर पण शिथिलाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ सामलीया लाल, प्रीतमी कां न वंधाणी कारण कहोने ॥ ए देशी ॥
सामलीया लाल, तोरणथी रथ फेस्यो रे कारण कोने, गुणगिरुआ लाल मुज
ने मूकी चाल्या रे दरिसण द्योने ॥ ए टेक ॥ जो तुमे आवी पाछुं फिरवुं
तो शे कारण एवडुं करवुं, मुजने शोकसायर धरवुं ॥ सा० ॥ १ ॥ कोइ
अपराध कस्यो तुमचो, तो स्वामी खमीये अमचो, पण महोटा थइ केम
विरच्यो ॥ सा० ॥ २ ॥ हे हे देव कखुं कांइ, देइ निधानने हरी जाइ, मुज
हैयडुं फाटी जाइ ॥ सा० ॥ ३ ॥ अथवा पाप कस्यां महोटां, उदये
आव्यां ते खोटां, दुःखनी आइ ए पोटा ॥ सा० ॥ ४ ॥ किहांथी ए वर मुज
जागे, में न विचाखुं कांय आगे, मनडुं जइ एहशुं लागे ॥ सा० ॥ ५ ॥
ए जनमांतरनां पाप, मानी परणवुं प्रजु आप, पाठा गया देइ संताप ॥
सा० ॥ ६ ॥ महोटा पुरुष जो नवि पाले, निज बोल्युं नवि संजाले, विरह
करी मुजने वाले ॥ सा० ॥ ७ ॥ कर्म तणो नहीं ए दोष, जिनजीनो
पण नहीं रोष, गिरुआ वरते शुज पोष ॥ सा० ॥ ८ ॥ सुपनुं के इंदरजाल,
देवमाया ए असराल, सर्व गयुं केम विसराल ॥ सा० ॥ ए ॥ वातमी
पण न करी एहशुं, नवि जोयुं न हस्या जेहशुं, क्रीडा पण न करी नेहशुं
॥ सा० ॥ १० ॥ चिंतासायरमां पडी, नष्टचेतना थइ पडी, प्रजु विण

नवि जाये श्रऊ घमी ॥ सा० ॥ ११ ॥ एम करतां अतिशय रोती, अश्रु-धार बहु सिंचंती, वली हृदयने ताडंती ॥ सा० ॥ १२ ॥ मूर्छा पामे क्षण क्षणे, धरणी ढले निर्बलपणे, वस्त्र खसे पण नवि मुणे ॥ सा० ॥ १३ ॥ हार वली त्रोमी नाखे, रही न शके ते प्रभु पाखे, एहनुं छुःख कुण कही दाखे ॥ सा० ॥ १४ ॥ एम देखी सखीउ बोले, इणी परे शुं निज तनु रोले, बीजो वरजे इण तोले ॥ सा० ॥ १५ ॥ निःस्नेही निठुर जेह, हरिण परे बीहीतो गेह, तेहने वरीये कहो केह ॥ सा० ॥ १६ ॥ हरिवंशे कुंअर बहुला, कामदेव परे रूपाला, तेहने परणो तुमे बाला ॥ सा० ॥ १७ ॥ इम सुणी कोपे कलकली, रे जोली तुमे मति चली, मूरख मति तुम अट-कली ॥ सा० ॥ १८ ॥ जोजकुले हुं अवतरी, नेमि जिनेश्वरने वरी, केम एम कहो मुऊ जाउं परी ॥ सा० ॥ १९ ॥ कर्णकटुक ए वयणमां, नहीं तुमे महारां सयणमां, महारां हृदय रुवे रुवे नयणमां ॥ सा० ॥ २० ॥ सुदर्शन विण नवि विकसे, कमलिनी तेम मुऊ मन न वसे, नेम विना कहो केम घशे ॥ सा० ॥ २१ ॥ इणे पशु उपर किरपा आणी, इणे मारी वात न को जाणी, ए विण परणुं नहीं को प्राणी ॥ सा० ॥ २२ ॥ तिणे सांज-लजो सखीउ महारी, में ए प्रतिज्ञा निर्धारी, प्रभु करशे ते करुं इण वारी ॥ सा० ॥ २३ ॥ नवि कीधो हाथ उपर हाथे, पण कर मूकावुं हुं माथे, पण जाउं प्रभुजीनी साथे ॥ सा० ॥ २४ ॥ चोथे खंडे सार ए, ढाल प्रथम अधिकार ए, पद्मविजय कहे नार ए ॥ सा० ॥ २५ ॥ सर्व गाथा ॥ ३४० ॥

॥ दोहा ॥

॥ करी प्रतिज्ञा इणी परे, राजीमती वर नार ॥ जावधरम सन्मुख थया, जिनवर नेमिकुमार ॥ १ ॥ दान देइ संवछरी, पृथ्वी कीधी निहाल ॥ पुण्य प्रगट थयां लोकनां, दरिद्र गयां विसराल ॥ २ ॥ हवे दीक्षा अवसर थइ, आसन कंप्यां इंद्र ॥ जुवनपति वेमाणिया, वण सूरय ने चंद्र ॥ ३ ॥ देव दाणव जख रक्खसा, गंधर्व मुख केइ कोम ॥ आवे हरखे द्वारिका, करता होमाहोम ॥ ४ ॥ गंधोदक वरषा करे, पंचवरण कुसुमेण ॥ रयणवृष्टि सुरवर करे, नयरीमां हरषेण ॥ ५ ॥ नर नारी विस्मित थयां, देखी अचरिज तेह ॥ लोक मख्यां बहु जोयवा, सहु पहोतां निज गेह ॥ ६ ॥ चोसठ इंद्र प्रमुख सहु, वंदे जिनवर पाय ॥ कर जोमी स्तवना करे, हियडे हर्ष न माय ॥ ७ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ गमगम ज्यां ज्यां गगने गुण गावे ॥ ए देशी ॥ धन्य धन्य स्वामी तु वंश, शिवादेवी उरसर हंस रे ॥ गमगड ज्यां ज्यां जस नोबत वाजे, देवदुंदुभि अंतर गाजे रे ॥ ग० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ धन्य समुद्रविजय ए राय, शिवादेवी वंदन गाय रे ॥ग०॥ त्रण लोक दिवाकर सरिखो, प्रजुजीने जोइ जो हरखो रे ॥ ग० ॥ २ ॥ कुमारावस्थाए जिणे जीत्यो, काम सुजट ते जग विदित्तो रे ॥ ग० ॥ थाशे बावीशमो जिनराय, नमशे सुर नरपति पा रे ॥ ग० ॥ ३ ॥ आ जरतमां जूषण जाणो, पडिबोहे जादव सुराणो ॥ ग० ॥ महादीक्षा महोत्सव इंदा, सहुने तिहां हर्ष अमंदा रे ॥ ग० ॥ ४ कलशा मणि रयणे जमीया, मानुं स्वर्ग मांहे ते घडीया रे ॥ ग० ॥ ए जातिना एक सहस आठ, कह्यां आठ सहसनो पाठ रे ॥ ग० ॥ ५ ॥ सिंहासने प्रजु नवरावे, तिहां गंधोदक वरसावे रे ॥ ग० ॥ अंग लूही वि पण करता, महामूलां आजूषण धरता रे ॥ ग० ॥ ६ ॥ देवडूष्य प्रधान पहेरावे, सुरतरु कुसुमे सोहावे रे ॥ ग० ॥ महारयणमाला प्रजु पहेरे, यात्र चरणे ए रहेशे रे रे ॥ ग० ॥ ७ ॥ शिविका उत्तरकुरु नामे, रयणमय शुन परिणामे रे ॥ ग० ॥ रचे जादव शिविका एक, पेसे देवनी तेह विवेक रे ॥ ग० ॥ ८ ॥ तिहां रयणसिंहासणे वेसे, मुखकमल सदा ज विहसे रे ॥ ग० ॥ शक्र ईशान चामर वींजे, उत्र सनतकुमार धरीजे रे ग० ॥ ९ ॥ माहेंद्र खड्ग लेइ चाले, ब्रह्मेंद्र दर्पण वली जाले रे ॥ ग० लांतक कलशो लीये हाथे, महाशुक्र स्वस्तिक लीये साथे रे ॥ ग० ॥ १० सहस्रार सरासण सार, प्राणत सुर श्रीवत्सधार रे ॥ ग० ॥ नंदाव अच्युत इंद्र, लीये पामे परमानंद रे ॥ ग० ॥ ११ ॥ नाटक करे अमर अमरी, प्रजु गुण गावे सहु समरी रे ॥ ग० ॥ शिविका वहे होंमाहोंम, सु नर चाले सहु जोम रे ॥ ग० ॥ १२ ॥ करे कौतुक सुरवर केइ, केइ ना करे थेइ थेइ रे ॥ ग० ॥ कृष्ण समुद्रविजय सहु सोहे, मयगल महा आरोहे रे ॥ ग० ॥ १३ ॥ रथ तुरग चढ्या केइ चाले, जादव कोमा महाले रे ॥ ग० ॥ शिविकाने चारे पासे, रहे देवविमान आकाशे रे ॥ ग० ॥ १४ ॥ जगमग प्रगटी रही ज्योत, जाणे सूरय उद्योत रे ॥ ग० गंधोदक वाटे वरसे, वली कुसुमवृष्टि चित्त हरसे रे ॥ ग० ॥ १५ ॥ के

सुर विरुदावली बोले, जिनजीने नहीं कोइ तोले रे ॥ ग० ॥ द्वारिका मध्य मध्य थइ जावे, सहसावन मांहि आवे रे ॥ ग० ॥ १६ ॥ ठठ जक करे शुज लेश्या, वली अध्यवसाय विशेषा रे ॥ ग० ॥ प्रजु उतरे शिबिकामांथी, जाणे केशरी एह गुफाथी रे ॥ ग० ॥ १७ ॥ आजरण तथा अलंकार, उतारे हर्ष अपार रे ॥ ग० ॥ नारायण लीये सवि पोते, परमोद जरे सहु जोते रे ॥ ग० ॥ १८ ॥ पंच मुष्टि करे प्रजु लोच, जोवे बहु जन संकोच रे ॥ ग० ॥ क्षीरसायरे केश ते लेइ, बहु मान थकी परठवेइ रे ॥ ग० ॥ १९ ॥ हवे शक्र कोलाहल वारे, करे व्रत उच्चार तिवारे रे ॥ ग० ॥ दीक्षा लीये त्रणसें वरषे, देवदूष्य शक्र दीये हरषे रे ॥ ग० ॥ २० ॥ त्रण ज्ञान सहित गिहवासे, पण माने बंधाणो तुं पाशे रे ॥ ग० ॥ श्रावण सुदि ठठने दिवसे, चित्रा नक्षत्र मन उल्लसे रे ॥ ग० ॥ २१ ॥ साथे राजकुमार हजार, करे सिद्ध जणी नमस्कार रे ॥ ग० ॥ सवि पाप अकरवा योग्य, हवे थयो व्रतनो संयोग रे ॥ ग० ॥ २२ ॥ उपजे मणपज्जव नाण, अढीद्वीप संज्ञी मन जाण रे ॥ ग० ॥ एम जाणो सहु जिनवरने, होये चोथुं नाण व्रतधरने रे ॥ ग० ॥ २३ ॥ यतः ॥ तिहिं नाणेहिं समग्गा, तिठयरा जाव हुंति गिहवासे ॥ पमिवन्नंमि चरित्ते, चउ नाणी जाव ठउमठो ॥ १ ॥ नरके पण होये अनुआसुं, एम पंच कल्याणके जासुं रे ॥ ग० ॥ पूर्वाह्न समये व्रत लीधुं, इणी परे आतम हित कीधुं रे ॥ ग० ॥ २४ ॥ सुर जादव निज निज थाने, प्रजु विचरे काउस्सग्ग ध्याने रे ॥ ग० ॥ हवे प्रजुजी बीजे दिन, द्वारिकामां ब्राह्मण वरदिन्न रे ॥ ग० ॥ २५ ॥ पारणुं परमान्ने कीधुं, पंच दिव्य अतुल जस लीधुं रे ॥ ग० ॥ वसुधार प्रमुख कह्यां ग्रंथे, प्रजु विचरे ईर्यापंथे रे ॥ ग० ॥ २६ ॥ यतः ॥ अद्ध तेरस कोमी, वसुहारा निवमए सुवन्नस्स ॥ मुंचंति कुसुमवुठिं, गंधोदय रयणवुठिं च ॥ २ ॥ पहपंति उठुहीउं, देवा चेलंचलेहिं वीयंति ॥ अपवरय सद्दोदाणं, तुरोहिं पवरेहिं उग्घुठं ॥ ३ ॥ तपे घाति करमवन दहता, प्रजु आर्य अनार्ये विचरंता रे ॥ ग० ॥ चोथे खंडे एह जाखी, पहेले अधिकारे चित्त राखी रे ॥ ग० ॥ २७ ॥ कहे उत्तमविजयनो बाल, कवि पद्मविजय सुरसाल रे ॥ ग० ॥ अति रुयरे तेरमी ढाल, सुणतां होय मंगलमाल रे ॥ ग० ॥ २८ ॥ सर्व गाथा ॥ ३०३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ लघु भाइ जिन नेमनो, रहनेमि जस नाम ॥ राजीमती रागी करण जाये नित तस धाम ॥ १ ॥ फल वस्त्रादिक मोकले, पण ते जाणे एम। नेम स्नेहथी मोकले, देवर ए रहनेम ॥ २ ॥ शुद्ध हृदयथी ते लीये, पण जाणे रहनेम ॥ फल वस्त्रादिक तो लीये, जो मुज उपर प्रेम ॥ ३ ॥ हांसी करतां एकदा, कहे सुंदरी सुण वाण ॥ नारी रतन तुज परिहरी मुज भ्राता ते अजाण ॥ ४ ॥ पण तुज कांहि गयुं नथी, जोगव मुजशुं भोग ॥ फरी फरी यौवन दोहिलुं, दोहिलो ए संयोग ॥ ५ ॥ रहनेमि कामी तणो, राजीमती लही भाव ॥ धर्म कुशल धर्म वयणथी, पमिबोहे सद्भाव ॥ ६ ॥ पण नवि पमिबोही शकी, निज देवर जिनभ्रात ॥ हवे बीजे दिन शुं करे, ते सुणजो अवदात ॥ ७ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥

॥ दे यादरी मुज पांखमी जी ॥ ए देशी ॥ एक दिन राजीमती सती जी, पीवे पय असराल ॥ रहनेमि आव्यो तदा जी, सा भाखे तिण ताल के ॥ १ ॥ देवर डाह्या हो राज वारु, मारी वात सुणो सुखकारु ॥ ए आंकणी ॥ कनकथाल लावो तुमे जी, वमन करुं तेह मांहि ॥ ते लाव्यो उतावलो जी, धरतो हर्षे उमाहि के ॥ दे० ॥ २ ॥ तेहमां वमन करी कहे जी, पान करो तुमे एह ॥ ते कहे केम हुं कूतरो जी, पान करुं नहीं रेह के ॥ दे० ॥ ३ ॥ सा कहे जो जाणो तुमे जी, तो मन करो विचार ॥ वमन करी मुजने गया जी, जिनवर नेमकुमार के ॥ दे० ॥ ४ ॥ दुःखखाणी जाणी अंगना जी, त्याग करी गया तेह ॥ ते पीवा इछो तुमे जी, मांस रुधिर भरी देह के ॥ दे० ॥५॥ तेहथी तुम सुख केम थशे जी, छो प्रभुना लघु भ्रात ॥ एह विमासो केम नहीं जी, एहथी नहीं सुखशात के ॥ दे० ॥ ६ ॥ कनककुंभी अशुचिभरी जी, कनकपिधान ते जाण ॥ बाहिर सुंदर देखीये जी, माने सार अजाण के ॥ दे० ॥ ७ ॥ यतः ॥ सवैयो ॥ देह अचेतन, प्रेतदरी रज, रेत भरी, मल खेतकी क्यारी ॥ व्याधिकी पोट, अराधिकी उंट, उपाधिकी छोट, समाधिसों न्यारी ॥ रे जीउ देह, करे सुखहानि, इतो परि तो तोहिं, लागत प्यारी ॥ देह तो तोहि, तजेगी निदान पे, तुहि तजे न क्युं, देहकी यारी ॥ १ ॥ बीजचंचल जेम नेहलो जी, अथवा रंग

पतंग ॥ रूठी राखसी सारखी जी, जाण तुं नारीनो संग के ॥ दे० ॥ ८ ॥ सवैयो ॥ कामिनीकी वात माने, ताके मुहरे धूर ज्युं ॥ कपट निपट चोठे, हैयाकी न वात खोले, मनथे उगाय कर, कहे सब कूर ज्युं ॥ जैसोहि पतंगरंग, तेसोहि त्रियाको नेह, विद्युरत वार नांही, जेसो नदीपूर ज्युं ॥ कहे कवि मुनिचंद, सुणो हो सज्जन जन, कामिनीकी वात माने, ताके मुहरे धूर ज्युं ॥ २ ॥ जुवनजाव जायके तजी जी, केम वंठे तुं तेह ॥ तस मारग तुमे आदरो जी, एहज शिवसुख रेह के ॥ दे० ॥ ए ॥ नीच मारग दूरे तजो जी, नहीं आदरुं हुं तुज ॥ सती अवर इछे नहीं जी, जाण तुं ए मुज गुज के ॥ दे० ॥ १० ॥ जगतनाथ ज्ञानी प्रजु, गति मति महारी तेम ॥ कहेशे जे प्रजुजी खरुं जी, करशुं ते दृढप्रेम के ॥ दे० ॥ ११ ॥ जाणी दृढता तेहनी जी, जोग मांहि निरीह ॥ रहनेमि निज घर गयो जी, राजीमती सती सीह के ॥ दे० ॥ १२ ॥ मन चिंते जुर्ज अंतरो जी, दोय सहोदर जाय ॥ मोक्ष जणी एक उद्यमी जी, एक नरक जणी धाय के ॥ ॥ दे० ॥ १३ ॥ अथवा अंकुर बीजनो जी, जाये उंचो तेह ॥ तेहज बीजनुं मूल ते जी, जाये अधोमुख जेह के ॥ दे० ॥ १४ ॥ एम चिंतवती नेमना जी, गुण गाती नितमेव ॥ दिन निगमती वांठती जी, जिन उत्तम पद सेव के ॥ दे० ॥ १५ ॥ चोथे खंडे ए थइ जी, ढाल प्रथम अधिकार ॥ पद्मविजय कहे चौदमी जी, सुणतां जय जयकार के ॥ दे० ॥ १६ ॥ सर्व गाथा ॥ ४०६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ विचरंता नेमीसरु, निर्मम जेह निःसंग ॥ निराशंस अकिंचणो, अचखितव्रत दृढरंग ॥ १ ॥ अकषायी अविषायी जे, अविकारी गतमान ॥ अजयदान दाता असढ, निरुपम गुण जगवान् ॥ २ ॥ विचरंता महीमंमले, चोपन दिवस व्यतीत ॥ घनघाती गिरि चूरतो, तपपविदंडे नित ॥ ३ ॥ अनुक्रमे विचरंता प्रजु, आव्या गढ गिरनार ॥ सहसावन मांहे रह्या, अठम करी चोविहार ॥ ४ ॥ आशो वदि पहेले प्रहर, अमावास्याने दिन्न ॥ पंचावनमें दहाकले, केवलज्ञान उपन्न ॥ ५ ॥ लोकालोक प्रकाशकं, अप्रतिहत ने अनंत ॥ अप्रतिपाति एहवी, मूर्त्त अमूर्त्त जासंत ॥ ६ ॥

॥ ढाल पंदरमी ॥

॥ देशी विवाहलानी ॥ इम पंच विदेहे ॥ ए देशी ॥ प्रजु केवल पामे,

नारकी सुखीया थाय ॥ त्रिजुवन सवि सुखीयो, श्रारति दूर पलाय ॥ १ ॥ विकसे सवि पृथवी, श्रासन कंपे देव ॥ श्रावे सवि इंदा, कर जोमी करे सेव ॥ २ ॥ सहु हर्षे न माये, नावे कहेतां पार ॥ जोजन लगे धरती, शुद्ध करे तिण वार ॥ ३ ॥ गंधोदक वरसे, पंच वरणनां फूल ॥ तिहां वरसे देवा, सरस सुगंध श्रमूल ॥ ४ ॥ हवे वैमानिक सुर, श्रज्यंतर प्राकार ॥ रयणामयी केवल, दीसे घणुं मनोहार ॥ ५ ॥ पठे जोइस सुरवर, कनक प्राकार विशाल ॥ करे वीजो हरषे, होमाहोम तिण ताल ॥ ६ ॥ वप्र रूपा केरो, त्रीजो वाहिर होय ॥ करे जवनपति सुर, कोशीसां पण जोय ॥ ७ ॥ मणि रयण कनकनां, दीपे श्रनुक्रमे तेह ॥ मणि कनक रतनमय, तोरणां चिहुं दिशि रेह ॥ ८ ॥ रयणामय द्वारा, रयणपताका जाण ॥ धर्मध्वज पमुहा सवि, विरचे श्रति मंमाण ॥ ९ ॥ करी कनक रतनमय, माणिकमय सुरसाल ॥ ठत्र शालिजंजिका, मकर मुखादि विशाल ॥ १० ॥ रयणामय पीठह, उपर पीठिका सार ॥ ते मणिमय जाणो, रयणसिंहासन चार ॥ ११ ॥ कंकेली रुंखह, धूपघटी शुज गंध ॥ चेलडुम देवठंदो, पीठ श्रासन संबंध ॥ १२ ॥ ठत्र चामर पमुहा, जे वली श्रन्य सवि काज ॥ व्यंतर सवि विरचे, माने धन दिन श्राज ॥ १३ ॥ हवे नेमजी श्ररिहा, कनककमल ठवे पाय ॥ सुरविरचित नव शुज, देखी हरख न माय ॥ १४ ॥ पूरव दिशि द्वारे, पेसे जगत दयाल ॥ दीये त्रण प्रदक्षिणा, चैत्य वृक्षने जाल ॥ १५ ॥ नमो तिहस्स उचरी, पूरव सन्मुख वेसे ॥ प्रतिविंवा त्रण दिशि, रयणनां देव निवेशे ॥ १६ ॥ तीर्थंकर महिमा, श्राप सरिखा दीसे ॥ एम ठवणनिखेपो, पूजो विशवावीशे ॥ १७ ॥ हवे चोसठ इंडह, हरखे करता सेव ॥ गंधोदक वरसे, रयणवृष्टि ततखेव ॥ १८ ॥ सिंहनादने मूके, गलगल करे जेम नाग ॥ वाजे वर डुंडुहि, पूरे श्राकाश समग्ग ॥ १९ ॥ विरुदावली वोले, करता प्रज्ञु गुण ज्ञान ॥ उद्योत श्राकाशे, संकीरण श्रसमान ॥ २० ॥ जातां ने श्रावतां, कोलाहल वहु थाय ॥ श्रव्यक्त ध्वनि तव, हर्ष जरे वोलाय ॥ २१ ॥ एम चोथे खंडे, रंग श्रखंम गवाय ॥ पहेले श्रधिकारे, समोसरण विरचाय ॥ २२ ॥ पन्नरमी ढाले, उत्तमविजयनो वाल ॥ कहे पद्मविजय सुर, महिमा श्रतिहि रसाल ॥ २३ ॥ सर्व गाथा ॥ ४३५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वनपालक जइ कृष्णने, दीये वधामणी एम ॥ केवलज्ञान ते उपन्युं, सहसावनमां नेम ॥ १ ॥ चोत्रीश अतिशय राजता, वेर विरोध समंत ॥ देव कोमाकोमी मल्या, प्रभु गुण हर्ष धरंत ॥ २ ॥ ते चोत्रीश अतिशय हवे, विवरी कहेशुं सार ॥ चार जनमथी तेहमां, कर्म खप्याथी अग्यार ॥ ३ ॥ उंगणीश अतिशय देवना, कीधा अति मनोहार ॥ श्रोताजन सुणजो तुमे, चित्त राखी एक तार ॥ ४ ॥

॥ ढाल सोलमी ॥

॥ दर्शन तारा दरिशां मनमोहन मेरे ॥ ए देशी ॥ देव अनुत्तरथी कयुं ॥ मनमोहन मेरे ॥ रूप अनंत जगवंत ॥ म० ॥ रोग रहित सुगंधता ॥ म० ॥ खेद नहीं मलयंत ॥ म० ॥ १ ॥ पहेलो अतिशय एम कह्यो ॥ म० ॥ बीजो कमल सम सास ॥ म० ॥ रुधिर मांस गोक्षीर ज्युं ॥ म० ॥ त्रीजो ए डुर्गंध नाश ॥ म० ॥ २ ॥ नवि कोइ देखे प्रभु तणो ॥ म० ॥ आहार तथा नीहार ॥ म० ॥ चोथो अतिशय जाणीयो ॥ म० ॥ मूल ए अतिशय चार ॥ म० ॥ ३ ॥ एक जोजनमां नर तिरि ॥ म० ॥ देव तणी कोमाकोम ॥ म० ॥ मावे संकीरण नवि होवे ॥ म० ॥ कर्म खप्याथी जोम ॥ म० ॥ ४ ॥ निज निज जाषाए सहु ॥ म० ॥ समजे सरदृष्टांत ॥ म० ॥ ते पण जोजनगामिनी ॥ म० ॥ बीजो अतिशय तंत ॥ म० ॥ ५ ॥ जामंमल तेजे तपे ॥ म० ॥ दिनकर अधिक प्रताप ॥ म० ॥ जोयण सवासो अंतरे ॥ म० ॥ नवि होय रोग संताप ॥ म० ॥ ६ ॥ वेर ईति मरकी वली ॥ म० ॥ अतिवृष्टि अनावृष्टि ॥ म० ॥ डुर्भिक्ष स्वपर चक्रनो ॥ म० ॥ जय न अग्यारमे इह ॥ म० ॥ ७ ॥ कर्मक्षये अग्यार ए ॥ म० ॥ सवि पत्नर सुविलास ॥ म० ॥ हवे उंगणीश सुरना कह्या ॥ म० ॥ सुणीये धरी उल्लास ॥ म० ॥ ८ ॥ धर्मचक्र ने चामरा ॥ म० ॥ सिंहासन पायपीठ ॥ म० ॥ उज्ज्वल त्रण छत्रज जलां ॥ म० ॥ चालतां आकाशे दीठ ॥ म० ॥ ९ ॥ धर्मध्वज रयणामयी ॥ म० ॥ कनककमल पद न्यास ॥ म० ॥ गढ त्रिक विरचे सुरवरा ॥ म० ॥ चउमुख वेठा खास ॥ म० ॥ १० ॥ चैत्य वृक्ष ऊंधा कंटका ॥ म० ॥ वृक्ष नमे जिनराय ॥ म० ॥ वाजे देवनी डुंडुहि ॥ म० ॥ वाये अनुकूल वाय ॥ म० ॥ ११ ॥ पंखी दीये सुप्रदक्षिणा ॥ म०

॥ गंधोदकनी वुठ ॥ म० ॥ वरसे कुसुम पंच वर्णनां ॥ म० ॥ अतिशय एह उक्किठ ॥ म० ॥ १२ ॥ नख ने रोम वधे नहीं ॥ म० ॥ चार निकाय सुर कोम ॥ म० ॥ प्रभु पासुं मूके नहीं ॥ म० ॥ जघन्य थकी ए जोम ॥ म० ॥ १३ ॥ ऋतु इंद्रिय अनुकूलपणुं ॥ मा० ॥ ए उंगणीश संभाल ॥ म० ॥ सवि चोत्रीश ए अतिशया ॥ म० ॥ सहु जिनने सुविशाल ॥ म० ॥ १४ ॥ दोष अढार रहित जिना ॥ म० ॥ अंतराय पंच नाश ॥ म० ॥ हास्यादिक खट्ट जस नहीं ॥ म० ॥ काम मिथ्या नहीं जास ॥ म० ॥ १५ ॥ वली अज्ञान निद्रा नहीं ॥ म० ॥ अविरति नहींथ लगार ॥ म० ॥ राग द्वेष उठी गया ॥ म० ॥ अथवा बीजा अढार ॥ म० ॥ १६ ॥ अज्ञान नहीं क्रोध मद नहीं ॥ म० ॥ नहीं माया लोभ मान ॥ म० ॥ रति अरति निद्रा नहीं ॥ म० ॥ शोक नहीं मृषा थान ॥ म० ॥ १७ ॥ चोरी मछर भय नहीं ॥ म० ॥ जीवहिंसा नहीं प्रेम ॥ म० ॥ क्रीमा संग हांसी नहीं ॥ म० ॥ निरखो प्रभुजी नेम ॥ म० ॥ १८ ॥ विचरे संयम साधता ॥ म० ॥ चोथे खंडे रसाल ॥ म० ॥ पहेले अधिकारे सोलमी ॥ म० ॥ पद्मविजये कही ढाल ॥ म० ॥ १९ ॥ सर्व गाथा ॥ ४५८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वधामणी एम सांभली, नारायण हरखंत ॥ कोमी साढाबार तव, सोवन तस अरपंत ॥ १ ॥ हवे जिनवंदन कारणे, सामग्री करी राय ॥ मोद भरे जन नीकले, आगल ते कहेवाय ॥ २ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥ शारद बुधदायी ॥ ए देशी ॥ ढाल ॥ हवे कृष्ण नरेसर, वंदन केरे काज ॥ सामग्री महोटी, माने धन दिन आज ॥ बलभद्रनी साथे, तेम दशे दशार ॥ ऐरावत उपर, चढीया ताम मोरार ॥ १ ॥ त्रूटक ॥ पटहस्ती उपर नृप सोहे, समुद्रविजय राजान ॥ धवल छत्र शिर उपर राजे, चामर वली असमान ॥ तेम दुर्दांत कुमर सहु साथे, लीधा साठ हजार ॥ शूरवीर बलवंत चव्या तेम, एकवीश सहस कुमार ॥ २ ॥ ढाल ॥ सोल सहस नरेसर, हय गय रथ तेम लाख ॥ बहेंतालीश भट वली, कोडी अमतालीश दाख ॥ गोविंद परवरीयो, तेम शिवादेवी नार ॥ रोहिणी देवकी मुख, साथे बहोंतेर हजार ॥ ॥ ३ ॥ त्रू० ॥ तेम रुक्मिणी पमुहा अंतेउरी, जाणे

बत्रीश सहेस ॥ राजीमती पमुहा जादवीउं, कहेतां पार न लहेश ॥ ए बहु आडंबरथी आवे, समवसरण जिहां सोहे ॥ परमेश्वर देखीने अभिगम, पंच साचवे जोहे ॥ ४ ॥ ढाल ॥ धरमध्वज देखे, जोयण सवासो मान ॥ प्रभुथी बारस गुण, कंकेली तरु जाण ॥ इत्यादिक जिन रिद्धि, देखी आणंद पामे ॥ उतरे गजवरथी, मुकुट छत्र तुरी वामे ॥ ५ ॥ त्रू० ॥ तेम तंबोल पादुका मूके, एम सचित्तादिक त्याग ॥ जेम नारायण तेम नरवर सहु, करता निज निज लाग ॥ हार विराजित हृदये विष्णु, पीतांबर परिवारे ॥ एकमना जय जय सहु करता, समवसरण पेसारे ॥ ६ ॥ ॥ ढाल ॥ सुर असुर ने किन्नर, परवरीया जिन नेम ॥ करुणांते नयन युग, वरणव्यां पूरवे जेम ॥ दश धनु परमाणे, देखे कृष्ण नरेश ॥ प्रणमे परिवारे, अरिहा नेम जिनेश ॥ ७ ॥ त्रू० ॥ अरिहा नेम जिनेसर प्रणमे, त्रण परदक्षिणा करीने ॥ धन्य कृतारथ सफलो माने, दिवस ते हर्ष धरीने ॥ कोलाहल सहु वारी इंद्रा, यादव सहु सांभलता ॥ कर जोडी जिन आगल रहीने, हरखे प्रभु गुण स्तवता ॥ ८ ॥ ढाल ॥ धन्य धन्य शिवादेवी, माता तुमची स्वामी ॥ जिणे जग परमेसर, जनम्या गुणगणधामी ॥ धन्य समुद्रविजय नृप, जस कुल उग्यो भाण ॥ इत्यादिक स्तवना, करता अति कल्याण ॥ ए ॥ त्रू० ॥ एम स्तवना करी प्रणमी प्रभुने, वली सुरपति आणंदे ॥ समुद्रविजय शिवादेवीने कहे, धन्य तुम कुल जिनचंदे ॥ एम स्तवना सांभलीने यादव, यादवी हर्ष न माय ॥ ते पण प्रभुनी तेम स्तवना करे, कान पड्युं न सुणाय ॥ १० ॥ ढाल ॥ सुरवर पण कौतुक, नाटक गीत रसाल ॥ देखावे बहुविध, यादवने सुविशाल ॥ इंद्राणी ने नारी, हर्षे चरे गीत ज्ञान ॥ गाय नेमचरित्रह, पुलकित अति बहु मान ॥ ११ ॥ त्रू० ॥ एम बहु हर्षे चरे जिनवरने, चोक फेरे सहु वेसे ॥ सहु जाणे मुफ साहमा प्रभुजी, हवे ते देशना देशे ॥ हवे प्रभुजी पण देशना अवसर, जाणी दीये उपदेश ॥ पांत्रीश गुणयुत वाणी बोले, तेह कहुं लवलेश ॥ १२ ॥ ढाल ॥ संस्कृतवंत जाणी, अर्द्ध मागधी धार ॥ उदात्तपणे वली, निश्चित सत्रि उपचार ॥ मेघनी परे गंभीर, पनछंदा बहु होय ॥ नाद्यासपणुं घणुं, राग सकल वली जोय ॥ १३ ॥ त्रू० ॥ सात गुण ए शब्दज केरा, हवे अर्थना जाणो ॥ बोलामां पण अर्थ कहे बहु, गुण

आठमो वखाणो ॥ पूर्वापर अविरोधी बोले, न पडे को संदेह ॥ कंबी न शके कोइ ठल ताकी, श्रेष्ठ सिद्धांते जेह ॥ १४ ॥ ढाल ॥ सहुने मन गमती, पद सापेक्ष विचार ॥ प्रस्ताव उचित कहे, वस्तु स्वरूप अनुसार ॥ विस्तार सहित ते, आप शंसा नवि बोले ॥ सञ्जूमि अनुसार, स्निग्ध मधुर वच खोले ॥ १५ ॥ त्रू० ॥ एहवा गुणथी पामे श्लाघा, परना मर्म न जाखे ॥ तुछ नहीं धरमारथ संयुत, नरम रहित वली दाखे ॥ कारक प्रमुख विपरीत न बोले, चमतकार सहु पामे ॥ अद्भुत अविलंबीपणुं जेहमां, नविजनने हितकामे ॥ १६ ॥ ढाल ॥ विचित्र बहु जाति, वचन विशेषण युक्त ॥ साहस संयुत वली, अक्षरपद शुज उक्त ॥ संपूर्ण विवक्षित, अर्थ कहे नवि ठेद ॥ एम देशना देतां, पामे नहीं प्रनु खेद ॥ १७ ॥ ॥ त्रू० ॥ खेद न पामे इणी परे जिनजी, पांत्रीश गुणयुत वाणी ॥ सांनली उत्तम नविजन रीझे, चोथे खंमे वखाणी ॥ पहेले अधिकारे सत्तरमी, पूरी एह ए ढाल ॥ पद्मविजय कहे प्रनु गुण सुणतां, होवे मंगलमाल ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे प्रारंने देशना, सुणो नविप्राणी जीव ॥ एह अनादि संसारमां, जीव अनादि सदेव ॥ १ ॥ तेम सामान्ये जीवने, कर्म संयोग अनादि ॥ अनव्यने अंतज नहीं, विशेषे कर्म सादि ॥ २ ॥ मिथ्या अविरति योग तिम, वली कषाय प्रमाद ॥ हेतुकर्म प्रदेशा तणा, तिणे जाणो ए सादि ॥ ३ ॥ बाह्य तपादिक कारणे, थाये तेहनो अंत ॥ वरयो अनादि निगोदमां, पुजल परिवर्त्त अनंत ॥ ४ ॥ एक निगोदे जाणीये, जीव अनंतानंत ॥ तेह असंख्य निगोदथी, जाणो गोलक संत ॥ ५ ॥ श्वासोश्वास साथे लीये, साथे लेवे आहार ॥ साथे ते प्रणमावता, साथे मरण विचार ॥ ६ ॥ थीणद्धी निद्रा वशे, स्वपर न जाणे कोय ॥ फास शबद रूप गंध रस, मतिपूर्वक नवि होय ॥ ७ ॥ हाले चाले नवि कदा, दीन नाव न छहंत ॥ केवल मदिरा मत्त परे, चेतन अति मूर्छंत ॥ ८ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥

॥ सुविधि जिन वली वली विनति जी ॥ ए देशी ॥ नेम जिनवर दीये देशना जी, अमृत अधरिन वाणी ॥ कोडक पुष्कमंगलथी जी, कर्म दृढ़ही यह जाय ॥ नेम० ॥ १ ॥ अनुक्रमे नीकस्यो तेहथी जी, आवीयो

वादर मांहि ॥ सूरण गाजर प्रमुखमां जी, ठेद नेदादि लहे त्यांहि ॥ नेम० ॥ ॥ २ ॥ तिहां थकी पृथवी अप अनुक्रमे जी, अगनि ने वायु प्रत्येक ॥ वण मांहि काल वहु रह्यो जी, दुःख सह्यां तें अनेक ॥ नेम० ॥ ३ ॥ उत्सर्पिणी अवसर्पिणी जी, रह्यो असंख्य परिमाण ॥ वि ति चउरिंदिमां आवीयो जी, युक्त अयुक्त अजाण ॥ नेम० ॥ ४ ॥ काल संख्यात रह्यो तिहां जी, असन्नी पंचिंदियमां आय ॥ आठ नव तिहां वस्यो जीवनो जी, वली एकेंद्रि मुख थाय ॥ नेम० ॥ ५ ॥ तिहां थकी पूर्व पुण्ये लह्यो जी, संज्ञी पंचेंद्रि तिर्यंच ॥ तिहां पण व्यक्त वेदन वहु जी, जलचर प्रमुख विध पंच ॥ ॥ नेम० ॥ ६ ॥ तिहां वली पाप वहुलां करी जी, नरगमां जाय असराल ॥ वेदनापार नवि पामीये जी, समुद्र सरिसा जिहां काल ॥ नेम० ॥ ७ ॥ अंग वीजा मांहि वरणवी जी, वेदना सुणत दुःखदाय ॥ हसतां ते कर्म वांधे घणां जी, रोवतां नविय छूटाय ॥ नेम० ॥ ८ ॥ शीत उष्ण नूख तृषा घणी जी, खरज ने ताव अत्यंत ॥ दाघ ने वली परवशपणुं जी, शोक ने नय ते अनंत ॥ नेम० ॥ ९ ॥ परमाधामी तणी वेदना जी, मांहोमांहि रे मारंत ॥ तेहनी वेदना ते लहे जी, कहो कुण कही शके अंत ॥ नेम० ॥ १० ॥ एहवां दुःख सही वली वली जी, उपजे तिरिगति मांहि ॥ एम अनंत पुग्गलपरियट्टा जी, परियट्टो विगत उछांहि ॥ नेम० ॥ ११ ॥ दश दृष्टांते करी दोहिलो जी, पामीयो नर अवतार ॥ आर्य देश विणु ते निष्फल गयो जी, काल अनंत विचार ॥ नेम० ॥ १२ ॥ आर्य देशे कुले उपनो जी, एम कहीं अंग पंगु काण ॥ काल अनंत अंतरे गयो जी, न रह्युं उपना विना ठाण ॥ नेम० ॥ १३ ॥ सुख दुःख सहुए संसारमां जी, पामीयो वार अनंत ॥ धर्म जिनवर तणो नवि लह्यो जी, जेह करे नव तणो अंत ॥ नेम० ॥ १४ ॥ कर्म सातनी जिहां थिति करे जी, एक कोमाकोमि मांहि ॥ ते यथाप्रवृत्तिकरण थकी जी, वहु वेला आवतो प्राहि ॥ नेम० ॥ १५ ॥ अनव्यसिद्धिया एह थानके जी, आवे अनंतीय वार ॥ पण नवि नेदे राग द्वेषनी जी, गांठ ते अतिहि असार ॥ नेम० ॥ १६ ॥ कोइक नाग्यउदये करी जी, आसन्नसिद्धिया सत्व ॥ वली अपूर्वकरणे करी जी, गंठिगिरि नेदी लहे तत्व ॥ नेम० ॥ १७ ॥ वीर्य उल्लास वधते थके जी, अनिवृत्तिकरण परिणाम ॥ अंतरमुहूरत कालमां जी. समकित लहे गुण-

धाम ॥ नेम० ॥ १७ ॥ समकित मोक्षतरु बीज छे जी, धर्म आवासनुं द्वार ॥ सुभट संग्राममां जेम लहे जी, हर्षे आनंद अपार ॥ नेम० ॥ १९॥ करुण स्वरूप बहु ग्रंथमां जी, तेम समकित सुविचार ॥ इण परे धर्म दुर्लभ घणुं जी, जाणी हारे ते गमार ॥ नेम० ॥ २० ॥ मनुजभव जे लही हारशे जी, ते दुःख लेहशे अनंत ॥ धर्म आराधी जे साधशे जी, वाधशे गुणगण संत ॥ नेम० ॥ २१ ॥ खंम चोथे अधिकारमां जी, प्रथम अढारमी ढाल ॥ पद्म कहे धर्म भविका करो जी, धर्मथी मंगलमाल ॥ नेम० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुधा मुधा करे देशना, सांभले श्रोता लोक ॥ भूख तृषा सवि उपशमे, वैर विरोध ने शोक ॥ १ ॥ कंसारि कर जोमीने, कहे नेमने एम ॥ तुम उपर राजुल तणो, अधिको किम प्रभु प्रेम ॥ २ ॥ नेम कहे सुण नरपति, पूरव भव अवदात ॥ एम करी धनवती थकी, कही नव भवनी वात ॥ ३ ॥

॥ ढाल उंगणीशमी ॥

॥ साहेबजी ॥ श्रीविमलाचल भेटीये हो जी ॥ ए देशी ॥ साहेबजी ॥ वरदत्त नामे नरपति हो जी, सांभली श्रीजिन वाणी ॥ साहेबजी ॥ साहेबजी ॥ रोम रोम हरषित थयो जी, बोले जोडी पाणी ॥ सा० ॥ १ ॥ सा० ॥ अरज सुणोने जिनराजीया ॥ ए आंकणी ॥ सा० ॥ भवदुःखथी हुं उभग्यो हो जी, सांभली तुम उपदेश ॥ सा० ॥ सा० ॥ मुज आतम में उलख्यो हो जी, गुणवंत असंख्य प्रदेश ॥ सा० ॥ २ ॥ सा० ॥ भवदवमां बलतां थका हो जी, उद्धरवा मुज चित्त ॥ सा० ॥ सा० ॥ तुम संगे मुज रांकने हो जी, थाशे गुण सुविदित्त ॥ सा० ॥ ३ ॥ सा० ॥ देइ दीक्षा निस्तारीये हो जी, सांभली नेम जिणंद ॥ सा० ॥ सा० ॥ दीक्षा दीये वरदत्तने हो जी, साथे बे सहस नरिंद ॥ सा० ॥ ४ ॥ सा० ॥ धनदेव धनदत्त बांधवा जी, धनभवथी हुंता जेह ॥ सा० ॥ सा० ॥ विमलबोध वली मंत्रवी हो जी, अपराजित भवथी तेह ॥ सा० ॥ ५ ॥ सा० ॥ इण भवे ते त्रण राजवी हो जी, तिहां आव्या कोइ काज ॥ सा० ॥ सा० ॥ दीक्षा लीये निज सांभली हो जी, भव राजिमतीयाज ॥ सा० ॥ ६ ॥ ॥ सा० ॥ ते त्रण वली वरदत्त मुखा हो जी, अष्टादश गणधार ॥ सा० ॥ ॥ सा० ॥ समवायांगे भाखीया जी, चरित्र मांहे अग्यार ॥ सा० ॥ ७ ॥ सा० ॥

त्रिपदी लही जिनमुख थकी हो जी, उत्पाद व्यय ध्रुव नाम ॥ सा० ॥ सा० ॥ द्वादशांगी रचे गणधरा हो जी, बीज बुद्धि गुणधाम ॥ सा० ॥ ८ ॥ सा० ॥ बीजा पण जादव बहु हो जी, उमी निज निज गेह ॥ सा० ॥ सा० ॥ महाव्रत लीये मनमोदशुं हो जी, पामवा शिवसुख तेह ॥ सा० ॥ ९ ॥ सा० ॥ राजपुत्री नामे जक्षणी हो जी, लेवे संजमचार ॥ सा० ॥ सा० ॥ राजकन्या बहु परवरी हो जी, प्रथम प्रवर्त्तनी सार ॥ सा० ॥ १० ॥ सा० ॥ दशार्ह उग्रसेन कृष्ण हो जी, वली बलदेव राजान ॥ सा० ॥ सा० ॥ प्रद्युम्न कुमर प्रमुख घणा हो जी, श्रावक शुद्ध श्रद्धान ॥ सा० ॥ ११ ॥ सा० ॥ रोहिणी देवकी रुक्मिणी हो जी, बहु जादवीउं साथ ॥ सा० ॥ सा० ॥ श्राविकपणुं अंगीकरे हो जी, स्वयमेव नेमजी हाथ ॥ सा० ॥ १२ ॥ सा० ॥ केइक समकित आदरे हो जी, केइक भद्रक भाव ॥ सा० ॥ सा० ॥ संघ चतुर्विध थापना हो जी, एह अवस्थित भाव ॥ सा० ॥ १३ ॥ सा० ॥ प्रथम पोरिसि दीये देशना हो जी, नेमजी वचन रसाल ॥ सा० ॥ सा० ॥ वरदत्त बीजी पोरिसि हो जी, ए व्यवहार त्रिकाल ॥ सा० ॥ १४ ॥ सा० ॥ नमन स्तवन पूजन करी हो जी, सुरवर गया निज थान ॥ सा० ॥ सा० ॥ निज निज थानक सहु गया हो जी, कृष्ण प्रमुख राजान ॥ सा० ॥ १५ ॥ सा० ॥ त्रण मुख खट् कर जेहना हो जी, नाम गोमेध यक्षराय ॥ सा० ॥ सा० ॥ अंबिका शासनदेवता हो जी, पासे रहे ते सदाय ॥ सा० ॥ १६ ॥ सा० ॥ जिनवर जग उपगारीया हो जी, अन्य देश करे विहार ॥ सा० ॥ सा० ॥ अप्रतिबंधपणे करी हो जी, जिनवरजी जयकार ॥ सा० ॥ १७ ॥ सा० ॥ चोथे खंडे ए थइ हो जी, उगणीशमी रुमी ढाल ॥ सा० ॥ सा० ॥ ॥ ए अधिकार पूरो थयो हो जी, सुणतां मंगलमाल ॥ सा० ॥ १८ ॥ सा० ॥ सत्यविजय गुरु सुंदरु हो जी, कपूरविजय तस शिष्य ॥ सा० ॥ सा० ॥ अंतेवासी तेहना हो जी, क्षमाविजय सुजगीश ॥ सा० ॥ १९ ॥ सा० ॥ जिन विजयवर तेहना हो जी. उत्तमविजय तस शिष्य ॥ सा० ॥ सा० ॥ तास शिष्य भावे भणे हो जी, पद्म ते विशवावीश ॥ सा० ॥ २० ॥ सर्व गाथा ॥ ५३१ ॥ इति श्रीमदुत्तमोत्तमविजयपदपद्मभृंगतुल्यपद्मविजयविरचिते श्रीमन्नेमिजिनचरित्रे प्राकृतप्रबंधे अरिष्टनेमिकौमारक्रीडादीक्षाकेवलोत्पत्तिसंघस्थापनवर्णनो नाम चतुर्थखंडे प्रथमोऽधिकारः समाप्तः ॥ १ ॥

॥ अथ चतुर्थखंडस्य द्वितीयोऽधिकारः प्रारभ्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ जुगला धरम निवारणो, ऋषभदेव नमी पाय ॥ बीजा ए अधिकारमां, मुनिवर गुण कहेवाय ॥ १ ॥ इणी अवसर हवे पांमवा, नित डौपदी जे नार ॥ साथे केलि क्रीमा करे, माने सफल अवतार ॥ २ ॥ इण अवसर डौपदी घरे, नारद आव्या जाण ॥ मान न देवे डौपदी, रीष चढी तिण ठाण ॥ ३ ॥ उत्पत्तिया आकाशमां, धातकी जरते जाय ॥ नाम अमरकंका नयर, जिहां पद्मोत्तर राय ॥ ४ ॥ ते पण स्त्रीनो लोलुपी, नारदने कहे एम ॥ मुज अंतेउर सारिखुं, कहीं ठे के नहीं केम ॥ ५ ॥ ऋषि कहे कूप मंमूक परे, नवि जाणे कांय वात ॥ पांमव घर डौपदी जेसी, त्रिभुवनमां न विख्यात ॥ ६ ॥ राय मित्र सुर मोकली, तेमावी ते नार ॥ पद्मोत्तर कहे सुंदरी, बीहीक न धरे लगार ॥ ७ ॥ मुजशुं जोगव जोग तुं, डौपदी बोले ताम ॥ मासांते कहेशो तिको, करशुं तुमचुं काम ॥ ८ ॥ डौपदी पण ते महासती, करे तपस्या सार ॥ हवे परजाते पांमवा, नवि देखे निज नार ॥ ए ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ एकवीशानी देशी ॥ हवे डौपदी रे, खोल करणने नीसख्या ॥ देश नयरने रे, वनमां जोवा सहु मव्या ॥ नवि लाधी रे, शुद्धि कांइ डौपदी तणी ॥ पांमव माता रे, आवी कहे कृष्णजी जणी ॥ १ ॥ त्रू० ॥ कहे कृष्णने डौपदी कोइ, देव दानव हरी गयो ॥ कृष्ण सुणीने थया शोकातुर, कुण जाइ वयरी थयो ॥ नारद मुख वली शोध लाधी, पांमव लेइ साथ ए ॥ कृष्ण सायर तटी आराधी, मागध तीरथनाथ ए ॥ २ ॥ ढाल ॥ तव सुस्थित रे, कहे सुणो नारायण तुमो ॥ डौपदीने रे, लावी आपुं तुमने अमो ॥ पद्म राजा रे, नयर सहित नाखुं सायरे ॥ कहे कृष्णजी रे, एह न करवुं मायरे ॥ ३ ॥ त्रू० ॥ जावुं माहरे तिहां तेणे तुमे, मारग आपो तिहां जइ ॥ जीती तेहने आवुं वहेलो, डौपदी साथे लइ ॥ ठ रथ जावे मार्ग तेतो, आप्यो तव हरि जाय ए ॥ जीते समरे तेह नरपति, डौपदी शरणे आय ए ॥ ४ ॥ ढाल ॥ मोरारीए रे, मूक्यो तेहने जीवतो ॥ डौपदी लेइ रे, वलीयो शंख वजावतो ॥ मुनिसुव्रत रे, तिहां जिन कपिल नारायणो ॥ सुणीयो शंख रे, पूछे स्वामी

ए कुण तणो ॥ ५ ॥ त्रू० ॥ कहे प्रद्युजी तुम समोवन, जंबू नरत वासुदेव ए॥ इत्यादिक सहु सुणी उम्मह्यो, मिलवाने नरदेव ए ॥ कहे जिनजी चक्री अरिहा, विष्णु पण न मले कदा ॥ इम सुणुं पण हर्ष वाह्यो, आव्यो सागरतट तदा ॥ ६ ॥ ढाल ॥ शंख पूख्यो जी, कृष्णने कहे पाठा वलो ॥ शंख पूरी जी, कृष्ण कहे तुमे सांजलो ॥ दूर आव्या जी, एह वात तुमे मत कहो ॥ अठेरुं जी, शंख मल्या ते पण लहो ॥ ७॥ त्रू०॥ लहो अठेरुं हवे तट जइ, कृष्ण पांन्वने कहे ॥ तुमे गंगा पार पामो, जिहां तरंग महोटा वहे ॥ सुस्थित सुरने मली हुं पण, आवुं तुं वेगो वही ॥ गंगा पांन्व तरी विचारे, कृष्ण वल जोइचे सही॥ ८॥ ढाल ॥ जोजन बासठ रे, एह तरंग वहे घणा ॥ केम आवशे रे, नारायण नावा विना ॥ एम चिंतवी रे, नावा नवि मूकी तिणे ॥ कंसारिय रे, कार्य करी आव्या तिहां कणे ॥ ए॥ त्रू० ॥ तिहां कणे आवी गंगा तरवा, एक हाथमां रथ धरी ॥ गंगामां परवेशीये,एम विचार कस्यो हरि॥ कृष्ण थाको चिंतवे अहो,पांडुसुत बलीया घणा ॥ नावा विणु जुर्ज गंगा तरीया, करे कृष्ण विश्रामणा ॥ १० ॥ ढाल ॥ नदी तरीने रे, पांन्व पासे आवीया ॥ पांन्वे पण रे, व्यतिकर सर्वे सुणावीया ॥ सुणी कोप्यो रे, गोविंद गंगा कांठे ए ॥ रथ जांगे रे, लेइ लोहनी लाठे ए ॥ ११ ॥ त्रू० ॥ जांगी रथने कहे इणी परे, हजी बल जोवुं अठे ॥ अपरकंका जीत कीधी, तेहथी बल कुण पठे ॥ जार्ज दुष्टो माहरा मुलथी, एम कही द्वारिका गया॥ पांन्व पण निज नयर आव्या,मन सचिंता नावीया ॥ १२ ॥ ढाल ॥ कहे कुंतीने रे, कुंती पण वासुदेवने ॥ कहे सांजल रे, नरत अरध तुज सेवने ॥ माहरा सुत रे, कहे तुं किहां जइने रहे ॥ कहे नरपति रे, तुज सुत दक्षिण दिशि गहे ॥ १३ ॥ त्रु० ॥ तिहां जइने उदधि कांठे, नवुं नगर निवास ए ॥ पांडु मथुरा नाम थापी, रहो सुख आवास ए ॥ कुंती पण जइ पुत्रने कहे, पांन्वे तेम कीध ए ॥ बीजे अधिकारे ए पहेली, ढाल पद्म सुसिद्ध ए ॥ १४ ॥ ॥ सर्व गाथा ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिन विचरंता प्रजु, नेमिनाथ जगवान् ॥ आव्या बहु परिवारथी, चहिलपुर उद्यान ॥ १ ॥ सुलसा नाग पहेलां कह्या, तेहना जे नद्द पुत ॥ कन्या बत्रीस परणीया, प्रत्येके बहु वित्त ॥ २ ॥ अनुक्रमे प्रजु

देशना सुणी, चरमशरीरी तेह ॥ व्रत लेइ पूरव नण्या, द्वादशांग गुणगेह ॥ ३ ॥ ते प्रनु साथे विचरता, तप तपता मुनिराय ॥ विहार करंता नेमजी, अनुक्रमे द्वारिका जाय ॥ ४ ॥ समवसस्या सहसावने, हवे ते खट्ट रुषिराय ॥ ठठने पारणे पूठीने, दो दो गोचरी जाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ धन दिन वेला धन घमी तेह ॥ ए देशी ॥ बे बे रे मुनिवर गोचरी जाय, द्वारिकामां ईर्यासमिति ते शोधता जी॥ अनीकजश ने अनंतसेन दोय, देवकीने घर जाय इंडिय रोधता जी ॥ १ ॥ देखी रे कृष्ण सरिखा ते साध, मोदक सिंहकेसरीया रागथी जी ॥ पमिलान्ने देवकी ते रुषिराय, माने रे मुनिवर आव्या नागथी जी ॥ २ ॥ ते रुषि वहोरी जाये रे ताम, अजितसेन निहतारि आवीया जी ॥ ते पण तेमहीज वोहरी रे जाय, देवजश शत्रुसेन पाउ धारीया जी ॥ ३ ॥ देवकी रे संशय पामी ताम, पूठे रे कर जोमी रुषिराय जी रे ॥ सामी रे शुं तुम दिशि मोह थाय, अथवा रे मुज मति मोह ते थाय जी रे ॥ ४ ॥ अथवा रे द्वारिकामां अन्न पान, डुष्कर ठे केम मुजने ते कहो जी ॥ मुनि तव बोले नहीं कोइ वात, अमे रे सहोदर खट्ट सरिखा लहो जी ॥ ५ ॥ दीक्षा रे लीधी प्रनुजीनी पास, फीरता रे गोचरी आव्या तुम घरे जी ॥ चिंते सा तिल सम तिल पण नांहि, केम रे ए देखुं नारायण परे जी ॥ ६ ॥ पूर्वे रे अयमत्ते रुषिराय, नाख्या रे अम सुत मुजने जीवता जी ॥ जइने रे पूठे नेम जिणंद, नेमजी कहे सां नवीये तुज सुता जी ॥ ७ ॥ संशय नाख्यो सघलो रे तास, करती रे खेद देवकीने प्रनु कहे जी ॥ म करो रे खेद कस्यां कर्म जेह, पामे रे डुःख ते कर्म उदय लहे जी ॥ ८ ॥ पूर्वे नवे तुमे शोक्यनां रत्न, लीधां ने दीधुं एक तो रोवतां जी ॥ सांनली निंदे डुरित ते आप, पहोता रे घर हवे पुत्रने वांठतां जी ॥ ९ ॥ नारायण पूठे स्यो तुम शोक, सा कहे पुत्र न पाल्यो निज करे जी ॥ कहे रे कंसारि म करो खेद, पुत्र होशे तुम कहुं तेणी परे जी ॥ १० ॥ देव आराध्यो आव्यो ते देव, सुर कहे कारण कह्यो तव हरि कहे जी ॥ वांठुं रे लघु न्राता तव देव, बोले रे होशे पण दीक्षा लहे जी ॥ ११ ॥ अनुक्रमे प्रसव्यो पुत्र पवित्र, गजसुकमाल ते नामे गाजहो जी ॥ बहु नृपकन्या परण्यो तेह, नवनावना

ग्रंथे इणी परे लह्यो जी ॥ १२ ॥ नेमचरित्रमां कन्या ते एक, बीजी रे सोमिल द्विजनी दीकरी जी ॥ अंतगडसूत्रमां एकज एह, एहनुं रे तत्त्व तो बहुश्रुत लहे खरी जी ॥ १३ ॥ इणी अवसर नेमि जगवान्, पाउ धार्या वंदन परषद सहु मिली जी ॥ सांजली देशना पाम्यो वेराग, पत्नी रे संयुत दीक्षा लीये वली जी ॥ १४ ॥ वांदी रे वलीया जादव सर्वे, सांफे रे आणा लेइ प्रजुजी तणी जी ॥ काउस्सग रह्या समशान मफार, गजसुकमाल ते समताना धणी जी ॥ १५ ॥ आव्यो रे सोमल सुसरो ताम, देखी रे वेर उदेरी कोपीयो जी ॥ मारी रे पुत्री परणीने एम, देखो रे जूठ पाखंम आरोपीयो जी ॥ १६ ॥ बांधी रे शिर पर माटीनी पाल, बलती रे चय अंगारा तिहां जरे जी ॥ समताए प्रणमी कर्म जलाय, पहोता रे शिवनगरी शाश्वत घरे जी ॥ १७॥ अन्य दिन कृष्ण ते वंदन जाय, इंट वहंतो ब्राह्मण देखीयो जी ॥ करुणाए कृष्णे मूकी एक इंट, सहु सैन्ये एम उपगारे विशेषीयो जी ॥ १८ ॥ अनुक्रमे नेमना वंदी रे पाय, पूछे रे मुफ ज्राता प्रजु किहां गया जी ॥ प्रजु कहे साध्यो आतम काज, तेह सुणी सहु जादव मूरछीया जी ॥ १९॥ नारायण पूछे स्वामी रे नेम, केम हुं रे जाणुं केम ए निपनुं जी ॥ प्रजु कहे खेद म कर ए सहाय, कारी तुफ परे तिणे केवल उपनुं जी ॥ २० ॥ नयरीमां पेसतां मलशे रे तेह, तुजने रे देखी ते यमघर जशे जी ॥ पुरमां रे पेसतां साहमो रे तेह, आवे रे पावे मरण ते जय वशे जी ॥ २१ ॥ जाणी रे जाइनो वध करनार, बांधी रे पाय ने नयरमां फेरवे जी ॥ उम रे पाप फले तत-काल, नगरने बाहिर तेहने खेपवे जी ॥ २२ ॥ तेह देखीने नेमजी पास, महाव्रत जादव बहु तिहां आदरे जी ॥ राजीमती बहु कन्या रे साथ, एकनासा कन्या दीक्षा वरे जी ॥ २३ ॥ रहनेमि पण जिन नेमना ज्रात, दीक्षा रे लीये ते महा वरूजागीया जी ॥ तेम वली खट् प्रजुजीना रे ज्रात, लेवे रे महाव्रत महावैरागीया जी ॥ २४ ॥ वसुदेव विना दशे दशार, तेम शिवादेवी माता प्रजु तणी जी ॥ जादव वंशमां घणा कुमार, व्रत लीये तेम जादव कन्या घणी जी ॥ २५ ॥ वसुदेव राणी बहोंतेर सहस, देवकी रोहिणी कनकवती विना जी ॥ डुर्लज जवनी कोडे जेह, चारित्र लीये सहु तिहां थइ एकमना जी ॥ २६ ॥ कृष्ण रे लेवे एहवो नियम, कन्या रे नवि

परणावुं स्वामी जी रे ॥ घर मांहे उपनुं केवलज्ञान, कनकवतीने नमुं शिर नामी जी रे ॥ २७ ॥ देवताए कीधो महिमा रे तास, मास अणसणथी शाश्वत सुख वरे जी ॥ सागरचंद ते रामनो पुत्र, आगलथी पण श्रावकनां व्रत धरे जी ॥ २८ ॥ प्रतिमा रे धरी समशानमां जाय, गजसुकमाल निर्वाण सुणी तदा जी ॥ काउस्सग्ग रह्यो तव आवे नन्नसेन, छिद्र सागरचंद्रनां खोले सदा जी ॥ २९ ॥ कमला रे मेवा हरणनुं एह, फल रे तुं पामी पाखंमी डुष्टधी रे ॥ एम कही माटीनी बांधी रे पाल, अंगारा धरे ते पापे पुष्टधी रे ॥ ३० ॥ तेह परिसह समता न्नाव, सहीया रे कहीया स्वर्गे ते गया जी ॥ चोथे खंडे रे बीजे अधिकार, बीजी रे ढालमां मुनिवर बहु थया जी ॥ ३१ ॥ साध्यां रे सघले आतम काज, जिनवर पासे उत्तम न्नविजना जी ॥ ताख्यो रे नेमजीए निज परिवार, पद्मविजय कहे सांन्नलो एकमना जी ॥ ३२ ॥ सर्व गाथा ॥ ६० ॥

॥ दोहा ॥

॥ वेठो परशंसा करे, सन्ना मांहि सुरइंद ॥ नीच जुद्ध जुके नहीं, दोष न लीये गोविंद ॥ १ ॥ कोइक देव अणमानतो, आवे द्वारिका मांहि ॥ जाये रमवा तिण समे, नरसिंह मन उबांहि ॥ २ ॥ श्वानरूप डुर्गंध कखुं, मारग मध्ये ताम ॥ लोक ते नाठा वेगला, केशव बोले आम ॥ ३ ॥ अहो श्यामता एहनी, उज्ज्वल दंतनी पंत ॥ नीच जुद्ध पण नवि कस्यो, तूंठो देव महंत ॥ ४ ॥ वर मागो ते आपीये, कृष्ण कहे सुणो वात ॥ रोग घणो मुफ नयरमां, आपो जिणे होय शांत ॥ ५ ॥ न्नेरी आपे देवता, न्नाखे महिमा तास ॥ ठ ठ मासने आंतरे, एह वजावजो खास ॥ ६ ॥ रोग जशे पूरव तणा, आगामिक नवि थाय ॥ हरि सुर निज थानक गया, तिम करता नरराय ॥ ७ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ श्रीसिद्धचक्रनी करो न्नवि सेवना रे ॥ ए देशी ॥ दाघज्वर रोगी परदेशीउं रे, न्नेरीपालने कोय ॥ कहे ल्यो लख सोवन आपो मुने रे, न्नेरी पल सम सोय ॥ १ ॥ गति अनुसारे मति एम उपजे रे ॥ ए आंकणी ॥ खंम देइ तस न्नेरी सांधतो रे, चंदनखंम लगाय ॥ एम अन्य अन्य प्रते देतां थका रे, मूल न्नेरी न रहाय ॥ गति० ॥ २ ॥ उपद्रवथी न्नेरी वली

तामतो रे, शब्द तेहवो न सुणाय ॥ वात सुणे तव भेरीपालनी रे, न्याथी ते नरराय ॥ गति० ॥ ३ ॥ अठम करी सुर आराधी लहे रे, भेरी अन्य उदार ॥ तिण नयरी दो वैद्य धन्वंतरी रे, वैतरणी नामे धार ॥ गति० ॥ ४ ॥ वैतरणी उंषध करे सर्वने रे, जेहने जेह उचित ॥ तेम करतो निज भेखज आपतो रे, खरचतो गांठनुं वित्त ॥ गति० ॥ ५ ॥ पाप सहित भेखज धन्वंतरी रे, करतो नित्य ते एम ॥ मुनिवर आवे तव कहे नवि भएयो रे, तुम ओषध होय जेम ॥ गति० ॥ ६ ॥ नारायण पूछे जिन नेमने रे, कुण गति जाशे ए दोय ॥ धन्वंतरी सातमी नरके जशे रे, जिन कहे पापथी होय ॥ गति० ॥ ७ ॥ बीजो वंध्य वने कपिमां वडो रे, एक दिन मुनि समुदाय ॥ विहार करंतां आवशे तिहां कने रे, एक मुनि कांटे विंधाय ॥ गति० ॥ ॥ ८ ॥ पण ते काढी न शक्या को मुनि रे, बोल्या मुनि शल्यवंत ॥ जाउं तुमे सहु साथ म चूकशो रे, तव सहु गमन करंत ॥ गति० ॥ ए ॥ अनुक्रमे कपिए दीठा मुनिवरु रे, जातिसमरण ज्ञान ॥ ईहापोह करतां तस उपनुं रे, वैद्यकशास्त्रनुं ज्ञान ॥ गति० ॥ १० ॥ संरोहिणी ओषधि तिहां चोपनी रे, करी शाता मुनिराय ॥ अक्षर लखी निज पूरव भव कहे रे, मुनि आगल पछताय ॥ गति० ॥ ११ ॥ अठम करी सहस्रारे उपनो रे, देखे ते अणगार ॥ निज शबने नवकार सुणावता रे, जाएयो तस उपगार ॥ गति० ॥ १२ ॥ सुर आवी मुनिवर प्रणमी कहे रे, आ सवि तुम्ह पसाय ॥ एम करी मुनिवर लेइ तिहां थकी रे, मूके मुनि समुदाय ॥ गति० ॥ ॥ १३ ॥ मुनि पण निज मुनिउंघने एम कहे रे, कपि सुरनो अवदात ॥ नारायण सुणी धर्मे दृढ थता रे, हरि निज धाम आयात ॥ गति० ॥ १४ ॥ प्रनु विचरंता अन्य देशे गया रे, चोथे खंडे ए ढाल ॥ बीजे अधिकारे त्रीजी कही रे, पद्मे अतिहि रसाल ॥ गति० ॥ १५ ॥ सर्व गाथा ॥ ८२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिन वरषा वेसतां, आव्या नेमि जिणंद ॥ प्रणमी पूछे इणी परे, नक्ति थकी गोविंद ॥ १ ॥ नगवन् वर्षाकालमां, विचरो नहीं किण हेत ॥ प्रनु कहे अमे विचरुं नहीं, जीवदया संकेत ॥ २ ॥ कृष्ण कहे जो एम वे, जीव तणो उपघात ॥ तिण कारण नहीं नीसरुं, गेह थकी जगतात ॥ ३ ॥ करी प्रतिज्ञा एहवी, आवे निज आवास ॥ तेमां निहां प्रतिज्ञा-

रने, भाखे इणी परे तास ॥ ४ ॥ पेसणने मत आपजो, चोमासे निर्धार ॥ इण अवसरे तिण पुरी वसे, वीर नामे वणकार ॥ ५ ॥ कृष्ण तणुं दर्शन करी, नित लेवे अन्न पान ॥ जावा नवि दीये पोलीयो, वर्षासमय निदान ॥ ६ ॥ अर्चे नित द्वारे रह्यो, पण नवि लेवे अन्न ॥ हरि चोमासुं उतरे, डुर्बल देखे तन्न ॥ ७ ॥ पूछे तब कहे पोलीयो, सवलो तस विरतंत ॥ तूठो हरि आणा करे, पइसणने एकांत ॥ ८ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ धन धन संप्रति साचो राजा ॥ ए देशी ॥ भाव थकी जिनवंदन कीजे, जेम वांदे गोविंद रे ॥ द्वादशावर्त्तन वांदणे वांदे, अढार सहस मुणींद रे ॥ भा० ॥ १ ॥ कृष्ण कहे सुणो नेम जिनेसर, थाक चढ्यो बहु आज रे ॥ त्रणसें साठ संग्रामे न थाको, तेम थाको जिनराज रे ॥ भा० ॥ २ ॥ नेम कहे तुम थाक उतर्यो, तीर्थंकर नाम कर्म रे ॥ सातमीथी वली त्रीजी कीधी, क्षायिक समकित धर्म रे ॥ भा० ॥ ३ ॥ मुनिवंदनथी एह कमाया, कृष्ण कहे फरी नेम रे ॥ वंदना कीजे एहज रीते, कर्मथी छूटुं जेम रे ॥ भा० ॥ ४ ॥ प्रभु कहे भाव थकी कर्म त्रूटे, भाव दोहिलो जाण रे ॥ कृष्ण परे वीरे पण वांद्या, कृष्ण लाज मन आण रे ॥ भा० ॥ ५ ॥ वीर-वंदन फल पूछे प्रभुने, प्रभु कहे कायकिलेश रे ॥ सांभली नियम लीये नारायण, सांभलो भुवनदिनेश रे ॥ भा० ॥ ६ ॥ पुत्रीने नहीं हुं परणावुं, व्रत लेशे वली जेह रे ॥ तेहनो महोछव करशुं हरखे, अनुमोदशुं वली तेह रे ॥ भा० ॥ ७ ॥ स्तवना करी प्रणमी घेर आवे, हवे निज पुत्री जेह रे ॥ विवाह जोग्य थाय जब आवे, नरपति पूछे एह रे ॥ भा० ॥ ८ ॥ स्वामिनी थाशो के दासी थाशो, कहो जेहवी मन वात रे ॥ सहु कहेतां तजी स्वामिनी थाशुं, तब बोले तस तात रे ॥ भा० ॥ ए ॥ ल्यो दीक्षा प्रभु नेमनी पासे, जग ठकुराइ थाय रे ॥ एम उंछव करी व्रत लेवरावे, भव-भीरु नरराय रे ॥ भा० ॥ १० ॥ एम करतां एक निज पुत्रीने, राणी शीखवे एम रे ॥ दासीपणुं तुं मागी लेजे, तुऊ परणावे जेम रे ॥ भा० ॥ ११ ॥ तेमज कह्युं तिणे तब हरि चिंते, एह कपट करे जोय रे ॥ तेम करीये जेम दासी थाये, अवसर न करे वली कोय रे ॥ भा० ॥ १२ ॥ वीरा साल-वीने हरि पूछे, शी शी करणी तें कीध रे ॥ ते कहे बोरमीए काकीडो,

व्रे यमघर दीध रे ॥ जा० ॥ १३ ॥ रथचक्रे वहेतुं जल रोक्युं, वाम चरण परजाव रे ॥ पाजणी कलशमां माखीर्उ रोकी, वाम हस्त अनुजाव रे ॥ जा० ॥ १४ ॥ सांजली हरि चिंते परणावुं, एहने एहज योग्य रे ॥ तसी आस्थान सजा नृप बोले, सांजलजो सहु लोग रे ॥ जा० ॥ १५ ॥ वीर ए क्षत्री महाबलवंतो, सप्त फणो हएयो नाग रे ॥ चक्रांका गंगा जेणे रोकी, महाक्षत्री महाजाग रे ॥ जा० ॥ १६ ॥ घोषवती सेना महा वसती, कलशीपुरवर मांहि रे ॥ वाम हस्तथी ते इणे वारी, महाक्षत्री उछांहि रे ॥ जा० ॥ १७ ॥ एम कही केतुमंजरी कन्या, परणावे नरराय रे ॥ घर तेनी आव्यो कन्याने, पण मन चिंता थाय रे ॥ जा० ॥ १८ ॥ एहनी पासे कांहि न करावे, काम काज लगार रे ॥ चाकरी करतां नित दिन जाये, एक दिन पूछे मोरार रे ॥ जा० ॥ १९ ॥ कीसी खबर कहे वीरा ताहरी, वीरो कहे सुण राय रे ॥ नोकरीने घर वाय वीराणो, ए उखाणो थाय रे ॥ जा० ॥ २० ॥ हरि कहे घरनुं काम करावे, लखमुं एहनी पास रे ॥ घर जइ ताडना तर्जना करीने, काम करावे ते पास रे ॥ जा० ॥ २१ ॥ रोती मातने आवी जाखे, में तो ए न खमाय रे ॥ ते कहे कृष्णने तव हरि जाखे, माहरो वांक न कांय रे ॥ जा० ॥ २२ ॥ दासी-पणुं इण हाथे माग्युं, सा कहे तव सुणो स्वामी रे ॥ स्वामिनी करीयें हवे एम जाख्युं, वार वार शिर नामी रे ॥ जा० ॥ २३ ॥ हरखे हरि हवे व्रत उवरावे, उंडव करीय अपार रे ॥ इणी परें चारित्र हवे करे जे, पामे ते जवपार रे ॥ जा० ॥ २४ ॥ चोथे खंडे बीजे अधिकारे, चोथी ढाल रसाल रे ॥ पद्मविजय कहे प्रजुजी नमतां, पामीयें मंगलमाल रे ॥ जा० ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कृष्ण नारी हवे ढंढणा, ढंढणनाम कुमार ॥ यौवन वय परण्यो पछी, कनी राजकुमार ॥ १ ॥ सांजली प्रजुनी देशना, पाम्यो ते वैराग ॥ महा महोछव नरवर करे, दीक्षा लीये महाजाग ॥ २ ॥ कर्म उदय आव्युं तदा, नामे जे अंतराय ॥ मुनिवर साथे जाय पण, तेहने धान न थाय ॥ ३ ॥ मुनिवर पूछे नेमने, प्रजुजी कोण शिष्य ॥ कृष्ण पुत्र जग जाणीयो, ढंढण नाम मुनीश ॥ ४ ॥ धर्मी लोक वसे घणा, महाधनवंत उदार ॥ इणे नगरी पामे नहीं, जिक्षा मात्र लगार ॥ ५ ॥ स्वामी कहो कारण

किस्युं, किस्युं कर्म कस्युं एण ॥ तव प्रनु पूरव नव कहे, कर्म अफल नहीं जेण ॥ ६ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ गरबानी देशी ॥ सांजलो साधु सोहामणा रे लो, कर्म कस्यां इणे अति घणां रे लो ॥ धान्यपुरक नगरी वसो रे लो, विप्र पाराशर परगसो रे लो ॥ १ ॥ खेत्र वावे रायनां रे लो, पांचसें हल समुदायनां रे लो ॥ चास एकेक तणा- वतो रे लो, निज खेत्रे ते वलवतो रे लो ॥ २ ॥ नोजन अवसर पण थये रे लो, सहु जीवने अंतराय करे रे लो ॥ कर्म बंधायुं आकरुं रे लो, उदये आव्युं ते पाधरुं रे लो ॥ ३ ॥ ते सांजली वैरागीयो रे लो, ढंढण गुन मनि जागीयो रे लो ॥ करे अनिग्रह एहवो रे लो, निज लब्धे आहार लेयसो रे लो ॥ ४ ॥ एम सहेतां मास खट् थया रे लो, हरि नेमने वंदन गया रे लो ॥ पूछे जिन ए मुनिवरा रे लो, एहमां कुण डुःकरकरा रे लो ॥ ५ ॥ प्रनुजी कहे ढंढण मुनि रे लो, परिसह सहे ने महागुणी रे लो ॥ प्रनु वांदी पाछा वल्या रे लो, पुरमां आव्या उतावला रे लो ॥ ६ ॥ ढंढण ऋषि साहमा आवता रे लो, देखी हरि मन नावता रे लो ॥ गजथी ऊतरी वंदता रे लो, हर्षे मुनिगुण गावता रे लो ॥ ७ ॥ तुम अवतार सफल थयो रे लो, तुम नमतां मुज डुःख गयो रे लो ॥ ते एक शेठ देखी चिंतवे रे लो, कृष्ण इणी परे जे स्तवे रे लो ॥ ८ ॥ ते प्राणी धन्य मानीये रे लो घर तेडीने आणीये रे लो ॥ एम चिंती तेड्या घरे रे लो, मोदक थाल लीये करे रे लो ॥ ९ ॥ करी मनोहार वहोरावीया रे लो, ऋषि जिन पासे आवीया रे लो ॥ ऋषि आलोवे गोचरी रे लो, एम निक्षा लाव्यो फरी रे लो ॥ १० ॥ स्वामी शुद्धं के नहीं रे लो, अंतराय कर्म ते सही रे लो ॥ तव बोल्या ज्ञानी गुरु रे लो, कर्म हजी तुज छे वरु रे लो ॥ ११ ॥ कृष्णलब्धिए जाणजो रे लो, निज लब्धि मन माणजो रे लो ॥ एवी लब्धि जाणी हवे रे लो, आहार एकांते परठवे रे लो ॥ १२ ॥ परठवता ध्याने चड्या रे लो, कर्म संघाते अति लड्या रे लो, केवलज्ञान उपनुं तदा रे लो, लोकालोक व्यापी सदा रे लो ॥ १३ ॥ नेमजीने पादक्षिणा रे लो, देइने बेठा ढंढणा रे लो ॥ तेम केवली पर्षदा रे लो, विहार करे प्रनु अन्यदा रे लो ॥ १४ ॥ चोथे खंडे ए कही रे लो, पांचमी ढालपूर्ण कही रे

लो ॥ बीजे अधिकारे जली रे लो, कर्म न करशो सांजली रे लो ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ विहार करम करता प्रनु, पाउ धास्या एक दिन्न ॥ बहु मुनिवरशुं परवस्या, द्वारिकाना उपवन्न ॥ १ ॥ रहनेमि प्रनु पूठीने, गोचरी करवा जाय ॥ पाठा वलतां मारगमां, वृष्टि घणेरी थाय ॥ २ ॥ एक गुफा मांहे रह्या, इण अवसर जिन नेम ॥ राजीमती वांदी वल्या, मारगमां थयुं एम ॥ ३ ॥ राजुल तेह अजाणतां, पेठा ते दरी मांहि ॥ अंधारे देखे नहीं, तेह रुपिने त्यांहि ॥ ४ ॥ काढी वस्त्र निज अंगनां, करे मोकलां तेह ॥ नीचोवे नहीं वस्त्रने, मुनिवर मारग एह ॥ ५ ॥ नम देखी नारी प्रते, कामातुर रुपि तेह ॥ रहनेमि जाखे इस्युं, आणी अधिक सनेह ॥ ६ ॥ जोग जोगवीये आपणे, करीये सफल संसार ॥ यौवन फरी फरी दोहिलुं, दोहिलो ए अवतार ॥ ७ ॥

॥ ढाल ठठी ॥

॥ अनशोमां जो ॥ ए देशी ॥ राजीमती गुणवंती बोले, धीर्य कठोटो वाली ॥ कुलवंता नर एम न जाखे, आवे टीली काली ॥ १ ॥ अलगा रहेजो ॥ त्रण लोकपति डुहवाशो ॥ अ० ॥ जगबंधवना बंधव थाउं, वली जगशरणना शिष्य ॥ हजीय लगी डुर्बुद्धि शी तुजने, विहुं लोके अजगीश ॥ अ० ॥ २ ॥ सर्वज्ञ शिष्य थइ आतम हित, जो नवि करशो कांइ ॥ तो जमशो जवसायर मांहि, तुलन नहीं ए गांइ ॥ अ० ॥ ३ ॥ देवद्रव्य हरवो संयती व्रत, खंमन ने रुपिघात ॥ शासन उड्डाहक बोधि तरु, मूले अग्नि वरसात ॥ अ० ॥ ४ ॥ जेह अगंधन कुलना जाया, नाग वम्युं नवि इछे ॥ ज्वलती अग्नि मांहि वली पेसे, ते पण केम नवि प्रीछे ॥ अ० ॥ ५ ॥ एह असंजम जीवित काजे, वमीया वांछे जोग ॥ धिग् जसकामी तुजने रुडो, मरण तणो संयोग ॥ अ० ॥ ६ ॥ हुं जोज रायना कुलमां उपनी, तुं अंधक कुल जायो ॥ आपणनो एक एक थकी कुल, दीसे सर्व सवायो ॥ अ० ॥ ७ ॥ गंध नकुल सरिखा रखे थइये, तिणे संजममां चालो ॥ उन्मारग चालीने आतम, कां डुर्गतिमां घालो ॥ अ० ॥ ८ ॥ ज्यां ज्यां कामिनी देखीश त्यां त्यां, मन जो ताहरुं जाशे ॥ तो वाताहत हठ परे ताहरुं, सही मनडुं गोलाशे ॥ अ० ॥ ९ ॥ तेह सतीनां वचन सुणीने, जाग्यो

तें महाभाग ॥ उन्मारगे जातो तेम वाल्यो, जेम अंकुशे नाग ॥ अ० ॥ ॥ १० ॥ भोग तणी इछा वांमीने, प्रभुजी पास आलोवे ॥ पश्चात्ताप करंतो मुनिवर, कर्म कलंकने धोवे ॥ अ० ॥ ११ ॥ एक वरस छद्मस्थ रहीने, मुनिवर शुभ परिणामे ॥ घाती करमनो घात करीने, केवलज्ञान ते पामे ॥ अ० ॥ १२ ॥ धन्य राजीमती धन्य ए रिखजी, जिणे सार्यां निज काज ॥ विहार करे प्रभु अन्य देशे वली, भव्यकमल दिनराज ॥ अ० ॥ ॥ १३ ॥ प्रभुजी पाछ धार्या फरी रैवत, पीतांबरे सुणी वात ॥ निज सुतने हरि इणी परे भाखे, प्रभु रैवत आयात ॥ अ० ॥ १४ ॥ जे प्रभुजीने पहेला वांदे, तेहने अश्व हुं आपुं ॥ तेहने मानी धन धन भाखुं, हृदय मांहि पण थापुं ॥ अ० ॥ १५ ॥ पालक नाम अभव्य ते उठी, रातने पाछले याम ॥ प्रभु वांदीने इण परे भाखे, थाजो साखी गाम ॥ अ० ॥ १६ ॥ दूर थकी एम कहीने वलीयो, हवे जे शांब कुमार ॥ घरमां उठी भावथी वांदे, आदर भक्ति अपार ॥ अ० ॥ १७ ॥ हरि हवे परमेश्वरने पूछे, पहेला वांद्या केहणे ॥ जिम निर्णय करी अश्व अनोपम, आपुं हरखे तेहने ॥ अ० ॥ ॥ १८ ॥ प्रभु कहे द्रव्यथी पालके वांद्या, भावथी शांब कुमारे ॥ जेह अभव्य प्राणी होय तेहने, आवे न भाव किवारे ॥ अ० ॥ १९ ॥ पालक काढी मूक्यो घरथी, शांबने अश्व ते आप्यो ॥ शांब उपर नारायणने बहु, हृदय प्रमोद ते व्याप्यो ॥ अ० ॥ २० ॥ चोथे खंमे बीजे अधिकारे, भाखी छट्ठी ढाल ॥ ए अधिकार संपूरण हुउं, हुउं हर्ष विशाल ॥ अ० ॥ २१ ॥ क्षमाविजय जिनभक्ति अनोपम, उत्तम भविक रसाल ॥ पद्मविजय कहे बहुविध करतां, पामे मंगलमाल ॥ अ० ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ १६५ ॥ इति श्रीद्रौपदीप्रत्याहरणगजसुकमालढंढणऋषिप्रमुखचरित्रवर्णनो नाम चतुर्थखंमे द्वितीयोऽधिकारः संपूर्णः ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीयोऽधिकारः प्रारभ्यते ॥

॥ शारद गुरु जिनवर नमी, हवे त्रीजो अधिकार ॥ चोथा खंम तणो कहुं, सुणतां जय जयकार ॥ १ ॥ एक दिन नेम समोसर्या, करता भवि उपगार ॥ हरि सामग्री मोटिकी, वंदन करे तैयार ॥ २ ॥ तिण अवसर द्वारापुरी, दीठी घणुं उत्कृष्ट ॥ यादव पण सुखीया घणुं, निज नयणे करी

डीठ ॥ ३ ॥ जइ वंदे नेमीसरु, अवसर पामी एम ॥ पूछे प्रांजलि पु
करी, स्वामी जाखो नेम ॥ ४ ॥ स्वामी एहवी द्वारिका, ए जादव समु
दाय ॥ रहेशे के ए क्षय जशे, तव जाखे जिनराय ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ सत्तरमुं पापनुं ठाम ॥ ए देशी ॥ हवे बोले नेम जिणंद, सांजल
नरवर इंद ॥ जग थिर नहीं इंद के चंद हो राज ॥ १ ॥ सांजलो वच
हमारां ॥ ए आंकणी ॥ तुज देखतां क्षय जाशे, तेहनो कोइ आधार न था
॥ उगरशे जे व्रत वांसे हो राज ॥ सां० ॥ २ ॥ तव बोले केशवराय,
कोण थकी क्षय थाय ॥ तव बोले त्रिजुवन राय हो राज ॥ सां० ॥ ३
पाराशर तापस नामे, ते निंइ कन्या एक पामे ॥ लइ जाये यमुना द्वी
गमे हो राज ॥ सां० ॥ ४ ॥ तेणे पुत्र एक जलो जायो, तेहनुं नाम द्वैपा
यन गायो ॥ ठठ जोजी वंज धरायो हो राज ॥ सां० ॥ ५ ॥ तेहथी सहु
केरो नाश, वली मदिरा कारण तास ॥ तिणे धर्म करो सुविलास हो
राज ॥ सां० ॥ ६ ॥ नारायण जाखे एम, मुज वात कहो जिन नेम ॥ मुज
मरण स्वजावे के केम हो राज ॥ सां० ॥ ७ ॥ तव बोल्या मुनिवर नाथ,
तुज मरण जराकुमार हाथ ॥ सुणी विस्मित यादव साथ हो राज ॥ सां० ॥
॥ ८ ॥ जराकुमार लज्जा पामी, जिनवरने मस्तक नामी ॥ लेइ धनुपने
वनवासगामी हो राज ॥ सां० ॥ ९ ॥ सुणी द्वैपायन इम जाणो, नगरी यादव
रक्षाने जाणो ॥ गयो अगम अगोचर ठाणो हो राज ॥ सां० ॥ १० ॥ प्रणमी
प्रजुपद अरविंद, जादव साथे गोविंद ॥ मनमां धरतो दुःखवृंद हो राज
॥ सां० ॥ ११ ॥ सहु सुपना सरखुं माने, इंद्रजाल परे तिण टाणे ॥ आवे
सहु निज निज थाने हो ॥ सां० ॥ १२ ॥ सवि मदिरा बाहिर कढावे,
कादंबरी गुफा मांहि ठावे ॥ हरि आदेशे सहु जावे हो राज ॥ सां० ॥ १३ ॥
तेह कुंम मांहि सुरा थापे, वात संजारे दुःख व्यापे ॥ हियमा थर थर बहु
कांपे हो राज ॥ सां० ॥ १४ ॥ बलदेवनो सारथि एक, सिद्धारथ नाम विवेक
॥ व्रत लेवानी मन टेक हो राज ॥ सां० ॥ १५ ॥ जाखे बलजद्रने एम,
द्वारिका कुलनो क्षय केम ॥ देखी शकीये धरी प्रेम हो राज ॥ सां० ॥ १६ ॥
मुज आणा आपो तिणे, प्रजु पासे व्रत लेउं जिणे ॥ हुं उजम्यो प्रजुजीने
वयणे हो राज ॥ सां० ॥ १७ ॥ तव आंसु पामता बोले, जाइ नहीं अमे

ताहरे तोले ॥ पण एक वचन दे कोले हो राज ॥ सां० ॥ १८ ॥ तमे देवता थाउ जे वारे, प्रतिबोधो मुजने तिवारे ॥ तो आणा देउं इण वारे हो राज ॥ सां० ॥ १९ ॥ हा मानी दीक्षा लीधी, खट् मास तपस्या कीधी ॥ इणे पामी देवनी ऋद्धि हो राज ॥ सां० ॥ २० ॥ चोथे खंडे ए पहेली ढाल, त्रीजे अधिकारे रसाल ॥ पद्मविजयने मंगलमाल हो राज ॥ सां० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इण अवसर फल फूलथी, मदिरा अति मदवंत ॥ माधव मासे ते थइ, नविन सुरा परे तंत ॥ १ ॥ कोइक भाविभावथी, शांब सेवक एक दिश्न ॥ तरस्यो पहोतो तिहां किणे, देखी रीज्युं मन्न ॥ २ ॥ पीधी मदिरा होंशथी वली भाजन भरी लीध ॥ हलफलतो आव्यो तिहां, शांब भणी ते दीध ॥ ३ ॥ शांबे पीधी ते सुरा, मदवंता हुआ ताम ॥ दुर्दांत कुमरे परिवर्या, पहोता मदिरा गाम ॥ ४ ॥ कंठ लगे पीधी सुरा, फरे ते वनह मकार ॥ द्वैपायन ध्याने रह्यो, दीठो सविहुं कुमार ॥ ५ ॥ परवशथी एम चिंतवे, ए अमचो खयकार ॥ प्रथमज हणवा एहने, करीये भलो प्रकार ॥ ६ ॥ समकाले सहुए करे, ताडना तर्जना मार ॥ निर्दयपणे तेम मारीयो, वमे ते रुधिर अपार ॥ ७ ॥ मदिराथी शुद्ध बुद्ध गइ, सहु सरखा मतिवंत ॥ निज कुले जे उपनी, नवि पीवे ते संत ॥ ८ ॥ आंबा फले पच राखके, महुआ फले पच लोय ॥ ताको रस मुखमें परे, क्युं न हीनबुद्धि होय ॥ ९ ॥ धरणी नले तापस पड्यो, मूर्छा लह्यो ततकाल ॥ जीवरहित जाणी वल्या, सहु निज पुर समकाल ॥ १० ॥ वात सुणी चरमुख थकी, नारायण लेशाप ॥ अहो दुर्दांत कुमार ए, कुलक्षय कारण थाय ॥ ११ ॥ कृष्ण राम बेहु जणा, आव्या ते वन मांहि ॥ हरि द्वैपायन देखीने, इणी परे भाखे त्यांहि ॥ १२ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ अजित जिणंदशुं प्रीतडी ॥ ए देशी ॥ कृष्ण कहे इम वयणडां, खमो तुमे हो अमचो अपराध के ॥ क्रोध ते दुःखदायक कह्यो, क्रोधे करी हो न होये निराबाध के ॥ कृ० ॥ १ ॥ तुमे तो तपसी लोक छो, मदिरा मत्त हो अज्ञानी कुमार के ॥ जे तुमने उपद्रव कर्यो, तुमे खमवुं हो करुणा-भंडार के ॥ कृ० ॥ २ ॥ भूंडुं करतां रुडुं करे, ते सज्जन हो जगमां विख्यात के ॥ विनय सहित सुणी वयणडां, पण मनमां हो न थयो उपशांत के

॥ कु० ॥ ३ ॥ कहे त्रिदंनी तापसो, सुण केशव हो में कीध ते जाण के ॥
३ष्ट कुमरे जव रोपव्यो, तिणे म कह्यो हवे एहवी वाण के ॥ कु० ॥ ४ ॥
रु तुमे बलदेवजी, मूकीने हो सहुनो करुं नाश के ॥ एह प्रतिज्ञा नवि फरे,
ोइ काले हो माहरी दुःखराश के ॥ कु० ॥ ५ ॥ केवली वयण जे
ाखीयां, नवि अन्यथा हो जदि जग पलटाय के ॥ एम कहे बल निज बंधुने,
ाद म करो हो जाख्युं जिनराय के ॥ कु० ॥ ६ ॥ कर पद नासिका
हनां, होय वांकां हो वली नयण न सोम के ॥ घूख उष्ट दांत जेहना,
ा न वले हो कोप जे रोम रोम के ॥ कु० ॥ ७ ॥ आव्या निज नयरी
े, बीजे दिन हो कहेवराव्युं एम के ॥ नगर मांहि सहु लोकने, द्वैपायने
हा जाख्युं ठे जेम के ॥ कु० ॥ ८ ॥ तप जप नियम धरम करो, इणे अव-
सर हो आव्या नेम जिणंद के ॥ यादव सहु वंदन गया, सुणे देशना हो
प्रभुमुख गोविंद के ॥ कु० ॥ ९ ॥ शांब प्रद्युम्न निषध वली, सुणी देशना
हो जाग्या महाजाग के ॥ उल्मूक सारण आदि दे, कहुं केता हो पाम्या
वैराग के ॥ कु० ॥ १० ॥ रुक्मिणी जांबुवती वली, गोरी ने हो गांधारी
नार के ॥ कमला सुसीमा सत्यजामा, पद्मावती हो पमुहा गुणधार के ॥
॥ कु० ॥ ११ ॥ देशना प्रभुजीनी सांजली, घर ठांमी हो लीये संयमजार
के ॥ हरि पूछ्या पछी जिन कहे, द्वारिकादाह हो थशे वर्षे बार के ॥ कु० ॥
॥ १२ ॥ सांजलीने हरि चमकीया, मन चिंते हो धन तेह राजान के ॥
दीक्षा लीधी प्रभु कने, समुद्रादिक हो रम्या आतमध्यान के ॥ कु० ॥ १३ ॥
तव प्रभुजी बोले इस्युं, नियाणुं करी हो थाय वासुदेव के ॥ नरके अवश्य
जवुं पडे, तुमे जाशो हो त्रीजी नरके हेव के ॥ कु० ॥ १४ ॥ कंसारि तव
दुःख धरे, प्रभुजी कहे हो म करो मन खेद के ॥ तिहांथी नरजव पामशो,
वैमानिक हो थाशो तिहांथी पुंवेद के ॥ कु० ॥ १५ ॥ तिहांथी चवी इण
जरतमां, शतद्वारपुरे हो जितशत्रुने गेह के ॥ अमम नामे प्रभु बारमा, थाशो
गुण हो अनंततनुं गेह के ॥ कु० ॥ १६ ॥ बलदेव ब्रह्मलोके जशे, तिहांथी
नर हो वली थाशे देव के ॥ तिहांथी अमम प्रभु तीरथे, शिव लहेशे
हो निरुपम ततखेव के ॥ कु० ॥ १७ ॥ यतः ॥ चरित्रे ॥ जूयोऽप्यथच
सर्वज्ञो, मा विषीद जनार्दन ॥ तत उद्धृत्य मर्त्यस्त्वं, जावी वैमानिकः सुरः
॥ १ ॥ इत्यादि ॥ त्रीजे जवे कहीं जिन थशे, एम जाख्युं हो सूत्रे ठे जेह

४३

के ॥ तेह मतांतर जाणवुं, हीरप्रश्ने हो बोल्युं ते एह के ॥ कृ० ॥ १८ ॥ एम कही प्रभुजी विचरीया, कंसारि हो आव्या निज गेह के ॥ पमह वजावे इण परे, प्रभुजीए कह्यो हो द्वारिकानो दाह के ॥ कृ० ॥ १९ ॥ धर्म करे सहु ते सुणी, द्वैपायन हो थयो अग्निकुमार के ॥ पूरव भव देखी करी, द्वारिकापुरी हो आव्यो तिण वार के ॥ कृ० ॥ २० ॥ खंम चोथे अधिकार ए, त्रीजे कही हो बीजी वर ढाल के ॥ पद्मविजय ए सोहामणी, धर्म करतां हो होय मंगलमाल के ॥ कृ० ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ ५९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ केइक करे एकांतरां, केइक छठ तपकार ॥ केइक आंबिल तप करे, केइक ब्रह्मव्रतधार ॥ १ ॥ केइक श्रावकव्रतधरु, केइक समकितवंत ॥ धर्म॰ प्रभावे देवता, नवि उपसर्ग करंत ॥ २ ॥ छिद्र गवेषे लोकनां, वरस अग्यार विलीन ॥ आव्युं वरस ते बारमुं, चिंते लोक विखिन्न ॥ ३ ॥ धर्म थकी द्वैपायनो, नाठो निश्चय एह ॥ मद्य मांस मुख वावरे, रमवा लागा तेह ॥ ४ ॥ छिद्र लह्युं हवे तेहने, आवे नयरी पास ॥ बहु उत्पात देखा॰ वतो, करतो अट्टहास ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ कर्म न छूटे रे प्राणीया ॥ ए देशी ॥ द्वारे चित्री जे पूतली, ते पण हसवा रे जाय ॥ भमुहा आंख भमाकती, देखी भय मन थाय ॥ १ ॥ द्वारिका बलती रे एणी परे ॥ ए टेक ॥ द्वारे चित्रित देवता, कंपावे घरबार ॥ तरुअर चार दिशा चले, कोइ कोइनो न आधार ॥ द्वा० ॥ २ ॥ उल्कापात घणा होये, ग्रह मूके बहु धूम ॥ रविमंमले अगनि करे, देखी आवे ते घूम ॥ द्वा० ॥ ३ ॥ वैताल भूत ने शाकिनी, सहित भमे तेह देव ॥ ग्रहण होय शशी सूरनां, श्वापद पुरमां भमेव ॥ द्वा० ॥ ४ ॥ स्वप्न देखे बीहामणां, संवर्तक तव वाय ॥ विकुर्वे दुष्ट देवता, वातकी ते न कहाय ॥ द्वा० ॥ ५ ॥ काष्ठ तृणादिक संहरे, लोक जे नासी रे जाय ॥ तेहने वाली होमे तिहां, नयरी काष्ठ भराय ॥ द्वा० ॥ ६ ॥ साठ कुलकोमी ते जादवा, वसता नगरीनी बाहार ॥ बहोंतेर कुलकोमी तिम वली, वसती नगर मकार ॥ द्वा० ॥ ७ ॥ तृण काष्ठादिक बहु भरी, पिंम करी सहु लोक ॥ अग्नि लगाडे रे कोपथी, लागे भम भम ठोक ॥ द्वा० ॥ ८ ॥ पवने ज्वाला प्रेरी थकी,

आकाशे अक्रकंत ॥ बालक गरडा रे सहु तिहां, अशरण बहु विलपंत ॥ ढा० ॥ ९ ॥ मंदिरनी रे कोड्योगमे, पडे पशु तिरयंच ॥ कोलाहल करुणास्वरे, रोवे सही परपंच ॥ ढा० ॥ १० ॥ चित्रामण परे थंत्रीया, कोइथी नवि नीकसाय ॥ एक कहे हा हा मावमी, एक ते बाप बोलाय ॥ ढा० ॥ ११ ॥ ए द्वारापुरी दाहनुं, कोण कहे रे स्वरूप ॥ कोइ नाथ न को शिरे, देखे केशव चूप ॥ ढा० ॥ १२ ॥ बलतुं नयर ते देखीने, नारायण ने रे राम ॥ वसुदेव देवकी रोहिणी, आरोपे रथे ताम ॥ ढा० ॥ १३ ॥ अश्व वृषन तो हाले नहीं, करता कोमि उपाय ॥ द्वैपायने सहु थंत्रीया, वात ते कांय न कहेवाय ॥ ढा० ॥ १४ ॥ पोते रथने रे खेंचता, अक्ष नांगे ततखेव ॥ तोपण निज बले खेंचतां, नारायण बलदेव ॥ ढा० ॥ १५ ॥ हा हा कृष्ण राखो तुमो, हा राखो बलदेव ॥ महाबलवंत तुमे अछो, अमे बलीये ततखेव ॥ ढा० ॥ १६ ॥ अमने काढो रे मांहिथी, थाउं अमारा रे नाथ ॥ जादव रोता रे इणी परे, सांजले ते नरनाथ ॥ ढा० ॥ १७ ॥ सांजलतां एम घर घरे, आव्या द्वारनी पास ॥ दरवाजा दीये देवता, जमीया वज्रसंकाश ॥ ढा० ॥ १८ ॥ नांजे पादुप्रहारथी, श्री बलदेवजी ताम ॥ तोपण रथ नवि नीकले, बोले देव ते ठाम ॥ ढा० ॥ १९ ॥ सांजलो बलदेव केशवा, शाने करो रे प्रयास ॥ में तुमने रे पहेलां कह्युं, तिणे केम करीये विपास ॥ ढा० ॥ २० ॥ उगरशो तुमे बिहु जणा, मूको ए माय ताय ॥ सुरवर वाणी ते सांजली, बोले वसुदेव राय ॥ ढा० ॥ २१ ॥ नीकलो पुत्र तुमे हवे, राखो पोताना प्राण ॥ जीवंता जो हशो तुमे, तो वली राज्य मंमाण ॥ ढा० ॥ २२ ॥ तुमे तो स्वामी न को करी, पण जे नावी ते होय ॥ शाने डुःख धरीये हैये, तुमचो वांक न कोय ॥ ढा० ॥ २३ ॥ श्रीनेमि जिनवर कने, पूर्वे दीक्षा न लीध ॥ धिक् धिक् अमचा रे मोहने, आव्यां कर्म जे कीध ॥ ढा० ॥ २४ ॥ समुद्रविजयादिक नरपति, शांबादिक जे कुमार ॥ धन वली माहरी रे राणीउं, लीधो संयमभार ॥ ढा० ॥ २५ ॥ एम कही नेम शरण करे, पच्चखे चार आहार ॥ अरिहा सिद्ध मुनि धर्मनुं, शरण करे सुविचार ॥ ढा० ॥ २६ ॥ एम शुभध्यान परायणा, समरंता नवकार ॥ अग्नि वरसावे द्वैपायनो, पहोता स्वर्ग मकार ॥ ढा० ॥ २७ ॥ चोथे खंडे त्रीजी नली, त्रीजे अधिकारे ढाल ॥ पद्मविजय कहे धर्मथी, होवे मंगलमाल ॥ ढा० ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राम कृष्ण बिहु नीकल्या, पहोता जीर्ण उद्यान ॥ बलती देखे द्वारिका, धरता डुःख असमान ॥ १ ॥ घर बलतां देखे तिहां, सांजले बहु प्रलाप ॥ बालक बलगे मातने, माता पण कहे बाप ॥ २ ॥ धरणी ढले ने आरडे, एक एक उपर धाय ॥ फूटे जवन त्रूटे गिरि, क्रीमा केरां ठाय ॥३॥ चंदनथांजा जस्म ते, तिम गढ ने कपिशीर्ष ॥ अनल अनल देखे तिहां, वली अनलनो वर्ष ॥ ४ ॥ एम असमंजस देखीने, रुदन करे नरराय ॥ दीन वचन जाखे तदा, हैयडे डुःख न माय ॥ ५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ सुगुण सनेहा हो कदिय न विसरे ॥ ए देशी ॥ माहारुं बल पराक्रम किहां गयुं, जिणे जीत्यो जरासंधो जी ॥ त्रणसें साठ संग्राम ते में कस्यां, सांजलो बलजड बंधो जी ॥ १ ॥ खमीय न शकीये रे ए डुःख सांजली ॥ ए टेक ॥ तो शी दीठानी वातो जी, सुणतां हैयडुं रे कम कम कंपतुं, होवे जेम वज्रघातो जी ॥ ख० ॥ २ ॥ देव अधिष्ठित रयण ते किहां गयां, सुर वली आठ हजार जी ॥ देवनी दीधी रे जेरी किहां गइ, टाले विषम विकारो जी ॥ ख० ॥ ३ ॥ साहाय्य शक्रनुं रे धनद ते किहां गया, जिणे द्वारिका निपाइ जी ॥ धीर कुमर सहु माहरा किहां गया, जब ए आपद आइ जी ॥ ख० ॥ ४ ॥ मुकुटबंध सोल सहस ते राजवी, कोइ न आव्या काजो जी ॥ कायर परे ए रे उजा देखीये, खोयुं त्रण खंम राजो जी ॥ ख० ॥ ॥ ५ ॥ तव बलजड बंधवने एम कहे, म करो जाइ विषादो जी ॥ प्रजुजीए जाख्युं रे ते ते निपन्युं, सुख डुःख कर्मप्रसादो जी ॥ ख० ॥ ६ ॥ लख्मी थिर नहीं जगमां केहने, इंडजाल सम एह जी ॥ पण कोइ जीवने मोह ठे आकरो, अथिरने थिर कहे जेह जी ॥ ख० ॥ ७ ॥ जिनवर वयणां रे जेहने चित्त वस्यां, ते किम थाये दीना जी ॥ आपद आवी रे धारे धीरता, तेह जगत नगीना जी ॥ ख० ॥ ८ ॥ अवलंबो जिनवचन हवे तुम्हे, धीरा संपद पामे जी ॥ केशव कहे बंधव साचुं कह्युं, पण न रहाये ए गामे जी ॥ ख० ॥ ए ॥ किण दिशि जाशुं रे संपदहीणना, तव बलजड ते बोले जी ॥ पांमव सज्जन बंधव सारखा, अन्य नहीं इण तोले जी ॥ ख० ॥ १० ॥ दक्षिण मथुरा रे वासी तेह ने, पीतांबर तव जापे जी ॥ में पूरवे पांमव

अपमानीया, ते केम आदर देशे जी ॥ ख० ॥ ११ ॥ बल कहे सज्जन विसारे नहीं,पूरवना उपगार जी ॥ तुमे उपगार पांमवने बहु कर्यो,करशे पूजा सतकार जी ॥ ख० ॥ १२ ॥ एम कही चाल्या रे ते मथुरा जणी, पण दुःखनो नहीं अंत जी ॥ एहनुं दुःख एहज जाणे तथा, के जाणे जगवंतो जी ॥ ख० ॥ १३ ॥ रामपुत्र कुब्जवारक नामथी, द्वारिका मांहि तेह जी ॥ मंदिर माथे रे आरोही करी, वचन कहे हवे एह जी ॥ ख० ॥ १४ ॥ नेम जिनेश्वरे मुजने एम कह्युं, चरमशरीरी तुंही जी ॥ द्वारिकामां मुजने बलतां थका, थाये विपरीत ते युंही जी ॥ ख० ॥ १५ ॥ जिनमत साचो रे जो होय इण समे, तो थाउं व्रतधारो जी ॥ जृंजक देवे रे मूक्यो तिण समे, प्रजु पासे ते कुमारो जी ॥ ख० ॥ १६ ॥ पल्लव देशे रे प्रजुजी विचरता, हवे हरि महिला जेह जी ॥ बत्रीश सहस तथा वली रामनी, अणसण आदरे तेह जी ॥ ख० ॥ १७ ॥ तेम वली नर नारी यादव तणी, तेम बहु कुमर हजारो जी ॥ नेम जिनेसर चित्तमां धारता, अणसण करेय तिवारो जी ॥ ख० ॥ १८ ॥ खट् मासवाला रे ते नयरी बली, साठ बहोंतर कुलकोनो जी ॥ जल थइ पछे सायर तिहां फर्यो, जेहनी हती नहीं जोनो जी ॥ ख० ॥ १९ ॥ धर्म कस्या ते रे उगरीया तिहां, धर्म ते सर्व आधारो जी ॥ चोथे खंडे रे चोथे चित्तशुं, धर्म करो सुविचारो जी ॥ ख० ॥ २० ॥ त्रीजे अधिकारे चोथी कही, पद्मविजये एह ढालो जी ॥ श्रीगुरु उत्तमविजय कृपा थकी, सुणतां मंगलमालो जी ॥ ख० ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ ११८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राम कृष्ण बेहु जणा, वावरता कंद मूल ॥ सयणासण भूये करे, पामंता दुःखशूल ॥ १ ॥ नदी गिरि निऊरणां पीये, पग वहे शोणितधार ॥ आंखे पण आंसु झरे, वेदन सहे अपार ॥ २ ॥ सोरठ मूकी आवीया, हस्तिकल्प पुर बाहार ॥ भूख लागी हवे कृष्णने, बलने कहे तिवार ॥ ३ ॥ अन्न पाणी आणो तुमे, तव चाल्या हली राय ॥ आपदे सिंहनाद सुणी, कहे तुमे आवजो धाय ॥ ४ ॥ एक मुडा आपी लीये, पुरमां जइ अन्न पान ॥ धृतराष्टर सुत तिण पुरे, अच्छदंत राजान ॥ ५ ॥ वात सुणी तिणे पल तणी, लेइ सेना चतुरंग ॥ आवी बलजड वींटीया, गोपुर दीधं ठरंग ॥ ६ ॥ सिंहनाद हलधर करे, सांजली ते गोविंद ॥ आवी गोपुरमां

जियो, करे संग्राम नरिंद ॥ ७ ॥ एक स्यंदन हलधर करे, आरखंम हरि हाथ ॥ लमता सैन्य चूरे सवे, जीत करे जडुनाथ ॥ ८ ॥ अन्न लेइ वलीया विहु, आव्या सरोवर पाल ॥ कोसंव उद्याने गया, नूखनी वेदन टाल ॥ ए ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ घटाजनी देशी ॥ ग्रीषम कालना जोरथी रे, लागी तरस अपार ॥ कृष्ण कहे वलजद्रने, खोली आणो तुम्हे वारि रे, सुके तालु ए वार रे, नवि चाली शकीये यार रे, वलजद्र कहे तिवार रे ॥ १ ॥ कर्म तणी गति एहवी मेरे लाल ॥ ए टेक ॥ लेइ आवुं पाणी अमे रे, तुमे रहेजो सावधान ॥ एम कहीने चालीया, जोवे पाणीनां थान रे, हरि सूता तेहज रान रे, आवी निडा असमान रे, पीतांबर एक परिधान रे ॥ क० ॥ २ ॥ वलजद्र बोले एम वली रे, ऊंचुं वदन निहाल ॥ बांधवनी रक्षा करो, वनदेवी तुमे रखवाल रे, तुम शरणे ए ठे बाल रे, तिणे जालवजो संजाल रे, हुं आवुं हुं ततकाल रे ॥ क० ॥ ३ ॥ हली तो पाणीने गया रे, आव्यो जराकुमार ॥ जावी जावना योगथी, रह्यो वृक्ष अंतर अविकार रे, हरिपाद ते मृगलो धार रे, वाण मूक्युं आकर्षी त्यार रे, विंधाणो पाद मोरार रे ॥ क० ॥ ४ ॥ सहसा उठी हरि कहे रे, किणे कीधो उल एह ॥ माहरी कोइए नवि हणी, एटला दिन पहेलां रेह रे, नाम गोत्र कहो तुमे केह रे, तव बोल्यो इण परे तेह रे, तुं सांजलजे ससनेह रे ॥ क० ॥ ५ ॥ वसुदेव राय राणी जरा रे, माय ताय मुज जाण ॥ राम कृष्णनो जाइ वमो रे, ते पण भ्राता गुणखाण रे, में सांजली जिननी वाण रे, तस रक्षाने इण वाण रे, नूख्यो तरष्यो रहुं राण रे ॥ क० ॥ ६ ॥ मुजने बार वरस गयां रे, सहेतां घणा कलेश ॥ नर नवि दीठो इण वने, तुं कोण अठे शुजवेश रे, तव बोले कृष्ण नरेश रे, जाइ आव आव शुज लेश रे, ताहरो फोक थयो कलेश रे ॥ क० ॥ ७ ॥ तेहज कृष्ण हुं जाणजे रे, ताहरो जे लघु भ्रात ॥ जिणे अरथे तुं वन रहे, जावी जाव ते आयात रे, जिनवयण न फोकट थात रे, जदि जग पलटाइ जात रे, पण जिनवचन नवि पलटात रे ॥ क० ॥ ८ ॥ जराकुमर सुणी इस्युं रे, कहे शुं कृष्ण ए जाय ॥ आवी दीठो कृष्णने, मूर्छा तेहने तिहां थाय रे, वल्युं चेत ते रुदन कराय रे, हा कृष्ण किहांथी ए ठाय रे, जेहथी नासीए ते आय रे ॥ क० ॥ ए ॥ दुःखजर

हैयडे रोवतो रे, पूछे कृष्णने एम ॥ द्वारिका शुं दाधी खरी, जडु केरो क्षय थयो तेम रे, मल्युं सर्व कह्युं जिन तेम रे, तुऊ देखीने चिंतुं एम रे, आइ एह थइ गयुं केम रे ॥ क० ॥ १० ॥ केशवे पण मांमी कह्यो रे, द्वारिका केरो दाह ॥ सांजली रोवे इण परे, जेम रोवरावे वृक्षनी साह रे, तस उपनुं दुःख अथाह रे, जाइ मार्यो निरअपराह रे, मुऊ होशे ते नरगनो राह रे ॥ क० ॥ ११ ॥ रुडुं करतां चूंकुं थयुं रे, पृथवी आपो माग ॥ एह शरीरे नरकमां, अमने छे दुःखनो लाग रे, मुऊ नरक अधिकं दुःख जाग रे, मुऊ कृष्ण उपर बहु राग रे, तेहने मार्यो विण आग रे॥क०॥ ॥ १२ ॥ प्रजुए ज्यारे जाखीयुं, त्यारे मरण न पाम्यो केम ॥ मुऊ मुवे जंदुं किस्युं, तुऊ जीवंतां जग क्षेम रे, तव कृष्ण कहे धरी प्रेम रे, मत शोक करो तुमे जेम रे, निपन्युं प्रजुए कह्युं तेम रे ॥ क० ॥ १३ ॥ कौस्तुज लेइ जाउ तुमे रे, वहेला पांमव पास ॥ व्यतिकर सघलो जाखजो, अमचो द्वारिकानो नाश रे, वहेलो इहांथी तुं नास रे, नहीं तो बलदेवने पास रे, जमराय आधीन ते याश रे ॥ क० ॥ १४ ॥ विपरीत पगलां यापजो रे, जेम नावे पूठे राम ॥ पांमवने खमावजो, अमचो अपराध ते आम रे, राज्य थंध गरवने धाम रे, दूर आप्युं रहेवा गाम रे, अन्याय कर्यो अमे ताम रे, डौपदी लेइ वलीया जाम रे ॥ क० ॥ १५ ॥ जराकुमर एम सांजली रे, काढ्युं पगथी बाण ॥ कौस्तुज रत्न लेइ गयो, पगलां विपरीत मंमाण रे ॥ वेदना हरिने अप्रमाण रे, तृणसंथारे करी गाण रे, एम बोले अवसर जाण रे ॥ क० ॥ १६ ॥ जिनवरने नमुं हर्षथी रे, शक्रे प्रणमित पाय ॥ शाश्वत सुख पाम्या जिके, तेम सिद्ध नमुं निर्माय रे, आचारिज तेम उवऊाय रे, तेम साधुना समुदाय रे, शिवसाधन करे उपाय रे ॥ क० ॥ १७ ॥ नमीये नेम जिनेसरु रे, जस मुऊने उपगार ॥ जव्यजीव प्रतिबोधता, मुऊने देखो इण वार रे, तुमे जगतवत्सल हितकार रे, ज्ञानादिक गुणजंडार रे, अतिशय वर चोत्रीश धार रे ॥ क० ॥ १८ ॥ जेह करी आशातना रे, तेह खमावुं खाम ॥ तुम उपगार न विसरुं, वार वार नमुं शिर नाम रे, जीवका सहु जीवने खाम रे, सहु गणजे मित्रने गाम रे, एम पामीश शाश्वत धाम रे ॥ ॥ क० ॥ १९ ॥ वेसी संथारे चिंतवे रे, धन्य श्रीनेमि जिणंद ॥ वरदत्तादिक राजवी, थया गेह तजी मुणींद रे, जस दूर गया दुःखदंद रे, शांबादिक कुम-

रनां वृंद रे, धन्य नाखे इम गोविंद रे ॥ क० ॥ २० ॥ राजीमती रुक्मिणी मुहा रे, धन्य जादवनी नार ॥ गृहवास ठांमीने जिणे, लीधो वर संजमनार रे, इम नावना नावे उदार रे, पण वेदननो नहीं पार रे, थयो वात प्रकोप प्रचार रे ॥ क० ॥ २१ ॥ ते डुःखमां वली सांजरी रे, द्वारिका नयरीनी झद्धि ॥ सहस वरस मुफने थयां, पण एम मुफ किणही न कीध रे, जेम दैपायने डुःख दीध रे, हुं एकलमल परसिद्ध रे, पण ए डुःख वेवा गिद्ध रे ॥ क० ॥ २२ ॥ जो देखुं हवे तेहने रे, तो क्षय आणुं तास ॥ तास उदरथी कुल सवे, काढुं पुर रुद्धि विलास रे, इम रौद्रध्यान अन्यास रे, वूटो तिहां आयुपाश रे, मरी पोहता नरकावास रे ॥ क० ॥ २३ ॥ सोल वरस कुमरपणे रे, उपन वरस मंमलिक ॥ नवसें अठावीश जाणीये, वासुदेवपणे तह कीक रे, जिहां कर्म कस्यां तिहां ठीक रे, त्रीजी नरक डुःख वीहीक रे, पहोता तेहमां न अलीक रे ॥ क० ॥ २४ ॥ चोथे खंडे पूरण थइ रे, प्रगट ए पांचमी ढाल ॥ पांच ढाले पूरो थयो, त्रीजो अधिकार रसाल रे, गुरु उत्तमविजय कृपाल रे, तस शिष्य पद्म कहे बाल रे, सुणतां होय मंगलमाल रे ॥ क० ॥ २५ ॥ सर्व गाथा ॥ १५२ ॥ इति श्रीमडुत्तमो० ॥ द्वारिकादाहकृष्णावसानकीर्त्तनो नाम चतुर्थखंडे तृतीयोऽधिकारः॥

॥ अथ चतुर्थखंडस्य चतुर्थोऽधिकारः प्रारन्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्री अरिहंत उपगारीया, तिम सिद्धज नगवान् ॥ सूरि वाचक मुनिवर नमुं, हेजे आणी ध्यान ॥ १ ॥ पद्मपत्रपुटमां नरी, जल लेइ आव्या राम ॥ अपशकुने करी वारीया, खलना लेहता ताम ॥ २ ॥ आव्या कृष्ण पोढ्या जिहां, उंच्या दीसे एह ॥ एम चिंती उना रहे, एक क्षण श्रीवन्न तेह ॥ ३ ॥ मुख उपर बहु मक्षिका, देखीने बलदेव ॥ वस्त्र दूर करीने जुवे, मृत जाण्या ततखेव ॥ ४ ॥ नेह घणो नाइ उपरे, हुआ जेम वज्रघात ॥ मूर्गा आवीने तिहां, कीधो पृथ्वीपात ॥ ५ ॥ शीतल वातादिक थकी, चेतन पाम्या जाम ॥ सिंहनाद मूके तिहां, महानीम तव राम ॥ ६ ॥ श्वापद सहु कंप्या तिहां, पडे ते पर्वतशृंग ॥ राम कहे मुफ नातनो, किण कस्यो गातर नंग ॥ ७ ॥ प्रगट थाओ ते पापीयो, जो होय सुनट सतेज ॥

सुख प्रमत्त थावक ऋषि, श्री कुष्ण हणे गतद्वेज ॥ ७ ॥ एम महोटे शब्दे
रोता जमे वन मांहि ॥ नवि दीठो हणनारने, पाछा आव्या त्यांहि ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ स्या माटे साहेब सामुं न जुर्ज ॥ ए देशी ॥ स्या माटे बंधव मुखथ
बोलो, आलिंगन करी जापे ॥ मोरारी रे ॥ गुनह विना गोविंदजी इणी
नवि बोलो स्ये आशे ॥ कंसारि रे ॥ १ ॥ स्या० ॥ अच्युत ए दुःख में
समाये, आ वनमां वनमाली ॥ मो० ॥ कृष्ण विना जे क्षण एक जाये, वा
वरस सो वाली ॥ कं० ॥ २ ॥ स्या० ॥ वाल्यो पाल्यो विष्णु उठेरयो
हाथे हरि दुलराव्यो ॥ मो० ॥ जाइ लघु पण गुण बहु जेहमां, किणे
वियोग कराव्यो ॥ कं० ॥ ३ ॥ स्या० ॥ आगलथी बोलता इंद्रानुज, आज
बोलाव्या न बोलो ॥ मो० ॥ दाधा उपर लूण न दीजे, वयण नारायण
बोलो ॥ कं० ॥ ४ ॥ स्या० ॥ शारंगधर अन्न सार करो ने, पुरुषोत्तम कहे-
वाउं ॥ मो० ॥ दामोदर तुमे मारी वेला, केम जनार्दन थाउं ॥ कं० ॥
॥ ५ ॥ स्या० ॥ पूरव प्रीति पीतांबर किहां गइ, विठ्ठल थापी प्रकाशो ॥
॥ मो० ॥ में अपराध न केशव कीधो, स्ये रुठा ते विमासो ॥ कं० ॥
॥ ६ ॥ स्या० ॥ चतुर चतुर्भुज एम न कीजे, रुपालुं गमनी माये ॥ मो० ॥
सोमसिंधु सामहिए जुर्ज. उठो तुमे यदुनाथ ॥ दन्तारि रे ॥ ७ ॥ स्या० ॥
धार घणी मुकने ज सार्गी. निंम न बोलो जगनाथ ॥ वार्दीरी रे ॥ आज
अपराध ते सघलो खमीये. नहीं कहुं पछी गोपीनाथ ॥ नरकारी रे ॥ ८ ॥
॥ स्या० ॥ श्रीधर सुणजो नहीं वेला. सविना शोरि जाय ॥ मो० ॥ विश्व-
रूपी तुमे देवकीसुत वेली आरज कराय ॥ कं० ॥ ९ ॥ स्या० ॥ माधव
मनमां आणी उठो. गरुडध्वज [illegible] ॥ मो० ॥ पद्मनाभ पद्मनाभ विश्वंभर,
मन नवि कीजे दुठ ॥ कं० ॥ १० ॥ स्या० ॥ श्रीवत्सलंछन एम रोता,
रान गइ उन्हा [illegible] ॥ मो० ॥ कहे रे वली मुकुंद मनावन. उठो मधुसूदन
॥ कं० ॥ ११ ॥ स्या० ॥ नवि उठे स्वामि [illegible] नव सन्नायन माही
॥ मो० ॥ दृपाकपि [illegible] [illegible] वड [illegible] ना माही ॥ कं० ॥ १२ ॥
स्या० ॥ [illegible] वन वन [illegible] [illegible] [illegible] ॥ मो० ॥
[illegible] प्रद्युम्न [illegible] [illegible] [illegible] ॥ कं० ॥ १३ ॥ स्या० ॥
महिना [illegible] एम [illegible] [illegible] ॥ मो० ॥ एम

भमतां वर्षाऋतुसमये, सिद्धारथ सुर जागे॥ कं० ॥ १४ ॥ श्या० ॥ बलदेवनो रथकार जे हुतो, तिणे जाण्युं उदिनाणे ॥ मो० ॥ तेह चिंते त्रिविक्रमरागे, एम करे एह अन्नाणे ॥ कं० ॥ १५ ॥ श्या० ॥ श्रीपतिमृतक वहे ए हलधर, माहारे प्रतिज्ञा एह ॥ मो० ॥ आपदमां प्रतिबोध ते देवो, एम चिंतवी आवे तेह ॥ कं० ॥ १६ ॥ श्या० ॥ एक पाषाण शकट विकुर्वी, पर्वतथी उतरंतो ॥ मो० ॥ कणवीनुं रूप करी तिहां वेगे, ते मुशली निरखंतो ॥ कं० ॥ १७ ॥ श्या० ॥ समभूमि कांइ शकट ते भांग्युं, सांधवा वेगे तेह ॥ मो० ॥ वल बोले रे करे शुं मूरख, केम संधाये एह ॥ कं० ॥ ॥ १८ ॥ श्या० ॥ तव ते बोल्यो सुणीये गदाग्रज, युद्ध सहसें न हणीयो ॥ ॥ मो० ॥ ते विण युद्ध मुवो मुऊ केशी, ते तें मन नवि गणीयो ॥ हलधारी रे ॥ १९ ॥ श्या० ॥ जीवशे जो शशिबिंदु ताहरो, तो ए शकट संधाशे ॥ ॥ ह० ॥ तव रुषी वलभद्र ते चाल्या, नवि मरे जिन एम भाखे ॥ ह० ॥ २० ॥ ॥ श्या० ॥ पथ्थर उपर पद्मिनी वावे, तव देवने वल बोले ॥ ह० ॥ पथ्थर उपर कज केम उगे, मूरख नहीं तुऊ तोले ॥ ह० ॥ २१ ॥ श्या० ॥ देव कहे तुऊ अनुज जो जीवे, तो ए कमल ते उगे ॥ ह० ॥ एम कह्ये रुग ते हलधरजी, वली आगल जइ पुगे ॥ ह० ॥ २२ ॥ श्या० ॥ दाधो वृक्ष ते जलथी सिंचे, वल देखी कहे तेहने ॥ ह० ॥ वलीया वृक्ष कहो किम उगे, तहारो आशय मुऊ कहेने ॥ ह० ॥ २३ ॥ श्या० ॥ ते कहे विष्वक्सेन जो जीवे, तो ए वृक्ष ते फलशे ॥ ह० ॥ आगल जइ वली देव देखाडे, ते देखी वल वलशे ॥ ह० ॥ २४ ॥ श्या० ॥ गोपी रूप करी लेइ दूर्वा, गोशव वदने देवे ॥ ह० ॥ वल कहे केम मुइ दूर्वा चरशे, तव ते देव ते कहेवे ॥ ह० ॥ २५ ॥ श्या० ॥ जो ए पूर्णपुरुष तुऊ बांधव, जीवशे तो ए खाशे ॥ ह० ॥ ते सुणी श्री वलभद्र विचारे, शुं ए वात खरी थाशे ॥ ह० ॥ २६ ॥ श्या० ॥ चोथे खंडने अधिकारे, वलभद्र प्रतिबोध लहेशे ॥ ह० ॥ पहेली ढाल पद्मविजये कही, मंगलिक वात सुर कहेशे ॥ ह० ॥ २७ ॥ श्या० ॥ सर्व गाथा ॥ ३६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इत्यादिक दृष्टांतथी, चिंतवे श्री वलभद्र ॥ केम सद्गुरु भाखे इश्युं, मरण लह्या उपेंद्र ॥ १ ॥ इण अटवीमां को नहीं, दीसे माणस रूप ॥ एह पुरुष केम एकलो, कहेतो विष्णु सरूप ॥ २ ॥ कोइक कारण देखीये,

एम चिंते हलधार ॥ सुरवर ते परगट थइ, बोले वाणी तिवार ॥ ३ ॥ सिद्धारथ सारथि तणुं, रूप करी कहे एम ॥ तुम वचने हुं आवीयो, प्रतिबोधनने प्रेम ॥ ४ ॥ जराकुमर बाणे करी, जलशय पाम्या काल ॥ जे प्रभु नेमे जाणीयुं, ते नुं वचन संजाल ॥ ५ ॥ इत्यादिक सवि सांजली, प्रतिबुज्या बलदेव ॥ ते सुरने कहे शुं करुं, बन्धु गयो दुःख देव ॥ ६ ॥ सुर कहे व्रत लेवुं घटे, तुमे जिन नेमना जाव ॥ सुणी एम सुर बल दाह दे, चक्रपाणिनी काय ॥ ७ ॥ विद्याधर मुनि नेमजी, मोकले जाणी जाव ॥ बल पण संजम आदरे, जे भवसायर नाव ॥ ८ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ वावो वावोने राज, मोंघां मूलां मोती ॥ए देशी॥ वंदो वंदो रे आज, एहवा मुनिवर वंदो ॥ मागीतुंगी पर्वत उपर, जइने पाप निकंदो ॥ वं० ॥ १ ॥ तेह गिरि उपर तप करतां, सिद्धारथ रहे पासे ॥ एक दिन मासखमणने पारण, जाये गोचरी आशे ॥ वं० ॥२॥ एक नारे दीठा ते मुनिवर, कामदेवने रूप ॥ कूवा कांठे उजी मोही, निरखे करी करी चूंप ॥ वं० ॥३॥ घट साटे निज पुत्रने फांस्यो, मुनिवर पण ते देखी ॥ नारीने कही बलजद्र वन चाल्या, गोचरी पण उवेखी ॥ वं० ॥ ४ ॥ धिग् मुफ रूप अनर्थनुं कारण, नवि आवुं पुर मांहि ॥ काष्ठहारादिक पासे लेशुं, जिक्षा रहीने त्यांहि ॥ वं० ॥ ५ ॥ तिहां जइ दुःकर तप बहु करता, काष्ठहारादिक पासे ॥ जिक्षा लइने पारणुं करता, एक कर्मक्षयनी आशे ॥ वं० ॥ ६ ॥ काष्ठहारादिक जइ ते पुरमां, राजाने कहे वात ॥ एक पुरुष बलवंत तपस्वी, ए गिरि उपर ख्यात ॥ वं० ॥ ७ ॥ राजा चिंते शंका पाम्यो, राज्य इहा थकी मोहोशे ॥ ए तपनुं फल जाणुं निश्चे, राज्य लखमी मुफ जोशे ॥ वं० ॥ ८ ॥ मारुं आगलथी एम चिंती, सेना लेइ चतुरंग ॥ वल विंट्या तव सिद्धारथ सुर, सान्निधि करे उछरंग ॥ वं० ॥ ए ॥ सिंहरूप तिहां महाभयकारी, ते पण देखे अनेक ॥ देखी चमक्यो राजा प्रणम्यो, मुनिने धरीय विवेक ॥ वं० ॥ १० ॥ राजा निज स्थानक ते पहोतो, हवे बलने उपदेशे ॥ वाघ प्रमुख तिहां शांत थइने, मुनि पासे उपवेशे ॥ वं० ॥ ११ ॥ केइक श्रावक केइक जद्रक, केइ करे काउस्सग्ग ॥ केइक अणसण केइ तपस्या, करता पशुना वग्ग ॥ वं० ॥ १२ ॥ मांस आहार त्याग करे केइ, केइ रहे

नित पासे ॥ तिर्यंचरूपे शिष्य तणी परे, दीसे शुज अभ्यासे ॥ वं० ॥ १३ ॥ एक मृगलो जातिसमरणथी, मुनि पूरव जवनेहे ॥ मुनिवर साथे जाय ने आवे, सेवा करे निज देहे ॥ वं० ॥ १४ ॥ काष्ठहार मुख खोळे वनमां, ते हरणो मुनि माटे ॥ शुद्ध आहारादिक देखी जापे, मुनि चालो ए वाटे ॥ वं० ॥ १५ ॥ मुनि पण तस आग्रहथी जाये, पारणे लेवा आहार ॥ एम दिन दिन करतां एक दिन मृगे, दीठा तिहां रथकार ॥ वं० ॥ १६ ॥ आहार देखी सूजतो ते मृगलो, शानाए मुनिने जाखे॥ एम कही मुनिवर आगल चाले, मृगलो मारग दाखे॥ वं० ॥ १७ ॥ रथकारे दीठा मुनिवरने, मासखमण तपकारी ॥ इण अटवीमां कल्पतरु परे, मुनिवर ए निर्धारी ॥ वं० ॥ १८ ॥ मुज लगे किहांथी एह तपस्वी, महारूपस्वी शांत॥ महातेजस्वी महागुणवंता, दीसे एह महांत ॥ वं० ॥ १९ ॥ चोथे खंडे ने अधिकारे, बीजी ढाल रसाल ॥ पद्मविजय कहे रथकारकनां, जाग्यां जाग्य विशाल ॥ वं० ॥ २० ॥ सर्व गाथा ॥ ६४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अहो जाग्य आज माहरुं, आव्या श्रीऋषिराय ॥ पदकज प्रणमे साधना, आणंद अंग न माय ॥ १ ॥ स्वामी मुज पावन करो, ल्यो ए शुद्ध आहार ॥ मुनि पण योग्य जाणी हवे, चिंते इम निर्धार ॥ २ ॥ शुद्ध पात्र कोइ पेखीये, जो नवि लावुं आहार ॥ तो पुण्यमां अंतरायनो, कारण थाउं निर्धार ॥३॥ करुणानिधि एम चिंतवी, निरपेक्षी निज देह॥ मृगलो मन हरखे घणुं, आहार लीये मुनि तेह ॥ ४ ॥ मुनि रथकारक देखीने, मृगलो चिंते एम ॥ धन्य ए रथकारक जिणे, मुनि पडिलाभ्या केम ॥५॥ धन्य एह गुरु निःस्पृही, तारण तरण जहाज ॥ हुं नवि कांहि करी शकुं, धिक् जमवारो आज ॥ ६ ॥ धर्म ध्यान ततपर त्रिहुं, उजा ते एम जाम ॥ अर्धछेदी तरुशाख तिहां, त्रूटी वायरे ताम ॥ ७ ॥ चंपाणा त्रणे जणा, काल करी ततखेव॥ पद्मोत्तर वेमानमां, ब्रह्मलोके सहु देव॥८॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ माली केरा बागमां ॥ मन जमरा रे ॥ ए देशी ॥ सो वरस व्रत पालीयुं मुनिराजे रे, दे उपयोग ते राम॥ देव विराजे रे॥ मात देखे त्रीजी नरकमां दुःख सेहेता रे, वैक्रिय शरीर करे ताम ॥ मुख बहु वहेता रे ॥ १ ॥

गदाधर मोहे करी तिहां आवे रे, कृष्ण आलिंगी तेह वात सुणावे रे॥ भाइ
चालो तुमे स्वर्गमां लेइ जाउं रे, तुम दुःख देखी एह हुं दुःख पाउं रे
॥२॥ अग्रज तुमचो राम हुं मत बीहो रे, कहो ते करुं तुम काम रात
ने दिहो रे॥ एम कही कृष्ण लीधा करे सुख देवा रे, पण न ग्रही शके राम
सुरवर जेहवा रे॥३॥ पारद परे विखरी जाये जेवा मले रे, पामे दुःख
अत्यंत हरि बहु कलकले रे॥ भाइ भगवंते भाखीयुं इम हरि कहे रे, विषय
थकी अनंत दुःख प्राणी लहे रे॥४॥ ते न निवारी को शके तेहज खमे
रे, तिणे न करो प्रयास मुजने नवि गमे रे॥ निज कृत दुःख सुख सहु लहे
तव सुर कहे रे, कांइक काम प्रकाश करीये गहगहे रे॥५॥ कहो तो तुम पासे
रहुं दुःख वारवा रे, तव कहे प्रश्निशृंग समत्र कोण तारवा रे॥ पण एक
दुःख मुज नरथी हैयडुं दहे रे, सुर कहे कहो उछरंग ध्याने नवि कहे रे॥६॥
शतावर्त बोले तदा द्वारिका बली रे, दुःख पाम्या सहु संत आंतरनी कलकली
रे॥ सुख पाम्या खलजन बहु देखी आपदा रे, वली अकाले अंत हुं पाम्यो
तदा रे॥७॥ तिणे जाउ तुमे भरतमां एम दाखवो रे, विकुर्वी विमान
मांहि मुज थापवो रे॥ शंख गदा शारंग सहु पासे थापजो रे, रही आकाशे
वाणी इम प्रकाशे वाणिज्यो रे॥८॥ देश पुर गामे सहु भणी सुणा-
वजो रे, अमे जीवता हरि राम एम जणावजो रे॥ संहरीये सहु जगत
ने उपजावीये रे, तिणे द्वारिकापुर गाम अमे निपजावीये रे॥९॥ तिणे
पाछी अमे संहरी एम जाणजो रे, करता हरता देव अने पीछाणजो रे॥
स्वर्गे पण जाउं अमे इहां आवुं रे, इच्छित क्रीडा जेम अमे बनावुं रे॥१०॥
वडपुरुषना मुख थकी एम सांभली रे, आवे भरत मझार ते सुरवर हर्षी
रे॥ जे दाशार्हे भाखीयुं तेम सहु कर्युं रे, वली नासे बहु वार लोकने
भ्रमकरु रे॥११॥ प्रतिमा भरावो अम्ह तणी पूजा करो रे, सर्वव्यापी
एम सार तुमे एम मन धरो रे॥ गाम गाम पुर देशमां देउल कर्यां रे,
जल थल वाट मझार कृष्णमंदिर धर्यां रे॥१२॥ जे पूजा करे तेहनी वांछी
पूरवे रे, आशा धनादिक तेह दुःख सवी चूरवे रे॥ जे नवि पूजे तेहने
तस दुःख दीये रे, वृद्धि मिथ्यात्वनी तेह थइ एम जाणीये रे॥१३॥ वर्ते
आज लगी इसी एम सुर करी रे, पछी तो स्वर्ग मझार गइ दुःख मन

नित पासे ॥ तिर्यंचरूपे शिष्य तणी परे, दीसे शुज अन्यासे ॥ वं० ॥ १३ ॥ एक मृगलो जातिसमरणथी, मुनि पूरव नवनेहे ॥ मुनिवर साथे जाय ने आवे, सेवा करे निज देहे ॥ वं० ॥ १४ ॥ काष्टहार मुख खोले वनमां, ते हरणो मुनि माटे ॥ शुद्ध आहारादिक देखी नापे, मुनि चालो ए वाटे ॥ वं० ॥ १५ ॥ मुनि पण तस आग्रहथी जाये, पारणे लेवा आहार ॥ एम दिन दिन करतां एक दिन मृगे, दीठा तिहां रथकार ॥ वं० ॥ १६ ॥ आहार देखी सूऊतो ते मृगलो, शानाए मुनिने नाखे ॥ एम कही मुनिवर आगल चाले, मृगलो मारग दाखे ॥ वं० ॥ १७ ॥ रथकारे दीठा मुनिवरने, मासखमण तपकारी ॥ इण अटवीमां कल्पतरु परे, मुनिवर ए निर्धारी ॥ वं० ॥ १८ ॥ मुऊ लगे किहांथी एह तपस्वी, महारूपस्वी शांत ॥ महातेजस्वी महागुणवंता, दीसे एह महांत ॥ वं० ॥ १९ ॥ चोथे खंडे ने अधिकारे, बीजी ढाल रसाल ॥ पद्मविजय कहे रथकारकनां, जाग्यां नाग्य विशाल ॥ वं० ॥ २० ॥ सर्व गाथा ॥ ६४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अहो नाग्य आज माहरुं, आव्या श्रीऋषिराय ॥ पदकज प्रणमे साधना, आणंद अंग न माय ॥ १ ॥ स्वामी मुऊ पावन करो, ल्यो ए शुद्ध आहार ॥ मुनि पण योग्य जाणी हवे, चिंते इम निर्धार ॥ २ ॥ शुद्ध पात्र कोइ पेखीये, जो नवि लावुं आहार ॥ तो पुण्यमां अंतरायनो, कारण थाउं निर्धार ॥ ३ ॥ करुणानिधि एम चिंतवी, निरपेक्षी निज देह ॥ मृगलो मन हरखे घणुं, आहार लीये मुनि तेह ॥ ४ ॥ मुनि रथकारक देखीने, मृगलो चिंते एम ॥ धन्य ए रथकारक जिणे, मुनि पमिलान्या केम ॥ ५ ॥ धन्य एह गुरु निःस्पृही, तारण तरण जहाज ॥ हुं नवि कांहि करी शकुं, धिक् जमवारो आज ॥ ६ ॥ धर्म ध्यान ततपर त्रिहुं, उना ते एम जाम ॥ अर्द्धछेदी तरुमाल तिहां, त्रूटी वायरे ताम ॥ ७ ॥ चंपाणा त्रणे जणा, कालकरी ततखेव ॥ पद्मोत्तर वेमानमां, ब्रह्मलोके सहु देव ॥ ८ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ माली केरा बागमां ॥ मन नमरा रे ॥ ए देशी ॥ सो वरस व्रत पालीयुं मुनिराजे रे, दे उपयोग ते राम ॥ देव विराजे रे ॥ मार्ज देखे त्रीजी नरकमां दुःख लेहेता रे, वैक्रिय शरीर करे ताम ॥ सुख बहु वहेता रे ॥ १ ॥

गदाधर मोहे करी तिहां आवे रे, कृष्ण आलिंगी तेह वात सुणावे रे॥ जाइ
वाशो तुमे स्वर्गमां लेइ जाउं रे, तुम डुःख देखी एह हुं डुःख पाउं रे
॥ २ ॥ अग्रज तुमचो राम हुं मत वीहो रे, कहो ते करुं तुम काम रात
ने दिहो रे ॥ एम कही कृष्ण लीधा करे सुख देवा रे, पण न ग्रही शके राम
सुरवर जेहवा रे ॥ ३ ॥ पारद परे विखरी जाये जेवा मले रे, पामे डुःख
अत्यंत हरि बहु कलकले रे ॥ जाइ जगवंते जाखीयुं इम हरि कहे रे, विषय
थकी अनंत डुःख प्राणी लहे रे ॥ ४ ॥ ते न निवारी को शके तेहज खमे
रे, तिणे न करो प्रयास मुजने नवि गमे रे ॥ निज कृत डुःख सुख सहु लहे
तव सुर कहे रे,कांहिक काम प्रकाश करीये गहगहे रे॥५॥ कहो तो तुम पासे
रहुं डुःख वारवा रे, तव कहे प्रश्निशृंग समठ कोण तारवा रे ॥ पण एक
डुःख मुज नरथी हैयडुं दहे रे, सुर कहे कहो उठरंग श्याने नवि कहे रे ॥६॥
शतावर्त बोले तदा द्वारिका बली रे,डुःख पाम्या सहु संत आंतरमी कलकली
रे ॥ सुख पाम्या खलजन बहु देखी आपदा रे, वली अकाले अंत हुं पाम्यो
तदा रे ॥ ७ ॥ तिणे जाउं तुमे जरतमां एम दाखवो रे, विकुर्वी विमान
मांहि मुज थापवो रे ॥ शंख गदा शारंग सहु पासे थापजो रे, रही आकाशे
वाणी इम प्रकाशे वाणिज्यो रे ॥ ८ ॥ देश पुर गामे सहु जणी सुणा-
वजो रे, अमे जीवता हरि राम एम जणावजो रे ॥ संहरीये सहु जगत
ने उपजावीये रे, तिणे द्वारिकापुर गाम अमे निपजावीये रे ॥ ए ॥ तिणे
पाठी अमे संहरी एम जाणजो रे, करता हरता तेप अमे पीठापजो रे॥
स्वर्गे पण जाउं अमे इहां आवुं रे, इछित क्रीमा जेप अमे पनावुं रे ॥ १० ॥
पञ्चपुरुपना मुख थकी एम सांजली रे, आवे जरत मजार ते सुरवर हली
रे ॥ जे दाशार्हे जाखीयुं तेम सहु कस्युं रे, वली जाखे बहु वार लोकने
ग्रमकरु रे ॥ ११ ॥ प्रतिमा जरावो अम्ह तणी पूजा करो रे, सर्वव्यापी
एम सार तुमे एम मन धरो रे ॥ गाम गाम पुर देशमां देठल कर्यां रे,
जल थल वाट मजार कृष्णमंदिर धर्यां रे ॥ १२ ॥ जे पूजा करे तेहनी वली
पूरवे रे, आशा धनादिक जेह डुःख घणी चूरवे रे ॥ जे नवि पूजे तेहने
तस डुःख दीये रे, वृद्धि मिथ्यात्वनी तेह एइ एम जाणीये रे ॥ १३ ॥ घणें
आज लगी दृढी एम सुर करी रे, पहोतो स्वर्ग मजार बाइ डुःख मन

धरी रे॥ चोथे अधिकारे त्रीजी कही चोथे खंमे रे, पद्मविजय जयकार रंग अखंमे रे ॥ १४ ॥ सर्व गाथा ॥ ८६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे पांमव पासे तदा, पहोतो जराकुमार ॥ वात कही सवि तेहने, कर्णपुटे दुःख धार॥ १॥ इण परे द्वारिका परजली, अग्निशयन इम अंत॥ कोस्तुज आपे तेहने, सघलो कही विरतंत॥ २॥ तेह सुणी दिलगीर बहु, रुदन करे तिणी वार ॥ वरस लगे शोकज धस्यो, प्रेतकारय करे त्यार॥ ३॥ जाणी संसार असारता, व्रत आदरवा मन्न ॥ जाणी नेमि जिनेसरु, रुषि मोकले ते दिन्न ॥ ४ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ हस्तिनागपुर वर जलुं ॥ ए देशी ॥ धर्मघोष मुनि राजीया, जे चार ज्ञानना धार रे ॥ पांचसें मुनिवरे परवस्या, मुनि नाम यथारथ धार रे ॥ १ ॥ मुनि नाम यथारथ धार, संवेगगुणे वाधता रुषिराय रे ॥ रुषिराय सुगाय अवग्रह,याचीने विचरंत रे॥ पांमव पांचे सांजल्यो,मुनि आगमनो उदंत रे॥ देशना सुणी राय जागीया, उपन्यो वेराग महंत रे॥ उ०॥ २ ॥ द्रोपदी साथे पांमवा, करी महोछव अति विस्तार रे॥ राज्य थापी जराकुमरने, सहुए लीधो संयमजार रे॥ स०॥ ३॥ अजिग्रह करे अति आकरा, तेहमां जीम अजिग्रह जीम रे ॥ कुंत अग्रे नाखी जतो, आहार देशे तो लेशुं ए नीम रे ॥ आ० ॥ ४॥ मास उए पूरो थयो, ते अजिग्रह घोर उदार रे ॥ अनुक्रमें मही पावन करे, रुषि द्वादशांगीना धार रे॥ रु०॥ ५॥ अरिहंत नेम जिनेश्वरु, वंदनने धरी उमाह रे॥ मासखमणनुं पारणुं, करता चाल्या उछाह रे ॥ क० ॥ ॥ ६ ॥ जगवंत पण बहु देशमां, करी अप्रतिबंध विहार रे ॥ उत्तर देशे विचरीया, शतपुर नयरादिक गार रे ॥ श० ॥ ७ ॥ श्रीमंत नगर जइ विचरीया, प्रजु म्लेछ देश विचरंत रे॥ नरपति शेठ सेनापति, प्रजु धर्मनारगमां ठवंत रे ॥ प्र० ॥ ८ ॥ आर्य अनार्य एणी परें, विचरी आवे श्रीमंत रे॥ विचरी किरातना देशमां, प्रजु श्रीमंतथी उतरंत रे ॥ प्र० ॥ ॥ ए ॥ विचरे दक्षिण देशमां, प्रतिबोधे जव्यनां वृंद रे॥ एम धरती पावन करी, अरिहा प्रजु नेमि जिणंद रे ॥ अ० ॥ १० ॥ गणधर अग्यारे करी, मुनि परिवस्या सहस अढार रे ॥ प्रणमें प्रजुने पदकजे, साधवी चालीश

हजार रे ॥ सा० ॥ ११ ॥ चारसें चौद पूरवधरा, तेम पनरसें उहिनाणी रे ॥ केवली वैक्रियधर वली, जाल्या पनरसें हित आणी रे॥ जा० ॥ १२ ॥ एक सहस मणपज्जवा, हवे श्रावकसंख्या धार रे ॥ एक लाख उपर तथा, वली उगणोतेर हजार रे ॥ व० ॥ १३ ॥ त्रण लाख उपर वली, श्राविका छत्रीश हजार रे ॥ स्तवितो थुणितो सेवीजतो, देव देवी तथा नर नार रे ॥ दे० ॥ १४ ॥ मोक्षसमय जाणी करी, प्रभु पहोता गढ गिरनार रे॥ वनराजी विकसी रही, दीसे पर्वत अति मनोहार रे॥ दी० ॥ १५ ॥ आसन कंप्यां इंद्रनां,जाणी प्रभु समय निर्वाण रे॥ नवनपति आवे व्यंतरा, तेम जोइस ने वेमाण रे ॥ ते० ॥ १६ ॥ समवसरण तेम विरचीयुं, सिंहासन वेसे जिणंद रे ॥ पूरव दक्षिणे गणधरा, प्रभु प्रणमी वेसे मुणींद रे ॥ प्र० ॥ १७ ॥ तास पूठे केवली वली, तेहनी पूठे मननाण रे ॥ अवधिज्ञानी तेहनी पूठे, तस पूठे शेष मुनि जाण रे ॥ त० ॥ १८ ॥ वेमानिकनी अपछरा, एहज दिशि साधवी सार रे ॥ दक्षिण दिश पेसी वेसे,दक्षिण पश्चिम त्रण धार रे ॥ द० ॥ १९ ॥ नवन व्यंतर ज्योतिषी तणी, देवी अति रूपनिधान रे ॥ पश्चिम दिशि पेसी उपविशे, पश्चिम उत्तर त्रण थान रे॥ प० ॥ २० ॥ नवनपति वण ज्योतिषी, हवे त्रण उत्तर दिशि आवी रे ॥ पूरव उत्तर स्थानके, नर नारी वेमानिक गावी रे ॥ न० ॥२१॥ एम चिहुं दिशि चार पर्षदा, वीजा गढमां तिरियंच रे ॥ जातिवैर विसारीने, सुणे देशना धर्मने संच रे ॥ सु० ॥ २२ ॥ त्रीजे गढे वाहन रहे, प्रभु देशना दीये सुरसाल रे॥ देशना सुणी केइ व्रत लीये, केइक श्रावक नड्क जाल रे ॥ के० ॥ २३ ॥ चोथे खंडे चोथी कही, ढाल रुडी चोथे अधिकार रे॥ पद्मविजय कहे नेमजी, दीधी देशना नवि उपगार रे॥ दी० ॥२४॥ सर्व ॥ गाथा ११४॥

॥ दोहो सोरठी ॥

॥ त्रणसें वरस गृहवास, कुमार अवस्थाए रह्या ॥ पठे दीक्षा सुविलास, चोपन दिन परिसह सह्या ॥१॥ दोहा ॥ चोपन दिन ऊणा वली,सातसें वरस प्रमाण ॥ प्रभुजी विचरया केवली, नवि एक सहस वखाण ॥२॥ मासनक्त अणसण करी,पादपोपगम सार॥ शेलेशीकरणे करी,ध्यान शुक्र विचार॥३॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ देशी उलालानी ॥ नेमजी इण अणसण कीधुं रे, बहु रुपिए पण लीधुं

रे ॥ आषाढ उज्ज्वल मास रे, आठम दिन सुविलास रे॥ १ ॥ चार अघार
ने नाश रे, त्रोमी कर्मना पाश रे ॥ पांचसें छत्रीश साध रे, साथे टाली उप
रे ॥ २ ॥ सिद्धि इक समयमां वरीया रे, शाश्वत सुख अनुजवीया रे॥ सि
बुद्ध जिनराय रे, सर्व दुःख क्षय थाय रे ॥३॥ परिनिर्वृत जगवान् रे, पा
लोकाग्र थान रे ॥ अज अजरामर जेह रे, अशरीरी गतनेह रे ॥ ४ ॥ अव
बाध अखंम रे, शुद्ध गुणपज्जव पिंड रे ॥ वर्ण न गंध न फास रे,
संगाणनो नाश रे ॥५॥ गुण सवि क्षायिक नावे रे, अणाहारी प्रजु थावे
॥ न करे दान आदान रे, परपुरुखनुं निदान रे ॥ ६ ॥ योग ने लेश्या
तीत रे, राग ने द्वेष व्यतीत रे ॥ इम गुण अनंतनो स्वामी रे, संपूरण न
सामी रे ॥ ७ ॥ प्रद्युम्न शांब कुमार रे, अग्रमहिषी कृष्ण नार रे ॥ जिन
रना बहु ज्रात रे, केहना केहना कहुं अवदात रे॥ ८ ॥ बीजा बहु मुनि
राय रे, तेम साधवी समुदाय रे ॥ राजीमती तेम जाणो रे, मोक्ष लह्या
सुजाणो रे ॥ ९ ॥ समुद्रविजय नरराय रे, माहिंद कल्पमां जाय रे ॥ शिव
देवी जिनमाय रे, पहोतां तिणहीज गाय रे ॥ १० ॥ यदुक्तं ॥ नागेसु उस
ज पिया, सेसाणं सत्त जंति ईसाणे ॥ अठय सणंकुमारे, माहिंदे अठ अण
कमसो ॥ १ ॥ आइ जिणाण ठण्हं, गयाउ मुरकंमि अठ जणणीउ ॥ अठ
सणंकुमारे, माहिंदे अठ वचंति ॥ २ ॥ जाणी प्रजु निरवाण रे, चोस
इंद्र मंकाण रे॥ प्रजु पुर उंगण करता रे, आनंद अंग न धरता रे ॥११॥ स्वाम
कुण देशना देशे रे, हितशिक्षा कुण कहेशे रे ॥ प्रजुजी कहेने कहेशुं
कुण मुख देखी गहगहशुं रे ॥ १२ ॥ स्वामी केम नवि बोलो रे, उत्तर एक त
खोलो रे ॥ नयणे करी प्रजु निरखो रे, अमीयरसांबुद वरखो रे ॥ १३
एम बहु शोक संताप रे, करता टलवल्ल आप रे॥ सुरपति आणायी कीर्ध
रे, धनदे शिबिका प्रसिद्धि रे ॥ १४ ॥ ते पण रुदन करंतो रे, प्रजुविरहो
ख्रमंतो रे॥ चरची चंदन शुद्ध रे, शिबिकाए थापे विबुध रे॥१५॥ नैरुतकूणम
थावे रे, तिहां नवी चय विरचावे रे॥गोशीर्ष चंदने पूरे रे,खेद विषाद संपूरे
॥ १६ ॥ प्रजुतनु चय मांहि थापे रे, आणा अग्निकुमरने आपे रे॥ अग्नि रचे
सुर तेह रे, वायुकुमर वायु जेह रे ॥ १७॥ क्षीरसायर जल रेडे रे, अस्थि ग्रका
आने केडे रे॥ उपली दक्षिण ने वाम रे,दाढा उज्ज्वल ताम रे ॥१८॥ सोहम
ईशान देवे रे, चमर बली अध लेहवे रे॥ शेष सुरा अठि आदि, वे एक एक

वादी रे ॥ १९ ॥ देवीउं फूल लेइ जावे रे, ते तो मनमां बहु दुःख पावे रे॥ प्रभु संभारवा काज रे, भस्म लेवे केइ नरराज रे ॥ २० ॥ प्रभु संस्कारने ठाम रे, वज्री वज्रे करी ताम रे॥ लखता लक्षण ने नाम रे, सुरपति भक्तिने काम रे ॥ २१ ॥ चैत्य करे जिन नेम रे, प्रतिमा थापे ते प्रेम रे ॥ कुमति तथा उन्माद रे, मोडे आपे आह्लाद रे ॥ २२ ॥ जिनप्रतिमा जिन सरखी रे, जाणी में आगम परखी रे ॥ सहु नंदीसरे जावे रे, अठाइ महोछव तिहां थावे रे ॥ २३ ॥ सहु निज निज थानक जाइ रे, जंबुद्वीपपन्नत्ति मांइ रे ॥ ए अधिकार ते भाख्यो रे, चरित्र मांहे पण दाख्यो रे॥ २४ ॥ चोथे खंडे ए ढाल रे, कही पांचमी अतिहि रसाल रे ॥ चोथा अधिकारमां दाखी रे, मुनि पद्मविजये चित्त राखी रे ॥ २५ ॥ सर्व गाथा ॥ १४२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ विचरंता पांडव हवे, वंदन उल्लसित भाव ॥ हस्तिकल्पपुर आवीया, भवसायरमां नाव ॥ १ ॥ बार योजन रेवतगिरि, जाणी चिंते एम ॥ आपण करशुं पारणुं, जिनवर वांदी नेम ॥ २ ॥ सूर्य उदये एम सांभल्युं, प्रभु पाम्या निर्वाण ॥ असक पड्यो तव भ्रासको, आयुबले रहे प्राण ॥ ३ ॥ मनना मनोरथ मन रह्या, नवि पहोता गिरनार ॥ प्रभुजी नवि वांदी शक्या, हीनपुण्य शिरदार ॥ ४ ॥ यतः ॥ वनकुसुमं कृपणश्रीः, कूपछाया सुरंगपुत्री च ॥ तत्रैव यांति विलयं, भाग्यविहीना मनोरथाः मे ॥ १ ॥ आहार लेवो भुगतो नहीं, प्रभुजी थया अणाहार ॥ आपणे अणसण श्रेय छे, एम सहु करे विचार ॥ ५ ॥ श्रीसिद्धाचल उपरे, करे ते अणसण सार ॥ ज्ञातासूत्र चरित्रमां, भाख्यो एह प्रकार ॥ ६ ॥ वीश कोडि मुनि परवर्या, पांडव पाम्या सिद्ध ॥ एम भाख्युं ग्रंथांतरे, पण छे परसिद्ध ॥ ७ ॥ द्रौपदी ब्रह्मलोके गइ, तिहांथी मनुज अवतार ॥ लेहशे शाश्वत सुख जहां, अजर अमर अविकार ॥ ८ ॥

॥ ढाल छठी ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ धुणीयो धुणीयो रे में तुं सुरपति जिम धुणीयो ॥ ए देशी ॥ गायो गायो रे में नेम जिनेसर गायो ॥ नेम जिनेश्वर स्तवना करतां, आनंद अंग न मायो रे ॥ नें० ॥ १ ॥ नव नव एह संबंध कह्यो में, नव समय सुखदायो ॥ अधिक अधिक रस सुणतां केहने, आणंद अंग न

थायो रे ॥ मं० ॥ २ ॥ नाम गोत्र जस कांति सुण्याथी, महाफल सूत्रे कहायो ॥ तेणे तेहना गुण कीर्त्तन करतां, अधिक अधिक फल पायो रे ॥ मं० ॥ ॥ ३ ॥ श्रुत व्याकरणादिक जे ग्रंथा, नहीं तेहवो मुऊ मायो ॥ केवल जिन गुण नक्ति थकी ए, रास रुनो विरचायो रे ॥ मं० ॥ ४ ॥ विनयधर्म वली नीति अनोपम, ब्रह्मचर्य सुसवायो ॥ ब्रह्मचारी प्रजुना गुण गातां, ब्रह्म अपूरव पायो रे ॥ मं० ॥ ५ ॥ एह रासमां दूषण काढी, पंमित जन शोधायो ॥ हित किरपा आणी मुऊ उपर, सहु परमाण करायो रे ॥ मं० ॥ ॥ ६ ॥ जे खल लोक करे पर मछर, तास वचन न गणायो ॥ जो न गमे अनव्यने जिनवर, पण सोनागी ठरायो रे ॥ मं० ॥ ७ ॥ श्रीवसुदेवहींमी नवजावन, नेमिचरित्र समुदायो ॥ पासे राखी रास रच्यो में, अधुर विण न कहायो रे ॥ मं० ॥ ७ ॥ जे महारी मतिथी में नाख्युं, शास्त्र अतिक्रम जायो ॥ तस मिछा डुक्कम मुऊ होजो, पाप रति न रखायो रे ॥ मं० ॥ ॥ ए ॥ चोथे खंमे चोथे अधिकारे, उठी ढाल गवायो ॥ उंगणीश पट्ट पण पट्ट ढाले करी, चोथो खंम सवायो रे ॥ मं० ॥ १० ॥ प्रथम जिनेश्वर चरण पसाये, गुरु उत्तम गुण रायो ॥ तास कृपाथी पद्मविजय कहे, परमातम प्रजु गायो रे ॥ मं० ॥ ११ ॥ सर्व गाथा ॥ १६१ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ देशी हमचमीनी ॥ वर्द्धमान जिनशासन नायक, तस गणधर अग्यार ॥ तेहमां सोहम पंचमा गणधर, हुआ प्रथम पटधार रे ॥ हमचमी ॥ १ ॥ अनुक्रमे जंबू प्रमुख बहु पटधर, चोंयाळीशमें पाट ॥ श्रीजगचंड सूरिवर जेणे, रोप्या धर्मना घाट रे ॥ हम० ॥ २ ॥ वर्द्धमान तपथी जस राणे, तपाबिरुद ते दीधुं ॥ तेहु नाम ए गुणथी पाम्या, जगजन मांहि प्रसिद्धु रे ॥ हम० ॥ ३ ॥ देवेंड सूरि प्रमुख क्रमे आव्या, आणंदविमल सूरींदो ॥ जिणे क्रियाउद्धार ते कीधो, कुमतिमां जेम दिणंदो रे ॥ हम० ॥ ४ ॥ विजयदान सूरि तस पटधर, हीरविजय सूरिराया ॥ अकबरसाहे जास वचथी, पम्ह अमारि वजाया रे ॥ हम० ॥ ५ ॥ तास पाटे विजयसेन सूरीसर, बिरुद सवाइ पाम्या ॥ तास पाट विजयदेव सूरिवर, नर नारी जस नाम्या रे ॥ हम० ॥ ६ ॥ विजयसिंह सूरि तस पाटे, ज्ञानवंत वैरागी ॥ तास शिष्यसमुदायमां जायो, सत्यविजय सोनागी रे

॥ इम० ॥ ७ ॥ आचारयनी आणा पामी, कस्यो क्रियाउद्धार ॥ गाम नगर पुर पाटण मांहि, जस शोजा विस्तार रे ॥ इम० ॥ ८ ॥ कपूर समी कीरति जस उज्ज्वल, कपूरविजय पंन्यास ॥ पंमित प्रवर घणुं गुणवंता, जस सोजाग्य विलास रे ॥ इम० ॥ ए ॥ तास पदे जद्रक उपगारी, क्षमाविजय पंन्यास ॥ सांजरे पूरव मुनिवर महोटा, मुद्रा देखी जास रे ॥ इम० ॥ १० ॥ देशना जेहनी नंदीपेण परे, उद्धत पण उद्धरीया ॥ जिहां जिहां विचस्या तिहां तिहां तास्या, जे समताना दरिया रे ॥ इम० ॥ ११ ॥ तस शिष्यसमुदायमां पंमित, जिनविजय गुरुराय ॥ लक्षण लक्षित शिक्षित बहुजन, नर नारी गुण गाय रे ॥ इम० ॥ १२ ॥ जद्रक उपगारी तस पाटे, हित शिक्षामण दायी ॥ उत्तमविजय गुरु शुज गुणधर, जविजन धर्म सखायी रे ॥ इम० ॥ १३ ॥ पयनी पंचसंग्रह सुख ग्रंथा, तेहमां घणुं परधान ॥ बहु सिद्धांत जिणे अवगाह्यां, क्षमावंत असमान रे ॥ इम० ॥ १४ ॥ गगन नयन गज चंद्र १८२० संवछर, दीवाली दिन जाणो ॥ शुज मुहूरतमां गुरुकिरपाथी, रास चढ्यो सुप्रमाणो रे ॥ इम० ॥ १५ ॥ ढाल उंगणपचास प्रथम खंमे, बीजे बावन जाखी ॥ त्रीजे बत्रीश चोथे उन्नीश, सवि सरवाले दाखी रे ॥ इम० ॥ १६ ॥ एकसो ने उंगणोतेर ढाले, एह रास में कीधो ॥ रत्नविजय गणि कहणथी माहरो, मनह मनोरथ सीधो रे ॥ इम० ॥ १७ ॥ ते गुरु उत्तमविजय कृपाथी, पद्मविजय तस शिष्ये ॥ निज परना उपगारने हेते, जाख्यो वीसवावीशे रे ॥ इम० ॥ १८ ॥ राधणपुर वर मांहि विराजे, चैत्य घणां मनोहार ॥ देवविमान परे जे दीपे, उज्ज्वल चंद्र अनुहार रे ॥ इम० ॥ १९ ॥ दानी ध्यानी ज्ञानी रुमा, जाग्यवंत शुज नाम ॥ श्रावक श्रद्धावंत तणां जिहां, दीसे बहुलां धाम रे ॥ इम० ॥ २० ॥ ते राधणपुर रही चोमासुं, कीधो ए अन्यास ॥ विजयधर्म सूरीश्वर राज्ये, वाध्यो अति उल्लास रे ॥ इम० ॥ २१ ॥ जिहां लगे महगण तारा पृथिवी, चंद्र सूरय परकाश ॥ तिहां लगे एह रास थिर होजो, जय जयकार विलास रे ॥ इम० ॥ २२ ॥ नेमचरित्र ए सुणशे लखशे, वांचशे जाग्य विशाल ॥ अनुक्रमे शाश्वत पद ते लेहशे, होशे मंगलमाल रे ॥ इम० ॥ २३ ॥ सर्व गाथा ॥ १७४ ॥ इति श्रीमन्महाजाष्यादिजैनप्रकरणोकाम्नायवेचारः वाच्ययोपनिपज्ज्ञातारः पंडितप्रवराः श्रीम-

डुत्तमविजयास्तेषां पदपद्मभृंगकल्पेन पं० पद्मविजयेन विरचिते प्राकृतप्रबंधे सुरासुरनरवरनिकरवंदिते श्रीनेमिचरित्रे बलदेववदीक्षापांमववदीक्षानेमिनिर्वाणपांमवसिद्धिगमनवर्णनो नाम चतुर्थखंडे चतुर्थोऽधिकारः समाप्तः ॥ प्रथमाधिकारे ॥ ५३१ ॥ द्वितीयाधिकारे ॥ १६५ ॥ तृतीयाधिकारे ॥ १५२ ॥ तुर्याधिकारे ॥ १७४ ॥ सर्वस्मिन् जूत्वा ॥ १०३२ ॥ एवं प्रथम खंडे ॥ ॥ १६४७ ॥ द्वितीय खंडे ॥ १७३७ ॥ तृतीय खंडे ॥ १००७ ॥ चतुर्थ खंडे ॥ १०३२ ॥ चतुर्णां मिलने सर्व गाथा ॥ ५४२५ ॥

॥ अथ श्रीगुरुलक्षण प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

॥ खट् काया रखवाल गुरु, लिखखट जापा लीण ॥ तत्त्व गहे तत उपदिशे, गुरुसें तत्त्व प्रवीण ॥ १ ॥ जाहीके उपदेश तें, मिले धर्मको जेद ॥ संशय कोउ ना रहे, सो कहीये गुरुदेव ॥ २ ॥ पुत्र समान जु जानहीं, शिष्य हुको नितमेव ॥ क्रोध न कबहु चित्तमें, सो कहीये गुरुदेव ॥ ३ ॥ श्रुतज्ञानी मानी नहीं, चाह नहीं बहु सेव ॥ पर उपकार बुद्धि जिहिं, सो कहीये गुरुदेव ॥ ४ ॥ सबही शुज गुन युक्त अरु, कोउ बुरी नहीं टेव ॥ विद्याके जंमार जो, सो कहीये गुरुदेव ॥ ५ ॥ वचन सुने जन जो यदा, मन जीजे ततखेव ॥ रहे सुमति कुमति टरी, सो कहीये गुरुदेव ॥ ६ ॥ सकल कला गुन जान अरु, मत मतांतर अठेव ॥ खंमन करी मंमन करे, सो कहीये गुरुदेव ॥ ७ ॥ गुरु सोइ जगवान् सम, गुरु सुखज्ञान एव ॥ मात तातवत् होत जो, सो कहीये गुरुदेव ॥ ८ ॥

॥ इति पंमितप्रवरश्रीपद्मविजयविरचितः
श्रीनेमीश्वररासः संपूर्णः ॥